

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

३०



श्रीमदमरसिंहविरचितं
नामलिङ्गानुशासनम्

अर्थात्

अमरकोषः

सटिप्पण 'मणिप्रभा' हिन्दीटीकोषेतः

टीकाकारः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न-मिश्रोपाह-

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री

भागलपुरमण्डलान्तर्गतसुलतानगञ्जस्थराजकीय-

संस्कृतोच्चविद्यालयसाहित्याध्यापकः ।

चौरवस्त्रा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

१६६८

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

३०



श्रीमदमरसिंहविरचितं
नामलिङ्गानुशासनम्
अर्थात्

अमरकोषः

सटिप्पण 'मणिप्रभा' हिन्दीटीकोषेतः

टीकाकारः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न-मिश्रोपाह्व-

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री

भागलपुरमण्डलान्तर्गतसुलतानगञ्जस्थराजकीय-
संस्कृतोच्चविद्यालयसाहित्याध्यापकः ।

चौरवस्त्रा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

१६६८

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : षष्ठम्, वि.सं. २०५५

ISBN : 81-7080-019-6

© चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

के. ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन

गोलघर (मैदागिन) के पास

पो. बा. नं. १००८, वाराणसी - २२१००१ (भारत)

फोन : आफिस- ३३३४५८ आवास- ३३४०३२, ३३५०२०

अपरं च प्राप्ति स्थानम्

कृष्णदास अकादमी

पो. बा. नं. १११८

के. ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी - २२१००१ (भारत)

फोन : ३३५०२०

THE
HARIDAS SANSKRIT SERIES

30



AMARAKOṢA

(NĀMALIṄGĀNUS'ĀSANA)

Of

AMARASINHA

Edited With

Notes and The 'Maṇiprabhā'

Hindī commentary

By

Pt. HARAGOVINDA ŚĀSTRĪ

Vyākaraṇa-Sāhityāchārya-Sāhityaratna.

THE
CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
VARANASI-1

1998

Publisher : Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi-1
Printer : Chowkhamba Press, Varanasi-1
Edition : Sixth, 1998

ISBN : 81-7080-019-6

© **Chowkhamba Sanskrit Series Office**

K. 37/99, Gopal Mandir Lane

Near Golghar (Maidagin)

P.BOX 1008, VARANASI-221001 (India)

Phone : Office : 333458, Resi. : 334032 & 335020

Also can be had from

KRISHNADAS ACADEMY

Post Box No. 1118,

K 37/118, Gopal Mandir Lane,

Varanasi-221001 (India)

Phone : 335020

प्राक्थन

डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

एम. ए., पी-एच. डी., ए. एफ. आई., प्रिंसिपल टोचर्स ट्रेनिंग कालेज, भागलपुर

हमारे शास्त्रों ने 'शब्द' को ही साक्षात् ब्रह्म कहा है। शब्द अथवा अनाहत-नादके रूपमें प्राणियों ने ब्रह्मका साक्षात्कार किया है, अतः मानवजीवनमें शब्द तथा उसके अवबोध एवं अनुभूतिकी कितनी महत्ता तथा उपयोगिता है—इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। पशु और मानवमें क्या अन्तर है? बर्बरता और सभ्यतामें क्या भेद है?—व्यक्त, व्युत्पन्न एवं सार्थक शब्द। इसीलिये हमारे आचार्यों ने कहा है कि यदि एक भी वर्ण, एक भी शब्द, सम्यग्ज्ञात तथा सुप्रयुक्त हुआ तो इहलोक तथा परलोकमें मनोवान्छित फल देनेवाला होता है।

श्री-सी आन्तिसे कितना अनर्थ हो सकता है, यह निम्नलिखित श्लोकसे स्पष्ट परिलक्षित है—

‘यद्यपि बहु नार्घापि तथापि पठ पुत्र ! व्याकरणम् ।

स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत् ॥’

अतः यह सिद्ध हुआ कि मानवमात्रको वर्णों तथा शब्दोंका यथावत् ज्ञान होना आवश्यक है।

वेदोंसे लेकर आधुनिक साहित्य तक जो अनगिनत ग्रन्थ निर्मित हुए हैं, वे ही हमारी संस्कृतिकी प्रगतिके प्रतीक हैं। ये ग्रन्थ क्या हैं?—शब्द तथा अर्थका समन्वय—‘सम्पृक्त वागर्थ’। इसकी महिमाको इज्जित करनेके उद्देश्यसे काळिदासने ‘पार्वतीपरमेश्वरौ’को ‘वागर्थाविव सम्पृक्तौ’का विशेषण दिया है। मानवकी समस्त भावनाएँ मनमें ही विलीन हो जायँ, यदि उसे उन सार्थक, इतरावबोध्य शब्दोंमें गुम्फित करनेकी क्षमता नहीं हो। यदि आज हमने वाक्मीकि, व्यास, काळिदास, तुलसी, सूर आदिको अमररत्न प्रदान किया है

तो इसका कारण क्या है ?—उनमें उपर्युक्त शब्दचयन तथा शब्दगुणनकी क्षमता जनसाधारणकी अपेक्षा अधिक थी ।

कोश तथा व्याकरण—इन दो शास्त्रोंके द्वारा उपर्युक्त शब्दभाण्डारकी सृष्टि तथा उसके चयन एवं समीचीन प्रयोगकी शक्ति आती है, अतः भारतमें अतिप्राचीन कालसे—निघण्टु तथा निरुक्त-समयसे—ही कोशके अध्ययनकी परम्परा चली आ रही है । संस्कृतके प्रत्येक विद्यार्थीको इसी कारण 'अमरकोश' कण्ठस्थ कराया जाता था और अब भी कराया जाता है, यद्यपि धीरे धीरे यह परम्परा कुछ क्षीण होती जा रही है । अब तो जैसे अंग्रेजोंके विद्यार्थी पद-पदपर 'डिक्शनरी' उलटते हैं, वैसे ही संस्कृतके विद्यार्थियोंमें भी सस्ते, प्रमादपूर्ण बाजारमें बिकनेवाले कोशोंको उलटनेकी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है । मैं समझता हूँ कि यह प्रवृत्ति घातक है । एक 'अमरकोश'के मुखस्थ कर लेनेसे—या कमसे कम हस्तामलकवत् आवश्यक शब्दपर्यायोंको याद रखनेसे—वाक्य-विन्यास या ग्रन्थनिर्माणमें जो सुविधा होगी, वह कदापि बार-बार आधुनिक ढङ्गके कोशोंको उलटनेसे नहीं हो सकती, उसे तो शब्दवारिद्र्यसे ही मुक्ति नहीं मिलेगी, भावों तथा कल्पनाओंकी ऊँची उड़ान कैसे ले सकेगा ?

'अमरकोश' जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी ग्रन्थकी ऐसी टीका जो न केवल प्रामाणिक हो, किन्तु साथ-साथ सुगम हो तथा हिन्दीके विद्यार्थियों अथवा विद्वानोंके निमित्त उपयोगी हो, स्वागतका विषय है । श्रीहरगोविन्द-शास्त्रीने अत्यन्त परिश्रमसे तथा वैज्ञानिक पद्धतिसे यह टीका निर्मित की है । इसमें उन्होंने अनेकानेक ज्ञातव्य सामग्रीका समावेश किया है । 'परिशिष्ट' तथा 'शब्दानुक्रमणिका'के द्वारा उन्होंने अपनी टीकाके महत्त्वको अभिवृद्ध किया है । हर्षका विषय है कि इसका नवीन संस्करण प्रकाशित हो रहा है । हमें पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत साहित्य तथा वाङ्मयसे प्रेम रखनेवाले सुधी एवं किञ्चासु इसे अपनावेंगे और तद्द्वारा अपना हितसाधन करेंगे ।

भूमिका

अनादिनिधनं शब्दब्रह्म नित्यमुपास्महे ।

व्यवहारक्रमः सृष्टेर्यतश्चलति निर्भरम् ॥ १ ॥

पण्डितप्रकाण्ड श्री अमरसिंह-विरचित अमरकोषको यदि अमरभाषा (संस्कृत) साहित्यका अमरकोष (अक्षय निधि) कहा जाय तो लेशमात्र भी अत्युक्ति नहीं होगी । जिस अमरकोषके द्वारा उक्त पण्डितप्रवरका नाम चिरकालके लिये अमर हो गया है, उस अमरकोषका अनुपम आदर केवल भारतवर्षमें ही नहीं, किन्तु भूमण्डलमात्रमें देखा जाता है । विद्याप्रेमी योरप देशवासी विद्वानोंको अपनी अपनी भाषाओंमें इसका अनुवादकर इससे लाभ उठाना कोई विशेष आश्चर्यकर नहीं है, जितना कि धर्मान्धताके कारण अन्य सम्प्रदायके ग्रन्थोंको अग्नि और जलदेवकी शरण देते हुए मुहम्मद जातिवालोंने भी जब इसका अपनी भाषामें अनुवादकर^१ खुले हृदयसे इसकी उपयोगिताको अङ्गीकार किया, यह हम भारतवासियोंके लिये अत्यन्त ही हर्षप्रद विजय-चिह्न है । सुदूरतम चीनमें भी इसका अनुवाद^२ होना हम भारतियोंके लिये विशेषरूपेण गौरव की बात है ।

कोषकी आवश्यकता

सर्वप्रथम वैदिक शब्दकोषका निर्माण

जब बृहस्पतिके समान गुरु भी इन्द्रके समान शिष्यको हजारों वर्षोंतक शब्द पारायण करते हुए शब्दसागरका^३ अन्त नहीं पा सके, तब किसका

१. इसी कारण 'खालीक बरी, नामक फारसीभाषाके शब्दकोषको पद्यमय उर्दू भाषामें इन लोगोंने रचना की ।

२. 'छठीं शताब्दीमें 'गुणराज' नामक विद्वान्ने चीनी भाषामें अमरकोषका अनुवाद किया' यह मैक्समूलरका कथन है । इस बातका उद्योतिषाचार्य विद्वद्वरेण्य पं० गिरिजाप्रसाद द्विवेदीने 'भट्ट क्षीरस्वामी' शीर्षक लेखमें अन्वेषण किया है ।

३. जैसे कहा भी है—

'इन्द्रादप्योऽपि यस्यान्तं न ययुरशब्दवारिधेः ।

सामर्थ्य है कि अतिशय विस्तृत शब्दसागरकी चरम सीमाका पता लगावे ।
हैं, यह तो अतिप्राचीनकालमें शब्दब्रह्मोपासक मुनियोंका ही सामर्थ्य था
कि वे योगाभ्यासके बलसे साक्षात् मन्त्रद्रष्टा होते थे और उन्हें किसी ग्रन्थसे
किसी प्रकारकी भी सहायता अपेक्षित नहीं रहती थी, इसी आधारपर 'सर्व
सर्वार्थवाचकाः' (सब शब्द सब अर्थोंके वाचक हैं) यह वैयाकरणोंका
सिद्धान्त है । किन्तु परिवर्तनशील संसारमें काल-परिवर्तन होनेके कारण
योगाभ्यासका भी क्रमशः हास होता गया और साथ ही साथ साक्षात्
मन्त्रद्रष्टृत्व-शक्तिका भी ।

इसप्रकार अनिवार्य हासको देखकर भगवान् कश्यपने वेदके कठिन शब्दोंका
संग्रहकर सर्वप्रथम 'निघण्टु' नामक कोषकी रचना की । यृधञ्ज गौका गोस्व
जिसप्रकार कदापि नष्ट नहीं होता, उसी प्रकार वेदसे निकालकर संगृहीत
इन शब्दोंका वेदत्व भी नष्ट नहीं हुआ है, अत एव 'निघण्टु'को भी वेद ही
कहते हैं । एवञ्च 'निघण्टु'के वेद होनेसे तद्ग्याख्यानभूत निरुक्तमें भी वेदत्व
अबाधित ही है । भगवान् प्रजापति कश्यप वेदके उपज्ञाता थे, इस बातको
भगवान् ग्यासजीने कहा है—

‘वृषो हि भगवान् धर्मो ज्ञातो लोकेषु भारते ।

निघण्टुकपदाख्याने विद्धि मां वृषमुत्तमम् ॥

कपिवेराहः श्रेष्ठश्च धर्मश्च वृष उच्यते ।

तस्माद् वृषाकपिं प्राह कश्यपो मां प्रजापतिः’ ॥

(महाभारत मोक्षपर्व अ० ३४२ । श्लो० ८६-८७)

निघण्टु ग्रन्थमें 'वृषाकपि' शब्दका निर्वचन (अध्याय ५ खण्ड ६
पद १६) मिलता भी है । किन्तु फिर भी जब योगाभ्यासका पूर्वाधिक हास
होनेसे निघण्टुका अर्थ भी लोगोंको अवोध्य प्रतीत होने लगा, तब दयामूर्ति
भगवान् 'वास्क'ने समाध्याय (वेद) भूत उस 'निघण्टु'का भाष्य किया;

प्रक्रियां तस्य कूटनस्य चमो वक्तुं नरः कथम् ॥ सारस्वत श्लो० सं २ ।

१. इसी कारण भगवान् वास्कने निघण्टु ग्रन्थको लक्ष्यकर 'समाध्यायः
समाख्यातः स व्याख्यातव्यः' इस वचनके द्वारा यहाँ वेदमात्रविषयक 'समा-
ध्याय' शब्दका प्रयोग किया है ।

जिसका नाम 'निरुक्त' हुआ। इस बातको भी भगवान् व्यासजी स्वयं स्वीकार करते हैं—

‘शिपिविष्टेति चाख्यायां हीनरोमा च योऽभञ्जत् ।

तेनाविष्टं तु यस्किञ्चिच्छिपिविष्टेति च स्मृतः ॥

‘यास्को मामृषिरव्यग्रोऽनेकयज्ञेषु गीतवान् ।

शिपिविष्ट इति ह्यस्माद् गुह्यतामधरो ब्रह्म ॥

स्तुत्वा मां शिपिविष्टेति यास्क ऋषिरुदारधीः ।

मत्प्रसादाददो नष्टं ‘निरुक्त’मभिजग्मिवान् ॥

(महाभारत मोक्षपर्व अध्याय ३४२ श्लो० ६९-७१)

‘शिपिविष्ट’ शब्दका निर्वचन निरुक्तमें (अध्याय ५ खण्ड ८ पद ३७) में मिलता भी है। किन्तु निरुक्तनिर्माता कौन यास्क थे, यह विषयान्तर होनेसे इसकी विवेचनाको यहीं छोड़कर अब प्रकृतानुसरण करता हूँ।

लौकिक-शब्दकोषकी रचना

इसप्रकार और भी अधिक तपोबलके हासके साथ-साथ बुद्धिविकाशका भी हास होनेसे लौकिक शब्दोंका अर्थज्ञान भी जब लोगोंको अतिदुरूह एवं अज्ञेय होने लगा, तब लौकिक शब्दकोषोंकी रचना हुई, किन्तु इनमें सर्वप्रथम किस कोषकी रचना हुई, यह पता नहीं चलता; क्योंकि ‘शब्दकण्ठद्रुमकोष’में ही १९ कोषोंके नाम आये हैं। ‘साहस्राक्ष, कात्यायन’ इत्यादि अनेक कोष ऐसे हैं, जो अब अलभ्य हैं, किन्तु संगृहीत प्राचीन कोषोंमें उनके वचन संस्कृत-साहित्योपासकोंके उपजीव्य हो रहे हैं। इसीतरह ‘उपलिनी’ आदि भी अनेक कोषोंके वचन ‘मेदिनीकोष’में संगृहीत जान पड़ते हैं, किन्तु इसप्रकार अनेक-अनेक कोषोंके रहते हुए भी इस ‘अमरकोष’का ही सर्वाधिक प्रचार हुआ, इसमें ग्रन्थकारकी रचना-शैली ही प्रधान हेतु है।

कुछ कोषोंमें केवल नामार्थक शब्दोंका ही संग्रह पाया जाता है तो कुछ कोषोंमें केवल साधारण शब्दोंका ही, इसपर भी इन साधारण-शब्दार्थवाचक कोषोंमें लिङ्गादिका विवरण नहीं है और कुछ तो ऐसे कोष हैं, जिनमें साधारण-साधारण सर्वविध शब्दोंको भरकर उन्हें अरपन्त दुरूह कर दिया गया है। ऐसा कोई भी कोष नहीं, जो प्रसिद्धतम, साधारण और नानार्थक

(अनेक अर्थवाले) शब्दोंके सुसंग्रहसे परिपूर्ण होता हुआ भी लिङ्गनिर्देशसे अलङ्कृत एवं आवाकबोध्य पद्यमय निबद्ध हो । यदि कोई ऐसा कोष है तो 'अमरकोष' ही है । इसके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अन्य कोषोंमें जो न्यूनता या दोष थे, उन सबोंका यथावत् परिमार्जन करते हुए अमरसिंहने बालकोंके भी सुलभतया कण्ठस्थ करने योग्य सरल श्लोकोंमें इस 'अमरकोष'की रचनाकर संसारका बहुत बड़ा उपकार किया ।

अमरसिंहका समय विवेचन

इनके समयके विषयमें अनेक मत हैं । कोई तो इनको—

‘धन्वन्तरिचपणकामरसिंहशङ्कुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः ।

ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य’ ॥

इस श्लोकके आधारपर 'विक्रम' नृपतिके नवरत्नोंमें—से कहते हैं । तथा कोई-कोई—

‘इन्द्रध्वन्द्रः काशकृष्णापिशली शाकटायनः ।

पाणिन्यमरजैनेन्द्रा भवन्त्यष्टौ हि शाब्दिकाः’ ॥

इस श्लोकके आधारपर 'पाणिनि' और 'जैन' अर्थात् समन्तभद्रके मध्य-कालमें ये हुए थे, ऐसा कहते हैं, किन्तु पाणिनिविरचित अष्टाध्यायीके भाष्य-कार भगवान् पतञ्जलिके समकालीन 'चान्द्रव्याकरण'कर्ता आचार्य 'चन्द्र'का नाम उक्त श्लोकमें पाणिनिके पहले आनेसे उक्त श्लोकमें क्रम अपेक्षित नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है । अन्य लोग इनको ईस्वीय सन् ३०० के छठीं शताब्दीके बतलाते हैं ।

जो कुछ हो 'स्वर्गवर्ग'में देवताओंके पर्यायोंको कहनेके बाद इन्होंने भगवान् 'बुद्ध'के पर्यायवाचक शब्दोंको कहा है, अतः ये 'अमरसिंह' बौद्धमतावलम्बी थे, यह प्रायः सभी विद्वानोंका मत है ।

शोलापुर निवासी स्व० सेठ रावजी सखाराम दोशी महोदयने अमरकोष—सम्बन्धी एक ट्रेड प्रकाशित किया है, उसकी भूमिकामें अनेक युक्तियोंसे उन्होंने प्रमाणित किया है कि अमरकोषकार अमरसिंह बौद्ध नहीं, किन्तु जैनी था । अपने कथनके प्रमाणमें दोशी महोदयका कहना है कि वर्तमानमें उपलब्धमान अमरकोषमें लगभग एक सौ श्लोक छूट गये हैं या जान-बूझकर

छोड़ दिये गये हैं । 'यस्य ज्ञानदयासिन्धोः.....' (११११) श्लोकके पूर्व जिन एवं जैनसम्मत सोलहवें तीर्थङ्करकी वन्दना अमरसिंहने दो श्लोकोंमें की है^१, तथा 'सुरलोको.....त्रिविष्टपम् ।' (१११८) के बाद ८०^२ श्लोकोंमें अमरसिंहने महावीर आदि तीर्थङ्करों एवं जैनसम्प्रदायसम्मत देवी-देवताओंके पर्यायोंको कहा है । द्वितीय काण्डमें भी प्रायः १०-१२ श्लोकोंका वर्तमान अमरकोषमें छूट जाने या छोड़ दिये जानेकी चर्चा उक्त दोशी महोदयने की है । यद्यपि दोशीमहोदय कथित मङ्गलाचरणके दो श्लोकोंमें—से प्रथम श्लोक वाशमसिंह-विरचित 'गद्यचिन्तामणि' ग्रन्थमें भी मिलता है, अतः यह कहना कठिन है कि यह श्लोक अमरसिंहकी रचना है या वादीमसिंहकी, किन्तु द्वितीय श्लोक अन्यत्र कहीं नहीं उपलब्ध होता और वह श्लोक दोशीजीके कथनानुसार यदि मङ्गलाचरणका ही है तब तो दोशीमहोदयके कथनकी विशेषतः पुष्टि होती है कि अमरसिंह बौद्ध नहीं, किन्तु जैनी ही था ।

मेरा विचार था कि उक्त दोशीजीके ट्रैक्टके श्लोकोंको अपने अमरकोषके द्वितीय संस्करणमें भी समाविष्ट करूँ, किन्तु उक्त ट्रैक्टके श्लोकोंमें प्रचुर-मात्रामें अशुद्धियाँ होनेसे वैसा करना उचित प्रतीत नहीं हुआ और दोशीजी महोदयके ट्रैक्टकी मूल प्रति—जो द्रविडप्रान्त-निवासी 'आपपण्डानाथशास्त्री'से द्रविडारदरमें तालपत्रपर लिखित थी—को प्राप्त करनेका प्रयत्न करनेपर भी कृतकार्य न हो सकनेके कारण मुझे अपने विचारको स्थगित कर देना पड़ा ।

अमरसिंहने अन्य किसी ग्रन्थकी भी रचना की या नहीं, यह विषय सन्देहास्पद है । जयपुर सं० पाठशालाओंके निरीक्षक साहित्याचार्य पं० भट्ट श्रीतैलङ्ग मथुरानाथ शास्त्रीने 'अमरकोषे टीकाकाराणां कृपा' शीर्षक लेखमें अमरभारतीमें लिखा है कि—'इनके विषयमें यह भी प्राचीन दन्तकथा है कि 'ये अनेक ग्रन्थोंकी रचनाकर उन्हें नावमें रख कहीं अन्यत्र जा रहे थे, किन्तु बौद्धधर्म-

१. तद्यथा—जिनस्य लोकत्रयवन्द्ितस्य प्रणालयेत्पादसरोजयुग्मम् ।

नखप्रभादिस्यसरित्प्रवाहैः संसारपङ्कं मयि गाढलग्नम् ॥ १ ॥

नमः श्रीज्ञान्तिनाथाय कर्मारातिविनाशिने ।

पञ्चमल्लकिणां यस्तु कामस्तस्मै जिनेशिने ॥ २ ॥ इति ।

विरोधी आयौने 'अमरकोष'के अतिरिक्त सब ग्रन्थोंको पानीमें डुबो दिया' किन्तु यह बात निराधार होनेसे प्रामाणिक नहीं समझी जा सकती ।

लिङ्गानुशासनके श्लोकोंको प्रायः पाणिनिस्मृतके आधारपर इन्होंने लिखा है, इससे तथा—

‘अमरसिंहस्तु पापीयान् सर्वं भाष्यमचूचुरत्’ ।

इस श्लोकके आधारपर व्याकरण शास्त्रमें इनका पाण्डित्यप्राख्य अनाच्छ्रय है, किन्तु उक्त श्लोकद्वारा इनपर भाष्यचौर्यका दोष लगाना ईर्ष्याकृत मालूम पड़ता है, क्योंकि ग्रन्थके प्रारम्भमें ही ‘समाहृत्यान्यतन्त्राणि संचितैः प्रतिसंस्कृतैः (१।१।२)’ इस वचनद्वारा ये उक्त दोषसे मुक्त हो चुके हैं और उक्त दोषभावमें दूसरी बात यह भी है कि—यदि भाष्यकार ‘वज्रन्त-अवन्त’ शब्दोंको पुंलिङ्ग लिखते हैं, तो गतानुगतिक या चौर्यदोषके भयसे बादका कोई भी ग्रन्थकार खोख तो लिख नहीं सकता, अतः यदि वह पुंलिङ्ग लिखे तब उसपर चौर्यदोषारोपण न कर इन्हें भाष्यमतप्रचारकका श्रेय मिलना ही उचित प्रतीत होता है । इसीप्रकार भानुजिदीक्षितने ‘गौतमश्राकंबन्धुश्च.....’(१।१।१५) की स्वनिर्मित ‘श्याक्यासुधा’ टीकामें यद्यपि ‘वेदविरुद्धार्थानुष्ठातृत्वाजिनशाक्यौ नरकवर्गे वक्तुमुचितौ, तथापि देवविरोधिष्वेन बुद्धयुपारोहादत्रैवोक्तौ’ अर्थात् ‘वेदविरुद्ध अर्थानुष्ठानके कारण ‘जिन और शाक्य’को यद्यपि ‘नरकवर्ग’में कहना उचित था, तथापि देवविरोधी होनेसे बुद्धिस्थ होनेके कारण ये यहींपर कहे गये हैं’ ऐसा कहा है, किन्तु इस श्लोकके आधारपर जिन बुद्ध भगवान्की गणना भगवान् कृष्णके दश अवतारोंमें है, तथा जिन्हें वैष्णवभक्तवरेण्य ‘जयदेव’—जैसे श्रेष्ठ विद्वान् भी कृष्णभगवान्का अंश मानकर नमस्कार करते हैं, उन ‘बुद्ध’के लिये ‘नरकवर्गे, देवविरोधिष्वेन’ इन शब्दोंका प्रयोग करना नितान्त अनुचित प्रतीत होता है ।

१. ‘वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्धिभ्रते
दैत्यान् दारयते बलिं छलयते ऋप्रचयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
ऋषेणाम्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः’ ॥

गीतगोविन्द १।१२ ॥

अमरकोषके नाम

ग्रन्थकारके नाम के आधारपर १ 'अमरकोष', ग्रन्थकारकृत अन्वर्थ (सार्थक) नाम-करणके—

‘समादृष्ट्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।

सम्पूर्णमुच्यते वगैर्नामलिङ्गानुशासनम्’ (१।१।२)

तथा ग्रन्थके तीनों काण्डोंके अन्तमें—

‘इत्यमरसिंहकृतौ ‘नामलिङ्गानुशासने’ ।’

इस वचनके आधारपर ‘नामलिङ्गानुशासन’ और ग्रन्थमें तीन काण्ड होनेसे ‘त्रिकाण्ड’—ये तीन नाम हैं । देवभाषाशब्दसंग्रह होनेसे कोई-कोई इसे ‘देवकोष’ भी कहते हैं ।

अमरकोषकी टीकायें

‘अमरकोष’की उपयोगिता ग्रन्थरचनाके बाद अतिप्राचीन विद्वानोंसे लेकर आधुनिक विद्वानोंके द्वारा की गयी उसकी टीकाओंमें भी सिद्ध होती है । इसपर प्राचीन विद्वानोंकी निम्न टीकायें हैं—

१ व्याख्याप्रतीप	...	अच्युतोपाध्याय ।
२ क्रियाकलाप	...	आशाधर ।
३ काशिका	...	काशीनाथ ।
४ ‘अमरकोषोद्धाटन	...	भट्टश्रीरस्वामी ।

१. देवराज ‘यजुर्वेद’ने निघण्टुपर भाष्य लिखनेमें भोज और श्रीरस्वामीके नाम लिये हैं । भोजकाल ई० सन् १०१८-१०६० है, श्री० स्वा० का समय ११ वीं शताब्दीका अन्तिम भाग है । इन्होंने ई० सन् ८८०-९२० कालके राजशेखरका नाम अपनी टीकामें लिया है । ‘गणराजमहोदधि’में वर्द्धमानने श्री० स्वा० का नाम लिया है, जो ई० सन् ११४० में हुए थे । श्री० स्वा० ने उपाध्याय, गौड़, श्रीभोज, व्याडि, भागुरि, सालाकार, और काश्य (कार्यायन) आदि कई विद्वानोंके वचन अपने ग्रन्थमें उद्धृत किये हैं । ये बहुत जगह ‘अमरकोषोद्धाटन’ नामक ‘अमरकोष’की टीकामें ग्रन्थकारके शब्दोंका विवेचन भी किये हैं । जैसे—‘स्त्री दाराद्यैर्यद्विशेष्यं’ (१।१।२) ‘अत्र स्त्री दाराद्यम्’

५ बालबोधिनी	...	गोस्वामी ।
*६ अमरकौमुदी	...	नयनानन्द रामचन्द्र ।
७ 'अमरकोषपञ्जिका	...	नारायणशर्मा ।
८ शब्दार्थसंदीपिका	...	नारायण विद्याविनोद ।
९ सुबोधिनी	...	नीलकण्ठ ।
१० अमरकोषमाला	...	परमानन्द ।
११ अमरकोषपञ्जिका	...	वृहस्पति ।
*१२ सुगंधबोध[]	...	भरतमल्लिक (भरतसेन)
१३ ()व्याख्यासुधा	...	भानुजिदीक्षित द्वितीय
अथवा-रामाश्रमी	...	रामाश्रम ।
*१४ गुरुबालप्रबोधिनी	...	मञ्जुभट्ट ।
१५ सारसुन्दरी	...	मथुरेश-विद्यालङ्कार ।
१६ अमरपदपारिजात	...	मल्लिनाथ ।

इति युक्तः पाठः' ऐसा, तथा 'कमनः कामनोऽभिकः' (३।१।२४) यहाँ 'कामनः कमनोऽभिकः' इति तु युक्तः पाठः' ऐसा कहा है । इसीप्रकार इन्होंने और भी कई जगह विवेचना की है । ये आगुरि, तथा मालाकार आदिकी भी अपनी टीकामें भ्रान्ति आदि बतलाये हैं ।

१. इसका दूसरा नाम 'पदार्थकौमुदी' भी है, इसको सन् १६१९ ई० में नारायणशर्मामें बनाया था ।

२. इस निशानवाले टीकाओंके नाम आदिमें थोड़ा-थोड़ा अन्तर है । इन टीकाओंका नाम 'कषपद्रुम' कोषकी भूमिकाके ६ ठे पेजमें आये हैं तथा अमर-भारती (वर्ष १ अङ्क ६) के 'अमरकोषे टीकाकाराणां कृपा' शीर्षक लेखमें कृपा है ।

[] गौरांगमल्लिकके पुत्र भरतमल्लिक (भरतसेन) की टीका बहुत विशद है । इसमें बहुत पाठान्तर है । इसमें वोपदेवके व्याकरणानुसार शब्दक्रम है ।

१८ वीं शताब्दीमें इसके टीकाकारकी सम्भावना की जाती है ।

() 'सिद्धान्तकौमुदी'कार भट्टोजिदीक्षितके पुत्र 'भानुजिदीक्षित'ने १७ वीं शताब्दीमें बनेलक्ष्मी 'कीर्तिसिंह'को प्रार्थनासे यह टीका बनायी ।

*१७ बुधमनोहरा	...	महादेवतीर्थ ।
*१८ अमरविवेक	...	महेश्वर ।
१९ ^१ अमरबोधिनी	...	मुकुन्दशर्मा ।
२० त्रिकाण्डचिन्तामणि	...	रघुनाथचक्रवर्ती ।
*२१ अमरकोषव्याख्या	...	राघवेन्द्र ।
२२ ^२ त्रिकाण्डविवेक	...	रामनाथ ।
२३ वैषम्यकौमुदी	...	रामप्रसाद ।
*२४ अमरकोषव्याख्या	...	रामशर्मा ।
*२५ अमरवृत्ति	...	रामस्वामी ।
२६ प्रदीपमञ्जरी	...	रामेश्वरशर्मा ।
*२७ ^३ पदचन्द्रिका	...	रायमुकुट ।
*२८ अमरव्याख्या	...	लक्ष्मणशास्त्री ।
*२९ अमरबोधिनी	...	लिंगमठ ।
३० पद्ममञ्जरी	...	लोकनाथ ।
*३१ व्याख्यामृत	...	शङ्कराचार्य ।
३२ अमरटीका	...	श्रीधर ।
३३ ^४ टीकासर्वस्व	...	सर्वानन्द ।

१. यह टीका बोपदेवानुसारिणी है ।

२. सन् १६३३ ई० में यह टीका बनी टीकाकारने भूमिकामें बहुत टीका-कारोंके नाम लिखे हैं ।

३. बंगालके 'राधानगर'में रहनेवाले 'गोविन्द'के पुत्रबृहस्पतिने 'पदचन्द्रिका' (राय मुकुटमणि) बनायी, इसीको लोग रायमुकुट कहते हैं । जो सन् १४३१ ई० में बना था, इसके पूर्व १६ टीकायें थीं । 'बृहस्पति'के पुत्रके '१ विग्राम, २ राम' आदि नाम थे । 'रायमुकुट'में २७० व्यक्तियोंके प्रमाणक वचन हैं, यह बात Aufrecht ने लिखी है । २८, १०९-११८ ॥

४. यह टीका १० टीकाओंके आधारपर ११५९ ई० सन् में लिखी गयी है और लगभग स्त्री० स्वा० कृत टीकाके बराबर ही है । यह रायमुकुट आदि

*१४ अमरपद्यमुकुर	...	रंगाचार्य ।
*१५ बृहद्वृत्ति	...	×
*१६ ×	...	अप्ययदीक्षित ।
*१७ गुरुबालप्रबोधिनी	...	भानुदीक्षित ।
*१८ ×	...	मान्यभट्ट ।
*१९ ×	...	लिंगमसूरि ।
*४० अमरकोषपदविवृति	...	×
*४१ कामधेनु	...	वंगदेशीय कोई विद्वान्

यद्यपि आधुनिक अनेक विद्वानोंने भी इस ग्रन्थपर अनेक संस्कृत तथा हिन्दी टीकायें लिखी हैं, तथापि इनमें प्रत्येक शब्दोंका प्रचलित हिन्दीमें अर्थ, लिंगज्ञान, वचनज्ञान, शब्दके प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध स्वरूप, पाठान्तर, कठिन शब्दोंकी विवेचना, शब्दसे सम्बद्ध विषय या अन्य आवश्यकीय बातोंका समावेश नहीं होनेसे एक बहुत कमी चिरकालसे मेरे हृदयमें खटक रही थी । इसीकी पूर्तिके लिये मैंने संस्कृत और हिन्दीमें इस ग्रन्थराजकी क्रमशः टीका और टिप्पणी लिखकर इसे पूज्यपाद विद्वन्मुकुटमणि दाशनिक्सार्वभौम साहित्य-दर्शनाद्याचार्य माधवमतावलम्बी श्री १०८ गोस्वामी दामोदरलालजी महाराजको दिसलाया । पूज्यपाद गोस्वामीजी महाराजने इस टीकाकी भूरि-भूरि प्रशंसा की, पूज्य गोस्वामीजीकी बतलायी हुई शैलीसे मैंने इस 'मणिप्रभा' नामक हिन्दी टीका और साथ में 'अमरकौमुदी' नामक संस्कृत टिप्पणीमें अन्य आवश्यक बातोंका भी समावेश किया । सम्पूर्ण ग्रन्थ में लगभग सौ श्लोक चेषकके दिये गये हैं, मूल ग्रन्थमें आनेवाले शब्दोंके अतिरिक्त प्रसिद्ध २ बाहरी शब्द तथा मूल ग्रन्थमें आनेवाले शब्दोंके आंशिक समानाकार बाहरी

वंगदेशीय टीकाकारोंका आधार हुई । इसके बाद किन्तु अन्य वंगदेशीय टीकाकारोंके पूर्व 'सुभूतिचन्द्र या बौद्ध सुभूति' ने कामधेनु टीका बनायी जिसका वंगाली टीकाकर्ताओंने अधिकतर उल्लेख किया है । सन् १९७१ ई० में बनी हुई शरणदेवके 'दुर्घटवृत्ति' में 'सुभूति' का नाम मिलता है ।

× इस निशानमें नाम नहीं कहा गया है ।

शब्द में भी + ऐसे निशान कर दिये गये हैं, जिससे ग्रन्थकी उपयोगिता अधिक बढ़ गयी है। शीघ्रता आदिके कारण जो बातें छुट गयी थी, उनकी पूर्ति परिशिष्टमें की गयी है। यद्यपि परिशिष्टमें और भी अधिक बातोंको देनेका विचार था, किन्तु ग्रन्थाकारके बहुत बढ़ जानेसे वह विचार छोड़ देना पड़ा। मूल शब्दोंकी सूचीके अतिरिक्त बाहरी समानाकार शब्दोंकी तथा चेषक श्लोकोंमें आए हुए शब्दोंकी सूची भी साथमें दी गयी है, जो अन्यत्र किसी अमरकोषमें नहीं पायी जाती। इस प्रकार इस ग्रन्थको यथासाध्य सर्वावश्यकिय विषयोंसे परिपूर्ण बनानेकी भरपूर चेष्टा की गयी है।

आभारप्रदर्शन

इस भूमिकाको पूरा करनेके पहले उन महानुभावोंका मैं अतिशय आभारी हूँ, जिन्होंने इस टीकाके निर्माण करनेमें किसी तरह भी सहायता पहुँचायी है। उनमें सर्वप्रथम जिन ग्रन्थोंसे इस टीकाकी रचनाने सहायता ली गयी है, उन ग्रन्थकारोंके प्रति आभारप्रदर्शनपूर्वक कृतज्ञता अभिव्यक्त करता हूँ।

सम्मतिदाता

१ पूज्यपाद म० म० पं० श्री १०८ गोपीनाथ कविराजजी, प्रिंसिपल गवर्नमेण्ट सं० कालेज, बनारस—आपने अनेक ग्रन्थोंका नाम तथा प्रकरणादिका निर्देशकर टिप्पणी और परिशिष्ट बनानेमें मुझे बहुत सहायता पहुँचायी।

२ पूज्यपाद दार्शनिकसर्वभौम दर्शनसाहिब्याचार्य श्री १०८ गोस्वामी दामोदरलालजी शास्त्री—आपको आदिष्ट शैलीद्वारा इस टीकाकी रचना हुई, तथा आपसे अन्य भी अनेक सम्मतियाँ मिलीं।

३ पू० पा० गवर्नमेण्ट सं० कालेजके प्रोफेसर व्याकरणाचार्य श्री गोपाल-शास्त्रीजी नेने—आपने द्वितीयकाण्ड तक इस टीकाका १ प्रूफ देखा, तथा अन्यान्य अमूल्य सम्मतियाँ प्रदान की।

४ पं० नारायणदत्तजी त्रिपाठी मारवाडी सं० कालेजके प्रधानाध्यापक, व्याकरणाचार्य पोष्टाचार्य स्वर्णपदकप्राप्त—

५ पू० पा० पं० बंशीधरमिश्रजी आरामण्डलान्तर्गत गिरिधरबरांविवासी ज्योतिषाचार्य, पोष्टाचार्य तथा ज्योतिषतीर्थ—

२ अ० भू०

आप लोगोंसे क्रमशः व्याकरण और ज्यौतिष सम्बन्धी बहुतसी सम्मतिथी प्राप्त हुई।

ग्रन्थद्वारा सहायतादाता

१ श्री पं० नन्दविहारीमिश्र आयुर्वेदाचार्य, विशारद, आरामण्डलान्तर्गत गिरिधरखरांवनिवासी—आपने 'अमरविवेक' की प्राचीन पुस्तकद्वारा सहायता की।

२ श्री पं० ऋषिनन्दन पाण्डेय व्याकरणशास्त्री, काव्यतीर्थ, अध्यापक सं० पाठ० कसाप, आरा—आपने भाषाटीकासहित अमरकोषकी अतिप्राचीन पुस्तकके द्वारा सहायता की।

३ श्री पं० कृष्णपन्त साहित्याचार्य, अध्यक्ष विश्वनाथ संस्कृत पुस्तकालय, ललिताबाट, काशी—आपने अपने पुस्तकालयसे बहुतसी पुस्तकें समय-समय पर देकर बहुत सहायता की।

इनके अतिरिक्त अन्यान्य जिन महानुभाव विद्वानोंके द्वारा भी मुझे जो कुछ सहायता प्राप्त हुई है, उनका मैं बहुत आभारी होते हुए कृतज्ञता प्रकाश करता हूँ।

टीकाके सहायक ग्रन्थ

'सांकेतिक चिह्न और शब्दका विवरण' शीर्षक लेखमें आये हुए ग्रन्थोंके अतिरिक्त अग्निपुराण, अग्निस्मृति, यमस्मृति, हारीतस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृतिकी बालम्भट्टी टीका, आह्निकसूत्रावली, कश्यपमुद्रकोश, हिन्दीशब्दसागर, श्रीधरकोष आदि ग्रन्थ तथा अमरकोषकी श्री० स्वा० कृत 'अमरकोषेद्भाटन', महेश्वरकृत 'अमरविवेक', भाजुजिदीक्षितकृत 'व्याख्यासुधा (रामाश्रमी)' सर्वानन्दकृत 'टीकासर्वस्व', 'संक्षिप्तमाहेश्वरी', तथा एतद्व्याख्यानभूत 'अमरप्रकाश' द्वारा सहायता ली गयी है। इनके अतिरिक्त अन्य बहुत ग्रन्थों द्वारा भी यत्र तत्र सहायता ली गयी है, उन ग्रन्थकारों और टीकाकारोंका मैं विशेष आभारी हूँ।

अन्तमें 'काशीस्थ चौखम्बा-वनारस-काशी-हरिदास सं० सिरीज' के अध्यक्ष बाबू 'जयकृष्णदास हरिदास गुप्त' महोदयको अनेक धन्यवाद देता हूँ,

जिन्होंने इस ग्रन्थका प्रकाशनभार लेकर संस्कृत साहित्य ग्रन्थोद्धारमें वरसाहपूर्ण अपनी उदारताका परिचय दिया है ।

ग्रन्थ-सम्पादनके समय मानवसुलभ दृष्टिदोषवशा एवम् टाइपके अतिसूक्ष्माक्षर होनेसे तथा यन्त्र-सम्बन्धी दोषोंसे अर्थात् किसी प्रकारकी यदि अशुद्धि हो गयी हो तो—

‘गच्छतः स्खलनं कापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधन्ति सज्जनाः’ ॥

इस पद्यके अनुसार क्षीरग्राही हंसके समान विद्वज्जन उन अशुद्धियोंको सुधार कर मुझे अनुगृहीत करेंगे ।

इति शम् ।

रथयात्रा, सं० १९९४

}

विद्वत्पादाब्जरजश्चञ्चरीक—

हरगोविन्दशास्त्री

द्वितीय संस्करण

लोकशङ्कर भगवान् शङ्करकी असीम अनुकम्पासे स्व-प्रथम-प्रयास सम्पादित अमरकोषीय 'मणिप्रभा'के द्वितीय संस्करणको प्रकाशित होते हुए देखकर अनुवादक होनेके नाते मुझे परम प्रसन्नता हो रही है, क्योंकि कविकुञ्ज-शिरोमणि महाकवि कालिदास—जैसे विद्वान् भी सूत्रधारके मुखसे—

‘आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ।

बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ॥’

कहलवाते हुए कृतिकी सफलतामें सशङ्क होना अभिव्यक्त करते हैं, तब अपनी कृति—यह भी अध्ययनावस्थाकी प्रथम कृति—होनेके कारण मुझ जैसे अल्पज्ञको अपनी सफलतामें आशङ्कित होना अस्वाभाविक नहीं समझा जा सकता; परन्तु ‘मणिप्रभा’ युक्त इस अमरकोष ग्रन्थके प्रथम तथा द्वितीय काण्डोंका पाँच-पाँच, संस्करण प्रकाशित होना और इस सम्पूर्ण ग्रन्थके पुनः प्रकाशनार्थ अनेक वर्षोंसे पत्रादिद्वारा प्रेरणा करते रहना इस कृतिकी सफलता को स्पष्टतः अभिव्यक्त करता है ।

इस अमरकोषके ही नहीं, किन्तु ‘मणिप्रभा’ नामक मेरे राष्ट्रभाषाऽनुवाद-सहित अन्यान्य ग्रन्थों—रघुवंश, शिशुपालवध, नैषधचरित तथा मनुस्मृति आदि—को भी अन्यान्य विद्वज्जनसम्पादित विविध टीकाओं तथा अनुवादोंके रहते हुए भी अपनी नीर-सीर-विवेकिताद्वारा जिनलोगोंने अपनी गुणैकपक्ष-पातिताका स्पष्ट परिचय प्रदान किया है, उन परमादरणीय विद्वानोंका आभार मानता हुआ मैं उन्हें भूरिशः धन्यवाद देता हूँ ।

साथ ही वर्तमानमें शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयके प्राचार्य एवं समाज (सोसल)-विभाग, विहार सरकारके भूतपूर्व उपनिर्देशक श्रीमान् माननीय ‘डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री’ महोदयका भी अत्यन्त आभारी होता हुआ उन्हें अनेकानेक धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ; जिन्होंने मेरी

प्रार्थना स्वीकृतकर इस संस्करणका अपना पाण्डित्यपूर्ण 'प्राक्कथन' लिखनेकी अनुकम्पा की है।

इसके अतिरिक्त प्रायः पैंसठ वर्षोंसे संस्कृत साहित्यके विविध-विषयक ग्रन्थोंका प्रकाशनकर भारतीय आर्ष संस्कृतिके संरक्षण एवं संवर्द्धनके अन्यतम सेवाव्रती, चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय तथा चौखम्बा विद्याभवन, काशीके अध्यक्ष श्रीमान् माननीय सेठ 'जयकृष्ण दामजी गुप्त' महोदयको भी शुभाशीःपूर्वक भूरिशः धन्यवाद देता हूँ; जिन्होंने इस ग्रन्थका पुनर्मुद्रण करके सकल संस्कृतानुरागियोंके लिए इसे सुलभतम मूल्यमें प्रदान करते हुए त्रिवर्गको अर्जित करनेका सफल प्रयास किया है।

इस संस्करणके मुद्रणमें मेरे सुदूर प्रदेशमें रहनेके कारण प्रूफ संशोधन आदि कार्य करनेवाले मित्रवर्गको भी अनेकशः धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

यद्यपि मैंने इस संस्करणमें दृष्टचर त्रुटियोंके निराकरणका पूर्णतया प्रयास किया है, एवं कतिपय स्थलोंमें अनेक विषयोंको विशदकर इस संस्करणको पूर्वापेक्षया अधिक उपयुक्त बनानेका यथाशक्य प्रयत्न किया है; तथापि इसका सम्पादन, अक्षरसंयोजन, संशोधन एवं मुद्रणादि सब कार्य मानवकृत होनेसे और जगत्स्वप्ता ईश्वरके अतिरिक्त प्राणिमात्रको सर्वथा दोषविनिर्मुक्त होना असम्भव होनेसे इस संस्करणमें भी सम्भावित त्रुटियोंके लिए गुणैकपक्षपाती विद्वद्बृन्दसे बढाजलि हो समायाचना करता हूँ कि वे जिस प्रकार इसे अपनाकर अभ्यान्य ग्रन्थोंको लिखनेके लिए सुखे उदाहृत करनेकी असीम अनुकम्पा की है, उसी प्रकार भविष्यमें भी अनुकम्पा करते रहें।

साङ्केतिक चिह्न और शब्दके विवरण

मूलके सङ्केत

‘ ’ इस चिह्नके बीचवाले अंश क्षेपक हैं, उनके अन्तमें () इस कोष्ठके मध्यमें क्रमानुसार पङ्क्तिसंख्या लिखी गई है ।

श्लोकोंके पहले या मध्य भागमें दिये गये अङ्क हिन्दी टीकाके प्रतीक हैं ।

टीका और टिप्पणीके संकेत

= —सन्दिग्ध (‘सु’ विभक्तिमें प्रातिपदिकसे भिन्न रूपवाले) शब्दोंके प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप ।

+ —पाठभेद या मतभेदसे उपलब्ध पर्याय; और ग्रन्थान्तरमें उपलब्ध आंशिक समानाकार (प्रायः मिलते जुलते हुए) या प्रसिद्धतम पर्यायवाचक शब्द ।

[] —क्षेपक श्लोकोंकी हिन्दी टीका ।

उन-उन ग्रन्थोंके काण्ड, वर्ग, श्लोक, परिच्छेद, अध्यायादि जाननेके लिये अङ्क दिये गये हैं ।

पु या पु० —पुंलिंग

स्त्री या स्त्री० —स्त्रिलिंग

न या न० —नपुंसकलिंग

त्रि या त्रि० —त्रिलिंग

नि० —निश्च

ए० व० —एकवचन

द्विव० —द्विवचन

ब० व० या बहुव० —बहुवचन

शे० —शेष

म० —मत या मतभेद

उदा० —उदाहरण

स्वा० —स्वामी

श्री० स्वा० —श्रीरस्वामी

महे० —महेश्वर

भा० दी० —भानुजिदीक्षित

मु० —मुकुट

भा० —भागुरि

प्रा० —प्राच्य

रा० कृ० दी० —रामकृष्णदीक्षित

बु० म० —बुधमनोहर

अ० वि० —अमरविवेक

व्या० सु० —व्याख्यासुधा (रामाश्रमी)

पा० सू० —पाणिनीयसूत्र

लि० सू० —लिंगसूत्र

उ० सू० —उणादिसूत्र

वा० —वार्तिक

यो० सू० —योगसूत्र

अभि० चिन्ता० या अ० चि० म० —

अभिधानचिन्तामणि

या०स्मृ०या याज्ञ०स्मृ०—याज्ञवल्क्यस्मृति

मनु या मनुस्मृ०—मनुस्मृति

सा० द०—साहित्यदर्पण

गी०—श्रीमद्भगवद्गीता

वि० पु०—विष्णुपुराण

वै० मि० सं०—वैयाकरणसिद्धान्तलघु-

मञ्जूषा

सु० श्रु० क० रथा०—सुश्रुतकल्पस्थान

मा० नि०—माधवनिदान

अने० सं०—अनेकार्थसंग्रह

मे० या मेदि०—मेदिनीकोष

पृ०—पृष्ठ

श्लो०—श्लोक

अ०—अध्याय

चतु० चिन्ता०—चतुर्वर्गचिन्तामणि

दा० खं०—दानखण्ड

वृ० रत्ना०—वृत्तरत्नाकर

वीर० राजप्रक०—वीरमित्रोदयर।ज-

प्रकरण

कु० सं०—कुमारसम्भव

वाचस्प०—वाचस्पत्याभिधान

नि० सिं०—निर्णयसिन्धु

रघु०—रघुवंश

*, †, ‡, §, इत्यादि चिह्न टिप्पणीके प्रतीक हैं ।

देखनेका प्रकार—१ जिस शब्दके बाद जो संकेत है, उसीके साथ उस संकेतका सम्बन्ध है । २ संख्यासहित संकेतका पहलेवाले उतने शब्दोंके साथ सम्बन्ध है । ३ कहीं-कहीं एक ही शब्दमें एकाधिक भी संकेत हैं । ४ नामके अन्तमें लिखी हुई संख्यामें पाठान्तर, कोषान्तर आदिके कोष्ठमध्यगत पर्यायोंकी गणना नहीं है । उदाहरण—‘स्वः (= स्वर , अ०), स्वर्गः, नाकः, त्रिविधः, त्रिदशालयः सुरलोकः (५ पु), घौः (= घो), घौः (= दिव् । २ स्त्री), ‘त्रिविष्टपम्’ (न । + त्रिविष्टपम्), ‘स्वर्ग के ९ नाम हैं’, यहाँ पर ‘स्वः’ के प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप ‘स्वर्’ है और यह अव्यय है । ‘स्वर्ग’ आदि पाँच शब्द पुंलिङ्ग हैं । पहले ‘घौः’ के प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप ‘घौ’ और दूसरेके प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप ‘दिव्’ है, तथा ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं । ‘त्रिविष्टप’ शब्द नपुंसक है, मतान्तरसे ‘त्रिविष्टपम्’ यह भी पर्याय है । ‘स्वः’ आदि ९ नाम ‘स्वर्ग’ के हैं, इसमें ‘त्रिविष्टपम्’ की गणना नहीं है । इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये ॥

परिशिष्टके संकेत

परिशिष्टमें पहले मूल ग्रन्थमें आये हुए शब्दको देकर उसके काण्डाङ्क, वर्गाङ्क और श्लोकाङ्क दे दिये गये हैं, फिर उस शब्दसे सम्बद्ध विषय लिखकर प्रमाणिक ग्रन्थके नाम आदि दिये गये हैं ॥

शब्द-सूचीके संकेत

मूल ग्रन्थकी सूची देखनेका प्रकार—पहले शब्द, बादमें क्रमशः 'काण्डाङ्क, वर्गाङ्क और श्लोकाङ्क' दिये गये हैं। जैसे—'अ ३ ४ ११' अर्थात् 'अ' शब्द तृतीय काण्डके चतुर्थ अध्यायवर्गके ग्यारहवें श्लोकमें आया है। (देखिये पृ० ५१७) ॥

क्षेपक और टीकास्थ शब्दकी सूची देखनेका प्रकार—क्षेपक और टीकास्थ शब्दोंकी सूची ११६ पृष्ठसे आरम्भ होकर १४९ पृष्ठोंमें समाप्त हुई है। उनमेंसे जो शब्द क्षेपकमें आये हैं, उन शब्दोंके पहले अध्यायके क्रमसे चलने वाला क्षेपकाङ्क, क्षेपकका शब्द और बादमें मूल ग्रन्थके जिस स्थलमें वह क्षेपकका शब्द आया है, उस मूल ग्रन्थके काण्ड, वर्ग और श्लोकके अङ्क दिये गये हैं; इसमें अर्द्धश्लोककी गणना नहीं है। जैसे—'४१ अंशुमालिन् १ ३ ३०' यहाँ पहले क्षेपकका अङ्क, बादमें क्षेपकका 'अंशुमालिन्' शब्द, फिर प्रथम काण्डके तृतीय 'दिग्वर्ग'के ३० वें श्लोकके बाद वह 'अंशुमालिन्' शब्द मिलेगा। (देखिये पृष्ठ—३१)।

कुछ शब्द क्षेपकसे सम्बद्ध होते हुए भी मूल क्षेपकमें नहीं आये हैं, किन्तु क्षेपकसे भी बाहरी हैं; ऐसे शब्दोंमें क्षेपकाङ्कके आगे + ऐसा चिह्न लगाया गया है। जैसे + '४३ + आश्विन १ ४ १३' है, इसे भी उसीप्रकार पृष्ठ ४० में देखिये। यह शब्द क्षेपकमें नहीं आया है, किन्तु क्षेपककी टीकामें आया है ॥



विषयानुक्रमणिका

		पृ०
प्राक्कथन	...	५
भूमिका	...	७
द्वितीय संस्करण की भूमिका	...	२०
सांकेतिक चिह्न और शब्दके विवरण	...	२२
विषयाः	श्लोकसंख्या	पृष्ठसंख्या
प्रथमकाण्डम्	...	१—१०४
(मङ्गलाचरणम् , श्लोकः १ मः)	...	१
(प्रतिज्ञा " २ यः)	...	२
(परिभाषा " ३-५ मः)	...	"
१ स्वर्गवर्गः	७१	७
२ व्योमवर्गः	१॥	२३
३ दिग्वर्गः	३५	२४
४ कालवर्गः	३१	३४
५ धीवर्गः	१७	४८
६ शब्दादिवर्गः	२५॥	५४
७ नाट्यवर्गः	३८	६६
८ पातालिभोगिवर्गः	११	८१
९ नरकवर्गः	३॥	८६
१० वारिवर्गः	४३	८८
वर्गोपसंहारः काण्डसमाप्तिश्च २	...	१०३
द्वितीयकाण्डम्	...	१०५—३६६
(वर्गभेदकथनम् , श्लोकः १ मः)	...	१०५
१ भूमिवर्गः	१८	"

विषयाः	श्लोकसंख्या	पृष्ठसंख्या
२ पुरवर्गः	२०	११३
३ शैलवर्गः	८	१२०
४ वनौषधिवर्गः	१६९॥	१२४
५ सिंहादिवर्गः	४३	१७३
६ मनुष्यवर्गः	१३९॥	१८७
७ ब्रह्मवर्गः	५७॥	२३७
८ क्षत्रियवर्गः	११९॥	२६३
९ वैश्यवर्गः	१११	३०६
१० शूद्रवर्गः	४६॥	३५०
काण्डसमाप्तिः	१	३६६
तृतीयकाण्डम्	...	३६७—५५२
(सर्गभेदकथनम् , श्लोकः १मः)	...	३६७
(परिभाषा " २यः)	...	३६८
१ विशेष्यनिघ्नवर्गः	११२॥	"
२ संकीर्णवर्गः	४२॥	४०७
३ नानार्थवर्गः	२५७	४२३
४ अभ्ययवर्गः	२३	५१६
५ लिगादिसंग्रहवर्गः	४६	५२२
काण्डसमाप्तिः (श्लो० ४७मः) १	...	५५२

प्रथमकाण्डे सङ्कलितश्लोकसंख्या २७८॥, द्वितीयकाण्डे सङ्कलितश्लोकसंख्या ७३३॥
तृतीयकाण्डे सङ्कलितश्लोकसंख्या ४८२ ए' सम्पूर्णग्रंथे सङ्कलितश्लोकसंख्या १४९४



चक्रसूची

क्रमाङ्काः	चक्रनामानि	पृष्ठाङ्काः
१	कालमानबोधचक्रम्	४४
२	विविधमतेन द्वाराणां संज्ञाया यष्टिसंख्यायाश्च बोधकचक्रम्	२२४
३	पत्त्यादिसेनाविशेषे गजरथादिसंख्याबोधकचक्रम्	२१४
४	तुल्यमानबोधकचक्रम्	३४१
५	अनुक्रमेण प्रतिलोमज-जात्युत्पत्तिबोधकचक्रम्	३५२

क्षेपकश्लोकपंक्तिसंख्या

प्रथमकाण्डे क्षेपकपङ्क्तयः	५८	तृतीयकाण्डे क्षेपकपङ्क्तयः	१५
द्वितीयकाण्डे ”	३३	एवं सम्पूर्णग्रन्थे	१८६

परिशिष्टसूची

अमरकोषस्य परिशिष्टम्	...	५५३
मूलस्य शब्दानुक्रमणिका	...	
क्षेपक-टीकास्य शब्दानुक्रमणिका	...	



॥ श्रीः ॥

नामलिङ्गानुशासनम्

नाम

अमरकोषः

प्रथमं काण्डम्

१ यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ।

सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

विश्वेषां करणैरगोचरमपि प्रज्ञादृशा पश्यतां

यत्प्रत्यक्षमपश्चिमं कृतिरिह स्वःश्रेयसे योगिनाम् ।

आरभ्याणु महत्तमावधि परं यद्व्यापकं सर्वतो

वन्दे निर्गुणमेष पाणियुगलं बद्ध्वाऽऽनतस्तन्महः ॥ १ ॥

आसृष्टि प्रलयावधि त्रिभुवने विस्तारसिन्धोः परं

यस्या द्रष्टुमपि क्षमो न यदि चेत्पारङ्गतौ का कथा ।

ब्रह्मश्रीशशिवादिभिश्च सततं ज्ञानाय योपास्यते

तां वाचामधिनायिकां भगवतीं श्रीशारदामाश्रये ॥ २ ॥

मन्थाचलाबिलपयोधिविनिस्सृतेन दृष्ट्वा उवलज्जगदिवं गरलेन शीघ्रम् ।

पीत्वा हसंस्तदभिरक्षितवान् भृशं यस्तन्मोलकण्ठचरणाखुजमाश्रयामि ॥ ३ ॥

१ श्री अमरसिंह अपने रचे जानेवाले इस ग्रन्थकी निर्विघ्नतापूर्वक समाप्ति तथा प्रसिद्धि होने के लिये और व्याख्याता तथा अध्येताओं (पढ़ने-वालों) के उपदेशके लिये यथाचार^१ किं दुष्ट मङ्गलाचरणको पहले लिखते हैं—‘यस्य ज्ञान...’ । हे पण्डितो ! अतिगम्भीर, ज्ञान और करुणाके समुद्र, जिसके निर्मल जमा आदि गुण हैं; उस अविनाशीकी आपलोग धन और मोक्ष के लिये सेवा करें ॥

१. ‘प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते’ इति न्यायात् । ‘मङ्गलादीनि हि शास्त्राणि प्रथन्ते, वीरपुरुषाणि च भवन्ति, आयुष्मत्पुरुषाणि चाध्येतारश्च सिद्धार्था यथा स्युः’ इति भाष्योक्तेश्च ॥

१ समाहृत्यान्यतन्त्राणि सङ्क्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।

सम्पूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

२ प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।

१ ग्रन्थ—समाप्तिके लिये इष्टदेव 'जिनदेव' का स्मरण कर ओता आदिके उत्साहवर्धनार्थ साभिधेय प्रयोजनको कह रहे हैं—'समाहृत्य' । नाम और लिङ्गको बतलानेवाले वररुचि आदिके तन्त्रों (कोशों) को एकत्रित कर विस्तार के थोड़ा होनेपर भी अधिक अर्थवाले, प्रत्येक पदकी प्रकृति और प्रत्ययोंको विचारपूर्वक संस्कार कर बनाये हुए वर्गों (प्रकरणों) से सम्पूर्ण नाम (स्वः, स्वर्गः, नाकः, आदि) और लिङ्ग (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) को बतलानेवाले इस शास्त्रको मैं कहता हूँ । त्रिकाण्ड-उत्पलिनी आदि कोशोंमें केवल नाम (पर्याय) बतलाये गये हैं और वररुचि आदिके ग्रन्थोंमें केवल लिङ्ग बतलाये गये हैं; नामलिङ्गानुशासन^१ (अमरकोष) नामक इस शास्त्र (ग्रन्थ) में तो नाम (पर्याय) और लिङ्ग (पुंलिङ्ग.....) ये सभी बतलाये गये हैं; अतः इसीको पढ़ना चाहिये ।

२ अब 'प्रायशः' इत्यादिसे इस ग्रन्थमें लिङ्गादि जाननेका उपाय (परिभाषा) बतलाते हैं—प्रायः रूप (आकार) भेद अर्थात् 'लोप्', 'ङीप्', 'टाप्', 'विसर्ग' और 'अमादेश' आदिसे 'लिङ्गों' (स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) को जानना चाहिये । (उदाहरण—स्त्रीलिङ्ग जैसे—'शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला ।' (१।१।३७), यहाँ 'शिवा और सर्वमङ्गला' इन दो शब्दोंके आबन्त होनेसे तथा 'भवानी, रुद्राणी और शर्वाणी' इन तीनों शब्दोंके लयन्त होनेसे 'सु' (प्रथमा विभक्तिके एकवचन) का लोप हो गया है; अतएव 'शिवा.....' पाँचों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं । कमशः पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग जैसे—'.....प्रदोषो रजनीमुखम् (१।३।६)' यहाँ 'प्रदोष' शब्दकी

१. नाम च लिङ्गं च नामलिङ्गे, तयोरनुशासनमिति नामलिङ्गानुशासनम् । स्वरादिनाम्नां पुंस्त्वादिलिङ्गानां च व्युत्पादकमिति यावत् ॥

२. आदिपदेन यत्र 'वामोरुः' इत्यादावृत्प्रत्ययः, कृतिरित्यादौ क्तिन्प्रत्ययश्च तस्य ग्रहणम् । एवञ्च 'लक्ष्मीः' इत्यादौ सुलोपाभावे स्त्रीत्वं 'दधि' इत्यादौ सुलोपेऽपि क्लीबत्वमेवेति संभाषांश्च व्यवस्था कार्या, नानुमानमात्रेणैव ॥

स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं १ तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

‘सु’ विभक्तिको रुक्-विसर्ग होने से ‘प्रदोष’ शब्द पुंलिङ्ग और ‘रजनीमुख’ शब्दकी ‘सु’ विभक्तिको अमादेश होनेसे ‘रजनीमुख’ शब्द नपुंसकलिङ्ग है। ॥ कहीं-कहीं साहचर्य (पासवाले शब्दके अनुसार) से तीनों लिङ्ग समझना चाहिए। (स्त्रीलिङ्ग जैसे—‘तद्विसौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि (११३।९)’ यहाँ स्त्रीलिङ्गवाले ‘सौदामनी’ आदि शब्दोंके साहचर्यसे सन्दिग्ध ‘तद्वि’ और विद्युत् ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। पुंलिङ्ग जैसे—‘स्फूर्जथुर्वज्र-निर्घोषः (११३।१०)’ यहाँ ‘वज्रनिर्घोष’ शब्दके साहचर्यसे ‘स्फूर्जथु’ शब्द पुंलिङ्ग है। नपुंसकलिङ्ग जैसे—‘हन्दायुधं शक्रधनुः (११३।१०)’ यहाँ ‘हन्दा-युध’ शब्दके साहचर्यसे ‘शक्रधनुष्’ शब्द नपुंसकलिङ्ग है ॥

१ कहीं-कहीं विशेष रूपसे कहनेपर स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग जानना चाहिये। (स्त्रीलिङ्ग जैसे—‘द्यौदिवौ द्वे स्त्रियाम्..... (११३।१)’ यहाँ ‘स्त्रियाम्’ इस विशेष शब्दसे ‘द्यौ और दिव्’ ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। पुंलिङ्ग जैसे—‘निधिर्ना शेवधिः..... (११३।७१)’ यहाँ ‘ना’ इस विशेष शब्दसे ‘निधि’ शब्द पुंलिङ्ग है। नपुंसकलिङ्ग जैसे—‘रोचिः शोचिरुभे क्लीबे (११३।३४)’ यहाँ ‘क्लीबे’ इस विशेष शब्दसे ‘रोचिष् और शोचिष्’ ये दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं ॥

विशेषः—कहीं-कहीं सर्वनाम पदसे और विशेषण पदसे भी तीनों लिङ्ग जानने चाहिए। (सर्वनाम पदसे स्त्रीलिङ्ग जैसे—‘विशतु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः (११३।१)’ यहाँ ‘ताः’ इस स्त्रीलिङ्गवाले सर्वनाम पद से ‘विक्, ककुप्, काष्ठा, आशा और हरित्’ ये पाँचों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। सर्वनाम पदसे पुंलिङ्ग जैसे—‘.....शुचिस्त्वयम् (११३।१६)’ यहाँ ‘अयम्’ इस सर्वनाम पदसे ‘शुचि’ शब्द पुंलिङ्ग है। सर्वनाम पदसे नपुंसकलिङ्ग जैसे—‘...विषुवद्विषुवं च तत् (११३।१४)’ यहाँ ‘तत्’ इस सर्वनाम पदसे ‘विषुवत् और विषुव’ ये दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं ॥ विशेषण पदसे स्त्रीलिङ्ग जैसे—‘...संहृतिर्बहुभिः कृता (११६।८)’ यहाँ ‘कृता’ इस स्त्रीलिङ्ग विशेषण पदसे ‘संहृति’ शब्द स्त्रीलिङ्ग है। विशेष पदसे लिङ्गके अतिरिक्त वचन आदिका भी ज्ञान होता है। (जैसे—‘स्त्रियां बहुवचसरसः..... (११३।५२)’ यहाँ ‘स्त्रियां और बहुषु’ इन दो विशेष शब्दोंके कहनेसे ‘अप्सरस्’ शब्द केवल स्त्रीलिङ्ग

१ 'भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न सङ्करः ।

और बहुवचन ही होता है । दूसरा उदाहरण जैसे—'स्वरव्ययं..... (१११६)' यहाँ 'अव्ययम्' इस विशेष पदसे 'स्वर्' शब्द अव्यय ही है । इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये) ॥

१. इस ग्रन्थमें प्रत्येक शब्दका लिङ्ग मालूम करनेके लिये उन शब्दोंके 'द्वन्द्व, एकशेष और सङ्कर' प्रायः नहीं किये गये हैं, जिनकेलिङ्ग पहिले नहीं कहे हैं और भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु जिन शब्दोंके लिङ्ग आदि कहींपर कह दिये गये हैं, उन्हींके 'द्वन्द्व, एकशेष और सङ्कर' किये गये हैं । (क्रमशः उदाहरण—पदस्य द्वन्द्व जैसे—जातिजातश्च सामान्यं..... (१११३१)' यहाँ 'जातिसामान्यजातानि' इस तरह और 'कुलिशं भिदुरं पविः' (१११३७)' यहाँ 'कुलिशभिदुरपवयः' इस तरह द्वन्द्व नहीं किया गया है; यहाँ पहले उदाहरणमें द्वन्द्व समास करनेपर अन्तिम शब्दका लिङ्ग हो जानेसे 'जाति' शब्द स्त्रीलिङ्ग और 'जात तथा सामान्य' ये दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं, यह मालूम नहीं हो सकता, इसी तरह दूसरे उदाहरणमें भी द्वन्द्व करनेपर 'कुलिश और भिदुर' ये दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग और 'पवि' शब्द पुंलिङ्ग है, यह मालूम नहीं पक्क सकता । दूसरा एकशेष जैसे—'ओकः सन्नाश्रयश्चौकाः..... (३१३२३३)' यहाँ 'ओकस्' शब्दको 'सन्नाश्रयश्चौकसौ' इस तरह और 'नभः खं श्रावणो नभाः (३१३२३२)' यहाँ 'खश्रावणौ तु नभसी' इस तरह एकशेष नहीं किया गया है; अन्यथा पहले उदाहरणमें 'ओकस्' शब्द 'सन्ना' अर्थात् गृह अर्थमें नपुंसक तथा 'आश्रय' अर्थमें पुंलिङ्ग है यह मालूम नहीं पक्क सकता, इसी तरह दूसरे उदाहरणमें भी 'नभस्' शब्द 'आकाश' अर्थमें नपुंसकलिङ्ग तथा 'श्रावण महीना' अर्थमें पुंलिङ्ग है यह ज्ञान नहीं हो सकता । तीसरा सङ्कर जैसे—'..... स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः (११३११)' यहाँ पुंलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग क्रमसे

१. उपाध्याय-गौड-मालाकार-श्रीभोजस्तु इमं विभिन्नक्रमेण व्याचख्युः, तद्व्याख्या च 'उपाध्यायश्च क्रमाद्वते.....' इत्याद्यैश्वर्यसूचनेति' क्षीरस्वामिकृतामरकोशोद्घाटनाव्याख्याख्यायां भा० दी० कृतव्याख्यासुधायाः, पं० शिवदत्तकृतटिप्पण्यां क्षीरस्वाम्यादिमतं, राय-मुकुटकृत 'पदचन्द्रिका' रामकृष्णदीक्षितकृत 'पीयूष' व्याख्यां चातुपुष्पेण विक्रिय्य पूर्वोक्त-टिप्पणीकारमतं च लिखितमिति तत एव सकलं सविस्तरतोऽवधार्यम् ॥

२. 'परवलङ्गं दन्तत्पुरुषयोः (पा० सू० २।४।२६)' इति परवलङ्गता स्यादित्याशयः ॥

कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

ही कहे गये हैं—‘सङ्कर’ अर्थात् मिश्रण करके ‘स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो तुतिः’ इस तरह व्यतिक्रमसे नहीं कहा गया है । ‘पीयूषममृतं सुधा (१।१।४८)’ यहाँ ‘पीयूषन्तु सुधाऽमृतम्’ इस तरह सङ्कर अर्थात् संमिश्रण नहीं किया गया है; किन्तु पहले नपुंसकलिङ्गवाले ‘पीयूष और अमृत’ इन दो शब्दोंको कहनेके उपरान्त ही स्त्री-लिङ्गवाले ‘सुधा’ शब्दको कहा गया है; इसी तरह ‘प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च... (१।६।१०)’ इत्यादिमें भी समझना चाहिये । इस ग्रन्थमें जिन शब्दोंके कहीं-पर लिङ्ग कहे गये हैं; उन शब्दोंके तो ‘१ द्वन्द्व, २ एकशेष और ३ सङ्कर’ प्रायः किये ही गये हैं । पहला द्वन्द्व जैसे—१ ‘स्त्रियां बहुव्यप्सरसः (१।१।५२)’—२ ‘यक्षैकपिङ्गलविल...’ (१।१।६९)’—३ ‘नैर्ऋतो यातुरक्षसी (१।१।६०)’—४ ‘गन्धर्वो दिव्यगायने (३।३।१३३)’—५ ‘स्यात्किञ्जरः किम्पुरुषः (१।१।७१)’ इन पाँच वाक्योंसे ‘१ अप्सरस्, २ यक्ष, ३ रक्षस्, ४ गन्धर्व और ५ किञ्जर’ इन पाँच शब्दोंके लिङ्ग कह दिये गये हैं; अतः ‘विद्याधराप्सरसोयक्षरक्षोगन्धर्वकिञ्जराः (१।१।११)’ यहाँ उक्त पाँच शब्दोंका द्वन्द्व किया ही गया है । समान लिङ्गवाले शब्दोंका तो यथावसर द्वन्द्व किया ही गया है; जैसे—‘यक्षैकपिङ्गलविल-श्रीदपुण्यजनेश्वराः (१।१।६९)’ यहाँ ‘यक्ष, एकपिङ्ग, पेलविल, श्रीद और पुण्य-जनेश्वर’ ये शब्द समानलिङ्ग अर्थात् पुंलिङ्ग ही हैं, अतः इनका द्वन्द्व किया ही गया है । दूसरा एकशेष जैसे—‘पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः (२।६।३१)’ इस वाक्यसे ‘श्वश्रू और श्वशुर’ इन दोनों शब्दोंके लिङ्ग कह दिये गये हैं; अतएव ‘श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ (२।६।३७)’ यहाँ ‘श्वश्रू और श्वशुर’ इन दोनों शब्दों का ‘एकशेष’ किया ही गया है । तीसरा सङ्कर जैसे—‘श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी...’ (१।६।३) यहाँ पहले स्त्रीलिङ्गवाले ‘श्रुतिः’ शब्दको कहनेके उपरान्त पुंलिङ्गवाले ‘वेद और आम्नाय’ इन दो शब्दोंको कह कर फिर स्त्रीलिङ्गवाले ‘त्रयी’ शब्दको कहा गया है । ‘प्रायशः’ इस शब्दको कहनेसे ‘पयः कीलालममृतं...’ (१।१०।३)—‘दुग्धं क्षीरं पयः समम् (२।१।५१)’ इत्यादि वाक्योंसे यद्यपि ‘पयस्’ शब्दको नपुंसकलिङ्ग कह दिया गया है; तथापि ‘पयः क्षीरं पयोऽम्बु च (३।३।२३३)’ यहाँ ‘अम्बुक्षारे तु पयसी’ इस तरह

१ त्रिलिङ्ग्यां त्रिविविति पदं मिथुने तु द्वयोरिति ।

२ निषिद्धलिङ्गं शेषार्थ—

३ त्वन्तायादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

एकशेष नहीं करनेपर भी कोई दोष (प्रातिशाहान) नहीं है । इसी तरह अन्यान्य उदाहरण भी समझने चाहिये) ॥

१ तीनों लिङ्ग (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) हैं, यह बतलानेके लिये इस ग्रंथमें 'त्रिषु', पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों लिङ्ग हैं, यह बतलानेके लिये 'द्वयोः' ये शब्द कहे गये हैं । (पहला तीनों लिङ्ग बतलानेके लिये जैसे— '.....मण्डलं त्रिषु (१३।१५)' यहाँ 'त्रिषु' शब्द कहनेसे 'मण्डल' शब्दके तीनों लिङ्ग (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) होते हैं । दूसरा स्त्रीलिङ्ग बतलानेके लिये जैसे— '.....अशनिर्द्वयोः (१।१।४७)' यहाँ 'द्वयोः' शब्दके कहनेसे 'अशनि' शब्द पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग होता है) ॥

विशेषः—पुंलिङ्ग को बतलाने के लिये 'ना, पुमान्, पुंसि.....' स्त्रीलिङ्ग को बतलानेके लिये 'स्त्री, स्त्रियाम्.....' और नपुंसकलिङ्ग को बतलानेके लिये 'क्लीबम्.....' शब्द कहे गये हैं । इनके उदाहरण स्वयं समझ लेना चाहिये ॥

२ जहाँ जिस लिङ्गका निषेध किया गया है, उस निषिद्ध (मना किये हुए) लिङ्गके अतिरिक्त शेष (बाकी) लिङ्ग उस शब्दके होते हैं । (जैसे—'संवासरौ वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री.....' (१।४।२०)' यहाँ 'अस्त्री' इस शब्दसे 'संवासरौ' आदि चार शब्दोंके स्त्रीलिङ्गका निषेध करनेसे उक्त चार शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों में हैं) ॥

३ जिस शब्दके अन्तमें 'तु' या आदिमें 'अथ' शब्द हो, ऐसे, '१ नाम-पद, २ लिङ्गपद, ३ सर्वनामपद और ४ अव्ययपद' इन चारोंका पहलेवाले (पूर्वमें रहनेवाले) शब्दोंके साथमें सम्बन्ध नहीं होता है । (क्रमशः उदाहरण—पहला (नामपद) त्वन्त ('तु' अन्तवाला) जैसे—'...और्वस्तु बाहवो बहवानलः (१।१।५६)' यहाँ 'और्व' शब्दके आगे (अन्तमें) 'तु' शब्द है; अतः 'और्व' शब्दका सम्बन्ध आगेवाले 'बाहव' ही शब्दके साथ है, पूर्व (पहले) वाले शब्दके साथ नहीं । दूसरा (लिङ्गपद) त्वन्त जैसे—'अन्तर्धा व्यवश्चा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् (१।३।१२)' यहाँ 'पुंसि' इस शब्दके

१. अथ स्वर्गवर्गः

१ स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः ।

अन्तर्मे 'तु' शब्द है; अत एव 'पुंसि' इस पदका आगेवाले 'अन्तर्धि' शब्दके साथ होनेसे वही (अन्तर्धि शब्द ही) पुंलिङ्ग है, पूर्व (पहलेवाला) नहीं । तीसरा (सर्वनामपद) त्वन्त जैसे—'गोष्ठं गोष्ठानकं तत्तु गौष्ठानं भूतपूर्वकम् (२।१।१३)' यहाँ 'तत्' इस सर्वनाम पद के आगे 'तु' शब्द होनेसे उसका सम्बन्ध आगेवाले 'गौष्ठान' शब्दके साथ है, पूर्ववाले 'गोष्ठानक' शब्दके साथ नहीं । चौथा (अव्ययपद) त्वन्त जैसे—'वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशत्रिहायसी (१।२।२)' यहाँ 'वा' इस अव्यय पदके अन्तर्मे 'तु' शब्द है, अतः 'वा' पदका सम्बन्ध 'पुंसि' के साथ होनेसे 'आकाश और विहायस्' ये ही दो शब्द विकल्पसे पुंलिङ्ग होते हैं, पूर्ववाला 'विष्णुपद' शब्द नहीं । इसी तरहसे पहला (नामपद) अथादि ('अथ' शब्द आदिमें दो ऐसा) जैसे—'मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञानमविद्या'..... (१।५।७)' यहाँ 'अज्ञान' शब्दके पूर्वमें (पहले) 'अथ' शब्द रहनेसे वह 'अज्ञान' शब्द आगेवाले 'अविद्या' शब्दका ही पर्याय है, पूर्ववाले 'अपवर्ग' शब्दका नहीं । दूसरा (लिङ्गपद) अथादि जैसे—'शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं'..... (१।४।२६)' यहाँ 'त्रिषु' इस लिङ्गपदके आदिमें 'अथ' शब्द रहनेसे पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गके अर्थमें प्रयुक्त 'त्रिषु' इस शब्दका आगेवाले 'द्रव्ये' इसके साथ सम्बन्ध होनेसे 'शस्त' शब्द द्रव्य ही अर्थमें त्रिलिङ्ग है, पूर्ववाले शब्दोंका पर्यायवाचक (कस्याणमात्र का वाचक) होनेपर त्रिलिङ्ग नहीं है । इसी तरह तीसरे और चौथे अर्थात् सर्वनामपद और अव्ययपदके भी अथादिका उदाहरण समझना चाहिये ॥

विशेषः—यहाँ 'अथ' शब्द 'अथो' शब्दका उपलक्षण है, अतः 'अथ'के तुष्य 'अथो' शब्द भी जिसके आदिमें रहे, उसका सम्बन्ध भी पूर्ववाले शब्दके साथ नहीं होता है । (जैसे—'.....साम सान्त्वमथो समौ—'भेदो-पजापावु'..... (२।८।२१)' यहाँ 'समौ'के आदि में 'अथो' शब्दके रहने से 'समौ' इस शब्दका सम्बन्ध आगेवाले 'भेद और उपजाप' इन्हीं शब्दों के साथ होगा, पूर्ववाले 'सान्त्व' शब्द के साथ नहीं) । इसी तरह अन्यत्र भी अन्यान्य उदाहरणोंको स्वयं समझ लेना चाहिये ॥

१ स्वः (= स्वर अ०), स्वर्गाः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयाः, सुरलोकः

सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ।

१ अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः ।

सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥

आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ।

आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ।

वृन्दारका देवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

२ आदित्यविश्ववसवस्तुषिताऽऽभास्वरानिलाः ।

महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

(५ पु), द्यौः (= द्यौ), द्यौः (= दिव् । २ स्त्री), त्रिविष्टपम् (न । + त्रिविष्टपम्), 'स्वर्ग' के ९ नाम हैं ॥

१ अमरः, निर्जरः, देवः, त्रिदशः, विबुधः, सुरः, सुपर्वा (=सुपर्वन्), सुमनाः (= सुमनस्), त्रिदिवेशः, दिवौकाः (= दिवौकस् । + दिवोकाः), आदितेयः, दिविषत् (=दिविषद्), लेखः, अदितिनन्दनः, आदित्यः, ऋभुः, अस्वप्नः, अमर्त्यः, अमृतान्धाः (= अमृतान्धस्), बर्हिर्मुखः, क्रतुभुक् (= क्रतुभुज्), गीर्वाणः (+ गीर्वाणः), दानवारिः, वृन्दारकः (२४ पु), देवतम् (पु न), देवता (स्त्री), 'देवता' के २६ नाम हैं ॥

२ आदित्याः १२, विश्वे १०, वसवः ८, तुषिताः २६ या ३६, आभास्वराः ६४, अनिलाः ४९, महाराजिकाः २२० या २३६ या ४०००, साध्याः १२, रुद्राः ११, (९ पु) 'गणदेवता' देवताओंके एक-एक गण (समूह) के ९ नाम हैं । इन गणदेवताओंके जितने-जितने भेद होते हैं, वे प्रत्येकके आगे लिख दिये गये हैं ॥

१. 'आदित्या द्वादश प्रोक्ता विश्वेदेवा दश स्मृताः ॥

वसवश्चाष्ट संख्याताः षट्त्रिंशत्तुषिता मताः ॥ १ ॥

आभास्वराश्चतुषष्टिर्वाताः पञ्चाशद्गुणकाः ॥

महाराजिकनामानो द्वे शते विंशतिस्तथा ॥ २ ॥

साध्या द्वादश विख्याता रुद्रा एकादश स्मृताः ॥ इति ॥

एषां नामानि परिशिष्टे द्रष्टव्यानि ।

- १ विद्याधराऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः ।
 'पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽभी देवयोनयः ॥ ११ ॥
- २ असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः ।
 शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥
- ३ सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ।
 समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥
- षडभिज्ञो दशबल्लोऽद्वयवादी विनायकः ।

१ विद्याधराः ('जीमूतवाहन, ...'), अप्सरसः (स्त्री, नि० व०, देवताओंकी स्त्रियाँ घृताची, मेनका, रम्भा, ...), यक्षाः (कुबेर, ...), रक्षांसि (= रक्षस्, न । लङ्कावासी, माया करनेवाले), गन्धर्वाः (देवताओंके यहाँ गानेवाले—'तुम्बुरु, ...'), किन्नराः (घोड़ेका मुँह तथा आदमीके शरीरवाले और आदमीका मुँह तथा घोड़ेके शरीरवाले), पिशाचाः (मांसभोजी भूत-विशेष), 'गुह्यकाः' ('मणिभद्र, ...'), सिद्धाः ('विश्वावसु, ...'), भूताः (शिव के गणविशेष—प्रमथ... । श्लो० ८ पु), 'दैवयोनि' के १० नाम हैं । (इनका प्रयोग तीनों वचनोंमें होता है) ॥

२ असुरः (+ आसुरः), दैत्यः, दैतेयः, दनुजः, इन्द्रारिः, दानवः, शुक्र-शिष्यः, दितिसुतः, पूर्वदेवः, सुरद्विट् (= सुरद्विष् । १० पु) 'दैत्य' के १० नाम हैं ॥

३ सर्वज्ञः, सुगतः, बुद्धः, धर्मराजः, तथागतः, समन्तभद्रः, 'भगवान्' (= भगवत्), 'मारजित्', लोकजित्, जिनः, 'षडभिज्ञः', 'दशबलः', 'अद्वयवादी'

१. 'सिद्धगुह्यकभूता हि पिशाचा देवयोनयः' इति भागुरिः पपाठेति स्त्री० स्वा० ॥

२. 'निधिं रक्षन्ति ये रक्षास्ते स्युर्गुह्यकसंज्ञकाः' ॥ इति ॥

३. 'दैववयस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः । वैराग्यस्याथ मोक्षस्य वर्णा भग इतीरणा ॥' इति पूर्वोक्ताः षड् भगा यस्य स 'भगवान्' इति ॥

४. मारान् कामक्रोधादीन् बौद्धसम्मतान् स्कन्धमार-क्लेशमार-मृत्युमार-देवपुत्रमारौश्च जयतीति मारजित् ।

५. 'दिव्यं चक्षुःश्रोत्रम् १. परचित्तज्ञानम् २, पूर्वनिवासानुस्मृतिः ३, आरम्भज्ञानम् ४, वियद्गमनम् ५, कायभ्यूहसिद्धिः ६' इति षट्सु—'दानम् १, शीलम् २, क्षान्तिः ३, वीर्यम् ४, ध्यानम् ५, प्रज्ञा ६' इति षट्सु वा अभिज्ञा ज्ञानं यस्य स 'षडभिज्ञः' इति ॥

६. 'दानं १ शीलं २ क्षमा ३ वीर्यं ४ ध्यानं ५ प्रज्ञा ६ बलानि ७ च ॥

उपायः ८ प्रणिधि ९ ज्ञानं १० दश बुद्धिबलानि वै ॥ १ ॥' इति ॥

मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शशक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥

स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ।

गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥

२ ब्रह्माऽऽत्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः ।

हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयम्भूश्चतुराननः ॥ १६ ॥

धाताऽब्जयोनिर्द्रुहिणो विरञ्चिः कमलासनः ।

स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृष्ट विधिः ॥ १७ ॥

३ 'नाभिजन्माण्डजः पूर्वो निधनः कमलाञ्जवः' (१)

सदानन्दो रजोमूर्तिः सत्यको हंसवाहनः' (२)

४ विष्णुनारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः ।

दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥

दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।

पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥

(=अद्वयवादिन्), विनायकः, मुनीन्द्रः, श्रीघनः, शास्ता (=शास्त्र), मुनिः (१८ पु) 'बुद्ध' के १८ नाम हैं ॥

१ शाक्यमुनिः, शाक्यसिंहः, सर्वार्थसिद्धः, शौद्धोदनिः, गौतमः, अर्कबन्धुः, मायादेवीसुतः (७ पु), 'बुद्ध' के अवान्तरभेद, 'सप्तम बुद्ध' के ७ नाम हैं ॥

२ ब्रह्मा (ब्रह्मन्), आत्मभूः, सुरज्येष्ठः, परमेष्ठी (=परमेष्ठिन्), पितामहः, हिरण्यगर्भः, लोकेशः, स्वयम्भूः, चतुराननः, धाता (=धातृ), अब्जयोनिः, द्रुहिणः (=द्रुषणः), विरञ्चिः (+ विरिञ्चिः), कमलासनः, स्रष्टा (= स्रष्टृ), प्रजापतिः, वेधाः (वेधस्), विधाता (= विधातृ), विश्वसृष्ट (= विश्वसृज्), विधिः (२० पु), 'ब्रह्मा' के २० नाम हैं ॥

३ [नाभिजन्मा (=नाभिजन्मन्), अण्डजः, पूर्वः, निधनः, कमलाञ्जवः, सदानन्दः, रजोमूर्तिः, सत्यकः, हंसवाहनः (९ पु), 'ब्रह्मा' के ९ नाम हैं ॥]

४ विष्णुः, नारायणः (+ नरायणः), कृष्णः, वैकुण्ठः, विष्टरश्रवाः (= विष्टरश्रवस्), दामोदरः, हृषीकेशः, केशवः, माधवः, स्वभूः, दैत्यारिः, पुण्डरीकाक्षः, गोविन्दः, गरुडध्वजः, पीताम्बरः, अच्युतः, शार्ङ्गी (=शार्ङ्गिन्), विष्व-

१. विपश्यी शिखी विश्वभूःकुच्छन्दश्च काञ्चनः । काश्यपश्च सप्तमस्तु शाक्यसिंहोऽर्कवान्भवः ॥
तथा राहुकृत् सर्वार्थसिद्धो गौतमान्वयः । मायाशुद्धोदनसुतो देवदत्तप्रजश्च सः ॥

(अमि० चिन्ता० २।१४९-१५१)

उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।

पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥

देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।

वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरघोक्षजः ॥ २१ ॥

विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।

१ 'पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः (३)

जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दनः' (४)

२ वसुदेवोऽस्य जनकः स पद्मानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥

३ बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽभ्युत्ताग्रजः ।

रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥

नीलाम्बरः रौहिणेयस्तालाङ्गो मुसली हली ।

सङ्कर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥

४ मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।

कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥

वसेनः (+ विश्ववसेनः), जनार्दनः, उपेन्द्रः, इन्द्रावरजः, चक्रपाणिः, चतुर्भुजः, पद्मनाभः, मधुरिपुः, वासुदेवः, त्रिविक्रमः, देवकीनन्दनः, शौरिः (+ सौरिः), श्रीपतिः, पुरुषोत्तमः, वनमाली (=वनमालिन्), बलिध्वंसी (=बलिध्वंसिन्), कंसारातिः, अघोक्षजः, विश्वम्भरः, कैटभजि, विधुः, श्रीवत्सलाञ्छनः (३९ पु), कृष्ण भगवान् के ३९ नाम हैं ॥

[१ पुराणपुरुषः, यज्ञपुरुषः, नरकान्तकः, जलशायी (=जलशायिन्), विश्वरूपः, मुकुन्दः, मुरमर्दनः (७ पु), कृष्णभगवान् के ७ नाम हैं ॥]

२ वसुदेवः, आनकदुन्दुभिः (२ पु), 'कृष्णके पिता' के २ नाम हैं ॥

३ बलभद्रः, प्रलम्बघ्नः, बलदेवः, अभ्युत्ताग्रजः, रेवतीरमणः, रामः, कामपालः, हलायुधः, नीलाम्बरः, रौहिणेयः, ताळाङ्गः, मुसली (=मुसलिन् । + मुषली=मुषलिन्), हली (=हलिन्), सङ्कर्षणः, सीरपाणिः, कालिन्दीभेदनः, बलः (१७ पु), 'बलदेव' के १७ नाम हैं ॥

४ मदनः, मन्मथः, मारः, प्रद्युम्नः, मीनकेतनः, कन्दर्पः, दर्पकः, अनङ्गः, कामः, पञ्चशरः, स्मरः, सम्भरारिः (+ सम्भरारिः), मनसिजः, कुसुमेधुः,

- शम्भरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः ।
 पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २६ ॥
 १ 'अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमखिलका (५)
 नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः (६)
 २ उन्मादनस्तापनश्च शोषणः स्तम्भनस्तथा (७)
 सम्मोहनश्च कामस्य पञ्चबाणाः प्रकीर्तिताः' (८)
 ३ ब्रह्मसूर्विश्वकेतुः स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।
 ४ लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २७ ॥
 ५ 'इन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा (९)
 भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका' (१०)

अनन्यजः, पुष्पधन्वा (=पुष्पधन्वन्), रतिपतिः, मकरध्वजः, आत्मभूः (१९ पु),
 'कामदेव' 'प्रद्युम्न' श्रीकृष्णपुत्रके १९ नाम हैं ॥

१ [अरविन्दम्, अशोकम्, चूतम्, नवमखिलका (खी), नीलोत्पलम्
 (खे० ४ न), ये ५ 'कामदेवके बाण' हैं ॥]

२ [उन्मादन, तापन, शोषण, स्तम्भन, सम्मोहन, ये क्रमसे पूर्वोक्त
 ५ 'कामदेवके बाणोंके धर्म' हैं ॥]

३ ब्रह्मसूः, विश्वकेतुः (+ ऋश्यकेतुः, ऋष्यकेतुः, ऋषकेतुः), अनिरुद्धः, उषा-
 पतिः (४ पु), 'कामदेवके पुत्र' के ४ नाम हैं । (पहलेवाले दो नाम कामदेवके
 तथा अन्तवाले दो नाम अनिरुद्धके हैं, ऐसा भी किसी का मत है) ॥

४ लक्ष्मीः, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्रीः, हरिप्रिया (६ खी), 'लक्ष्मी' के
 ६ नाम हैं ॥

५ [इन्दिरा, लोकमाता (=लोकमातृ), मा, क्षीरोदतनया (+ क्षीरादिध-

१. 'उन्मादनं शोचनं च तथा सम्मोहनं विदुः ।

शोषणं मारणं चैव पञ्च बाणा मनोभुवः ॥ १ ॥

मदनोन्मादनौ चैव मोहनः शोषणस्तथा ।

सन्दीपनः समाख्याताः पञ्च बाणा इमे स्मृताः ॥ २ ॥'

ईदृशः क्षी० स्वा० पाठः ॥

- १ शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सुदर्शनः ।
कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ॥ २८ ॥
- २ 'चापः शार्ङ्गं मुरारेस्तु श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम् (११)
मन्त्राश्च शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः (१२)
सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवश्चानुजो गदः' (१३)
- ३ गरुत्मान् गरुडस्ताक्षर्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।
नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पद्मगाशनः ॥ २९ ॥
- ४ शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।
ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्करश्चन्द्रशेखरः ॥ ३० ॥
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरिशो गिरिशो मृडः ।
मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥
उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।

तनया...), रमा, भार्गवी, लोकजननी, क्षीरसागरकन्यका (८ स्त्री), 'लक्ष्मी' के ८ नाम हैं ॥]

१ पाञ्चजन्यः (पु)—'विष्णुका शङ्ख', सुदर्शनः (पु न)—'विष्णुका चक्र', कौमोदकी (स्त्री)—'विष्णुकी गदा', नन्दकः (पु)—'विष्णुकी तलवार' और कौस्तुभः (पु)—'विष्णुका मणि' है ॥

२ शार्ङ्गम् (न)—'विष्णुका धनुष', श्रीवत्सः (पु)—'विष्णुका चिह्न', शैव्यः, सुग्रीवः, मेघपुष्पः, बलाहकः (४ पु), ४ 'विष्णुके घोड़े', दारुकः (पु)—'विष्णुका सारथी' । उद्धवः (पु)—'विष्णुका मन्त्री' और गदः (पु) 'विष्णुका छोटा भार्ग' है ॥]

३ गरुत्मान् (=गरुत्मन्), गरुडः, ताक्षर्यः, वैनतेयः, खगेश्वरः, नागान्तकः, विष्णुरथः, सुपर्णः, पद्मगाशनः (९ पु) 'गरुड' के ९ नाम हैं ॥

४ शम्भुः, ईशः, पशुपतिः, शिवः, शूली (=शूलिन्), महेश्वरः, ईश्वरः, शर्वः (+ सर्वः), ईशानः, शङ्करः, चन्द्रशेखरः, भूतेशः, खण्डपरशुः, गिरिशः, गिरिशः, मृडः, मृत्युञ्जयः, कृत्तिवासाः (=कृत्तिवासस्), पिनाकी (=पिनाकिन्), प्रमथाधिपः, उग्रः, कपर्दी (=कपर्दिन्), श्रीकण्ठः, शितिकण्ठः, कपालभृत् .

चामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३२ ॥

कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।

हरः स्मरहरो भर्गस्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥

गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।

व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणु रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥

१ 'अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः' (१४)

२ कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवधनुः ।

प्रमथाः स्युः पारिषदा ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३५ ॥

४ 'ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा (१५)

वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः' (१६)

चामदेवः, महादेवः, विरूपाक्षः, त्रिलोचनः, कृशानुरेताः (=कृशानुरेतस्), सर्वज्ञः, धूर्जटिः, नीललोहितः, हरः (+ हारः), स्मरहरो, भर्गः (+ भर्ग्यः), सम्बकः, त्रिपुरान्तकः, गङ्गाधरो, अन्धकरिपुः, क्रतुध्वंसी (=क्रतुध्वंसिन्), वृषध्वजः, व्योमकेशः, भवः, भीमः, स्थाणुः, रुद्रः, उमापतिः (४८ पु) 'शिव' के ४८ नाम हैं ॥

१ [अहिर्बुध्न्यः, अष्टमूर्तिः, गजारिः, महानटः (४ पु), 'शिव' के ४ नाम हैं ॥]

२ कपर्दः (पु) 'शिवका जटासमूह', अजगवम् (न । + अजकवम्), पिनाकः (पु), २ 'शिवका धनुष' और 'प्रमथाः' (पु) 'शिवके सभासद्' हैं ॥

३ ब्राह्मी, (स्त्री । आदि पदसे 'माहेश्वरी, कौमारी' इत्यादि आगे कहे हुए का संग्रह है) 'लोकमातायै' हैं ॥

४ [ब्राह्मी (स्त्री । + ब्रह्माणी), माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा (७ स्त्री), ये ७ 'लोकमातायै' हैं ॥]

१. 'ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही वैष्णवी तथा ॥

कौमारी चर्ममुण्डा च काली सङ्कर्षणीति च ॥ १ ॥' इति ॥

'ब्राह्मयाद्या मातरः स्मृताः' इति स्त्री० स्वा० ॥

२. 'पृथिवी १ सज्जितं २ तेजो ३ वायु ४ राकाश ५ मेघ च ॥

सूर्या ६ चन्द्रमसौ ७ सोमयाजी ८ चेत्यष्ट मूर्तयः ॥१॥' इति यादवः ॥

- १ विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा ।
- २ 'अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा (१७)
प्राप्तिः प्राकाम्यमोक्षित्व वशित्वं चाष्टसिद्धयः' (१८)
- ३ उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी ॥ ३६ ॥
शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला ।
अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाऽम्बिका ॥ ३७ ॥
- ४ 'आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा (१९)
- ५ कर्ममोटी तु चामुण्डा ६ चर्ममुण्डा तु चर्विका' (२०)
- ७ विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपः ।
अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ॥ ३८ ॥
- ८ कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ।
पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥
बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः ।

१ विभूतिः, भूतिः (२ स्त्री), ऐश्वर्यम् (न), 'ऐश्वर्यं यासिद्धि' के ३ नाम हैं । (वे भागे कहे हुए 'अणिमा' आदि भेद से ८ प्रकार के हैं) ॥

२ [अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्तिः (५ स्त्री), प्राकाम्यम्, ईशित्वम्, वशित्वम् (३ न), ये ८ 'सिद्धियाँ' हैं] ॥

३ उमा, कात्यायनी, गौरी, काली (+ काला), हैमवती, ईश्वरी (+ ईश्वरा), शिवा (+ शिषी), भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, सर्वमङ्गला, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, मृडानी, चण्डिका, अम्बिका (१७ स्त्री), 'पार्वती' के १७ नाम हैं ॥

४ [आर्या, दाक्षायणी, गिरिजा, मेनकात्मजा (४ स्त्री) 'पार्वती' के ४ नाम हैं] ॥

५ [कर्ममोटी, चामुण्डा (२ स्त्री) 'चामुण्डा' के २ नाम हैं] ॥

६ [चर्ममुण्डा, चर्विका (+ चण्डिका २ स्त्री), 'चण्डिका' के २ नाम हैं] ॥

७ विनायकः, विघ्नराजः, द्वैमातुरः, गणाधिपः, एकदन्तः, हेरम्बः, लम्बोदरः, गजाननः (८ पु), 'गणेश' के ८ नाम हैं ॥

८ कार्तिकेयः, महासेनः, शरजन्मा (= शरजन्मन्), षडाननः, पार्वतीनन्दनः, स्कन्दः, सेनानीः, अग्निभूः, गुहः, बाहुलेयः, तारकजित्, विशाखः, शिखिवाहनः,

१. 'चर्ममुण्डेति चण्डिका' इति क्षीरस्वामिपाठात् ।

षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥

१ 'शृङ्गी भृङ्गी रिटिस्तुण्डी नन्दिको नन्दिकेश्वरः' (२१)

२ इन्द्रो मरुत्वान्मघवा विडौजाः पाकशासनः ।

वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः ॥ ४१ ॥

जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।

सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ४२ ॥

वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः ।

जम्भभेदी हरिहयः स्वाराणमुचिस्सूदनः ॥ ४३ ॥

सङ्क्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ।

आखण्डलः सहस्राक्षः क्रमुक्षाः सेतस्य तु प्रिया ॥ ४४ ॥

पुल्लोमजा शचीन्द्राणी ४ नगरी त्वमरावती ।

षाण्मातुरः, शक्तिधरः, कुमारः, क्रौञ्चदारणः (+ क्रौञ्चदारणः । १७ पु), 'कार्तिकेय' के १७ नाम हैं ॥

१ [शृङ्गी (= शृङ्गिन्), भृङ्गी (= भृङ्गिन्), रिटिः, तुण्डी (= तुण्डिन्), नन्दिकः, नन्दिकेश्वरः (६ पु), 'नन्दी' के ३ नाम हैं ॥]

२ इन्द्रः, मरुत्वान् (= मरुत्वत्), मघवा (= मघवन् । वै० मघवान्), विडौजाः (= विडौजस्), पाकशासनः, वृद्धश्रवाः (= वृद्धश्रवस्), सुनासीरः (+ शुनासीरः, शुनासीरः), पुरुहूतः, पुरन्दरः, जिष्णुः, लेखर्षभः, शक्रः, शतमन्युः, दिवस्पतिः, सुत्रामा (= सुत्रामन् । + सूत्रामा), गोत्रभिद्वज्री (= वज्रिन्), वासवः, वृत्रहा (= वृत्रहन्), वृषा (= वृषन्), वास्तोष्पतिः, सुरपतिः, बलारातिः, शचीपतिः, जम्भभेदी (= जम्भभेदिन्), हरिहयः, स्वाराट् (= स्वाराज्), नमुचिः, सूदनः, सङ्क्रन्दनः, दुश्च्यवनः, तुराषाट् (= तुहासाह्), मेघवाहनः, आखण्डलः, सहस्राक्षः, क्रमुक्षाः (क्रमुचिन् । ३५ पु), 'इन्द्र' के ३५ नाम हैं ॥

३ पुल्लोमजा, शची (+ सची), इन्द्राणी (३ स्त्री), 'इन्द्राणी' के २ नाम हैं ॥

४ अमरावती (स्त्री), 'इन्द्रकी नगरी' उच्चैःश्रवाः (= उच्चैःश्रवस् । पु),

१. 'शृङ्गी भृङ्गरिटिस्तुण्डिनन्दिनौ नन्दिकेश्वरे ॥' इति स्त्री० त्वा० ॥

हय उच्चैः भवाः सूतो मातलिर्नन्दनं वनम् ॥ ४५ ॥

स्यात् प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः ।

१ पेरवतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४६ ॥

२ हादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ।

शतकोटिः स्वरुः शम्भो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ॥ ४७ ॥

३ ज्योमयानं विमानोऽस्त्री ४ नारदाद्याः सुरर्षयः ।

५ स्यात्सुधर्मा देवसभा ६ पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥

७ मन्दाकिनी विद्यद्वक्त्रा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ।

८ मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ४९ ॥

‘इन्द्र का घोड़ा’; मातलिः (पु) ‘इन्द्र का सारथि’; नन्दनम् (न) ‘इन्द्र का उद्यान’; वैजयन्तः (पु), ‘इन्द्र की अटारी’; जयन्तः, पाकशासनिः (२ पु) ‘इन्द्र के पुत्र’ के २ नाम हैं ॥

१ पेरवतः, अभ्रमातङ्गः, पेरवणः, अभ्रमुवल्लभः (४ पु), ‘पेरवत’ अर्थात् इन्द्रके हाथीके ४ नाम हैं ॥

२ हादिनी (स्त्री), वज्रम् (पु न), कुलिशम् , भिदुरम् (+ भिदिरम् । २ न), पविः, शतकोटिः, स्वरुः (= स्वरु । + स्वरुः=स्वरुस्), शम्भः (+ स-म्भः, शंभः), दम्भोलिः (५ पु), अशनिः (पु स्त्री), ‘वज्र’ के १० नाम हैं ॥

३ ज्योमयानम् (न), विमानः (पु न), ‘पुष्पक विमान’ या ‘देवोंके विमानमात्र’ के २ नाम हैं ॥

४ नारदः (पु) आदि षड्वसे ‘तृम्बुरु, भरत, पर्वत, देवल.....’) ‘देवर्षि’ हैं ॥

५ सुधर्मा (= सुधर्मा, सुधर्मन्), देवसभा (२ स्त्री), ‘देवसभा’ के २ नाम हैं ॥

६ पीयूषम् (+ पेयूषम्), अमृतम् (२ न) सुधा (स्त्री), ‘अमृत’ के ३ नाम हैं ॥

७ मन्दाकिनी, विद्यद्वक्त्रा, स्वर्णदी, सुरदीर्घिका (४ स्त्री), ‘आकाश-गङ्गा’ के ४ नाम हैं ॥

८ मेरुः, सुमेरुः, हेमाद्री, रत्नसानुः, सुरालयः (५ पु) ‘सुमेरु पर्वत’ के ५ नाम हैं ॥

- १ पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥
- २ सनत्कुमारो वैधात्रः ३ स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ।
 *नासत्यावश्विनौ दस्त्रावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५१ ॥
- ४ स्त्रियां बहुष्परसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।
- ५ 'घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा (२२)
 सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः' (२३)
- ६ हाहा ह्रूह्रश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५२ ॥
- ७ अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।
 कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥

१ मन्दारः, पारिजातकः, सन्तानः, कल्पवृक्षः (४ पु), हरिचन्दनम् (पु न), ये ५ 'देवताओं के वृक्ष' हैं ॥

२ सनत्कुमारः (= सनात्कुमारः), वैधात्रः (२ पु), 'सनकादि' के २ नाम हैं । ('आदि' शब्दसे 'सनक, सनन्दन, सनातन' का संग्रह है) ॥

३ स्वर्वैद्यौ, अश्विनीसुतौ, नासत्यौ, अश्विनौ, दस्त्रौ, आश्विनेयौ (१ पु-नि० द्वि० व०), 'अश्विनौकुमार' के १ नाम हैं ॥

४ अप्सरसः (स्त्रो, नि० व० व०), 'उर्वशी आदि स्वर्ग की वेश्याओं' का १ नाम है ॥

५ (घृताची, मेनका, रम्भा, उर्वशी, तिलोत्तमा, सुकेशी, मञ्जुघोषा (७ स्त्री), इत्यादि उन 'अप्सरसों' के विशेष नाम हैं) ॥

६ हाहाः (+ हहाः), ह्रूह्रः (२ पु), इत्यादि 'देवताओं के यहाँ गानेवाले गन्धर्व' (पु) हैं । 'आदि' शब्दसे 'चित्ररथ, विशावसु.....' का संग्रह है ॥

७ अग्निः, वैश्वानरः, वह्निः, वीतिहोत्रः, धनञ्जयः, कृपीटयोनिः, ज्वलनः, जातवेदाः (जातवेदस्), तनूनपात् 'बर्हिः' (= बर्हिस्, बर्हिष् । + बर्हिः = बर्हि)

* 'भागुरिस्त्वाह—'नासत्यदस्त्रौ यमजावकंजावश्विनौ यमौ ॥'

नासत्यसहितौ दस्त्राविति व्याख्येयं न त्वेको नासत्योऽन्यो दस्त्र इति श्रौ० स्त्रा० ॥

- बर्हिःशुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः ।
 आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥
 रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ।
 हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥
 सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
 शुचिरप्पित्त १ मौर्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥ ५६ ॥
 २ वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।
 ३ त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः ४ सन्तापः संज्वरः समौ ॥ ५७ ॥
 ५ 'उल्का स्यान्निर्गतज्वाला ६ भूतिर्भसितभस्मनी (२४)

शुष्मा (=शुष्मन् । म० बर्हिःशुष्मा=बर्हिःशुष्मन्), कृष्णवर्त्मा (=कृष्णवर्त्मन्), शोचिष्केशः, उषर्बुधः, आश्रयाशः (+ आशयाशः), बृहद्भानुः, कृशानुः, पावकः, अनलः, रोहिताश्वः (+ लोहिताश्वः), वायुसखः, शिखावान् (=शिखावत्), आशु-शुक्षणिः, हिरण्यरेताः (=हिरण्यरेतस्), हुतभुक् (=हुतभुज्), दहनः, हव्य-वाहनः, सप्तार्चिः (=सप्तार्चिष् । + सप्तार्चिः + सप्तार्चिः), दमुनाः, (=दमु-नस् । + दमुनाः=दमूनस्), शुक्रः, चित्रभानुः, विभावसुः, शुचिः (३३ पु), अप्पित्तम् (न), 'अग्नि' के ३४ नाम हैं ॥

१ और्वः (+ ऊर्वः), वाडवः, वडवानलः (३ पु), 'वडवानल' के ३ नाम हैं ॥

२ उवालः, कीलः (२ पु स्त्री), अर्चिः (= अर्चिष्, अर्चिस् । + अर्चिः = अर्चि । स्त्री न), हेतिः, शिखा (२ स्त्री), 'आगकी लहर' के ५ नाम हैं ॥

३ स्फुलिङ्गः, अग्निकणः (१ त्रि), 'चिनगारी' के २ नाम हैं ॥

४ सन्तापः, संज्वरः (२ पु), 'अग्नि के ताप' के २ नाम हैं ॥

५ [उल्का (स्त्री), 'निकली हुई ज्वाला' अर्थात् तारा टूटने या लुप्त का १ नाम है] ॥

६ [भूतिः (पु स्त्री), भसितम्, भस्म (=भस्मन् । १ न), क्षारः

*'कालो १, करालो २, मनोजवा ३, सुकोहिता ४, सुधूर्त्रवर्णा ५, स्फुलिङ्गिनी ६, विशदासा ७' इति—

कराली सुधूमिनी श्वेता कोहिता नीलकोहिता। सुवर्णा पद्मरागा च सप्त जिह्वा विभावसोः॥

वाचस्पत्युक्ता इति वा सप्तार्चिष इत्यभेयम् ॥

- क्षारो रक्षा च १ दावस्तु दवो वनहुताशनः' (२५)
 २ धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् ।
 कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराट् यमः ॥ ५८ ॥
 कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।
 ३ राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽक्षप आशरः ॥ ५९ ॥
 रात्रिश्चरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः ।
 यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥
 ४ प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्पतिः ।
 ५ श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६१ ॥
 पृषद्वहो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ।
 समीर-मारुत-मरुज्जगत्प्राण-समीरणाः ॥ ६२ ॥
 नभस्वद्वात-पवन-पवमान प्रभञ्जनाः ।

(पु), रक्षा (स्त्री), 'राक्ष' के ५ नाम हैं] ॥

१ [दावः, दवः, वनहुताशनः (३ पु), 'दावाग्नि' के ३ नाम हैं] ॥

२ धर्मराजः, पितृपतिः, समवर्ती (=समवर्तिन्), परेतराट् (—परेतराज्), कृतान्तः, यमुनाभ्राता (=यमुनाभ्रातृ), शमनः, यमराट् (=यमराज्), यमः, कालः, दण्डधरः, श्राद्धदेवः, वैवस्वतः, अन्तकः (१४ पु), 'यमराज' के १४ नाम हैं ।

३ राक्षसः, कौणपः, क्रव्यात् (=क्रव्याद्), क्रव्यादः, अक्षपः (+ अक्षपः), आशरः (+ आशिरः), रात्रिश्चरः, रात्रिचरः, कर्बुरः (+ कर्बुरः), निकषात्मजः, यातुधानः (+ जातुधानः), पुण्यजनः, नैर्ऋतः (१३ पु), यातु, रक्षः (=रक्षस् । २ न) 'राक्षस' के १५ नाम हैं ॥

४ प्रचेताः (= प्रचेतस्), वरुणः (+ वरुणः), पाशी (=पाशिन्), याद-सांपतिः, अप्पतिः (५ पु), 'वरुण' के ५ नाम हैं ॥

५ श्वसनः, स्पर्शनः, वायुः, मातरिश्वा (= मातरिश्वाङ्), सदागतिः, पृषद्व-हः, गन्धवहः, गन्धवाहः, अनिलः, आशुगाः, समीरः, मारुतः, मरुत्, जगत्प्राणः (=म० जगत्, प्राणः), समीरणः, नभस्वान् (=नभस्वत्), वातः (+ वातिः), पवनः, पवमानः, प्रभञ्जनः, (२० पु) 'हवा' के २० नाम हैं ॥

- १ 'प्रकम्पनो महावातो २ झंझावातः सवृष्टिकः' (२६)
 ३ प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ॥ ६३ ॥
 ४ 'हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले (२७)
 उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः' (२८)
 शरीरस्था इमे ५ रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ।
 जवो ६ऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥
 सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ।
 ७ सततानारताश्रान्तसन्तताविरतानिशम् ॥ ६५ ॥
 नित्यानवरताजस्रमप्य ८ थातिशयो भरः ।
 अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ ६६ ॥
 तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढषाढवृढानि च ।

१ [प्रकम्पनः (पु), 'आँधी' का १ नाम है] ॥

२ [झंझावातः (पु) 'वर्षाके सहित हवा' अर्थात् क्षपसी का १ नाम है] ॥

३ प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, व्यानः (५ पु), ये ५ 'शरीरमें रहने वाले वायु' हैं ॥

४ [हृदयमें 'प्राण', गुदामें 'अपान', नाभिमण्डलमें 'समान', कण्ठदेशमें 'उदान' और सम्पूर्ण शरीरमें 'व्यान' (५ पु) नामक वायु रहता है] ॥

५ रंहः (= रंहस्), तरः (=तरस् । २ न), रयः, स्यदः, जवः (१ पु), 'वेग'के ५ नाम हैं ॥

६ शीघ्रम्, त्वरितम्, लघु, क्षिप्रम्, अरम्, द्रुतम्, सत्वरम्, चपलम्, तूर्णम्, अविलम्बितम्, आशु (११ न), 'शीघ्र'के ११ नाम हैं ॥

७ सततम्, अनारतम्, अश्रान्तम्, सन्ततम्, अविरतम्, अनिशम्, नित्यम्, अनवरतम्, अजस्रम् (९ न) 'नित्य' के ९ नाम हैं । (इनमेंसे 'सतत' शब्दका प्रयोग जहाँ बीच में दूसरा काम नहीं किया जाय, वही होता है; जैसे—यह काम सतत करता है अर्थात् निरन्तर करता है) ॥

८ अतिशयः, भरः (२ पु), अतिवेलम्, भृशम्, अत्यर्थम्, अतिमात्रम्, उद्गाढम्, निर्भरम्, तीव्रम्, एकान्तम्, नितान्तम्, गाढम्, षाढम्, वृढम्

- १ क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सस्वगामि यत् ॥ ६७ ॥
 २ कुबेरस्यम्बकसखा यक्षराट् गुह्यकेश्वरः ।
 मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥
 किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ।
 यक्षैकपिकूलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ॥ ६९ ॥
 ३ अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।
 कैलासः स्थानमलका पूर्वमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥
 ४ स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ।

(१२ न), 'अतिशय' अर्थात् अधिकके १४ नाम हैं । (इनमेंसे 'अतिशय' शब्दका प्रयोग जहाँ किसी काम को अनेक बार किया जाय, वहीं होता है । जैसे—अतिशय करता है अर्थात् बारम्बार करता है) ॥

१ 'शीघ्रम्.....दृढम्' तक शब्दोंका प्रयोग द्रव्यवाचक न रहने पर नपुंसकलिङ्गमें ही होता है और द्रव्यवाचक होनेपर तीनों लिङ्गों में उनका प्रयोग होता है । जैसे पहले उदा०—'भृशं धनम्, भृशं पण्डितः, भृशं पठति, भृशं दुष्टा.....' इनमें 'भृशम्' शब्द केवल न० है । दूसरा उदा०—'शीघ्रोऽश्वः, शीघ्रा लक्ष्मीः, शीघ्रं गमनम्.....' इनमें 'शीघ्रम्' शब्द त्रि० है । 'भरः, अतिशयः' इन दोनों शब्दोंका प्रयोग केवल पु० में ही होता है, अर्थात् ये विशेष्याधीन नहीं होते) ॥

२ कुबेरः, त्र्यम्बकसखा, यक्षराट् (= यक्षराज्), गुह्यकेश्वरः, मनुष्यधर्मा (= मनुष्यधर्मन्), धनदः, राजराजः, धनाधिपः, किन्नरेशः, वैश्रवणः, पौलस्त्यः, नरवाहनः, यक्षः, एकपिकुलः, ऐलविलः (+ ऐडविलः, ऐडविलः) श्रीदः, पुण्यजनेश्वरः (१७ पु) 'कुबेर' के १७ नाम हैं ॥

३ चैत्ररथम् (न) 'कुबेरका उद्यान', नलकूबरः (पु) 'कुबेरका पुत्र', कैलासः (पु) 'कुबेरका निवासस्थान', अलका (स्त्री) 'कुबेरकी नगरी', पुष्पकम् (न) 'कुबेर का विमान' है ॥

४ किन्नरः, किम्पुरुषः, तुरङ्गवदनः, मयुः (४ पु), 'किन्नर' अर्थात् 'कुबेरके दूत' के ४ नाम हैं ॥

- १ निधिर्ना शेवधिर्भेदाः २ पञ्चशङ्खादयो निधेः ॥ ७१ ॥
 ३ *महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ (२९)
 मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव' (३०)
 इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

२. अथ व्योमवर्गः ॥

- ४ द्यादिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् ।
 नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥
 विद्याद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।
 ५ 'विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् (३१)

१ निधिः, शेवधिः (२ पु), 'निधिसामान्य' अर्थात् खजानामात्र
 के २ नाम हैं ॥

२ पद्मः, शङ्खः (२ पु).....'खजानेके भेद' हैं ॥

३ [महापद्मः, पद्मः, शङ्खः, मकरः, कच्छपः, मुकुन्दः, कुन्दः, नीलः, खर्वः
 (९ पु), ये ९ 'निधिविशेष' हैं] ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

२. अथ व्योमवर्गः ॥

४ द्यौः (= द्यौ), द्यौः (= दिव् । २ स्त्री); अभ्रम्, व्योम (= व्योमन्),
 पुष्करम्, अम्बरम्, नभः (= नभस्), अन्तरिक्षम्, गगनम्, अनन्तम्, सुरवर्त्म
 (= सुरवर्त्मन्), खम्, विषत्, विष्णुपदम् (१४ न), आकाशम्, विहायः
 (= विहायस् । २ पु न); 'आकाश' के १६ नाम हैं ॥

५ [विहायसः, नाकः, द्युः (अ०), तारापथः, अन्तरिक्षम् (न), मेघाध्वः

* अथ श्लोकः श्रीहमचन्द्राचार्यविरचितामिषानचिन्तामणौ (२।१०७) नाममाकाशा
 समुपलभ्यते ॥

'पद्मोऽपि महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव' ॥ १ ॥
 इत्ययं व्याख्यासुभाषाः पाठः ॥

तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाबिलम् (३२)
 विहायाः शकुने पुंसि गगने पुंनपुंसकम् (३३)
 इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ दिग्बर्गः ॥

- १ दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ।
- २ प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥
 उत्तरा दिगुदीची स्याद् ३ दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।
- ४ 'अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् (३४)
 प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु' (३५)
- ५ इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥

(=मेघाध्वन् । शे० ४ पु), महाबिलम् (न), विहायः (=विहायस्, पु न ।
 किन्तु पञ्चिवाचक होनेपर यह 'विहायस्' शब्द केवल पुंलिङ्ग ही है) 'आकाश'
 के ८ नाम हैं ॥ इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ दिग्बर्गः ॥

१ दिक् (=दिश), ककुप् (=ककुभ्), काष्ठा, आशा, हरित् (५ स्त्री),
 'दिशाओं' के ५ नाम हैं ॥

२ प्राची, अवाची (+ अपाची), प्रतीची, उदीची (४ स्त्री), 'पूर्व,
 दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा' के क्रमशः १—१ नाम हैं ॥

३ दिश्यम् (त्रि), 'दिशामें होने वाले पदार्थ' का १ नाम है । (जैसे =
 दिश्यो गजः, दिश्या करिणी, दिश्यं वस्त्रम्.....) ॥

४ [अवाचीनम्, उदीचीनम्, प्रतीचीनम् प्राचीनम् (४ त्रि), 'दक्षिण,
 उत्तर, पश्चिम और पूर्व दिशामें होनेवाले पदार्थ' के क्रमशः १-१ नाम हैं] ॥

५ इन्द्रः, वह्निः, पितृपतिः, नैऋतः, वरुणः, मरुत्, कुबेरः, ईशः (८ पु),
 'पूर्व दिशा, अग्नि कोण, दक्षिण दिशा, नैऋत कोण, पश्चिम दिशा,
 वायव्य कोण, उत्तर दिशा और ईशान कोण' के क्रमशः १—१ स्वामी

कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशा क्रमात् ।

१ 'रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः' (३६)

बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ब्रह्मा' (३७)

२ 'ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥

पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

३ 'करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥

ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।

हैं । (अर्थात् पूर्व दिशाके स्वामी इन्द्र, अग्निकोण के स्वामी अग्नि, दक्षिण दिशा के स्वामी यमराज,) ॥

१ रविः, शुक्रः, महीसूनुः (मंगलः), स्वर्भानुः (राहुः), भानुजः (शनिः) विधुः (चन्द्रः), बुधः, बृहस्पतिः (८ पु) 'पूर्व दिशा, अग्नि कोण, आदि आठ दिशाओं' के क्रमशः १—१ ग्रह हैं । (जैसे—पूर्व दिशाका ग्रह 'सूर्य', अग्निकोणका 'शुक्र', दक्षिण दिशाका 'मङ्गल'.....] ॥

२ ऐरावतः, पुण्डरीकः, वामनः, कुमुदः, अञ्जनः पुष्पदन्तः, सार्वभौमः, सुप्रतीकः (८ पु), 'पूर्वदिशा, अग्नि कोण, दक्षिण दिशा, नैऋतकोण, पश्चिम दिशा वायव्यकोण, उत्तर दिशा और ईशानकोण' के क्रमशः १—१ दिग्गज हैं । (अर्थात् पूर्व दिशाका दिग्गज 'ऐरावत', अग्नि कोणका दिग्गज 'पुण्डरीक', नैऋत्यकोणका दिग्गज 'वामन'.....) ॥

३ अभ्रमुः, कपिला, पिङ्गला, अनुपमा, ताम्रकर्णी, शुभ्रदन्ती (+ शुभ्रदन्ती), अङ्गना (+ अञ्जना), अञ्जनावती (८ स्त्री), 'पूर्व दिशा, अग्नि कोण, दक्षिण कोण आदि आठ दिशाओंकी हथिनी' और 'ऐरावत, पुण्डरीक, वामन आदि आठ दिग्गजोंकी स्त्रियों' के क्रमशः १—१ नाम हैं । (अर्थात् 'पूर्व दिशाकी हथिनी' 'अभ्रमु' अग्नि कोणकी हथिनी 'कपिला', दक्षिण दिशाकी

१. 'ऐरावतः पुण्डरीकः कुमुदाऽअनवामनाः' इति भागुरिः क्रमं व्यत्यस्तवान् । माणापि 'ऐरावतः सुप्रतीकः इति' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'करिण्यो...नावती' अयमंशः क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नास्ति, किन्तु टीकायासुपलभ्यते । व्या० सु०, अम० वि० पुस्तके मूल एवास्ति । 'वामना चाञ्जनावती' इति क्षी० स्वा० पाठः ॥

- १ कलीबाढ्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक्खियाम् ॥ ५ ॥
 २ अभ्यन्तरं त्वन्तरालं ३ चक्रवालं तु मण्डलम् ।
 ४ अन्नं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः ॥ ६ ॥
 धाराधरो जलधरस्तडित्वान् वारिदोऽम्बुभृत् ।
 घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ॥ ७ ॥
 ५ कादम्बिनी मेघमाला ६ त्रिषु मेघमवेऽन्नियम् ।
 ७ स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च ॥ ८ ॥
 ८ शम्पाशतहृदाह्वादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ।
 तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि ॥ ९ ॥

हयिनी 'पिङ्गला'..... । इसी तरह ऐरावतकी स्त्री 'अन्नमु', पुण्डरीककी स्त्री 'कपिला', वामनकी स्त्री 'पिंगला'.....' ॥

१ अपदिशम् (न, अ), विदिक् (= विदिश् स्त्री । + प्रदिक् = प्रदिश्), 'दिशाओंके मध्यभाग' अर्थात् 'कोण' के २ नाम हैं ॥

२ अभ्यन्तरालम्, अन्तरालम् (२न) 'बीच' अर्थात् मध्यमभागके २ नाम हैं ॥

३ चक्रवालम्, मण्डलम् (२ न), 'घेरा, गोलाई' के २ नाम हैं ॥

४ अन्नम् (न), मेघः, वारिवाहः, स्तनयित्नुः, बलाहकः, धाराधरः, जलधरः (+ पयोधरः), तडित्वान् (= तडित्वत्), वारिदः, अम्बुभृत्, घनः, जीमूतः, मुदिरः, जलमुक् (= जलमुच् । + पयोमुक् = पयोमुच्), धूमयोनिः (१४ पु) 'बादल' के १५ नाम हैं ॥

५ कादम्बिनी, मेघमाला (२ स्त्री), 'मेघ-समूह' के २ नाम हैं ॥

६ अन्नियम् (त्रि), 'मेघमें होनेवाले पदार्थ' का १ नाम है ॥ (जैसे-अन्नियो धारापातः, अन्नियं जलम्, अन्निया आपः,.....) ।

७ स्तनितम्, गर्जितम्, रसितम्,..... (३ न । 'आदि' शब्दसे स्वनितम्,.....) 'मेघके गर्जन या तड़पने' के ३ नाम हैं ॥

८ शम्पा (+ शम्बा), शतहृदा, ह्वादिनी, ऐरावती, क्षणप्रभा, तडित्, सौदामनी (+ सौदामिनी), विद्युत्, चञ्चला, चपला (१० स्त्री) 'बिजली' के १० नाम हैं ॥

- १ स्फूर्जथुर्ध्वजनिर्घोषो २ मेघज्योतिरिरम्मदः ।
- ३ इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेष ऋजुरोहितम् ॥ १० ॥
- ४ वृष्टिर्ध्वं ५ तद्विघातेऽवग्राह्यप्रहो समौ ।
- ६ धारासम्पात आसारः ७ सीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥
- ८ वर्षोपलस्तु करका ९ मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ।
- १० अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तधिरपवारणम् ॥ १२ ॥

१ स्फूर्जथुः, वज्रनिर्घोषः (+ वज्रनिष्पेयः । २ पु), 'बिजली गिरने के समयकी आवाज' के २ नाम हैं ॥

२ मेघज्योतिः (= मेघज्योति, —मेघज्योतिः = मेघज्योतिष्), इरम्मदः (२ पु०), 'बादलके प्रकाश' के २ नाम हैं । (यह प्रकाशप्रायः प्रातःकाल या सायंकाल बादलके लाल-पीला होनेसे होता है)

३ इन्द्रायुधम्, शक्रधनुः (= शक्रधनुष्), ऋजुरोहितम् (३ न) 'इन्द्रधनुष' के ३ नाम हैं । (म० पहलेवाले दो शब्द पहले अर्थ और 'रोहितम्' यह एक शब्द 'सीधा इन्द्रधनुष' इस अर्थ में है) ॥

४ वृष्टिः (स्त्री), वर्षम् (न) 'वर्षा' के २ नाम हैं ॥

५ अवग्रहः, अवग्राहः (२ पु), 'वर्षाके न होने' अर्थात् 'सूखा पड़ने' के २ नाम हैं ॥

६ धारासम्पातः, आसारः (२ पु), 'लगातार जोरसे वर्षा होने' के २ नाम हैं ।

७ सीकरः (पु । + शीकरः) 'पानीके कण' अर्थात् 'पानी की छोटी-छोटी बूँदों' का १ नाम है ॥

८ वर्षोपलः (पु), करका (पु स्त्री), 'बनौरी, ओला' के २ नाम हैं । (जो पानी बादलसे भी ऊँचे स्थानमें जाकर बर्फके समान कड़ा और सफेद होकर पानीके साथ गिरता है, जिसे पत्थर पड़ना कहते हैं ॥)

९ दुर्दिनम् (न), 'जब आकाशमें लगातार बादल घिरे रहें, ऐसे समय' का एक नाम है ॥

१० अन्तर्धा, व्यवधा (२ स्त्री), अन्तधिः (पु), अपवारणम्, अपिधा-

अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।

- १ हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः ॥ १३ ॥
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।
अञ्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः ॥ १४ ॥
द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।
- २ कला तु षोडशो भागो ३ बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥
- ४ भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।
- ५ चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना ६ प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥
- ७ कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।

नम्, तिरोधानम्, पिधानम्, आच्छादनम् (५ न), 'ढाँकने' अर्थात् 'कपड़े आदिसे छिपाने' के ८ नाम हैं ॥

१ हिमांशुः, चन्द्रमाः (= चन्द्रमस्), चन्द्रः, इन्दुः कुमुदबान्धवः, विधुः, सुधांशुः, शुभ्रांशुः, ओषधीशः, निशापतिः, अञ्जः, जैवातृकः, सोमः (—सोमा, =सोमन्), ग्लौर्मृगाङ्कः (+ शशाङ्कः), कलानिधिः, द्विजराजः, शशधरः, नक्षत्रेशः, क्षपाकरः (+ निशाकरः । २० पु०), 'चन्द्रमा' के २० नाम हैं ॥

२ कला (स्त्री) 'पूर्ण चन्द्रमाके सोलहवें हिस्से' का १ नाम है । (चन्द्रमाकी छेसोलह कलायें हैं, अतः सोलहवें भागको एक कला कहते हैं) ॥

३ बिम्बः (पु न), मण्डलम् (त्रि), 'सूर्य या चन्द्रमाके बिम्ब' के २ नाम हैं ॥

४ भित्तम् (न), शकलम्, खण्डम् (२ पु न), अर्धः (पु) 'खण्ड, टुकड़ा' के ४ नाम हैं; किन्तु 'बराबर का हिस्सा' इस अर्थ में 'अर्ध' शब्द निरय नपुंसक है ॥

५ चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना (३ स्त्री), 'चाँदनी' के ३ नाम हैं ॥

६ प्रसादः (पु), प्रसन्नता (स्त्री), 'प्रसन्नता' के २ नाम हैं ॥

७ कलङ्कः, अङ्कः (२ पु), लाञ्छनम्, चिह्नम्, लक्ष्म (=लक्षमन्),

* 'अमृता मानदा पूषा पुष्टिस्तुष्टी रतिर्धृतिः ।

शशिनी चन्द्रिका कान्तिन्योऽस्ना श्रीः प्रीतिरज्ञा ॥ १ ॥

पूषणा चाथ पूर्णा स्युः कलाश्चन्द्रस्य 'चोदश्च' इति ॥

- १ सुषमा परमा शोभा २ शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १७ ॥
- ३ अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुद्दिनं हिमम् ।
प्रालेयं मिहिका चाथं ४ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १८ ॥
- ५ शीतं गुणे ६ तद्वदर्थः सुषीमः शिशिरो जडः ।
तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः ॥ १९ ॥
- ७ ध्रुव औत्तानपादिः स्यादगस्त्यः कुम्भसम्भवः ।
मैत्रावरुणिर ९ स्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी ॥ २० ॥

लक्षणम् (+ लषमणम् ४ न) 'चिह्न' अर्थात् निशान के ६ नाम हैं ॥

१ सुषमा (स्त्री), 'अधिक शोभा' का १ नाम है ॥

२ शोभा (म० अभिव्या), कान्तिः, द्युतिः, छविः (४ स्त्री) 'शोभा' के ४ नाम हैं ॥

३ अवश्यायः, नीहारः, तुषारः (३ पु), तुद्दिनम्, हिमम्, प्रालेयम्, (३ न), मिहिका (स्त्री । + मिहिका), 'पास्ता पड़ने' अर्थात् 'भोस, हिम' के ७ नाम हैं ॥

४ हिमानी, हिमसंहतिः (२ स्त्री) 'बहुत पास्ता पड़ने' के २ नाम हैं ॥

५ शीतम् (न) 'यह शब्द 'गुणवाचक' है, अर्थात् शीतलता के अर्थमें नपुंसकलिंग में ही प्रयुक्त होता है' ॥

६ सुषीमः (+ सुषिमः, सुषीमः), शिशिरः, जडः, तुषारः, शीतलः, शीतः, हिमः (७ त्रि), 'ठण्ढा गुणवाले द्रव्य' अर्थात् 'ठण्ढी हवा पानी' इत्यादिके ७ नाम हैं । 'तुषार, हिम, शीत' इन तीन शब्दोंके निरुद्ध लक्षणासे द्रव्यादि अर्थात् हवा, पानी इत्यादि भी अर्थ हैं, अतः इन शब्दोंको दोनों जगह (गुण और गुणीके पर्याय में) कहा गया है' ॥

७ ध्रुवः, औत्तानपादिः (२ पु) 'उत्तानपाद' के पुत्र अर्थात् 'मनुके पौत्र ध्रुव' के २ नाम हैं ॥

८ अगस्त्यः (+ अगस्तिः), कुम्भसम्भवः (+ कुम्भजः), मैत्रावरुणः (+ मैत्रावरुणः । ३ पु), 'अगस्त्य मुनि' के ३ नाम हैं ॥

९ लोपामुद्रा (स्त्री), 'अगस्त्य मुनिकी स्त्री' का १ नाम है ॥

- १ नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाऽप्युडु वा स्त्रियाम् ।
 २ दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा ३ अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥
 ४ राधा विशाखा ५ पुष्ये तु सिष्यतिष्यौ ६ भविष्ठया ।
 समा धनिष्ठा ७ स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥
 ८ मृगशीर्षे मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।

१ नक्षत्रम्, ऋक्षम्, भम् (३ न), तारा, तारका (१ स्त्री), उडुः (स्त्री न), 'नक्षत्र' के ६ नाम हैं ॥

२ दाक्षायण्यः (स्त्री नि० ब० व०) 'अश्विनी, भरणी..... सत्ता-इस नक्षत्रों' का १ नाम है ॥

३ अश्वयुक् (= अश्वयुज्), अश्विनी (२ स्त्री), 'अश्विनी' के २ नाम हैं ॥

४ राधा, विशाखा (२ स्त्री) 'विशाखा नक्षत्र' के २ नाम हैं ॥

५ पुष्यः, सिष्यः, तिष्यः (३ पु), 'पुष्य नक्षत्र' के ३ नाम हैं ॥

६ भविष्ठा, धनिष्ठा (२ स्त्री), 'धनिष्ठा नक्षत्र' के २ नाम हैं ॥

७ प्रोष्ठपदाः (+ प्रौष्ठपदाः), भाद्रपदाः (२ पु स्त्री, नि० ब० व०), 'पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र' के दो नाम हैं ॥

८ मृगशीर्षम्, मृगशिरः (= मृगशिरस् । २ न), आग्रहायणी (स्त्री),

१. अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी' मृगः ।

आर्द्रा-पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा च ततो मघा ॥ १ ॥

पूर्वाफल्गुनिका ज्येष्ठा तत उत्तरफल्गुनी ।

हस्तश्रित्रा ततः स्वाती विशाखा मैत्रशं ततः ॥ २ ॥

ज्येष्ठा मूलं ततः पूर्वोत्तराषाढेऽभिजित्ततः ।

श्रवणश्च धनिष्ठा च ततश्च शततारकाः ॥ ३ ॥

पूर्वोत्तराभाद्रपदे रेवती तदनन्तरम् ।

अष्टाविंशतिराख्यातास्तारका मुनिसत्तमेः ॥ ४ ॥ इति ।

उत्राभिजिन्मानमाह—

'अभिजिद्भोगमिदं वै वैश्वदेवान्यपादमखिलं च तत् ।

आद्याश्चतस्रो नाख्योऽथ हरिभस्यैतस्य रोहिणोविदम् ॥ १ ॥' इति ।

अश्विन्यादिवत्राभिजितः स्वतन्त्रमानमतः सप्तविंशतिरेव नक्षत्राणि मुख्यानीत्यतस्तदेवोक्तमित्यवश्यम् ।

- १ इक्ष्वास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥
- २ बृहस्पतिः सुराचार्यो गोपतिर्षिषणो गुरुः ।
जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिक्षण्डिजः ॥ २४ ॥
- ३ शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।
- ४ अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २५ ॥
- ५ रौहिणेयो बुधः सौम्यः ६ समौ सौरिशनैश्चरौ ।
- ७ तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥ २६ ॥
- ८ सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिक्षण्डिनः ।

‘मृगशिरा नक्षत्र’ के ३ नाम हैं ॥

१ इक्ष्वाः (स्त्री, नि० ब० व० । ‘इक्ष्वाकाः’ स्त्री० स्वा०), ‘मृगशिरा नक्षत्र’ के शिरोभागमें उदय होनेवाली पाँच ताराओं का १ नाम है ॥

२ बृहस्पतिः (+ बृहतां पतिः), सुराचार्यः गोपतिः (वै० गोपतिः), षिषणः गुरुः, जीवः, आङ्गिरसः, वाचस्पतिः (+ वाक्पतिः, वाचां पतिः), चित्रशिक्षण्डिजः (९ पु), ‘बृहस्पति’ के ९ नाम हैं) ॥ (ये देवताओं के गुरु हैं) ॥

३ शुक्रः, दैत्यगुरुः, काव्यः, उशनाः (= उशनस्), भार्गवः, कविः (६ पु), ‘शुक्राचार्य’ के ६ नाम हैं (ये दैत्यों के गुरु हैं) ॥

४ अङ्गारकः, कुजः, भौमः, लोहिताङ्गः, महीसुतः (५ पु । इसी तरह ‘धरणीसुतः, भूमिसुतः……’), ‘मङ्गलग्रह’ के ५ नाम हैं ॥

५ रौहिणेयः, बुधः, सौम्यः (३ पु), ‘बुध’ के ३ नाम हैं ॥

६ सौरिः (+ शौरिः, सूरः), शनैश्चरः (+ शनिः, पञ्चुः, मन्दः…… ३ पु), ‘शनि’ के दो नाम हैं ॥

७ तमः (+ तमस्, न + तमः = तम, पु), राहुः, स्वर्भानुः, सैहिकेयः, विधुन्तुदः (४ पु), ‘राहु’ के ५ नाम हैं ॥

८ चित्रशिक्षण्डिनः (= चित्रशिक्षण्डिन्, पु, नि० ब० व०), ‘सप्तर्षियों’ का एक नाम है । (उनके मरीचि १, अङ्गिरा २, अत्रि ३, पुलस्त्य ४, पुलह ५, ऋतु ६ और वसिष्ठ ७ ये नाम हैं, इन्हींको ‘चित्रशिक्षण्डि’ कहते हैं) ॥

१. मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः ऋतुः ॥

वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्येष्ठाश्चित्रशिक्षण्डिनः ॥ १ ॥ इति ॥

१ राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥

२ सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।

भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥

भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ।

विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥

द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।

विभावसुर्ग्रहपतिस्त्रिषाम्पतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥

भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।

३ 'पश्चाक्षस्तेजसाराशिश्छायानाथस्तमिस्रहा (३८)

कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धुः प्रयीतनुः (३९)

प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः (४०)

१ लग्नम् (न), 'राशि' का १ नाम है । 'मेष १, वृष २, मिथुन ३, कर्क ४, सिंह ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिक ८, धनुः ९, मकर १०, कुम्भ ११, और १२ मीन' ये 'बारह राशियाँ होती हैं ॥

२ सूरः, सूर्यः, अर्थमा (= अर्थमन्), आदित्यः, द्वादशात्मा (= द्वादशात्मन्), दिवाकरः, भास्करः, अहस्करः, ब्रध्नः, प्रभाकरः, विभाकरः, भास्वान् (= भास्वत्), विवस्वान् (= विवस्वत्), सप्ताश्वः हरिदश्वः, उष्णरश्मिः, विकर्तनः, अर्कः, मार्तण्डः (= मार्ताण्डः), मिहिरः (= मिहरः, महिरः) अरुणः, पूषा (= पूषन्), द्युमणिः (= अम्बरमणिः, गगनमणिः,), तरणिः, मित्रः, चित्रभानुः, विरोचनः, विभावसुः, ग्रहपतिः, त्रिषाम्पतिः, अहर्पतिः (वै०-अहःपतिः, अह-पतिः), भानुः, हंसः, सहस्रांशुः (= चण्डांशुः), तपनः (= तापनः), सविता (= सवितृ), रविः (३७ पु) 'सूर्य' के ३७ नाम हैं ॥

[पश्चाक्षः, तेजसाराशिः, छायानाथः, तमिस्रहा (= तमिस्रहन्), कर्मसाक्षी (= कर्मसाक्षिन्), जगच्चक्षुः (= जगच्चक्षुष्), लोकबन्धुः, प्रयीतनुः, प्रद्योतनः, दिनमणिः, खद्योतः, लोकबान्धवः, हनः, भगः, धामनिधिः, अंशुमाखी

१. 'मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके ॥

तुला च वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकौ ॥ १ ॥' इति ॥

इनो भगो धामनिधिश्चांशुमाढ्यब्जिनीपतिः' (४१)

१ माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपाश्विकाः ॥ ३१ ॥

२ सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गुरुडाग्रजः ।

३ परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

४ किरणोऽस्त्रमयूखांशुगभस्तिघृणिघृणयः* ।

भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

५ स्युः प्रभारुग्रचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः ।

(= अंशुमालिन्), अब्जिनीपतिः (+ पद्मिनीपतिः १७ पु), 'सूर्य' के १७ नाम हैं] ॥

१ माठरः, पिङ्गलः, दण्डः (३ पु), † 'सूर्य' के पार्श्ववर्तियों अर्थात् 'सूर्य' के पासमें रहनेवालों' के ३ नाम हैं ।

२ सूरसूतः, अरुणः, अनूरुः, काश्यपिः, गुरुडाग्रजः (५ पु), 'सूर्य' के सारथि' के ५ नाम हैं ॥

३ परिवेषः (+ परिवेशः), परिधिः (२ पु), उपसूर्यकम्, मण्डलम् (२ न), 'मण्डल' के ४ नाम हैं ('सूर्य' और चन्द्रमाके चारों तरफ बिसलाई पड़नेवाले तेजोविशेषको 'मण्डल' कहते हैं) ॥

४ किरणः, उस्त्रः, मयूखः, अंशुः, गभस्तिः, घृणिः (+ घृणिः), घृणिः (+ घृणिः, पृश्निः, रश्मिः), भानुः, करोः (९ पु), मरीचिः (पु स्त्री), दीधितिः (स्त्री), 'किरण' के ११ नाम हैं ॥

५ प्रभा, रुक् (= रुक्), रुचिः, र्विट् (= र्विष्), भा, भाः (= भास्),

* ".....घृणिघृणयः," ".....घृणिपृश्नयः," ".....घृणिरश्मयः" इति पाठान्तराणि ।

† 'इन्द्रादयो षाष्टादश नामान्तरेणार्कपरिचारकाः, यत्सौर(तन्त्र)म्—

'तत्र शक्रो वामपार्श्वे दण्डाख्यो दण्डनायकः ॥

बहिस्तु दक्षिणे पार्श्वे पिङ्गको वामनश्च सः ॥ १ ॥

बभ्रोऽपि दक्षिणे पार्श्वे बभ्रेन्माठरसंज्ञया' ॥ इति ।

एवमन्ये यावायाः गुहहराङ्गुखरादयः । तेषु प्राधान्यात्नव एवोक्तं ॥ इति । स्त्री० स्था० ॥
कश्चित् 'वामनश्च सः' इत्यत्र स्थाने 'वामनश्च सः' इति, 'वामनायाः' इत्यत्र, 'बभ्रे' 'पाठायाः' इति च पाठान्तरम् ॥

- रोचिः शोचिरुभे क्लोबे १ प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥
 २ कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।
 ३ तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वन्मृगतृष्णा मरीचिका ॥ ३५ ॥
 इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

४. अथ कालवर्गः ॥

५ कालो दिष्टोऽप्यनेहाऽपि समयोऽदृश्यथ पञ्चतिः ।

छविः, घुतिः, दीप्तिः (९ स्त्री), रोचिः (= रोचिष्), शोचिः (= शोचिष् ।
 २ न), 'प्रभा' के ११ नाम हैं ॥

१ प्रकाशः, द्योतः, आतपः (३ पु), 'धूर' अर्थात् 'घाम' के ३ नाम हैं ।
 ('दीप्ति, आतप आदि यद्यपि असाधारण धर्म हैं' तथापि कविलोग इनका प्रयोग
 सामान्यरूपसे करते हैं, जैसे—'मुखदीप्ति, चन्द्रातपः.....') ॥

२ कोष्णम्, कवोष्णम्, मन्दोष्णम्, कदुष्णम् (४ न), 'थोड़ा गर्म' के
 ४ नाम हैं । (ये शब्द धर्मिवाचक होनेपर त्रि० हैं, जैसे—'कोष्णं जलम्,
 कोष्णः प्रस्तरः, कोष्णा शिला,.....' इन उदाहरणोंमें 'जल, प्रस्तर और
 शिला' शब्द के क्रमशः नपुंसक, पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग होनेसे 'कोष्ण' शब्द भी
 क्रमशः नपुंसक, पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्गमें प्रयुक्त हुआ है) ॥

३ तिग्मम्, तीक्ष्णम्, खरम् (३ न), 'अधिक गर्म' के ३ नाम हैं ॥

४ मृगतृष्णा, मरीचिका (२ स्त्री), 'मृगतृष्णा' के २ नाम हैं । (गर्मके
 दिनोंमें रेतीली जमीनपर सूर्यका ताप लगनेसे जलका जो आभास होता है उसे
 'मृगतृष्णा' कहते हैं) ॥

इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

४. अथ कालवर्गः ॥

५ कालः, दिष्टः, अनेहा (+ अनेहस्), समयः (४ पु) 'समय' के
 ४ नाम हैं ॥

१ पञ्चतिः (+ पञ्चती), प्रतिपत् (= प्रतिपद् । २ स्त्री) 'परिचा तिथि' के
 १ नाम हैं ॥

- प्रतिपद् द्वे इमे स्त्रीत्वे १ तदाद्यास्तितथयो द्वयोः ॥ १ ॥
 २ घञो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ।
 ३ प्रत्युषोऽहर्मुखं कल्यमुषःप्रत्युषसो अपि ॥ २ ॥
 प्रभातं च ४ दिनान्ते तु सायं सन्ध्या पितृप्रसूः ।
 ५ प्राह्णापराह्णमध्याह्निसन्ध्यदमथ शर्वरी ॥ ३ ॥
 निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणवा क्षपा ।

तिथिः (पु स्त्री), 'प्रतिपत्, द्वितीया आदि तिथियों' का १ नाम है । ('वे प्रतिपत् १, द्वितीया २, तृतीया ३, चतुर्थी ४, पञ्चमी ५, षष्ठी ६, सप्तमी ७, अष्टमी ८, नवमी ९, दशमी १०, एकादशी ११, द्वादशी १२, त्रयोदशी १३, चतुर्दशी १४, और शुक्लपक्ष में पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष में अमावास्या १५, पन्द्रहवीं तिथियाँ होती हैं') ॥

२ घञः (पु), दिनम्, अहः (=अहन् । २ न), दिवसः, वासरः (+ वारः । २ पु न) 'दिन' के ५ नाम हैं ॥

३ प्रत्युषः (+ प्रत्युषस्, पु न), अहर्मुखम्, कल्यम् (+ काल्यम्), उषः (= उषस् । + उषा, अ०), प्रत्युषः (= प्रत्युषस्), प्रभातम् (५ न), 'प्रातःकाल' के ६ नाम हैं ॥

४ दिनान्तः (पु), सायम् (अ०, न । + सायः [पु), सन्ध्या (+ सन्धा), पितृप्रसूः (२ स्त्री), 'सायंकाल' के ४ नाम हैं ॥

५ त्रिसन्ध्यम् (न । वै० त्रिसन्ध्या, स्त्री), 'प्रातःकाल, मध्याह्निकाल और सायंकाल; इन तीनों समयके समूह' का १ नाम है ॥

६ शर्वरी (+ शार्वरी), निशा (+ निट् = निश), निशीथिनी, रात्रिः

* 'भ्युष्टं विभातं द्वे क्लीबे पुंसि गोसर्गं इष्यते' इत्यधिकः क्षेत्रकाशः कचिस्समुपलभ्यते ।

+ 'प्रतिपक्ष द्वितीया च तृतीया च ततः परम् ।

चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी ततः ॥ २ ॥

नवमी दशमी चेबेकादशी द्वादशी तथा ।

त्रयोदशी ततो शेषा पुनर्हेमा चतुर्दशी ॥ २ ॥

शुक्ले पञ्चदशी सत्रिः पूर्णिमा समुदीर्यते ।

कृष्णपक्षे तु विषुवैरमावस्या प्रकीर्तिता ॥ ३ ॥ इति ॥

□ तथा च जीर्णः—'आदत्तदीपं....साव दूर्तः' इति नेवच अ० २१।५२ ।

विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

- १ तमिस्रा तामसी रात्रिरज्योत्स्नी चन्द्रिकयाऽन्विता ।
- २ आगामिवर्तमानाद्वयुक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥
- ४ गणरात्रं निशा बह्वयः ५ प्रदोषो रजनीमुखम् ।
- ६ अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ ७ द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥
- ८ स पर्वसन्धिः प्रतिपत्पञ्चदशोर्यदन्तरम् ।

(+ रात्री), त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, तमस्विनी, रजनी(+ रजनिः), यामिनी, तमी (+ तमिः, तमा । १२ स्त्री), 'रात' के १२ नाम हैं ॥

१ तमिस्रा (स्त्री) 'अंधेरी रात' का १ नाम है ॥

२ ज्योत्स्नी (स्त्री । + ज्योत्स्ना, ज्योत्स्नी), 'उजेली रात' का १ नाम है ॥

३ क्षपक्षिणी (स्त्री), 'वर्त्तमान और आगेके दिनसे युक्त रात' का १ नाम है । तुल्यन्यायसे वर्त्तमान रात्रि और दूसरी रात्रिके सहित दूसरे दिन का भी यह नाम है ॥

४ गणरात्रम् (न), 'रात्रियोंके समूह' का १ नाम है ॥

५ प्रदोषः (पु), रजनीमुखम् (न), 'रातके पहले हिस्से' के २ नाम हैं ॥

६ अर्धरात्रः, निशीथः (पु २), 'आधीरात' के २ नाम हैं ॥

७ यामः, प्रहरः (२ पु०), 'प्रहर' के २ नाम हैं । (दिन और रातके आठवें हिस्से अर्थात् तीन घण्टेका १ 'प्रहर' होता है) ॥

८ पर्व (= पर्वन्, न । म०, 'पर्व = पर्वन्, सन्धिः, ये दो नाम या 'पर्व-सन्धिः' यह एक नाम) 'प्रतिपद् और पूर्णिमा या अमावास्याके मध्यभाग' का १ नाम है ॥

• 'पक्षिणी' पक्षपुल्याभ्यामहोभ्यां वेदित्वा निशा ॥' इति ॥

'पक्षिणी' पूर्णिमायां स्यादिहक्षया शकमेदिनि ।

आगामिवर्त्तमानाद्वयुक्ताभ्यामपि क्षिपात् ॥ २ ॥

इति मेदिनीकोशः ॥

- १ पक्षान्तौ पञ्चदशौ द्वे २ पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥
- २ कलाहीने सानुमतिः ४ पूर्ण राका निशाकरे ।
- ५ अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्क्रमः ॥ ८ ॥
- ६ सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली ७ सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।
- ८ उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूर्णि च ॥ ९ ॥

१ पक्षान्तः (पु), पञ्चदशी (स्त्री), 'पूर्णिमा या अमावास्या तिथि' के २ नाम हैं ॥

२ पौर्णमासी, पूर्णिमा (२ स्त्री), 'पूर्णिमा' अर्थात् 'शुक्लपक्षकी अन्तिम तिथि' के २ नाम हैं ॥

३ अनुमतिः (स्त्री) 'जिसमें चन्द्रमा की कला कुछ क्षीण हो उस पूर्णिमा' का अर्थात् 'प्रतिपक्षक पूर्णिमा' का १ नाम है ॥

४ राका (स्त्री), 'जिसमें चन्द्रमाकी कला परिपूर्ण हो, उस पूर्णिमा' का अर्थात् 'शुद्ध पूर्णिमा' का १ नाम है ॥

५ अमावास्या, अमावस्या (२ स्त्री । + अमावसी, अमावासी, अमामासी, अमामासी, अमा), ७ दर्शः, सूर्येन्दुसङ्क्रमः (२ पु), 'अमावास्या' अर्थात् 'कृष्णपक्षकी अन्तिम तिथि' के ४ नाम हैं ॥

६ + सिनीवाली (स्त्री), 'जिसमें चन्द्रमाकी कला पूर्णतया क्षीण नहीं हुई हो, उस अमावास्या' का अर्थात् 'चतुर्दशीयुक्त अमावास्या' का १ नाम है ॥

७ [कुहूः (स्त्री । + कुहुः), 'जिसमें चन्द्रमाकी कला पूर्णतया क्षीण हो गई हो, उस अमावास्या' अर्थात् 'शुद्ध अमावस्या' का १ नाम है ॥

८ उपरागः, ग्रहः (२ पु), 'सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण' के २ नाम हैं ॥

* + [या पूर्वामावास्या सिनीवाली योत्तरा सा कुहूः' इति श्रुतिः । अयमभिप्रायः—चतुर्दश्याश्चरमग्रहोऽमावस्याया अष्टौ ग्रहाश्चेति नवग्रहरात्मकचन्द्रस्य क्षयसमयः शास्त्र-सम्मतः । तत्र प्रथमग्रहद्वये चन्द्रस्य सूक्ष्मत्वम्, अन्तिमग्रहद्वये कृत्स्नत्वम् । अतोऽमा-वास्यायाः प्रथमग्रहः 'सिनीवाली' संज्ञकः, अन्तिमग्रहद्वयं 'कुहू' नामकम्, मध्यमग्रह-पञ्चकं 'दर्श' नामकमित्यवश्यम् ॥

- १ सोपप्लवोपरक्तौ द्वास्वग्न्युत्पात उपाहितः ।
- ३ एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरो ॥ १० ॥
- ४ अष्टादश निमेषास्तु काष्ठाऽत्रिंशत् ताः कला ।
- ६ तास्तु त्रिंशत्क्षणऽस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥
- ८ ते तु त्रिंशद्द्वोरात्रः ९ पक्षस्ते दश पञ्च च ।

१ सोपप्लवः, उपरक्तः (२ पु), 'ग्रहण लगनेपर राहुसे अस्त' (कुछ कटे हुए) सूर्य या चन्द्रमा के २ नाम हैं ॥

१ अग्न्युत्पातः, उपाहितः (२ पु), 'आकाशमें अग्नि-विकार, तारा टूटना, धूमकेतु नामकी ताराका उदय होना और उसके उपद्रव, सूर्य-ग्रहणादिमें आग्नेयमण्डलसे उत्पन्न तेजोविशेष' इनके २ नाम हैं ॥

३ पुष्पवन्तौ (= पुष्पवत्, नि० द्विव० । + पुष्पदन्तौ । म० पुष्पवन्तौ = पुष्पवन्तः) 'सूर्य और चन्द्रमा इन दोनों का १ नाम है ॥

४ निमेषः (पु), 'निमेष' का १ नाम है । आँखके पलक गिरनेमें जितना समय लगे उसे 'निमेष' कहते हैं) । काष्ठा (स्त्री), 'अट्ठारह निमेषके बराबर समय' का 'काष्ठा' यह १ नाम है ॥

५ कला (स्त्री), 'तीस काष्ठाके बराबर समय' का १ नाम है ॥

६ क्षणः (पु) 'तीस कलाके बराबर समय' का १ नाम है ॥

७ मुहूर्तः (पु न) 'बारह क्षण' अर्थात् 'दो घड़ी' के बराबर समय का १ नाम है ॥

८ अहोरात्रः (पु), 'दिन-रात' अर्थात् 'तीस मुहूर्त' या साठ घड़ी का १ नाम है ॥

९ पक्षः (पु), 'पन्द्रह दिन-रात या पक्ष' का १ नाम है ॥

* 'यावता समयेन चकितः परमाणुः पूर्वदेशं जगद्गुत्तरदेशमुपसंगच्छेत् स कालः 'क्षणः' इति पातञ्जलध्याम्यम् । तस्य च क्षणस्यातीन्द्रियत्वम् । निमेषस्य चतुर्थो भागः 'क्षणः' इति टीकाकृतः' इति वै० सि० मञ्जुशायी शब्दबुद्ध्यादीनां क्षणिकत्वनिरूपणावसरे कुञ्जिकाबामुक्तः क्षणत्त्वतीन्द्रियोऽन्य एवेत्यवधेयम् ॥

- १ पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ २ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥
- ३ द्वौ द्वौ माघादिमासौ स्यादतुष्टैरयनं त्रिभिः ।
- ५ अयने द्वे गतिरव्युदक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ १३ ॥
- ६ समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् ।

१ शुक्लः, कृष्णः (२ पु), ये 'पक्षके दो भेद' हैं । (उसमें उजियाले पक्षको 'शुक्ल' और अँधियारे पक्षको 'कृष्ण' कहते हैं) ॥

२ मासः (पु), दो पक्ष, महीना का १ नाम है । ('मार्गशीर्ष १, पौष २, माघ ३, फाल्गुन ४, चैत्र ५, वैशाख ६, ज्येष्ठ ७, आषाढ ८, श्रावण ९, भाद्र १०, आश्विन ११ और कार्तिक १२ ये बारह महीने होते हैं') ॥

३ ऋतुः (पु), 'ऋतु' का १ नाम है । मार्गशीर्ष अर्थात् अगहनसे दो-दो महीनोंके 'हेमन्त' आदि एक-एक ऋतु होते हैं, इस प्रकार एक वर्षमें ६ ऋतु होते हैं । ('हेमन्त १, शिशिर २, वसन्त ३, ग्रीष्म ४, वर्षा ५ और शरत् ६ ये ६ ऋतु हैं, मार्गशीर्ष (अगहन) और पौषमें 'हेमन्त' १, माघ और फाल्गुनमें 'शिशिर' २, चैत्र और वैशाखमें 'वसन्त' ३, ज्येष्ठ और आषाढमें 'ग्रीष्म' ४, श्रावण और भाद्रमें 'वर्षा' ५ तथा आश्विन और कार्तिक में 'शरत्' ६ ऋतु होते हैं') ॥

४ अयनम् (न), 'अयन' का १ नाम है । यह ३ ऋतु या ६ मासका होता है ।

५ सूर्यके गतिभेदसे यह 'अयन' दो प्रकारका होता है, उसमें जब सूर्यकी गति कुछ उत्तरकी तरफ होती है उसे 'उत्तरायणम्' (न), अर्थात् 'उत्तरायण' और जब सूर्यकी गति कुछ दक्षिणकी तरफ होती है उसे 'दक्षिणायनम्' (न), अर्थात् 'दक्षिणायन' कहते हैं । 'उत्तरायण' में मकरसे मिथुन राशितक और 'दक्षिणायन' में कर्कसे धनु राशितक सूर्यकी संक्रान्ति रहती है') ॥

६ विषुवत्, विषुवम् (+ विषुगम् । २ न), 'जब रात दिन दोनों बराबर हो जाते हैं, उस समय'के २ नाम हैं । ('जब तुला और मेषकी सूर्यसंक्रान्ति होती है, तब दिन रात बराबर होते हैं') ॥

- १ 'पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी २ मासे तु यत्र सा (४२)
 नास्ति स पौषो ३ माघाद्याश्चैवमेकादशापरे' (४३)
 ४ मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥
 ५ पौषे तैषसहस्यौ द्वौ ६ तपा माघेऽऽथ फाल्गुने ।
 स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः ८ स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥ १५ ॥

१ [पौषी (स्त्री), 'पुष्य नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा' अर्थात् 'पौष मासकी पूर्णिमा' का १ नाम है] ।

२ [पौषः (पु), 'पूँस महीना' अर्थात् जिसमें 'पौषा' पूर्णिमा हो, उसका १ नाम है] ॥

३ [इसी तरह माघ आदि ग्यारह महीनोंको भी समझना चाहिये, अर्थात् मघा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'माघी' महीना 'माघः' १, पूर्वोत्तरफाल्गुनी नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'फाल्गुनी' मास 'फाल्गुनः' २, चित्रा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'चैत्री' मास 'चैत्रः' ३, विशाखा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'वैशाखी' मास 'वैशाखः' ४, ज्येष्ठा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'ज्यैष्ठी' मास 'ज्येष्ठः' ५, पूर्वोत्तराषाढा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'आषाढी' मास 'आषाढः' ६, श्रवण नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'श्रावणी' मास 'श्रावणः' ७, पूर्वोत्तराभाद्रपद नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'भाद्रपदी' मास 'भाद्रपदः' ८, अश्विनी नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'आश्विनी' मास 'आश्विनः' ९, कृत्तिका नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'कार्तिकी' मास 'कार्तिकः' १० और मृग नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'मार्गी' मास 'मार्गः' ११ होते हैं, इनमें पूर्णिमाके वाचक 'माघी' आदि ११ शब्द स्त्री० और मासके वाचक 'माघ' आदि ११ शब्द पुं० हैं] ॥

४ मार्गशीर्षः, सहाः (= सहस्), मार्गः, आग्रहायणिकः (+ आग्रहायणः । ४ पु), 'अग्रहण महीने' के ४ नाम हैं ॥

५ पौषः, तैषः, सहस्यः (३ पु), 'पौष मास' के ३ नाम हैं ॥

६ तपाः (= तपस्), माघः (२ पु), 'माघ मास' के २ नाम हैं ॥

७ फाल्गुनः, तपस्यः, फाल्गुनिकः (३ पु) 'फाल्गुन मास' के ३ नाम हैं ॥

८ चैत्रः, चैत्रिकः, मधुः (३ पु), 'चैत्र मास' के ३ नाम हैं ॥

- १ वैशाखे माघवो राघो २ ज्येष्ठे शुक्रः ३ शुचिस्त्वयम् ।
 आषाढे ४ श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥
 ५ स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः सभाः ।
 ६ स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि ७ स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥
 बाहुल्योर्जौ कार्तिकिको ८ हेमन्तः ९ शिशिराऽस्त्रियाम् ।
 १० वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिः ११ ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥
 निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

- १ वैशाखः, माघवः, राघः (१ पु), 'वैशाख भास' के ३ नाम हैं ॥
 २ ज्येष्ठः (+ ज्यैष्ठः), शुक्रः, (२ पु), 'ज्येष्ठ मास' के २ नाम हैं ॥
 ३ शुचिः, आषाढः (+ आषाढकः । २ पु), 'आषाढ मास' के २ नाम हैं ॥
 ४ श्रावणः, नभाः (= नभस्) श्रावणिकः (३ पु), 'श्रावण मास' के ३ नाम हैं ॥
 ५ नभस्यः, प्रौष्ठपदः, भाद्रः, भाद्रपदः (४ पु), 'भाद्र मास' के ४ नाम हैं ॥
 ६ आश्विनः, इषः, आश्वयुजः (३ पु), 'आश्विन मास' अर्थात् 'कार' के ३ नाम हैं ॥
 ७ कार्तिकः, बाहुल्यः, ऊर्जः, कार्तिकिकः (४ पु), 'कार्तिक मास' के ४ नाम हैं ॥
 ८ हेमन्तः (पु । + हेमा, = हेमन्, पु), 'हेमन्त ऋतु' का १ नाम है ।
 ('यह अगहन और पौष मासमें होता है') ॥
 ९ शिशिरः (पु न), 'शिशिर ऋतु' का १ नाम है । ('यह माघ और फाल्गुन मासमें होता है') ॥
 १० वसन्तः, पुष्पसमयः, सुरभिः (+ ऋतुराजः । ३ पु), 'वसन्त ऋतु' के ३ नाम हैं । ('यह चैत वैशाख मास में होता है') ॥
 ११ ग्रीष्मः, ऊष्मकः, (+ तपः, उष्णकः, ऊष्णकः, तपः, ऊष्मणः), निदाघः, उष्णोपगमः (+ उष्णोपगमः), उष्णः (+ ऊष्णः), ऊष्मागमः (+ उष्मागमः), तपः (७ पु), 'ग्रीष्म ऋतु' के ७ नाम हैं । ('यह ज्येष्ठ और आषाढ मास में होता है') ॥

- १ स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूमि वर्षा २ अथ शरत्स्त्रियाम् ॥ १९ ॥
 ३ षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।
 ४ संवत्सरो वत्सरोऽब्दो द्वायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥
 ५ मासेन स्याद्दहोरात्रः पैत्रो ६ वर्षेण वैवतः ।

१ प्रावृट् (= प्रावृष्, स्त्री), वर्षाः (स्त्री, नि० ब० व०) 'वर्षा ऋतु' के २ नाम हैं । ('यह श्रावण और भादों मासमें होता है') ॥

२ शरत् (= शरद्, स्त्री), 'शरद् ऋतु' का १ नाम है । ('यह आश्विन और कार्तिक मासमें होता है') ॥

३ मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन महीनेसे हर दो-दो महीनोंमें हेमन्त आदि एक एक ऋतु होते हैं । 'ऋतु' शब्द (पु) है । ('इनका क्रम पृष्ठ ३९ श्लोक १३ में कहा जा चुका है, अतः वहीं से देखिये') ॥

४ संवत्सरः (+ परिवत्सरः), वत्सरः, अब्दः (३ पु), द्वायनः (पु न । म० ४ पु न), शरत् (= शरद्, स्त्री), समाः (स्त्री०, नि० ब० व०), 'वर्ष, साल' के ६ नाम हैं ('यह १२ महीनेका होता है') ॥

५ मनुष्योंके एक महीनेका 'पैत्रः अहोरात्रः' (पु) अर्थात् 'पितरोंकी दिन-रात' होती है । ('उसमें मनुष्योंके कृष्णपक्षमें पितरोंका दिन' और मनुष्योंके शुक्लपक्षमें 'पितरोंकी रात' होती है । जिस मतमें आधीरातके बाद दिनका आरम्भ माना जाता है—जैसा कि अंग्रेजीमें तारीखोंका क्रम है; उसके अनुसार यह कथन ठीक है, वस्तुतः तो मनुष्योंके कृष्णपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धसे शुक्लपक्षकी अष्टमीके पूर्वार्द्धतक 'पितरोंका दिन' और मनुष्योंकी शुक्लपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धसे कृष्णपक्षकी अष्टमीके पूर्वार्द्धतक 'पितरोंकी रात' होती है; इस तरह मनुष्योंकी अमावास्याके अन्तमें 'पितरोंका मध्याह्न' और मनुष्योंकी पूर्णिमाके अन्तमें 'पितरोंकी आधी रात' होती है') ॥

६ मनुष्योंके एक वर्ष या उत्तरायण और दक्षिणायन का 'दैवः अहोरात्र' (पु) अर्थात् 'देवताओंकी एक दिन-रात' होती है । ('इसमें उत्तरायण

* 'पित्र्ये राज्यदन्तो मासः प्रविभागस्तु पक्षयोः ।

कर्मचेष्टास्वदः कृष्णः शुक्लः स्वप्नाय शर्वरी ॥ १ ॥' इति मनुः १।३६ ॥

१ वैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः—

अर्थात् सूर्यकी मकरसंक्रान्तिसे मिथुनसंक्रान्तितक 'देवताओंका दिन' और दक्षिणायन अर्थात् सूर्यकी कर्कसंक्रान्तिसे धनुसंक्रान्तितक 'देवताओंकी रात' होती है । यह भी आधीरातसे दिनारम्भसे गणनानुसार ही है, वस्तुतः तो उत्तरायणके उत्तरार्द्ध अर्थात् सूर्यकी मेषसंक्रान्तिके प्रथम दिनसे दक्षिणायनके पूर्वार्द्ध अर्थात् सूर्यकी कन्यासंक्रान्तिके अन्तिम दिनतक 'देवताओंका दिन' और दक्षिणायनके उत्तरार्द्ध अर्थात् सूर्यकी तुलासंक्रान्तिके प्रथम दिनसे उत्तरायणके पूर्वार्द्ध अर्थात् मीनसंक्रान्तिके अन्तिम दिनतक 'देवताओंकी रात' होती है । इस प्रकार उत्तरायणके अर्थात् सूर्यकी मिथुनसंक्रान्तिके अन्तिम दिनको 'देवताओंका मध्याह्न' और दक्षिणायनके अर्थात् सूर्यकी धनुसंक्रान्तिके अन्तिम दिनको 'देवताओंकी आधीरात' होती है) ॥

१ देवताओंके दो हजार युगका 'ब्राह्मः महोरात्रः' (पु) अर्थात् 'ब्रह्माकी दिन-रात' होती है । ('देवताओंके ३६० दिन या मनुष्योंके ३६० वर्षका 'दिव्यवर्षम्'(न) अर्थात् 'देवताओंका एक वर्ष' होता है । और बाहर हजार दिव्य वर्ष (देवताओंके वर्ष) का 'मनुष्योंका चतुर्युग' ('सत्ययुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग') होता है, यही 'देवताओंका एक युग' है ।

१. 'वैवे रात्र्यहनी वर्षं प्रविभागस्तयोः पुनः ।
अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्वादक्षिणायनम् ॥ १ ॥ इति मनुः १।६७ ॥
२. 'कृतं त्रेता द्वापरञ्च कलिश्चेति चतुर्युगम् ।
प्रोच्यते तत्सहस्रं तु ब्रह्मणो दिनमुच्यते ॥ १ ॥ इति वि० पु० ।
कृतं सत्ययुगम्, अन्ये प्रसिद्धाः ॥
३. 'चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणान्तु कृतं युगम् ।
तस्य तावच्छती संख्या सन्ध्यांश्च तथाविधः ॥ १ ॥
इतरेषु ससन्ध्येषु ससन्ध्यांशेषु च त्रिषु ।
एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ॥ २ ॥
यदेतत्परिसङ्ख्यातमादावेव चतुर्युगम् ।
एतद्वादयसादकं 'देवानां युगमुच्यते' ॥ ३ ॥ इति मनुः २ । ६९-७१ ॥

—१ कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

२ मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।

देवताओं के इसी दो हजार युगका 'ब्रह्माकी एक दिन-रात' होती है; अर्थात् देवताओंके एक हजार युगका 'ब्रह्माका दिन' और उतने ही (देवताओंके एक हजार युग) की "ब्रह्माकी रात" होती है') ॥

१ वही ब्रह्माकी दिन-रात मनुष्योंका 'कल्प' (५० व० भी होता है), 'कल्प' अर्थात् स्थिति और प्रलयका काल है । ('उसमें ब्रह्माके दिनमें 'मनुष्यों का स्थितिकाल और ब्रह्माकी रातमें 'मनुष्योंका प्रलयकाल' है') ॥

२ देवताओंके एकहत्तर युगका 'मन्वन्तरम्' (न), १ 'मन्वन्तर' अर्थात् चौदह मनुओंमेंसे प्रत्येक मनुका स्थितिकाल होता है । (स्वायम्भुव १ स्वरोचिष २, औत्तमि ३, तामसि ४, रैवत ५, आयुष ६, वैवस्वत ७, सावर्णि ८, दक्षसावर्णि ९, ब्रह्मावर्णि १०, धर्मसावर्णि ११, रौद्रसावर्णि १२, रौषसावर्णि १३ और भौत्यसावर्णि १४ ये चौदह मनु हैं' इनमेंसे प्रत्येकके स्थितिकालको 'मन्वन्तर' कहते हैं । उनमें ६ मनु बीत चुके हैं, सातवाँ 'वैवस्वत' मन्वन्तर बीत रहा है और अन्य सात बाकी हैं । 'पृष्ठ ३८ श्लोक ११ से यहाँ तक कहे

१ 'देविकानां युगानां तु सप्तं परिसङ्ख्यया ।

ब्रह्मेकमहर्षेण तावती रात्रिमेव च ॥ १ ॥ इति मनुः १।७२ ॥

२ 'यत्प्राग्द्वादशसाहस्रमुदितं देविकं युगम् ।

तदेकसप्ततिगुणं मन्वन्तरमिहोच्यते ॥ १ ॥ इति मनुः १।७३ ॥

३ 'मनुः स्वायम्भुवो नाम मनुःस्वरोचिषस्तथा ।

औत्तमिस्तामसश्चैव रैवतश्चायुषस्तथा ॥ १ ॥

एते तु मनवोऽतीताः सप्तमस्तु रवेः सुतः ।

वैवस्वतोऽयं यस्त्येतत्सप्तमं वर्त्तते युगम् ॥ २ ॥

सावर्णिर्दक्षसावर्णो ब्रह्मासावर्ण इत्यपि ।

धर्मसावर्णं रुद्रस्तु सावर्णो रौच्यभौत्यवत् ॥ ३ ॥ इति वि० पु० ।

हुप कालका मान चक्रमे स्पष्ट है ॥

* 'अष्टादश निमेषास्तु (१।४।११) इत्यत आरभ्य 'युगानामेकसप्ततिः (१।४।२२) इत्यन्तग्रन्थस्य कालशानारमको निष्कर्षोऽत्र चक्रे द्रष्टव्यः ॥

ॐ अथ कालमानबोधकचक्रम् ॐ

नेत्रस्पन्दकाल,	१ निमेषः (३६ विपला)	(५३५ सेकेण्ड)
१८ निमेषाः	१ काष्ठा (३ विपला)	(५५ सेकेण्ड)
३० काष्ठाः	१ कला (२० विपला)	(८ सेकेण्ड)
३० कलाः	१ क्षणः (१० पला)	(४ मिण्ट)
१२ क्षणाः	१ मुहूर्तः (२ घटयौ)	(४८ मिण्ट)
३० मुहूर्ताः	१ अहोरात्रः (मानुषः)	(२४ घण्टा)
१५ अहोरात्राः	१ पक्षः (मानुषः)	१ पैत्रं दिनं निशा वा
२ पक्षौ	१ मासः (मानुषः)	१ अहोरात्रः (वैत्रः)
१२ मासाः	१ वर्षम् (मानुषम्)	१ अहोरात्रः (दैवः)
३६० देवाहोरात्राः	३६० मानुषवर्षाणि	१ वर्षम् (दिव्यम्)
१२०० दिव्यवर्षाणि	४३२००० मानुषवर्षाणि	१ कलिमानम्
२४०० "	८६४००० "	१ द्वापरमानम्
३६०० "	१२९६००० "	१ त्रेतामानम्
४८०० "	१७२८००० "	१ सत्ययुगमानम्
एवं १२००० "	४३२०००० "	मानुषं चतुर्युगमानम् वा देवं युगम्
१२००० दिव्यवर्षाणि × १०००	४३२००००० मानुषवर्षाणि × १००० =	१ दिनम् (ब्राह्मम्)
= १२०००००० दिव्यवर्षाणि	४३२००००००० मानुषवर्षाणि	
"	"	१ रात्रिः (ब्राह्मी)
१२०००००० + १२०००००० =	४३२००००००० ÷ ४३२००००००० =	१ अहोरात्रः (ब्राह्मः)
२४०००००० दिव्यवर्षाणि	= ८६४००००००० मानुषवर्षाणि	
१२००० दिव्यव. = चतुर्युगमानम्	४३२०००० मानुषवर्षाणि × ७१ =	१ मन्वन्तरम्
× ७१ = ८५२००० दिव्यवर्षाणि	३०६७२०००० मानुषवर्षाणि	

'मुकुटस्तु ३०८५७१४२८ वर्षाणि इमासाः १५ दिवसाः ४५ घटयः ५१ पलाः = १ मन्वन्तरम्' इत्यादि

- १ संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥
 २ अक्षी पङ्क्तं पुमान् पाप्मा पापं किलिबषकर्मषम् ।
 कलुषं वृजिनैर्नोऽघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥
 ३ स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।
 ४ मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसम्मदः ॥ २४ ॥
 स्यादानन्दान्धुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ।
 ५ श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ २५ ॥
 भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ।
 शस्तं ६ चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥
 ७ मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ ।

१ संवर्तः, प्रलयः, कल्पः, क्षयः, कल्पान्तः, (५ पु), 'प्रलय काल' के ५ नाम हैं ॥

२ पङ्क्तम् (न पु), पाप्मा (= पाप्मन्, पु) पापम् किलिबषम्, कर्मषम्, कलुषम्, वृजिनम्, एनः (= एनस्), अघम्, अंहः (= अंहस् + अंघः, अंघस्), दुरितम्, दुष्कृतम् (१० न), 'पाप' के १२ नाम हैं ॥

३ धर्मः (पु न । + धर्मा = धर्मन्, पु), पुण्यम्, श्रेयः (= श्रेयस्), सुकृतम् (३ न) वृषः (पु) 'धर्म' के ५ नाम हैं ॥

४ सुव् (= सुद्), प्रीतिः (२ स्त्री), प्रमदः, हर्षः, प्रमोदः, आमोदः, संमदः, आनन्दथुः, आनन्दः, (७ पु), शर्म (= शर्मन्), शातम् (+ सातम्) सुखम् (३ न), 'हर्ष' के १२ नाम हैं ॥

५ श्वःश्रेयसम् (श्वःश्रेयसम्), शिवम्, भद्रम् (भन्दम्), कल्याणम्, मङ्गलम्, शुभम्, भावुकम्, भविकम्, भव्यम्, कुशलम् (+ कुषलम् । १० न), 'क्षेम' शस्तम् (२ न पु) 'कल्याण' के १२ नाम हैं ॥

६ 'पाप, पुण्य' शब्द और 'सुख' शब्दसे 'शस्त' शब्द तक १३ शब्द द्रव्यविशेष में प्रयुक्त होने पर त्रिलिङ्ग होते हैं । (जैसे—'पापो मनुष्यः, पापो निघनता, पापं दैन्यम् । पुण्यः प्रतापः, पुण्यां सङ्घः, पुण्यं यज्ञः । कल्याणी बन्धुः, कल्याणी भार्या, कल्याणं विसम्') ॥

७ मतल्लिका, मचर्चिका (२ नि० स्त्री) प्रकाण्डम् (नि० न । + पु)

- प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥
 २ दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ।
 ३ हेतुर्ना कारणं बीजं ४ निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥
 ५ क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः ६ प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।
 ७ विशेषः कालिकाऽवस्थाऽगुणाः सत्त्वरजस्तमः ॥ २९ ॥
 ९ जनुर्जनजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।
 १० प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्मुशरीरिणः ॥ ३० ॥

उद्भूतः, तल्लजः (२ पु), ये ५ किसी द्रव्यवाचक शब्दके साथ समस्त होकर अन्तमें रहनेसे उसकी श्रेष्ठताको प्रकट करते हैं । इनका स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है । जैसे—‘गोमतल्लिका, गोमच्चर्चिका, गोप्रकाण्डम्, गवोद्भूतः, गोतल्लजः,’) ॥

१ अयः (पु) ‘शुभकारक भाग्य’ का १ नाम है ॥

२ दैवम्, दिष्टम्, भागधेयम्, भाग्यम् (४ न), नियतिः (स्त्री), विधिः (पु), ‘भाग्य’ के ६ नाम हैं ॥

३ हेतुः (पु), कारणम्, बीजम् (२ न), ‘कारण’ के ३ नाम हैं ॥

४ निदानम् (न), ‘मूल कारण’ का १ नाम है ॥

५ क्षेत्रज्ञः, आत्मा (=आत्मन्), पुरुषः (३ पु), ‘शरीरकी अधिष्ठात्री देवता’ के ३ नाम हैं ॥

६ प्रधानम् (न), प्रकृतिः (स्त्री), ‘सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुणकी साम्यावस्था’ के २ नाम हैं ॥

७ अवस्था (स्त्री), ‘समयकृत विशेष’ अर्थात् ‘उत्र’का १ नाम है । (जैसे—लङ्कपन, जवानी, बुढ़ापा,) ॥

८ सत्त्वम्, रजः (=रजस् । + रजः = रज, पु), तमः (=तमस्) + तमः, =तम, पु । ३ न), ये ३ ‘प्रकृतिके धर्म’ हैं । इनका क्रमशः ‘सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण’ यह १-१ नाम है ॥

९ जनुः (=जनुस्), जननम्, जन्म (=जन्मन् । + जन्मः = जन्म, पु । ३ न), जनिः (+ पु), उरपत्तिः (२ स्त्री), उद्भवः (पु), ‘उत्पत्ति’ अर्थात् ‘पैदा होने या जन्म लेने’ के ६ नाम हैं ॥

१० प्राणी (=प्राणिन्), चेतनः, जन्मी (=जन्मिन्) जन्तुः, जन्मुः, शरीरी

- १ जातिर्जातं च सामान्यं २ व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।
 ३ चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृत्मानसं मनः ॥ ३१ ॥
 इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ धीवर्गः ।

- ४ बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।
 प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥
 ५ धीर्धारणावती मेधा ६ संकल्पः कर्म मानसम् ।
 ७ 'अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च' (४४)

(= शरीरिन् । ६ पु), 'प्राणी' के ६ नाम हैं ॥

१ जातिः (स्त्री), जातम्, सामान्यम् (१ न), 'जाति' के ३ नाम हैं ।
 ('जैसे—गोश्व, ब्राह्मणश्व, घटश्व,') ॥

२ व्यक्तिः, पृथगात्मता (२ स्त्री), 'व्यक्ति' के २ नाम हैं । ('जैसे—
 गौ, मनुष्य, राम, श्याम,') ॥

३ चित्तम्, चेतः (= चेतस्), हृदयम्, स्वान्तम्, हृत् (= हृद्), मानसम्,
 मनः (= मनस् । ७ न), 'मन या चित्त' के ७ नाम हैं ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ धीवर्गः ॥

४ बुद्धिः, मनीषा, धिषणा, धीः, प्रज्ञा, शेमुषी, मतिः, प्रेक्षा, उपलब्धिः,
 चित् (= चिद्), संचित् (= संविद्), प्रतिपत् (= प्रतिपद्), ज्ञप्तिः, चेतना
 (१४ स्त्री), 'बुद्धि' के १४ नाम हैं ॥

५ मेधा (स्त्री), 'धारणा शक्तिधात्री बुद्धि' का १ नाम है ॥

६ संकल्पः (पु), 'संकल्प, मानसिक कर्म' का १ नाम है ॥

७ [अवधानम्, समाधानम्, प्रणिधानम् (३ न), 'समाधान' के ३
 नाम हैं] ॥

• 'साङ्ख्ये बुद्धिमेवेति पक्षात्, वेदेषिकादौ तु चतुर्वधापि बुद्धयन्ती' इति श्री० स्वा० ॥

- १ चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा सङ्ख्या विचारणा ॥ २ ॥
- २ 'विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते' (४५)
- ४ अभ्याहारस्तर्क ऊहो ५ विचिकित्सा तु संशयः ।
सन्देहद्रापरौ ६ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥
- ७ मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता ८ व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।
- ९ समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ १० भ्रान्तिर्मिथ्यामतिभ्रमः ॥ ४ ॥
- ११ संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रयसंश्रवाः ।

१ चित्ताभोगः, मनस्कारः (२ पु), 'सुखादिमें मनके लगे रहने' के २ नाम हैं ॥

२ चर्चा, सङ्ख्या, विचारणा (३ स्त्री), 'प्रमाणोंके द्वारा किसी विषयके विचार करने' के ३ नाम हैं ॥

३ [विमर्शः (पु)] भावना, वासना (२ स्त्री), 'बीती हुई बात आदिके संस्कार' के ३ नाम हैं] ॥

४ अभ्याहारः, तर्कः, ऊहः (३ पु), 'तर्क' के ३ नाम हैं ॥

५ विचिकित्सा (स्त्री), संशयः, सन्देहः, द्रापरः (३ पु), 'सन्देह' के ४ नाम हैं ॥

६ निर्णयः, निश्चयः (२ पु), 'निश्चय' के २ नाम हैं ॥

७ मिथ्यादृष्टिः, नास्तिकता (२ स्त्री), 'नास्तिकपना' के २ नाम हैं ।
('ईश्वर या परलोक नहीं हैं, ऐसे ज्ञानको 'नास्तिकपना' कहते हैं') ॥

८ व्यापादः (पु), द्रोहचिन्तनम् (न), 'किसीसे द्रोह करनेका विचार करने' के २ नाम हैं ॥

९ सिद्धान्तः, राद्धान्तः (२ पु), 'सिद्धान्त' के २ नाम हैं । ('वाक्-विवादके द्वारा किसी विषयको निश्चय करने या अपने अटल मतको 'सिद्धान्त' कहते हैं') ॥

१० भ्रान्तिः, मिथ्यामतिः (२ स्त्री), भ्रमः (पु), 'भ्रम' के ३ नाम हैं ।
('जैसे—शुक्तिमें रजतका, रस्सीमें सर्पका ज्ञान होना 'भ्रम' है') ॥

११ संविद् (= संविद्), आगूः (= आगुर्, 'आगूः, आगुरौ, आगुरः'
ऐसे रूप होते हैं । अथवा—आगूः, = आगू, 'आगूः, आगवौ, आगवः' इत्यादि

१ अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

२ मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।

४ मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥
मोक्षोऽपवर्गोऽप्याज्ञानमविद्याऽहम्मतिः स्त्रियाम् ।

६ रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥
गोचरा इन्द्रियार्थाश्च ७ हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।

८ कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि—

‘खलपू’ शब्दके समान रूप होते हैं । (२ स्त्री), प्रतिज्ञानम् (न), नियमा, आश्रवः, संश्रवः (३ पु), ‘प्रतिज्ञा’ के ६ नाम हैं ॥

१ अङ्गीकारः (+ स्वीकारः), अभ्युपगमः, प्रतिश्रवः, समाधिः (४ पु), ‘स्वीकार करने’ के ४ नाम हैं ॥

२ ज्ञानम् (न), ‘मोक्ष-विषयक बुद्धि’ का १ नाम है ॥

३ विज्ञानम् (न), ‘शिल्प (कारीगरी), अथवा शास्त्रविषयक बुद्धि’ का १ नाम है । (मुकुटने ‘मोक्षे’ इसको निमित्त सप्तमी मानकर मोक्षनिमित्तक शिल्प-शास्त्र-विषयक बुद्धिको ‘ज्ञान’ तथा अन्यनिमित्तक शिल्प-शास्त्रविषयक बुद्धिको ‘विज्ञान’ अर्थ किया है) ॥

४ मुक्तिः (स्त्री), कैवल्यम्, निर्वाणम्, श्रेयः (= श्रेयस्), निःश्रेयसम्, अमृतम् (५ न), मोक्षः, अपवर्गः (२ पु), ‘मोक्ष’ के ८ नाम हैं ॥

५ अज्ञानम् (न), अविद्या, अहम्मतिः (२ स्त्री), ‘अज्ञान’ के ३ नाम हैं ॥

६ रूपम् (न), शब्दः, गन्धः, रसः, स्पर्शः (४ पु), ये ५ नेत्रादि एक-एक इन्द्रिय के एक-एक विषय’ के नाम हैं । (‘नेत्रका विषय ‘रूप’ भिन्ना का विषय ‘रस’ नासिकाका विषय ‘गन्ध’ कानका विषय ‘शब्द’ और त्वचा अर्थात् चमकेका विषय ‘स्पर्श’ है । इन्हींके गोचरः, विषयः, इन्द्रियार्थाः (३ पु), ये ३ सामान्य नाम हैं ॥

७ हृषीकम्, विषयि (= विषयिन्), इन्द्रियम् (३ न), ‘इन्द्रियों’ के ३ नाम हैं । (‘कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय भेदसे इन्द्रिय दो प्रकारके हैं; भिन्नका विवरण आगे किया जा रहा है’) ॥

८ कर्मेन्द्रियम् (न), ‘काम करनेवाली इन्द्रियों’ का १ नाम है । (‘पायु अर्थात् गुदा १, उपस्थ अर्थात् भग या लिङ्ग २, हाथ ३, पैर ४ और कर्ण ५ ये कर्मेन्द्रिय अर्थात् काम करनेवाली इन्द्रियाँ हैं । ‘मकरध्याग करना,

—१ मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

२ तुवरस्तु कषायोऽङ्गी ३ मधुरो लवणः कटुः ।

तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि ४ तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

५ विमर्शोऽप्ये परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

भोग करना, ग्रहण करना, चलना और बोलना' इनमेंसे १-१ नाम क्रमशः एक-एक इन्द्रियका^१ है') ॥

१ धीन्द्रियम् (न । + ज्ञानेन्द्रियम्), 'ज्ञानेन्द्रिय' का १ नाम है । ('मन १, काम २, नेत्र ३, जीभ ४, त्वचा ५ और नाक ६, ये ६ ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् ज्ञान करनेवाली इन्द्रियाँ हैं । 'जानना, सुनना, देखना, स्वाद लेना, स्पर्श-ज्ञान करना और सूँघना' इनमें से १-१ काम क्रमशः १-१ इन्द्रियका है') ॥

२ तुवरः (+ त्वरः, कुवरः । पु) कषायः, (पु न) 'कषाय' कसाव' के २ नाम हैं । (हरेंमें 'कषाय' रस होता है) ॥

३ मधुरः, लवणः, कटुः, तिक्तः, अम्लः (+ अम्लः, अम्लः । ५ पु), 'मीठा, खारा, कड़ुआ, तीता और खट्टा' ये पाँच और पहिला 'कषाय' ऐसे ६ रस हैं । (इनमें पानी आदि 'मीठा', नमक, सोरा आदि 'खारा' मिर्च आदि 'कड़ुआ' नीम, चिरैता आदि 'तीता' और आम, नीबू, इमली आदि 'खट्टे' होते हैं । रसः (पु) है') ॥

४ ये 'तुवर, मधुर' आदि ७ नाम स्वतः रसवाचक रहनेपर पुंलिङ्ग हैं; किन्तु द्रव्यवाचक अर्थात् रसवाले पदार्थके अर्थमें प्रयुक्त होनेपर त्रिलिङ्ग हैं । जैसे—मधुरं जलम्, मधुरा आपः, मधुरो गुहः, ...) ॥

५ परिमलः (पु), 'किसी पदार्थके संघर्ष अर्थात् रगड़से

१. तथा च कामन्दकः — 'पायूपस्थे पाणिपादौ वाक्चेतीन्द्रियसंमहः ।

उत्सर्गं आनन्दादानगत्याकापाश्च तत्क्रियाः ॥ १ ॥' इति ॥

२. तदुक्तम् — 'मनः कर्णस्तथा नेत्रं रसना च त्वचा मूढ ।

नासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥ १ ॥' इति ॥

१ आमोदः सोऽतिनिर्हारी २ वाच्यलिकृत्वमागुणात् ॥ १० ॥

३ समाकर्षी तु निर्हारी ४ सुरभिर्घ्राण तर्पणः ।

इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥

६ पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो ७ विघ्नः स्यादामगन्धि यत् ।

८ शुक्लशुभ्रशुचिः श्वेतविशदश्येतपाण्डुराः ॥ १२ ॥

अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ।

हरिणः पाण्डुरः पाण्डुः —

उत्पन्न जनमनोहर गन्धविशेष या बहुलके गन्ध' का १ नाम है ।

१ 'आमोदः (पु), 'अत्यन्त अदियां गन्ध या कस्तूरीके गन्ध' का १ नाम है ॥

२ यहाँ से 'गुणे शुक्लादयः पुंसि (१।५।१७)' के पूर्वतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ समाकर्षी (= समाकर्षिन्), निर्हारी (= निर्हारिन् । २ त्रि), 'दूरस्थ सुगन्धित पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

४ 'सुरभिः, घ्राणतर्पणः, इष्टगन्धः, सुगन्धिः (४ त्रि), 'सुगन्धि' के ४ नाम हैं (इनमें 'सुरभि' नाम 'चम्पकके गन्ध' का भी है) ॥

५ आमोदी (= आमोदिन्), 'मुखवासनः (भागुरि म० अगुरुवासनः । २ त्रि), 'मुखको सुगन्धित करनेवाले पान आदि' के २ नाम हैं । ('मुखवासनः' नाम 'कपूरके गन्ध' का भी है) ॥

६ पूतिगन्धिः, दुर्गन्धः (२ त्रि), 'दुर्गन्धि, बदबू' के २ नाम हैं ॥

७ विघ्नः (त्रि), 'बिना पके हुए मांस आदिके गन्ध' का १ नाम है ॥

८ शुक्लः, शुभ्रः, शुचिः, श्वेतः, विशदः, श्वेतः, पाण्डुरः, अवदातः, सितः, गौरः, वलक्षः (+ अवलक्षः), धवलः, अर्जुनः, हरिणः, पाण्डुरः, पाण्डुः (१६ त्रि), 'सफेद, उजले' के १६ नाम हैं । ('मतान्तरसे 'शुक्ल' आदि १३ नाम 'सफेद' के हैं और अन्तवाले 'हरिणः' आदि ३ नाम 'पाण्डुर' अर्थात् 'कुछ पीलापन लिये हुए सफेद' के हैं) ॥

१-२-३. 'कस्तूरिकायामामोदः कपूरी मुखवासनः ।

बकुले स्यात्परिमलक्ष्म्यके सुरभिस्तथा ॥ १ ॥' इति ॥

—१ ईषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥

२ कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ।

३ पीतो गौरो हरिद्राभः ४ पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥

५ लोहितो रोहितो रक्तः ६ शोणः कोकनदच्छविः ।

७ अव्यक्तरागस्वरूपः ८ श्वेत रक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

९ श्यावः श्यात्कपिशो १० धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

११ कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥

१२ चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे ।

१ ईषत्पाण्डुः, धूसरः (२ त्रि), 'धूसर' के २ नाम हैं ॥

२ कृष्णः, नीलः, असितः, श्यामः, कालः, श्यामलः, मेचकः (७ त्रि), 'काले' के ७ नाम हैं ॥

३ पीतः, गौरः, हरिद्राभः (३), 'पीले' के ३ नाम हैं ॥

४ पालाशः (+ पलाशः), हरितः, हरित् (३ त्रि), 'हरे' के ३ नाम हैं ॥

५ लोहितः रोहितः, रक्तः (३ त्रि), 'लाल' के ३ नाम हैं ॥

६ शोणः (त्रि), 'लाल कमलके समान सुख लाल' का १ नाम है ॥

७ अरुणः (त्रि), 'गुलाबी' का १ नाम है ॥

८ पाटलः (त्रि), 'सफेदी लिये हुए लाल रंग' का १ नाम है ॥

९ श्यावः, कपिशः (२ त्रि), 'फीके रंग' के २ नाम हैं ॥

१० धूम्रः, धूमलः, कृष्णलोहितः (३ त्रि), 'कालापनसे युक्त लाल' के ३ नाम हैं ॥

११ कडारः, कपिलः, पिङ्गः, पिशङ्गः, कद्रुः, पिङ्गलः (६ त्रि), 'भूरे' के ६ नाम हैं ॥

१२ चित्रम् (भा० दी० म० नपुं०), किर्मीरः (+ कर्मिरः), कल्माषः, शबलः, एतः, कर्बुरः (६ त्रि), 'चितकबरे' के ६ नाम हैं । ('कौन २ रंग कैसे होते हैं, यह बात टिप्पणीमें स्पष्ट है') ॥

*श्वेतादिरागाणां व्यक्तं विवरणं शब्दान्वये प्रोक्तम् । तथा—

'श्वेतस्तु समपीतोऽसौ रक्तेतरजपाश्विः । बलवस्तु सितः श्यामः कन्दलीकुङ्कुमोपमः ॥१॥

१ गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥



६. अथ शब्दादिवर्गः ।

२ ॐ ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाण्वाणी सरस्वती ।

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

१ इनमें से 'शुक्ल' आदि सब शब्द गुणवाचक रहनेपर पुंलिङ्ग ही होते हैं और गुणवाचक होनेपर त्रिलिङ्ग होते हैं ('जैसे—शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, शुक्लं वस्त्रम्,') ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥



६. अथ शब्दादिवर्गः ।

२ ब्राह्मी (+ गौः, = गो), भारती, भाषा, गीः (गिर् । + गिरा), वाक् (= वाच्), वाणी (+ वाणिः), सरस्वती, व्याहारः (पु), उक्तिः (शेष ८ स्त्री), लपितम्, भाषितम्, वचनम्, वचः (= वचस् । ४ न), 'वचन' अर्थात् 'बोलने' के १३ नाम हैं । ('इनमेंसे 'ब्राह्मी' से 'सरस्वती' तक ६ शब्द 'वचनके अधिष्ठात्रा देवी' के भी नाम हैं') ॥

अर्जुनस्तु सितः कृष्णलेशवान् कुसुदच्छविः । पाण्डुस्तु पीतभागार्द्धः केतकीधूलिसन्निभः ॥
भूसरस्तु सितः पीतलेशवान् बकुलच्छविः । मेघकः कृष्णनीलः स्यादतस्तीपुष्पसन्निभः ॥३॥
सितपीतहरिद्रक्तः कडारस्तृणवह्निवत् । अयं तद्रक्तपीताङ्गः कपिलो गोविभूषणः ॥४॥
हरितामोऽधिकेऽसौ तु पिशाङ्गः पद्मधूलिवत् । पिशङ्गस्त्वासितावेशात्पिशो दीपशिखादिपु ॥५॥

पिङ्गलस्तु परिच्छायः पिङ्गो शुक्लाङ्गखण्डवत् ॥ इति ॥

१ 'ब्राह्मी गौर्मरती.....' इति पाठान्तरम् ॥

१ अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

२ तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

४ श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी ५ धर्मस्तु तद्विधिः ।

१ अपभ्रंशः, अपशब्दः (२ पु) 'अपभ्रंश' अर्थात् 'व्याकरण शास्त्रसे नहीं सिद्ध होनेवाले गगरी, घड़ा, हत्यादि अष्ट (असंस्कृत) शब्द' के २ नाम हैं ॥

२ शब्दः (पु), 'व्याकरण आदि शास्त्रोंमें जो वाचक हैं उन'का १ नाम है । ('जैसे—'ओत-प्रोत तन्तुओंका वाचक 'पट' शब्द है, कम्बुग्रीवादि-संस्थान विशिष्टका वाचक 'घट' शब्द है,') ॥

३ वाक्यम् (न), 'वाक्य' का १ नाम है । ('तिङन्त-समुदाय १, 'सुबन्त-समुदाय २, पद-समुदाय ३, या कारकान्वित क्रिया ४, को 'वाक्य' कहते हैं । क्रमशः उदाहरण— १ तिङन्त-समुदाय जैसे—'पचति, भवति,' ।

२ सुबन्त-समुदाय जैसे—'प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्,' । ३ पद-समुदाय जैसे—'देवदत्तो गच्छति, ओदनं पचति,' । ४ कारकान्वित क्रिया जैसे—'रावणं जहि निशितेन शरेण,') ॥

४ श्रुतिः, वेदः, आम्नायः (२ पु), त्रयी (शेष २ स्त्री), 'वेद' के ४ नाम हैं ॥

५ धर्मः (पु । मुकुट म० 'त्रयीधर्मः', पु.) 'धर्म' अर्थात् 'वेदोक्त यज्ञादि

१. 'ऋक्, साम, यजुः' इति प्रत्येकं वेदस्य पर्याय इत्युक्त्वा 'त्रयीधर्मः' इत्येकं 'वेद-विदितयागादिकर्मणः' पर्याय इत्युक्तम्, तत्र च त्रय्या धर्मस्त्रयीधर्मः, तथा त्रय्या विधिविधी-यमानो यागादिरिति विग्रहः प्रदर्शितस्तच्चिन्त्यम् । 'विधा धर्मेण शोभते, धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे (गी. १।२), धर्मात्तो वक्तुमर्हसि (मनु. १।२) । ब्रूहि धर्मानशेषतः (याज्ञ. स्मृ. १।१), धर्मादनिच् केवलात् (पा. सू. ५।४।१२४), इत्याद्यभियुक्तोक्तवनेषु 'धर्म'शब्दस्यैव दर्शनात् । 'मीमः मीम-सेनः, सत्या, भामा, सत्यभामा', इतिवत्पदैकदेशस्यात्रापि प्रयोग इति तु नाशङ्क्यम् । लोके मीमादीनां पृथक् पृथक् प्रयोगदर्शनेनास्य 'त्रयीधर्म'शब्दस्य क्वापि तथाऽदर्शनेन वैषम्यात् । 'त्रयीधर्म'शब्दस्य प्रयोग उपलब्धे तु प्रतिपाद्यप्रतिपादकभावरूपं सम्बन्धं भव्य पठोत्पुरुष-समाप्तो बोध्यः । ब्राह्मणक्षत्रियवैद्यानां द्विजत्वेऽपि ब्राह्मणस्यापि द्विजत्ववदिहापि सामान्य-विशेषरूपेणोभयसम्भवात् (.....वेदाख्यस्त्रयी (१।१।६)) इत्यनेन पौनरुक्त्यं नाशङ्क्यम् ।धर्ममखियाम् (१।४।२४)' इत्यनेनापि न पौनरुक्त्यम् । तत्र धर्मपर्यायाणामत्र च धर्मस्वरूपस्य धर्मप्रमाणस्य चाभिधानेनादोषात् । अधिकन्तु परत्र द्रष्टव्यम् ॥

- १ स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥
 २ शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गमोङ्कारप्रणवौ समौ ।
 ४ इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥
 ६ आन्वीक्षिकी—

कर्म'का १ नाम है । ('स्मृतियोंके भी वेदमूलक होनेसे स्मृत्युक्त कर्म भी 'धर्म' ही हैं') ॥

१ ऋक् (= ऋच्, स्त्री), साम (= सामन्), यजुः (= यजुस् । २ न), अर्थात् 'ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद' ये ३ 'वेद' हैं, इन तीनोंका 'त्रयी' (स्त्री), यह १ नाम है ॥

२ शिक्षा (स्त्री), आदि ('आदि शब्दसे 'कल्प १, व्याकरण २, निरुक्त ३, ज्योतिष ४ और छन्दः ५, इनका संग्रह है') को 'वेदाङ्गम्' (न) 'वेदाङ्ग' अर्थात् 'वेदोंका अङ्ग' कहते हैं ॥

३ ओङ्कारः (+ ॐकारः), प्रणवः, (२ पु), 'वेदारम्भ' अर्थात् 'ओङ्कार' के २ नाम हैं ॥

४ इतिहासः (पु), 'पुरावृत्तम्' (न), 'इतिहास' के २ नाम हैं । ('पूर्व-कालमें बीती हुई कथाको 'इतिहास' कहते हैं, जैसे—'महाभारत,') ॥

५ उदात्तः (पु) आदि ('आदि पदसे 'अनुदात्त और स्वरित' का संग्रह है'), ३ को 'स्वरः'^१ (पु), अर्थात् 'स्वर' कहते हैं ॥

६ आन्वीक्षिकी^३ (स्त्री), 'गौतम आदिकी रचित तर्कविद्या' का १ नाम है ॥

१. तदुक्तम्—'शिक्षा कस्यो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः ।

छन्दोविचित्रिरस्येष षडङ्गो वेद उच्यते ॥ १ ॥' इति ॥

२. तदुक्तम्—'उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः ।

चतुर्थः प्रचितो नोक्तो यतोऽसौ छन्दसः स्मृतः ॥ १ ॥' इति ॥

३. आन्वीक्षिक्यादयश्चतस्रो विधाः कामन्दके—

'अन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती ।

विषा योताक्षतसस्तु लोकसंस्थितिहेतवः ॥ १ ॥' इति ॥

१ दण्डनीतिस्तर्कविद्याऽर्थशास्त्रयोः ।

२ आख्यायिकोपलब्धार्था ३ पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

१ दण्डनीतिः (स्त्री), 'बृहस्पति आदिके रचिते अर्थशास्त्र' का १ नाम है ॥

२ आख्यायिका, उपलब्धार्था (२ स्त्री), 'आख्यायिका' के २ नाम हैं ।
('अनुभूत विषयको प्रतिपादन करनेवाले ग्रन्थको 'आख्यायिका' कहते हैं,
हैं, जैसे—'कादम्बरी, वासवदत्ता.....') ॥

३ पुराणम् (न), 'पुराण' अर्थात् पाँच लक्षणोंसे युक्त ग्रंथ का १ नाम है । ('सर्ग १, प्रतिसर्ग अर्थात् संहार २, वंश ३, मन्वन्तर ४ और वंशवर्णन ५, इन पाँच लक्षणोंसे युक्त ग्रन्थको 'पुराण'^१ कहते हैं । 'पद्मपुराण १, ब्रह्म-पुराण ३, शिवपुराण ४, देवीभागवत पुराण ५, नारदपुराण ६, मार्कण्डेयपुराण ७, अग्निपुराण ८, भविष्यपुराण ९, ब्रह्मवैवर्तपुराण १०, लिङ्गपुराण ११, वाराह-पुराण १२, स्कन्दपुराण १३, वामनपुराण १४, कूर्मपुराण १५, मत्स्यपुराण १६ गरुडपुराण १७, और ब्रह्माण्डपुराण १८, ये १८ 'पुराण'^३ हैं') ॥

तासां प्रतिपाद्यविषयाश्च विज्ञानादयस्तदाह—

'आन्वीक्षिक्यां तु विज्ञानं वर्माधर्मौ त्रयीस्थितौ ।

अर्थानर्थौ तु वार्त्तायां दण्डनीत्यां नयानयौ ॥ १ ॥' इति ॥

१. 'आख्यायिका कथावस्त्यात्कवेर्विज्ञादिकीर्तनम् ।

अस्यामन्यकवीनाञ्च वृत्तं पद्यं कचिरकचिव ॥ १ ॥

कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते ।

आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित् ॥ २ ॥

अन्यापदेशेनाश्वासमुखे आवाधसूचनम् ॥' इति ॥ सा ६० ६।३३४ ॥

२. 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ १ ॥

इति अमि० चिन्ता० 'हैम' २।१६६ ॥

प्रतिसर्गः संहारोऽन्यस्सपष्टम् । कचित् 'वंशानुचरितं चैव'ति तृतीयपादस्थाने 'भूम्यादेश्वैव संस्थानम्' इति पाठभेदः ।

३. तदुक्तं विष्णुपुराणे—

१ प्रबन्धकल्पना कथा २ प्रवहिका प्रहेलिका ।

१ कथा (स्त्री), 'कथा' अर्थात् 'वाक्यविस्तारकी कल्पनावाले ग्रन्थ'का नाम है । ('जैसे—'रामायण, कथासरित्सागर, बृहत्कथामञ्जरी, ...') ॥

२ प्रवहिका (+ प्रवहिका, प्रवह्नी, प्रवहदूती, विपादिका), प्रहेलिका (२ स्त्री), 'पहेली, बुझावेल' के २ नाम हैं । (संस्कृतकी पहेली जैसे— 'पानीयं पातुमिच्छामि स्वतः कमललोचने । यदि दास्यसि नेच्छामि न दास्यसि पिबाम्यहम्' । इस श्लोकमें दोनों 'दास्यसि' पदको दानार्थक मानकर 'दोगी' यह अर्थ करनेपर सन्देह होता है और एक 'दास्यसि' पदको उक्तार्थक तथा दूसरे 'दास्यसि' पदका 'दासी हो' यह अर्थ माननेपर संदेह दूर हो जाता है । हिन्दीकी पहेली जैसे—'सारी लुगड़ी जल गई, जला न एको तागा । घरके खबके फँस गये, घर खिबकीसे भागा' ॥ इस पद्यमें 'समूची लुगड़ी अर्थात् कन्याके जकने पर एक तागाका भी नहीं जलना, चैतन्य गृहवासियोंका फँस जाना और अचैतन्य घरका भाग जाना, ये सब सम्वेद उत्पन्न होते हैं; किन्तु 'जल गया' इस शब्दका 'जलमें गया' ऐसा अर्थ करनेपर एक तागाका भी नहीं जलना असम्बेदार्थक है, तथा जालमें चैतन्य मछलियोंका फँस जाना और जालके छिद्ररूपी खिबकीसे पानरूपी मछलियोंके घरका भाग जाना ऐसा अर्थ करनेसे कोई सन्देह नहीं होता है, इसी तरह प्रत्येक भाषामें 'पहेली' होती है) ॥

अष्टादश पुराणानि पुराणज्ञाः प्रचक्षते । पाञ्च ब्राह्मं वैष्णवञ्च शैवं भागवतं तथा ॥१॥
तथाऽन्यन्नारदोयञ्च मार्कण्डेयञ्च सप्तमम् आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यं नवमं स्मृतम् ॥२॥
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लेङ्गमेकादशं तथा । वाराहं द्वादशञ्चैव स्कान्दञ्चात्र त्रयोदशम् ॥३॥
चतुर्दशं वामनकं कोर्मि पञ्चदशं स्मृतम् । मात्स्यञ्च गाढञ्चैव अज्ञाणञ्च ततः परम् ॥४॥ इति ॥

प्रत्येकपुराणस्य श्लोकसङ्ख्याविषयादिज्ञानार्थं विष्णुपुराणस्य त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायो द्रष्टव्य इति ।

१. तदुक्तम्—'व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनम् ।

यत्र बाह्यार्थसम्बद्धं कथ्यते सा प्रहेलिका ॥ १ ॥' इति ॥

१ स्मृतिस्तु धर्मसंहिता २ समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥

३ 'समस्या तु समासार्था ४ किंवदन्ती जनश्रुतिः ।

५ वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्याददथाह्वयः ॥ ७ ॥

१ स्मृतिः (स्त्री), 'स्मृति शास्त्र' अर्थात् 'मनु आदिके बनाये हुए धर्म-ग्रन्थ' का १ नाम है । (मनुस्मृति आदि २० या इससे भी अधिक स्मृतियाँ हैं) ॥

२ समाहृतिः (स्त्री) 'संग्रह (पु), 'संग्रह ग्रन्थ' के २ नाम हैं । ('जैसे—'हितोपदेश, पञ्चतन्त्र,.....') ॥

३ समस्या, समासार्था (+ असमासार्था' । २ स्त्री), 'समस्या' के २ नाम हैं । ('पद्यपूर्तिके लिये पद्यका थोड़ा अंश जो कहा जाय, उसे 'समस्या' कहते हैं, जैसे—'टटंटटंटटटटटटं' यह थोड़ा पद्यांश कहा गया है, इसे पूरा करनेपर 'राउयाभिपेके मदविह्वलाया हस्तच्युतो हेमघटो युवत्याः । सोपान-मार्गेषु करोति शब्दं टटंटटंटटटटटटं' यह पद्य होता है । यह भी प्रत्येक भाषामें होती है') ॥

४ किंवदन्ती, जनश्रुतिः (२ स्त्री), 'सोर्गों में बातचीतके चलने, दौरा हो जाने, लोकनिम्दा या लोकोक्ति' के २ नाम हैं ॥

५ वार्ता, प्रवृत्तिः (२ स्त्री), वृत्तान्तः, उदन्तः (२ पु), 'बात' के ४ नाम हैं ॥

६ आह्वयः (पु), आख्या, आह्वा (२ स्त्री), अभिधानम् , नामधेयम् ,

१. 'समस्या त्वसमासार्था.....' इति पाठान्तरम् ॥

२. मनुयर्मो वसिष्ठोऽत्रिदक्षो विष्णुस्तथाऽङ्गिराः ।

उशना वाक्पतिर्व्यास आपस्तम्बोऽथ गौतमः ॥ १ ॥

कात्यायनो नारदश्च याज्ञवल्क्यः पराशरः ।

संवत्सश्चैव शङ्खश्च हारीतो लिखितस्तथा ॥ २ ॥' इति ॥

एता विशतिराख्याता धर्मशास्त्रप्रवर्तकाः ।

कचित् 'नारदश्च' इत्यस्य स्थाने 'शातातपश्च' इति पाठः । 'मन्वादिस्मृतयो यास्तु षट्त्रिंशत्परिकीर्तिताः' इति भविष्यपुराणे गुहं प्रति विष्णुक्तेस्तासां षट्त्रिंशत्सङ्ख्या वा बोध्या ॥

३. 'विस्तरणोपदिष्टानामर्थानां सूत्रमाभ्ययोः ।

निबन्धो यः समासेन संग्रहं तं विदुर्गुणाः ॥ १ ॥' इति ॥

आख्याहे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।

- १ हूतिराकारणाह्वानं २ संहृतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥
- ३ विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।
- ५ उपोद्धात उदाहारः ६ शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥
- ७ प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च ८ प्रतिवाक्योत्तरे समे ।
- ९ मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानं १० मथ मिथ्याभिर्शंसनम् ॥ १० ॥

नाम (= नामन् । ३ न । + संज्ञा, स्त्री), 'नाम' के ६ नाम हैं ॥

१ हूतिः, आकारणा (२ स्त्री), आह्वानम् (न), 'बुलाने या पुकारने' के ३ नाम हैं ।

२ संहृतिः (स्त्री), 'इकट्ठा होकर बहुत लोगोंके पुकारने' का १ नाम है ॥

३ विवादः, व्यवहारः (२ पु), 'विवाद या झगड़ा' अर्थात् 'लेन, देन इत्यादि किसी विरुद्ध विषयोंको लेकर परस्पर विरुद्ध भाषण करने या मुकदमे-बाजी' के २ नाम हैं ॥

४ उपन्यासः (पु), वाङ्मुखम् (न), 'बातको प्रारम्भ करने' के २ नाम हैं ॥

५ उपोद्धातः, उदाहारः (२ पु), 'कही जानेवाली बातकी सिद्धिके लिये भूमिका बाँधने, या दृष्टान्त आदि देने' के २ नाम हैं ॥

६ शपनम् (न), शपथः (पु) 'शपथ कसम' के २ नाम हैं ॥

७ प्रश्नः, अनुयोगः, (२ पु), पृच्छा (स्त्री), 'प्रश्न' के २ नाम हैं ॥

८ प्रतिवाक्यम्, उत्तरम् (२ न), 'उत्तर, जबाब' के २ नाम हैं ॥

९ मिथ्याभियोगः (पु), अभ्याख्यानम् (न), 'किसीपर झूठा आक्षेप करने' के २ नाम हैं ॥ (जैसे—'कुछ नहीं लिये हुए किसी आदमीपर तुमने अमुक चीज ली है, इत्यादि आक्षेप करना,') ॥

१० मिथ्याभिर्शंसनम् (न), अभिशापः (पु । + शापः), 'किसीके ऊपर पापविषयक झूठा सन्देह करने' के २ नाम हैं । ('जैसे—किसीने परदारागमन या मद्यपान इत्यादि नहीं किया है ; किन्तु उसपर परदारागमन या मद्यपान आदि करनेका सन्देह करना,') ॥

- अभिशापः १ प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।
 २ 'यशः कीर्तिः समज्ञा च ३ स्तवः स्तोत्रं नुतिः स्तुतिः ॥ ११ ॥
 ४ आम्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।
 ७ काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥
 ७ अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ।
 उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥
 ८ पारुष्यमतिवादः स्याद्—

१ प्रणादः (पु), 'गुणके प्रेमसे कहे हुए शब्द' अर्थात् 'वाहवाही या शाखासी देने' का २ नाम है ॥

२ यशः (= यशस्, न), कीर्तिः, समज्ञा (+ समाज्ञा, समज्या । ३ स्त्री), 'कीर्ति यश' के ३ नाम हैं । (जीवित व्यक्तिकी ख्यातिको 'यश' तथा मृत व्यक्तिकी ख्यातिको 'कीर्ति' कहते हैं, ऐसा मनुस्मृतिके टीकाकार कुल्लूक भट्टने कहा है) ॥

३ स्तवः (पु), स्तोत्रम् (न), नुतिः, स्तुतिः (+ प्रशंसा । २ स्त्री), 'स्तुति' के ४ नाम हैं ॥

४ आम्नेडितम् (न), 'एक ही शब्दको दो या तीन बार कहने' का १ नाम है । (जैसे—सॉप सॉप दौबो दौबो,) ॥

५ उच्चैर्घुष्टम् (न), घोषणा (स्त्री), ऊंचे स्वरसे घोषणा कहने के २ नाम हैं ।

६ काकुः (स्त्री), 'शोक डर या काम इत्यादिके कारण विकृत ध्वनिसे बोलने' का १ नाम है । (जैसे—उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते) अर्थात् किसी बुराई करनेवालेसे—'आपने हमारा बड़ा उपकार किया' इत्यादि वचन कहना) ॥

७ अवर्णः, आक्षेपः, निर्वादः, परीवादः (+ परिवादः), अपवादः (+ अववादः), उपक्रोशः (६ पु), जुगुप्सा, कुत्सा, निन्दा (३ स्त्री), गर्हणम् (न), 'निन्दा, शिकायत' के १० नाम हैं ॥

८ पारुष्यम् (न), अतिवादः (पु), 'कटु वचन या कड़ाईसे बोलने' के २ नाम हैं ॥

१. 'यशः कीर्तिः समज्या च' इति पाठान्तरम् ।

२. पतदर्थं मनुस्मृतेर्मन्वर्थमुक्तावली (८।१२७) टीका द्रष्टव्या ।

३. तस्य परमाञ्जितम् (पा० सू० ८।१।२) इत्यनेनेत्यवधेयम् ॥

—१ भरत्सर्नं त्वपकारगीः ।

- २ यः सनिन्द उपात्तम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥
 ३ तत्र त्वाक्षारणा यः स्वादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।
 ४ स्यादाभाषणमात्तापः ५ प्रत्तापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥
 ६ अनुत्तापो मुहुर्भाषा ७ विलापः परिदेवनम् ।
 ८ विप्रत्तापो विरोधोक्तिः ९ संत्तापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥
 १० सुप्रत्तापः सुवचनः ११ मपत्तापस्तु निहवः ।

१ भरत्सर्नम् (न), अपकारगीः (= अपकारगिर्, स्त्री), 'फटकारने' के २ नाम हैं ॥

२ परिभाषणम् (न), 'शिकायत करते हुए दोषको कहने' का १ नाम है ॥

३ आक्षारणा (स्त्री । + न), 'परपुरुषगमन या परस्त्री-गमन-विषयक दोष लगाने' का १ नाम है ॥

४ आभाषणम् (न), आत्तापः (पु), 'प्रेमसे बात करने' के २ नाम हैं ॥

५ प्रत्तापः (पु), 'प्रत्ताप करने, बड़बड़ाने' का १ नाम है ॥

६ अनुत्तापः (पु), मुहुर्भाषा (स्त्री), 'एक ही विषयको बार-बार कहने' के ३ नाम हैं ॥

७ विलापः (पु । + विलपनम्, न), परिदेवनम् (न । + स्त्री), 'रोते हुए बोलने' के ३ नाम हैं ॥

८ विप्रत्तापः (पु), विरोधोक्तिः (स्त्री), 'परस्पर विरुद्ध बात कहने' के २ नाम हैं ॥

९ संत्तापः (पु), 'परस्परमें बात करने' का १ नाम है । ('आत्ताप' एक आदमी भी कर सकता है; किन्तु 'संत्ताप' एक आदमी नहीं कर सकता, यही आत्ताप और संत्तापमें भेद है') ॥

१० सुप्रत्तापः (पु), सुवचनम् (न), 'मीठे वचन' के २ नाम हैं ॥

११ अपत्तापः, निहवः (२ पु), 'असक्त विषयको छिपानेके लिये मुकर आने' के २ नाम हैं ॥

- १ 'चोद्यमाक्षेपाभियोगौ २ शापाक्रोशौ दुरेषणा (४६)
- ३ अस्त्री चाटु चटु ४ श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकृत्यनम्' (४७)
- ५ सन्देशवाचिकं स्याद्व्याग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥
- ७ 'रुषती वागकल्याणी ८ स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।
- ९ अत्यर्थमधुरं सान्त्वं—

१ [चोद्यम् (न), आक्षेपः, अभियोगः (२ पु), 'आक्षेप' के २ नाम हैं] ॥

२ [शापः, आक्रोशः (२ पु), दुरेषणा (स्त्री), 'शाप देने' के ३ नाम हैं] ॥

३ [चाटु, चटु (२ पु न), 'मुंहदेखी बात कहने, चापलूसी करने' के २ नाम हैं] ॥

४ [श्लाघा (स्त्री) 'प्रेमसे झूठी स्तुति करने' का १ नाम है] ॥

५ सन्देशवाक् (= सन्देशवाच्, स्त्री), वाचिकम् (न) 'संदेश कहने' के २ नाम हैं ॥

६ यहाँ से '.....त्रिषु तद्वति (१।६।२२) तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

७ रुषती (त्रि । + रुशती, उषती सु० म० । यह 'रुषती' स्त्रीलिङ्गका रूप है, पुंलिङ्गमें 'रुषन्' और नपुंसकलिङ्गमें 'रुषत्' रूप होता है । इसी तरह आगे कहे जानेवाले शब्दोंके भी तीनों लिङ्गमें भिन्न २ रूप होंगे, उन्हें स्वयं समझ लेना चाहिये), 'अशुभ वचन' का १ नाम है ॥

८ कल्या (त्रि । + काश्या), 'शुभ वचन' का १ नाम है ॥

९ सान्त्वम् (त्रि), 'अत्यन्त मधुर वचन' का १ नाम है ॥

१. 'चोद्यमाक्षेप.....विकृत्यनम्' अयमंशः स्त्री० स्वा० टीकायापुपकल्प्यते ॥

२. 'उषती वागकल्याणी.....' इति मुकुटसम्मत्तं पाठान्तरम् । अत्र 'रुषती' द्विलेख्यर्थः, न तां वदेदुषतीं (गां) पापलोभ्याम्, अत एव 'उषती'ति असम्भ्यः पाठः इति स्त्री० स्वा० । 'मुकुटस्तु 'उषती'ति पाठे 'उष दाहे' इत्यस्य शत्रन्तस्य 'उषती' इति रूपमाह, तत्र । तस्माच्छ्रुति 'कर्तरि शप्' (पा० सू० १।१।६८) 'पुगन्तकृद्—' (पा० सू० ७।१।८६) इति गुणस्य 'शप्श्यनोर्नित्यम्' (पा० सू० ७।१।८१) इति लुप्तस्य प्रसङ्गात् इति भा० दी० । तन्नेति भा० दी० प्रतीकमादाय 'गुणस्य संज्ञापूर्वकत्वेन लुप्त आगमशासनत्वेन तेनैव वारितत्वेनाकिञ्चित्करमेतत् । पीयूषव्याख्यायामपि 'उषती' इति पाठं प्रदर्श्य 'रुशती' इत्येके-इत्युक्तम्' इति शि० ६० इत्युक्तम् ॥

—१ सङ्गतं हृदयङ्गमम् ॥ १८ ॥

- २ निष्ठुरं परुषं ३ ग्राभ्यमश्लीलं ४ सूत्रुतं प्रिये ।
 सत्येऽपथ सङ्कुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥
 ६ लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं ७ निरस्तं त्वरितोदितम् ।
 ८ 'अम्बूकृतं सनिष्ठीवश्मबद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥
 १० अनक्षरमवाच्यं स्याद्द्विद्वद्वत् तु मृषार्थकम् ।

१ सङ्गतम्, हृदयङ्गमम् (२ त्रि), 'संगतियुक्त वचन, मौकेकी बात' के २ नाम हैं ॥

२ निष्ठुरम्, परुषम् (२ त्रि), 'निष्ठुर वचन' के २ नाम हैं ॥

३ ग्राभ्यम्, अश्लीलम् (२ त्रि), 'भाँड़ आदिके कहे हुए सम्भ्यता-विरुद्ध वचन' के २ नाम हैं ॥

४ सूत्रुतम् (त्रि), 'सत्य और प्रिय वचन' का १ नाम है ॥

५ सङ्कुलम्, विरुष्टम्, परस्परपराहतम् (भा० दी० म० । ३ त्रि), 'विरुद्धार्थक या बेमौकेकी बात' के ३ नाम हैं ॥

६ लुप्तवर्णपदम्, ग्रस्तम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'रोगी, बालक या असमर्थके कहे हुए अधूरे वचन' के २ नाम हैं ॥

७ निरस्तम्, त्वरितोदितम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'शीघ्रतासे कहे हुए वचन' के २ नाम हैं ॥

८ अम्बूकृतम्, सनिष्ठीवम् (भा० दी० म० सनिष्ठेवम् । २ त्रि), 'थूकका छोटा निकलते हुए कहे गये वचन' के २ नाम हैं ॥

९ अशब्दम् (+ अवध्यम्), अनर्थकम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'अनर्थक वचन' अर्थात् 'बिना मतलबकी बात' के २ नाम हैं ॥

१० अनक्षरम्, अवाच्यम् (२ त्रि), 'नहीं कहने योग्य वचन' के २ नाम हैं ॥

११ आहतम्, मृषार्थकम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'अत्यन्त झूठे वचन' के २ नाम हैं । (जैसे-बन्ध्याका वह लड़का, आकाशपुष्पका मुकुट पहने हुए, सृगत्पुष्पाके जलमें स्नानकर, कच्छपीदुग्धको पीनेके उपरान्त, दाशशृङ्गके बाजाको

१. 'अम्बूकृतं सनिष्ठेवमवध्यं स्यादनर्थकम्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ 'सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं २ भणितं रतिकूजितम् (४८)
- ३ आढ्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् (४९)
- ४ अथ म्लिष्टमविस्पष्टं ५ वितथं तन्नृतं वचः ॥ २१ ॥
- ६ सत्यं तथ्यमृतं सम्यग्मानं त्रिषु तद्भाति ।
- ७ शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनः ॥ २२ ॥
- स्वाननिर्घोषनिर्हादिनादिस्वानानिध्वनयः ।
- आरघारावसंरावचिरावा ८ अथ मर्मरः ॥ २३ ॥
- स्वनिते वस्त्रपर्णानां ९ भूषणानां तु शिञ्जितम् ।

बजाकर अष्टम स्वरसे गान किया तो, उसे परार्द्धसे अधिक रूपया पारितोषिक मिला (.....)] ॥

- १ [सोल्लुण्ठनम्, सोत्प्रासम् (२ त्रि), 'हँसीकी बात'के २ नाम हैं] ॥
- २ [भणितम् (+ मणितम्), रतिकूजितम् (२ त्रि), 'रति-कालमें किये हुए शब्द'के २ नाम हैं] ॥

३ [आढ्यम्, हृद्यम्, (मनोहारि = मनोहारिन्), विस्पष्टम्, प्रकटोदितम् (५ त्रि), 'स्पष्ट वचन' के ५ नाम हैं । (म० से 'आढ्यम्' आदि ३ नाम 'मनोहर वचन' के हैं और शेष 'विस्पष्टम्' आदि २ नाम उक्तार्थक हैं)] ॥

- ४ म्लिष्टम्, अविस्पष्टम् (२ त्रि) 'अस्पष्ट वचन' के २ नाम हैं ॥
- ५ वितथम्, अन्नृतम् (२ त्रि), झूठे वचन' के २ नाम हैं ॥

६ सत्यम्, तथ्यम्, ऋतम्, सम्यक् (= सम्यक् । ४ त्रि), 'सत्य वचन' के ४ नाम हैं । ये चार शब्द द्रव्यवाचक होनेपर त्रिलिङ्ग होते हैं । ('जैसे-सत्यः पुरुषः, सत्या नारी, सत्यं कुलम्,') ॥

७ शब्दः, निनादः, निनदः, ध्वनिः, ध्वानः, रवः, स्वनः, स्वानः, निर्घोषः, निर्हादः, नादः, निस्वानः, निस्वनः, आरवः, आरावः, संरावः, विरावः (१७ पु), 'शब्द' के १७ नाम हैं ॥

- ८ मर्मरः (पु), 'कपड़े या सूखे पत्तोंके शब्द' का १ नाम है ॥
- ९ शिञ्जितम् (न । + स्वामी म० 'शिञ्जा'), 'आभूषणके शब्द'का १ नाम है ॥

१. 'सोल्लुण्ठनं.....प्रकटोदितम्' अवमंशः क्षी० स्वा० टीकायामुपलभ्यते । 'सोल्लुण्ठनं.....कूजितम्' इत्येतावन्मात्रोऽशौ भा० दी० व्याख्यातम् ॥

- १ निकाणो निकणः काणः कणः कणनमित्यपि ॥ २४ ॥
 वीणायाः कणिते २ प्रादेः प्रकाणप्रकणादयः ।
 ३ कोलाहलः कलकलः^४स्तिरश्चां वाशितं कृतम् ॥ २५ ॥
 ५ स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने ६ गीतं गानमिमे समे ।
 इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

७. अथ नाट्यवर्गः ।

७ निषादर्वभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ।

१ निकणः, निकणः, काणः, कणः (४ पु), कणनम् (न), 'वीणा आदिके शब्द' के ५ नाम हैं ॥

२ इन 'निकाण' आदि शब्दोंके 'प्र' आदि (आदिसे 'उप, सु' इत्यादिका संग्रह है) उपसर्ग जोड़नेसे बने हुए 'प्रकाणः' प्रकणः' आदि (आदि शब्दसे 'प्रकणनम्, उपकणः, उपकाणः, उपकणनम्.....' का संग्रह है) शब्द भी उसी अर्थमें होते हैं । ('मा० दी० मतमें 'शिक्षितम्.....' आदि ६ नाम 'भूषणादिके शब्द' के हैं, 'प्रकाण' आदि 'वीणादिके शब्द' के हैं') ॥

३ कोलाहलः, कलकलः (२ पु०), 'कोलाहल, शोरगुल' के २ नाम हैं ॥

४ वाशितम् (+ वासितम् । न), 'पक्षियोंके खड़खड़ाने' अर्थात् शब्द करने'का १ नाम है ॥

५ प्रतिश्रुत् (स्त्री), प्रतिध्वानः (+ प्रतिध्वनिः । पु), प्रतिध्वनित शब्द' के २ नाम हैं । ('ऐसा शब्द पहाड़ आदिकी गुफामें या मन्दिरोंमें होता है') ॥

६ गीतम्, गानम् (२ न), 'गाना' के २ नाम हैं ॥

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

७. अथ नाट्यवर्गः ॥

७ निषादः, ऋषभः, गान्धारः, षड्जः, मध्यमः, धैवतः,

१. चिन्त्यमेव, 'कणो वीणायाञ्च' (पा० सू० ३।३।६५) इति 'च'कारस्य, 'नो अनुपसर्गो' इत्यनुकर्षार्थकत्वात् स्त्री० स्वा० मवे० रा० कु० दी० कृतपूर्वव्याख्यानस्यैवोचितत्वात् ॥

२ 'नासां कण्ठमुरस्तालुं जिह्वां दन्तांश्च भ्रंशयन् ।

पङ्क्त्यः संजायते यस्मात्तस्मात्पङ्क्त इति स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

३ 'तद्वदेवोत्थितो वायुररः कण्ठसमाहृतः ।

नाभिं प्राप्नो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः' ॥ २ ॥ इति ॥

पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्डोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

१ काकली तु कले सूक्ष्मे २ ध्वनी तु मधुरास्फुटे ।

कलो ३ मन्द्रस्तु गम्भीरे ४ तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

५ 'नृणां गुरांस मध्यस्थो द्विविधनिविधो ध्वनिः (५०)

स मन्द्रः कण्ठाध्यक्षस्तारः शिरसि गोयते' (५१)

६ समन्वितलयस्त्वेकतालो ७ वीणा तु बल्लका ।

पञ्चमः (७ पु), ये ७ 'वीणा आदिके तार तथा प्राणियोंके कण्ठसे निकले हुए स्वरोंके भेद' हैं ।

१ काकली (+ काकलिः । स्त्री), 'मधुर ध्वनि' का १ नाम है ॥

२ कलः (त्रि), 'अस्पष्ट मधुर ध्वनि' का १ नाम है ॥

३ मन्द्रः (+ मद्रः । त्रि), 'गम्भीर ध्वनि' का १ नाम है ॥

४ तारः (त्रि), 'अत्यन्त ऊँचे शब्द' का १ नाम है ॥

५ [मनुष्योंके हृदयमें बाह्य प्रकारका ध्वनियों रहना हैं, उनमें कण्ठके बीच वालेको 'मन्द्रः', (त्रि) 'मन्द्र' और शिरके बीच रहनेवालोंको 'तारः' (त्रि), 'तार' कहते हैं] ॥

६ एकतालः (पु), 'गति और बाजाओंके लयका एक स्वरमें मिलाने' का १ नाम है ॥

७ वीणा, बल्लका, विपञ्ची (३ स्त्री), 'वीणा' के ३ नाम हैं ॥

१. 'नृणां गुरांसि' 'गोयते' इत्यंशः केवलं महेष्वर्याख्यायते पुस्तके समुदाहृत्यते, किन्तु सर्वैरप्यव्याख्यातोऽयमित्यवधारयम् ॥

२. 'वायुः समुद्रतो नामेरुरोहकण्ठमूर्द्धसु ।

विचरन् पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

अथ प्रसङ्गात्कुतः २ स्थानात्कस्य २ स्वरस्याविर्भाव इत्यत्र नारदाक्तिः प्रदर्श्यते—

'षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम् ।

अजाविकौ च गान्धारं कौञ्चो वदति मध्यमम् ॥ १ ॥

पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम् ।

अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः' ॥ २ ॥ इति ॥

पुष्पसाधारणे काले वसन्तर्षौ इत्यर्थः ॥

३. कस्य २ वीणायाः कानि २ नामानोत्पन्न इमोक्तं प्रदर्श्यते—

विपश्ची १ सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिव्यादिनी ॥ ३ ॥

२ ततं वीणादिकं वाद्यश्मानसं सुरजादिकम् ।

४ वंशादिकं तु शुषिरं ५ काव्यतालानिकं घनम् ॥ ४ ॥

६ चतुर्विधमिदं वाद्यं वादिभ्यातोद्यनामकम् ।

१ परिव्यादिनी (स्त्री), 'सितार' अर्थात् 'सात तारवाली वीणा' का १ नाम है ॥

२ ततम् (न), 'वीणा आदि बाजाओं' का १ नाम है । ('आदि पदसे 'सैरन्धी, रावणहस्त, एकतारा, सारंगी, इसराज, बेला, तानपूरा, का संग्रह है') ॥

३ आनन्दम् (+ अवनन्दम् । न), 'जो चमड़ेसे मढ़े गये हों, उन सुरज आदि बाजाओं' का १ नाम है । ('जैसे—सुरज, पटह, ढोल, तबला,') ॥

४ शुषिरम् (+ शुषिरम् । न), 'वंशी आदि बाजाओं' का १ नाम है । ('आदि पदसे 'बृह्म, मुरली, तुतुहा, सीगा, वेन का संग्रह है') ॥

५ घनम् (न), 'घड़ी, घण्टा आदि बाजाओं' का १ नाम है । ('आदि पदसे 'घण्टी, झाल, जोड़ी, मंजीरा, का संग्रह है') ॥

६ वादित्रम्, आतोद्यम् (२ न), पूर्वोक्त 'तत १, आनन्द २, शुषिर ३ और घन ४' इन चार प्रकारके बाजाओं के २ नाम हैं ॥

'शिवस्य वीणा नालम्बी सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥

नारदस्याथ महती गणानान्तु प्रभावती ।

विश्ववसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।

चाण्डालानां तु कण्डोलवीणा चाण्डालिकाऽपि सा' ॥ इति ॥

अ० चि० म० 'हैम' २ । २०२-२०४ ॥

१. वंशादिकं तु शुषिरं इति मा० दी० प्राच्यसम्मतं पाठान्तरम्, क्षी० स्वा० महे० सम्मतं तु मूलोक्तमित्यवधेयम् ॥

२. तथा च भरतः—

'तत्तन्नीयवनदं च घनं शुषिरमेव च । अतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणाश्रितम्' ॥१॥ इति ॥

- १ मृदङ्गा सुरजा २ भेदास्त्वङ्ग्यालिङ्गयोर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥
 ३ स्याद्यशःपटहो ढक्का ४ मेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ।
 ५ आनकः पटहोऽस्त्री स्याद्वकोणो वीणादिषाद्वयम् ॥ ६ ॥
 ७ वीणादण्डः प्रवालः स्यात्ककुभस्तु प्रसेवकः ।
 ९ कोलम्बकस्तु कायोऽस्या १० उपनाहो निवन्धनम् ॥ ७ ॥

१ मृदङ्गः, सुरजः (२ पु) 'मृदङ्ग' के नाम हैं ।

२ अङ्गयः, आलिङ्गयः, ऊर्ध्वकः (३ पु) ये तीन 'मृदङ्ग' के भेद हैं ।
 (हरीतकीके समान आकारवाला 'अङ्गय', उसके मध्यभागके समान आकार
 वाला 'ऊर्ध्वक' और गोपुच्छके समान आकारवाला 'आलिङ्गय' होता है) ॥

३ यशःपटहः (पु), ढक्का (स्त्री) 'नगाड़ा' के दो नाम हैं ॥

४ मेरी (+ मेरि; भग्भा । स्त्री), दुन्दुभिः (पु । आनकः, दुन्दुभिः ।
 २ पु) 'दुन्दुभिः' के २ नाम हैं ॥

५ आनकः, पटहः, (२ पु), 'पटह' के २ नाम हैं ॥

६ कोणः (पु), 'वीणा, बेला, सारङ्गी या इसराज आदि बजानेके
 लिये काठकी बनाई हुई धनुही' का १ नाम है ॥

७ वीणादण्डः (भा० दी० म०), प्रवालः (२ पु) 'वीणादण्ड' के
 २ नाम हैं ॥

८ ककुभः, प्रसेवकः (२ पु) 'वीणाके नीचेवाले, चमड़ा आदिसे
 ढके हुए भाण्ड' के २ नाम हैं ॥

९ कोलम्बकः (पु), 'वीणाका ढाँचा' अर्थात् 'ताररहित वीणाके
 ढण्डादि समुदाय' का १ नाम है ॥

१० उपनाहः (पु), निवन्धनम् (न । भा० दी० म०), जहाँ वीणा-
 का तार बाँधा जाता है, उस जगह' के २ नाम हैं ॥

१. '.....'भेर्यामानकदुन्दुभी' इति भा० दी० सम्मतः पाठः । तत्र भेर्यामानकदुन्दुभि-
 शब्दान् पृथक् २ व्याख्याय 'द्वे भेर्याः' इति तदुक्तिश्चिन्तया 'त्रीणि भेर्याः' इत्युक्तौचित्यात् ॥

२. १. ४. तपुक्म्—'हरीतक्याकृतित्वङ्गयो यवमध्यस्तयोर्ध्वकः ।

आलिङ्गयश्चैव गोपुच्छसमानः परिकीर्तितः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ घाद्यप्रमेदा डमरुमड्डुडिण्डिमःशर्शराः ।
 मर्दलः पणवोऽन्ये च २ नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥
 ३ विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्व ४ मोघो ५ घनं क्रमात् ।
 ६ तालः कालक्रियामानं ७ लयः साम्य ८ मथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥
 ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।
 ९ तौर्यप्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

१ डमरुः मड्डुः, डिण्डिमः, शर्शरः, मर्दलः, पणवः (१ पु), आदि ('आदि पदसे 'गोमुखः, हुडुकः.....' का संग्रह है') 'डमरु, मड्डु अर्थात् जलतरङ्ग, डुगडुगी, झांझ, मर्दल, ढोल आदि बाजाओं' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

२ नर्तकी, लासिका (२ स्त्री । वस्तुतः ये दोनों शब्द मिलिङ्ग हैं, किन्तु स्त्रीलिङ्गमें रूपप्रदर्शन के लिये स्त्रीलिङ्ग कहा गया है, पु० में 'नर्तकः' लासकः' न० में 'नर्तकम् , लासकम्' ऐसे रूप होते हैं), 'नाचने वालों' के २ नाम हैं ॥ ('जैसे—'कथक, छोकड़ा, वेश्या.....') ॥

३ तत्त्वम् (न), 'विलम्बसे नाचने, गाने और बजाने' का १ नाम है ॥

४ मोघः (पु) 'जल्दी २ नाचने, गाने और बजाने' का १ नाम है ॥

५ घनम् (न), 'सामान्य समय (मध्यम गति) से नाचने, गाने और बजाने' का १ नाम है ॥

६ तालः (पु), 'ताल' अर्थात् 'जिसमें समय और क्रियाकी कमी-बेशीका प्रमाण रहता है, उसका १ नाम है ॥

७ लयः (पु), 'लय' अर्थात् 'जिसमें गाने बजाने और हाथ, अंग आदि चलाकर भाव दिखलानेके लिये समय और क्रियाकी कमी-बेशीका प्रमाण रहता है उसका १ नाम है ॥

८ ताण्डवम् (पु न), नटनम्, नाट्यम्, लास्यम्, नृत्यम् (+ नृत्यम्), नर्तनम् (५ न), 'नाचने' के १ नाम हैं ॥

९ तौर्यप्रिकम्, नाट्यम् (२ न), 'नाचना, गाना और बजाना, इन तीनोंके समुदाय' के २ नाम हैं ॥

- १ भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तकः ।
 स्त्रीवेषधारी पुरुषो २ नाट्योक्तौ ३ गणिकाऽञ्जुका ॥ ११ ॥
 ४ भगिनीपतिरावुत्तो ५ भावो विद्वान् ६ थावुकः ।
 जनको ७ युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥
 ८ राजा भट्टारको देव ९ स्तत्सुता भर्तृदारिका ।
 १० देवी कृताभिषेकाया ११ मितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

१ भ्रुकुंसः, भ्रुकुंसः, भ्रुकुंसः (+ भ्रुकुंसः । ३ पु), स्त्रीका रूप बनाकर नाचनेवाले पुरुष के ३ नाम हैं ॥

२ 'नाट्योक्तौ' इस पदका 'अङ्गद्वारः' (१।७।१६) के पहलेतक अभि-
 कार होनेसे आगे बड़े जानेवाले नामोंका प्रयोग नाटकमें ही होगा,
 अन्यत्र नहीं ॥

३ गणिका, अञ्जुका (२ स्त्री) 'वेश्या' के २ नाम हैं ॥

४ आवुत्तः (+ आवृत्तः । पु), 'बह्नोई' अर्थात् 'बहनके पति' का
 १ नाम है ॥

५ भावः (पु), 'विद्वान्' का १ नाम है ॥

६ आवुकः (पु), 'पिता' का १ नाम है ॥

७ युवराजः, कुमारः (२ पु । म० कुमारः, भर्तृदारकः) 'युवराज' के
 १ नाम हैं ॥

८ भट्टारकः, देवः (२ पु), 'राजा' के २ नाम हैं ॥

९ भर्तृदारिका (स्त्री), 'राजकुमारी' का १ नाम है ॥

१० देवी (स्त्री), 'पटरानी' का १ नाम है ॥

११ 'भट्टिनी' (स्त्री), 'राजाकी दूसरी सामान्य स्त्रियों' का १ नाम है ॥

^१अथमत्र प्रयोगक्रमः—

'गणिकानुचरैरञ्जुकेति नाम्ना नृपेण सा । युवराजस्तु सर्वेण कुमारो भर्तृदारकः ॥ १ ॥
 भट्टारको वा देवो वा बाण्यो भृत्यजनेन सः । ब्राह्मणेन तु नाम्नैव राजन्नित्यभिभिः स च ॥ २ ॥
 वयस्य राज्ञति वा विदूषक इमं वदेत् । अभिषिक्ता तु राज्ञाऽसौ देवीत्यन्या तु भोगिनी ॥ ३ ॥
 भट्टिनीत्यपरैरन्या नोचैर्गौरवामिनीति सा' ॥ इति ॥

- १ अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ २ 'राजशालस्तु राष्ट्रियः ।
 ३ अम्बा मातापुत्र बाला स्याद्वासू'रार्यस्तु मारिषः ॥ २४ ॥
 ६ अत्तिका भगिनी जपेष्ठा ७ निष्ठानिर्वहणे समे ।

१ अब्रह्मण्यम् (न), 'सर्वथा अवध्य ब्राह्मण इत्यादिको मारनेके दोषको कहने' का १ नाम है ॥

२ राष्ट्रियः (पु), 'राजाके शाले' का १ नाम है । ('इसे प्रायः नगरके कोतवालीका अधिकार मिलता है') ॥

३ अम्बा, माता (= मातृ । २ स्त्री), 'माता' के २ नाम हैं । ('नाट्योक्तौ' इस शब्दका अधिकार प्रायिक या विधि और नियम है; अत एव नाटकस्थलसे भिन्न स्थलमें भी 'अम्बा, माता' इन शब्दोंका प्रयोग होता है') ॥

४ बाला, वासूः (२ स्त्री) 'कुमारी' के २ नाम हैं ॥

५ आर्यः, मारिषः (+ मार्षकः । २), 'अपनेसे श्रेष्ठ या सूत्र-धारके पार्श्ववर्त्ती' के २ नाम हैं ॥

६ अत्तिका (+ अन्तिका । स्त्री), 'बड़ी बहन' का १ नाम है ॥

७ निष्ठा (स्त्री) २ निर्वहणम् (न), 'नाटकके 'निर्वहण' नामक पांचवे सन्धि-विशेष या आरम्भ किये हुये विषयको पूरा करने' के २ नाम हैं ॥

१ 'राजशालस्तु' इति महे० सम्मतः पाठः ।

२ नाट्यातिरिक्तस्थलेऽपि 'अम्बा' शब्दस्य, नाट्यस्थलेऽपि 'मातृ' शब्दस्य प्रयोगोपलब्धेर्नाट्यस्थलेऽम्बाशब्दस्य प्रचुरप्रयोगात्प्राधिकत्वम्, 'मट्टिन्यञ्जुकाप्तिके'त्यादीनान्तु नियमः । अत एव—

'अथेषा रूपकादीनामुक्तीर्वक्ष्याम्यशेषतः । कामुचित्रियमस्तत्र विधिरेव तु कामुचिद' ॥ १ ॥

इति शब्दार्णवोक्तयोर्विधिनियमयोः सङ्गतिरित्यवधेयम् ॥

३ तदुक्तं साहित्यदर्पणे—

'मुखं १ प्रतिमुखं २ गर्भो ३ विमर्शः ४ उपसंहृतिः ५ ।

इति पञ्चास्य भेदाः स्युः क्रमात्' ।

सा० द० ६ । ७५-७६ ॥

उपसंहृतिर्निर्वहणमित्यर्थः । एतल्लक्षणञ्चोक्तं सुभाकरेण—

'मुखसंख्यादयो यत्र विकीर्णा बीजसंयुताः । महाप्रयोजनं यान्ति तन्निर्वहणमुच्यते' ॥ १ ॥ इति

- १ हण्डे २ हञ्जे ३ हल्लाऽऽह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥
 ४ अङ्गद्वारेऽङ्गविशेषो ५ व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।
 ६ निर्वृत्ते त्वङ्गसन्ध्याभ्यां द्वे त्रिष्वङ्गिकऽसात्त्विके ॥ १६ ॥
 ८ शृङ्गारधीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः ।

१ हण्डे (अ), 'नीचको बुलाने' का १ नाम है ॥

२ हञ्जे (अ), 'चेटी (दासी) को बुलाने' का १ नाम है ॥

३ हल्ला (अ), 'सखीको बुलाने' का १ नाम है ॥

४ अङ्गद्वारः, अङ्गविशेषः (२ पु) 'नृत्य विशेष' के २ नाम हैं ।
 ('नाट्योक्तौ' इस पदका अधिकार यही तक है, अतः आगे कहे जानेवाले
 शब्दों का प्रयोग नाटकसे भिन्न स्थलमें भी होगा) ॥

५ व्यञ्जकः, अभिनयः (२ पु) 'इशारा आदिसे मनके अभिप्रायको
 प्रकट करने' के २ नाम हैं ॥

६ आङ्गिकम् (त्रि), 'अङ्गके द्वारा किये गये कटाक्ष आदि' का
 १ नाम है ॥

७ सात्त्विकम् (त्रि), 'सत्त्वगुणसे उत्पन्न स्तम्भ आदि गुणों' का
 १ नाम है । ('स्तम्भ १, स्वेद (पसीना) २, रोमाञ्च ३, स्वरभङ्ग ४, वेपथु
 (कम्पन) ५, वैवर्ण्य ६, अश्रु ७ और प्रलय (मूर्च्छा) ८, ये ८
 'सात्त्विक गुण' हैं ॥

८ शृङ्गारः, धीरः, करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, बीभत्सः, रौद्रः

यथा वा साहित्यदर्पणे—

“बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम् । एकार्थमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत् ॥ १ ॥
 इति सा० द० ६ । ८१—८२ ॥

१. तदुक्तम्—‘स्तम्भः १ स्वेदोऽथ रोमाञ्चः ३ स्वरभङ्गोऽथ वेपथुः ५ ।

वैवर्ण्यं च मधुऽप्रलयऽहृत्पटौ सात्त्विका गुणाः ॥ १ ॥

इति सा० द० ३ । १३५—१३६ ॥

- बीभत्सरौद्रौ च रसाः १ शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥
 २ उत्साहवर्धनो वीरः ३ कारुण्यं करुणा घृणा ।
 कृपा दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यष्टथो हसः ॥ १८ ॥
 हासो हास्यं च ५ बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।
 ६ विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥
 दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ।

(८ पु) ये ८ 'शृङ्गार, वीर आदि' 'रसः' (पु) अर्थात् 'रस' हैं । (च शब्दसे नवम 'शान्तः' (पु) अर्थात् 'शान्त' रसका और मुनीन्द्रके मतसे दशम 'वात्सल्यम्' (न) अर्थात् 'वात्सल्य' रसका भी संग्रह है) ॥

१ शृङ्गारः, शुचिः, उज्ज्वलः, (३ पु), 'शृङ्गार रस' के ३ नाम हैं ॥

२ उत्साहवर्धनः, वीरः, (२ पु), 'वीर रस' के २ नाम हैं ॥

३ कारुण्यम् (न), करुणा, घृणा, कृपा, दया, अनुकम्पा (५ स्त्री), अनुक्रोशः (पु), 'करुण रस या दया' के ७ नाम हैं ॥

४ हसः, हासः (+ हासिका, स्त्री । २ पु), हास्यम् (न), 'हास्य रस' के ३ नाम हैं ॥

५ बीभत्सम्, विकृतम् (+ वैकृतः । २ त्रि), 'बीभत्स रस' के २ नाम हैं ॥

६ विस्मयः (पु), अद्भुतम्, आश्चर्यम्, चित्रम् (३ त्रि), 'आश्चर्य या अद्भुत रस' के ४ नाम हैं ॥

७ भैरवम्, दारुणम्, भीषणम्, भीष्मम्, घोरम्, भीमम्, भयानकम्,

१. साहित्यदर्पणे 'शान्त'स्यापि नवमरसत्वमङ्गीकृतम् । तथा —

'शृङ्गार १ हास्य २ करुण ३ रौद्र ४ वीर ५ भयानकाः ६ ।

बीभत्सोऽद्भुत ८ हस्यद्वौ रसाः शान्तस्तथा मतः' ॥ १ ॥

इति सा० द० ३ । १८२ ॥

२. मुनीन्द्रेण 'वात्सल्य'स्यापि दशमरसत्वमङ्गीकृतम् । तथा —

'स्फुटं चमत्कारितया वत्सलं च रसं विदुः' ।

इति सा० द० ३ । २७ ।

- भयङ्करं प्रतिभयं १ रौद्रं तूग्रमरमी त्रिषु ॥ २० ॥
 चतुर्दश ३ दरस्त्रासोभीतिभीः साध्वसं भयम् ।
 ४ विकारो मानसो भावोऽनुभावं भावबोधकः ॥ २१ ॥
 ६ गर्वोऽभिमानोऽहङ्कारोऽमानश्चित्तसमुन्नतिः ।
 ८ 'दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः' (५२)
 ९ अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥
 रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽवहेलनमसूर्क्षणम् ।

भयङ्करम्, प्रतिभयम्, (१ त्रि), 'भयानक रस' के १ नाम हैं ॥

१ रौद्रम्, उग्रम्, (२ त्रि), 'उग्र रस' के २ नाम हैं ॥

२ 'अद्भुतम्' यहाँसे लेकर 'उग्रम्' यहाँतक १४ शब्द 'रस'के अर्थमें प्रयुक्त होनेपर पुंलिङ्ग हैं और 'रसवाले'के अर्थमें प्रयुक्त होनेपर त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ दरः, त्रासः (२ पु), भीतिः, भीः (+ भिया । २ स्त्री), साध्वसम्, भयम् (२ न), 'डर' के ३ नाम हैं ॥

४ भावः (पु), 'रत्यादिरूप मनके विकार-विशेष' का १ नाम है ॥

५ अनुभावः (पु), 'मनके विकारके प्रकाशक रत्यादिसूचक रोमाञ्च आदि' का १ नाम है ॥

६ गर्वः, अभिमानः, अहङ्कारः (३ पु), 'अभिमान, घमण्ड' के ३ नाम हैं ॥

७ मानः (पु), चित्तसमुन्नतिः (भा० दी० म० । स्त्री), 'मान, चित्तोन्नति' के २ नाम हैं । ('महे० आदिके मतसे १ ही नाम है । 'गर्व' आदि ५ शब्द एकार्थक हैं, यह भी किसी किसी का मत है) ॥

८ [दर्पः, अवलेपः, अवष्टम्भः, चित्तोद्रेकः, स्मयः, मदः (६ पु), 'घमण्ड' के ६ नाम हैं] ॥

९ अनादरः, परिभवः, परीभावः (३ पु), तिरस्क्रिया, रीढा, अवमानना, अवज्ञा (४ स्त्री), अवहेलनम् (+ अवहेला, स्त्री), असूर्क्षणम् (+ सु०, बु० मनो०, महे० 'असूचणम्, असुचणम्, संसूर्चणम्, संसुचणम्' । २ न), 'अनादर' के ९ नाम हैं ॥

१ मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा २ साऽपत्रपाऽन्यतः ॥ २३ ॥

३ क्षान्तिस्तितिक्षाऽभिध्या तु 'परस्य विषये स्पृहा ।

५ अक्षान्तिर्हीर्ष्याऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥

७ वैरं विरोधो विद्वेषो ८ मन्युशोकौ तु शुक्लिष्याम् ।

९ पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

१ मन्दाक्षम् (+ मन्दाक्ष्यम् । न), ह्रीः, त्रपा, व्रीडा (+ व्रीडः, पु), लज्जा (४ स्त्री), 'लज्जा' के ५ नाम हैं ॥

२ अपत्रपा (स्त्री), 'पिता आदि दूसरेसे लज्जा करने' का १ नाम है ॥

३ क्षान्तिः, तितिक्षा (२ स्त्री), 'दूसरेकी उन्नतिको सहन करने' के २ नाम हैं ॥

४ अभिध्या (स्त्री), 'दूसरेकी सम्पत्ति आदिको चाहने' का १ नाम है ॥

५ अक्षान्तिः, हीर्ष्या (२ स्त्री), 'हीर्ष्या' अर्थात् 'दूसरे की सम्पत्तिको नहीं सहने' के २ नाम हैं ॥

६ असूया (स्त्री), 'औद्विग्नसे किसीके गुण-विषयक काममें भी दोष निकालने' का १ नाम है । ('जैसे—किसीके बदमाश होकर पुण्य करनेपर 'यह नामके लिये पुण्य करता है' इत्यादि दोष निकालनेको 'असूया' कहते हैं') ॥

७ वैरम् (न), विरोधः, विद्वेषः (२ पु), 'वैर करने' के ३ नाम हैं ॥

८ मन्युः, शोकः (२ पु), शक् (= शुच्, स्त्री), 'शोक' के ३ नाम हैं ॥

९ पश्चात्तापः, अनुतापः, विप्रतीसारः (+ विप्रतिसारः । ३ पु), 'पछ-ताने' के ३ नाम हैं ॥

१. '.....परस्य विषये स्पृहा' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'असूयाऽन्यगुणद्वीनामौद्विग्नदसहिष्णुता ।

दोषोद्दोषभ्रूविभेदाऽवशाकोपेक्षितादिकृत्य' ॥ १ ॥ इति सा० द० ३।१६६॥

- १ कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट्क्रुधौ स्त्रियौ ।
 २ शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥
 ४ प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोऽथ दोहदम् ।
 इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाङ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥
 कामोऽभिलाषस्तर्षश्च ६ सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ।
 ७ उपाधिर्ना धर्मचिन्ता ८ पुंस्याधिर्मनस्वी व्यथा ॥ २८ ॥
 ९ स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानं मुत्कण्ठा उत्कलिके समे ।
 ११ उत्साहोऽध्यवसायः स्यात् १२ स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥
 १३ कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे ।

१ कोपः, क्रोधा, अमर्षः, रोषः, प्रतिघा (५ पु), रुट् (= रुष् + रुषा), क्रुध् (+ क्रुधा । स्त्री), 'क्रोध' के ७ नाम हैं ॥

२ शीलम् (न), 'शील' अर्थात् 'आचरण शुद्ध रखने' का १ नाम है ॥

३ उन्मादः, चित्तविभ्रमः (२ पु), 'पागलपन' के २ नाम हैं

४ प्रेमा (= प्रेमन्, पु), प्रियता (स्त्री), हार्दम्, प्रेम (= प्रेमन् २ न), स्नेहः (पु) 'प्रेम' के ५ नाम हैं ॥

५ दोहदम् (न), इच्छा, काङ्क्षा, स्पृहा, ईहा, तृट् (= तृष्), वाङ्छा, लिप्सा (७ स्त्री), मनोरथः, कामः, अभिलाषः, तर्षः (४ पु), 'इच्छा, चाहना' के १२ नाम हैं । ('म० से 'दोहदम्' यह १ नाम 'गर्भिणीकी इच्छा' का है और शेष १२ नाम उक्तार्थक हैं') ॥

६ लालसां (पु स्त्री), 'लालसा' अर्थात् 'अधिक चाहना' का १ नाम है ॥

७ उपाधिः (पु), धर्मचिन्ता (स्त्री) 'धर्मविषयक चिन्ता' के २ नाम हैं ॥

८ आधिः (पु), 'मानसिक दुःख' का १ नाम है ॥

९ चिन्ता, स्मृतिः (२ स्त्री), आध्यानम् (न), 'याद करने' के ३ नाम हैं ॥

१० उत्कण्ठा, उत्कलिका (२ स्त्री), 'उत्कण्ठा' के २ नाम हैं ॥

११ उत्साहः, अध्यवसायः (२ पु) 'उत्साह' के २ नाम हैं ॥

१२ वीर्यम् (न), 'सामर्थ्ययुक्त उत्साह' का १ नाम है ॥

१३ कपटः (पु न), व्याजः, दम्भः उपधिः (३ पु), छद्म (= छद्मन्),

- कुसुतिर्निकृतिः शाठ्यं १ प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥
 २ कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।
 ३ स्त्रीणां विलासविश्वोकविभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥
 हेला लीलेत्यमी द्वावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ।

कैतवम्, कुसुतिः, निकृतिः, (२ स्त्री), शाठ्यम् (+ शठनम् । शेष ३ न),
 'धूर्तता, कपट, दगाबाजी' के ९ नाम हैं ॥

१ प्रमादः (पु), अनवधानता (स्त्री), 'असावधाना' के २ नाम हैं ॥

२ कौतूहलम्, कौतुकम्, कुतुकम्, कुतूहलम् (४ न), 'कौतूहल'
 अर्थात् 'खेल, तमाशा, जादू,' के ४ नाम हैं ॥

३ विलासः, विश्वोकः, विभ्रमः (३ पु), ललितम् (न), हेला, लीला
 (२ स्त्री), ये ३ 'स्त्रियोंके शृङ्गार, भाव अर्थात् रस्यादि और मनोविकारसे
 उत्पन्न क्रियाविशेष' हैं, इनका 'द्वावः' (पु) 'द्वाव' यह १ नाम है । ('नाटक-
 रत्नकोष' में—'लीला १, विलास २, विश्वसृति ३, विभ्रम ४, किलकिञ्चित ५,
 मोट्टायित ६, कुट्टमित ७, विश्वोक ८, ललित ९ और विद्वत १० ये १० स्त्रियोंकी
 स्वभावज क्रियाएँ हैं, यह कहा है' । साहित्यदर्पण' में—'भाव १, हाव २, हेला
 ३, शोभा ४, कान्ति ५, दोसि ६, माधुर्य ७, प्रगल्भता ८, औदार्य ९, धैर्य १०,
 लीला ११, विलास १२, विश्वसृति १३, विश्वोक १४, किलकिञ्चित १५, मोट्टा-
 यित १६, कुट्टमित १७, विभ्रम १८, ललित १९, मद् २०, विद्वत २१, तपन २२,
 मौग्ध्य २३, विशेष २४, कुतूहल २५, हसित २६, चकित २७, और केलि २८, ये
 २८ जवानोंमें स्त्रियोंके सार्विक भावसे उत्पन्न अलङ्कार होते हैं, ऐसा कहा है;
 उनमें 'भाव' आदि ३ 'आङ्गिक अलङ्कार' हैं, 'शोभा' आदि ७ विना यज्ञके उत्पन्न
 अलङ्कार, हैं और 'लीला' आदि १८ 'स्वभावज अलङ्कार' हैं । पूर्वोक्त २८ अलङ्कारों
 में 'भाव' आदि १० अलङ्कार पुरुषोंके भी हो सकते हैं, किन्तु स्त्रियोंमें ही इनकी

१. तदुक्तं नाटकरत्नकोषे—

'लीला विलासो विश्वसृतिविभ्रमः किलकिञ्चितम् ।

मोट्टायितं कुट्टमितं विश्वोको ललितं तथा ॥ १ ॥

विद्वतं चेति मन्तव्या दश स्त्रीणां स्वभावजाः' ॥ इति ॥

१ द्रवःकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च ॥ ३२ ॥

२ व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च ३ क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।

४ घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥

अधिक शोभा होती है, ऐसा भी कहा है') ॥

१ द्रवः, केलिः (+ केली, स्त्री), परीहासः (+ परिहासः । ३ पु), क्रीडा, लीला (+ खेला । स्त्री), नर्म (= नर्त्यन् न), 'क्रीडामात्र' के ६ नाम हैं ॥

२ व्याजः, अपदेशः (२ पु), लक्ष्यम् (+ लक्ष्म् । न), 'बहाना करने' के ३ नाम हैं ॥

३ क्रीडा, खेला (२ स्त्री), कूर्दनम् (न), 'लङ्कपनके खेल' के ३ नाम हैं । (म० प्रथम दो नाम उक्तार्थक और तीसरा नाम 'कूर्दने' का है ।

४ घर्मः, निदाघः, स्वेदः (३ तु), भा० द्वी० म१ 'घाम' के और मु० म० 'पसीने' के ३ नाम हैं ॥

५ प्रलयः (पु) नष्टचेष्टता (+ मूर्च्छा । स्त्री), 'बेहोशी' के २ नाम हैं ॥

१. तदुक्तम्—

'यौवने सर्वजास्तासामष्टाविंशतिसङ्ख्यकाः ।

अलङ्कारास्तत्र भावभावहेलास्त्रयोऽङ्गजाः ॥ १ ॥

शोभा कान्तिश्च र्दासिश्च माधुर्यं च प्रगल्भता ।

औदार्यं धैर्यमित्येते सप्तैव स्युरयलजाः ॥ २ ॥

लीला विलासो विच्छित्तिर्विव्वोकः किलकिञ्चितम् ।

मोहाधितं कुट्टमितं विभ्रमो ललितं मद्रः ॥ ३ ॥

विद्वत् तपनं मौग्ध्यं विक्षेपश्च कुतूहलम् ।

हसितं चकितं केलिरित्यष्टावशसंख्यकाः ॥ ४ ॥

स्वभावजाश्च, भावाद्या दश पुंसां भवन्त्यपि ॥'

(इति सा० द० १।८९-९१ ॥)

एतेषां लक्ष्यगोदाहरणान्यत्र ग्रन्थविस्तरमिष्य नोक्तानोत्पत्तयानि सा० द० १।९१-११० तमे श्लोके द्रष्टव्यानि ॥

- १ अवहित्थाऽऽकारश्रुतिः २ समौ संवेगसंभ्रमौ ।
 ३ स्यादाच्छुरितकं हासः स्रोतप्रासः ४ स ममाकस्मृतम् ॥ ३४ ॥
 मध्यमः स्याद्विहसितं ५ रोमाञ्चो 'रोमहर्षणम्' ।
 ७ क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं ८ जृम्भस्तु किञ्चु जृम्भणम् ॥ ३५ ॥
 ९ विप्रलम्भो विलम्बादौ १० रिङ्गणं स्खलनं समे ।
 ११ स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥

१ अवहित्था (+ न), आकारश्रुतिः (२ स्त्री), 'अपने आकारको छिपाने' के २ नाम हैं ॥

२ संवेगः, संभ्रमः (२ पु) 'हर्ष आदिके कारण शीघ्रता करने' के २ नाम हैं ॥

३ आच्छुरितकम् (न । कात्य म० 'अवच्छुरितम्') 'साभिप्राय हँसने' का १ नाम है ॥

४ 'स्मितम्' (न), 'साभिप्राय मुस्कुराने' का १ नाम है ॥

५ 'विहसितम्' (न) 'साधारण हँसने' का १ नाम है ॥

६ रोमाञ्चः (पु), रोमहर्षणम् (+ लोमहर्षणम् , रोमोद्गमः, उद्धर्षणम् उल्लासनकम् । 'रोमाञ्च होने' के २ नाम हैं ॥

७ क्रन्दितम् रुदितम्, क्रुष्टम् (३ न) 'रोने' के ३ नाम हैं ॥

८ जृम्भः (त्रि), जृम्भणम् (न) 'जम्हाई' के २ नाम हैं ॥

९ विप्रलम्भः, विलम्बादः (२ पु) 'ठगपनेसे बात करने' के २ नाम हैं ॥

१० रिङ्गणम् (+ रिङ्गणम्), स्खलनम् (२ न) 'धर्ममार्गसे प्रतिकूल चलने, रेंगने, की जगहके चिकनी धानेसे या अन्य किसी कारणसे पैर फिसल जाने' के ५ नाम हैं ॥

११ निद्रा (स्त्री) शयनम् (न) स्वापः, स्वप्नः, संवेशः (३ पु), 'नींद' के ५ नाम हैं ॥

१. ".....लोमहर्षणम्" इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'ईषदिकसितैर्द तैः कटाक्षैः सौष्ठवान्वितम् ।

अकक्षितद्विजदारमुत्तमानां स्मितं भवेत्' ॥ १ ॥ इति ॥

३. तदुक्तम्—'आकुञ्चितकपोकाक्षं सस्वनं निःस्वनं तथा ।

प्रस्तावोत्थं सानुरागमाहुर्विहसितं युषाः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ तन्द्री प्रमीला २ भ्रुकुटिभ्रुकुटिभ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।
 ३ अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्षिण ४ संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥
 स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाप्य वेपथुः ।
 कम्पोऽदृथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥
 इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

८. अथ पातालभोगिवर्गः ।

- ७ अधोभुवनपातालं बलिसञ्ज्ञ रसातलम् ।
 नागलोकोऽथ कुहरं शुषिरं विवरं विलम् ॥ १ ॥

१ तन्द्री (+ तन्द्ऱिः, तन्द्ऱा), प्रमीला (२ स्त्री), 'तन्द्ऱा होने' अर्थात् 'अधिक थकावट आदिके कारण शरीरेन्द्रियोंके सिथिल होने या नींद के आदि और अन्तर्मे आलस्य होने' के २ नाम हैं ॥

२ भ्रुकुटिः, भ्रुकुटिः, भ्रुकुटिः (+ भ्रुकुटिः । ३ स्त्री), 'क्रोध आदिसे भौंहको टेढ़ा करने' के ३ नाम हैं ॥

३ अदृष्टिः (स्त्री), 'क्रूरतापूर्वक देखने' का १ नाम है ॥

४ संसिद्धिः, प्रकृतिः (२ स्त्री), स्वरूपम् (न), स्वभावः, निसर्गः (२ पु), 'स्वभाव' के ५ नाम हैं ॥

५ वेपथुः, कम्पः (२ पु), 'काँपने' के २ नाम हैं ॥

६ क्षणः, उद्धर्षः, महः, उद्धवः, उत्सवः (५ पु), 'उत्सव' के ५ नाम हैं ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

८. अथ पातालभोगिवर्गः ।

७ अधोभुवनम् (+ अधः, अ०), पातालम्, बलिसञ्ज्ञ (= बलिसञ्ज्ञम्), रसातलम् (४ न), नागलोकः (पु । + अधोलोकः), 'पाताल' के ५ नाम हैं ॥

८ कुहरम्, शुषिरम् (सुषिरम्), विवरम्, विलम् (+ विलम्),

१.'शुषिरं विवरं विलम्' इति पाठान्तरम् ।

६ अ०

छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः ।

१ गर्तावटौ शुषि श्वभ्रे २ सरन्ध्रे शुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥

३ अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।

४ ध्वान्तं गाढेऽन्धतमसं ५ क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ ३ ॥

६ विश्वक्सेतमसं ७ नागाः काद्रवेयाऽस्तदीश्वराः ।

शेषोऽनन्तोऽवासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे ॥ ४ ॥

तिलित्सः स्यात्तदजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।

छिद्रम्, निर्व्यथनम्, रोकम्, रन्ध्रम्, श्वभ्रम् (+ स्वभ्रम् । ९ न), वपा, शुषिः (+ सुषिः । २ स्त्री), 'बिल' के ११ नाम हैं ॥

१ गर्तः (+ गर्ता, स्त्री), अवटः (+ अवटिः, स्त्री । २ पु), 'गढे' के २ नाम हैं ॥

२ शुषिरम् (त्रि । + सुषिरम्), 'छेदवाली चीज़' का १ नाम है ॥

३ अन्धकारः (पु न), ध्वान्तम्, तमिस्रम्, तिमिरम्, तमः (= तमस् । + तमसम् । ४ न), 'अन्धकार' के ५ नाम हैं ॥

४ अन्धतमसम् (न), 'बहुत अधिक अन्धकार' का १ नाम है ॥

५ अवतमसम् (न), 'थोड़े अन्धकार' का १ नाम है ॥

६ संतमसम् (न), 'सर्वत्र फैले हुए अन्धकार' का १ नाम है ॥

७ नागः, काद्रवेयः (२ पु), महे० मतसे 'नाग' के और भा० क्षी० मतसे 'फणा और पूँछके सहित मनुष्याकार देवयोनि-विशेष' के २ नाम हैं ॥

८ शेषः, अनन्तः (२ पु), 'शेष' अर्थात् 'नागोंके राजा' के २ नाम हैं ॥

९ वासुकिः, सर्पराजः (२ पु), 'वासुकि' अर्थात् 'साँपोंके राजा' के २ नाम हैं ॥

१० गोनसः (+ गोनासः), तिलित्सः (२ पु), 'पनस जातिके साँप या छोटे जातिके सर्प-सामान्य' के २ नाम हैं ॥

११ अजगरः, शयुः, वाहसः (३ पु), 'अजगर साँप' के ३ नाम हैं ॥

- १ 'अलगर्दो जलव्यालः २ समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥
- ३ मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।
- ५ सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ॥ ६ ॥
आशीविषो विषधरश्चक्रो व्यालः सरीसृपः ।
कुण्डली गूढपाञ्चश्रुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो वन्दशूको बिलेशयः ।
उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥
- ६ 'लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा (५३)
कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा (५४)

१ अलगर्दः (+ अलगर्दः), जलव्यालः (२ पु), 'डोंड़ साँप, या पानीमें रहनेवाले सब साँप' के २ नाम हैं ॥

२ राजिलः (+ राजीलः), डुण्डुभः (मु० म० डुण्डुभः, स्वा० म० दण्डुभः । २ पु), 'दोनों तरफ मुखवाले साँप' के २ नाम हैं । (इसे विष नहीं होता है) ॥

३ मालुधानः, मातुलाहिः (२ पु), 'खट्वाकार चितकबरे साँप' के २ नाम हैं ॥

४ निर्मुक्तः, मुक्तकञ्चुकः (२ पु) 'जिसने कँचुल छोड़ दिया हो उस साँप' के २ नाम हैं ॥

५ सर्पः, पृदाकुः, भुजगः, भुजङ्गः, अहिः, भुजङ्गमः, आशीविषः (+ आशी-विषः), विषधरः, चक्रो (= चक्रिन्), व्यालः (+ व्यालः), सरीसृपः, कुण्डली (= कुण्डलिन्), गूढपात् (गूढपाद्), चञ्चुःश्रवाः (= चञ्चुःश्रवस्), काकोदरः, फणी (= फणिन्), दर्वीकरः दीर्घपृष्ठः, वन्दशूकः, बिलेशयः (+ बिलेशयः) उरगः, पन्नगः, भोगी (= भोगिन्), जिह्मगः, पवनाशनः, (२५ पु । ये २५ पुसङ्ग हैं, किन्तु खिलिङ्ग होनेपर इनमें अकारान्तके 'सर्पिणी' भुजगी, इत्यादि रूप बहल जायेंगे), 'साँप' के २५ नाम हैं ॥

६ [लेलिहानः, द्विरसनः (+ द्विजिह्मः), गोकर्णः, कञ्चुकी (+ कञ्चुकिन्), कुम्भीनसः, फणधरः, हरिः, भोगधरः (८ पु), 'साँप' के ८ नाम ये भी हैं] ॥

१. 'अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ' इति पाठान्तरम् ।

- १ अहेः शरीरं भोगः स्याद्दाशोरष्यद्विदंष्ट्रिका' (५५)
 ३ त्रिधाहेयं विषास्थ्यादि ४ स्फटायां तु फणा द्वयोः ।
 ५ समौ कञ्चुकनिर्मोकौ ६ क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥
 ७ पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः ।
 'सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥
 दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।

- १ [भोगः (पु), 'साँपके शरीर' का १ नाम है] ॥
 २ [आशीः (= आशी । + आशीः, + आशिस्, स्त्री), अहिदंष्ट्रिका (२ स्त्री) 'साँपके दाँत' के २ नाम हैं] ॥
 ३ आहेयम् (त्रि), 'साँपके विष, हड्डी, शरीर, कँचुल, दाँत, आदि, साँपसे उत्पन्न पदार्थमात्र' का १ नाम है ॥
 ४ स्फटा (स्त्री । + फटा), फणा (स्त्री पु । + २ स्त्री पु), 'साँपके फणा' के १ नाम है ॥
 ५ कञ्चुकः, निर्मोकः (२ पु) 'साँपके कँचुल' के २ नाम हैं ॥
 ६ क्ष्वेडः (पु), गरलम्, विषम् (२ न । + २ पु न), 'विष, जहर' के ३ नाम हैं ॥
 ७ काकोलः, कालकूटः, हलाहलः (+ हलाहलम्, हलहलम् । ३ पु न) सौराष्ट्रिकः, (+ सारोष्ट्रिकः), शौक्लिकेयः, ब्रह्मपुत्रः, प्रदीपनः, दारदः, वत्सनाभः (१ पु) 'काकोल, कालकूट आदि स्थावर विष' का १-१ नाम है ।
 ('विषके दो भेद होते हैं—'स्थावर १ और जक्रम २' । पहले स्थावर-

१. 'सारोष्ट्रिकः.....' इति मु० पाठः ॥

२. तदुक्तं श्रीमद्भगवदन्वन्तर्युपदिष्टमुश्रुतेन मुश्रुतसंहितायाः कश्चिद्विद्वत्पुत्रेण—
 'स्थावरं जक्रमं चैव द्विविधं विषमुच्यते । दशाधिष्ठानमाद्यन्तु द्वितीयं षोडशाश्रयम्' ॥ १ ॥

मुश्रु० क० स्था० २

अन्यथा माषवनिदानस्य विषरोगनिदानप्रकरणे—

'स्थावरं जक्रमं चैव द्विविधं विषमुच्यते । मूलाद्यात्मकमाद्यं स्यात्परं सर्पादिसम्भवम्' ॥ १ ॥

मा० नि० विषरोगनिदानप्रकरणे

विषके १० भेद होते हैं—मूल १, पत्र २, फल ३, पुष्प ४, त्वक् (छाल) ५, क्षीर (दूध) ६, सार ७, निर्यास (लासा) ८, धातु ९ और कन्द १०^१ । उनमें मूलविषके ८, पत्रविषके ५, फलविषके १२, पुष्पविषके ५, त्वविष—निर्यासविष—सारविषके ७, क्षीरविषके ३, धातुविषके २ और कन्दविषके १३ भेद होते हैं । इन ५५ भेदोंके नाम टिप्पणीमें स्पष्ट हैं^२ । ये विष पहाड़, पेड़, पौधा आदि स्थावर पदार्थोंमें होते हैं । जङ्गमविष १६ तरहका होता है—इन भेदोंके नाम टिप्पणीमें स्पष्ट हैं^३ । जङ्गमविष बाघ, सिंह, भेड़िया, स्यार, सौँप, बिच्छू, बरें, भौरा, मधुमक्खी, मेंढक, छिपकिली, चूहा आदि लङ्गम जन्तुओंमें पाये

१. सुश्रुते 'दशाधिष्ठानमाद्यन्तु' इत्यनेनाद्यस्य स्थावरविषस्य दशाधिष्ठानान्युक्त्वा तानि नामतो निर्दिशति—

'मूलं १ पत्रं २ फलं ३ पुष्पं ४ त्वक् ५ क्षीरं ६ सार ७ एव च ।

निर्यासो ८ धातु ९ इत्यैव कन्दश्च १० दशमः स्मृतः' ॥ १ ॥

इति सुश्रु० क० स्था० २।२॥

२. तदुक्तं सुश्रुतस्य कल्पस्थानीयतृतीयाध्याये —

'तत्र क्लीतकाश्चमारगुञ्जासुगन्धगर्गरककरघाटविदुच्छिखाविजयानीत्यष्टौ मूलविषाणि । विषपत्रिकालम्भावरदारुककरम्भमहाकरम्भाणि पञ्च पत्रविषाणि । कुमुदतीव्रेणुकारकरम्भमहाकरम्भकर्कोटकरेणुकखद्योतकचर्मरीभगन्वासर्पघातिनन्दनसारपाकानीति द्वादश फलविषाणि । वेत्रकादम्बवलिजकरम्भमहाकरम्भाणि पञ्च पुष्पविषाणि । अन्त्रपाचककर्तरीसोरीयककरघाटकरम्भनन्दनवराटकानि सप्त त्वक्सारनिर्यासविषाणि । कुमुदघ्नीस्तुहीजाण्डक्षीयाणि त्रीणि क्षीरविषाणि । केणाश्मभस्म हरितालञ्च द्वे धातुविषे । कालकूटवत्सनाभसर्पपालककर्दमकवेराटकमुस्तकशृङ्गीविषप्रपुण्डरीकमूलकहालाहलमहाविषकर्कोटकानीति त्रयोदश कन्दविषाणि । इत्येवं पञ्चपञ्चाशत्स्थावरविषाणि भवन्ति' ॥

इति सुश्रु० क० स्था० २ । ३—१० ॥

३. तदुक्तं सुश्रुते कल्पस्थानीयतृतीयाध्याये—

'जङ्गमस्य विषस्योक्तान्यधिष्ठानानि षोडश । समासेन मया यानि विस्तरस्तेषु वक्ष्यते' ॥ १ ॥

तत्र इष्टिनिःश्वासदंष्ट्रानखमूत्रपुरीषशुकलालार्तवमुखसन्दंशविशद्विदगुदास्थिपित्तशूकश-
बानीति' ॥ २ ॥ इति सुश्रु० क० स्था० ३ । १-२ ।

१ विषवैद्यो जाङ्गलिको २ 'व्यालग्राह्यद्वितुण्डिकः ॥ ११ ॥
इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

९. अथ नरकवर्गः ।

३ स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।
४ तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥

जाते हैं । किन् २ जन्तुओंमें कौन २ विष रहते हैं यह भी टिप्पणीमें स्पष्ट है^२) ॥

१ विषवैद्यः, जाङ्गलिकः (२ पु), 'विषका दूर करनेवाले वैद्य' के २ नाम हैं ॥

२ व्यालग्राही (= व्यालग्राहन् । + व्यालग्राहः), द्वितुण्डिकः, (+ आ-द्वितुण्डिकः । २ पु), 'साँप पकड़नेवाले या सँपेरा' के २ नाम हैं ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

९. अथ नरकवर्गः ॥

३ नारकः, नरकः, निरयः (३ पुं), दुर्गतिः (स्त्री), 'नरक' के ४ नाम हैं ॥
४ तपनः, अवीचिः (+ स्त्री), महारौरवः, रौरवः, संघातः

१. ".....व्यालग्राह्याद्वितुण्डिकः" इति पाठान्तरम् ॥

२. 'तत्र दृष्टिनिःश्वासविधास्तु दिव्याः सर्पाः, भौमास्तु दंष्ट्राविषाः । मार्जारश्वानर-मकरमण्डकपाकमत्स्यगोषाशम्बूकप्रचलाकगृह्णोबिकाचतुष्पादकीटास्तथान्ये दंष्ट्रानखवि-षाः ॥ चिपिटपिच्छककषायवासिकसर्षपवासिकतोटकबर्चःकीटकौण्डिल्यकाः शङ्खन्मूत्रविषाः ॥ मूषिकाः शूकविषाः । लताश्च लालामूत्रपुरीषमुखसन्दंशनखशुक्रार्त्तविषाः ॥ वृश्चिकविश्वम्-रराजीवमत्स्योच्छिदिङ्गाः समुद्रवृश्चिकाश्चालविषाः ॥ चित्रशिरस्सरावकुर्विशतदारुकारिमेदक-धारिकामुखा मुखसन्दंशविशदितमूत्रपुरीषविषाः । मक्षिकाकणमजलायुका मुखसन्दंशविषाः ॥ विषहतास्थिसर्पकण्टकवरटीमत्स्यास्थि चेत्यस्थिविषाणि । शकुलीमत्स्यरक्तराजीवरकीमत्स्याश्च पिचविषाः ॥ सूक्ष्मतुण्डोच्छिदिङ्गवरटीशतपदीशूकवल्मिकाशृङ्गीभ्रमराः शूकतुण्डविषाः ॥ कीटसर्पवैद्याः गतासवः शवविषाः । शेषास्तवनुक्ता मुखसन्दंशविषेष्वेव गणयितव्याः' ॥ इति सुमु० क० स्वा० ३ । १—१० ॥

‘संघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः १ सत्त्वास्तु नारकाः ।

प्रेता २ वैतरणी सिन्धुः ३ स्यादलक्ष्मोस्तु निर्ऋतिः ॥ २ ॥

४ विष्टिराजः ५ कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

६ पीडा बाधा व्यथा ७ दुःखमाप्नस्यं प्रसूतिज्ञम् ॥ ३ ॥

(+ संहारः । ५ पु), कालसूत्रम् (न), आदि (‘आदि शब्दसे ‘तामि-
स्त्रम्, अन्धतामिस्त्रम्, संजीवनम्, महाबीचिः (स्त्री), संप्रतापनम् (शेष ४ न),
इत्यादिका संग्रह है’), ‘भिन्न भिन्न नरक-विशेष’ का १—१ नाम है ।
(‘नरक २१ होते हैं, उनके नाम टिप्पणीमें स्पष्ट हैं’^३) ॥

१ नारकः (भा० दी० म०), प्रेतः (+ परेतः । २ पु), ‘नरकके
प्राणियों’ के २ नाम हैं ॥

२ वैतरणी (स्त्री), ‘यमलोकके समीप बहनेवाली वैतरणी नामकी
नदी’ का १ नाम है ॥

३ अलक्ष्मीः (भा० दी० म०), निर्ऋतिः (२ स्त्री), ‘नरककी अशोभा’
के २ नाम हैं ॥

४ विष्टिः, राजः (२ स्त्री), ‘बलात्कारसे नरकमें ढकेलने’ के
२ नाम हैं ॥

५ कारणा, यातना, तीव्रवेदना (३ स्त्री), स्वा० म० ‘नरकके दुःख’ के
और भा० दी० म० ‘कठोर दुःख’ के ३ नाम हैं ॥

६ पीडा, बाधा (+ आबाधा), व्यथा (३ स्त्री), दुःखम्, आमनस्यम्

१. ‘संहारः काल.....’ इति पाठान्तरम् ।

२. ‘.....दुःखमामनस्यं.....’ इति पाठान्तरम् ॥

३. उच्छास्त्रवर्तिनो लुब्धस्य राज्ञः प्रतिग्रहस्वीकारे पर्यायेणैकविंशति नरकान् यातीत्यु-
पक्रम्य तेषामेकविंशतिनरकाणां नामान्युक्तानि मनुना । तथैवा—

‘तामिस्त्रमन्धतामिस्त्रं महारौरवरौरधौ । नरकं कालसूत्रं च महानरकमेव च ॥ १ ॥

संजीवनं महाबीचिं तपनं संप्रतापनम् । संघातं च सकाकोलं कुङ्कुमलं प्रतिमूर्तकम् ॥ २ ॥

लोहशङ्कुमृगीषं च पथ्यार्थं शास्मलीं नदीम् । अस्तिपत्रवनं चैव लोहदारकमेव च ॥ ३ ॥

इति मनुः ४ । ८८—९० ॥

स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं १ त्रिवेषां भेद्यगामि यत् ।

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

~~~~~

१०. अथ वारिवर्गः ।

२ समुद्रोऽब्धिरकूपारः पाशवारः सरित्पतिः ।

उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान् सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥

रत्नाकरो जलनिधिर्यादः पतिरपाम्पतिः ।

१ तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

( + अमानस्यम् ), प्रसूतिजम्, कष्टम् ; कृच्छ्रम्, आभीलम् ( ६ न ), 'दुःख' के ९ नाम हैं । ( 'वस्तुतस्तु 'पीडा'.....' ४ 'मानसिक दुःख' के, 'आमनस्यम्,.....' २ 'मनोविकार' अर्थात् 'उदासी' के और 'कष्टम्,.....' ३ 'शारीरिक दुःख' के नाम हैं ) ॥

१ इनमें 'दुःख' इत्यादि शब्द किसीके विशेषण होनेपर त्रिलिङ्ग होते हैं । ( 'जैसे — 'दुःखा दुर्नृपसेवा, दुःस्थः पुत्रो ह्यपण्डितः, दारिद्र्यमखिलं दुःखम्,.....' ) ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

~~~~~

१०. अथ वारिवर्गः ।

२ समुद्रः, अब्धिः, अकूपारः, पाशवारः (+ पाशवारः), सरित्पतिः, उदन्वान् (= उदन्वत्), उदधिः, सिन्धुः, सरस्वान् (= सरस्वत्), सागरः, अर्णवः, रत्नाकरः जलनिधिः, यादःपतिः (+ पाथःपतिः), अपाम्पतिः (१५ पु), 'समुद्र' के १५ नाम हैं ॥

३ क्षीरोदः, लवणोदः (२ पु), आदि ('आदि' शब्दसे 'दध्युदः १, घृतोदः २, सुरोदः ३, इक्षुदः ४, स्वादूदः ५ (५ पु) इन पाँचोंका संग्रह है') 'क्षीर-समुद्र १, क्षारा समुद्र २, आदि ('आदि' शब्दसे 'दधि-समुद्र १, घृत-समुद्र २, मध-समुद्र ३, रस-समुद्र ४, मीठे जलका समुद्र ५, इन पाँचोंका

- १ आपः स्त्री भूमिनि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।
 पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥
 'कबन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।
 अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशम्बरम् ॥ ४ ॥
 मेघपुष्पं घनरसरस्त्रिषु द्वे आप्यममयम् ।
 ३ भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचि ५ रथोर्मिषु ॥ ५ ॥
 महत्सूलोलकलोलौ ६ स्यादावर्तोऽम्भसां भ्रमः ।

संग्रह है, इस तरह सब २ मात 'समुद्र' हैं) का १—१ नाम हैं ॥

१ आपः (= अप्, नित्य स्त्री० ब० व० । + आपः = आपस्, न),
 वाः (= वार्), वारि (+ वारम्), सलिलम् (+ सरिलम्, सलिरम्),
 कमलम्, जलम्, पयः (+ पयस्), कीलालम्, अमृतम्, जीवनम्, भुवनम्,
 वनम्, कबन्धम् (+ कमन्धम्, कम्, अन्धम्), उदकम् (+ दकम्), पाथः
 (= पाथस्), पुष्करम्, सर्वतोमुखम्, अम्भः (= अम्भस्), अर्णः (= अर्णस्),
 तोयम्, पानीयम्, नीरम् (+ नारम्, न पु), क्षीरम्, अम्बु, शम्बरम् (संवरम्),
 मेघपुष्पम् (२५ न), घनरसः (पु + न), 'पानी' के २७ नाम हैं ॥

२ 'आप्यम्, अमयम् (२ न) 'पानी के विकार' अर्थात् 'पानीसे बने
 पदार्थ बर्फ, शर्वत आदि' के २ नाम हैं ॥

३ भङ्गः, तरङ्गः (२ पु), ऊर्मिः, वीचिः (स्वा० म० नि० स्त्री । २ पु
 स्त्री), 'पानी के तरङ्ग लहर' के ४ नाम हैं ॥

४ उल्लोलः, कल्लोलः (२ पु), 'बड़ी तरङ्ग' के २ नाम हैं ॥

५ आवर्तः (पु), 'चक्रोद्भव' अर्थात् 'पानीके गोलाकार घूमने' का
 १ नाम है ॥

१. केचित्तु 'कमन्धमुदकं.....' इति पठित्वा 'कमन्धम्' प्रत्येकं नाम 'कम्, अन्धम्' इति
 नामद्वयं वेत्याहुः । अत्र 'कबन्धश्च दकम्.....' इति च पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तमभिधानचिन्तामणौ हेमचन्द्राचार्येण—

'लवणक्षीरदध्याज्यसुरेक्षुस्वादुवारयः' ।

इति अमि० चि० म० 'हैम' ४ । १४१ ॥

यथा वा—'लवणेक्षुसुरासर्पिर्दक्षिणोरजलाः समाः' ॥ इत्यन्यत्र ॥

- १ पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥
 २ चक्राणि पुटभेदाः स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।
 ३ कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥
 ४ पारापवारे परार्वाची तीरे ६ पात्रं तदन्तरम् ।
 ७ द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥
 ८ तोयोत्थितं तत्पुलिनं ९ सैकतं सिकतामयम् ।
 १० निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शादकर्मौ ॥ ९ ॥

१ पृषत् (न । + पृषन्ति; पु), बिन्दुः, पृषतः (२ पु), विप्रुट्, (= वि-
 प्रुष्, स्त्री । + विप्लुट् = विप्लुष्), 'वूँद' टोप' के ४ नाम हैं ॥

२ चक्रम् (न । + वक्रम्), पुटभेदः, भ्रमः, जलनिर्गमः (३ पु), महे०,
 स्वा० म० 'गोलाकार होकर जलके नीचे जाने' के ४ नाम हैं । (भा०
 दी० म० पहलेवाले दो नाम उक्तार्थक और अन्त वाले दो नाम 'जल
 निकलनेके समुदाय' के और अन्यके म० पहले वाले दो नाम उक्तार्थक तथा
 अन्तवाले दो नाम 'नीचेसे ऊपरकी तरफ जलके निकलने' अर्थात् 'जमीन
 फटकर भव फूटने या फौवारा छूटने' के हैं) ॥

३ कूलम्, रोधः (= रोधस् । + रोधः, = रोध, पु), तीरम्, प्रतीरम्
 (४ न), तटम् (त्रि), 'नदी के किनारे' के ५ नाम हैं ॥

४ पारम् (न) 'नदीके उधरवाले किनारे' का नाम १ है ॥

५ अवारम् (न), 'नदीके इधरवाले किनारे' का १ नाम है ॥

६ पात्रम् (न) 'दोनों किनारोंके मध्य भाग' का १ नाम है ॥

७ द्वीपम्, अन्तरीपम् (२ पु न), 'टापू' के २ नाम हैं ॥

८ पुलिनम् (न), 'पानीसे शीघ्र निकले हुए किनारे' का १ नाम है ॥

९ सैकतम्, सिकतामयम् (२ न), 'रेतीले स्थान या किनारे' के
 २ नाम हैं ॥

१० निषद्वरः, जम्बालः, पङ्कः (पु न), शादः, कर्ममः (दोष ४ पु),
 'कीचड़, पङ्क' के ५ नाम हैं ॥

- १ जलोच्छ्वासः परीवाहः २ कूपकास्तु विदारकाः ।
- ३ नाव्यं त्रिलिङ्गं नीतार्ये ४ स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥
- ५ उडुपं तु प्लवः कोलः ६ स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।
- ७ आतरस्तरपण्यं स्याद् ८ द्रोणी काष्ठाऽम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥
- ९ सांयात्रिकः पोतवणिकः १० कर्णधारस्तु नाविकः ।

१—जलोच्छ्वासः, परीवाहः (+ परिवाहः । २ पु), 'बढ़े हुए पानीके निकलनेके मार्ग' अर्थात् 'कनवाह' के २ नाम हैं ॥

२—कूपकः; विदारकः, 'सूखीसी नदियोंमें थोड़ी देर में कुछ पानी इकट्ठा होनेके लिये किये गये गढ़े' के २ नाम हैं । ('शोणभद्र, फणु आदि पहाड़ी या बालूदार नदियोंमें गढ़ा करनेसे १०-५ मिनटमें थोड़ा पानी जमा हो जाता है') ॥

३ नाव्यम् (त्रि), 'नावसे पार होने योग्य नदी आदि' का १ नाम है ॥

४ नौः, तरणिः (+ तरणी), तरिः (+ तरीः, तरी । ३ स्त्री), 'नाव' के ३ नाम हैं ॥

५ उडुपम् (पु न), प्लवः, कोलः (२ पु), महे० म० 'छोटी नाव' के और भा० द्वी० म० 'तैरनेके लिए घड़ा, कनस्तर, तुम्बी आदिसे बनाये गये साधन-विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ स्रोतः (= स्रोतस्, न । + स्रोतः, = स्रोत, पु; श्रोतः, + श्रोतस्, न), 'स्रोत' अर्थात् 'पानीके प्राकृतिक बहाव' का १ नाम है ॥

७ आतरः (पु । + आवापः). तरपण्यम् (न), 'खेचाई' अर्थात् 'नावके भाड़े या उतराई' के २ नाम हैं ॥

८ द्रोणी (+ द्रोणिः, द्रुणिः), काष्ठाऽम्बुवाहिनी (भा० द्वी० म० । २ स्त्री), 'काठकी बनाई गई छोटी नाव' अर्थात् 'डोंगी' के २ नाम हैं ॥

९ सांयात्रिकः, पोतवणिकः (= पोतवणिज् । २ पु), 'नाव या जहाजके व्यापारी' के २ नाम हैं ॥

१० कर्णधारः, नाविकः (२ पु), 'पतवार पकड़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

- १ नियामकाः पोतवाहाः २ कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥
 ३ नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरिश्चं केनिपातकः ।
 ५ अग्निः स्त्री काष्ठकुहालः ६ सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥
 ७ "यानपात्रं तु पोतोऽब्धिभवे त्रिषु समुद्रियम् (५६)
 ९ सामुद्रिको मनुष्योऽब्धिजाता सामुद्रिका च नौः" (५७)

१ नियामकः, पोतवाहः (२ पु), 'मगर, मछली आदि दुष्ट जल-जन्तुओंसे जहाजकी रक्षाके लिये जहाजके ऊँचे हिस्सेपर बैठनेवाले' के २ नाम हैं । ('समुद्रगामी बड़े-बड़े जहाजोंमें ऐसे लोग रहते हैं, जिन्हें 'जहाजका कप्तान' कहते हैं') ॥

२ कूपकः, गुणवृक्षकः (२ पु), 'मस्तूल' के २ नाम हैं । ('पाल या गोंद बाँधनेके लिए जहाज या नावके बीचमें खड़े किये हुए खम्भेको 'मस्तूल' कहते हैं । किसी २ के मतसे 'नावको बाँधनेवाले खूँटे' के ये २ नाम हैं') ॥

३ नौकादण्डः (पु), क्षेपणी (स्त्री । + क्षेपणिः, क्षिपणिः, क्षिपा), 'डाँड़े' के २ नाम हैं ॥

४ अरिश्चम्, केनिपातकः (२ पु), 'पतवार' के २ नाम हैं ॥

५ अग्निः (स्त्री । + अग्नी), काष्ठकुहालः (पु । + काष्ठकूहालः), 'जहाज आदिके कतवार आदिको हटानेके लिये काष्ठके बनाये कुहाल' के २ नाम हैं ॥

६ सेकपात्रम्, सेचनम् (२ न), 'नाव, जहाज इत्यादिमें एकत्रित हुए पानीको फेंकनेके लिये चमड़ा आदिके थैले या मशक' के २ नाम हैं । उपलक्षणतया 'पानी भरनेवाले मशकमात्र' के भी ये २ नाम हैं ॥

७ [पोतः (पु), 'जहाज' का १ नाम है] ॥

८ [समुद्रियम् (त्रि), 'समुद्रमें होनेवाले पदार्थ' का १ नाम है] ॥

९ [सामुद्रिकः (पु), 'समुद्रके मनुष्य' का १ नाम है] ॥

१० [सामुद्रिका (स्त्री । + समुद्रिका), 'समुद्रमें जानेवाली नाव' का १ नाम है] ॥

१. यानपात्रं.....च नौः' इत्येषोऽशः क्षी० स्वा० व्याख्यानुरोधेनात्र मूले पबोपन्यस्तः । तत्र ".....मनुष्योऽब्धिजातादौ नौः समुद्रिका" इति पाठान्तरम् ॥

- १ क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।
- ३ त्रिष्वागाधाऽत्प्रसन्नोऽच्छः ५ कलुषोऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥
- ६ निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये ।
- ८ अगाधमतलस्पर्शं ९ कैवर्तं दाशधीवरौ ॥ १५ ॥
- १० आनायः पुंसि जालं स्यात् ११ चक्षणसूत्रं पवित्रकम् ।
- १२ मत्स्याधानी कुवेणी स्यात् १३ बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥

१ अर्धनावम् (न), 'नावके आधे द्विसे' का १ नाम है ॥

३ अतिनु (त्रि) 'नावकी अपेक्षा अधिक वेगसे चलनेवाले मनुष्य या पानीके बहाव आदि' का १ नाम है ॥

३ यहाँसे लेकर 'अगाधमतलस्पर्शं.....(११०।१५)' के पहलेतक 'त्रिषु' शब्दका अधिकार होनेसे सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ प्रसन्नः, अच्छः (+ स्वच्छः । २ त्रि), 'साफ, निर्मल पानी आदि' के २ नाम हैं ॥

५ कलुषः, अनच्छः, आविलः (३ त्रि), 'गन्दे पानी आदि' के ३ नाम हैं ॥

६ निम्नम्, गभीरम्, गम्भीरम् (३ त्रि), 'गम्भीर गहरे' के ३ नाम हैं ॥

७ उत्तानम् (त्रि) 'थाह, या उथला छिछिल' का १ नाम है ॥

८ अगाधम्, अतलस्पर्शम् (२ त्रि), 'अथाह, बहुत गहरे' के २ नाम हैं ॥

९ कैवर्तः, दाशः (+ दासः), धीवरः (३ पु), 'मल्लाह' के ३ नाम हैं ॥

१० आनायः (पु), जालम् (न), 'जाल' के २ नाम हैं ॥

११ शणसूत्रम्, पवित्रकम् (२ न), 'सुतलीके बने हुए जाल' के २ नाम हैं ॥

१२ मत्स्याधानी, कुवेणी (२ स्त्री), 'मछलियोंको पकड़कर रखनेवाले बर्तन' के २ नाम हैं ॥

१३ बडिशम् (+ बलिशम्), मत्स्यवेधनम् (२ न), 'बंशी' अर्थात् 'छोटेके बने हुए मछली फँसानेके साधन-विशेष' के २ नाम हैं । '(जिसमें आटा

- १ पृथुरोमा ह्यषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ।
विसारः शकली चाथ २ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥
- ३ सहस्रदंष्ट्रः पाठीन ४ उलूपी शिशुकः समौ ।
- ५ नलमीनश्चिलिचिमः ६ प्रोष्टी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥
- ७ क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताघानऽमथो भूषाः ।
- ९ रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥

या कीदा आदि लपेटकर पानीमें फेंककर मछलियां फँसाई जाती हैं, उसे 'बंसी' कहते हैं) ॥

१ पृथुरोमा (= पृथुरोमन्), ऋषः, मत्स्यः, मीनः, वैसारिणः, अण्डजः, विसारः, शकली (= शकलिन् । + शकुली, = शकुलिन्, सकली, = सकलिन् । ८ पु), 'मछली' के ८ नाम हैं ॥

२ गडकः, शकुलार्भकः (२ पु), 'गडक मछली' के २ नाम हैं ॥

३ सहस्रदंष्ट्रः, पाठीनः (२ पु), 'पहिना मछली' अर्थात् 'बहुत दांत वाली पहिनानामक एक प्रकारकी मछली या पोठिया मछली' के २ नाम हैं ॥

४ उलूपी (= उलूपिन्), शिशुकः (२ पु), 'सूँस' के २ नाम हैं ॥

५ नलमीन (+ नलमीनः, तलमीनः), चिलिचिमः (चिलिचिमिः । २ पु), 'नरकटमें रहनेवाली एक प्रकारकी मछली-विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ प्रोष्टी (स्त्री), शफरी (स्त्री । + पु स्त्री), 'सहरी या पोठिया मछली' के २ नाम हैं ॥

७ पोताघानम् (न), 'अण्डेसे निकले हुए मछलियोंके छोटे-छोटे बच्चोंके समुदाय' का १ नाम है ।

८ अब मछलियों के 'भेद'को कहते हैं अर्थात् वच्यमाण शब्द पर्याय नहीं हैं ॥

९ रोहितः, मद्गुरः शालः (+ सालः), राजीवः, शकुलः, तिमिः, तिमि-क्लिष्टः (७ पु), आदि ('आदि पदसे 'तिमिक्लिष्टगिष्टः, नन्दीवर्त्तः (२ पु), आदिका संग्रह है'), 'रोहू, मोंगरा, शाल, बरारी, शकुल, तिमि,

१. 'विसारः शकुली चाथ' इति मा० दी० सम्मतः पाठः, मूलोक्तश्च मदे० स्त्री० स्था० सम्मतः पाठ इत्यवचेयम् ॥

तिमिङ्गिलाद्यश्चाथ यादांसि जलजन्तवः ।

२ तद्भेदाः शिशुमारोद्रशङ्खो मकरादयः ॥ २० ॥

३ स्यात्कुलीरः कर्कटकः ४ कूर्मं कमठकच्छपौ ।

५ ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता ॥ २१ ॥

गण्डूपदः किञ्चुलको निहाका गोधिका समे ।

६ रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूमिजलौकसः ॥ २२ ॥

तिमिङ्गिल आदि ('आदि पदसे 'तिमिङ्गिलागल और नन्दीवर्त' आदिका संग्रह है), 'मल्लियोंके भेद' हैं ॥

१ यादः (= यादस्, न) जलजन्तुः (पु), 'जलमें रहनेवाले जीव' के २ नाम हैं ॥

२ शिशुमारः, उद्रः, शङ्खः, मकरः, (४ पु), आदि ('आदि पदसे 'जल-हस्ती' (= जलहस्तिन्), जलकुक्कुटः, कर्कः, कच्छपः, (४ पु), का संग्रह है) सूँस, ऊद, शङ्ख, मगर, आदि ('आदि शब्दसे 'जलहाथी, जलसुर्गा, केकड़ा, कलुआ' आदिका संग्रह है) जलमें रहनेवाले जीव' हैं ॥

३ कुलीरः (+ कुलिरः), कर्कटकः (ककटः, कर्कः, कर्टकः, करटकः । (२ पु), 'केकड़े' के २ नाम हैं ॥

४ कूर्मः, कमठः, कच्छपः, (३ पु), 'कलुए' के ३ नाम हैं ॥

५ ग्राहः, अवहारः (+ अवराहः । २ पु), 'ग्राह' अर्थात् 'बडियाल' के २ नाम हैं ॥

६ नक्रः, कुम्भीरः (२ पु), 'नाक' अर्थात् 'ग्राहके भेद, एक तरहके जलचर विशेष' के २ नाम हैं ॥

७ महीलता (स्त्री), गण्डूपदः, किञ्चुलकः (+ किञ्चुलकः, किञ्चिलिकः । २ पु), 'केचुआ' के ३ नाम हैं ॥

८ निहाका, गोधिका (१ स्त्री), 'गोह' के २ नाम हैं ॥

९ रक्तपा, जलौका, जलौकसः (= जलौकस्, प्रायः ब० व० । + जलोका, जलुका, जलजन्तुका, जलोरगी । ३ स्त्री), 'जौक' के ३ नाम हैं ॥

१. ".....किञ्चुलकः....." इति मा० दी०, स्त्री० स्वा० पाठः ॥

२. 'जलोरगी जलोका तु जलोका च जलौकसि'

इति संसारार्णवोक्तेरत्र बहुवचनस्य प्रायिकत्वम् ।

- १ मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः २ शङ्खः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ।
 ३ क्षुद्रशङ्खः 'शङ्खनखाः ४ शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥
 ५ भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवददुर्गः ।
 ६ शिली गण्डूपदी ७ भेकी वर्षाभ्वी ८ कमठी 'डुलिः ॥ २४ ॥
 ९ मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी—

१ मुक्तास्फोटः (पु), शुक्तिः (स्त्री), 'क्षितुही, सीप' के २ नाम हैं ।
 ('गजराज, मेघ, सूकर, शङ्ख, मछली, मीप, सीप और बॉस' इनसे मोती निकलती है, किन्तु अधिकतर सीप से ही निकलती है') ॥

२ शंखः, कम्बुः (२ पु न), 'शङ्ख' के २ नाम हैं ॥

३ क्षुद्रशङ्खः, शङ्खनखः (+ शङ्खनकः । २ पु) 'छोटे शङ्ख' के २ नाम हैं ॥

४ शम्बूकः (पु । + शम्बुकः, शाम्बुकः), जलशुक्तिः (स्त्री । भा० दी० म०), 'घोंघा, दोहना या पानीमें होनेवाली हर तरहकी सीप' के २ नाम हैं ॥

५ भेकः, मण्डूकः, वर्षाभूः, शालूरः (+ सालूरः), प्लवः, बर्दुरः (१ पु), 'मेंढक' के ६ नाम हैं ॥

६ शिली, गण्डूपदी (२ स्त्री), 'कैचुपकी स्त्री या कैचुपके भेदकी छोटी जाति-विशेष' के २ नाम हैं ॥

७ भेकी, वर्षाभ्वी (२ स्त्री), 'बेंगुची, मेंढककी स्त्री या मेंढकके भेदकी छोटी जाति-विशेष' के २ नाम हैं ॥

८ कमठी, डुलिः (+ दुलिः । स्त्री) 'कछुई' के २ नाम हैं ॥

९ शृङ्गी (स्त्री । + मद्गुरी), 'मगरकी स्त्री' का १ नाम है ॥

१. '.....शङ्खनकाः.....' इति पाठान्तरम् ॥

२. '.....डुलिः' इति पाठान्तरम् ॥

३. तदुक्तम्—'करीन्द्रजीमूतवराहशंखमस्याहिशुकस्युद्भववेणुजानि ।

मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषां तु शुभस्युद्भवमेव भूरि' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ दुर्नामः दीर्घकोशिका ।

- २ जलाशयो जलाधारश्चस्तत्रागाधजलो ह्रदः ॥ २५ ॥
 ४ आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।
 ५ पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥
 ६ नेमिस्त्रिकाऽस्य ७ वीनाहो सुखबन्धनमस्य यत् ।
 ८ पुष्करिण्यां तु खातं स्यात्स्वखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥
 १० पद्माकरस्तम्बागोऽस्त्री ११ कासारः सरसी सरः ।

१ दुर्नामः (= दुर्नामन्, पु । + दुर्नामिन्, स्त्री), दीर्घकोशिका (स्त्री । + दीर्घकोषिका), 'जौकके समान एक प्रकारके जलचर-विशेष' के १ नाम हैं ॥

२ जलाशयः, जलाधारः (२ पु), 'तालाब, पोखरा, बावली आदि' के २ नाम हैं ॥

३ ह्रदः (पु), 'अथाह जलघाले तालाब आदि' का १ नाम है ॥

४ आहावः (पु), निपानम् (न), 'सुखपूर्वक गौ आदिके जल पीनेके लिये कूपके पास बनाये हुए झील' के २ नाम हैं ॥

५ अन्धुः, प्रहिः, कूपः (३ पु), उदपानम् (न पु), 'कूआँ, इनारा' के ३ नाम हैं ॥

६ नेमिः (भा० दी० म०) त्रिका (२ स्त्री) 'धुरई, गड़ारी' के २ नाम हैं ॥

७ वीनाहः (पु । + विनाहः), 'कूपके जगत्' का १ नाम है ॥

८ पुष्करिणी (स्त्री), खातम् (न) 'पोखरी, छोटी तलैया' के २ नाम हैं ॥

९ अखातम्, देवखातकम् (२ न), 'अकृत्रिम या देवमन्दिरके आगे-वाले पोखरा, तालाब आदि' के २ नाम हैं ॥

१० पद्माकरः, तम्बागः (+ तम्बाकः, तटागः, तटागः । २ पु), 'कमल उत्पन्न होनेवाले अथाह तालाब आदि' के २ नाम हैं ॥

११ कासारः (पु), सरसी (स्त्री), सरः (= सरस् न), 'कृत्रिम (किसी-

- १ वेशन्तः पल्लवं चावपसरो २ वापी तु दोर्विका ॥ २८ ॥
 ३ खेयं तु परिखाऽऽधारस्त्वम्मला यत्र धारणम् ।
 ५ स्यादालवालमावालमावापोऽदथ नदी सरित् ॥ २९ ॥
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी ।
 स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा ॥ ३० ॥
 ७ 'कूलङ्कषा निर्झरिणी रोधावका सरस्वती' (५८)
 ८ गङ्गा विष्णुपद्मी जहुतनया सूरनिम्नगा ।
 भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्ताता भोगमसूरपि ॥ ३१ ॥

के छुदवाये हुए कमल उत्पन्न होनेवाले तालाब आदि' के भा० द्वी० मतले ३ नाम हैं। ('पद्माकरः.....सरः' 'कमल उत्पन्न होनेवाले जलाशय मात्र' के ५ नाम हैं, यह महे० का मत है') ॥

वेशन्तः (पु), पल्लवम् , अवपसरः (= अवसरस् । २ न), 'पानीके छोटे-छोटे गढे' के ३ नाम हैं ॥

२ वापी (+ वापिः), दोर्विका (१ स्त्री), 'बावलो' के १ नाम हैं ॥

३ खेयम् (न), परिखा (स्त्री), 'कित्ते आदिके चारों ओरको खाई' के २ नाम हैं ॥

४ आधारः (पु), 'पानीके घाँव' का १ नाम है ॥

५ आलवालम् (+ अलवालम्), आवालम् (१ न), आवापः (पु), 'ताला' अर्थात् 'गाँछी या पौधे को सींचनेके लिये उनके जड़में मिट्टी आदिसे बनाये हुए घेरे' के ३ नाम हैं ॥

६ नदी, सरित्, तरङ्गिणी, शैवलिनी, तटिनी, ह्रादिनी (+ ह्रदिनी), धुनी, स्रोतस्वती (+ स्रोतस्विनी), द्वीपवती, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा (+ अपगा । १२ स्त्री), 'नदी' के १२ नाम हैं ॥

७ [कूलङ्कषा, निर्झरिणी, रोधावका, सरस्वती ४ स्त्री), 'नदी' के ४ नाम हैं] ॥

८ गङ्गा, विष्णुपद्मी, जहुतनया (+ जाहुती), सूरनिम्नगा, भागीरथी,

१.'ह्रदिनी'.....'इति पाठान्तरम् ॥ २. 'स्रोतस्विनी'.....'इति पाठान्तरम् ॥

- १ कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।
- २ रेवा तु नर्मदा सोमोज्झवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥
- ३ करतोया सदानीरा ४ बाहुदा सैतवाहिनी ।
- ५ शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥
- ७ शोणो हिरण्यवाहः स्यात्—

त्रिषधगा, त्रिजाताः (= त्रिजोतस्), भोगमसूः (८ स्त्री), 'गङ्गा नदी' के ८ नाम हैं ॥

१ कालिन्दी, सूर्यतनया, यमुना, शमनस्वसा (= शमनस्वसु । + यन-स्वसा, = यमस्वसु । ४ स्त्री), 'यमुना नदी' के ४ नाम हैं ॥

२ रेवा, नर्मदा, सोमोज्झवा, मेकलकन्यका (४ स्त्री), 'नर्मदा नदी' के ४ नाम हैं ॥

३ करतोया, सदानीरा (२ स्त्री), 'पार्वतीके विवाह-कालमें कन्यादानके जलसे निकली हुई नदी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ बाहुदा, सैतवाहिनी (२ स्त्री), 'कार्तवीर्यद्वारा निकाली हुई एक नदी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ शतद्रुः (+ शितद्रुः), शुतुद्रिः (२ स्त्री) 'सतलज नदी' के २ नाम हैं ॥

६ विपाशा, विपाट् (= विपाश् । २ स्त्री), 'विपाशा नदी' के २ नाम हैं ॥

७ शोणः (+ शोणभद्रः), हिरण्यवाहः (+ हिरण्यवाहुः । २ पु), 'सोन नामक नदी' के २ नाम हैं ॥

१. 'शुतुद्रिस्तु शतद्रुः स्यात्' इति श्री० स्वा० सम्मते पाठभेदेऽपि मुद्रोक भा० दी०, महे० संमतपाठाच्च नाम्नि भेदः उभयथापि 'शतद्रुः, शुतुद्रिः' इत्यनयोरेवाभिधानयोर्लोभादित्यवधेयम् ॥

२. '.....हिरण्यवाहुः' इति पाठान्तरम् ॥

३. इयं 'करतोया' नदी पूर्वदेशस्था ब्रह्मपुत्रेण सङ्गता पुलस्त्यतीर्थवात्रायां तथैवोक्तेः । प्रथमं कर्कटदेवी त्र्यम्बं गङ्गा रजस्वला । सर्वा रक्तवद्वा नद्यः करतोयाऽम्बुवाहिनी ॥ १ ॥

इति याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसृत्य बाह्मद्वीपटीकायां करतोयाऽम्बुवाहिनीत्युक्त्या 'सदानीरा' इत्यन्वर्थे नामेत्यवधेयम् ॥

४. वसिष्ठश्रुपादियं शतधा द्रुतेति पौराणिकोक्त्याऽनुसन्धानादस्याः 'शतद्रुः' इति नाम जातमिति हेयम् ॥

—१ कुल्याऽल्पा कृत्रिमा सरित् ।

२ शरावती वेप्रवती चन्द्रभागा^१ सरस्वती ॥ ३४ ॥
कावेरी सरितोऽन्याश्च ३ सम्भेदः सिन्धुसङ्गमः ।

४ द्वयोः प्रणाली पयसः पद्भ्यां ५ त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥
देविकायां सरयवां च भवे दाधिकसारवौ ।

६ सौगन्धिकं तु कल्लारं ७ हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥

८ स्यादुत्पलं कुवलयमथ नीलाम्बुजम् च ।

इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन् ११ सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥

१ कुल्या (स्त्री), 'नहर' का १ नाम है ॥

२ शरावती, वेप्रवती, चन्द्रभागा (+ चान्द्रभागी, चन्द्रभागी, चान्द्र-
भागा, चन्द्रिका), सरस्वती, कावेरी (५ स्त्री), 'शरावती आदि प्रत्येक
नदियों' का १-१ नाम है । अन्य भी 'कौशिकी, गण्डकी, गोवा, वेणी,
चर्मण्वती, सिन्धु' आदि नदियाँ हैं ॥

३ सम्भेदः, सिन्धुसङ्गमः (पु), 'नदियोंके संगम' के २ नाम हैं ॥

४ प्रणाली (पु स्त्री । अन्यमतमें स्त्री न), 'पनारे या नाले' का
१ नाम है ॥

५ दाविकः, सारवः (२ त्रि), 'देविका और सरयू नदीमें होने-
वाले पदार्थ' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

६ सौगन्धिकम्, कल्लारम् (न), 'सायंकालमें फूलनेवाले श्वेतकमल'
के २ नाम हैं ॥

७ हल्लकम्, रक्तसन्ध्यकम् (२ न) 'लाल कल्लार या त्रिकालमें
फूलनेवाले रक्तपुष्प-विशेष' के २ नाम हैं ॥

८ उत्पलम्, कुवलयम् (+ कुवम्, कुवलम् । २ न), 'श्वेत कमल या
सामान्यतः कमल और कुमुदमात्र' के २ नाम हैं ॥

९ नीलाम्बुजम् (= नीलाम्बुजम् । + नीलाम्बुजम्), इन्दीवरम्
(+ इन्दीवारम् । २ न), 'नील कमल' के २ नाम हैं ॥

१० कुमुदम्, कैरवम् (२ न) 'श्वेत कमल, कुमुद या कोई' के
२ नाम हैं ॥

१. '...चान्द्रभागी...' इति,चन्द्रभागी...' इति च पाठान्तरम् ॥

- १ शालूकमेषां कन्दः स्याद्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।
- २ जलनीली तु 'शेवालं' शेवालोऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥
कुमुदिन्यां ५ नलिन्यां तु बिसिनीपद्मिनीमुखाः ।
- ६ वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
बिसप्रसूनराजीवपुष्कराभोरुहाणि च ।
- ७ पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥
रक्तोत्पलं कोकनदं ९ नालो नालम्—

-
- १ शालूकम् (न), 'कमलमात्रके कन्द (जड़)' का १ नाम है ॥
 - २ वारिपर्णी, कुम्भिका (२ स्त्री । + 'वारिपर्णः, कुम्भिकः, २ पु),
'पुरश्न' या जलकुम्भी' के २ नाम हैं ॥
 - ३ जलनीली (स्त्री), शेवालम् (न । + शेवालः, पु) शेवालः (पु ।
शेवलः, शैवलः), 'सेवाल' के ३ नाम हैं ॥
 - ४ कुमुद्वती, कुमुदिनी (२ स्त्री), 'कोई' के २ नाम हैं ॥
 - ५ नलिनी (+ नडिनी), बिसिनी, पद्मिनी (३ स्त्री), आदि ('आदिसे
'सरोजिनी, कमलिनी, उत्पलिनी (३ स्त्री), का संग्रह है'), 'कमलिनी
या कमल-समूह' के ३ नाम हैं ॥
 - ६ पद्मम्, नलिनम्, भरविन्दम्, महोत्पलम्, सहस्रपत्रम्, कमलम्,
शतपत्रम्, कुशेशयम्, पङ्केरुहम्, तामरसम्, सारसम्, सरसीरुहम्, बिसप्रसूनम्,
राजीवम्, पुष्करम्, अम्भोरुहम् (१६ पु न), 'कमल' के १६ नाम हैं ॥
 - ७ पुण्डरीकम्, सिताम्भोजम् (२ न), 'श्वेत कमल' के २ नाम हैं ॥
 - ८ रक्तोत्पलम्, कोकनदम् (२ न), 'लाल कमल' के २ नाम हैं ॥
 - ९ नालः (पु), नालम् (न । + नाली, नाला, २ स्त्री), 'कमलके
डण्डल' के २ नाम हैं ॥
-

१. '.....शेवलं शेवालोऽथ' इति पाठान्तरम् ॥
२. '.....नाला नालमयाख्याम्' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'कुम्भको वारिपर्णः स्यादित्येके' इति स्त्री० स्वा० वचनात् ॥

—१ अथास्त्रियाम् ।

मृणालं विसमब्जादिकदम्बे २ षण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

३ करहाटः शिफाकन्दः ४ किञ्जल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।

५ संवृतिका नवदलं बीजकोशो घराटकः ॥ ४३ ॥

इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

—३३३३३३—

१ मृणालम् , विसम्, (+ विसम्, विशम् । २ पु न), 'कमल आदिके डंठल' के २ नाम हैं ॥

२ षण्डम् (न पु) 'कमलके फूल, पत्ती, डण्डल, जड़ आदि सब अवयवमात्र' का १ नाम है ॥

३ करहाटः, शिफाकन्दः (+ शिफा, स्त्री; कन्दः, पु न । २ पु), 'कमलकी जड़' के दो नाम हैं ॥

४ किञ्जल्कः, केसरः (+ केशरः । २ पु न), 'कमलके 'केसर' (पराग) के २ नाम हैं ॥

५ संवृतिका (स्त्री), नवदलम् (न), 'कमलके नये पत्ते' के २ नाम हैं ॥

६ बीजकोशः (+ बीजकोषः, बीजकोशः, बीजकोषः), घराटकः (२ पु), 'कमलगट्टे' के २ नाम हैं ॥

इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

—३३३३३३—

अथ वर्गोपसंहारः काण्डसमाप्तिश्च ।

३ उक्तं स्वव्योमविकालधीशब्दादि सनात्यकम् ।
पातालभोगि नरकं वारि चैषां च सङ्गतम् ॥ १ ॥
'इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

अथ वर्गोपसंहारः काण्डसमाप्तिश्च ।

१ मैने (अमरसिंह ने) 'स्वर् १, व्योम ३, दिक् ३, काल ४, धी ५, शब्दादि ६, नाट्य ७, पातालभोगि ८, नरक ९ और वारि १०' इन 'दस वर्गों' तथा इनके प्रसङ्गसे प्राप्त 'देवता, राक्षस, मेघ, विद्युत्' आदिको कहा है । ('शब्दादि' के 'आदि' शब्दसे रस, गन्ध, ... का संग्रह है) ॥

२ श्रीअमरसिंह के बनाये हुए, नाम (स्वर्, स्वर्ग, नाक, ...) और लिङ्ग ('पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और अव्ययादि') को बतलानेवाले 'नामलिङ्गानुशासन' अर्थात् 'अमरकोष' नामक इस ग्रन्थमें 'स्वर्' आदि ('आदि' शब्दसे 'व्योम, दिक्, काल, ...' १० वर्गोंका और मु० मतसे

१. 'इत्यमरसिंहकृतौ ... समर्थितः' इत्ययं चरमः श्लोकः काण्डत्रयेऽपि क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नोपलभ्यते, किन्तु तत्कुते 'अमरकोषोद्धाटन' नामके व्याख्याने प्रथमचरमाध्या-
ययोरव्याख्यातो मूलमात्रमेवोपलभ्यते, भा० दी० अव्याख्यातोऽप्ययं प्रथमकाण्डमात्रे महे०
व्याख्यात इत्यतो ग्रन्थकृता रचितो न वेति स्वयमनुसंधेयम् ॥

२. 'अत्र गणनया दशानामेव वर्गाणामुपलब्धेः 'उक्तमि'ति प्रतीकमादाय 'अत्रैकादश वर्गाः' इति भा० दी० व्याख्यानं चिन्त्यम् । यद्वा सङ्गलाचरण-प्रतिष्ठा-परिभाषीयानां श्लोकानामेकं पृथग्वर्गमुररीकृत्य 'अत्रैकादश वर्गाः' इति तदुक्तेः सामञ्जस्यमित्यवधेयम् ।
'पुण्यपत्तन'— मुद्रिते क्षीरस्वामिकृतामरकोषोद्धाटनाख्यव्याख्याने तु व्योमदिव्यगवैकीकृत्या-
स्मिन् काण्डे नवैव वर्गाः प्रदर्शिताः ॥

३. प्राधान्यादस्मिन् काण्डे स्वर्गायसाधारणवस्तुनिरूपणात् स्वरादि नाट्यवर्गान्तं 'स्वर्गवर्गः' ततश्च पातालसम्बन्धिषडार्थानिरूपणात्पातालादि वारिवर्गान्तं 'पातालवर्गः' इत्येतौ द्वौवैव वर्गौ मुकुटेनोररीकृतानित्यवधेयम् ॥

स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ २ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना' परपर्यायके 'अमरकोषे'

प्रथमः स्वरादिकाण्डः समाप्तः ।



'पातालवर्ग' का संग्रह है') का यह प्रथम काण्ड (आग) अङ्ग (भेद और अपभेद) के सहित समर्थित होकर सम्पूर्ण हुआ ॥

इति पण्डितप्रवरश्रीरामस्वार्थमिश्रतनुजश्रीहरगोविन्दमिश्र-

विरचितायां मणिप्रभाख्यामरकोषव्याख्यायां प्रथमः

स्वरादिकाण्डः समाप्तः ॥



अथ द्वितीयकाण्डम्

वर्गभेदान् कथयति—

१ वर्गाः पृथ्वीपुरस्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः ।

नृब्रह्मक्षत्रविट्शूदैः साक्षापाङ्गरिहोदिताः ॥ १ ॥

१. अथ भूमिवर्गः ।

२ भूमिर्मिरचलाऽनन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा ।

धरा धरित्रीधरणिःक्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥

१ इस द्वितीय काण्डमें अङ्गों और उपाङ्गोंके सहित 'पृथ्वी, पुर, पर्वत, वनौषधि, मृगादि' ('आदि' शब्दसे 'पक्षी, की' आदिका संग्रह है अथवा 'मृगादि' शब्द 'सिंहवाचक है), मनुष्य, ब्रह्म, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र; ये १० वर्ग अर्थात् 'भूमिवर्ग १, पुरवर्ग २, शैलवर्ग ३, वनौषधिवर्ग ४,.....'कहे गये हैं । ('भूमिके अङ्ग—'मृत्, शाखा और नगर' आदि तथा उपाङ्ग 'मृत्सा आदि; पुरके अङ्ग—'आपण' आदि तथा उपाङ्ग 'विपणी' आदि; पर्वतके अङ्ग—'शिला' आदि तथा उपाङ्ग 'मैर्नासल, गेरु' आदि धातु; वनौषधिके अङ्ग—'वृक्ष' आदि तथा उपाङ्ग 'फूल, फल' आदि; मृगके अङ्ग—'रु' आदि; तथा उपाङ्ग 'लोम' आदि एवं 'मृगादि'के आदि पदसे संगृहीत पक्षीके अङ्ग—'कीट, फतीङ्गा' आदि तथा उपाङ्ग 'चञ्चु, पङ्क' आदि हैं; इसी तरह अन्योन्य वर्गोंका भी अङ्गोपाङ्ग समचना चाहिये) ॥

१. अथ भूमिवर्गः ।

२ भूः (= भू । + भूः, = भूर्, अ०), भूमिः (+ भूमी), अचला, अनन्ता, रसा, विश्वम्भरा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धरणिः (+ धरणी), क्षोणिः (+ क्षोणी,

१. 'मृगादि' शब्दस्यायमेवार्थः समुचितः, मृगान् पश्यन्तीति मृगादिरिति व्युत्पत्त्या 'मृगादि' शब्दस्य सिंहपर्यायकामसामञ्जस्यात् । अत एवाग्रे 'सिंहादिवर्ग'कथनं संगच्छते-न्यथा मृगादिवर्गकथनस्यौचित्यात् ॥

सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुन्धरा ।

गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्षमाऽवनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

१ 'विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा (१)

भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा' (२)

२ मृन्मृत्तिकाऽप्रशस्ता तु मृत्सा मृत्खा च मृत्तिका ।

४ उर्वरा सर्वसस्याख्या ५ स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

६ ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ ७ स्थलं स्थली ।

सौणिः, सौणी), ज्या (+ इज्या), कार्ष्णी, क्षितिः' सर्वसहा, वसुमती, वसुधा, उर्वी, वसुन्धरा, गोत्रा, कुः, पृथिवी (+ पृथिवी), पृथ्वी, क्षमा, अवनिः (+ अवनी), मेदिनी मही (+ महिः^२ । २७ स्त्री), 'पृथ्वी, के २० नाम हैं ॥

१ [विपुला, गह्वरी, धात्री, गौः (= गो), इला, कुम्भिनी, क्षमा, भूतधात्री, रत्नगर्भा (+ रत्नवती), जगती, सागराम्बरा (११ स्त्री) 'पृथ्वी, के ११ नाम हैं] ॥

२ मृत् (= मृद्), मृत्तिका (२ स्त्री), 'मिट्टी' के नाम हैं ॥

३ मृत्सा, मृत्खा (२ स्त्री), 'अच्छी मिट्टी' के २ नाम हैं ॥

४ उर्वरा (+ उर्वरा । स्त्री), उपजाऊ मिट्टी' का १ नाम है ॥

५ ऊषः (पु), क्षारमृत्तिका (स्त्री,) 'खारी मिट्टी' अर्थात् 'साही मिट्टी, रेह' के २ नाम हैं ॥

६ ऊषवान् (= ऊषवत्), ऊषरः (२ त्रि), 'खारी मिट्टीवाले स्थान, अर्थात् 'ऊसर या रेहचट जमीन' के २ नाम हैं ॥

७ स्थलम् (न), स्थली (स्त्री), 'स्थल' के नाम हैं । ('अकृत्रिम भूमि' का 'स्थली' (स्त्री) यह १ नाम है, 'कृत्रिम भूमि' का 'स्थला' (स्त्री) यह १ नाम है और 'भूमिसामान्य' अर्थात् 'भूमिमात्र' का 'स्थलम्' (न) यह १ नाम है) ॥

१. 'इज्या इति मूर्खेभ्याख्या, 'ज्या भौर्वी' 'ज्या वसुन्धरा' इति शाश्वतविरोधात्' इति श्री० स्था० ॥

२. 'वौचिः पङ्क्तिर्मेदिः केळिरित्याद्या ह्रस्वदीर्घयोः' इति बाचस्पत्युक्तेः ॥

- १ समानौ मरुधन्वानौ २ द्वे खिलाप्रहते समे ॥ ५ ॥
त्रिष्वर्थो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।
४ लोकोऽयं भारतं वर्ष—

१ मरुः, धन्वा (= धन्वन् । २ पु), 'मरुस्थल' अर्थात् 'मारवाङ् देश या राजपूतानेकी जमीन' के २ नाम हैं ॥

२ खिलम् , अप्रहतम् (२ त्रि), 'खिना जुति हुई जमीन' के २ नाम हैं ॥

३ जगती (छी), लोकः (पु) विष्टपम् (+ पु, + पिष्टपम्), भवनम्, 'जगत्' (३ न), 'भूतल जगत्' के ५ नाम हैं ॥

४ 'भारतम्' (+ भारतवर्षम्, भारतवर्षः, पु न । न) 'हिन्दुस्तान' का १ नाम है । ('यह 'हिन्दुस्तान' जम्बूद्वीपका नवमांश है ।^३ वर्ष ९ हैं— भारत १, किंपुरुष २ हरिवर्ष ३ रम्य ४, हिरण्य ५, कुरु ६, भद्राश्व ७, केतुमाल ८ और इलावृत्त ९ । इनमें क्रमशः ३ हिमालयके दक्षिण, ३ उत्तर, १-१ पूर्व तथा पश्चिम और १ मध्य भाग में है') ॥

१. एकं महाभूतं 'पृथ्वी' पञ्चमहाभूतविषयेन्द्रियात्मकं 'जगत्' इति 'पृथ्वीजगत्योर्भेदः ॥

२. 'उत्तरं' यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।

वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥ १ ॥ इति ।

वर्षं स्थानं विदुः प्राज्ञाः इमं लोकं च भारतम् ॥ इति भारविश्च ।

३. तदुक्तम् । जम्बूद्वीपस्थानां नववर्षाणां नामानि —

'स्वाभारतं किंपुरुषं हरिवर्षं च दक्षिणाः ।

रम्यं हिरण्यकुरु हिमाद्रेरुत्तराख्यः ॥ १ ॥

भद्राश्वकेतुमालौ तु द्वौ वर्षौ पूर्वपश्चिमौ ।

इलावृत्तं तु मध्यस्थं सुमेरुयत्र तिष्ठति ॥ २ ॥

इति वाचस्पतिः ॥

एषां सीमां भुवन् क्षी० स्वा० स्वष्टावेव वर्षाणांवाह । तद्यथा—

'हिमवान् हेमकुटश्च निषधो मेहरन्तरः ।

नीलः श्वेतश्च शृङ्गीवान् गन्धमादनमष्टमम् ॥ १ ॥

इति सीमाविष्णुब्रह्मण्डौ वर्षाणि ॥ इति ॥

—१ शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥

देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य २ उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ।

३ प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यात् ४ मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥

५ आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः ।

१ प्राच्यः (पु), 'शरावती नदीके पूर्व और दक्षिण वाले देश' का १ नाम है ॥

२ उदीच्यः (पु), 'शरावती नदीके पश्चिम और उत्तर वाले देश' का १ नाम है ॥

३ प्रत्यन्तः, 'म्लेच्छदेशः (२ पु), 'म्लेच्छ देश' अर्थात् 'कामरूप आदि' के २ नाम हैं ।

४ 'मध्यदेशः मध्यमः (पु), 'मध्यदेश' के २ नाम हैं ॥

५ आर्यावर्तः (पु), पुण्यभूमिः (स्त्री), 'विन्ध्याचल और हिमालय पहाड़ के बीचवाले देश' के २ नाम हैं ॥

१. 'विन्ध्यहिमालयोः इति पाठान्तरम् ।

२, ३. उक्तञ्च काशिकायाम्—

'प्रागुदञ्चौ विभजते हंसः क्षीरोदके यथा ।

विदुषां शब्दसिद्धयर्थे सा नः पातु शरावती' ॥ १ ॥ इति ॥

४. तदुक्तं—चातुर्वर्ण्यवस्थानं यस्मिन्देसे न विषते ।

तं म्लेच्छविषयं प्रादुरार्यावर्तमतः परम्' ॥ इति ॥

विषयो देशः ।

५. तदुक्तं मानुना—'हिमवद्विन्ध्योर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि ।

प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥ (२।२९) ॥

अत्र विनशनं तीर्थविशेषः, परे प्रसिद्धाः ॥

६. तदुक्तं मानुना—'आसमुद्राच्च वै पूर्वोदासमुद्राच्च पश्चिमात् ।

तयोरेवान्तरं गिर्योराख्यावर्त्तं विदुषां' ॥ १ ॥ इति (२।२२) ॥

तयोर्हिमवद्विन्ध्यपर्वतयोरित्यर्थः ॥

- १ नीवृज्जनपदो २ देशविषयो तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥
 ३ त्रिष्वागोष्ठाध्वजप्रये नड्वान्नडवल इत्यपि ।
 ५ कुमुदान् कुमुदप्रये ६ वेतस्वान् बहु वेतसे ॥ ९ ॥
 ७ शाद्वलः शादहरिते ८ सजम्बाले तु पङ्किलः ।
 ९ जलप्रायमनूपं स्यात् १० पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥

१ नीवृत्, जनपदः (+ जानपदः । २ पु), 'मनुष्योंके ठहरनेकी जगह-ग्राम, नगर' के २ नाम हैं ॥

२ देशः, विषयः (२ पु), उपवर्तनम् (न), देश' अर्थात् 'ग्रामके समुदाय' के ३ नाम हैं ॥

३ यहाँसे लेकर 'गोष्ठं गोस्थानम्' (२।१।१२) के पहलेतक 'त्रिषु'का अधिकार होनेसे सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ नड्वान् (नड्वत्), नड्वलः (२ त्रि), 'नरसल या नरकट जिस देशमें अधिक हों, उस देश' के २ नाम हैं ॥

५ कुमुदान् (= कुमुदत्, त्रि), 'जिस देशमें कुमुद अधिक हों, उस देश' का १ नाम है ॥

६ वेतस्वान् (= वेतस्वत्, त्रि), 'जिस देशमें वेत अधिक हों, उस देश' का १ नाम है ॥

७ शाद्वलः (+ शाद्वलः । त्रि), 'नई घासोंसे दूरा भरा स्थान या देश' का १ नाम है ॥

८ पङ्किलः (त्रि), 'कीचड़वाले देश या स्थान' का १ नाम है ॥

९ जलप्रायम्, 'अनूपम् (२ त्रि), 'बहुत जलवाले स्थान या अनेक प्रकारके पेड़ लता और झरनेवाले जङ्गलसे युक्त सब तरहके अन्न पैदा होनेवाले देश' के २ नाम हैं ।

१० कच्छः (पु । + न), 'बहुत पानीवाले स्थानके समान नदी आदिके पासवाले बगीचा इत्यादि' का १ नाम है । ('भा० दी० मतसे 'जलप्रायम्' आदि २ नाम उक्तार्थक हैं') ॥

१. तदुक्तम्—'नानाद्रुमलतावीरुनिर्झरप्रान्तश्चैतलैः ।

वनैर्व्याप्तमनूपं स्यात्सत्यैर्व्रीहिवारिभिः' ॥ १ ॥ इति ।

- १ स्त्री शर्करा शर्करिलः २ शर्करः शर्करावति ।
 देश पवादिमाश्वेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥
 ४ देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसम्पन्नवीहिपालितः ।
 स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥
 ५ सुराज्ञि देशे राजन्वान् स्यादुत्ततोऽन्यत्र राजवान् ।
 ७ गौष्ठं गोस्थानकं ८ तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥
 ९ पर्यन्तभूः परिसरः—

१ शर्करा (नि० स्त्री), शर्करिलः (त्रि), 'अधिक बालूवाले या छोटे-छोटे कङ्कड़वाले या रेतीले देश' के २ नाम हैं ॥

२ शर्करः, शर्करावान् (= शर्करावत् । २ त्रि), 'बालूवाले देश इत्यादि' ('आदि' शब्दसे बालूवाले पदार्थ आदिका संग्रह है) के नाम हैं ॥

३ इसी तरह 'सिकता' आदि शब्दसे भी तर्कर समझना चाहिये । (यथा—'सिकताः (नि० स्त्री । + नि० ब० व०), सैकतिलः (त्रि), 'बालू वाले देश' के २ नाम हैं । सैकतः, सिकतावान् (= सिकतावत् । २ त्रि) बालू वाले देश आदि' के दो नाम हैं) ॥

४ नदीमातृकः, देवमातृकः (२ त्रि), 'नदी और नहर आदिके पीनीसे खेत सिंचनेपर अन्न पैदा होनेवाले देश' का तथा वर्षाके पानीसे खेत सिंचनेपर अन्न पैदा होनेवाले देश' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

५ राजन्वान् (राजन्वात्, त्रि), 'धर्मात्मा, शीलवान् और सदा-चारी राजासे पालित देश' का १ नाम है ॥

६ राजवान् (= राजवत्, त्रि), 'सामान्य राजासे पालित देश' का १ नाम है ॥

७ गोष्ठम्, गोस्थानकम् (२ न) 'गौओंके रहनेके स्थान-गोशाला आदि' के २ नाम हैं ॥

८ गौष्ठोनम् (न), 'जहाँ पहले गौ रहती हो, उस स्थान' का नाम है ॥

९ पर्यन्तभूः (स्त्री), परिसरः (पु) नदी और पहाड़ आदिके पासकी भूमि' के २ नाम हैं ॥

—१सेतुरालौ स्त्रियां पुमान् ।

२ वामलूरश्च नाकुश्च वरमीकं पुत्रपुंसकम् ॥ १४ ॥

३ अयनं वर्त्म मार्गाभ्वपन्थानः पदवी सृतिः ।

सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

४ अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चाश्रितेऽध्वनिः ।

५ व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥

६ अपन्थास्त्वपथं ७ तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ।

८ प्रान्तरं दूरशून्याऽध्वाऽकान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥

१ सेतुः (पु), आलिः (+ आली । स्त्री), 'पुल' के २ नाम हैं ॥

२ वामलूरः, नाकुः (२ पु), वरमीकम् (+ वारमीकम् । पु न), 'वामी, बम्बौट, विमकाण' अर्थात् 'दीमकों द्वारा इकट्ठी की हुई मिट्टी के ढेर' के ३ नाम हैं ॥

३ अयनम्, वर्त्म (= वर्त्मन् । २ न), मार्गः, अध्वा (= अध्वन्), पन्थाः (= पथिन् । + पथः । ३ पु), पदवी (+ पदविः), सृतिः, सरणिः (+ शरणिः), पद्धतिः (+ पद्धती), पद्या, वर्तनी, (+ वर्तनिः, वर्त्मनिः), एकपदी (+ एकपात् = एकपाद् । ७ स्त्री), 'मार्ग, रास्ते' के १२ नाम हैं ॥

४ अतिपन्थाः (= अतिपथिन्), सुपन्थाः (= सुपथिन्), सत्पथः (३ पु), अच्छे मार्ग' के ३ नाम हैं ॥

५ व्यध्वः, दुरध्वः, विपथः, कदध्वा (= कदध्वन्), कापथः (+ कुपथः । ५ पु), खराब मार्ग' के ५ नाम हैं ॥

६ अपन्थाः (= अपथिन्, पु), अपथम् (न), 'कुमार्ग खराब रास्ते' के २ नाम हैं ॥

७ शृङ्गाटकम्, चतुष्पथम् (२ न), 'चौरास्ता या चौक' के २ नाम हैं ॥

८ प्रान्तरम् (न), जिसमें बहुत दूरतक छाया और पानी नहीं मिले, उस रास्ते' का १ नाम है ।

९ कान्तारम् (पु न), खोर, कण्टक और झाड़ी इत्यादिसे दुर्गम रास्ते' का १ नाम है ॥

१. 'विपथं—कापथं' च छोटमाहुः, यद्वामनः—('पथः संख्याव्ययादेः') 'सङ्ख्याभ्यवपू-
रकस्य पथः छोटमा' इति स्त्री० स्था० 'विप्रथकापथ' शब्दयोर्नपुंसकत्वमप्युक्तवान् ॥

- १ गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं २ नल्वः 'किष्कुचतुःशतम् ।
 ३ घण्टापथः संसरणं ४ तत्पुरस्थोपनिष्करम् ॥ १८ १
 ५ 'द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी (३)
 दिवस्पृथिव्यौ ६ गङ्गा तु रुमा स्याल्लवणाकरः' ()
 इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

—००७७७०—

१ 'गव्यूतिः (स्त्री । + पु नः + कृष्णम्, गोमयम्, २ न), 'दो क्रोश लम्बे रास्ते या स्थान' का १ नाम है ॥

२ 'नल्वः (पु । + न), 'चार हजार हाथ लम्बे रास्ते या रस्सी आदि' का १ नाम है ॥

३ 'घण्टापथः (पु), संसरणम् (न) 'राजमार्ग' के २ नाम हैं ॥

४ 'उपनिष्करम् (न) गांधके राजमार्ग' का १ नाम है ॥

५ [द्यावापृथिव्यौ, रोदस्यौ, द्यावाभूमी, रोदसी, दिवस्पृथिव्यौ (५ स्त्री नि० द्विव०), 'आकाश और पृथ्वीके समुदाय' के ५ नाम हैं] ॥

६ [गङ्गा, रुमा (२ स्त्री), लवणाकरः (पु), 'खारा समुद्र' के ३ नाम हैं] ॥
 इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

—००७७७०—

१. 'किष्कुचतुःशती' इति कान्चित्कः पाठः ।

२. अर्थ क्षेपकः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यते, तत्र 'दिवस्पृथिव्यौ गङ्गा तु' इत्यस्य स्थाने 'दिवस्पृथिव्याः संश्लेषम्' इति पाठभेदश्चोक्त इति शेषम् ॥

३. 'अक्षोपाक्षापेक्षया भूमेः प्राधान्यादाह—'इति भूमिवर्ग' इतीत्यवधेयम् ॥

४. तथा च बृहस्पतिः—

'धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशं, क्रोशद्वयं पुनः । गव्यूतं स्त्री तु गव्यूतिर्गोरुतंगोमतं च तत्' ॥ १॥ इति ।
 'धनुर्हस्तचतुष्टयम्' इति ।

'दाभ्यां धनुःसहस्राभ्यां गव्यूतिः पुंसि आधितः ॥ इति शब्दार्णवः' इति ॥

एवञ्च—४ इस्ताः = १ धनुः । १००० धनूषि = १ क्रोशः । २ क्रोशौ वा २००० धनूषि = १ गव्यूतिः ।

५. 'नल्वं इस्तशतम्' इति भा० दी० । 'किष्कुइस्तस्तेषां चतुःशती 'नल्वम्' इति आह । कात्यस्तु—'नल्वं [विश] इस्तशतम्' इति क्षी० स्वा० । 'नल्वं विश इस्तशतम्' इति मुकुटः ॥

६. 'दशधन्वन्तरो राजमार्गो घण्टापथः स्मृतः' इति चाणक्य इति ॥

७. 'दुधेः संसरणं वर्म गङ्गादीनामसंकुलम् । पुरोपनिष्करं चोक्तम्' इति क्षी० स्वा० ॥

२. अथ पुरवर्गः ।

- १ पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ।
 स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥
 तच्छाखानगरं ३ वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।
 ४ आपणस्तु निषद्यायां ५ विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥
 ६ रथ्या प्रतोली विशिखा ७ स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।

२. अथ पुरवर्गः ।

१ पूः (= पुर, स्त्री), पुरी, नगरी (२ स्त्री न), पत्तनम् (+ पट्टनम्), पुटभेदनम् ; स्थानीयम् (३ न), निगमः (पु), 'नगर' के ७ नाम हैं । ('जहाँ अनेक तरहके कारीगर व्यापारी आदि वसते हैं उसके 'पूः, पुरी, नगरी' ये ३ नाम हैं, 'जहाँ राजाके नौकर आदि वसते हैं उसके 'पत्तनम्, पुटभेदनम्' ये २ नाम हैं और खाई या चहारदीवारी आदिसे घिरे हुए नगरके 'स्थानीयम्, निगमः' ये २ नाम हैं' यह भी किसी २ का मत है') ॥

२ शाखानगरम् (न), 'राजधानीके समीपवर्ती छोटे-छोटे नगर' का १ नाम है ॥

३ वेशः, वेश्याजनसमाश्रयः (भा० दी० । २ पु), 'वेश्याओंके वास-स्थान' के २ नाम हैं ॥

४ आपणः (पु), निषद्या (स्त्री) 'बाज़ार, हाट या या ग्राहकोंके खरीदने योग्य वस्तु (सौदा) के रखनेके स्थान' अर्थात् 'गोदाम' के २ नाम हैं ॥

५ विपणिः (+ विपणी), पण्यवीथिका (+ पण्यवीथी । २ स्त्री), 'टूकानोंकी पङ्क्ति या बाज़ार का रास्ता या बाज़ारसे भिन्न सौदा बेचनेके किसी भी स्थान' के २ नाम हैं । ('आपण' आदि ४ नाम 'बाज़ार' के हैं, यह भी मत है') ॥

६ रथ्या, प्रतोली, विशिखा (३ स्त्री), 'गल्ली' के ३ नाम हैं । ('विपणिः' आदि ५ नाम एकार्यक हैं, यह भी मत है') ॥

७ चपः (पु), वप्रम् (न पु), 'धूस' अर्थात् 'किलेके चारों तरफ ऊँचे किये हुये मिट्टीके ढेर' के २ नाम हैं ॥

१ प्राकारो वरण १सालः २ प्राचीनं प्रान्ततो वृत्तिः ॥ ३ ॥

३ भित्तिः स्त्री कुड्यः पण्डुकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ।

५ गृहं गेहोदवसितं वेश्म सश निकेतनम् ॥ ४ ॥

१निशान्तवस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् ।

गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकायनिलयालयाः ॥ ५ ॥

६ वासः कुटी द्वयोः शाला सभा ७ संजवनं त्विदम् ।

चतुःशालं ८ मुनीनां तु पर्णशालोऽजोऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥

१ प्राकारः, वरणः, सालः (+ शालः । ३ पु), 'बाँस या काँटा आदि-
के घेरे' के ३ नाम हैं ॥

२ प्राचीनम् (+ प्राचीरम् । न), 'काँटा आदिसे घिरे हुए नगरके
समीपवाले स्थान' का १ नाम है ॥

३ भित्तिः (स्त्री), कुड्यम् (न), 'दीवाल' के २ नाम हैं ॥

४ पण्डुकम् (+ पण्डुकम्, पण्डोकम् । न), 'मजबूतीके लिये भीतरमें
ढड़ड़ी, लोहा, लकड़ी या टीन आदि देकर बनाई हुई दीवाल' का १
नाम है ॥

५ गृहम्, गेहम्, उद्वेदितम्, वेश्म (= वेश्मन्), सश (= सशन्)
निकेतनम्, निशान्तम्, वस्त्यम् (+ पस्त्यम्, वस्त्यम्) सदनम् (+ सादनम्)
भवनम्, अगारम्, मन्दिरम् (१२ न), गृहाः (पु नि० व० व०), निकायः
(+ निकायः), निलयः, आलयः (३ पु), 'मकान' के १६ नाम हैं ॥

६ वासः (पु), कुटी (कुटिः । पु स्त्री), शाला, सभा (२ स्त्री),
'सभाभवन या बैठकस्थान' के ४ नाम हैं । ('गृहम्,' २० नाम
'मकान' ही के हैं, यह भी मत है) ॥

७ संजवनम्, चतुःशालम् (+ चतुःशाला, स्त्री । २ न), चौतरफा घर-
वाले स्थान' के २ नाम हैं ॥

८ पर्णशाला (स्त्री । + न), षटजः (पु न), 'पत्तोंसे बनाई हुई साधुओं-
की कुटी' के २ नाम हैं ॥

१. 'सालः प्राचीरं' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कुलोदवसितं पस्त्यम्' इति वाचस्पत्यनुरोधात्—'निशान्तपस्त्यसदनम्' इत्यपीति
स्त्री० स्वा० बाह् ॥

- १ चैत्यमायतनं तुल्ये २ वाजिशाला तु मन्दुरा ।
- ३ आवेशनं शिल्पिशाला ४ प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥
- ५ मठश्छात्रादिनिलयो ६ गञ्जा तु मदिरागृहम् ।
- ६ गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥
- ९ "कुट्टिमोऽस्त्री निषद्धा भूश्चन्द्रशाला शिरोगृहम्" (५)
- ११ वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

- १ चैत्यम्, आयतनम् (२ न), 'यज्ञस्थान—विशेष' के २ नाम हैं ॥
- २ वाजिशाला, मन्दुरा (२ स्त्री), 'अस्तबल' के २ नाम हैं ॥
- ३ आवेशनम् (न), शिल्पिशाला (+ शिल्पशाला । स्त्री । + न), 'कारो-
गरींके घर' के २ नाम हैं ॥
- ४ प्रपा, पानीयशालिका (+ पानीयशाला । २ स्त्री), 'पौसरा, प्याऊँ,
या पानी रखनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥
- ५ मठः (पु), 'मठ' अर्थात् 'विद्यार्थियों या संन्यासियोंके रहनेकी जगह'
के २ नाम हैं ॥
- ६ गञ्जा (स्त्री), मदिरागृहम् (न), कलवरिया या मदिराके घर'
के २ नाम हैं ॥
- ७ गर्भागारम्, वासगृहम् (२ न), 'घरके बीचके हिस्से' अर्थात्
'तहखाने' के २ नाम हैं ॥
- ८ अरिष्टम्, सूतिकागृहम् (+ सूतकागृहम् । २ न), 'सौरीके घर'
अर्थात् 'जिसमें लकड़ा पैदा हुआ हो उस घर' के २ नाम हैं । ('किसीके मतसे
'गर्भागारम्,' ४ शब्द एकार्थक हैं') ॥
- ९ [कुट्टिमः (पु न), 'पत्थर या संगमर्मर आदिके बने हुए फर्श'
का १ नाम है] ॥
- १० [चन्द्रशाला (स्त्री), शिरोगृहम् (न), 'मटारी या घरके ऊपरी
छत' के २ नाम हैं] ॥
- ११ वातायनम् (न), गवाक्षः (पु), 'झरोखे' के २ नाम हैं ॥
- १२ मण्डपः (पु न), जनाश्रयः (पु), 'मण्डप' के २ नाम हैं ॥

१. 'शिल्पिशालम्' इति पाठान्तरम् । 'शिल्पशाला' इति सन्धः पाठः इति श्री० स्वा० ॥

२. अर्थः स्त्री० स्वा० व्याख्यायां समुपलभ्यते ॥

- १ 'हृष्यीदि धनिनां वासः २ प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥
 ३ सौधोऽस्त्री राजसदनममुपकार्योपकारिका ।
 ५ स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च ॥ १० ॥
 'विच्छन्दकः प्रभेदा द्वि भवन्तीश्वरसद्वनाम् ।
 ६ स्त्र्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥
 शुद्धान्तश्चावरोधश्च ७ स्यादष्टः क्षोममस्त्रियाम् ।
 ८ प्रघाणप्रघणालिन्दा वद्विर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥

१ हृष्यम् (न), आदि ('आदि' शब्दसे 'स्वस्तिकम्, अष्टालिकम्, वास-
 गृहम् (३ न), 'धनियोंके रहनेके स्थान' का १ नाम है ॥

२ प्रासादः (पु), 'देवताओं और राजाओंके निवासस्थान या
 कोठे' का १ नाम है ॥

३ सौधः (पु न), राजसदनम् (न), 'राजाके घर' के २ नाम हैं ॥

४ उपकार्या, उपकारिका (स्त्री) 'तम्बू, कनात, सामियाना' के
 २ नाम हैं । ('सौधम्,' ४ शब्द 'राजगृह' के नाम हैं) ॥

५ स्वस्तिकः, सर्वतोभद्रः, नन्द्यावर्तः, आदि ('आदि' शब्दसे 'रूपकः,
 वर्द्धमानः,'), विच्छन्दकः (+ विच्छन्दकः । ४ पु), 'धनियोंके गृहों'
 के १-१ नाम हैं । ('चारों तरफसे दरवाजा और तोरणवाले घरको 'स्वस्तिक',
 अनेक मंजिले घरको 'सर्वतोभद्र', गोलाकार घरको 'नन्द्यावर्त' और बड़े तथा
 सुन्दर घरको 'विच्छन्दक' कहते हैं') ॥

६ अन्तःपुरम्, अवरोधनम् (२ न), शुद्धान्तः, अवरोधः (२ पु),
 'रनिवास' के ४ नाम हैं ॥

७ अष्टः (पु), क्षोमम् (+ क्षोमम् । न पु), 'अटारी' के २ नाम हैं ॥

८ प्रघाणः, प्रघणः, अलिन्दः (+ आलिन्दः । ३ पु), 'पटखेहर' अर्थात्
 'चौखटकी बाहरी जगह' के ३ नाम हैं ॥

१. पतत्यूर्ध्वं 'मत्ताङ्गोऽपाश्रयः स्यात्प्रग्रीवो मत्तवारणः' इति क्षेत्रकः स्त्री० स्वा०
 व्याख्याने उपलभ्यते ॥

२. 'विच्छन्दकप्रभेदा द्वि' इति पाठान्तरम् ॥

- १ गृहावग्रहणी 'देहल्यरङ्गणं चत्वरजिरे ।
- २ अधस्तादारुणि शिला ४ नासा दारुपरि स्थितम् ॥ १३ ॥
- ५ प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात् ६ पक्षद्वारं तु 'पक्षकम् ।
- ७ वलीकनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

१ गृहावग्रहणी, देहली (२ स्त्री), 'डेहरी या दरवाजेके नीचेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

२ अङ्गणम् (महे० । + अङ्गनम्, भा० दी० स्त्री० महे०; । + प्राङ्गणम्, प्राङ्गणम्), चत्वरम्, अजिरम् (३ न) 'आँगन चवूतरे' के ३ नाम हैं ॥

३ शिला (+ शिली ! स्त्री), 'दरवाजेके दोनों खम्भोंके नीचेवाले काठ लोहे या पत्थर' का १ नाम है ॥

४ नामा (स्त्री), 'दरवाजेके दोनों खम्भोंके ऊपरवाले काष्ठ, लोहे या पत्थर' का १ नाम है ।

५ प्रच्छन्नम्, अन्तर्द्वारम् (२ न), 'खिड़की' के २ नाम हैं ॥

६ पक्षद्वारम्, पक्षकम् (+ पु, स्त्री० स्या० भा० दी० । २ न), 'मुख्य द्वारके बगलवाले द्वार' के २ नाम हैं ॥

७ वलीकम् (+ पु), नीध्रम्, पटलप्रान्तम् (३ न), 'छान्द ओरी, या घोड़मुँहा' के ३ नाम हैं ॥

८ पटलम् (न), छदिः (= छदिस्, स्त्री स्त्री० स्त्री०, नपुं० भा० दी०, महे०) : 'छावना, छाजन' के २ नाम हैं ॥

१. 'देहल्यङ्गणम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पक्षकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. णान्तस्याङ्गणशब्दस्य पृषोदरादित्वात्सिद्धिः । 'अङ्गनं प्राङ्गणे याने कामिन्यामङ्गना मता' इति विश्वमेदिन्युक्तेः, 'अङ्गनं प्राङ्गणे यानेऽप्यङ्गना तु नितम्बिनी' इति अनेकार्थसंग्रहे हेमचन्द्राचार्योक्तेश्च नान्तोऽपि 'अङ्गन' शब्द इत्यवधेयम् । अधिकं व्याख्यासुषाटिप्पणे द्रष्टव्यम् ।

४. 'प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात्पक्षद्वारं तदुच्यते' इति कात्याय 'पक्षद्वार' शब्दः पूर्वान्वयीत्यन्ये' इति भा० दी० । तत्र शोभनम्, 'द्वन्तायादि न पूर्वमाक्' (१।१।४) इति ग्रन्थकारप्रतिज्ञा-विरोधात् । 'तोः' स्थाने 'च' पाठमाश्रित्याविरोधोऽपीत्यवधेयम् ॥

५. 'छदिः' खियामेव (लि० सू० १३५) इत्यत्र 'इयं छदिः' इत्यादिना 'छदिः' शब्दसाधुत्वमुक्त्वा 'पटलं छदिः' इत्यमरकोषे 'पटल'साहचर्यात् 'छदिषः' स्त्रीवता वदन्तोऽमरव्याख्या-

१ गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।

२ कपोतपालिकायां तु विटङ्गं पुन्नपुंसकम् ॥ १५ ॥

३ स्त्री द्वार्वारं प्रतीहारः ४ स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।

१ गोपानसी, ^१बलभी (+ बलभिः, ^२बलभी । २ स्त्री) 'धरन, कैची या छानेके लिये दिये हुए टेढ़े काष्ठ' के २ नाम हैं ॥

२ कपोतपालिका (स्त्री), विटङ्गम् (न पु), 'कव्ज्मर आदि पक्षियों के लिये लकड़ी आदिके बनाए हुए घर' के २ नाम हैं ॥

३ द्वाः (= द्वार स्त्री), द्वारम् (न), प्रतीहारः (+ प्रतिहारः । पु), 'दरवाजे' के ३ नाम हैं ॥

४ वितर्दिः (+ वितर्दी), वेदिका (२ स्त्री), 'वेदी चौतरा' के २ नाम हैं ॥

तार उपेक्षया' इति मट्टोजीदीक्षितः । 'छदिः स्त्रियामेव' (कि० सू० १३५) इत्यत्र एवंपदम् । न्तराऽपि सुत्रोक्त्या छदिषः स्त्रीत्वे लब्धे 'पटलं छदिः (अमर २।२।१४) इत्यत्र पटलसाहचर्यात् क्लीबत्वसन्देह इति तन्निवारणाय सूत्रे 'एव'कारस्तदुच्यते 'उमरस्याख्यातार उपेक्षया' इति सुबोधिनीकारः । 'पटलच्छदिषी समे' (अभि० चिन्तामणौ ४।७६) इत्यस्य 'पटयति स्थगयति पटलं त्रिलिङ्गः 'मद्रिकन्दि—' (उणा० सू० ४६५) इत्यलः, पटं लातोति वा ॥१॥ छाद्यतेऽनेनच्छदिः क्लीबलिङ्गः 'अचिशुचि—' (उ० सू० २६५) इति इस् 'छदेरिस्मन्—' (पा० सू० ४।२।३२) इति ह्रस्वः' इति व्याख्यानं कृतम् । वाचस्पत्यभिधाने च 'छदिः' स्त्री, छद-कि, 'छदिषि पटले' (चाल), अमरः, 'छदिः स्त्रियाम्' (कि० सू० १३६) पा० उत्तेरिदन्तताऽस्य' इति, 'छदिष्, न०, छद् इति 'पटले सान्तं क्लीबं' रायमुकुटः । 'इन्द्रस्य छदिसि' यजु० ५।२।८२ गृहे निषण्डः, इति चोक्तत्वात् इकारान्तः 'छदि' शब्दः स्त्रीलिङ्गः, सकारान्तश्च 'छदिस्' शब्दः क्लीबलिङ्गः, इत्यायातम् । स्त्री० स्वा० मु० क्लीबत्वम् महे० भा० दी० स्त्रीत्वमामनन्ति, तथा व्याख्यामुधाटिप्पणीकाराः पं० शिवदत्ता अपि स्त्रीत्वे ग्रन्थकारप्रतिज्ञामङ्गापस्या लिङ्गस्य लोकाश्रयत्वाङ्गीकारात् 'छदिः स्त्रियाम्' (कि० सू० १३५) इत्यस्याकिञ्चिद्व्यतिरेकेण तस्य क्लीबत्वमेवाङ्गीकृतवन्तः । वस्तुतस्तु वाचस्पत्युक्तयुक्त्या इकारान्त 'छदि' शब्दस्य स्त्रीत्वाङ्गीकारे सकारान्तच्छदिः' शब्दस्य क्लीबत्वाङ्गीकारे च दीक्षितादिविरोधेऽपि नैव ग्रन्थकारप्रतिज्ञामङ्गः, नापि स्त्री० स्वा० मुकुटयोर्विरोध इत्यवधेयम् ॥

१. मुकुटेनास्य पर्यायता नाङ्गीकृता ॥

२. 'ओको गृहं पिटं चाळो बलभी चन्द्रशालिका' इति त्रिकाण्डशेषात्,
'शुक्रान्ते बलभी चन्द्रशाले सौषोर्ध्ववेष्टमनि' इति रभसाञ्च ॥

- १ तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं २ पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥
- ३ कूटं पूर्व्वारि यद्वस्तिनखस्तस्मिन्नथ त्रिषु ।
कपाटमररं तुल्ये ५ 'तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥
- ६ आरोहणं स्यात्सोपानं ७ 'निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी ।
- ८ संमार्जनी शोधनी स्यात् ९ 'संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥
- क्षिप्ते १० मुखं निःसरणं ११ सन्निवेशो निकर्षणम् ।

१ तोरणः (पु न), बहिर्द्वारम् (न), 'तारण, बाहरी फाटक' के २ नाम हैं ॥

२ पुरद्वारम्, गोपुरम् (२ न), 'नगरके बड़े फाटक' के २ नाम हैं ॥

३ हस्तिनखः (पु), 'सुखपूर्व्वक चढ़नेके लिये राजद्वार या नगर-द्वारपर बनाई हुई ढालू जमीन' का १ नाम है ॥

४ कपाटम् (+ कवाटम्), अररम् (अररी (स्त्री), अररिः (पु) । २ त्रि), 'किचाड़' के २ नाम हैं ॥

५ अर्गलम् (न स्त्री), 'किल्ली' के २ नाम हैं ॥

६ आरोहणम् सोपानम्, (२ न), 'सीढ़ी' के २ नाम हैं ॥

७ निश्रेणिः (+ निश्रेणी), अधिरोहिणी (+ अधिरोहणी । २ स्त्री) 'काठकी सीढ़ी' के २ नाम हैं ॥

८ संमार्जनी, शोधनी (१ स्त्री), 'झाड़' के २ नाम हैं ॥

९ संकरः (+ संकारः) अवकरः (२ पु), 'कतवार, बहारन' के २ नाम हैं ॥

१० मुखम्, निःसरणम् (२ न), 'घर आदिके प्रधान द्वार' के २ नाम हैं ॥

११ सन्निवेशः (पु), निकर्षणम् (न), 'ठहरने योग्य स्थान' के २ नाम हैं ॥

१. 'तद्विष्कम्भोऽर्गलम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी' इति पाठान्तरम् ।
३. 'संकारोऽवकरः' इत्यपि पाठान्तरम् ॥

- १ समौ संवसथग्रामौ २ वेश्मभूवास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥
 ३ ग्रामान्तमुपशस्यं स्यात् ४ सीमसीमे स्त्रियामुभे ।
 ५ घोष आभीरपल्ली स्यात् ६ पक्कणः शबरालयः ॥ २० ॥
 इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ शैलवर्गः ।

- ७ महीध्रे शिखरिक्मभृदहार्यधरपर्वताः ।
 अद्रिगोत्रगिरिप्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

- १ संवसथः, ग्रामः (२ पु), ग्राम के २ नाम हैं ॥
 २ वेश्मभूः (स्त्र), वास्तुः (पु न), 'वरकी जमीन' के २ नाम हैं ॥
 ३ ग्रामान्तम् (+ पु), उपशस्यम् (२ न), 'गाँवके पासवाली जमीन' के २ नाम हैं ॥
 ४ सीमा (= सीमन्), सीमा (२ स्त्री), 'सिमान, सीमा, सरहद्द' के २ नाम हैं ॥
 ५ घोषः (पु), आभीरपल्लीः (+ आभीरपल्ली । स्त्री), 'महीरोंके झोपड़े या गाँव' के २ नाम हैं ॥
 ६ पक्कणः, शबरालयः (२ पु), 'कोल, भील, किरात आदि म्लेच्छ जातियोंके घर' के २ नाम हैं ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ शैलवर्गः ।

- ७ महीध्रः, शिखरी (= शिखरिन्), चमभृत् (+ भूभृत्), अहार्यः, धरः, पर्वतः, अद्रिः, गोत्रः, गिरिः, प्रावा (= प्रावन्), अचलः, शैलः, शिलोच्चयः, (१३ पु), 'पहाड़' के १३ नाम हैं ॥

१. 'ग्रामान्त उपशस्यं स्यात्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ लोकालोकश्चक्रवाल २ त्रिकूटत्रिककुत्समौ ।
 ३ अस्तस्तु चरमक्षमाभृदुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥
 ५ हिमवाशिषधो विन्ध्यो 'माल्यवान् पारियात्रकः ।
 गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥
 ६ पाषाणप्रस्तरग्रावापलाशमानः शिला दृषत् ।
 ७ कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं ८ प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥
 ९ कटकः १० स्नुः प्रस्थः सानुरक्षियाम् ।

१ लोकालोकः, चक्रवालः (+ चक्रवालः । २ पु), 'सात द्वीपवाली पृथ्वीको घेरे हुए पहाड़' के २ नाम हैं ॥

२ त्रिकूटः, त्रिककुत् (=त्रिककुट् १-२ पु), 'त्रिकूट पहाड़' के २ नाम हैं ॥

३ अस्तः, चरमचमाभृत् (३ पु), 'अस्ताचल' के २ नाम हैं ॥

४ उदयः, पूर्वपर्वतः (२ पु), 'उद्याचल' के २ नाम हैं ॥

५ हिमवान् (= हिमवत्), निषधः, विन्ध्यः, माल्यवान् (=माल्यवत्), पारियात्रकः (+ पारियात्रिकः), गन्धमादनम् (न । + पु), हेमकूटः (शेष पु), 'हिमालय, निषध आदि पहाड़ों' का क्रमशः १-१ नाम है । ('अन्य शब्दों से 'मन्दरः, मलयः, सहायः, चित्रकूटः, मनाकः (५ पु), ' का संग्रह है) ॥

६ पाषाणः, प्रस्तरः, ग्रावा (= ग्रावन्), दृषत्, अशमा (= अशमन् । ५ पु), शिला, दृषत् (= दृषद् । २ स्त्री), 'पटथर' के ७ नाम हैं ॥

७ कूटः (पु न), शिखरम्, शृङ्गम् (२ न । + ३ पु न), 'पहाड़की चोटी' के ३ नाम हैं ॥

८ प्रपातः, अतटः (+ तटः), भृगुः (३ पु), 'पहाड़से गिरने योग्य स्थान' के ३ नाम हैं ॥

९ कटकः (पु न), 'पहाड़के मध्यभाग' का १ नाम है ॥

१० स्नुः, प्रस्थः, सानुः (४ ३ पु न), पहाड़के समतल भूमिके

१. 'माल्यवान् पारियात्रिकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'प्रपातस्तु तटो भृगुः' इति पाठान्तरम् । तत्र 'प्रपत्यते यस्मात्तटात्स भृगुरिति विग्रहो ज्ञेयः । मूलपाठे च 'प्रपत्यस्मादिति प्रपातः, न तटमत्रेत्यत इत्ये' विग्रहो ज्ञेयः ॥

३. 'सानुरक्षियौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. क्षीरस्वामिभानुशिखरौ इति तु 'स्नुः प्रस्थः सानुरक्षियौ' इति पठित्वा 'द्विस्वाम्योऽ-

- १ उत्सः प्रस्त्रवणं २ वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥
 ३ दरी तु कन्दरो वा स्त्री ४ देवखातबिले गुहा ।
 गह्वरं ५ गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥ ६ ॥
 ६ 'वन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशाभिर्गता गिरेः' (६)
 ७ खनिः स्त्रियामाकरः स्यात् ८ पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ॥

किसी एक भाग' के ३ नाम हैं ॥

१ उत्सः (पु), प्रस्त्रवणम् (न) 'पहाड़से गिरे हुए अधिक जलके इकट्ठा होनेवाले स्थान' के २ नाम हैं ॥

२ वारिप्रवाहः (अन्य मतसे), निर्झरः, झरः (३ पु), 'झरना' के ३ नाम हैं । ('अन्य आचार्योंके मतसे 'उत्सः', ५ नाम 'झरना' के हैं') ॥

३ दरी (स्त्री), कन्दरः (पु स्त्री), 'पहाड़की कन्दरा' के २ नाम हैं ॥

४ देवखातबिलम् (भा० स्त्री० । 'देवखातम्, बिलम्' महे०), गुहा (स्त्री), गह्वरम् (शेष न), 'स्वभाव ही से बने हुए बिल या गुफा' के ३ नाम हैं ॥ ('किसी २ के मतसे 'गुहा, गह्वरम्' ये दो ही नाम हैं') ॥

५ गण्डशैलः (पु), 'पहाड़से गिरी हुई बड़ी २ चट्टान' का १ नाम है ॥

६ [वन्तकः (पु), 'पहाड़के टेढ़े स्थानसे बाहर निकली हुई बड़ी चट्टान' का १ नाम है] ॥

७ खनिः (+ खनिः 'खनी । स्त्री), आकरः (पु । + गङ्गा स्त्री), 'खान' अर्थात् 'रत्न, धातु और कोयला आदिके निकलनेके स्थानके २ नाम हैं ॥

८ पादाः, प्रत्यन्तपर्वतः (२ पु), 'आसपासकी छोटी पहाड़ी' के २ नाम हैं ॥

प्यस्त्री' इत्यादितुः । महेश्वरस्तु त्रयाणामपि स्त्रीत्वाभावमुक्त्वा 'स्तुः'पुंलिङ्ग इति सर्वश्वर' इत्याह ।

१. अयं श्लेषकः स्त्री० स्वा० व्याख्यानेऽभिधानचिन्तामणौ (४।१००) च समुपलभ्यते ।

२. यस्कास्यः—'देवखाते बिले गुहा' इति, शाश्वतोऽप्याह—'गह्वरं बिलदम्भयोः' (श्लो० ६५६) इति, अभिधानचिन्तामणौ—'दरी स्यात्कन्दरोऽखातबिले तु गह्वरे गुहा' (४।१९९) इति प्रामाण्यादिति विभावनीयम् ॥

३-४. 'स्यादाकरः खनिः खानिर्गङ्गा—' इति (अभि० चिन्ता ४।१०२) उक्तेः ॥

१ उपत्यकाद्वेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

३ धातुर्मनःशिलाद्यद्वेगैरिकं तु विशेषतः ।

५ निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥



१ उपत्यका (खी), 'पहाड़के पासवाली जमीनके नीचेवाले हिस्से' का १ नाम है ॥

२ अधित्यका (खी), 'पहाड़के ऊपरवाले स्थान' का १ नाम है ॥

३ धातुः (पु), 'धातु' अर्थात् 'पहाड़से निकले हुए धातु' का १ नाम है ।
('लोना, चाँदी, तौबा, हरिताल, मैन्सिल, गेरु, अजून, कसीस, सीसा, लोहा, हिङ्गुल (सिंगरफ), गन्धक और अन्नक आदि धातु पहाड़से निकलते हैं') ॥

४ गैरिकम् (न), 'गेरु' अर्थात् 'पहाड़से निकले हुए लाल रंगके एक धातु-विशेष' का १ नाम है ॥

५ निकुञ्जः, कुञ्जः (१ पु न), 'कुञ्ज' अर्थात् 'लता या झाड़ी आदिसे आच्छादित स्थान-विशेष' के २ नाम हैं ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥



१. तदुक्तम्—'सुवर्णरूप्यताम्राणि हरितालं मनःशिला ।

गैरिकाजनकासीसकोहसीसाः सहिङ्गुलाः ॥ १ ॥

गन्धकोऽन्नकताम्राद्या धातवो गिरिसम्भवाः ॥' इति ॥

कचित्तु—'स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च रज्जं यस्यमेव च ।

सीसं लोहं च सप्तैते धातवो गिरिसम्भवाः' ॥ १ ॥

इति सप्त धातव उक्ताः । तत्रैव—

'सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम् ।

तुस्थं कांस्यं च रौप्यं सिन्दुरश्च शिङ्गाजलु' ॥ १ ॥

इति सप्तोपधातवश्च उक्ताः । सविस्तरमेतद्विवरणं चरकादिग्रन्थेषु द्रष्टव्यम् ॥

४ अथ वनौषधिवर्गः ।

- १ अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।
- २ महारण्यमरण्यानी ३ गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥
- ४ आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।
- ५ अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥
- ६ पुमानाक्रीड उद्यानं राक्षः साधारणं वनम् ।
- ७ स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥
- ८ वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी ९ लेखास्तु राजयः ।

४. अथ वनौषधिवर्गः ।

१ अटवी (+ अटविः । स्त्री), अरण्यम्, विपिनम्, गहनम्, काननम्, वनम्, (+ वनी, स्त्री । ५ न), 'वन, जङ्गल' के ६ नाम हैं ॥

२ महारण्यम् (न), अरण्यानी (स्त्री), 'बड़े जङ्गल' के २ नाम हैं ॥

३ गृहारामः, निष्कुटः (२ पु), 'घरके पासमें लगाये हुए जङ्गल' के २ नाम हैं ॥

४ आरामः (पु), उपवनम् (न), 'किसीके लगाये हुए उद्यान या बगीचे' के २ नाम हैं ॥

५ वृक्षवाटिका (स्त्री), 'मन्त्रियों या वेश्याओंके उपवन' का १ नाम है ॥

६ आक्रीडः (पु । + न), उद्यानम् (न), 'प्रमदाओं या मित्रोंके साथ क्रीडा करने के लिये लगाये हुए साधारण घन या बगीचे' के २ नाम हैं ॥

७ प्रमदवनम् (न), 'रानियोंके क्रीडाके लिये लगाये हुए घन या फुलवाड़ी' का १ नाम है ॥

८ वीथी (+ वीथिः), अलिः (+ अलिः), आवलिः (आवली), पङ्क्तिः (+ पङ्की), श्रेणी (+ श्रेणिः । ५ स्त्री), 'कतार, पङ्क्ति' के ५ नाम हैं ॥

९ लेखा १ (+ रेखा), राजिः (२ स्त्री), 'रेखा, लकीर' के २ नाम हैं ॥

१. या सान्तरा सा 'पङ्क्तिः' या च निरन्तरा सा 'रेखा' कथ्यते । यथा—क्षत्रियपङ्क्तिः, ब्राह्मणपङ्क्तिः, । मसीभस्मादिखचिता रेखा । यथा—भस्मरेखा, ॥

- १ वन्या वनसमूहे स्याद^२अङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥
 ३ वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ।
 'अनोकहः कुटः सालः पलाशी द्रुमागमाः ॥ ५ ॥
 ४ वानस्पत्यः फलैः पुष्पा^५तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।
 ६ 'ओषधयः फलपाकान्ताः ७ स्युरबन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥
 ७ बन्ध्योऽफलोऽवकेशी च—

१ वन्या (स्त्री), 'वन के समूह' का १ नाम है ॥

२ अङ्कुरः (+ अङ्कुरः^३ । पु), अभिनवोद्भिन् (= अभिनवोद्भिज् स्त्री, भा० दी० । + प्ररोहः), 'अङ्कुर' के २ नाम हैं ॥

३ वृक्षः, महीरुहः, शाखी (= शाखिन्), विटपी (= विटपिन्), पादपः (+ अङ्घ्रिपः, चरणपः,), तरुः, अनोकहः, कुटः, सालः (+ शालः), पलाशी (= पलाशिन्), दुः, द्रुमः, अगमः, (+ अगच्छः, । १३ पु) 'पेड़' के १३ नाम हैं ॥

४ वानस्पत्यः (पु) 'फूलकर फलनेवाले पेड़' का १ नाम है । जैसे—आम, लीची, अमड़ा) ॥

५ वनस्पतिः, (पु), 'विना फूले फलनेवाले पेड़' का १ नाम है । (जैसे—गूलर, कटहल, पीपल, बब) । किसीके मतसे उक्त दोनों शब्द 'वृक्षमात्र' के वाचक हैं,) ॥

६ ओषधी (औषधीः । स्त्री), फलकर पकनेके बाद नष्ट होनेवाले उद्भिद् का १ नाम है । ('जैसे—धान, चना, जौ, गेहूँ') ॥

७ अबन्ध्यः (अबन्ध्यः) 'फलेग्रहिः (२ त्रि), 'अपने २ समयमें फलनेवाले पेड़ आदि' के २ नाम हैं ॥

८ बन्ध्यः (+ बन्ध्यः), अफलः, अवकेशी (= अवकेशिन् । ३ त्रि),

१. 'अनोकहः कुटः शालः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'ओषधिः फलपाकान्ता स्यादबन्ध्यः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'अङ्कुरश्चाङ्कुरः प्रोक्तः' इति इलायुधः (अभिधानरत्नमालायां २।३०) इति अमरविक्रमपुस्तके 'अङ्कुरश्चाङ्कुरः प्रोक्तः' इति इलायुधः इति व्याख्यासुधापुस्तके लिखितन्तु तत्र तथाऽनुपलब्धेति न्यस्यम् ।

४. 'वनस्पतिः' इत्येकं नाम 'आम्रादिवृक्षस्येति भा० दी० चिन्त्यः । आम्रादिवृक्षस्य पुष्पा-ज्जातफलोपलब्धित्वत्वात् 'तैरपुष्पाद्वनस्पतिः' इति मूलोक्तिविरोधादित्यवश्यम् ।

—१ फलवान्फलिनः फली ।

- २ प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥
 फुल्लश्चैते विकसिते ३ स्युरवध्यादयस्त्रिषु ।
 ४ स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शङ्कु^१र्हस्वशास्त्राशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥
 ६ अप्रकाण्डे स्तम्भगुल्मौ ७ वल्ली तु व्रततिलता ।
 ८ लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥
 ९ नगाचारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।

नहीं फलनेवाले पेड़ आदि' के ३ नाम हैं ॥

१ फलवान् (= फलवत्), फलिनः, फली (= फलिन् । ३ त्रि), 'फले हुप पेड़ आदि' के ३ नाम हैं ।

२ प्रफुल्लः (+ प्रफुल्लतः), उत्फुल्लः, संफुल्लः, व्याकोशः (+ व्याकोषः), विकचः, स्फुटः, फुल्लः, विकसितः (८ त्रि), 'फूले हुप पेड़, लता आदि' के ८ नाम हैं ॥

३ 'अवध्या' से 'विकसितः' शब्द तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ स्थाणुः (पु न), ध्रुवः, शङ्कुः (२ पु), 'खुत्थ, टूँटे पेड़' के ३ नाम हैं ॥

५ क्षुपः (पु), गांछी, या जिसकी डाल आदि छोटी हों, उस पेड़ आदि' का १ नाम है ॥

६ स्तम्भः, गुल्मः (२ पु), 'बिना डालवाले पेड़, आदि' के २ नाम हैं ॥

७ वल्ली (+ वल्लिः, वेल्लीः), व्रततिः (+ व्रतती, प्रततिः), लता (३ स्त्री), 'लता, लत्तूर' के ३ नाम हैं । (जैसे—अंगूर, मालती, कडू, खीरा, ...) ॥

८ वीरुद् (= वीरुध्), गुल्मिनी (२ स्त्री), उलपः (पु), 'बहुत डालों-से युक्त लता' के ३ नाम हैं ॥

९ उच्छ्रायः, उत्सेधः, उच्छ्रयः (३ पु) 'पेड़ आदिकी ऊँचाई' के ३ नाम हैं ॥

१. 'प्रफुल्लोत्फुल्ल' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्थाणुरक्षी' इति पाठान्तरम् ॥

- १ अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः 'स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥
- २ समे शाखालते ३ स्कन्धशाखाशाले ४ शिफाजटे ।
- ५ शाखाशिफावरोहः स्यान्मूलाध्याग्रं गता लता ॥ ११ ॥
- ६ शिरोऽग्रं शिखरं वा ना ७ मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः ।
- ८ 'सारो मज्जा नरि ९ त्वक्खी वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

१ प्रकाण्डः (पु न), स्कन्धः (पु), 'कन्धा, पेड़ आदिकी शाखाकी जड़' के २ नाम हैं ॥

२ शाखा (+ शिखा), लता (२ स्त्री), 'डाल' के २ नाम हैं ॥

३ स्कन्धशाखा, शाला (२ स्त्री), 'सबसे पहले फूटनेवाली डाल' के २ नाम हैं ॥

४ शिफा, जटा (२ स्त्री), 'सोर' अर्थात् 'जमीनके भीतर फैली हुई पेड़की जड़' के २ नाम हैं ॥

५ अवरोहः (पु), 'पेड़की जड़ या पेड़ आदिपर चढ़ी हुई गुड़ूची आदि लता' का १ नाम है । ('यह महे० और मुकुटका मत है । भा० दी० मतसे 'अवरोहः' (पु), 'डालकी जड़' का १ नाम है तथा 'लता' (स्त्री), 'वृक्षके ऊपर चढ़नेवाली लता' का १ नाम है') ॥

६ शिरः (= शिरस्), अग्रम् (२ नाम स्त्री० स्वा० महे० मतसे); शिखरम् (३ न), 'फुनगी' अर्थात् 'पेड़ आदिके सबसे ऊपरके हिस्से' के ३ नाम हैं ॥

७ मूलम् (न), बुध्नः (+ वध्नः), अङ्घ्रिनामकः ('पैरके वाचक सब शब्द । २ पु), 'पेड़ आदिकी जड़' के ३ नाम हैं ॥

८ सारः, मज्जा (= मज्जन् । + मज्जा = मज्जा, स्त्री । + २ पु), 'लकड़ीके बीचका ढीर' अर्थात् 'मारिल लकड़ी' के २ नाम हैं ॥

९ त्वक् (= त्वच्, स्त्री), वल्कम्, वल्कलम् (२ पु न), 'पेड़ आदिके छिलके' के ३ नाम हैं ॥

१. 'स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'सारो मज्जा समौ' इति पाठान्तरम् ॥

- १ काष्ठं दारविन्धनं त्वेध इध्ममेधः समितिस्त्रियाम् ।
 ३ निष्कुहः कोटरं वा ना ४ वल्लरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥
 ५ पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान् ।
 ६ पल्लवोऽस्त्री किसलयं ७ विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥
 ८ वृक्षादीनां फलं सस्यं ९ वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।

१ काष्ठम्, दारु (+ दारुः, पु । २ न), 'लकड़ी' के २ नाम हैं ॥

२ इन्धनम्, एधः (= एधस्), इध्मम् (३ न), एधः (पु), समित् (= समिध् । स्त्री), 'जलावन, इंधन' के ५ नाम हैं । ('भा० दी० मतसे 'इन्धनम्,' ३ नाम 'जलावन' के और 'एधः, समित्' ये २ नाम 'इधनकी लकड़ी' के हैं) ॥

३ निष्कुहः (+ निष्कुटः । पु), कोटरम् (पु न), 'पेड़के खोदरा' के २ नाम हैं ॥

४ वल्लरिः (+ वल्लरी), मञ्जरिः (+ मञ्जरी । २ स्त्री), 'मञ्जरी, बौर, मौंजर' के २ नाम हैं ॥

५ पत्रम्, पलाशम्, छदनम्, दलम्, पर्णम् (५ न), छदः (पु), 'पत्ता' के ६ नाम हैं ॥

६ पल्लवः (+ पु), किसलयम् (२ पु न), 'नये पल्लव' के २ नाम हैं ॥

७ विस्तारः (पु, भा० दी०), विटपः (पु न, महे० ञी० स्वा०), 'पेड़के फैलाव' के २ नाम हैं । ('पल्लवः,' ४ नाम एकार्थक हैं यह भी किसी-किसी का मत है,) ॥

८ फलम् (भा० दी०), सस्यम् (+ शस्यम् । २ न), 'फल' के २ नाम हैं ॥

९ वृन्तम्, प्रसवबन्धनम् (भा० दी० । २ न), 'भैंटी' अर्थात् 'पेड़ आदिके फल या फूलकी जड़' के २ नाम हैं ॥

१. 'वृक्षादीनां फलं शस्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'विटपो न स्त्रियां साम्ये शाखाविस्तारपल्लवे' इति (मेदि० पृ० १०९ श्लो० २२) पान्तवर्गे मेदिनीबचनाद, 'शाखायां पल्लवे साम्ये विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम्' इति रमसाद, 'स्कन्धादूर्ध्वं तरोः शाखा कटप्रो(पो) विटपो मतः' इति कात्यायनेयबधेयम् ॥

- १ आमे फले शलाटुः स्या २ चक्षुष्के वानमुभे त्रिषु ॥ १५ ॥
- ३ क्षारको जालकं कलीवे ४ कलिका कोरकः पुमान् ।
- ५ 'स्याद् गुच्छकस्तु स्तबकः ६ कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
- ७ स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम् ।
- ८ मकरन्दः पुष्परसः ९ परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥
- १० द्विहीनं प्रसवे सर्व—

- १ शलाटुः (त्रि), 'कच्चे फल' का १ नाम है ॥
- २ वानम् (त्रि), 'सूखे फल' का १ नाम है ॥
- ३ क्षारकः (पु), जालकम् (न), 'नई कली या कलियोंके समूह' के २ नाम हैं ॥
- ४ कलिका (स्त्री), कोरकः (पु), 'कोंढी' अर्थात् 'बिना खिले हुए फूल' के २ नाम हैं ॥
- ५ गुच्छकः (+ गुच्छः, गुष्मकः, गुत्सः), स्तबकः (२ पु), महे० मतसे 'कलियोंसे छिपी हुई गांठ' के और भा० दी० मतसे 'शीघ्र खिलनेवाली कली' के और अन्य मतसे 'फूल या फल आदिके गुच्छे' के २ नाम हैं ॥
- ६ कुड्मलः (+ कुट्मलः), मुकुलः (२ पु न), 'अधखिली कली' के २ नाम हैं ॥
- ७ सुमनसः (= सुमनस्, नि० स्त्री ब० व० । + ए० व०^३), पुष्पम्, प्रसूनम्, कुसुमम्, सुमम् (४ न), 'फूल' के ५ नाम हैं ॥
- ८ मकरन्दः, पुष्परसः (२ पु), 'फूलके रस' के २ नाम हैं ॥
- ९ परागः (पु), सुमनोरजः (= सुमनोरजस्, न) 'फूलके पराग' के २ नाम हैं ॥

१० पहले कहे हुए शब्दोंका सामान्यतः लिङ्गनिर्देश करनेके उपरान्त 'द्वि-

१. 'स्याद्गुत्सकस्तु स्तबकः कुट्मलो' इति पाठान्तरम् ॥
२. कुसुमं समम् इति पाठान्तरम् ॥
३. 'सुमनाः पुष्पमालस्योः' (मेदि० पृ० १९० श्लो० ६७) इति सान्तवर्गे मेदिन्युक्तेः, 'पुष्पं सुमनाः कुसुमम्' इति नाममाकोक्तेः, 'सुमनाः प्राग्देवयोः । जात्याः पुष्पे.....' (अने० सं० ३।७६०) इति हैमोक्तेश्चेत्यवधेयम् ॥

—१ हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।

२ आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैज्जुदं फले ॥ १८ ॥

बार्हतं च ३ फले जम्बुवा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।

४ पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा ५ व्रीहयः फले ॥ १९ ॥

हीन' इस शब्दसे अब विशेषतया लिङ्गनिर्देश करते हैं । आगे कहे जानेवाले पेड़, लता और औषधके वाचक शब्द यदि फूल, फल, जड़ और पत्तेके वाचक हों तो वे नपुंसकलिङ्गमें प्रयुक्त होते हैं । ('जैसे—'चम्पकम्, आम्रम्, सूरणम्' ये तीन शब्द क्रमशः 'चम्पाके फूल, आमके फल और सूरनकी जड़' इन अर्थोंमें प्रयुक्त होनेसे नपुंसकलिङ्ग हुए हैं') ॥

१ ('हरीतक्यादयः' इस शब्दसे उक्त लिङ्गका बाधक वचन कह रहे हैं) फल आदि अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी 'हरीतकी, कर्कटी' आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग ही रह जाते हैं अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होते । ('जैसे—'हरीतकी, कर्कटी, द्राक्षा, बदरी' आदि शब्द क्रमशः 'हरें, ककड़ी, दाख और बैरके फल' इस अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी पूर्ववत् स्त्रीलिङ्ग ही हैं, नपुंसकलिङ्ग नहीं हुए हैं') ॥

२ आश्वत्थम्, वैणवम्, प्लाक्षम्, नैयग्रोधम्, ऐज्जुदम्, बार्हतम् (६ न), 'पीपल, बाँस, पाकड़, चट, इज्जुदी और भटकटैयाके फल' के क्रमशः १-१ नाम हैं ॥

३ जम्बूः (स्त्री), जम्बु, जाम्बवम् (२ न), 'जामुनके फल' के ३ नाम हैं ॥

४ जाती (स्त्री) प्रभृति ('प्रभृति' शब्दसे 'यूथिका, मल्लिका,'), शब्दके पुष्प अर्थमें प्रयुक्त होनेपर पूर्ववत् लिङ्ग रहते हैं अर्थात् उनका नपुंसकलिङ्ग नहीं होता । 'जैसे—'जाती, यूथिका, मल्लिका, (३ स्त्री), शब्द पहले लतार्थक रहनेपर स्त्रीलिङ्ग होनेसे पुष्पार्थक होनेपर भी स्त्रीलिङ्ग ही रहते हैं') ॥

५ व्रीहिः (पु), आदि ('आदि' शब्दसे 'यवः, सुद्गः, माषः, प्रियङ्गुः, गोधूमः, चणकः,') शब्दके फल अर्थमें प्रयुक्त होनेपर पूर्ववत् लिङ्ग रहता है अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होता । ('जैसे—'व्रीहिः, यवः, सुद्गः, माषः, प्रियङ्गुः (५ पु), शब्द पहले औषध्यर्थक रहने पर पुंलिङ्ग होनेसे अब फलार्थक होनेपर भी पुंलिङ्ग ही रह गये हैं, नपुंसकलिङ्ग नहीं हुए हैं') ॥

- १ विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि २ पुष्पे क्लीवेऽपि पाटला ।
- ३ बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥
अश्वत्थेऽथ कपित्थे स्फुर्दधित्थग्राहिमन्मथः ।
तस्मिन्दधिविलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥
- ५ उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।
- ६ कोविदारो चमरिकः कुहालो युगपत्त्रकः ॥ २२ ॥
- ७ सप्तपर्णो विशालत्वक्शारदो विषमच्छदः ।

१ विदारी (स्त्री), आदि ('आदि' शब्दसे 'शालपर्णी, अंशुमती, गम्भारी,') शब्दके 'मूल, फल और फूल' अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी पूर्ववत् लिङ्ग रहता है अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होता । (जैसे-विदारी, शालपर्णी, अंशुमती, गम्भारी (४ स्त्री,) 'मूल फल और फूल' अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी पहलेवाला स्त्रीलिङ्ग ही रह गया है, नपुंसकलिङ्ग नहीं हुआ है^१) ॥

२ पाटला (स्त्री न), 'पाटलाके फूल' अर्थमें यह स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग होता है ।

३ बोधिद्रुमः (+ बोधिः), चलदलः, पिप्पलः, कुञ्जराशनः (+ गजाशनः), अश्वत्थः (५ पु) 'पीपलके पेड़' के ५ नाम हैं ॥

४ कपित्थः (+ कषित्थ, कषित्थः), दधित्थः, ग्राही (=ग्राहिन्) मन्मथः, दधिविलः, पुष्पफलः, दन्तशठः (७ पु) 'कैथ' के ७ नाम हैं ॥

५ उदुम्बरः (उदुम्बरः) जन्तुफलः, यज्ञाङ्गः, हेमदुग्धकः (४ पु) 'गूलर' के ४ नाम हैं ॥

६ कोविदारः, चमरिकः, कुहालः, युगपत्त्रकः (४ पु), 'कचनार' के ४ नाम हैं ॥

७ सप्तपर्णः, विशालत्वक् (= विशालत्वच्) शारदः (+ शारदी), विषम-

१. 'विशालत्वक् शारदी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'द्विहीने प्रसवं सर्वम्' (२।४।१८) इति स्तोत्राध्यायनायेमानीत्यवधेयम् ॥

३. यत्तु भा० दी० 'पाटलः कुसुमे वर्णेऽप्याशुव्रीहिश्च पाटला' इति शाश्वतोक्त्या 'पाटला' शब्दस्य पुंस्त्वमप्युक्तम्, तत्तु 'पाटला पाटलौ स्त्री स्यादस्य पुष्पे पुनर्न ना' (मेदि० पृ० १६६ श्लो० १०९) इति मेदिन्या पुंस्त्वनिषेधाद्—पाटलन्तु कुङ्कुमश्चेतरक्तयोः । पाटलः स्यादाशु व्रीहिः पाटला पाटलद्रुमे' (अने० सं० १।६६४) इति हैजोक्तेश्च चिन्त्यमेवेति विभावनीयम् ॥

- १ आरग्वधे 'राजवृक्षशंपाकचतुरङ्गुलाः ॥ २३ ॥
 आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।
 २ स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥
 ३ वरुणो वरणः सेतुस्तिकशाकः कुमारकः ।
 ४ पुन्नागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववह्मभः ॥ २५ ॥
 ५ पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ।
 ६ तिनिशो स्यन्दनो नेमी रथद्रुतिमुक्तकः ॥ २६ ॥
 वज्जुलश्चित्रकृऽच्चाथ द्वौ पीतनकपीतनौ ।
 आम्रातके ८ मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ ॥ २७ ॥

वृक्षदः (४ पु) 'सतवना, छितवन' अर्थात् 'सात पत्तेवाले वृक्ष-विशेष, सप्तपर्ण के ४ नाम हैं ॥

१ आरग्वधः (+ आरग्वधः, अरग्वधः), राजावृक्षः, शंपाकः (+ शम्पाकः, संपाकः) चतुरङ्गुलः, आरेवतः, व्याधिघातः, कृतमालः, सुवर्णकः (+ सुपर्णकः, सुवर्णः, सुपर्णः, । ८ पु), 'अमलतास' के ८ नाम हैं ॥

२ जम्बीरः, दन्तशठः, जम्भः, जम्भीरः, जम्भलः (+ जम्भरः । ५ पु), 'जम्बीरी नीवू' के ५ नाम हैं ॥

३ वरुणः, वरणः, सेतुः, तिकशाकः, कुमारकः (५ पु) 'वारुण' के ५ नाम हैं ॥

४ पुन्नागः, पुरुषः, तुङ्गः, केसरः (+ केशरः), देववह्मभः (५ पु) नाग-केशर वृक्ष' के ५ नाम हैं ॥

५ पारिभद्रः, निम्बतरुः, मन्दारः, पारिजातकः (४ पु) 'वकायन' के ४ नाम हैं ॥

६ तिनिशः, स्यन्दनः, नेमिः (+ नेमी = नेमिन्), रथद्रुः अतिमुक्तकः, वज्जुलः, चित्रकृत् (७ पु) 'वज्जुल, तिनिश' के ७ नाम हैं ॥

७ पीतनः, कपीतनः, आम्रातकः (+ अम्रातकः । ३ पु), 'अमड़ा' के ३ नाम हैं ॥

८ मधूकः (मधुकः, मधूलः, मधुलः), गुडपुष्पः, मधुद्रुमः, वानप्रस्थः,

१, 'राजवृक्षशम्पाकचतुरङ्गुलाः' इति पाठान्तरमिति सुभूषादय इति मा० बी० ॥

- वानप्रस्थमधुष्टीलौ १ 'जलजेऽय मधूलकः ।
 २ पीलौ गुडफलः खंली ३ तस्मिस्तु गिरिसम्भवे ॥ २८ ॥
 'अक्षोटकन्दरालौ आधवङ्कोटे तु निकोचकः ।
 ५ पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथोऽय वेतसे ॥ २९ ॥
 रथाभ्रपुष्पविदुरशीतवागीरवञ्जुलाः ।
 ७ द्वौ परिब्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥
 ८ शोभाञ्जने शिश्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ।

मधुष्टीलः (+ मधुष्टीलः । ५ पु), 'महुआ' के ५ नाम हैं ॥

१ मधूलकः (+ मधूलकः । पु), 'पासीमें' या पहाड़पर होनेवाले महुए' का एक नाम है । (इसके पने बहुत बड़े २ होते हैं) ॥

२ पीलुः, गुडफलः, खंली (= खसिन् । ३ पु), 'पीलुनामक वृक्षविशेष' के ३ नाम हैं ॥

३ अक्षोटः, कन्दरालः (+ कर्परालः । २ पु), 'पहाड़ी पीलु' के २ नाम हैं ॥

४ अङ्कोटः (+ अङ्कोटः, अङ्गोलः), निकोचकः (+ निकोटकः । २ पु), 'देला'नामक वृक्ष-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ पलाशः, किंशुकः, पर्णः, वातपोथः (४ पु), 'पलाश' के ४ नाम हैं ॥

६ वेतसः, रथः, अभ्रपुष्पः (+ रथाभ्रपुष्पः), विदुरः, शीतः (+ न), वानीरः, वञ्जुल (७ पु), 'वैत' के ७ नाम हैं ॥

७ परिब्याधः, विदुलः, नादेयी (स्त्री), अम्बुवेतसः (+ जलवेतसः । शेष पु), 'जलवैत' के ४ नाम हैं ॥

८ शोभाञ्जनः (+ शौभाञ्जनः, सोभाञ्जनः, सौभाञ्जनः) शिश्रुः, तीक्ष्ण-गन्धकः, अक्षीवः (+ अक्षीवः, आक्षीरः, सु०), मोचकः (+ मोचः । ५ पु), 'सहिजन' के ५ नाम हैं ॥

१. गिरिजेऽय मधूलकः, इति पाठान्तरम् ॥ २. 'अक्षोटकर्परालौ' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'शिश्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीरमोचकाः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ रक्तोऽलं मधुशिशुः स्यादरिष्टः फेनिलः समौ ॥ ३१ ॥
 २ बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलाद्यपि ।
 ४ प्लक्षो जटी पर्कटी स्यान्न्यग्रोधो बहुपाकटः ॥ ३१ ॥
 ६ गालवः शाबरो लोध्रतिरीटमित्वमार्जनौ ।
 ७ आम्रश्चूतो रसालोऽसौ न सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥
 ९ 'कामाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः' (७)
 १० 'कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।

१ मधुशिशुः (पु), 'लाल फूलवाले सहिजन' का १ नाम है ॥

२ अरिष्टः (+ रिष्टः) फेनिलः (२ पु), 'रीठा' के २ नाम हैं ॥

३ बिल्वः, शाण्डिल्यः, शैलूषः, मालूरः, श्रीफलः (५ पु), 'बेल' के ५ नाम हैं ॥

४ प्लक्षः, जटी (= जटिन् । + जटि, स्त्री । २ पु), पर्कटी (स्त्री), 'पाकड़' के ३ नाम हैं ॥

५ न्यग्रोधः, बहुपाट (= बहुपाद्), वटः (३ पु), 'वट बरगद' के ३ नाम हैं ॥

६ गालवः शाबरः (+ सायरः), लोध्रः (+ रोध्रः), तिरीटः (+ तरः), तिल्वः, मार्जनः (६ पु), 'लोध्र' के ६ नाम हैं । ('गालवः, आदि २ नाम 'सफेद लोध्र' के और 'लोध्रः' आदि ४ नाम 'लोध्र' के हैं, यह स्त्री० स्वा० का मत है) ॥

७ आम्रः, चूतः, रसालः (३ पु), 'आम' के ३ नाम हैं ॥

८ सहकारः, अतिसौरभः (महे० । २ पु०), 'सुगन्धियुक्त आम' के २ नाम हैं ॥

९ [कामाङ्गः, मधुदूतः, माकन्दः, पिकवल्लभः (४ पु), 'आम' के ४ नाम हैं] ॥ ७ ॥

१० कुम्भम्, लूखलकम् (+ उदूखलकम्, कुम्भोलूखलकम् । २ न), कौशिकः, गुग्गुलुः, पुरः (३ पु), 'गुग्गुलु' के ५ नाम हैं ॥

१. 'कामाङ्ग' 'वल्लभः' अयमंशः स्त्री० स्वा० पुस्तके मूल एवेत्यवधेयम् ॥

२. 'कुम्भं चोदूखलकं' इति पाठान्तरम् । तत्र नामद्वयस्वीकारे मूलपाठ एव समीचीन इति ।

१ शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः ॥ ३४ ॥

२ राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नकद्रुधनुःपटः ।

३ गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥

श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः ।

१ कर्कन्धूर्वदरी कोलिः ५ कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥

१ शेलुः (+ सेलुः), श्लेष्मातकः, शीतः (+ न), उद्दालः, बहुवारकः (५ पु), 'लसोडा' के ५ नाम हैं ॥

२ राजादनम् (+ राजातनम् । + पु । न), प्रियालः (+ पियालः), सन्नकद्रुः (सन्नः, कद्रुः, यह सोमनन्दी के मतसे), धनुःपटः, (+ धनुस्पटः, धनुः = धनुस्, पटः । ३ पु) 'चिरौजी, पियार' के ४ नाम हैं ॥

३ गम्भारी (+ कम्भारी), सर्वतोभद्रा, काश्मरी (+ काश्मरी), मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी (६ स्त्री), काश्मर्यः (पु), 'गम्भार' के ७ नाम हैं ॥

४ १ कर्कन्धूः (+ कर्कन्धुः । पु स्त्री), बदरी (+ २ पु स्त्री मुकुं), कोलिः (+ कोली, कोला । स्त्री), 'बेर' के ३ नाम हैं ॥

५ कोलम्, कुवलम्, फेनिलम्, सौवीरम् (+ सौवीर्यम्), बदरम् (५

१. कर्कन्धु (न्धू) बदरी कोलिर्घोण्य कुवलफेनिले ।

सौवीरं बदरं कोलमय इति क्षी० स्वा० पाठः : ॥

२. सङ्ख्यागणनायामुक्तोऽप्ययं शब्दो भा० दी० व्याख्यातत्संशोधकप्रमादात्तुटितो व्याख्यातृत्यक्तो वेति बुधैर्मृग्यम् ॥

३. कर्क कण्टकं दधातीति विगृह्य 'अन्दूद्भूजम्बूकफेल्कर्कन्धूदिधिषूः' (उ० सू० १।१३) इति कूपत्ययेऽस्य सिद्धिरिति० भा० दी० । क्षी० स्वा० तु 'कर्को लोहितोऽन्धुः कर्कन्धुः शकन्ध्वादित्वात्पररूपमित्याह । तच्चिन्त्यम्, सिद्धान्तकौमुद्यां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' (वार्ति० ३६३२) इति वार्तिकोदाहरणत्वेनोक्तस्य 'कर्कन्धु' शब्दस्य 'कर्काणां राजविशेषाणामन्धुः कूपः कर्कन्धुः' इति तत्रैव तत्त्वबोधिण्यां दण्डयुक्तेः 'अन्दूद्भू—' (उ० सू० १।९३) इति पाणिनिसूत्रस्य च विरोधात् ह्रस्व 'कर्कन्धु' शब्दस्यान्यार्थकत्वादित्यवधेयम् ॥

४. 'अथ द्वयोः' इत्युक्त्वा ग्रन्थकारप्रतिशविरोधात् 'कर्कन्धूवदरी' त्युभौ शब्दौ पुंस्त्रीलिङ्गाविति मुकुटोक्तिश्चिन्त्या । तथा सति 'बदरी कोलाकारास्योर्वदरन्तु फले तयोः' (अने० संग्र० ३।५८३) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेः 'बदरी कोले, छोवं तु तत्फले' (मेदि० पृ० १४९ श्लो० २७) इति मेदिन्युक्तेश्च विरोधस्य दुर्वारत्वादित्यवधेयम् ॥

सौवीरं बदरं घोण्टाश्च्यथ स्वातस्वादुकण्टकः ।

विकङ्कतः सुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

२ ऐरावतो नागरक्षो नादेयी भूमिजम्बुका ।

३ तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारको ॥ ३८ ॥

४ काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुको ।

५ गोलीढो झाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्करो ॥ ३९ ॥

६ तिलकः क्षुरकः श्रीमान्-

न), घोण्टा (+ घुण्टा । स्त्री), 'वैर के फल या घनवैर^१' के ६ नाम हैं^२ ॥

१ स्वादुकण्टकः (+ गोपकण्टः), विकङ्कतः (+ वैकङ्कतः), सुवावृक्षः, ग्रन्थिलः, व्याघ्रपात् (= व्याघ्रपाद् । + व्याघ्रपादः, व्याघ्रपादपः । ५ पु), 'कटाय' के ५ नाम हैं ॥

२ ऐरावतः, नागरक्षः (२ पु), नादेयी, भूमिजम्बुका (+ भूमिजम्बू । २ स्त्री), 'नारङ्गी वृक्ष' के ४ नाम हैं । (प्रथम २ नाम 'नारङ्गी वृक्ष' के और अन्तर्वाले २ नाम 'भूमिजम्बू' अर्थात् 'एक प्रकारके कन्द के हैं, यह भी अन्याचार्यों (गौड) का मत है') ॥

३ तिन्दुकः (+ तिन्दुकी), स्फूर्जकः, कालस्कन्धः, शितिसारकः (+ नील-सारः ४ पु), 'तैदुआनमक वृक्ष' के ४ नाम हैं ॥

४ काकेन्दुः कुलकः, काकतिन्दुकः, काकपीलुकः (४ पु), 'कुचिला' के ४ नाम हैं ॥

५ गोलीढः (+ गोलिहः), झाटलः, घण्टापाटलिः (+ घण्टा, पाटलिः, स्त्री० स्वा०), मोक्षः, मुष्ककः (+ मूष्कः । ५ पु), काला पाटल या लोघ-विशेष' के ५ नाम हैं ॥

६ तिलकः, क्षुरकः, श्रीमान् (= श्रीमत् । ३ पु) 'तिलक वृक्ष' के ३ नाम हैं ॥

१. 'गोलीह झाटलो' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'बदरीसट्टशाकारो वृक्षः सूक्ष्मफलो भवेत् । अटव्यामेव सा घोण्टा गोपघोण्टेति चोच्यते' ॥१॥
इत्युत्तेर्बदरीसट्टशाकारस्य वन्यफलस्येति केचिन्मतेनेदम् ॥

३. कर्केन्वादित्रयं वृक्षार्थकम्, अन्ये फलार्थकाः, घोण्टा इत्युभयस्यूक-अर्थादुभयसम्बन्धी इति० स्त्री० स्वा० ॥

—१ समौ पिचुलझावुकौ ।

२ श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥

३ क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

४ तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥

तूलं च ५ नीपप्रियककदम्बास्तु हलिप्रियः ।

६ वीरवृक्षोऽरुक्करोऽग्निमुखो भल्लातकी तृषु ॥ ४२ ॥

७ गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपाश्वकाः ।

प्लक्षश्च ८ तित्तिडी चिञ्चाऽम्लिकाऽथो पीतसारके ॥ ४३ ॥

सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ।

१ पिचुलः, झावुकः (२ पु), 'भाऊ वृक्ष' के २ नाम हैं ॥

२ श्रीपर्णिका (+ श्रीपर्णी), कुमुदिका, कुम्भी (३ स्त्री), कैडर्यः (+ कैडर्यः, कैटर्यः), कट्फलः (२ पु), कायफर' के ५ नाम हैं ॥

३ क्रमुकः, पट्टिकाख्यः, पट्टी (= पट्टिन् । + पट्टी = पट्टी, स्त्री), लाक्षाप्रसादनः (४ पु), 'पठानीलोघ' के ४ नाम हैं ॥

४ तूदः (+ नूदः), यूपः (+ यूपः, सुक्र०), क्रमुकः, ब्रह्मण्यः (४ पु), ब्रह्मदारु (+ ब्रह्मकाष्ठम्), तूलम् (+ तूला, गौड मतसे । २ न) 'सहतूत या तूत' के ६ नाम हैं ॥

५ नीपः, प्रियकः, कदम्बः, हलिप्रियः (+ हरिप्रियः । ४ पु), कदम्ब वृक्ष' के ४ नाम हैं ॥

६ वीरवृक्षः, अरुक्करः (२ पु), अग्निमुखी (स्त्री), भल्लातकी (त्रि), 'भिलावा' के ४ नाम हैं ।

७ गर्दभाण्डः, कन्दरालः, कपीतनः, सुपाश्वकः, प्लक्षः (५ पु), 'लाही पीपल' के ५ नाम हैं ॥

८ तित्तिडी (+ तित्तिली), चिञ्चा, अम्लिका (+ आम्लिका, आम्लीका, अम्लीका । ३ स्त्री) 'इमली' के ३ नाम हैं ॥

९ पीतसारकः (+ पीतसारकः), सर्जकः, असनः (+ आसनः), बन्धूकपुष्पः, प्रियकः, जीवकः (६ पु), 'विजयसार' के ६ नाम हैं ॥

१. 'कैटर्यकट्फलौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'नूदस्तु यूपः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पीतसारके' इति पाठान्तरम् ॥

१ 'शाले तु सर्जकार्श्याश्वकर्णकाः सस्यसंवरः ॥ ४४ ॥

२ नदीसर्जो वीरतरुः इन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।

३ राजादनः फलाध्यक्षः क्षारिकायाधमथ द्वयोः ॥ ४५ ॥

इङ्गुदी तापसतरुभूर्जं चर्मिमृदुत्वचौ ।

६ पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शास्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

७ पिच्छा तु शास्मलीवेष्टे ८ रोचनः कूटशास्मलिः ।

९ चिरबिल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥

१ शालः (+ शालः, श्यालः), सर्जः (+ सर्जकः), कार्श्यः (+ कार्श्यः), अश्वकर्णकः, सस्यसंवरः (+ सस्यशंवरः । ५ पु) 'शाल या सखुआ' के ५ नाम हैं ॥

२ नदीसर्जः, वीरतरुः, इन्द्रद्रुः, ककुभः, अर्जुनः, (५ पु), 'अर्जुन वृक्ष' के ५ नाम हैं ॥

३ राजादनः (+ न), फलाध्यक्षः (२ पु), क्षारिका (स्त्री), 'क्षिरिनीके पेड़' के ३ नाम हैं ॥

४ इङ्गुदी (स्त्री पु), तापसतरुः (पु), 'इङ्गुदी इङ्गुआके पेड़' के २ नाम हैं ॥

५ भूर्जः (+ भृजः), चर्मो (= चर्मिन्), मृदुत्वक् (= मृदुत्वच् । + मृदुच्छदः । ३ पु), भोजपत्रके पेड़' के ३ नाम हैं ॥

६ पिच्छिला, पूरणी, मोचा (+ मोचनी । ३ स्त्री), स्थिरायुः (= स्थिरायुस्, पु), शास्मलिः (+ शास्मली, शास्मलः । स्त्री पु), 'सेमलके पेड़' के ५ नाम हैं ॥

७ पिच्छा (स्त्री), शास्मलीवेष्टः (भा० दी० पु), 'मोचरस' के २ नाम हैं ॥

८ रोचनः, कूटशास्मलिः (+ कुशास्मलिः । २ पु), 'काला सेमर' के २ नाम हैं ॥

९ चिरबिल्वः (+ चिरबिल्वः), नक्तमालः (+ रक्तमालः, स्त्री० स्वा०), करजः, करञ्जकः (४ पु), 'करञ्ज' के ४ नाम हैं ॥

१. 'शाले तु सर्जकार्श्याश्वकर्णकाः सस्यशंवरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'चिरबिल्वो रक्तमालः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'षष्ठिवर्षसहस्राणि वने जीवति शास्मलिः' इत्युक्तेरस्य स्थिरायुर्द्धमित्यन्वयं नामेत्य-
वधेयम् ॥

- १ प्रकीर्यः पूतिकरजः ^१पूतिकः कलिमारकः ।
- २ करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥
- ३ रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।
- ४ गायत्री ^२बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥
- ५ अरिमेदो विट्खदिरे ^६कदरः खदिरे सिते ।
सोमवल्लोऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥
एरण्ड उरुवृक्षश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ।

१ प्रकीर्यः पूतिकरजः (+ पूतीकरजः, पूतीकरञ्जः) पूतिकः (+ पूतीकः), कलिमारकः (+ कलिकारकः । ४ पु), 'काँटेदार करञ्ज के पेड़' के ४ नाम हैं ॥

२ षड्ग्रन्थः (पु), मर्कटी, अङ्गारवल्लरी (२ स्त्री) 'करञ्जके भेद' का १-१ नाम है ॥

३ रोही (= रोहिन्), रोहितकः (रोहितः) प्लीहशत्रुः, दाडिमपुष्पकः (+ रक्तपुष्पकः । ४ पु) 'गुलनार या लाल करञ्ज' के ४ नाम हैं ॥

४ गायत्री (स्त्री । गायत्री = गायत्रिन्, पु), बालतनयः (+ बालपत्रः) खदिरः दन्तधावनः (४ पु) 'कत्था, खैर' के ४ नाम हैं ॥

५ अरिमेदः (+ परिमेदः, अहिमेदः, अहिमारः), विट्खदिरः (२ पु) 'बदवू करनेवाले कत्थे' के २ नाम हैं ॥

६ कदरः सोमवल्लः (२ पु), 'सफेद कत्थे' के २ नाम हैं ॥

७ व्याघ्रपुच्छः (+ व्याघ्रदलः) गन्धर्वहस्तकः, एरण्डः, उरुवृक्षः (+ रुवुः, रुवुः, रुवूकः रुवुकः उरुवृक्षः उरुवृक्षः) रुचकः, चित्रकः, चम्बुः, पञ्जा-

१. 'पूति (ती) कः कलिकारकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः । कण्टकी बालपत्रश्च जिह्वाश्लयः क्षितिक्षमः' ॥ १ ॥
इत्युक्त्वा 'बालपत्र' शब्दस्य 'खदिरयासे' त्र्यर्थयोरभिमतत्वेन 'बालपुत्र' आन्याग्रन्थकारोऽतएव 'बालतनय' शब्दमुक्तवान् । तस्मादत्र 'बालपत्रश्च खदिरो' इति पाठः समीचीन इति ।

चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो ^१मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥ ५१ ॥

१ अल्पा शमी शमीरः स्यात्छमी सक्तुफला शिवा ।

२ ^२पिण्डीतको मरुवकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥

शल्यश्च मदने ४ शक्रपादपः पारिभद्रकः ।

भद्रदारु दुर्किलिमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥

पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुण्यपथ द्वयोः ।

पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥ ५४ ॥

कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी ६ श्यामा तु महिलाह्वया ।

लता गोवन्दनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥

विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ।

ङ्गुलः मण्डः (आमण्डः, अमण्डः आदण्डः), वर्धमानः, व्यडम्बकः (+ व्य-
डम्बरः । + व्यडम्बरनः स्वा० । ११ पु), 'परण्ड, रेड' के नाम हैं ॥

१ शमीरः (पु) 'छोटी शमी' का १ नाम है ॥

२ शमी, सक्तुफला (+ शक्तुफली), शिवा (३ स्त्री) 'शमी' के ३ नाम हैं ॥

३ पिण्डीतकः मरुवकः (+ मरुवकः), श्वसनः, करहाटकः (+ करहाटः),
शल्यः, मदनः (६ पु) 'मयनफल' के ६ नाम हैं ॥

४ शक्रपादपः, पारिभद्रकः (+ पारिभद्रः । २ पु) भद्रदारु (+ पु)
दुर्किलिमम्, पीतदारु, दारु (+ २ पु) पूतिकाष्ठम्, देवदारु (६ न)
'देवदारु' के ८ नाम हैं ॥

५ पाटलिः (+ पाटली । स्त्री पु) पाटला, मोघा (+ अमोघा),
काचस्थाली (+ काकस्थाली, + काला, स्थायी, २ स्त्री० स्वा०), फलेरुहा,
कृष्णवृन्ता, कुबेराक्षी (६ स्त्री), 'पादर' के ७ नाम हैं ॥

६ श्यामा, महिलाह्वया, लता, गोवन्दनी (+ गौः = गौः, वन्दनी^१),
गुन्द्रा, प्रियङ्गुः, फलिनी, फली, विष्वक्सेना, गन्धफली, कारम्भा (११ स्त्री),
प्रियकः (पु), 'ककुनी, टाँगुन' के १२ नाम हैं ॥

१. 'मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'पिण्डीतको मरुवकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. काला स्थाली फलेरुहा' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'वन्दनी पुष्पशोभना । गन्धप्रियङ्गुः कारम्भा लता गौर्वर्णवेदिनी' इतीन्द्रोक्तेः ॥

- १ 'मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वङ्गदुण्डुकाः ॥ ५६ ॥
 २ 'स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ।
 ३ शोणकश्चारलौ २ तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥ ५७ ॥
 अमृता च वयस्था च ३ त्रिलिङ्गस्तु बिभीतकः ।
 नाक्ष्मत्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥
 ४ अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता ।
 हरीतकी हैमवति चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥
 ५ पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाऽथ द्रुमोत्पलः ।
 कर्णिकारः परिव्याधो ७ लकुचो लिङ्गुचो बड्हुः ॥ ६० ॥

१ मण्डूकपर्णः, पत्रोर्णः, नटः, कट्वङ्गः, दुण्डुकः (+ दुन्दुक), स्योनाकः, (+ श्योनाकः), शुकनासः, ऋक्षः दीर्घवृन्तः, कुटन्नटः, शोणकः (+ शोणकः, क्षी० स्वा) भरलुः (+ भरदुः । १२ पु), 'सोनापाठा' के १२ नाम हैं ॥

२ तिष्यफला, आमलकी (+ आमला । त्रि) अमृता, वयस्था (+ कायस्था क्षी० स्वा० । शेष स्त्री) 'आँवले' के ४ नाम हैं ॥

३ बिभीतकः (त्रि), अक्षः (बिभीतकाक्षः) तुषः, कर्षफलः, भूता-वासः (भूतवासः), कलिद्रुमः (५ पु), 'बहेड़ा' के ६ नाम हैं ॥

४ अभया, अव्यथा, पथ्या, कायस्था (+ वयस्था), पूतना, अमृता, हरीतकी हैमवती, चेतकी, श्रेयसी शिवा (११ स्त्री) 'हर' के ११ नाम हैं ॥

५ पीतद्रुः, सरलः (२ पु) पूतिकाष्ठम् (न), 'सरलनामक काष्ठ (वृक्ष)—विशेष' के ३ नाम हैं ॥

६ द्रुमोत्पलः कर्णिकारः, परिव्याधः (३ पु) 'कठचम्पा' के ३ नाम हैं ॥

७ लकुचः लिङ्गुचः बड्हुः (+ बड्हुः । ३ पु), 'बड्हु' के ३ नाम हैं ॥

१. 'मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वङ्गदुन्दुकाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्योनाकशुकनास'..... इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'स्योनाकश्चारलौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. तिष्यं मङ्गस्थं फलं यस्याः सा तिष्यफला । तत्त्वब्राह्म्याः—

'नित्यमामलके लक्ष्मीनित्यं हरितगोमये । नित्यं शंखे च पत्रे च नित्यं शुक्ले च वाससि' ॥

इत्युक्तेरित्यवधेयम् ॥

- १ 'पनसः कण्टकिफलौ २ निचुलो द्विजलोऽम्बुजः ।
 ३ काकोदुम्बरिका 'फलगुर्मलयूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥
 ४ अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यालमालकाः ।
 ५ पिचुमन्दश्च निम्बेऽप्यथ पिच्छिलाऽगुरुशिशपा ॥ ६२ ॥
 ६ कपिला भस्मगर्भा सा—

१ पनसः (+ पणसः, दुर्गा मतसे; + फलसः) कण्टकिफलः (+ कण्टक-फलः । २ पु), 'कटहल' के २ नाम हैं ॥

२ निचुलः (+ निचोलः), द्विजलः (+ द्विजल), अम्बुजः (३ पु), भा० दी० मतसे 'स्थलवैत' के स्त्री० स्वा० तथा महे० मतसे 'जलवैत' के और अन्य मतसे 'समुद्रफल' के ३ नाम हैं ॥

३ काकोदुम्बरिका, फलगुः, मलयूः (+ मलपूः मलापूः) जघनेफला (४ स्त्री), 'कटूमर कालागूलर' के ४ नाम हैं ॥

४ अरिष्टः, सर्वतोभद्रः, हिङ्गुनिर्यासः, मालकः, पिचुमन्दः (+ पिचुमन्दः स्त्री० स्वा०) निम्बः (६ पु) 'नीम' के ६ नाम हैं ॥

५ पिच्छिला, 'अगुरु (न), शिशपा (+ अगुरुशिशपा, स्त्री० स्वा० । शेष स्त्री), भा० दी० मतसे 'शीशम' के ३ नाम हैं ॥

६ कपिला (भा० दी० ने इसे विशेषण माना है, पर्याय नहीं) भस्मगर्भा (२ स्त्री), 'कपिलवर्णवाले शीशम' के २ नाम हैं । (महे० ने पिच्छिला, अगुरुशिशपा, कपिला, भस्मगर्भा । ४ स्त्री), इन चारोंको पर्याय-वाचक कहा है') ॥

१. 'पणसः कण्टकिफलः निचुल द्विजलोऽम्बुजः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'फलगुर्मलयूर्जघनेफला' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'पिचुमन्दश्च' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'अगुरु, शिशपा' इति नामद्वयम् 'अगुरु क्लीबेशिशपायां जोङ्गके लघुनि त्रिपु' इति रुद्रः । अगुरुसारा शिशपा इत्येकमेव नामेति स्त्री० स्वा० महे० च । अत्र रुद्र भा० दी० 'अगुरु क्लीबं जोङ्गकशिशपयोर्वाच्यबलघुनि (मेदि० पृ० १४१ श्लो० १४१) इति रान्त-वर्गं मेदिन्युक्तेः—अगुरुस्त्वगुरौ लघौ शिशपायां—' (अने० सं० ३।५२०) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेश्च विरोधेऽपि स्त्रीलिङ्गयोः पिच्छलशिशपा'शब्दयोर्मध्ये क्लीबस्य 'अगुरु' शब्दस्य भा० दी० मतेऽङ्गीकारेण 'भेदाख्यानाय—' (१।१।४) इति ग्रन्थकारप्रतिज्ञाविरोध इत्ययमेवम् ॥

—१ शिरीषस्तु कपीतनः ।

- भण्डिलोऽप्यरथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥
 ३ एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरो ।
 'बकुलो ५ वञ्जुलोऽशोके ६ समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥
 ७ चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ।
 ८ जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥
 ९ श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका ।

जयो—

- १ शिरीषः, कपीतनः, भण्डिलः (+ भण्डिरः भण्डीलः, भण्डी = भण्डिन् ।
 ३ पु), 'सिरस' के ३ नाम हैं ॥
 २ चाम्पेयः, चम्पकः, हेमपुष्पकः (३ पु) 'चम्पा' के ३ नाम हैं ॥
 ३ गन्धफली (स्त्री), 'चम्पाकी कली' का १ नाम है ॥
 ४ केसरः (+ केशरः), बकुलः (+ वकुलः । २ पु), 'मौलसरी' के २ नाम हैं ॥
 ५ वञ्जुलः, अशोकः (२ पु), 'अशोक' के २ नाम हैं ॥
 ६ करकः, दाडिमः (+ दाडिम्बः, दालिमः, डालिमः । २), 'अनार'
 के २ नाम हैं ॥
 ७ चाम्पेयः, केसरः, नागकेसरः, काञ्चनाह्वयः (+ 'सोनेके वाचक सब
 नाम' । ४ पु), 'नागचम्पा पुष्पवृक्ष' के ४ नाम हैं ॥
 ८ जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका (५ स्त्री), 'जाही,
 अरणी या गनियार' के ५ नाम हैं ॥
 ९ श्रीपर्णम् (न), अग्निमन्थः, कणिका, गणिकारिका (२ स्त्री), जयः
 (शेष पु), भा० दी० 'जयपर्ण' के ५ नाम हैं । ('जया.....१० नाम
 'अरणी' के हैं, यह स्त्री० स्वा० का मत है^१) ॥

१. 'बकुलो वञ्जुलोऽशोके' इति पाठान्तरम् ॥

२. एतन्मते 'जयादि वैजयन्तिका' वधि स्त्रीलिङ्गशब्दानुक्त्या मध्ये क्लीब'श्रीपर्ण' शब्दस्य पुंलिङ्ग 'अग्निमन्थ' शब्दस्य च कथनान्तरं स्त्रीलिङ्गस्य 'कणिका'दिशब्दद्वयस्य ततश्च भूयो-
 ऽपि पुंलिङ्ग 'जय'शब्दस्योक्तत्वेन लिङ्गसाङ्ग्यात् 'भेदाख्यानाय—(११४)' इत्यादिग्रन्थकार-
 प्रतिशामङ्गापत्तिवारणाय भानुजीदीक्षितः पञ्च नामानि पृथक्चकार । क्षीरस्वामी तु वनौषधिवर्गे

- १ ऽथ कुटजः शक्रो वत्सकी गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥
 २ पतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले ।
 ३ कृष्णपाकफलाविग्नसुषेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥
 ४ कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्यपथ सिन्दुकैः ।
 १ सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ॥ ६८ ॥

१ कुटजः, शक्रः, वत्सकः (३ पु), गिरिमल्लिका (स्त्री) 'कौरेया' के ४ नाम हैं ॥

२ कलिङ्गम् (+ पु स्त्री) इन्द्रयवम्^२ (+ पु), भद्रयवम्^३ (+ पु ३ न), 'इन्द्रयव' के ३ नाम हैं ॥

३ कृष्णपाकफलः, अविग्नः (+ आविग्नः), सुषेणः, करमर्दकः (४ पु), 'करौदा, करवन' के ४ नाम हैं ।

४ कालस्कन्धः, तमालः, तापिच्छः (+ तापिञ्जः, तापिच्छः । ३ पु), 'सूती' के ३ नाम हैं ॥

५ सिन्दुकः (+ सिन्धुकः), सिन्दुवारः, इन्द्रसुरसः (+ इन्द्रसुरिसः । ३ पु) निर्गुण्डी (+ निर्गुण्ठी), इन्द्राणिका (२ स्त्री) 'सिन्धुआर' के ५ नाम हैं ॥

लिङ्गसाङ्ख्यदोषस्यानादृतत्वेन दशानामपि नाम्नामेकपर्यायतामाह, तत्र प्रमापकवचनानि चोपन्यस्तानि । तथैवा—

यदिन्दुः—'अग्निमन्योऽग्निमथनस्तर्कारीरणिजो जयः ।

अरणिः कणिका सैव तपनो वैजयन्तिकः' ॥ १ ॥ इति ॥

चन्द्रनन्दनश्चाह—

'अग्निमन्योऽग्निमथनस्तर्कारी वैजयन्तिका ।

वह्निमन्योऽरणिः केतुर्जयः पावकमन्थनः ॥

तर्कारी वैजयन्ती च वह्निनिर्मन्थनी जया ॥' इति च ।

अत एव—'अग्निमन्यो जयः स स्याच्छीपर्णी गणिकारिका ।

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका' ॥ १ ॥

इति वचनसंगतिः' इत्यवधेयम् ॥

१. 'सिन्दुवारेन्द्रसुरिसौ' इति पाठान्तरम् ॥

२-३. इन्द्रयवं कुटजफलम्, भद्रयवं कुटजबीजम् । यदाह—

फलानि तस्येन्द्रयवं बीजं भद्रयवास्तथा' इति स्त्री० स्वा० ॥

- १ वेणी खरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ।
- २ श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी ३ तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥
भूपदी शीतभीरुश्च ४ सैवास्फोटा वनोज्झवा ।
- ५ शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥
- ६ सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्य ७ य मागधी ।
गणिका यूथिकाऽम्बष्ठा ८ सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥
- ९ अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।

१ वेणी, खरा, गरी (+ खरागरी, गरा, भगरी, गरागरी । ३ स्त्री), देवताडः (+ देवतालः), जीमूतः (२ पु), 'देवताल' अर्थात् 'बन्दाकी, एक तरहके गुजराती वृक्ष' के ५ नाम हैं ॥

२ श्रीहस्तिनी, भूरुण्डी (२ स्त्री), 'एक तरह के शाक-विशेष' के २ नाम हैं । ('उसके पत्ते हाथीके कान-जैसे बड़े २ होते हैं') ॥

३ तृणशून्यम् (+ तृणशून्यम् । न), मल्लिका, भूपदी, शीतभीरुः (+ शतभीरुः । स्त्री), 'छोटी बेला' के ४ नाम हैं ॥

४ आस्फोटा (+ आस्फोटा । स्त्री), 'जङ्गली बेला' का १ नाम है ॥

५ शेफालिका (+ शीफालिका), सुवहा, निर्गुण्डी, नीलिका, (४ स्त्री), 'काली नेवारी' के ४ नाम हैं ॥

६ श्वेतसुरसा, भूतवेशी (२ स्त्री) 'सफेद फूलवाली नेवारी' के २ नाम हैं ॥

७ मागधी, गणिका, यूथिका, अम्बष्ठा (४ स्त्री), 'जूही' के ४ नाम हैं ॥

८ हेमपुष्पिका (स्त्री), 'पीले फूलवाली जूही' का १ नाम है ॥

९ अतिमुक्तः, पुण्ड्रकः (+ मण्डकः । २ पु), वासन्ती, माधवी, लता, (+ माधवीलता । २ स्त्री), 'बसन्त ऋतुमें फूलनेवाले कुन्द-विशेष, या माधवी' के ४ नाम हैं । ('अतिमुक्तः, पुण्ड्रकः' ये दो 'मल्लिकाके भेद हैं' यह भी किसी २ का मत है') ॥

१. 'खरागरी, गरागरी' इति पाठान्तरे ॥ २. 'तृणशून्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'भूपदी शतभीरुश्च सैवास्फोटा वनोज्झवा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ सुमना मालतीः जातिः २ सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥
 ३ माष्यं कुन्दं ४ रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः ।
 ५ सहा कुमारी तरणि ६ भग्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥
 ७ तत्र शोणे कुरवक ८ स्तत्र पीते कुरण्टकः ।
 ९ 'नीली क्षिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥
 १० 'सैरेयकस्तु क्षिण्टी स्यात्—

१ सुमनाः (= सुमनस् । + सुमना = सुमना), मालती, जातिः (३ स्त्री), 'चमेली' के ३ नाम हैं ॥

२ सप्तला, नवमालिका (+ नवमल्लिका । २ स्त्री), 'वसन्ती नेवारी' के ३ नाम हैं ॥

३ माष्यम् , कुन्दम् (पु । + २ पु न), 'कुन्द' के २ नाम हैं ॥

४ रक्तकः, बन्धूकः (+ बन्धुकः), बन्धुजीवकः (३ पु), 'दुपहरिया-
 नामक पुष्पवृक्ष' के ३ नाम हैं ॥

५ सहा, कुमारी, तरणिः (३ स्त्री), 'घीकुआर' के ३ नाम हैं ॥

६ भग्लानः (पु), महासहा (स्त्री), 'कटसरैया' के २ नाम हैं ।
 ('यह कौटेदार होती है') ॥

७ कुरवकः (+ कुरवकः, कुरुवकः, कुरुवकः । पु), 'लाल फूलवाली
 कटसरैया' का १ नाम है ॥

८ कुरण्टकः (+ कुरण्टकः, कुरुण्टकः । पु), 'पीले फूलवाली कटसरैया'
 का १ नाम है ॥

९ बाणा, (+ बाणा । पु स्त्री), दासी (स्त्री), आर्तगलः । (+ अन्तर्गलः ।
 पु), 'काली कटसरैया' के ३ नाम हैं ॥

१० 'सैरेयकः (+ सैरीयकः । पु), क्षिण्टी (स्त्री), 'कटसरैया' के २ नाम हैं ॥

१. 'नीला क्षिण्टीद्वयोर्बाणा' इति पाठान्तरम् । अत्र सामान्यतः क्षिण्टया विवरणम-
 नुक्त्वा विशेषनीत्यादेर्भेदकथनस्य सकलसरणिविशदत्वात्पूर्वं 'सैरेयकस्तु'.....रणे' इत्यस्य
 ततश्च 'नीली क्षिण्टी'...सा' इत्यस्य पाठस्यौचित्यं प्रतिभातीत्यवश्यम् ॥

२. 'सैरीयकस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सैरीयकः सद्चरः सैरेयश्च सद्चरः ॥

पीतो रक्तोऽप्य नीलश्च कुसुमैस्तं विभावयेत् ॥ १ ॥

—१ तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ।

- २ पीता कुरण्टको श्लिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥
 ३ ओडूपुष्पं जपापुष्पं ४ वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।
 ५ प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ॥ ७६ ॥
 करवीरे ६ करीरे तु क्रकरग्रन्थिताबुभौ ।
 ७ उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाङ्गयः ॥ ७७ ॥
 मातुलो मदनश्चा ८ स्य फले मातुलपुत्रकः ।
 ९ फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके ॥ ७८ ॥
 १० समीरणो मरुबकः प्रस्थपुष्पः फणिउज्जकः ।

१ कुरवकः (+ कुरवकः । पु), 'लाल कटसरैया' का १ नाम है ॥

२ कुरण्टकः (कुरुण्टकः । पु), सहचरी (स्त्री पु), 'पीली कट-सरैया' के २ नाम हैं ॥

३ ओडूपुष्पम्, जपापुष्पम् (+ जवापुष्पम् । २ न), 'ओड़ुल, गुड़हल' के २ नाम हैं ।

४ वज्रपुष्पम् (न), 'तिलके फूल' का १ नाम है ॥

५ प्रतिहासः (+ प्रतीहासः), शतप्रासः, चण्डातः, हयमारकः, करवीरः (५ पु), 'कनइल, कनेर पुष्प-वृक्ष' के ५ नाम हैं ॥

६ करीरः, क्रकरः, ग्रन्थिलः (३ पु), 'करील' के ३ नाम हैं । (इनमें पत्ता नहीं होता है) ॥

७ उन्मत्तः, कितवः धूर्तः, धत्तूरः, (+ धुस्तूरः धुस्तूरः, धूस्तूरः, धुतूरः), कनकाङ्गयः (स्वर्णके वाचक सब शब्द), मातुलः, मदनः (७ पु), 'धतूरे' के ७ नाम हैं ॥

८ मातुलपुत्रकः (पु), 'धतूरेके फल' का १ नाम है ॥

९ फलपूरः, बीजपूरः, रुचकः, मातुलुङ्गकः (४ पु); 'बिजौरा नीबू' के ४ नाम हैं । ('फलपूरः, बीजपूरः' ये दो नाम उच्चार्यक तथा 'रुचकः, मातुलुङ्गकः' ये दो नाम 'मातुलुङ्गक' के हैं, यह भा० दी० का मत है) ॥

पीतः कुरण्टको श्वेयो रक्तः कुरवकः स्मृतः ।

नील आर्तगणो दासी बाण ओदनपाक्यपि ॥ २ ॥ इत्युत्तरेत्यवधेयम् ॥

१. 'जवापुष्पम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'धत्तूरः काश्चनाङ्गयः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'मरुबकः' इति पाठान्तरम् ॥

४. तथा च रुच्यम्—'पत्रं नैव यदा करीरविद्ये.....' इति ॥

- जम्बीरोऽप्य १ थ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ ॥ ७९ ॥
 २ सितेऽर्जकोऽत्र ३ पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ।
 ४ अर्काद्वसुकाऽऽस्फोटगणरूपविकीरणाः ॥ ८० ॥
 मन्दारश्चार्कपर्णौ ५ ऽथ शुक्लेऽलार्कप्रतापसौ ।
 ६ शिवमल्ली पाशुपत एकाष्टीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥
 ७ वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ।
 ८ वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥
 जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ।

(+ जम्बीरः । ५ पु), 'मरुवा' के ५ नाम हैं ॥

१ पर्णासः, कठिञ्जरः, कुठेरकः (३ पु), 'पर्णास, या बघई' के ३ नाम हैं ॥

२ अर्जकः (पु), 'सफेद बघई' का १ नाम है ॥

३ पाठी (= पाठिन्), चित्रकः, वह्निसंज्ञकः (अग्निके वाचक सब नाम । ३ पु), 'चीत' के ३ नाम हैं ॥

४ अर्काद्वः (सूर्यके वाचक सब नाम), वसुकः (+ वसुकः), आस्फोटः (+ आस्फोटः), गणरूपः, विकीरणः (+ विकीरणः), मन्दारः, अर्कपर्णः (७ पु), 'एकवन, आक, मन्दार' के ७ नाम हैं ॥

५ अलर्कः, प्रतापसः (२ पु), 'सफेद फूलवाले एकवन' के २ नाम हैं ।

६ शिवमल्ली (= शिवमल्लिन्), पाशुपतः, एकाष्टीलः, बुकः (+ बुकः), वसुः (५ पु), 'गुग्गा' के ५ नाम हैं ॥

७ वन्दा, वृक्षादनी, वृक्षरुहा (+ वृक्षरोहा), जीवन्तिका (+ जीवन्ती । ४ स्त्री), 'वन्दा, बाँदा' के ४ नाम हैं ॥

८ वत्सादनी, छिन्नरुहा, गुडूची (+ गुडूची), तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका (+ जीवन्ती), सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी (९ स्त्री), 'गिलोय, गुडूच' के ९ नाम हैं ॥

१. अर्काद्वसुकास्फोटगणरूपविकीरणाः इति पाठान्तरम् ॥

२. 'बुको वसुः' इति पाठान्तरम् ॥

३. बुकं बिल्वं सधत्तूरं सुमना पाटला तथा । पदममुरगगोसूर्यमष्टौ पुष्पाणि शङ्करे ॥१॥
 इत्युक्तत्वाच्छिब्रिया मल्ली 'शिवमल्ली' इति नामेयवधेयम् ॥

- १ मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी सुवा ॥ ८३ ॥
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।
- २ पाठाऽम्बष्टा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥
एकाष्टीला पापचेली प्राचीना वनतिकिका ।
- ३ कटुः ^१कटम्भराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥
मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादिनी ।
- ४ ^२आत्मगुप्ताजहान्यण्डा कण्डुरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥
ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ।
- ५ ^३चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शंवरी वृषा ॥ ८७ ॥
प्रत्यक्षेणी सुतश्रेणी ^४रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ।

१ मूर्वा (+ मूर्वा), देवी, मधुरसा, मोरटा, तेजनी, सुवा (+ सुवा)
मधूलिका, मधुश्रेणी, गोकर्णी, पीलुपर्णी (१० स्त्री) 'मूर्वा' अर्थात् 'चिनार,
चुरनहार, धनुषके छिये उपयोगी लताविशेष' के १० नाम हैं ॥

२ पाठा, अम्बष्टा, विद्धकर्णी (+ अविद्धकर्णी), स्थापनी, श्रेयसी, रसा,
एकाष्टीला, पापचेली, प्राचीना, वनतिकिका (१० स्त्री) 'पाठा या पादर'
के १० नाम हैं ।

३ कटुः, कटम्भरा (+ कटम्बरा, कटम्बरा), अशोकरोहिणी (+ अशोकः,
रोहिणी), कटुरोहिणी, मत्स्यपित्ता, कृष्णभेदी (+ कृष्णभेदा), चक्राङ्गी, शकु-
लादिनी (८ स्त्री), 'कुटकी' के ८ नाम हैं ॥

४ आत्मगुप्ता (+ स्वयंगुप्ता), अजहा (स्त्री० स्वा०, महे० । + जहा
भा० दी०), अजहान्यण्डा, कण्डुरा (+ कण्डूरा), प्रावृषायणी, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशि-
म्बिः, कपिकच्छुः (+ कपिकच्छुः) मर्कटी (९ स्त्री), 'कोवाँच' के ९ नाम हैं ॥

५ चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, द्रवन्ती, शंवरी (+ शम्बरी), वृषा, प्रत्य-
क्षेणी, सुतश्रेणी, रण्डा (+ चण्डा), मूषिकपर्णी (+ मूषिकाङ्गया । १० स्त्री)
'मूसाकर्णी' के १० नाम हैं ॥

१. कटम्ब(दं व राशोकरोहिणी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'आत्मगुप्ताजहान्यण्डा' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'चित्रोपचित्रा.....शम्बरी वृषा' इति पाठान्तरम् । अत्र द्रवन्त्या द्रवन्तीप्रमाद्
ग्रन्थकारः 'उपचित्रा'माह इति स्त्री० स्वा० ॥ ४. 'चण्डा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ अपामार्गः शैस्वरिको धामार्गधमयूरकौ ॥ ८८ ॥
 प्रत्यक्षपर्णी' केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ।
 २ हजिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥
 अङ्गारवल्ली बालेयशाकवर्धर्वधकाः ।
 ३ मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका ॥ ९० ॥
 मण्डूकपर्णी मण्डीरी मण्डी योजनवल्स्यपि ।
 ४ यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥
 रोदनी कच्छुराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।
 ५ पृश्निपर्णी पृथक्षपर्णी चित्रपर्ण्यङ्घ्रिवल्लिका ॥ ९२ ॥

१ अपामार्गः, शैस्वरिकः (+ शिखरी), धामार्गवः (+ अधामार्गवः),
 मयूरकः (४ पु), प्रत्यक्षपर्णी (+ प्रत्यक्षपुष्पी), केशपर्णी (+ कीशपर्णी),
 किणिही, खरमञ्जरी (४ स्त्री), 'चिचिदा' के ८ नाम हैं ॥

२ हजिका (+ फजिका), ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी (+ भृगुजा),
 ब्राह्मणयष्टिका, अङ्गारवल्ली (१ स्त्री), बालेयशाकः, वर्धरः, वर्धकः (३ पु),
 'ब्रह्मनेटी, भारङ्गी' के ९ नाम हैं ॥

३ मञ्जिष्ठा, विकसा (+ विकषा), जिङ्गी, समङ्गा, कालमेषिका (+ का-
 लमेषिका), मण्डूकपर्णी, मण्डीरी (+ मण्डीरी), मण्डी, योजनवल्ली (+ योज-
 नपर्णी । ९ स्त्री), 'मञ्जीठ' के ९ नाम हैं ॥

४ यासः, यवासः, दुःस्पर्शः, धन्वयासः (+ धनुर्यासः), कुनाशकः (५ पु),
 रोदनी (+ चोदनी), कच्छुरा, अनन्ता, समुद्रान्ता, दुरालभा (+ दुरालम्भा ।
 ५ स्त्री), 'जवास्ता' के १० नाम हैं ॥

५ पृश्निपर्णी, पृथक्षपर्णी, चित्रपर्णी, अङ्घ्रिवल्लिका (+ अङ्घ्रिपर्णिका मुकु०),

१. 'कीशपर्णी' इति पाठान्तरम् । २. 'फजिका' इति मुकुटसंमतं पाठान्तरम् ॥

३. 'कालमेषिका' इति पाठान्तरम् । ४. मण्डीरी मण्डी योजनपर्ण्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

५. 'चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका' इति पाठान्तरम् ॥

क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी ^१कलशिर्धोवनिर्गुहा ।

१ ^२निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥

प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।

२ नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥

रञ्जनी श्रीफली तुत्या द्रोणी दोला च नीलिनी ।

३ अवल्लुजः सोमराजी सुवलिः सोमवल्हिका ॥ ९५ ॥

कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफल्यपि ।

४ कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥

^३उषणा पिप्पली शौण्डी कोलाऽथ करिपिप्पली ।

कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी ^४वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥

क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी (+ सिंहपुच्छकः, पु), कलशिः (+ कलशी), भावनिः (+ भावनी), गुहा (९ स्त्री), 'पिठिवन' के ९ नाम हैं ॥

१ निदिग्धिका, स्पृशी, व्याघ्री, बृहती, कण्टकारिका (+ कण्टकारी), प्रचोदनी, कुली, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा, राष्ट्रिका (१० स्त्री), 'भटकटैया, रँगनी' के १० नाम हैं ॥

२ नीली, काला, क्लीतकिका, ग्रामीणा, मधुपर्णिका (+ मधुपर्णी), रञ्जनी (+ रजनी), श्रीफली, तुत्या, द्रोणी (+ तूणी), दोला (+ मेला), नीलिनी (११ स्त्री), 'नील' के ११ नाम हैं ॥

३ अवल्लुजः (पु), सोमराजी, सुवलिः, सोमवल्हिका (+ सोमवल्ही), कालमेषी (+ कालमेषी), कृष्णफला, बाकुची (+ बागुची, मुकु०), पूतिफली (६ स्त्री), 'बाकुची, बकुची' के ८ नाम हैं ॥

४ कृष्णा, उपकुल्या, वैदेही, मागधी, चपला, कणा, उषणा (+ उषणा), पिप्पली (+ पिप्पलिः), शौण्डी, कोला (१० स्त्री), 'पीपरि' के १० नाम हैं ॥

५ करिपिप्पली (+ करिपिप्पलिः), कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी (४ स्त्री), वशिरः (+ वशिरः । पु), 'गजपीपरि' के ५ नाम हैं ॥

१. 'कलशी भावनी गुहा' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'बृहती तु निदिग्धिका' इति भागुरिवाक्यादत्र ग्रन्थकृद्भ्रान्तः, यपोऽमबोर्मेहान् मेह' इति क्षी० स्वा० ॥

३. 'उषणा पिप्पली' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'वशिरः पुमान्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ 'चव्यं तु चविका २ काकचिञ्चीगुञ्जे तु कृष्णला ।
 ३ पलङ्कषा त्विश्रुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥
 गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ।
 ४ विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ॥ ९९ ॥
 शृङ्गी 'महौषधं चा ५ थ क्षीरावी दुग्धिका समे ।
 ६ शतमूली बहुसुताऽभीरुः इन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥
 ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्नीनारायण्यः शतावरी ।
 अहेरु—

१ चव्यम् (न । + स्त्री), चविका (स्त्री । + न, पु,) 'चाभ, चव्य' के २ नाम हैं । ('ये दो नाम भी पूर्वार्थक हैं, यह भी किसी २ का मत है') ॥

२ काकचिञ्ची (+ काकचिञ्चिः, काकचिञ्चा), गुञ्जा, कृष्णला (+ र-सिका । ३ स्त्री), 'गुंजा, लाल घुंघुची, करेजनी' के ३ नाम हैं ॥

३ पलङ्कषा, इश्रुगन्धा, श्वदंष्ट्रा (३ स्त्री), स्वादुकण्टकः, गोकण्टकः, गोक्षुरकः, वनशृङ्गाटः (४ पु), 'गोखरू' के ७ नाम हैं ॥

४ विश्वा, विषा, प्रतिविषा, अतिविषा, उपविषा, अरुणा, शृङ्गी (७ स्त्री), महौषधम् (न), 'अतीस' के ८ नाम हैं ॥

५ क्षीरावी, दुग्धिका (२ स्त्री), 'दुधिया घास' के २ नाम हैं ॥

६ शतमूली, बहुसुता, अभीरुः, इन्दीवरी, वरी (+ वरा), ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्नी, नारायणी, शतावरी, अहेरुः (१० स्त्री), 'शतावर' के १० नाम हैं ॥

१. 'चव्यं तु चविकं काकचिञ्चागुञ्जे तु कृष्णला' इति पाठभेदः । चन्द्रनन्दनस्तु सामान्येनाह, करिपिप्पल्या पव पर्यायतामाहेत्यर्थस्तथा हि—

'चव्या कोकाऽय चविका श्रेयसी गजपिप्पली ।

च्यवना कोकवली तु चव्यं कुञ्जरपिप्पली' ॥ १ ॥ इति

यत्नमते त्वन्तस्य पूर्वान्वयित्वप्रसक्त्या 'चव्यं च' इति पाठः समीचीन इत्यवधेयम् ॥

२. 'महौषधं' तु विषं नातिविषा । ऋष्ये तु हि महौषधं (विषं) शृण्ठी कश्चनं चेति विषा(१)शब्दं बुद्ध्या भ्रान्तोऽयम्' इति स्त्री० स्वा० ॥

३. 'वरा' इति पाठान्तरम् । ४. 'चव्यं च' इति पठतां मतेनेदमित्यवधेयम् ॥

—१ रथ ^१पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥

दार्वी पचम्पचा दारु हरिद्रा पर्जनीत्यपि ।

२ वचोग्रन्था षडग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥

३ शुक्रा हैमवती ४ वैद्यमातृसिंहौ तु वाशिका ।

वृषोऽटरुषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

५ ^२आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्ताऽपराजिता ।

६ इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

७ शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः ।

^३मिश्रेयाऽप्य ८ थ सीहुण्डो वज्रः स्नुक् स्नुही गुडा ॥ १०५ ॥

१ पीतद्रुः, कालीयकः (+ कालेयकः), हरिद्रुः (३ पु) दार्वी, पचम्पचा (+ पचम्पचा) दारुहरिद्रा, पर्जनी (४ स्त्री), 'दारुहृत्दी' के ७ नाम हैं ॥

२ वचा, षडग्रन्था, षडग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका (५ स्त्री), 'घुडबच्च या बच्च' के ५ नाम हैं ॥

३ हैमवती (स्त्री), 'खुरासानी बच्च' का १ नाम है ॥

४ वैद्यमाता (= वैद्यमातृ), सिंहौ, वाशिका (+ वासिका । ३ स्त्री), वृषः, अटरुषः (+ अटरुषः), सिंहास्यः, वासकः, वाजिदन्तकः (५ पु), 'अडूसा, वासक' के ८ नाम हैं ॥

५ आस्फोटा (+ आस्फोता), गिरिकर्णी, विष्णुक्रान्ता, अपराजिता (४ स्त्री) 'अपराजिता' के ४ नाम हैं ॥

६ इक्षुगन्धा (स्त्री), काण्डेक्षुः, कोकिलाक्षः, इक्षुरः, क्षुरः (४ पु), 'तालमखाना' के ५ नाम हैं ॥

७ शालेयः, शीतशिवः (६ पु), छत्रा, मधुरिका, मिसिः, (+ मिसी, मिशिः, मिशी), मिश्रेया (+ मिश्रेयः, पु । ४ स्त्री), 'सोमा या वनसौफ' के ६ नाम हैं ॥

८ सीहुण्डः (+ सिहुण्डः, शीहुण्डः), वज्रः (+ वज्रद्रुः । २ पु), स्नुक् (= स्नुह्), स्नुही (+ स्नुहा) गुडा, समन्तदुग्धा (४ स्त्री) 'सॅहुड' के

१. 'पीतद्रुकालेयकहरिद्रवः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'अस्फोता' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'मिश्रेयोऽप्यथ सीहुण्डो वज्रद्रुः स्नुक् स्नुही गुडा' इति पाठान्तरम् ॥

समन्तदुग्धाऽथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ।

तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुन्नपुंसकम् ॥ १०६ ॥

२ 'बला वाट्यालका ३ घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।

४ मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च ॥ १०७ ॥

५ सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ।

त्रिभण्डी रोचनी ६ श्यामापालिन्धौ तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥

काला मसूरविदलाऽर्द्धचन्द्रा कालमेषिका ।

७ मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

६ नाम हैं ॥

१ वेल्लम् (न), अमोघा (+ मोघा), चित्रतण्डुला (२ स्त्री), तण्डुलः (+ तन्तूलः, सुकु०), कृमिघ्नः (+ कृमिघ्नी, स्त्री । २ पु) विडङ्गम् (पु न), 'वायविडङ्ग' के ६ नाम हैं ॥

२ बलः (+ वला) वाट्यालका (+ वाट्यालकः, । २ स्त्री), 'बरियारा' (औषधविशेष) के २ नाम हैं ।

३ घण्टारवा, शणपुष्पिका (२ स्त्री), 'सन, सनई' के २ नाम हैं ॥

४ मृद्वीका, गोस्तनी (+ गोस्तना), द्राक्षा, स्वाद्वी, मधुरसा (५ स्त्री) 'दाक्ष, मुनक्का' के ५ नाम हैं ॥

५ सर्वानुभूतिः, सरला (+ सरणा, सरदा) त्रिपुटा (त्रिपुटी, प्रक्षा) त्रिवृता, त्रिवृत्, त्रिभण्डी, रोचनी (+ रोचनी । ७ स्त्री), 'सफेद निशोथ' के ७ नाम हैं ॥

६ श्यामा, पालिन्धी (+ पालिन्धी), सुषेणिका, काला, मसूरविदला, अर्द्धचन्द्रा, कालमेषिका (७ स्त्री) 'काला निशोथ' के ७ नाम हैं ॥

७ मधुकम्, क्लीतकम्, यष्टिमधुकम् (+ यष्टीमधुकम् । ३ न) मधुयष्टिका (स्त्री), 'मुलहठी, जेठीमधु' के ४ नाम हैं ॥

१. 'बला वाट्यालको घण्टारवा' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'सरणा' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'रोचनी' इति पाठान्तरम् ॥

- १ विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा 'क्रोष्ट्री च या सिता ।
- २ अन्या क्षीरविदारी 'स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥
- ३ लाङ्गली शारदी तोषपिप्पली शकुलादनी ।
- ४ खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥

१ विदारी, क्षीरशुक्ला, इक्षुगन्धा, क्रोष्ट्री (४ स्त्री), भा० दी० मतसे 'कृष्ण भूमिकूष्माण्ड' के और महे० मतसे 'शुक्ल भूमिकूष्माण्ड' के ४ नाम हैं ॥

२ क्षीरविदारी, महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका (+ ऋक्षगन्धिका । ३ स्त्री), भा० दी० मतसे 'शुक्ल भूमिकूष्माण्ड' के और महे० मतसे 'कृष्ण भूमिकूष्माण्ड' के ३ नाम हैं ।

३ लाङ्गली, शारदी, तोषपिप्पली, शकुलादनी (४ स्त्री), 'जलपीपरि' के ४ नाम हैं ॥

४ खराश्वा, कारवी (२ स्त्री), दीप्यः, मयूरः, लोचमस्तकः (+ लोचमस्तकः । ३ पु), 'अजमोदा' के ५ नाम हैं ॥

१. 'क्रोष्ट्री तु या सिता' इति 'याऽसिता' इति च पाठान्तरे ॥

२. 'स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका' इति पाठान्तरम् ॥

३. या असिता = कृष्णा इतिच्छेदं कृत्वा 'विदारी, ...' ४ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य, अन्या सिता = शुक्ला 'क्षीरविदारी, ...' ३ 'शुक्लभूकूष्माण्डस्य' इत्युक्त्वा—'या सिता = शुक्ला 'विदारी, ...' ४ 'शुक्लभूकूष्माण्डस्य' तथा 'अन्या या असिता = कृष्णा 'क्षीरविदारी, ...' ३ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य' इति मुकुटोक्तं चिन्त्यमिति भा० दी० । क्षी० स्वा० तु 'विदारी, ...' ३ 'कृष्णभूकूष्माण्ड' प्रादेशेषु विख्यातम्, ततः 'क्रोष्ट्री तु या सिता' इति पाठसुररीकृत्य 'या सिता = शुक्ला सा 'क्रोष्ट्री' इत्युक्त्वा अन्या या असिता = कृष्णा 'क्षीरविदारी, ...' ३ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य' इत्येवं विभागत्रयं कृतम् । तत्रेदमवधेयम्—'क्षीरमिव शुक्ले'ति स्वयं प्रदशितस्य 'क्षीरशुक्ला' शब्दविग्रहस्य, 'क्रोष्ट्री शृगालिकाक्षीरविदारीलाङ्गलीषु च' (मेदि० पृ० १३४ खो० २०) इति मेदिन्युक्तेः 'क्रोष्ट्री क्षीरविदारिका' (अने० संग्र० २।४०६) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेश्च विरोधात् मुकुटोक्तिरेव समीचीना । अत्र च क्षी० स्वा० सम्मतः 'क्रोष्ट्री तु याऽसिता' इति पाठः भा० दी० सम्मतः 'याऽसिता' इति च्छेदश्च समीचीनः प्रतिपाति । एवं सति 'विदारी, ...' ३ 'शुक्लभूकूष्माण्डस्य', 'क्रोष्ट्री, ...' ४ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य' इत्यावातम् । अधिकतन्वयत्र द्रष्टव्यम् ॥

- १ गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।
 २ योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ ३ वृद्धेरप्याह्वयाश्मे ॥ ११२ ॥
 ४ कदली वारणबुसा रम्भा मोचांऽशुमत्फला ।
 काष्ठीला ५ मुद्रपर्णी तु काकमुद्रा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥
 ६ वार्ताकी द्विङ्गुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्विणी ।
 ७ नाकुली 'सुरसा राक्षा सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥
 नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राक्षी सुवहा च सा ।

१ गोपी (+ गोपा), श्यामा, शारिवा (+ सारिवा), अनन्ता (+ चन्दना), उत्पलशारिवा (५ स्त्री) 'शारिवा, ग्वार' के ५ नाम हैं ॥

२ योग्यम् (न), ऋद्धिः, सिद्धिः, लक्ष्मीः (३ स्त्री), 'सिद्धिनामक औषध-विशेष' के ४ नाम हैं ॥

३ वृद्धिः (स्त्री), पूर्वोक्त (योग्यम्, ऋद्धिः, सिद्धिः, लक्ष्मीः) चार शब्द 'वृद्धिनामक औषध-विशेष' के ५ नाम हैं । ('किसीके मतमें 'योग्यम्, ... वृद्धिः' पाँचों शब्द एक ही पर्याय हैं') ॥

४ कदली (+ कदला, स्त्री, कदलः, पु), वारणबुसा (+ वारणबुसा), रम्भा, मोचा, अंशुमत्फला (+ भानुफला), काष्ठीला (६ स्त्री), 'केला' के ६ नाम हैं ॥

५ मुद्रपर्णी, काकमुद्रा, सहा (३ स्त्री), 'मृगपर्णी, मुंगौनी, वनमृग' के ३ नाम हैं ॥

६ वार्ताकी (+ वार्ताकुः, वार्ता, वार्ताकः), द्विङ्गुली, सिंही, भण्टाकी दुष्प्रधर्विणी (+ दुष्प्रधर्विणी । ५ स्त्री), 'घनभण्टा' के ५ नाम हैं ॥

७ नाकुली, सुरसा, राक्षा, सुगन्धा (+ नागसुगन्धा), 'गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजङ्गाक्षी, छत्राक्षी, सुवहा (९ स्त्री) 'राक्षा, रासना' के ९ नाम हैं ॥

१. 'सुरसा नागसुगन्धा' इति पाठान्तरम् ॥

२. वैधास्तु 'नाकुलीगन्धनाकुल्योर्भेदसुररीकुर्वन्ति । तद्यथा—

'नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा भोगगन्धिका । सैव सर्पसुगन्धेति' इति ।

'अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली ।

सर्पाक्षी नकुलेष्टा च छत्राक्षी विषमर्दिनी' ॥ १ ॥ इति चेति ॥

- १ विदारिगन्धांऽशुमती ^१सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥
- २ तुण्डिकेरी समुद्रान्ता ^२कर्पासी बदरेति च ।
- ३ भारद्वाजी तु सा घन्या ४ शृङ्गी तु ^३ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥
- ५ गाङ्गेरुकी नागबला क्षपा ह्रस्वगवेधुका ।
- ६ धामार्गवो घोषकः स्याद् ७ महाजाली स पीतका ॥ ११७ ॥
- ८ ^४ज्योत्स्नी पटोलिका जाली ९ नादेयी भूमिजम्बुका ।
- १० स्यान्ताङ्गलिक्यग्निशिखा-

१ विदारिगन्धा (+ विदारीगन्धा), अंशुमती, सालपर्णी (+ शालपर्णी), स्थिरा, ध्रुवा (५ स्त्री), 'सरिवन' के ५ नाम हैं ॥

२ तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, कर्पासी (+ कर्पासी), बदरा (+ बदरा । ४ स्त्री), 'कपास' के ४ नाम हैं ॥

३ भारद्वाजी (+ भद्रा । स्त्री), 'वनकपास या नर्मी' का १ नाम है ॥

४ शृङ्गी (स्त्री), ऋषभः (+ वृषभः), वृषः (२ पु), काकरासिणी' के ३ नाम हैं ॥

५ गाङ्गेरुकी, नागबला, क्षपा, ह्रस्वगवेधुका (४ स्त्री), 'गँगेरन' के ४ नाम हैं ॥

६ धामार्गवः, घोषकः (२ पु), 'सफेद फूलवाली तरौई' के २ नाम हैं ॥

७ महाजाली (स्त्री), 'पीले फूलवाली तरौई' का १ नाम है ॥

८ ज्योत्स्नी (+ ज्योत्स्नी, जोत्स्नी), पटोलिका, जाली (१ स्त्री), 'चिचिदानामक तरकारी' के ३ नाम हैं ॥

९ नादेयी, भूमिजम्बुका (२ स्त्री), 'भुंई जामुन' के २ नाम हैं ॥

१० लाङ्गलिकी, अग्निशिखा (+ अग्निमुखा, अग्निज्वाला । २ स्त्री), 'करिहारी' के २ नाम हैं ॥

१. 'शालपर्णी' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कर्पासी बदरेति च' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'वृषभो वृषः' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका' इति पाठान्तरम् । अत्र 'नादेयी भूमि जम्बुके'त्युक्त्वाऽपि आन्त्या पुनरुक्तेति स्त्री० स्वा० ॥

—१ काकाङ्गी काकनासिका ॥ ११८ ॥

- २ गोघापदी तु सुवहा ३ मुसली तालमूलिका ।
 ४ अजशृङ्गी विषाणी स्यात् ५ 'गोजिह्वादार्विके समे ॥ ११९ ॥
 ६ ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यप्य ७ थ द्विजा ।
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥
 ८ 'एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।
 वालुकं चा ९ थ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरु ॥ १२१ ॥
 १० 'बालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।

१ काकाङ्गी (+ काकजङ्घा), काकनासिका (२ स्त्री), 'कौवाठोठी' के २ नाम हैं ॥

२ गोघापदी (+ हंसपदी), सुवहा (२ स्त्री), 'लजालू' के २ नाम हैं ॥

३ मुसली, तालमूलिका (२ स्त्री) 'मुसलीकुन्द' के २ नाम हैं ॥

४ अजशृङ्गी, विषाणी (२ स्त्री), 'मेढासीङ्गी' के २ नाम हैं ॥

५ गोजिह्वा, दार्विका (+ दर्विका । २ स्त्री), 'गोभी' के २ नाम हैं ॥

६ ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागवल्ली (३ स्त्री), 'नागवेल, पान' के ३ नाम हैं ॥

७ द्विजा, हरेणूः, रेणुका, कौन्ती, कपिला, भस्मगन्धिनी (+ भस्मगन्धा, भस्मगर्भा । ३ स्त्री), 'रेणुकाबीज' के ३ नाम हैं ॥

८ एलावालुकम् (+ एलवालुकम्), ऐलेयम्, सुगन्धि (= सुगन्धिन्) हरिवालुकम्, वालुकम् (५ न), 'पालुआ' के ५ नाम हैं । (यह सीतलघोनी की तरह होता है और इसमें कूठ-सा गन्ध होता है) ॥

९ पालङ्की (स्त्री), मुकुन्दः, कुन्दः (+ कुन्दुः), कुन्दुरुः (+ कुन्दरः । ३ पु), 'पालक' के ४ नाम हैं ॥

१० बालम् (+ बालम् । + न पु), ह्रीवेरम् (+ ह्रीवेरम्), बर्हिष्ठम्, बर्हिष्ठ्यम्, केशाम्बुनाम (= केशाम्बुनाम् । 'केश और जलके पर्यायवाचक सब शब्द' । ५ न), 'नेत्रबाला' के ५ नाम हैं ॥

१. 'गोजिह्वादार्विके समे' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'एला(वा)लुकमैलेयम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'बालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥
शैलेयं २ तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।
गन्धिनी ३ गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥
महेरणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति च ।
- ४ अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥
- ५ पृथ्वीका चन्द्रबालैला निष्कुटिर्बहुला ६ ५ सा ।
सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा शुटिः ॥ १२५ ॥
- ७ व्याधिः कुष्ठं पारिभाष्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम् ।

१ कालानुसार्यम्, वृद्धम्, अश्मपुष्पम्, शीतशिवम्, शैलेयम् (५ न), 'सिल्लाजीत' के ५ नाम हैं ॥

२ तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, गन्धिनी (५ स्त्री), 'मुरा, ममो-
रफली' के ५ नाम हैं ॥

३ गजभक्ष्या (+ गजभक्षा), सुवहा (+ सुखवा), सुरभी (+ सुरभिः);
रसा (+ सुरभीरसा), महेरणा (+ महेरणा), कुन्दुरुकी, सल्लकी (+ सल्लकी,
सिद्धकी), ह्लादिनी (+ ह्लादा । ८ स्त्री), 'सल्लई' के ८ नाम हैं ॥

४ अग्निज्वाला, सुभिक्षा, धातकी (+ धातुकी), धातुपुष्पिका (+ धातु-
पुष्पिका । ४ स्त्री), 'धव' के ४ नाम हैं ॥

५ पृथ्वीका, चन्द्रबाला (+ चन्द्रवाला), पला, निष्कुटिः (+ निष्कुटी),
बहुला (५ स्त्री), 'बड़ी इलायची' के ५ नाम हैं ॥

६ उपकुञ्चिका, तुत्था, कोरङ्गी, त्रिपुटा, शुटिः (+ शुटी । ५ स्त्री), 'छोटी
इलायची' के ५ नाम हैं ॥

७ व्याधिः (पु), कुष्ठम्, पारिभाष्यम् (+ पारिभाष्यम्), वाप्यम्
(व्याप्यम्, आप्यम्), पाकलम्, उत्पलम्, (५ न), 'कूठ' (औषधि-
विशेष) के ६ नाम हैं ॥

१. 'ह्लादिनीति च' इति पाठान्तरम् ॥ २. धातुकी 'धातुपुष्पिका' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'चन्द्रबालैला' इत्यसमीचीनः पाठः । स्त्री० स्वा० भा० दी० व्याख्यानोक्तस्य चन्द्र-
बालैवेति विग्रहस्यैवोचित्यात् ॥

४ 'पारिभाष्यं व्याप्यं पाकलमुत्पलम्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्य २ थ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥
 झटामलाञ्छटा ताली शिवा तामलकीति च ।
 ३ प्रपौण्डरीकं पौण्डर्यं ४ मथ तुन्नः कुबेरकः ॥ १२७ ॥
 १कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षो ५ ऽथ राक्षसी ।
 चण्डा घनहरी १क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥
 ६ व्याहायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।
 ७ सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ॥ १२९ ॥
 ८ धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्दृष्टविलासिनी ।

१ शङ्खिनी, चोरपुष्पी, केशिनी (३ स्त्री), 'शङ्खाहुलीनामक लतावि-
 शेष' के ३ नाम हैं ॥

२ वितुन्नकः (पु), झटामला (+ झटा, अमला), अञ्छटा (+ अमला-
 ञ्छटा), ताली, शिवा, तामलकी (५ स्त्री), 'भुईं आवरा, छोटा आवरा'
 के ६ नाम हैं ॥

३ प्रपौण्डरीकम्, पौण्डर्यम् (+ पुण्डर्यम् । २ न), 'पुण्डरीय वृक्ष'
 के २ नाम हैं ॥

४ तुन्नः, कुबेरकः, कुणिः (+ तुणिः), कच्छः, कान्तलकः, नन्दिवृक्षः
 (+ नान्दिवृक्षः । ६ पु), 'तून, तूणी' के ६ नाम हैं ॥

५ राक्षसी, चण्डा, घनहरी (३ स्त्री), क्षेमः, दुष्पत्रः (+ दुष्पुत्रः),
 गणहासकः (+ गणः, हासकः । ३ पु), 'चोरानामक गन्धद्रव्य' के ६ नाम हैं ॥

६ व्याहायुधम् (+ व्यालायुधम्), व्याघ्रनखम्, करजम्, चक्रकारकम्
 (४ न), 'व्याघ्रनखनामक गन्धद्रव्य, घघनखा' के ४ नाम हैं ॥

७ सुषिरा (+ शुषिरा), विद्रुमलता, कपोताङ्घ्रिः, नटी, नली (५ स्त्री),
 भा० दी० मतसे 'मालकाङ्गनी' के ५ नाम हैं ॥

८ धमनी, अञ्जनकेशी, हनुः, दृष्टविलासिनी (४ स्त्री), भा० दी० मतसे
 'अञ्जनकेशी' के ४ नाम हैं ॥

१. 'तुणिः कच्छः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'क्षेमदुष्पुत्रगणहासकाः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'व्याहायुधम्' इति पाठान्तरम् ॥ ४. 'शुषिरा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नख २ मथाढकी ॥ १३० ॥
 काक्षी मृत्सना तुवरिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे ।
 ३ कुटन्नटं 'दाशपुरं' वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥
 प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च ।
 ४ ग्रन्थिपर्णं 'शुकं' बर्हं पुष्पं स्थौणेयकुङ्कुरे ॥ १३२ ॥
 ५ मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ।

१ शुक्तिः (खा), शङ्खः, खुरः (२ पु), कोलदलम् , नखम् (+ नखी २ न), भा० दी० मतसे 'लखनामक गन्धद्रव्य' के ५ नाम हैं । (महे० मतसे 'सुविरा.....' ७ नाम 'मालकाङ्गुनी' के और 'हनुः.....' ७ नाम 'नखनामक गन्धद्रव्य' के हैं) ॥

२ आढकी, काक्षी, मृत्सना (+ मृत्सा), तुवरिका (+ तूवरिका । ४ स्त्री), मृत्तालकम् (+ मृत्तालकम्), सुराष्ट्रजम् (२ न), 'रहर, अरहर' (तूवर) के ६ नाम हैं ॥

३ कुटन्नटम् (+ पु न), दाशपुरम् (+ दशपुरम् , दशपूरम्), वानेयम् (+ वन्यम्) परिपेलवम् , प्लवम् , गोपुरम् , गोनर्दम् , कैवर्तीमुस्तकम् (+ कैवर्तिमुस्तकम् , कैवर्तमुस्तकम् । ८ न), 'छोटा नागरमोथा, कैवर्ती-मुस्तक, जलमोथा' के ८ नाम हैं ॥

४ ग्रन्थिपर्णम् , शुकम् , बर्हम् (+ बर्हिः । + शुकबर्हम् स्त्री० स्वा०), पुष्पम् (+ बर्हपुष्पम्), स्थौणेयम् , कुङ्कुरम् (६ न) 'कुकरौन्धा या गठियन' के ६ नाम हैं ॥

५ 'मरुन्माला, पिशुना, स्पृक्का (+ पृक्का), देवी, लता, लघुः, समुद्रा-

१. 'दशपुरम्' इति 'दाशपूरम्' इति च पाठान्तरे ॥

२. 'शुकं बर्हपुष्पम् , शुकबर्हपुष्पम् , शुकं बर्हिपुष्पम्' इति पाठान्तराणि ॥

३. ये तु—'स्पृक्का तु ब्राह्मणी देवी मरुन्माला लता लघुः ।

समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिका मरुत् ॥ १ ॥

मुनिर्माल्यवती माला मोहना कुटिला मता' ।

इति वाचस्पत्युक्त्याऽत्रापि 'मरुत्, माळा' इति पृथक् नामनी'त्याहुस्तच्चिन्त्यम् । तथा सति शब्दोत्पत्तेन मरुच्छब्दस्यासंग्रहापत्तेरित्यवश्यम् ॥

समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि ॥ १३३ ॥

१ तपस्विनी जटामांसी जटिला 'लोमशा' मिसी ।

२ त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

३ कर्चूरको द्राविडकः 'काल्पको' वेधमुख्यकः ।

४ ओषधी जातिमात्रे स्युः ५ रजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥

६ शाकाख्यं 'पत्रपुष्पादि' ७ तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ।

न्ता, वधूः (+ वधूः), कोटिवर्षा, लङ्कोपिका (१० स्त्री), 'असवरग, स्पृक्षा, अस्वरक एक तरहका शाक-विशेष' के १० नाम हैं ॥

१ तपस्विनी, जटामांसी, जटिला, लोमशा, मिसी (+ मिसिः, मिषिः, मिषी, मसिः, मषिः, मषी, मसी, आमिषी । ५ स्त्री), 'जटामांसी' के ५ नाम हैं ॥

२ त्वक्पत्रम् (+ त्वक् = त्वच्, पत्रम्), उत्कटम्, भृङ्गम्, त्वचम्, चोचम्, वराङ्गकम् (६ न), 'दालचीनी के ६ नाम हैं ॥

३ कर्चूरकः (+ कर्चूरकः), द्राविडकः, काल्पकः (काल्पकः), वेध-मुख्यकः (४ पु), 'कर्चूर' के ४ नाम हैं ॥

४ ओषधी (स्त्री), 'जातिमात्र' अर्थात् 'गोहि' (धान्य), यव, चना आदि' के अर्थ में प्रयुक्त होता है ॥

५ औषधम् (न) 'जातिसे भिन्न' अर्थात् 'दवा आदि' के अर्थमें प्रयुक्त होता है ॥

६ शाकम् (न), 'साग' अर्थात् 'जिससे फल, फूल आदि ('जब, शाखा, कन्द...') का बोध हो, उसका १ नाम है । जब १, पत्ता २, अङ्कुर ३, अग्रभाग ४, फल ५, शाखा ६, अधिरुद्ध ७, छाल ८, फूल ९ और कवक १० ये 'दस प्रकारके 'शाक' होते हैं ॥

७ तण्डुलीयः, अल्पमारिषः (२ पु), 'चौराईके शाक' के २ नाम हैं ॥

१. 'लोमशा मिषी, लोमशा मिशी' इति पाठान्तरे ॥

२. 'काल्पको वेधमुख्यकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पत्रपुष्पादि' इति पाठान्तरम् ॥

४. तदुक्तम्—

'मूलपत्रकरीराम्रफलकाण्डाधिरुद्धकम् ।

त्वक्पुष्पं कवकं चैव 'शाकं दशविधं' स्मृतम् ॥ १ ॥ इति ॥

- १ विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥
- २ 'स्यादक्षगन्धा छगलान्धावेगी वृद्धदारकः ।
- जुहो ३ ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्या सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥
- ४ पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।
- ५ हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥ १३८ ॥
- ६ 'तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ।

१ विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, फलिनी, शक्रपुष्पिका (५ स्त्री), 'अग्निशिखा, इन्द्रपुष्पी' के ५ नाम हैं ॥

२ ऋक्षगन्धा (+ वृक्षगन्धा, ऋष्यगन्धा), छगलान्धा (+ छगलाङ्गी, छगलाण्डी, छगलाङ्गो. छगला, अन्त्री,), आवेगी (३ स्त्री), वृद्धदारकः, जुहो (२ पु), 'विधारा' के ५ नाम हैं ॥

३ ब्राह्मी, मत्स्याक्षा, वयस्या, सोमवल्लरी (+ सोमवल्लरिः । ४ स्त्री), 'ब्राह्मी' के ४ नाम हैं ॥

४ पटुपर्णी, हैमवती, स्वर्णक्षीरी (+ स्वर्णवती), हिमावती (४ स्त्री), 'मकोय' के ४ नाम हैं ॥

५ हयपुच्छी, काम्बोजी, माषपर्णी, महासहा (४ स्त्री), 'माषपर्णी वनउड्द' के ४ नाम हैं ॥

६ तुण्डिकेरी (+ तुण्डकेरी, तुण्डिकेशी), रक्तफला, बिम्बिका, पीलुपर्णी (४ स्त्री), 'कुनुरुन, कुन्दरु' के ४ नाम हैं ॥

तत्र १ मूलम्—मूलकविषादेः, २ पत्रम्—वास्तूकनिम्बादेः, करीरम्—वंशाङ्कुरादेः, ४ अग्रम्—वेत्रादेः, ५ फलम्—कूष्माण्डवार्ताक्यादेः ६ काण्डम्—कमलादेर्नालम्, ७ अधिरूढकम्—'तालास्थिमज्जेति, गोढः' 'क्षेत्रोद्भूतं (दध्) तस्य फलमूलादेः सेकान्नबोद्धिनाङ्कुरा अधिरूढम्' इति क्षी० स्वा०; ८ रवक्—मातुलङ्गादेः, ९ पुष्पम्—तन्तिडोकोविदारारेः, कवकम्—छत्राकम् इति । केचित्तु—

'पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा । शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुडं विषाधयोत्तरम् ॥१॥

इत्युक्तेः षड्विधं शाकमामनन्ति । तत्र संस्वेदजं भूमिच्छत्वम्, अन्ये प्रायुक्ता बोध्याः ॥

१. 'स्याद् वृक्षगन्धा, स्यादृष्यगन्धा' इति तत्रैव 'छागलान्धावेगी' इति च पाठान्तराणि ॥

२. 'तुण्डकेरी' इति 'तुण्डिकेशी' इति च पाठान्तरे ॥

- १ 'वर्बरा कवरी तुङ्गी खरपुग्पाजगन्धिका ॥ १३९ ॥
- २ पलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ।
- ३ चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाऽम्बष्ठाम्बल्लोणिका ॥ १४० ॥
- ४ सहस्रवेधी चुक्रोऽम्बल्लवेतसः शतवेध्यपि ।
- ५ नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥
- ६ जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ।
- ७ कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गह्रस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

१ वर्बरा (+ वर्बरा, वर्बरा), कवरी (+ कवरी), तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका (५ स्त्री), 'पवई, बवईनामक शाकविशेष' के ५ नाम हैं ॥

२ पलापर्णी, सुवहा, रास्ना, युक्तरसा (४ स्त्री), पलापर्णी के ४ नाम हैं ॥

३ चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा, अम्बष्ठा, अम्बल्लोणिका (+ अम्बल्लोणिका, अम्बल्लोलिका । ५ स्त्री), 'नोनी, चूक' (शाकविशेष) के ५ नाम हैं ॥

४ सहस्रवेधी (= सहस्रवेधिन्), चुक्रः, अम्बल्लवेतसः (+ अम्बल्लवेतसः), शतवेधी (= शतवेधिन् । ४ पु), 'अमल्लवेत' के ४ नाम हैं । ('चाङ्गेरी, आदि ९ शब्द एक पर्याय हैं, यह भी किसी-किसी का मत है) ॥

५ नमस्कारी, गण्डकारी (+ गण्डकाली), समङ्गा, खदिरा (+ खदिरा । ४ स्त्री), 'लजालू, छुईमुई' के ४ नाम हैं ॥

६ जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा (+ मधुः, स्रवा । ५ स्त्री), 'जीवन्ती' के ५ नाम हैं ॥

७ कूर्चशीर्षः, मधुरकः, शृङ्गः, ह्रस्वाङ्गः, जीवकः (५ पु), 'जीवक' के ५ नाम हैं । ('जीवन्ती आदि १० शब्द एक पर्यायवाचक हैं, यह भी किसी-किसी का मत है') ॥

१. 'वर्बरा कवरी इति पाठान्तरम् ॥ २. 'दन्तशठाम्बष्ठाम्बल्लोणिका' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'चुक्रोऽम्बल्लवेतसः' इति पाठान्तरम् ॥ ४. 'गण्डकाली समङ्गा खदिरित्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

५. 'मधुःस्रवा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ किराततिको भूनिम्बोऽनार्यतिको २ ऽथ सप्तला ।
 'विमला सातला भूरिफेना चर्मकषेत्यपि ॥ १४३ ॥
- ३ वायसोली स्वादुरसा वयस्था ४ ऽथ मकूलकः ।
 निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्षेण्युदुम्बरपर्यपि ॥ १४४ ॥
- ५ अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।
- ६ मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥
- ७ अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।

१ किराततिकः (+ चिरात्तिकः, चिरतिकः, चिरात्तिकः, किरातः, कैरातः),
 भूनिम्बः, अनार्यतिकः (३ पु), 'चिरायता' के ३ नाम हैं ॥

२ सप्तला, विमला, सातला (+ शातला), भूरिफेना, चर्मकषा (५ स्त्री),
 'सेहुड़, थूहर' के ५ नाम हैं ॥

३ वायसोली, स्वादुरसा, वयस्था (३ स्त्री), 'काकोली' के ३ नाम हैं ॥

४ मकूलकः (+ मुकूलकः), निकुम्भः (२ पु), दन्तिका (+ दन्तिजा),
 प्रत्यक्षेणी, ऊदुम्बरपर्णी (+ उदुम्बरपर्णी, ऊदुम्बरपर्णी । ३ स्त्री), 'दन्तिनामक
 औषध' के ५ नाम हैं ॥

५ अजमोदा, तूग्रगन्धा, ब्रह्मदर्भा, यवानिका (+ यमानिका । ४ स्त्री),
 'अजमोदा अजवाइन' के ४ नाम हैं । ('यद्यपि 'यवानिका' को पहले कह
 चुके हैं, तथापि शाब्देदमे यहाँ पुनः कहते हैं') ॥

६ पुष्करम्, काश्मीरम्, पद्मपत्रम् (+ पद्मवर्णम् । ३ न), 'पुष्करमूल'
 के ३ नाम हैं ॥

७ अव्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्मचारिणी (५ स्त्री), 'पद्मचारिणी,
 स्थलकमलिनी' के ५ नाम हैं ॥

१. 'विमला शातला' इति पाठान्तरम् ॥ २. मुकूलकः इति पाठान्तरम् ॥

३. 'यमानिका' इति पाठान्तरम्, * अ 'यवानिका' पुनरुक्ताऽपि, शाकभेदाद्युनरुक्ता,
 यवानीति मत्वा ग्रन्थकृद् भ्रान्तो वा इति स्त्री० स्वा० ॥

४. 'पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि' अत्र 'पद्मवर्णे'त्यत्र 'पद्मपर्णे'ति लिपिभ्रान्त्या ग्रन्थकारः
 'पद्मपत्रे'त्याह इति स्त्री० स्वा० ॥

- १ 'कासिपत्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥
 २ प्रपुष्पाढः स्तवेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः ।
 पष्पाट उरणाख्यश्च ३ पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥
 ४ लतार्कः दुद्रुमौ तत्र हरिते ५ ऽथ महौषधम् ।
 लशुने गृजनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥ १४८ ॥
 ६ पुनर्नवा तु शोथघ्नी ७ वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।

१ कासिपत्यः (+ कासिपत्यः), कर्कशः, चन्द्रः, रक्ताङ्गः (४ पु), रोचनी (+ रोचनी । खी), 'कवीला' के ५ नाम हैं ॥

२ प्रपुष्पाढः (+ प्रपुष्पनालः, प्रपुनालः, प्रपुनाढः, प्रपुन्नढः), पङ्गजः (+ पलागजः), दद्रुघ्नः (+ दद्रुघ्नः, दद्रुहरः), चक्रमर्दकः, पष्पाटः, उरणाख्यः ('उरण' अर्थात् मेषकं वाचकं सप्त नाम । + उरणाख्यः । ६ पु), 'सकवट' के ६ नाम हैं ॥

३ पलाण्डुः, सुकन्दकः (२ पु), 'प्याज' के २ नाम हैं ॥

४ लतार्कः, दुद्रुमः (२ पु), 'हरे प्याज' के १ नाम हैं । ('धन्वन्तरि ने इन दोनों को पलाण्डु (प्याज) से अभिज्ञा माना है') ॥

५ महौषधम् ; लशुनम् (+ लशुनम् । + पु । २ न), गृजनः, हरिष्टः, महाकन्दः, रसोनकः (४ पु), 'लहसुन' के ६ नाम हैं । ('सुश्रुतकारने इन्हें भी पलाण्डु (प्याज) की जाति माना है') ॥

६ पुनर्नवा, शोथघ्नी (२ खी) 'गदहपुर्नो' के २ नाम हैं ॥

७ वितुन्नम्, सुनिषण्णकम् (२ न), 'घिस खपरिया' के २ नाम हैं ॥

१. कासिपत्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि' इति पाठान्तरम्

२. 'उरणाख्य' इति पाठान्तरम् ॥

३. तथा चोक्तं धन्वन्तरिणा—

'पलाण्डुर्भ(यं)वनेष्टश्च मुकुन्दो मुखदूषकः ।

हरिणोऽन्यपलाण्डुस्तु लतार्को दुद्रुमश्च सः ॥ १ ॥ इति श्लो० स्वा० ॥

४. तदाह सुश्रुते—

'लशुनो दीर्घपत्रश्च पिच्छगन्धो महौषधम् । फरणश्च पलाण्डुश्च लवतर्कोऽपराजितः ॥ १ ॥

गृजनं वनेष्टश्च पलाण्डोर्वश जातयः । इति श्लो० स्वा० ॥

१ स्याद्वातकः ^१शीतलोऽपराजिता शणपण्यैपि ॥ १४९ ॥

२ पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।

३ वार्षिकं त्रायमाणा स्यान्नायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

४ विष्वक्सेनप्रिया ^३गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि ।

५ मार्कवो भृङ्गराजः स्यात् ६ काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥

७ शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ।

अवाक्पुष्पी कारवी च ८ ^३सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥

तस्यां कटम्भरा राजबला भद्रबलेत्यपि ।

१ वातकः, शीतलः (+ शीतलवातकः, । धन्व० २ पु), अपराजिता, शणपर्णी (+ सनपर्णी, असनपर्णी, आसनपर्णी । २ स्त्री), 'पटुआ, पटसन' के ४ नाम हैं ॥

२ पारावताङ्घ्रिः (+ पारावताङ्घ्रो), कटभी, पण्या, ज्योतिष्मती (+ ज्योतिष्का), लता, (५ स्त्री), 'मालकांगनी' के ५ नाम हैं ॥

३ वार्षिकम् (न) त्रायमाणा, त्रायन्ती, बलभद्रिका (३ स्त्री), 'त्राय-माणा' के ४ नाम हैं ॥

४ विष्वक्सेनप्रिया, गृष्टिः (+ गृष्टिः) वाराही, बदरा (४ स्त्री), 'बाराही कन्द' के ४ नाम हैं ॥

५ मार्कवः, भृङ्गराजः (+ भृङ्गराजः = भृङ्गरजस् ; भृङ्गरजः = भृङ्गरज । २ पु), 'भेंगराज' के २ नाम हैं ॥

६ काकमाची (+ काचमाची) वायसी (२ स्त्री), 'मकोय, काकप्रिया' के २ नाम हैं ॥

७ शतपुष्पा, सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसिः (+ मिसी), अवाक्पुष्पी, कारवी (७ स्त्री), 'सौफ' के ७ नाम हैं । ('अन्तवाले २ नाम 'ऊँघावली' के हैं, यह भी किसी किसी का मत है') ॥

८ सरणा (+ सरणी), प्रसारिणी, कटम्भरा (+ कटम्भरा), राजबला, भद्रबला, (५ स्त्री) 'आकाशबेल' (बंवर) के ५ नाम हैं ॥

१. शीतलोऽपराजिताशनपण्यैपि' इति पाठान्तरम् ॥

'गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'सरणी' इति तु युक्तः पाठः' इति क्षी० स्वा० ॥

- १ जनी जतूका रजनी जतुकृच्चकवतिनी ॥ १५३ ॥
 संस्पर्शा २ ऽथ शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ।
 कर्चूरोऽपि पलाशो ३ ऽथ कारवेल्लः कठिल्लकः ॥ १५४ ॥
 सुषवी चा ४ थ कुलकं पटोलस्तित्तकः पटुः ।
 ५ कूष्माण्डकस्तु कर्कारु ६ उर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ॥ १५५ ॥
 ७ इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात् ८ तुम्ब्यालावूरुभे समे ।

१ जनी (+ जनिः), जतूका (+ जतुका), रजनी (जननी),
 जतुकृत्, चकवतिनी, संस्पर्शा (६ स्त्री) 'चकवत' के ६ नाम हैं ॥

२ शटी, गन्धमूली (+ गन्धमूला), षड्ग्रन्थिका (३ स्त्री), कर्चूरः
 (+ कर्चूरः, कर्चूरः), पलाशः (२ पु), 'आमादहदी' के ५ नाम हैं ॥

३ कारवेल्लः, कठिल्लक (+ काटिल्लकः । २ पु), सुषवी (सुसवी, सुशवी ।
 स्त्री), 'करैला' के ३ नाम हैं ॥

४ कुलकम् (न), पटोलः, तित्तकः, पटुः (३ पु), 'परवल' के
 ४ नाम हैं ॥

५ कूष्माण्डकः (+ कुष्माण्डकः, कूष्माण्डः, कुष्माण्डः), कर्कारुः (२ पु)
 'कवीमा, तरकारीघाले कोहड़ा' के २ नाम हैं ॥

६ उर्वारुः (+ ईवारुः, ईवारुः, ईवालुः, पर्वारुः), कर्कटी (+ कर्कटिः ।
 २ स्त्री), 'ककड़ी, कांकर' के २ नाम हैं ॥

७ इक्ष्वाकुः, कटुतुम्बी (२ स्त्री) 'तितलीकी, तीता कवटू' के
 ३ नाम हैं ॥

८ तुम्बी (+ तुम्बिः, तुम्बा, तुम्बः), थलावूः, (+ थालावूः, थालावुः,
 थलावुः, लावुः, लावूः, लावुका । २ स्त्री), 'कटू, लौकी' के २ नाम हैं ॥

१. 'जननी' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कठिल्लकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कर्कारुर्वारुः' इति 'कर्कारुर्वारुः' इति च पाठान्तरम् । 'पर्वारुः' कटुचिर्भेदी, 'उर्वारुः'
 वकमिव बन्धनाद्—' इति श्रुतेः 'उर्वारुकं स्वादुचिर्भेदीमाहुः' इति श्लो० स्था० ॥

४. तन्नेदानाह ब्रह्मस्यतिः—

'थलावूः स्त्री पिण्डफला तुम्बिस्तुम्बी महाफला ।

तुम्बा तु वतुलाऽलावूनिम्बे तुम्बी तु कावुका' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा २ विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥
 ३ अशोन्नः 'सूरणः कन्दो ४ गण्डीरस्तु समष्टिला ।
 ५ 'कलम्बुपोदिकाऽस्त्री तु मूलकं हिलमोचिका ॥ १५७ ॥
 'वास्तुकं शाकभेदाः स्यु ६ दूर्वा तु शतपर्विका ।
 सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहाऽनन्ता ७ ऽथ सा सिता ॥ १५८ ॥
 गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली 'शकुलाक्षका ।

१ चित्रा, गवाक्षी, गोडुम्बा (३ स्त्री), 'जेठुई काँकर' के ३ नाम हैं ॥
 २ विशाला, इन्द्रवारुणी (२ स्त्री), 'इनारुन' के २ नाम हैं ॥
 ३ अशोन्नः, सूरणः (+ शूरणः), कन्दः (३ पु), 'ओल, सूरन' के ३ नाम हैं ॥

४ गण्डीरः (पु), समष्टिला (स्त्री), 'गांडरनामक शाक-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ कलम्बी, उपोदिका (+ उपोदका, अपोदका), मूलकम्, (न पु), हिलमोचिका, वास्तुकम् (+ वास्तूकम् । न । शेष स्त्री), 'करमी या करेमुआँ, पोई, मूली या मुरई, हिलसाल और बथुआके साग' का क्रमशः १-१ नाम है । ('यहाँतक शाक-भेदका वर्णन है') ॥

६ दूर्वा, शतपर्विका, सहस्रवीर्या, भार्गवी, रुहा, अनन्ता (६ स्त्री), 'दूब' के ६ नाम हैं ॥

७ गोलोमी, शतवीर्या, गण्डाली, शकुलाक्षका (+ पु । ४ स्त्री), 'सफेद दूब' के ४ नाम हैं, यह भा० दी० का मत है । (प्रथम दो नाम उक्ताथक और अन्तवाले दो नाम 'दूबके भेद-विशेष' के हैं, यह स्त्री० स्वा० का मत है) ॥

१. 'सूरणः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कलम्बुपोदिका' इति भा० दी० पाठः, 'कलम्बुपोदका' इति स्त्री० स्वा० पाठः, मूलस्थस्तु महे० सम्मत इत्यवधेयम् ॥

३. 'वास्तूकम्' इति पाठान्तरम् । अत्र निर्णयसागरीय व्या० सू० पुस्तके 'वास्तुकम्' इति मूलपाठश्चिन्त्यस्तत्र 'उल्लादयश्च' (उ० सू० ४।४१ इति 'वास्तूक' शब्दस्य सिद्ध्युक्तेः, पुनर्ह्रस्वमध्यस्य 'वास्तुक' शब्दस्य प्रकारान्तरेण सिद्ध्युक्तेश्च स्वोक्तिविरोधात् ॥

४. 'शकुलाक्षकः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥
 २ स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा ३ चूडाला चक्रलोच्छटा ।
 ४ वंशो त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥
 शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।
 ५ वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥
 ६ ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी ७ गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।
 ८ नडस्तु धमनः पोटगलो ९ ऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥
 इक्षुगन्धा पोटगलः—

१ कुरुविन्दः, मेघनामा (= मेघनामन् । + मेघके वाचक सप्त नाम । २ पु), मुस्ता (स्त्री), मुस्तकम् (न पु), 'मोथा' के ४ नाम हैं ॥

२ भद्रमुस्तकः (पु । + भद्रम्, मुस्तकम् ; २ न), गुन्द्रा (स्त्री), 'नागरमोथा' के २ नाम हैं । ('धन्वन्तरिने 'गुन्द्रा और भद्रमुस्तक' में अभेद' माना है') ॥

३ चूडाला, चक्रला, उच्छटा (३ स्त्री), 'चूडाला, एक प्रकारके मोथा घास' के ३ नाम हैं ॥

४ वंशः, त्वक्सारः, कर्मारः, त्वचिसारः, तृणध्वजः, शतपर्वा (= शतपर्वन्), यवफला, वेणुः, मस्करः, तेजनः (१० पु), 'बाँस' के १० नाम हैं ॥

५ कीचकः (पु), 'छिद्रमें हवाके प्रवेश करनेपर खजनेवाले बाँस' का १ नाम है ॥

६ ग्रन्थिः (पु), पर्व (= पर्वन्), परुः (= परस् । + परु = परुः । २ स्त्री न), 'बाँस आदिके गाँठ या पोर' के ३ नाम हैं ॥

७ गुन्द्रः, तेजनकः, शरः (+ सरः । ३ पु), 'सरकण्डा, सरई' के ३ नाम हैं ॥

८ नडः (+ नलः), धमनः, पोटगलः (३ पु), 'नरसल, नरकट, नरई' के ३ नाम हैं ॥

९ काशः (+ कासः । पु न), इक्षुगन्धा (स्त्री), पोटगलः (पु), 'काशनामक तृण-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

१. धन्वन्तरिभेदमाह—'मुस्तमम्बुधरो मेघो धनो राजकशेरुकः ।

भद्रमुस्तो वराहोऽथो गार्जयः कुरुविन्दकः' ॥ १ ॥

इति क्षी० स्वा० ॥

—१ पुंस्त्रि भूस्त्रि तु बलवजाः ।

२ रसाल इक्षु ३ स्तब्धेन्द्राः पुण्ड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥

४ स्याद्वीरणं वीरतरं ५ मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।

अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥

लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।

६ नडादयस्तृणं गर्मुच्छयामाकप्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

१ बलवजाः (पु नित्य व० व० । + ए० व०) 'बगई' का १ नाम है ।

('काशः, ...' ४ नाम एकार्थक हैं, यह भी किसीका मत है) ॥

२ रसालः, इक्षुः (२ पु), 'ईख, गन्ना, ऊख' के २ नाम हैं ॥

३ पुण्ड्रः (+ पौण्ड्रः), कान्तारकः (२ पु), आदि ('आदि शब्दसे 'रसालः, कर्कटकः (२ पु) ...का संग्रह है) ये 'ऊखके भेद-विशेष' हैं ॥

४ वीरणम्, वीरतरम् (२ न), 'गाँडर घास' के २ नाम हैं । ('इसके जड़को 'खश' कहते हैं') ॥

५ उशीरम् (न पु), अभयम्, नलदम्, सेव्यम्, अमृणालम् (+ मृणालम्), जलाशयम्, लामज्जकम्, लघुलयम् (+ लघु, लयम्) अवदाहम्, इष्टकापथम् (+ अवदाहेष्टम्, । ९ न) 'खश' के १० नाम हैं ॥

६ 'नड' आदि और 'गर्मुत्', श्यामाकः (+ श्यामकः । २ पु), अर्थात् क्रमशः 'एक तृण-विशेष और साँवा' और 'प्रमुख' शब्दसे नीवारः, कोद्रवः (२ पु), अर्थात् क्रमशः 'तेनी या तीनी और कोदो' ये 'तृणधान्य' हैं ॥

१. 'लघु लयमवदाहेष्टकापथे' इति । इष्टकापथेत्यत्र 'ग्रन्थकृतुसेव्यामृणालयोनलदोशी-रैकार्थत्वाद् भ्रान्तः' इति क्षी. स्वा. ॥ २. 'एको बलवज' इति पातञ्जलमहाभाष्योत्तेरित्यवधेयम् ॥

३. इक्षुभेदा यथा— इक्षुः कर्कटको वंशः कान्तारो वेणुनिःसृतः ।

इक्षुः अन्यः पौण्ड्रकश्च रसालः सुकुमारकः ॥ १ ॥

अन्यः करकशालिः स्यादिक्षुयोनीक्षुवालिका ।

तथान्य इक्षुगन्धा स्यादिक्षुलः कोकिलाक्षकः ॥ २ ॥ इति ॥

निवण्टौ त्वन्य एवेक्षुभेदा उक्तास्ते यथा—

पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः । कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षुः सूचिपत्नकः ॥ १ ॥
नैपालो दीर्घपत्नश्च नीलपोरोऽथ कोशकः । इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥ २ ॥ इति ॥

- १ अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्र २ मथ कत्तृणम् ।
 पौरसौगन्धिकभ्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥ १६६ ॥
 ३ छत्राऽतिच्छत्रपालघ्नौ ४ मालातृणकभूस्तृणे ।
 ५ शष्पं बालतृणं ६ घासो यवसं ७ तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥
 ८ तृणानां संहतिस्तृण्या ९ नड्या तु नडसंहतिः ।
 १० तृणराजाद्वयस्तालो ११ नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥ १६८ ॥
 १२ घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः सपुरो १३ ऽस्य तु ।
 फलमुद्वेगम्—

१ कुशम् (पु न), कुयः, दर्भः (२ पु), पवित्रम् (न), 'कुशा' के ४ नाम हैं ॥

२ कत्तृणम्, पौरम्, सौगन्धिकम्, ध्यामम्, देवजग्धकम्, रौहिषम् (६ न), 'रौहिषनामक सुगन्धित घास' के ६ नाम हैं ॥

३ छत्रा (स्त्री), अतिच्छत्रः, पालघ्नः (२ पु), 'पानीमें होनेवाले तृण-विशेष' के ६ नाम हैं ।

४ मालातृणकम्, भूस्तृणकम् (२ न), 'वचके समान रूप तथा पानीमें होनेवाले तृण-विशेष' के २ नाम हैं । ('यह भा० वी० का मत है । महे० और क्षी० स्वा० के मतसे 'छत्रा, 'भूस्तृण' ५ शब्द एकार्थक हैं') ॥

५ शष्पम् (+ शस्यम्), बालतृणम् (२ न), नई और कोमल घास' के २ नाम हैं ॥

६ घासः (पु), यवसम् (न), 'गवत' अर्थात् 'बैल, घोड़ा, आदि पशुओंके खाने योग्य भूसा-घास' के २ नाम हैं ॥

७ तृणम्, अर्जुनम् (२ न), 'तृणमात्र' के २ नाम हैं ॥

८ तृण्या (स्त्री), 'घासकी ढेरी' का १ नाम है ॥

९ नड्या (स्त्री), 'नड-समूह' का १ नाम है ॥

१० तृणराजः, तालः (+ तलः । २ पु), 'ताड़' के २ नाम हैं ॥

११ नालिकरः (+ नारिकरः, नारिकेलः, नाडिकरः, नारीकेलः, ४ पु०; नारिकेलिः, नारीकेली; २ स्त्री), लाङ्गली (= लाङ्गलिन् । + लाङ्गली = लाङ्गली, स्त्री । २ पु), 'नारियल' के २ नाम हैं ॥

१२ घोण्टा (स्त्री), पूगः, क्रमुकः, गुवाकः (+ गुवाकः), सपुरः (४ पु), 'सुपारी, कसैलीके पेड़' के ५ नाम हैं ॥

१३ उद्वेगम् (न), 'सुपारीके फल' का १ नाम है ।

—१ एते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥

खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ।

इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ सिंहादिवर्गः ।

२ सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।

३ 'कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः' (८)

पुण्डरीकः पञ्चनखचित्रकायमृगद्विषः' (९)

४ शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे ५ तरश्वस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

६ वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री 'किरिः किटिः ।

१ हिन्तालः (पु) के सहित पूर्वोक्त तीन शब्द (नारिकेल, ताल, घोण्टा) और खर्जूरः (पु), केतकी, ताली, खर्जूरी (३ स्त्री) को तृणद्रुमः (पु) अर्थात् 'तृणद्रुम' कहते हैं ॥

इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ सिंहादिवर्गः ।

२ सिंहः, मृगेन्द्रः, पञ्चास्यः, हर्यक्षः, केसरी (= केशरिन् । + केशरी = केशरिन्), हरिः (१ पु), 'सिंह' के ६ नाम हैं ॥

३ [कण्ठीरवः मृगरिपुः, मृगदृष्टिः, मृगाशनः, पुण्डरीकः, पञ्चनखः, चित्रकायः, मृगद्विषः । ८ पु), 'सिंह' के ८ नाम हैं] ॥

४ शार्दूलः, द्वीपी (= द्वीपिन्), व्याघ्रः (३ पु), 'बाघ' के ३ नाम हैं ॥

५ तरश्वः (+ तरश्चः) मृगादनः (२ पु) 'चिता या तैदुआ बाघ' के २ नाम हैं ('मुकु० मतसे 'वृक' अर्थात् 'हुँडार भेंड़िया' = ये २ नाम हैं) ॥

६ वराहः, सूकरः (+ शूकरः), घृष्टिः (+ गृष्टिः), कोलः, पोत्री (= पोत्रिन्), किरिः, (+ किरः) किटिः, दंष्ट्री (= दंष्ट्रिन्), घोणी (घोणिन्)

१. 'किरः, किटिः' इति पाठान्तरम् ॥

- दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥
 १ कपिप्लवङ्गप्लवगशास्त्रामृगवलीमुखः ।
 मर्कटो वानरः कीशो वनौका २ अय भल्लुके ॥ ३ ॥
 ऋक्षाच्छभल्लभल्लूका ३ गण्डके खड्गखड्गिनौ ।
 ४ लुलायो महिषो वाहद्विपत्कासरसैरिभाः ॥ ४ ॥
 ५ स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः ।
 शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवज्जमुकाः ॥ ५ ॥
 ६ ओतुविडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।
 ७ त्रयो गौधारगौधेरगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥

स्तब्धरोमा (=स्तब्धरोमन्), क्रोडः, भूदारः (१२ पु), 'सूधर' के १२ नाम हैं ॥

१ कपिः, प्लवङ्गः (+ प्लवङ्गमः), प्लवगः, शास्त्रामृगः, वलीमुखः (बली-
 मुखः, बलिमुखः) मर्कटः, वानरः, कीशः, वनौकाः (= वनौकस् । ९ पु),
 'चन्द्र' के ९ नाम हैं ॥

२ भल्लुकः, ऋक्षः, अच्छभञ्जः (+ अच्छः, भञ्जः), भञ्जुकः (+ भावल्लुकः,
 भालुकः, भालुकः । ४ पु), 'भालू' के ४ नाम हैं ।

३ गण्डकः, खड्गः, खड्गी (= खड्गिन् । ३ पु) 'गौड़ा' के ३ नाम हैं ॥

४ लुलायः (+ लुलापः), महिषः, वाहद्विपन् (= वाहद्विपत् । + वाहद्विट्=
 वाहद्विष्), कासरः, सैरिभः (५ पु), 'भैसा' के १२ नाम हैं ॥

५ शिवा (नि० स्त्री), भूरिमायः, गोमायुः, मृगधूर्तकः, शृगालः
 (+ सुगालः), वञ्चकः (+ वञ्चुकः), क्रोष्टा (= क्रोष्टु), फेरुः, फेरवः
 (+ फेरण्डः), जम्बुकः (+ जम्बूकः । ९ पु) 'स्यार, शृगाल' के
 १० नाम हैं ॥

६ ओतुः, विडालः (+ विडालः, विडालः), मार्जारः, वृषदंशकः, आखुभुक्
 (= आखुभुज् । ५ पु), 'विलाव' के ५ नाम हैं ॥

७ गौधारः, गौधेरः, गौधेयः (३ पु), 'गोहरा, चन्दनगोह' अर्थात्
 'काले सौष से गोह में पैदा होनेवाला जीवविशेष' 'विसङ्गपरा' के ३ नाम हैं ॥

१. 'ऋक्षाच्छभल्लभल्लूका' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'लुलापो महिषः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सुगालो वञ्चकः क्रोष्टु' इति पाठान्तरम् ॥

- १ श्वावित्तु शल्य २ स्तल्लोस्मि शलली शललं शलम् ।
 ३ वातप्रमीर्वातमृगः ४ कोकस्त्वौहामृगो वृकः ॥ ७ ॥
 ५ मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।
 ६ ऐणेयमेण्याश्चर्माद्य ७ मेणस्यैणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥
 ८ कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावापि ।
 समूरुश्चेति ९ हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

- १ श्वावित् (= श्वाविध्), शल्यः (२ पु), 'साही' के २ नाम हैं ॥
 २ शलली (स्त्री), शललम्, शलम् (२ न), 'साही के काँटे' के ३ नाम हैं ॥
 ३ वातप्रमीः (+ स्त्री), वातमृगः (२ पु), 'बहुत तेज दौड़नेवाले मृग-विशेष' के २ नाम हैं ॥
 ४ कोकः, ईहामृगः, वृकः (३ पु), 'भेंड़िया, हुंडार' के ३ नाम हैं ॥
 ५ मृगः, कुरङ्गः, वातायुः (वानायुः; ची० स्वा०; वनायुः), हरिणः, अजिनयोनिः (५ पु), 'मृग, हरिण' के ५ नाम हैं ॥
 ६ ऐणेयम् (त्रि), 'मृगी के चमड़े, सींग आदि' का १ नाम है ॥
 ७ ऐणम् (त्रि), 'मृगके चमड़े सींग आदि' का १ नाम है ॥
 ८ कदली, कन्दली (२ स्त्री । ची० स्वा० मतसे कदली = कदलिन्, कन्दली = कन्दलिन्; २ पु), चीनः, चमूरुः, प्रियकः, समूरुः (४ पु), 'मृगविशेष' के ६ नाम हैं ॥
 ९ 'कदली, आदि ६ शब्द और आगे कहे जानेवाले 'कृष्णसार' आदिको अजिनयोनिः (पु) 'अजिनयोनि' कहते हैं । (इनके चमड़े का उपयोग होता है) ॥

१. 'कोक ईहामृगो वृकः' इति पाठान्तरम् ॥
 २. कदली हरिणान्तरे । रम्मार्या वैजयन्त्या च—' (अने० सं० ३।६७० इति, 'शिरोऽस्थनि कन्दलन्तु नवाङ्कुरे करध्वनौ ।
 उपरागे मृगभेदे कलाये कन्दलीद्रुमे' ॥ १ ॥ (अने० सं० ३।६६८)
 इति च त्रिस्वरलान्तवर्गे हेमचन्द्रोक्तेः,
 कन्दलं त्रिषु कपालेऽप्युपरागे नवाङ्कुरे । कलध्वनौ कन्दली तु मृगगुरुप्रभेदयोः ॥ १ ॥
 कदला कदलौ पृश्न्यां कदली कदलौ पुनः । रम्मावृक्षेऽथ कदली पताकामृगभेदयोः ॥ २ ॥
 (मे० श्लो० ६९—७१) इति लान्तवर्गे मेदिन्युक्तेष्व विरहमेतत् ॥

- १ 'कृष्णसाररुक्म्यङ्कुरङ्कुशम्बररौहिषाः ।
गोकर्णपृषतैर्णश्यरौहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥
- २ गन्धर्वः शरभो रामः सुमरो गवयः शशः ।
- ३ इत्याद्यो मृगेन्द्राद्याः गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥
- ४ 'अधोगन्ता तु खनको वृकः पुंश्वज उन्दुरः' (१०)
- ५ उन्दुरुर्मूषकोऽप्याखु ६ गिरिका बालमूषिका ।
- ७ 'लुलुन्दरी गन्धमुखी दीर्घतुण्डो दिवान्धिका' (११)

१ कृष्णसारः (+ कृष्णशारः), रुरुः, न्यङ्कुरः, रङ्कुरः, शम्बरः (+ संवरः, शंवरः), रौहिषः (+ रोहिषः), गोकर्णः, पृषतः, णः, ऋश्यः (+ ऋष्यः), रोहितः (+ लोहितः), चमरः (१२ पु), ये १२ 'मृगके भेद' हैं ॥

२ गन्धर्वः (+ गन्धर्वः), शरभः, रामः, सुमरः, गवयः, शशः (६ पु), क्रमशः 'गन्धयुक्त मृगविशेष, लड़ीसरा या एक प्रकारका बन्दर-विशेष, सुन्दरजातीय मृग-विशेष, बहुत भागनेवाला मृगविशेष, नीलगाय या खरहा' का १-१ नाम है ॥

३ ये छ (पूर्वोक्त 'मृगेन्द्र' आदि) और वच्यमाण (आगे कहे जानेवाले) 'गो, महिष' आदि पशुजातिः (स्त्री), 'पशुजाति' हैं अर्थात् इनकी पशुजाति में गणना होती है ॥

४ [अधोगन्ता (= अधोगन्तु), खनकः, वृकः, पुंश्वजः, उन्दुरः (५ पु), 'चूहा, मूस' के ५ नाम हैं] ॥

५ उन्दुरः, मूषकः (+ मुषकः), आखुः (३ पु), 'चूहा मूस' के ३ नाम हैं ॥

६ गिरिका, बालमूषिका (१ स्त्री) 'मुसरी छोटी चूहिया' के २ नाम हैं ॥

७ [लुलुन्दरी, गन्धमुखी, दीर्घतुण्डो, दिवान्धिका (३ स्त्री), 'लुलुन्दर' के ३ नाम हैं] ॥

१. कृष्णशाररुक्म्यङ्कुरङ्कुसंवररौहिषाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. लुलुन्दरी' 'दिवान्धिका' इत्यंशः क्षी० स्व० व्याख्यायां समुपलभ्यते ॥

१ सरटः कृकलासः स्यात् २ मुसली गृहगोधिका ॥ १२ ॥

३ लृता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः ।

४ नीलङ्गुस्तु क्रिमिः ५ कर्णजलौकाः शतपदुमे ॥ १३ ॥

६ वृश्चिकः शूककीटः स्याद्वल्लिङ्गुणौ तु वृश्चिके ।

८ पारावतः कलरवः कपोतौ ९५थ शशादनः ॥ १४ ॥

पत्नी श्येनः—

१ सरटः, कृकलासः (+ कृकलाशः, कृकलासः । २ पु) 'गिरगिट' के २ नाम हैं ॥

२ मुसली (+ मुसली), गृहगोधिका (+ गृहगोलिका । २ स्त्री), 'बिड्ढुतिआ, छिपकिली' के २ नाम हैं ॥

३ लृता (स्त्री), तन्तुवायः (+ तन्त्रवायः), ऊर्णनाभः, मर्कटकः (३ पु), 'मकड़ी' के ४ नाम हैं ॥

४ नीलङ्गुः (+ नीलङ्गुः), क्रिमिः (+ क्रिमिः । १ पु), 'छोटे २ कीड़ों' के २ नाम हैं ॥

५ कर्णजलौकाः (= कर्णजलौकस् । + कर्णजलौका = कर्णजलौका), शतपदी (२ स्त्री), 'गोजर, कनखजुरा' के २ नाम हैं । ('यह वृश्चिकका भेद है') ॥

६ वृश्चिकः, शूककीटः (२ पु), 'ऊनी वस्त्रको काटनेवाले कीड़े' के २ नाम हैं ॥

७ अलिः (+ अलिः, अली), द्रुणः (+ द्रोणः), वृश्चिकः (३ पु), 'बिच्छू' के ३ नाम हैं ॥

८ पारावतः (+ पारापतः), कलरवः, कपोतः (३ पु), 'कबूतर' के ३ नाम हैं । ('बी० स्वा० मतसे 'प्रथम नाम' 'घरेलू कबूतर' के और अन्य २ नाम 'जङ्गली कबूतर' के हैं') ॥

९ शशादनः, पत्नी (= पत्निन्), श्येनः (३ पु), 'बाज पक्षी' के ३ नाम हैं ।

१. 'गृहगोलिका इति सभ्यः पाठ' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'तन्त्रवायोर्णनाभमर्कटकाः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'नीलङ्गुस्तु क्रिमिः कर्णजलौका शतपदुमे' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'पारापतः' इति पाठान्तरम् ॥

१२ अ०

—१ उलूकस्त वायसारातिपेचकौ ।

- २ 'दिवान्धः कौशिको घृको दिवाभीतो निशाटनः' (१२)
 ३ व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः ४ खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥
 ५ लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यादद्वय चापः किक्कीदिविः ।
 ७ कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा ८ अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥
 दार्वाघाटोऽथ 'सारङ्गः स्तोककश्चातकः समाः ।
 १० कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥
 ११ चटकः कलविङ्कः स्यात् १२ तस्य खा चटका १३ तयोः ।
 पुमपत्ये चाटकैरः—

- १ उलूकः, वायसारातिः, पेचकः (३ पु), 'उलू' के ३ नाम हैं ॥
 २ [दिवान्धः, कौशिकः, घृकः, दिवाभीतः, निशाटनः (५ पु), 'उलू' के ५ नाम हैं] ॥
 ३ व्याघ्राटः, भरद्वाजः (२ पु), 'भर्दूल', भारद्वाज पक्षी' के २ नाम हैं ॥
 ४ खञ्जरीटः, खञ्जनः (२ पु), 'खंजरिच पक्षी' के २ नाम हैं ॥
 ५ लोहपृष्ठः, कङ्कः (२ पु), 'सफेद चील' अर्थात् 'कंठहवा पक्षी, जिसके पंख को बाण में लगाते हैं, उसके' २ नाम हैं ॥
 ६ चापः (+ चासः), किक्कीदिविः (+ किक्कीदीविः, किक्कीदिविः, किक्कीदिविः, किक्कीदिवीः, किक्कीदिवः, किक्किः, दिवः । २ पु), 'चास (नीलकण्ठ) पक्षी' के २ नाम हैं ॥
 ७ कलिङ्गः, भृङ्गः, धूम्याटः (३ पु), 'भुवेङ्गा पक्षी' के ३ नाम हैं ॥
 ८ शतपत्रकः, दार्वाघाटः (२ पु), 'कठखोलवा, कठफोरवा पक्षी' के २ नाम हैं ॥
 ९ सारङ्गः (+ शारङ्गः), स्तोककः (+ तोककः), चातकः (३ पु) 'चातक पक्षी' के ३ नाम हैं ॥
 १० कृकवाकुः, ताम्रचूडः, कुक्कुटः, चरणायुधः (४ पु), 'मुर्गी' के ४ नाम हैं ॥
 ११ चटकः, कलविङ्कः (२ पु), 'गधरा, चटक पक्षी' के २ नाम हैं ।
 ('यह नर होता है') ॥
 १२ चटका (स्त्री), 'गधरैया, चटका पक्षी' का १ नाम है । ('यह मादा होती है') ॥
 १३ चाटकैरः (पु) 'गधरा और गधरैयाके पुत्र' का १ नाम है ॥
 १. 'शारङ्गस्तोककश्चातकः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ इत्यपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥

२ कर्करेडुः करेडुः स्यात् ३ कृकणः करौ समौ ।

४ वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ १९ ॥

५ काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसङ्गत्पजाः ।

ध्वाङ्गान्मघोषपरभृद्वलिभुग्वायसा अपि ॥ २० ॥

६ 'स एव च चिरजीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः' (१३)

७ द्रोणकाकस्तु काकोलो द्वात्यूहः कालकण्ठकः ।

९ आतायिचिल्लौ १० दाक्षाय्यगृध्रौ ११ कीरशुकौ समौ ॥ २१ ॥

१ चटका (स्त्री), 'गवरा और गवरैया की पुत्री' का १ नाम है ॥

२ कर्करेडुः (+ कर्कराडुः), करेडुः (+ करडुः । २ पु), 'अशुभ बोलनेवाले पक्षि-विशेष, या टिटिहिरि' के २ नाम हैं ॥

३ कृकणः, ककरः, (२ पु), ये २ 'अशुभ बोलनेवाली पक्षीके भेद-विशेष' हैं ॥

४ वनप्रियः, परभृतः, कोकिलः, पिकः, (४ पु), 'कोयल' के ४ नाम हैं ॥

५ काकः, करटः, अरिष्टः, बलिपुष्टः, सङ्गत्पजः, ध्वाङ्गः आत्मघोषः, परभृतः, बलिभुक् (= बलिभुज्), वायसः (१० पु), 'कौआ' के १० नाम हैं ॥

६ [चिरजीवी (= चिरजीविन्), एकदृष्टिः, मौकुलिः (३ पु), 'कौआ' के ३ नाम हैं] ॥

७ द्रोणकाकः (+ दग्धकाकः, वृद्धकाकः), काकोलः (२ पु), 'डोम-कौआ' के २ नाम हैं ॥

८ दाक्षयूहः (+ दाक्षयूहः), कालकण्ठकः (२ पु), 'जलकौआ, धूप-सा रंगवाला कौआ' के २ नाम हैं ॥

९ आतायी (= आतायिन् । + आतापी = आतापिन्), चिल्लः (१ पु), 'चील' के १ नाम हैं ॥

१० दाक्षाय्यः, गृध्रः (+ गृध्रः । २ पु), 'गीघ' के २ नाम हैं ॥

११ कीरः, शुकः (२ पु), 'तोता, सुग्गा' के २ नाम हैं ॥

१. 'स एव' 'मौकुलिः' इत्यंशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां वर्तते ॥

२. 'आतापिचिल्लौ' इति पाठान्तरम् ॥

- १ कुक् 'क्रौञ्चोऽथ वक्रः कङ्कः ३ पुष्कराद्वस्तु सारसः ।
 ४ कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाद्वयनामकः ॥ २२ ॥
 ५ कादम्बः कलहंसः स्याद्दुःक्रोशकुररौ समौ ।
 ७ हंसास्तु श्वेतगुरुश्चक्राङ्गा मानसौकसः ॥ २३ ॥
 ८ राजहंसास्तु ते चञ्चुरणैर्लोहितैः सिताः ।
 ९ 'मलिनैर्मल्लिकाश्वास्ते १० धार्तराष्ट्राः सितेतैः ॥ २४ ॥
 ११ शरारिराटिराडिश्च—

१ कुक् (= कुञ्), क्रौञ्चः (+ कुञ्चः । २ पु), 'क्रौञ्च, कराकुल पक्षी' के २ नाम हैं ॥

२ वक्रः, कङ्कः (+ कङ्कः २ पु), 'बगुला' के २ नाम हैं ॥

३ पुष्कराङ्गः ('कमलके पर्यायवाचक सब शब्द'), सारसः (२ पु), 'सारस' के २ नाम हैं ॥

४ कोकः (+ कुकः), चक्रः, चक्रवाकः, रथाङ्गः ('रथाङ्ग अर्थात् पहिवेके वाचक सब शब्द' । ४ पु), 'चक्रवा' के ४ नाम हैं ।

५ कादम्बः, कलहंसः (२ पु), 'वत्स पक्षी' के २ नाम हैं ॥

६ दुःक्रोशः, कुररः (२ पु), 'कुरर पक्षी' के २ नाम हैं ॥

७ हंसः, श्वेतगुरु, चक्राङ्गः, मानसौकः (= मानसौकस् । ४ पु), 'हंस' के ४ नाम हैं ॥

८ राजहंसः (पु), 'सफेद शरीर और लाल रंगके चोंच-पैरवाले हंस' का १ नाम है ॥

९ मल्लिकाञ्चः (+ मल्लिकाञ्चः । पु), 'सफेद शरीर और धूपके समान धूमिल रंगके चोंच-पैरवाले हंस' का १ नाम है ॥

१० धार्तराष्ट्रः (पु), 'सफेद शरीर और काले रंगके चोंच-पैरवाले हंस' का १ नाम है ॥

११ शरारिः (+ शरातिः, शरालिः, शराली, शराटिः, शराडिः), आटिः (+ आतिः, आटी) आडिः (+ आडी । ३ स्त्री), 'आडी पक्षी' के ३ नाम हैं ॥

१. 'क्रौञ्चोऽथ वक्रः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'मलिनैर्मल्लिकाश्वास्ते' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'शरारिराटिराडिश्च' इति पाठान्तरम् ॥

—१ बलाका बिसकण्टिका ।

- २ हंसस्य योषिद्वरटा ३ सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २५ ॥
 ४ जनुकाऽजिनपत्रा स्यात् ५ परोक्षणी तैलपायिका ।
 ६ चर्वणा मक्षिका नीला ७ सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥
 ८ पतङ्गिका पुत्तिका स्याद्दंशस्तु वनमक्षिका ।
 १० दंशीज्जातिरल्पाभ्याद् ११ गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥

१ बलाका, बिसकण्टिका (+ बिसकण्टिका, स्त्री० स्वा० । २ स्त्री),
 'बगुला-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ वरटा (+ वरला । स्त्री), 'हंसकी स्त्री' अर्थात् 'हंसिनी' का १ नाम है ॥

३ लक्ष्मणा (+ लक्षणा । स्त्री), 'सारसी' अर्थात् 'सारसकी स्त्री' का
 १ नाम है ॥

४ जनुका (+ जतूका), अजिनपत्रा (२ स्त्री), 'चमगादड़, बादुर'
 के २ नाम हैं ॥

५ परोक्षणी (+ परोक्षी), तैलपायिका (२ स्त्री), 'चपड़ानामक
 कीटविशेष तैलचटा' के २ नाम हैं ॥

६ चर्वणा (+ चर्वणा), मक्षिका (+ मक्षीका), नीला (३ स्त्री),
 'नीले रंग की मक्खी' के ३ नाम हैं । (भा० दी० के मतसे प्रथम शब्द
 वक्तार्थक है और अन्तवाले दो शब्द विशेषण हैं) ॥

७ सरघा, मधुमक्षिका (२ स्त्री), 'मधुमक्खी' के २ नाम हैं ।

८ पतङ्गिका, पुत्तिका (२ स्त्री), 'एक तरहकी 'मधुमक्खी' के
 २ नाम हैं ॥

९ दंशः (पु), वनमक्षिका (स्त्री), 'दंश, डँस, बड़े मच्छड़' के
 २ नाम हैं ॥

१० दंशी (स्त्री), 'मस, छोटे मच्छड़' का १ नाम है ॥

११ गन्धोली (स्त्री), वरटा (+ वरटी । पु स्त्री) 'बरे, भिर, बिहिनी,
 गन्धयुक्त मक्खी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१. यथेतेषां नामभेदपूर्वकं मदुवर्णमाह निमिः—

'माक्षिकं तैलवर्णं स्यादघृतवर्णं तु पैत्तिकम् ।

भ्रामरन्तु मवेच्छुक्कं क्षौद्रं तु कपिकं मवेद' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ भृङ्गारी^१भीरुका चीरी झिल्लिका च समा इमाः ।
 २ समौ पतङ्गशलभौ ३ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥
 ४ मधुवतो मधुकरो मधुलिपमधुपालिनः ।
 द्विरेफपुष्पलिङ्भृङ्गषट्पदभ्रमरालयः ॥ २९ ॥
 ५ मयूरो बर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गभुक् ।
 शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥
 ६ केका वाणी मयूरस्य ७ समौ चन्द्रकमेचकौ ।
 ८ शिखा चूडा ९ शिखण्डस्तु पिच्छवर्हं नपुंसके ॥ ३१ ॥

१ भृङ्गारी, झोरुका (+ क्षीरिका, झिरुका, झिरिका, झिरीका, चीरुका),
 चीरी, झिल्लिका (+ झिल्लीका, झिल्लका, चिल्लिका, चिल्लका । ४ स्त्री) 'झींगुर'
 के ४ नाम हैं ॥

२ पतङ्गः, शलभः (२ पु), 'फतिंगा, पतंग' के २ नाम हैं ॥

३ खद्योतः, ज्योतिरिङ्गणः (२ पु), 'जुगनू' के २ नाम हैं ॥

४ मधुवतः, मधुकरः, मधुलिट् (= मधुलिह्), मधुपः, भली (= अलिन्),
 द्विरेफः, पुष्पलिट् (= पुष्पलिह्), भृङ्गः, षट्पदः, भ्रमरः, अलिः (११ पु),
 'भौरा, भ्रमर' के ११ नाम हैं ॥

५ मयूरः (+ मयुरः^२), बर्हिणः, बर्ही (= बर्हिन्), नीलकण्ठः, भुजङ्ग-
 भुक् (= भुजङ्गभुज्), शिखावलः, शिखी (= शिखिन्), केकी (= केकिन्),
 मेघनादानुलासी (= मेघनादानुलासिन् । ९ पु), 'मोर' के ९ नाम हैं ॥

६ केका (स्त्री), 'मोरकी वोली' का १ नाम है ॥

७ चन्द्रकः, मेचकः^३ (२ पु), 'मोरकी पूँछमें स्थित नेत्राकार
 चमकदार चिह्न' के २ नाम हैं ॥

८ शिखा, चूडा (२ स्त्री), 'मोरके शिरकी कलंगी या मुकुट' के
 २ नाम हैं ॥

९ शिखण्डः (पु), पिच्छम्, बर्हम् (३ न), 'मोरके पंख' के ३ नाम हैं ॥

१. 'चीरुका' इति पाठान्तरम् ॥

२. —मयूरो मयुरो मतः' इति (श्लो० ५) शब्दभेदप्रकाशोक्तः ॥

३. 'वर्हिकण्ठसमं वर्णं मेचकं ब्रूवते बुधाः' इति काश्यः ॥

- १ अगे विहङ्गविहगविहङ्गमविहायसः ।
 शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥
 'पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः ।
 नगौकोवाजिविकिरविविक्किरपतत्रयः ॥ ३३ ॥
 नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसङ्गमाः ।
 २ तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥
 तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवञ्जीवश्चकोरकः ।

१ स्वगः, विहङ्गः, विहगः, विहङ्गमः, विहायाः (= विहायस्), शकुन्तिः, पक्षी (= पक्षिन्), शकुनिः, शकुन्तः, शकुनः, द्विजाः, पतङ्गी (= पतत्रिन्), पत्नी (= पत्निन्), पतगः, पतन् (= पतत्), पत्त्ररथः, अण्डजाः, नगौकाः (= नगौकस्), वाजी (=वाजिन्), विकिरः, विः, विक्किरः, पतत्रिः, नीडोद्भवाः, गरुमान् (= गरुत्मत्), पित्सन् (= पित्सत्), 'नभसङ्गमः' (२७ पु), 'पक्षी, चिडिया' के २७ नाम हैं ॥

२ हारीतः (+ हरितः), मद्गुः, कारण्डवः, प्लवः, तित्तिरिः (+ तित्तिरः), कुक्कुभः, लावः, जीवञ्जीवः (+ जीवजीवः, जीवाजीवः), चकोरकः, कोयष्टिकः (+ कोयष्टिः, क्षी० स्वा० पाठ), टिट्ठिभकः (+ टिट्ठिभकः, टिट्ठिभः । + टिट्ठिभः, कोकः; क्षी० स्वा० पाठ), वर्तकः (+ क्रकरः; क्षी० स्वा० पाठ) वर्त्तिकः (+ वर्तकः; क्षी० स्वा० पाठ । १३ पु), आदि ('आदि शब्दसे 'शारिका' कपिञ्जलः,), ये 'पक्षि-विशेष' हैं । (उनमें क्रमशः 'हारिल, जलमुर्गा, करडुआ (कौवेके समान काले रङ्गके बड़े २ पैरवाला वत्सविशेष), जलकौवा,

१. पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः' इति पाठान्तरम् । अत्र 'पतेरत्रिः' (उ० सू०) इति आन्त्या ग्रन्थकृदिदन्तिमिमं मन्यत इति क्षी० स्वा० ॥

२. नभसमाकाश गच्छतीति विग्रहे 'गमश्च' (पा० सू० ३।४।४७) इति उपत्यये 'नभसङ्गमः' शब्दस्य सिद्धिः । 'नभसं खं मेघवर्त्म विहायसम्' इति निगमात् 'अत्यविचमिनमिर-मिलभिनमितपिपतिपनिपणिमहिभ्योऽसत्च्' (उ० सू० ३९७), इत्यनेन सिद्धोऽदन्तोऽपि 'नभस' शब्दोऽस्तीत्यवधेयम् । सान्तः 'नभः' शब्दपक्षे तु नभसा गच्छतीति विग्रहे 'गमेः' अपि वाच्यः' (वार्तिकः २०११) इति खचि 'वाच्यमपुरन्दरौ च' (पा० सू० ६।१।६९) इति चकारादमागमे 'नभसङ्गम' शब्दसिद्धिर्बोध्यम् ॥

‘कोयष्टिकृष्टिभको वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥

- १ गरुणकच्छदाः पत्रं पतत्रं च तनूरुहम् ।
- २ स्त्री पश्चतिः पक्षमूलं ३ चञ्चुस्त्राटिरुभे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥
- ४ प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः ।
- ५ ‘पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डं ६ कुलायो नोडमस्त्रियाम् ॥ ३७ ॥
- ७ पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः ।

तीतर, वनमुर्गा, लावा या लवा, मोरके तुल्य पंख वाला पक्षि-विशेष, चकोर, पक्षी-विशेष, टिटिहरी और वत्तख' का १-१ नाम तथा 'बटेर' के २ नाम हैं । 'प्राचीनों के मतसे 'वर्तकः (पु), वर्तिका (स्त्री), खानकर 'बटेर और बटेरका स्त्री' का क्रमशः १-१ नाम है') ॥

१ गरु, पक्षः, छदाः (+ न । ३ पु), पत्रम्, पतत्रम्, तनूरुहम् (३ न), 'पंख' के ६ नाम हैं ॥

२ पश्चतिः (+ पश्चती । स्त्री), पक्षमूलम् (न), 'पंखकी जड़' के २ नाम हैं ॥

३ चञ्चुः (+ चञ्चूः), त्राटिः (+ तुण्डम् । २ स्त्री), 'चोंच' टोर' के २ नाम हैं ॥

४ प्रडीनम्, उड्डीनम्, संडीनम् (३ न), ये ३ 'पक्षियोंकी चालें हैं' इनमें 'तिरछा या अत्यन्त उड़नेका, ऊपर उड़नेका, मिलकर उड़ने' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

५ पेशी (पेशिन्, पु + पेशी = पेशी, स्त्री), कोशः (+ कोषः पु न । + पेशीकोशः, पेशीकोषः; स्त्री० स्वा०), अण्डम् (न), 'अण्डा' के ३ नाम हैं ॥

६ कुलायः (पु), नोडम् (न पु), 'खोता, घोंसला' के २ नाम हैं ॥

७ पोतः, पाकः, अर्भकः, डिम्भः, पृथुकः, शावकः, शिशुः (७ पु), 'बच्चा' के ७ नाम हैं ॥

१. 'कोयष्टिकृष्टिभः कोकः क्रकरो वर्तकादयः' इति स्त्री० स्वा० सम्मतः पाठः । अत्र मूलोक्तपाठं मत्वा 'उदीचां तु स्त्रियामित्यम्, प्राचां न (वा० ७।३।४५) इति स्त्रियां रूप-द्वयप्रदर्शनाय 'वर्तिका' ग्रहणम्' इति प्राञ्चः । वस्तुतस्तु 'वृतेस्तिकन्' (व० सू० ३।१।४६) इति तिकप्रत्ययस्य मूषिकवत्पुंस्यपि 'वर्तिकाः' इति रूपकथनमिदम्' इति भा० दी० । पूर्वोक्त स्त्री० स्वा० सम्मते पाठे तु नैव रूपद्वयप्रदर्शनमित्यवश्यम् ॥

२. 'पेशीकोशो' इति 'कोषो' इति च पाठान्तरम् ॥

१ स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं २ युग्मं तु युगलं युगम् ॥ ३८ ॥

३ समूहो निवहव्यूसंदोहविसरव्रजाः ।

स्तोमौघनिकरवातवारसंघातसञ्चयाः ॥ ३९ ॥

समुदायः समुदयः समवायश्च यो गणः ।

स्त्रियां तु संहितवृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥

४ वृन्दभेदाः ५ समैवर्गाः ६ संघसार्थौ तु जन्तुभिः ।

७ सजातीयैः कुलं ८ यूथं तिरश्चां पुत्रपुंसकम् ॥ ४१ ॥

१ स्त्रीपुंसौ (भा० दी० अतसे । निवह द्विव० पु), मिथुनम्, द्वन्द्वम् (२ न), 'स्त्री और पुरुषकी जोड़ी' के ३ नाम हैं ॥

२ युग्मम्, युगलम्, युगम् (३ न), 'जोड़ा, सम' के ३ नाम हैं ॥

('मुकुटने 'द्वन्द्व' शब्दको भी इसीका पर्याय मानकर ४ नाम' कहा है') ॥

३ समूहः, निवहः, व्यूहः, संदोहः, विसरः, व्रजः, स्तोमः, ओघः, निकरः, वातः, वारः, संघातः, सञ्चयः, समुदायः, समुदयः, समवायः, चयः, गणः, (१८ पु), संहितः (स्त्री), वृन्दम्, निकुरम्बम्, कदम्बकम् (३ न), 'समूह' के २२ नाम हैं ॥

४ अथ समूहोंके भेद-विशेष कहते हैं ॥

५ वर्गः (पु), 'एकजातीय प्राणियों या अप्राणियोंके समूह' का १ नाम है । (जैसे—मनुष्यवर्गः, ब्राह्मणवर्गः, शैलवर्गः,) ॥

६ 'संघ' सार्थः (२ पु), एकजातीय या भिन्नजातीय प्राणि-मात्रके समूह' के २ नाम हैं । (जैसे—पशुसङ्घः, पक्षिसङ्घः, वाणिकसङ्घः.....) ॥

७ कुलम् (न), एकजातीय केवल प्राणियोंके समूह' का १ नाम है । (जैसे—ब्राह्मणकुलम्, श्रष्टिकुलम्, गोकुलम्,) ॥

८. 'यूथम् (न पु), 'एक जातिके तिर्यग्जातीय' (पशुपक्षी आदिके) समूह'

१. 'द्वन्द्व' शब्दस्य 'युग्म' पर्यायत्वमनुचितम् । तथा सति '—द्वन्द्वमाहवे । रहस्ये मिथुने युग्मे—' (अने० सं० ३।५२३—५२४) इति हैमाव 'द्वन्द्वं रहस्ये कलहे तथा मिथुन-युग्मयोः' (मेदिनी पृ० १७२ श्लो० १०) इति मेदिन्याश्चाविरोधेऽपि 'स्वन्तायादि न....' (१।१।४) इत्यादिग्रन्थकारप्रतिज्ञाविरोधात् । 'द्वन्द्वयुग्मे तु' इति पाठे तु अन्यकारप्रतिज्ञा-विरोधान्मुकुटमतस्य सामञ्जस्यमपीत्यवधेयम् ॥

२-३-४. सङ्घसङ्घातपुऔवसार्थयूथकदम्बकाः' इति ।

- १ पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम् ।
 स्यान्निकायः ४ पुञ्जराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥
 ५ कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्रूपे ।
 ६ गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥
 इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

का १ नाम है । जैसे—मृगयूथम् , गजयूथम् , बर्हियूथम् , ॥

१ समजः (पु), 'केवल पशुओं के समूह' का १ नाम है । (जैसे—गोसमजः,) ॥

२ समाजः (पु) पशुसे भिन्न जातिवालों के समूह' का १ नाम है ।
 ('जैसे—श्रोत्रियसमाजः, ब्राह्मणसमाजः,') ॥

३ निकायः (पु), 'एक जातिवालों के समूह' का १ नाम है ।
 ('जैसे—ब्राह्मणनिकायः, गोनिकायः, श्रमणनिकायः,') ॥

४ पुञ्जः (+ पिञ्जः), राशिः उत्कर (३ पु) कूटम् (न पु), 'अन्न
 इत्यादिकी ढेरी' के ४ नाम हैं । ('जैसे—धान्यराशिः, तृणराशिः,') ॥

५ कापोतम् , शौकम् , मायूरम् , तैत्तिरम् (४ न), आदि ('आदिसे—
 कौककुटम् , काकम् ,'), 'कवूतर, सुग्गा, मोर और तीतर' आदि
 ('आदिसे—सुर्गा और कौआ,') के समूह' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

६ छेकः, गृह्यकः (२ पु), 'पालतू पशु-पक्षी' अर्थात् 'जलमें पाले हुए
 तोता, मोर, मैना आदि पक्षी और मृग आदि पशुओं' के २ नाम हैं ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

'निकरनिकायविसरव्रजपुञ्जसमूहसञ्चयाः समुदयसार्थयूथनिकुरम्बकदम्बकपूगराशयः ।
 चबसमवायश्चन्द्रसन्दोहसमाजवितानसंहतिप्रकरधनौघसंघसंघातत्रातकुलोत्कराः स्मृताः' ॥
 (अमि० रत्न० ४।१) इति चोक्त्वा आगुरिद्वयायुधौ सङ्घसार्थयूथपुञ्जानां पर्यायता-
 माहृतः' इत्यवधेयम् ॥

६. अथ मनुष्यवर्गः ।

- १ मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।
 २ स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पुरुषा नरः ॥ १ ॥
 ३ स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।
 प्रतीपदशिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥
 ४ विशेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ।
 प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥
 सुन्दरी रमणी रामा ५ कोपना सैव भामिनी ।
 ६ वरारोहा मत्तकाशिन्मुत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

६. अथ मनुष्यवर्गः ।

१ मनुष्यः, मानुषः, मर्त्यः, मनुजः मानवः, नरः (६ पु) भा० दी० मतसे 'मनुष्यमात्र' के ६ नाम हैं ॥

२ पुमान् (= पुंस्), पञ्चजनः, पुरुषः, पुरुषः, ना (= नृ । ५ पु), भा० दी० मतसे 'पुरुष' अर्थात् 'मर्द' के ५ नाम हैं । ('महे० मतसे मनुष्यः, ... ना' ये ११ नाम 'मनुष्य' के हैं) ॥

३ स्त्री, योषित् (+ जोषित्, योषिता, जोषिता), अबला (+ अवला), योषा (+ जोषा), नारी, सीमन्तिनी, वधूः प्रतिपदशिनी, वामा, वनिता, महिला (महेला, महला । ११ स्त्री), 'औरत, जनाना' के ११ नाम हैं ॥

४ अङ्गना, भीरुः (+ भीरुः भीलुः भीलुः) कामिनी, वामलोचना, प्रमदा, मानिनी, कान्ता, ललना, नितम्बिनी, सुन्दरी (+ सुन्दरा), रमणी (+ रमणा), रामा (१२ स्त्री) ये १२ 'स्त्रियोंके भेद-विशेष' हैं ॥

५ कोपना, भामिनी (२ स्त्री), 'क्रोध करनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

६ वरारोहा, मत्तकाशिनी (+ मत्तकासिनी), उत्तमा, 'वरवर्णिनी (४ स्त्री), 'गुणवती स्त्री के ४ नाम हैं ॥

१. 'स्त्री योषिदबला योषा' इति पाठान्तरम् ॥

२. वरवर्णिनीलक्षणं यथा—

'शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी ग्रीष्मे वा सुखशीतला ।

मर्तृभक्ता च वा नारी विधेया वरवर्णिनी ॥ १ ॥ इति ॥

- १ कृताभिषेका महिषी २ भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।
- ३ पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥
भार्याजायाऽथपुंभूमिदाराः४स्यात्तु कुटुम्बिनी ।
पुरन्ध्री ५ सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥
- ६ 'कृतसापत्निकाऽध्यूढाऽधिविन्नाऽथ स्वयंवरा ।
पतिवरा च वर्याऽथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥
- ९ कन्या कुमारी—

- १ महिषी (स्त्री), 'पटरानी' का १ नाम है । ('जैसे-वासवदत्ता,....') ॥
- २ भोगिनी (स्त्री), 'पटरानियोंसे भिन्न रानियो' का १ नाम है ।
('जैसे-पद्मावती,') ॥
- ३ पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी (+ सधर्मिणी, सहचरी),
भार्या, जाया (१ स्त्री), दाराः (= दार, पु नि० ब० व० । + २ दारा =
स्त्री), ब्याही हुई स्त्री' के ७ नाम हैं ॥
- ४ कुटुम्बिनी, पुरन्ध्री (+ पुरन्धिः, सु०), 'पति-पुत्रवाली स्त्री' के
२ नाम हैं ॥
- ५ सुचरित्रा, सती, साध्वी, पतिव्रता (४ स्त्री) 'पतिव्रता स्त्री' के
४ नाम हैं ॥
- ६ कृतसापत्निका (+ कृतसापत्निका), अध्यूढा, अधिविन्ना (३ स्त्री)
अनेक विषाद किये हुए पुरुषकी पहली स्त्री' के ३ नाम हैं ॥
- ७ स्वयंवरा, पतिवरा, वर्या (३ स्त्री) 'जिसके लिये स्वयंवर किया
गया हो उस कन्या' के ३ नाम हैं ॥
- ८ कुलस्त्री, कुलपालिका (२ स्त्री) 'कुलीन स्त्री' के २ नाम हैं ॥
- ९ कन्या, कुमारी (२ स्त्री) 'प्रथम अवस्थावाली या कौरी लड़की'
के २ नाम हैं ॥

१. कृतसापत्निकाऽध्यूढा—' इति पाठान्तरम् ॥

२. जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्या जायते पुनः' इति मनुः ॥

३. कोडा दारा तथा दारा त्रय पते तथाक्रमम् ।

कोडे दारे च दारेषु शब्दाः प्रोक्ता मनीषिभिः ॥ १ ॥ इत्युक्तेः ॥

१ गौरी तु नग्निकाऽनागतार्तवा ।

२ स्यान्मध्यमा दृष्टरजाश्चैतद्वर्णो युवतिः समे ॥ ८ ॥

४ 'समाः स्नुषाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु स्ववासिनी ।

१ 'गौरी, नग्निका (+ लग्निका) अनागतार्तवा (३ स्त्री), 'जिसे रजोधर्म नहीं हुआ हो उस स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

२ मध्यमा, दृष्टरजाः (= दृष्टरजस् । २ स्त्री), 'जिसे पहली बार रजोधर्म हुआ हो उस स्त्री' २ नाम हैं ॥

३ तरुणी (+ तलुनी), युवतिः (+ युवती । ३ स्त्री) 'जवान स्त्री' के २ नाम हैं । (स्त्री १६ वर्षकी अवस्थातक 'बाला' १७ से ३० वर्षकी अवस्था तक 'तरुणी', ३१ से ५५ वर्ष की अवस्थातक 'प्रौढा' और उसके बाद 'वृद्धा' कहलाती है; यह वृद्धा रतिमें त्याज्य है^१ । यह अवस्थाकथन जब मनुष्य स्वरथ एवं पूर्णायु होते थे, उस समयके अनुसार उचित प्रतीत होता है) ॥

४ स्नुषा, जनी (+ जनिः) वधूः (३ स्त्री), 'पतोहू' अर्थात् 'पुत्र, भतीजा या शिष्य आदिकी स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

५ चिरिण्टी (+ चिरण्टी, चरण्टी, चरिण्टी), स्ववासिनी (+ सुवासिनी । २ स्त्री), 'जिसे जवानीके चिह्न कुछ-कुछ मालूम पड़ रहे हों ऐसी विवाहिता स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

१. 'समाः स्नुषाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु सुवासिनी' इति पाठान्तरम् ॥

२-३. अथ प्रसङ्गात्स्त्रीणां संज्ञाविशेषा उच्यन्ते—

'बालेति गीयते नारी यावद्वर्षाणि षोडश ।

गौरी स्वसंजातरजाः श्यामा षोडशवर्षिकी' ॥ १ ॥ इति ॥

'अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी ।

दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला' ॥ १ ॥

इति संवर्तस्मृति १।६६ ॥

अत्र 'अष्टवर्षा भवेद् गौरी नवमे नग्निका भवेत्' इति स्मार्तो विशेषो नादृत इति स्त्री० स्वा० ॥

४. अवस्थाभेदेन स्त्रीणां संज्ञा आह—

'यावत्षोडशसंख्यमब्दमुदिता बाला ततस्त्रिंशत् तावत्स्यात्तरुणीति षण्विंशसैः संख्या तु तावद्भवेत् ।

सा प्रौढेत्यभिधीयते कनिकरेवृद्धा तदूर्ध्वं स्मृता

'निष्ठा कामकलाकलापविषयु स्यान्वा सदा कामिभिः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ इच्छावती कामुका स्याद् २ वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥
 ३ कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ।
 ४ पुंश्चली धर्विणी बन्धक्यसतो कुलटेत्तरी ॥ १० ॥
 स्वैरिणी पांशुला च स्याद्दशिश्वी शिशुना विना ।
 ६ अवीरा निष्पतिसुता ७ विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥
 ८ आलिः सखी वयस्याऽथ ९ पतिवत्नी समर्तुका ।

१ इच्छावती, कामुका (२ स्त्री), 'किसी पदार्थको चाहनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

२ वृषस्यन्ती, कामुकी (२ स्त्री) 'बैल-घोड़े की तरह अधिक मैथुनकी इच्छा करनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

३ अभिसारिका (स्त्री), 'रतिके लिये अपने पति या जारके संकेत किये हुए स्थानपर जानेवाली या जार वा पतिको संकेत-स्थानपर बुलानेवाली स्त्री' का १ नाम है ॥

४ पुंश्चली, धर्विणी (+ चर्वणी, धर्वणोः, कर्षणिः) बन्धकी, असती, कुलटा, हत्तरी, स्वैरिणी, पांशुला (+ व्यभिचारिणी । ८ स्त्री), 'व्यभिचारिणी स्त्री' के ८ नाम हैं ॥

५ अशिश्वी (स्त्री) 'वंशहीन स्त्री' का १ नाम है ॥

६ अवीरा (स्त्री) 'पति और पुत्रसे हीन स्त्री' का १ नाम है ॥

७ विश्वस्ता, विधवा (२ स्त्री) 'विधवा स्त्री' के २ नाम हैं ॥

८ आलिः, सखी, वयस्या (३ स्त्री) 'सहेली' के ३ नाम हैं ॥

९ पतिवत्ता, समर्तुका (३ स्त्री) 'सववा स्त्री' के २ नाम हैं ॥

१. 'चर्वणी' इति धर्वणी इति च पाठान्तरम् ॥

२. अभिसारिकाया लक्षणान्याहुः । तद्यथा—

'द्वित्वा लज्जाभये छिष्टा मदनेन मदेन च ।

अभिसारयते कान्तं सा भवेदभिसारिका ॥ १ ॥ इति भरतः ॥

'कामार्ताभिसारेस्कान्तं सारयेद्वाभिसारिका' ॥ दशरूपक २।३७ इति ॥

अभिसारयते कान्तं वा मन्मथवशंवदा ।

स्वयं वाऽभिसारत्येषा धीरेवक्ताऽभिसारिका' ॥ १ ॥ सा० द० ३।११८ इति ॥

- १ वृद्धा पलिकनी २ प्राज्ञी तु प्राज्ञा ३ प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥
 ४ शूद्रा शूद्रस्य भार्या स्यात्पञ्चदश तज्जातिरेव च ।
 ६ आभीरी तु महाशूद्रा जातिपुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥
 ७ अर्याणी स्वश्रमर्या स्यात् ८ क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।
 ९ उपाध्यायाऽप्युपाध्यायी १० स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥
 ११ आचार्यानी तु पुंयोगे १२ स्यादर्यो—

१ वृद्धा, पलिकनी (२ स्त्री), 'वृद्ध या पके हुए बालवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

२ प्राज्ञी, प्रज्ञा (२ स्त्री), 'किसी विषयको अच्छी तरह स्वयं जाननेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

३ प्राज्ञा, धीमती (+ बुद्धिमती । स्त्री), 'चतुर स्त्री' के २ नाम हैं ॥

४ शूद्रा (स्त्री), किसी भी वर्णमें उत्पन्न हुई शूद्रकी स्त्री' का १ नाम है ॥

५ शूद्रा (स्त्री), 'शूद्र वर्णमें उत्पन्न हुई शूद्रकी या अन्य किसी जातिकी स्त्री' का १ नाम है ॥

६ आभीरी, महाशूद्रा (२ स्त्री), 'ग्वालिन या गोपकी स्त्री, महाशूद्र-कुलमें उत्पन्न किसी भी जातिकी स्त्री, अन्य वर्णमें उत्पन्न महाशूद्रकी स्त्री, के २ नाम हैं ॥

७ अर्याणी, अर्या (२ स्त्री), 'वैश्य कुलमें उत्पन्न स्त्री' के २ नाम हैं ॥

८ क्षत्रिया, क्षत्रियाणी (२ स्त्री), 'क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न स्त्री' के २ नाम हैं ॥

९ उपाध्याया, उपाध्यायी (२ स्त्री), 'स्वयं पढ़ानेवाली स्त्री' का २ नाम हैं ॥

१० आचार्या (स्त्री), 'मन्त्रोंकी स्वयं व्याख्या करनेवाली स्त्री' का १ नाम है ॥

११ आचार्यानी (+ आचार्याणी । स्त्री), 'आचार्यकी स्त्री' का १ नाम है ॥

१२ अर्यो (स्त्री), 'किसी भी जातिमें पैदा हुई वैश्यकी स्त्री' का १ नाम है ॥

—१ क्षत्रियी तथा ।

- २ उपाध्यायान्युपाध्यायी ३ पोटा स्त्रीपुस्तलक्षणा ॥ १५ ॥
 ४ वीरपत्नी वीरभार्या ५ वीरमाता तु वीरसूः ।
 ६ जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥
 ७ स्त्री नग्निका 'कोटवी' स्याद् ८ दूतीसंचारिके समे ।
 ९ कात्यायन्यर्द्धवृद्धा या 'काषायवसनाऽधवा' ॥ १७ ॥
 १० 'सैरन्ध्री' परवेशमस्था स्ववशा शिल्पकारिका ।

१ क्षत्रियी (स्त्री), किसी भी जातिमें उत्पन्न हुई क्षत्रियकी स्त्री'
 का १ नाम है ॥

२ उपाध्यायानी, उपाध्याया (२ स्त्री), 'पढ़ानेवालेकी स्त्री' के २ नाम हैं ॥

३ पोटा (स्त्री), 'स्तन और दाढ़ी (स्त्री-पुरुषके इन दो लक्षणों) से
 युक्त स्त्री या नपुंसक स्त्री' का १ नाम है ।

४ वीरपत्नी, वीरभार्या (२ स्त्री), 'शूरवीरकी पत्नी' के २ नाम हैं ॥

५ वीरमाता (= वीरमातृ), वीरसूः (२ स्त्री), 'शूरवीरकी माता'
 के २ नाम हैं ॥

६ जातापत्या, प्रजाता, प्रसूता, प्रसूतिका (४ स्त्री) 'प्रसूति' अर्थात्
 'जिससे सन्तान पैदा किये थोड़े दिन बीते हों' उस 'जच्चा' स्त्री के ३ नाम हैं ॥

७ नग्निका (आ० दी०), कोटवी (+ कोटवी, कौटवी । २ स्त्री) 'नंगी
 स्त्री' के २ नाम हैं ॥

८ दूती, संचारिका (२ स्त्री), 'दूती' के २ नाम हैं ॥

९ कात्यायनी (स्त्री), 'अधवूढ़, गेरुआ कपड़ा पहनी हुई विधवा
 स्त्री' का १ नाम है ॥

१० ४ सैरन्ध्री (+ सैरिन्ध्री । स्त्री) 'जो दूसरेके घर रहे, स्वतन्त्र

१. 'कोटवी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'काषायवसनाऽधवा' इति पाठान्तरम् ॥

३ 'सैरिन्ध्री' इति पाठान्तरम् ॥

४ सैरन्ध्रीलक्षणं यथा—

चतुःषष्टिकलाऽभिज्ञा शीलरूपादिसेविनी ।

प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री परिकीर्तिता ॥ १ ॥ इति काव्यः ।

श्री० स्वा० तु 'परिकीर्तिता' इत्यत्र 'स्ववशेति च' इति पाठमाह ॥

- १ असिकनी स्यादवृद्धा या प्रेक्ष्याऽन्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥
- २ वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवाऽथ सा जनैः ।
सत्कृता वारमुख्या स्यात् ४ कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥
- ५ विप्रशिनका त्वीक्षणिका दैवज्ञाऽथ रजस्वला ।
स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥
ऋतुमत्यप्युदक्यापि ७ स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।

हो और केश झाड़ना-गूथना आदि शिल्पकार्य करती हो उस स्त्री' का १ नाम है । (जैसे—राजा विराटके यहाँ अज्ञातवास करती हुई द्रौपदी सरन्ध्री का कार्य करती थी) ॥

१ असिकनी (स्त्री) 'जो वृद्धा नहीं हो, आज्ञा पाकर कहीं आया जाया करे और रनिवासमें रहे उस स्त्री' का १ नाम है ॥

२ वारस्त्री, गणिका, वेश्या (+ वेष्ट्या), रूपाजीवा (+ पण्यस्त्री, पणस्त्री । ४ स्त्री), 'वेश्या' के ४ नाम हैं ॥

३ वारमुख्या (स्त्री), 'सौन्दर्य और गान आदि से बड़े लोगोंके द्वारा प्रतिष्ठा पानेवाली वेश्या' का १ नाम है ॥

४ कुट्टनी, शम्भली (+ सम्भली । २ स्त्री), 'कुट्टिनी' के २ नाम हैं ।

५ विप्रशिनका, ईक्षणिका, दैवज्ञा (३ स्त्री), 'हाथ-पैर आदिकी रेखाओं को देखकर शुभाशुभ लक्षणों को जानने या कहनेवाली स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

६ रजस्वला, स्त्रीधर्मिणी, अविः (+ अवी), आत्रेयी, मलिनी, पुष्पवती (+ पुष्पिता), ऋतुमती, उदक्या (८ स्त्री) 'रजस्वला स्त्री' के ८ नाम हैं ॥

७ रजः (= रजस्), पुष्पम्, आर्तवम् (३ न), 'स्त्रियोंके रज' के ३ नाम हैं ॥

१. 'वेश्या' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्त्रीधर्मिण्यपि चात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि' इति स्वा० पाठः । 'अवितृस्तुतन्त्रिभ्य ईः' (उ० सू० ३।१५८) इति ईप्रत्ययेन सिद्धयुक्तेस्तदग्रे च 'अवि स्त्रीधर्मिणी विद्या' इति कात्याय 'सर्वधातुभ्य इन्' (उ० सू० ४।११८) इति इन्प्रत्यये ह्रस्वान्ताऽपि अविः इति भानुजित्रीक्षितेन स्वयमुक्तत्वान्मूले 'स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी' इति ह्रस्वान्त 'अवि' शब्दपाठः संशोधकप्रसादज एव । व्याख्यातुर्दीर्घान्तस्यैव 'अवि' शब्दस्य प्रथमं साचित्त्वेन तत्रैव स्वास्थाप्रदर्शनात् ॥

३. 'असिकनी स्यादवृद्धा या प्रेक्ष्याऽन्तःपुरयोचिता' इति मुनिः ॥

- १ श्रद्धालुर्दोहदवती २ निष्कला विगतातर्वा ॥ २१ ॥
 ३ आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ।
 ४ गणिकादेस्तु गाणिक्यं गाभिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥
 ५ पुनर्भूर्दीधिषूढा द्विद्विस्तस्या^१ दिधिषुः पतिः ।
 ७ स तु द्विजोऽग्नेदिधिषूः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥

१ श्रद्धालुः, दोहदवती (२ स्त्री), 'गर्भं रहनेपर किसी वस्तु या कार्य को चाहनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

२ निष्कला (+ निष्कली), विगतातर्वा (२ स्त्री), 'रजोधर्मसे हीन (जिसे रजोधर्म कभी न होता हो या वृद्धावस्था के कारण समाप्त हो गया हो) स्त्री' के २ नाम हैं ।

३ आपन्नसत्त्वा, गुर्विणी (+ गुर्वी) अन्तर्वत्नी, गर्भिणी (गर्भवती । ४ स्त्री), 'गर्भवती स्त्री' के ४ नाम हैं ॥

४ गाणिक्यम्, गाभिणम्, यौवतम् (३ न), 'वेश्याओं युवतियों और गर्भिणियों के समूह' का क्रमशः १-१ नाम है ।

५ 'पुनर्भूः, दीधिषूः (+ दिधिषूः, दिधिषुः, अग्नेदिधिषुः । २ स्त्री), 'दो बार व्याही हुई स्त्री' के २ नाम हैं ॥

६ दिधिषुः (+ दिधिषूः, स्वा० म० । पु०), 'दो बार व्याही स्त्री के पति' का १ नाम है ॥

७ अग्नेदिधिषूः । (+ अग्नेदिधिषुः । पु०), 'दो बार व्याही हुई स्त्री के द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) घर्णवाले पति' का १ नाम है ॥

१. 'दिधिषूः पतिः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं याज्ञवल्क्ये—

'अक्षता च क्षता चैव पुनर्भूर्दिधिषूः पुनः' इति याज्ञ० १। ६७ ॥

'ज्येष्ठायां यथनूदायां कन्यायामुद्यतेऽनुजा ।

सा चाग्नेदिधिषुर्ज्ञेया पूर्वा तु दिधिषुर्मता' ॥ १ ॥ इति ॥

'दिधिषूस्तपुनर्भूर्दिषूढा स्याद्विधिषुः पतिः ।

स तु द्विजोऽग्नेदिधिषूयस्य स्यात्सैव गेहिनी' ॥ १ ॥

अभि० चिन्ता० ३।१८९ इति ॥

- १ कानीनः कन्यकाजातः सुतोऽथ सुभगासुतः ।
 सौभागिनेयः स्यात् ३ पारस्त्रेण्यस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥
 ४ पैतृवसेयः स्यात्पैतृवस्त्रीयश्च पितृवसुः ।
 सुतो ५ मातृवसुश्चैवं ६ वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥
 ७ अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः ।
 कौलटेरः कौलटेयो ८ भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥
 तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।
 ९ आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः १० स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥
 आहुर्दुहितरं सर्वं—

१ कानीनः (पु), 'कांरी स्त्रीके पुत्र' का १ नाम है ('जैसे—व्यास, कर्ण,.....') ॥

२ सुभगासुतः, सौभागिनेयः (३ पु), 'सौभाग्यवती स्त्रीके पुत्र' के २ नाम हैं ॥

३ पारस्त्रेण्यः (पु), 'परस्त्रीके पुत्र' का १ नाम है ॥

४ पैतृवसेयः, पैतृवस्त्रीयः (२ पु), 'पूआका पुत्र अर्थात् फुफेरे भाई' के २ नाम हैं ॥

५ इसी प्रकार 'मौसीका लड़का अर्थात् मौसरे भाई' के मातृवसेयः, मातृवस्त्रीयः (२ पु), २ नाम हैं ॥

६ वैमात्रेयः (+ वैमात्रः), विमातृजः (१ पु), सौतेली माँका लड़का' अर्थात् 'मैभावत भाई' के २ नाम हैं ।

७ बान्धकिनेयः, बन्धुलः, असतीसुतः, कौलटेरः, कौलटेयः (५ पु), 'व्यभिचारिणी स्त्रीके पुत्र' के ४ नाम हैं ॥

८ कौलटिनेयः, कौलटेयः, (२ पु), 'भीख मांगनेके लिये घर २ घूमने-वाली सदाचारिणी स्त्रीके पुत्र' के २ नाम हैं ॥

९ आत्मजः, तनयः, सूनुः, सुतः, पुत्रः (५ पु), 'पुत्र' के ५ नाम हैं ॥

१० दुहिता (= दुहितृ । स्त्री) और 'आत्मज' आदि ५ शब्द स्त्रीलिङ्ग होने पर (आत्मजा, तनया, सूनुः, सुता, पुत्री । ५ स्त्री), 'लड़की, पुत्री' के ६ नाम हैं ॥

—१५पत्यं लोकं तयोः समे ।

२ स्वजाते त्वौरसोरस्यौ ३ तातस्तु जनकः पिता ॥ २८ ॥

४ जनयित्री प्रसूमाता जननी ५ भगिनी स्वसा ।

६ ननान्दा तु स्वसा पत्युर्नपत्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥

८ भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।

९ प्रजावती भ्रातृजाया १० मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

१ अपत्यम्, लोकम् (२ न), 'सन्तान' अर्थात् 'लड़के या लड़की' के २ नाम हैं ॥

२ औरसः, १ उरस्यः (+ औरस्यः । २ पु), 'अपने खास लड़के' के २ नाम हैं ॥

३ तातः, जनकः, पिता (= पितृ । ३ पु), 'पिता' के ३ नाम हैं ॥

४ जनयित्री (+ जनित्री), प्रसूः, माता (= मातृ), जननी (+ जननिः । ४ स्त्री), 'माता' के ४ नाम हैं ॥

५ भगिनी, स्वसा (= स्वसृ । २ स्त्री), 'बहन' के २ नाम हैं ॥

६ ननान्दा (= ननान्द । + ननन्दा = ननन्द, नन्दिनी । स्त्री), 'ननद्' अर्थात् 'पतिकी बहन' का १ नाम है ॥

७ नपत्री, पौत्री, सुतात्मजा (भा० दी० । ३ स्त्री), 'नातिन' अर्थात् 'पुत्रकी या पुत्रीकी लड़की' के ३ नाम हैं ॥

८ याता (= यातृ, स्त्री), 'गोतिनी' अर्थात् 'पतिके भाइयोंकी स्त्री' का १ नाम है ॥

९ प्रजावती, भ्रातृजाया (२ स्त्री), 'भाईकी स्त्री भौजाई' के २ नाम हैं ॥

१० मातुलानी, मातुली (+ मातुला । २ स्त्री), 'मामी' अर्थात् 'मामा (पिताका साला) की स्त्री' के २ नाम हैं ॥

१०. 'स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्धि यम् । तमौरसं विजानीयात्पुत्रं प्रथमकस्थितम्' ॥
मनुः १।१६६ ॥

इति वचनात्परभार्यायामपि स्वस्माज्जाते पुत्रे नातिष्यासिः शक्या । 'औरस १ क्षेत्रज २ दत्तक ३ कृत्रिम ४ गूढोत्पन्न ५ अपविद्ध ६ कानीन ७ सहोद- ८ कीत ९ पौनर्भव १० स्वयंदत्त ११ शौद्र (पाराश्व) १२' इति दायादादावादान्धवरूपदादशभिषुअलक्षणं मनुस्मृतौ (१।१६६-१७८) द्रष्टव्यम् ॥

- १ पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः २ श्वशुरस्तु पिता तयोः ।
 ३ पितुर्भाता पितृव्यः स्यात् ४ मातुर्भाता तु मातुलः ॥ ३१ ॥
 ५ श्यालाः स्युर्भातरः पत्न्याः ६ स्वामिनो देवृदेवरौ ।
 ७ स्वस्त्रीयो भागिनेयः स्यात् ८ जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥
 ९ पितामहः पितृपिता १० तत्पिता प्रपितामहः ।
 ११ मातुर्मातामहाद्येवं १२ सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥

- १ श्वश्रूः (स्त्री), 'सास' अर्थात् 'पति या स्त्रीकी माता' का १ नाम है ।
 २ श्वशुरः (पु), 'ससुर' अर्थात् 'पति या स्त्रीके पिता का १ नाम है ॥
 ३ पितृव्यः (पु), 'चाचा' अर्थात् 'पिताके भाई' का १ नाम है ॥
 ४ मातुलः (पु), 'मामा' अर्थात् 'माताके भाई' का १ नाम है ॥
 ५ श्यालः (+ स्यालः । पु), 'साला' अर्थात् 'स्त्रीके भाई' का १ नाम है ॥
 ६ देवा (= देवृ), देवरः (२ पु), 'देवर' अर्थात् 'पतिके छोटे भाई
 के २ नाम हैं ॥

७ स्वस्त्रीयः (+ स्वस्त्रियः, स्वस्त्रेयः), भागिनेयः (२ पु), 'भांजा'
 अर्थात् 'बहनके लड़के' के २ नाम हैं ॥

८ जामाता (= जामातृ, पु), 'दामाद, जमाई' का १ नाम है ॥

९ पितामहः, पितृपिता (= पितृपितृ । २ पु), 'पिताके पिता, दादा,
 बाबा' के २ नाम हैं ॥

१० प्रपितामहः (पु), 'परदादा' अर्थात् पितामहके पिता' का १ नाम है ॥

११ मातामहः (पु), 'नाना' अर्थात् 'माताके पिता' का १ नाम है ।

("इसी तरह 'प्रमातामहः (पु), 'परनाना' अर्थात् 'नानाके पिता' का १
 नाम है") ॥

१२ सपिण्डः, सनाभिः (२ पु) "सात पुस्त (पीढ़ी) के भीतरवाले
 परिवार' के २ नाम हैं ॥

१. युक्तमिदं क्षी० स्वा० महे० मतम् । ग्रंथकारमते तु 'पत्युर्भातुमात्रस्ये'मे नामनी ।
 'पत्युर्ज्येष्ठो आता श्वशुर एवेति सुभृत्यादयः' इति मा० दी० भा० ॥

२. तदुक्तं मनुना—“सपिण्डता पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते” इति, मनुः ५ । ६० ॥

- १ समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।
 २ सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥
 ३ ज्ञातेयं ४ बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः ।
 ५ धवः प्रियः पतिर्भर्ता ६ जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥
 ७ अमृते जारजः कुण्डो ८ मृते भर्तरि गोलकः ।
 ९ आश्रीयो भ्रातृजो १० भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरावुभौ ॥ ३६ ॥

१ समानोदर्यः, सोदर्यः (+ सोदरः, सहोदरः), सगर्भ्यः, सहजः (४ पु), 'सहोदर भाई' अर्थात् 'एक मातामे उत्पन्न भाई' के ४ नाम हैं ॥

२ सगोत्रः, बान्धवः, ज्ञातिः, बन्धुः, स्वः (यह सर्वनाम-संज्ञक है), स्वजनः (६ पु), 'सगोत्र, अपने खास खान्दान' के ६ नाम हैं ॥

३ ज्ञातेयम् (न), 'ज्ञातियोंके धर्म या भाव' का १ नाम है ॥

४ बन्धुता (स्त्री), 'बन्धुओंके समूह' का १ नाम है ॥

५ धवः, प्रियः, पतिः, भर्ता (= भर्ता । ४ पु), 'पति' के ४ नाम हैं ॥

६ जारः, उपपतिः (२ पु), 'जार' अर्थात् 'अप्रधान पति' के २ नाम हैं ॥

७ 'कुण्डः (पु), 'पतिके जीते रहनेपर जारसे पैदा हुए लड़के' का १ नाम है ॥

८ 'गोलकः (पु), 'पतिके मरनेपर जारसे पैदा हुए लड़के' का १ नाम है ॥

९ आश्रीयः (+ आश्रयः), आश्रितः (२ पु), 'भर्ताजा' अर्थात् भाईके लड़के का १ नाम है ॥

१० भ्रातृभगिन्यौ (भा० दी० मत से), भ्रातरौ (= आद । २ पु नि० द्विव०), 'भाई-बहन' के २ नाम हैं । ("जब भाई और बहनको एक साथ कहना हो तब इसका प्रयोग होता है । इसी तरह "भार्यावती च तौ" (२ । ६ । ३८) तक जानना चाहिये") ॥

१-२. तदुक्तम्—“परदारेषु जायेते द्वौ सुतौ कुण्डगोलकौ ।

पत्यो जीवति कुण्डः स्वामृते भर्तरि गोलकः” ॥ १ ॥ इति मनुः ३।१७४

- १ मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ।
- २ श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ ३ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥
- ४ दम्पती जम्पती जायापती भार्यापती च तौ ।
- ५ गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च ६ कललोऽस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥
- ७ सूतिमासो वैजननो ८ गर्भो भ्रूण इमौ समौ ।
- ९ तृतीयाप्रकृतिः शण्डः क्लीबः षण्डो 'नपुंसके ॥ ३९ ॥

१ मातापितरौ (= मातापितृ), पितरौ (= पितृ), मातरपितरौ (= मातरपितृ), प्रसूजनयितारौ (= प्रसूजनयितृ । ४ पु, नि० द्विव०), 'माता और पिताके समुदाय' के ४ नाम हैं ॥

२ श्वश्रूश्वशुरौ, श्वशुरौ (२ पु, नि० द्विव०), 'सास और ससुरके समुदाय' के २ नाम हैं ॥

३ पुत्रौ (पु० नि० द्विव०) 'लड़का और लड़कीके समुदाय' का १ नाम है ।

४ दम्पती, जम्पती (+ २ स्त्री), जायापती, भार्यापती (४ पु, नि० द्विव०), 'पति और पत्नीके समुदाय' के ४ नाम हैं ॥

५ गर्भाशयः, जरायुः, (२ पु), उत्तवम् (+ उत्तवम् । न), 'गर्भाशय' अर्थात् 'जिसमें गर्भ लिपटा रहता है, उप चर्म' के २ नाम हैं ॥

६ कललः (पु न), 'वीर्य और शोणितके समुदाय' का १ नाम है । ('किसीके मतसे 'गर्भाशय' आदि २-२ नाम उन अर्थोंमें हैं, और किसीके मतसे ४ नाम एकार्थक हैं') ॥

७ सूतिमासः, वैजननः (२ पु), 'सन्तान पैदा होनेवाले (नवें या दशवें) महीने' के २ नाम हैं ॥

८ गर्भः भ्रूः (२ पु), 'गर्भ या गर्भस्थ जीव' के २ नाम हैं ॥

९ तृतीयाप्रकृतिः (+ तृतीयप्रकृतिः । स्त्री), शण्डः (+ षण्डः, शण्डः,

१. 'नपुंसकम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शाल्मली मथिली मैत्री दम्पती जम्पती च सा' इत्युक्तेरिति बोध्यम् ॥

३. तदुक्तं महर्षिणा याज्ञवल्क्येन—

'नवमे दशमे वापि प्रबलैः सूतिमासतैः ।

निःसार्यते बाण इव यन्त्रच्छिद्रेण सज्जरः' ॥ १ ॥ याज्ञ० स्मृ० ३।८३ इति ।

भा० दी० तु अस्य तुरीयपादं 'जन्तुच्छिद्रेण सत्वरः' इत्येवमाह ॥

- १ शिशुत्वं शैशवं बाल्यं २ तारुण्यं यौवनं समे ।
- ३ स्यात्स्थानविरं तु वृद्धत्वं ४ वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥
- ५ पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ ६ विस्त्रसा जरा ।
- ७ स्यादुत्तानशया १डिम्भा स्तनपा च स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥
- ८ बालस्तु स्यान्माणवको—

षण्डः^१) क्लीबः, पण्डः (३ पु), नपुंसकम् (न । + पु), 'नपुंसक, हिजड़ा' के ५ नाम हैं ॥

१ शिशुत्वम्, शैशवम्, बाल्यम् (३ न), 'लङ्कपन, बाल्यावस्था' के ३ नाम हैं ॥

२ तारुण्यम्, यौवनम् (२ न), 'जवानी, युवावस्था' के २ नाम हैं ॥

३ स्थानिरम्, वृद्धत्वम् (+ वार्द्धकम्, वार्द्धक्यम् । २ न), 'बुढ़ापा' के २ नाम हैं ॥

४ वृद्धसंघः (भा० दी० मनसे । पु) वार्द्धकम् (+ वार्द्धक्यम् । न), 'वृद्धसमूह' के २ नाम हैं ॥

५ पलितम् (न), 'बाल पकने' अर्थात् 'बुढ़ापा आदिसे दाढ़ी-मूँछ आदिके बालके सफेद होने' का १ नाम हैं ॥

६ विस्त्रसा, जरा (२ स्त्री), 'बुढ़ी' के २ नाम हैं ॥

७ उत्तानशया, डिम्भा, स्तनपा, स्तनन्धयी (४ त्रि), 'दूध पीनेवाली लड़की' के ४ नाम हैं । ('स्त्रीलिङ्गमें रूपप्रदर्शन के लिये स्त्रीत्वको कहा गया है, स्त्रीत्व विवक्षित नहीं है । अतः पुल्लिङ्ग में—उत्तानशयः, डिम्भः, स्तनपः, स्तनन्धयः, (४ पु), 'दूध पीनेवाले लड़के' के ४ नाम हैं; नपुंसकलिङ्गमें 'उत्तानशयम्,' हाता है । इसी तरह आगे जानना चाहिये) ॥

८ बालः, ३माणवकः (+ माणवः । २ त्रि), 'छाटे बच्चे' के २ नाम हैं ॥

१. 'डिम्भ' शब्दः प्राक् (२।५।३८) पक्षिकनेपोक्तोऽप्यत्र मातृषक्रमेण पुनरुक्तः ॥

२. 'पण्डः शण्डे—' (अने० सं० २।१२२) इति, 'षण्डः कानन इड्वरे' (अने० सं० २।१२९) इति —'षण्डौ तु सौविदौ । बन्ध्यपुंसीड्वरे क्लीबे—' (अने० सं० २।१३०-१३१) इति च हेमचन्द्राचार्योक्तैरित्यवधेयम् ॥

३. 'अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरौत्सर्गिकः स्मृतः ।

नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिद्धयति माणवः' ॥ १ ॥

पञ्चमुक्तीत्या निष्पन्नान्माणवशब्दात्स्वार्थे कनि 'माणवक' शब्दसिद्धिर्ज्ञेया ॥

—१ वयस्थस्तरुणो युवा ।

२ प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

३ वर्षीयान् दशमी ज्यायान् ४ 'पूर्वजस्त्वग्नियोऽग्रजः ।

५ जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः ॥ ४३ ॥

६ अमांसो दुर्बलश्छातो ७ बलवान्मांसलोऽसलः ।

८ तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

१ वयस्थः, तरुणः, युवा (= युवन् । + युवकः । ३ त्रि), 'नौजवान युवा' के ३ नाम हैं ।

२ प्रवयाः (= प्रवयस्), स्थविरः, वृद्धः, जीनः, जीर्णः, जरन् (= जरत् । ६ त्रि), 'वृद्धे' के ६ नाम हैं ॥

३ वर्षीयान् (= वर्षीयस्), दशमी (= दशमिन्), ज्यायान् (= ज्यायस् । ३ त्रि), 'बहुत वृद्धे' के ३ नाम हैं ॥

४ पूर्वजः, अग्रियः (अग्रोयः, अग्रयः, अग्रोमः, अग्रिमः), अग्रजः (३ त्रि), 'बड़े भाई या अपनेसे पहले जन्म हुए' के ३ नाम हैं ॥

५ जघन्यजः, कनिष्ठः (+ कनीयान् = कनीयस्), यवीयान् (= यवी-यस् । + यविष्ठः), अवरजः, अनुजः (५ त्रि), 'छोटे भाई या अपनेसे पीछे जन्म हुए' के ५ नाम हैं ॥

६ अमांसः, दुर्बलः, छातः (= शानः । ३ त्रि), 'दुर्बल, कमजोर' के ३ नाम हैं ॥

७ बलवान् (= बलवत्), मांसलः, अंसलः (३ त्रि), 'बलवान्, मजबूत या मोटे' के ३ नाम हैं ॥

८ तुन्दिलः (= तुण्डिलः, तुन्दितः, तुण्डितः, तुन्दिकः, उदरिलः), तुन्दिभः (= तुण्डिभः), तुन्दी (= तुन्दिन् । = तुण्डी = तुण्डिन्), बृहत्कुक्षिः, पिचण्डिलः (= पिचिण्डिलः । ५ त्रि), 'तोंडवाले, बड़े पेटवाले' के ५ नाम हैं ॥

१. 'पूर्वजस्त्वग्नियोऽग्रजः' इति पाठभेदः । किन्त्वन्नकल्पोमज्ञोऽपि वर्तते ॥

२. 'दुर्बलश्छातः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'तुन्दिकस्तुन्दिकस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचिण्डिलः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके ।
 २ केशवः केशिकः केशी ३ वलिनो वलिभः समौ ॥ ४५ ॥
 ४ विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः ५ खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।
 ६ खरणाः स्यात्खरणसो ७ विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥
 ८ खुरणाः स्यात्खुरणसः ९ प्रज्ञुः प्रगतजानुकः ।

१ अवटीटः, अवनाटः, अवभ्रटः, नतनासिकः (४ त्रि), महे० मतसे 'नकचिपटा' अर्थात् 'चिपटी नाकवाले' के ३ नाम हैं । 'भा० दी० मतसे 'नतनासिकः' शब्दका पर्याय नहीं होने से ३ ही नाम हैं') ॥

२ केशवः (= केशवान् = केशवत्), केशिकः, केशी (= केशिन् । ३ त्रि), 'सुन्दर केशवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ वलिनः, वलिभः (२ त्रि), 'जिसका चमड़ा सिकुड़ गया हो उस' के २ नाम हैं ॥

४ विकलाङ्गः, अपोगण्डः (= पोगण्डः ! २ त्रि), 'कम या अधिक अङ्गवाले' के २ नाम हैं ॥

५ खर्वः (= खर्वः, निखर्वः), ह्रस्वः, वामनः (३ त्रि), 'बौना, वामन' के ३ नाम हैं ॥

६ खरणाः (खरणस्), खरणसः (२ त्रि) 'नुकीली नाकवाले' के २ नाम हैं ॥

७ विग्रः (+ विखुः, विखः, विख्यः, विख्वः, विखुः), गतनासिकः (= विनासिकः । २ त्रि), 'नकटा' के २ नाम हैं ॥

८ खुरणाः (= खुरणस्), खुरणसः (२ त्रि), 'पशुके खुरके समान नाकवाले' के २ नाम हैं ॥

९ प्रज्ञुः (+ प्रज्ञुः^२), प्रगतजानुकः (२ त्रि) 'रोगसे या स्वभावतः घिरल जङ्घावाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'विकलाङ्गस्तु पोगण्डः खर्वो' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं भानुजिदीक्षितेन—

'प्रज्ञुः संतजानुः स्यात्प्रज्ञोऽन्यत्रैव दृश्यते ॥' इति साहसाङ्कः, इति ॥

- १ ऊर्ध्वश्चूर्ध्वजानुः स्यात् २ संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥
 ३ स्यादेडे बधिरः ४ कुब्जे गडुलः ५ कुकरे कुणिः ।
 ६ पृश्निरल्पतनौ ७ श्रोणः पङ्क्तौ ८ मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥
 ९ वलिरः केकरे १० खोडे खञ्ज ११ स्त्रिषु जराऽवराः ।

१२ जडुलः कालकः पिप्लुः—

- १ ऊर्ध्वजुः (+ ऊर्ध्वजः^१), ऊर्ध्वजानुः (२ त्रि), 'बैठनेपर जिसकी जङ्घा ऊपरको उठी रहती हो उस' के २ नाम हैं ॥
 २ संज्ञुः (+ संज्ञः^२), संहतजानुकः (२ त्रि), 'सटे हुए जङ्घा वाले' के २ नाम हैं ॥
 ३ एडः, बधिरः (२ त्रि), 'बहुरा' के २ नाम हैं ॥
 ४ कुब्जः (+ न्युब्जः), गडुलः (+ गडुः । २ त्रि), 'कूबड़ा' के २ नाम हैं ॥
 ५ कुकरः, कुणिः (+ कूणिः । २ त्रि), 'टेढ़े हाथवाले' के २ नाम हैं ,
 ६ पृश्निः (+ पृष्णिः), अल्पतनुः (२ त्रि) छोटे शरीरवाले, नाटा' के २ नाम हैं ॥
 ७ श्रोणः, पङ्क्तुः (२ त्रि), 'पङ्क्तु' के २ नाम हैं ॥
 ८ मुण्डः, मुण्डितः (२ त्रि), 'मुण्डन कराये हुये' के २ नाम हैं ॥
 ९ वलिरः (+ बलिरः), केकरः (+ काचरः, कावरः । २ त्रि), 'पैचकर देखनेवाले' अर्थात् 'एक भौंको ऊंचा और एक भौं को नीचाकर देखनेवाले' के २ नाम हैं ॥
 १० खोडः (+ खोलः, खोरः), खञ्जः (२ त्रि), 'लँगड़ा' के २ नाम हैं ॥
 ११ 'जरा' (२ । १ । ४१) शब्दके बादसे यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं । ('उनमें ग्रन्थकारके कथनानुसार सब शब्दोंको प्रायः पुंलिङ्गमें देकर लिङ्गनिर्देश में त्रिलिङ्ग लिखा गया है, अतः स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गके रूपको स्वयं समझ लेना चाहिये') ॥
 १२ जडुलः (+ जडुलः), कालकः, पिप्लुः (३ पु), 'लहसन' अर्थात् 'जन्म-कालसे ही उत्पन्न शरीरके चिह्न-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

१-२. अथ मा० दी०—

'संज्ञुः संहतजानौ च भवेत्संबोऽपि तत्र द्वि ।

ऊर्ध्वश्चूर्ध्वजानुः स्यादूर्ध्वजोऽप्यूर्ध्वजानुके ॥ १ ॥ इति साइसाङ्गः, इति ॥

—१ तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥

- २ अनामयं स्यादारोग्यं ३ चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।
 ४ भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥ ५० ॥
 ५ स्त्री रुग्रुजा चोपतापरोगन्याधिगदामयाः ।
 ६ क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च ७ प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥
 ८ स्त्री क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि ९ कासस्तु क्ष्वथुः पुमान् ।
 १० शोफस्तु श्वयथुः शोथः ११ पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥
 १२ किलाससिध्मे—

१ तिलकः, तिलकालकः (२ पु), 'तिल' अर्थात् 'काली तिलके समान देहके चिह्न-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ अनामयम्, आरोग्यम् (२ न), 'नीरोग' के २ नाम हैं ॥

३ चिकित्सा, रुक्प्रतिक्रिया (२ स्त्री), 'चिकित्सा' अर्थात् 'रोगको दूर करनेके लिये दवा आदिके सेवन करने' के २ नाम हैं ॥

४ भेषजम्, औषधम्, भैषज्यम् (३ न), अगदः, जायुः (२ पु), 'दवा' के ५ नाम हैं ॥

५ रुक् (= रुज्), रुजा (२ स्त्री), उपतापः, रोगः, व्याधिः, गदः, आमयः (+ आमः । ५ पु), 'रोग' के ७ नाम हैं ॥

६ क्षयः, शोषः, यक्ष्मा (= यक्ष्मन् । + राजयक्ष्मा = राजयक्ष्मन् । ३ पु), 'राजयक्ष्मा (T. B.) रोग' के ३ नाम हैं ॥

७ प्रतिश्यायः (+ प्रतिश्या), पीनसः (+ आपीनसः । २ पु), 'पीनस रोग' के २ नाम हैं ॥

८ क्षुत् (स्त्री), क्षुतम् (न), क्षवः (पु), 'छोँक' के ३ नाम हैं ॥

९. कासः (काशः), क्ष्वथुः (२ पु), 'खाँसी' के २ नाम हैं ॥

१० शोफः, श्वयथुः, शोथः (३), 'शोथ, सूजन' के ३ नाम हैं ॥

११ पादस्फोटः (पु), विपादिका (स्त्री), 'बिवाय' अर्थात् 'पैरके तलवेमें फटनेवाले रोग-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१२ किलासम्, सिध्मम् (+ सिध्मली । ३ न), 'सेहूँआ, सिहुला' के २ नाम हैं ॥

१. 'कासस्तु क्ष्वथुः पुमान्' इति पाठान्तरम् ॥

—१ कच्छां तु पामा पामा विचर्चिका ।

- २ कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया ३ विस्फोटः 'पिटकः स्त्रियाम् ॥ ५३ ॥
 ४ व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे ५ नाडीव्रणः पुमान् ।
 ६ कोठो मण्डलकं ७ कुष्ठश्चित्रे ८ दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥
 ९ आनाहस्तु विबन्धः स्याद् १० ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ।
 ११ प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥ ५५ ॥

१ कच्छः, पामा (= पामन्, + न), पामा, विचर्चिका (४ स्त्री), 'गीली खुजली या खसर' के ४ नाम हैं ॥

२ कण्डूः (+ कण्डूः), खर्जूः, कण्डूया (३ स्त्री), 'खाज् या खुज-लाहट' के ३ नाम हैं ॥

३ विस्फोटः, पिटकः (२ पु स्त्री । स्त्री० में 'विस्फोटा, पिटिका । + विटि-का । + २ त्रि), 'फोड़ा' के २ नाम हैं ॥

४ व्रणः (पु न), ईर्मरु, अरुः (= अरुस् । २ न), 'घाव या व्रण' के ३ नाम हैं ॥

५ नाडीव्रणः (पु), 'सङ्गन' अर्थात् 'सर्वदा पीब बहानेवाले व्रण-विशेष' का १ नाम है ॥

६ कोठः (पु), मण्डलकम् (न) भा० दी० मतसे 'गजकर्ण रोग' अर्थात् 'जिससे शरीरमें गोले २ चकत्ते पड़ जायँ उस रोग' के २ नाम हैं ॥

७ कुष्ठम्, श्वित्रम् (२ न), भा० दी० मतसे 'सफेद कोढ़' अर्थात् 'चरक फूटने' के २ नाम हैं । ('महे० मतसे 'कोठः, ...' ४ नाम 'सफेद कोढ़' ही के हैं) ॥

८ दुर्नामकम्, अर्शः (= अर्शस् । + अर्श । २ न), 'बवासीर' के २ नाम हैं ॥

९ आनाहः, विबन्धः (+ विबन्धः । २ पु), 'जिसमें मल और मूत्र रुक जायँ उस रोग' के २ नाम हैं ॥

१० ग्रहणी (+ ग्रहणिः, ग्रहणीरुक्, = ग्रहणीरुज्) प्रवाहिका (२ स्त्री), 'संग्रहणी' के २ नाम हैं ॥

११ प्रच्छर्दिका, वमिः (+ वमी, स्त्री; वमः, पु । २ स्त्री), वमथुः (पु), 'वमन या उल्टी' के ३ नाम हैं ॥

- १ व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेहभगन्दराः ।
 २ 'श्लीपदं पादवलमीकं ३ केशघ्नस्तिवन्द्रलुप्तकः' (१४)
 ४ अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् ५ पूर्वं शुकावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥
 ६ रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके ।
 ७ 'वार्तो निरामयः कल्य ८ उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

१ विद्रधिः (स्त्री), ज्वरः, मेहः (+ प्रमेहः), भगन्दरः (३ पु), 'पेट आदि कोमल स्थानमें होनेवाला फोड़ा, ज्वर, प्रमेह और भगन्दर' (गुदाके बगलमें होनेवाला व्रण विशेष) का क्रमशः १—१ नाम है । ये सब 'व्याधि भेद' हैं ।

२ [श्लीपदम्, पादवलमीकम् (२ न), 'पीलपाव' अर्थात् 'जिसमें पैरके घुटनेके नीचेका हिस्सा फूलकर बहुत मोटा हो जाय, उस रोग' के २ नाम हैं] ॥

३ [केशघ्नः, इन्द्रलुप्तकः (२ न), 'टुनकी लगना' अर्थात् 'जिसमें शिर आदिके बाल झड़कर गिर जाय, उस रोग' के २ नाम हैं] ॥

४ अश्मरी (स्त्री), मूत्रकृच्छ्रम् (न), 'मूत्रकृच्छ्र' अर्थात् 'जिससे पेशाब करनेमें अत्यन्त कष्ट हो, उस रोग' के २ नाम हैं ॥

५ यहाँसे आगे 'शुक्रम' (२।६।६१) के पहलेवाले सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

६ रोगहारी (= रोगहारिन्), अगदङ्कारः, भिषक् (= भिषज्), वैद्यः, चिकित्सकः (५ पु), 'वैद्य डाक्टर, कविराज, हकीम आदि दवा करने वाले' के ५ नाम हैं । ("स्त्री० स्वा० मतसे 'रोगहारी, अगदङ्कारः' ये २ नाम 'औषध' के भी हैं") ॥

७ वार्तः (+ वान्तः), निरामयः, कल्यः (+ नीरोगः । ३ त्रि), महे० मतसे 'नीरोग' के ३ नाम हैं ॥

८ उल्लाघः (त्रि), महे० मनसे 'रोगसे शीघ्र ही छुटे हुए' का १ नाम है । ("भा० दी० मनसे 'वार्तः,' ४ नाम 'नीरोग' के ही हैं") ॥

१. अयं क्षेपकांशः स्त्री० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

२. 'वान्तो निरामयः' इति पाठान्तरम् । अत्र मूलपाठ एव युक्तः, अग्रे (नानार्थवर्गे) 'वार्तं फरगुन्यरोगे च त्रिषु' (१।३।७६) इति स्वयं वक्ष्यमाणत्वात्, '—वार्तं त्वारोग्यारोग-फल्यु' (अने० संग्र० २।१९४) इति हैमोक्तेश्चेत्यवधेयम् ॥

- १ ग्लानग्लान् २ आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।
आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः ३ समौ पामनकच्छुरौ ॥ ५८ ॥
- ४ दद्रुणो दद्रुरोगी स्यात् ५ दर्शोरोगयुतोऽर्शसः ।
- ६ वातकी वातरोगी स्यात् ७ सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥
- ८ स्युः क्लिन्नाक्षे चुलुचिल्लपिल्लाः क्लिन्नेऽक्षिण चाप्यमी ।
- ९ उन्मत्त उन्मादवति १० श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफौ ॥ ६० ॥

१ ग्लानः, ग्लान्नुः (२ त्रि), 'रोगसे स्त्रिन्' के २ नाम हैं ॥

२ आमयावी (= आमयाविन्), विकृतः, व्याधितः, अपटुः, आतुरः, अभ्यमितः, अभ्यान्तः (+ रोगी = रोगिन् । ७ त्रि), 'रोगी' के ७ नाम हैं ॥

३ पामनः (+ पामरः), कच्छुरः (२ त्रि), 'गीली खुजलीवाले या खसरा रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

४ दद्रुणः (+ दद्रूणः, दद्रूणः, दद्रूणः), दद्रुरोगी (= दद्रुरोगिन् । + दद्रु'रोगी = दद्रु'रोगिन् । २ त्रि), 'दाद रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

५ अर्शोरोगयुतः (भा० दी०), अर्शसः (२ त्रि), 'बवासीर रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

६ वातकी (+ वातकिन्), वातरोगी (= वातरोगिन् । २ त्रि), 'वात रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

७ सातिसारः, अतिसारकी (= अतिसारकिन् । + अतीसारकी = अतीसारकिन् । २ त्रि), 'अतिसार रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

८ क्लिन्नाक्षः (महे०), चुल्लः, चिल्लः, पिल्लः, (४ त्रि), 'कीचरसे युक्त आँखवाले, के ४ नाम हैं । प्रथम 'क्लिन्नाक्ष' शब्दको 'छोड़कर शेष ३ नाम (चुल्लम्, चिल्लम्, पिल्लम् ; ३ न), 'कीचरसे युक्त आँख' के हैं । ('चुल्लः, चिल्लः, पिल्लः, ३ त्रि), 'आँखसे कीचर निकलनेवाले रोग-विशेष' के भी ३ नाम हैं') ॥

९ उन्मत्तः, उन्मादवान् (= उन्मादवत् । + उन्मादी = उन्मादिन् । २ त्रि), 'पागल, उन्मादके रोगी' के २ नाम हैं ॥

१० श्लेष्मलः, श्लेष्मणः, कफौ (= कफिन् । ३ त्रि), 'कफवाले रोगी' के ३ नाम हैं ॥

- १ न्युब्जो भुग्ने रुजा २ वृद्धनाभौ 'तुण्डिलतुण्डिभौ ।
 ३ किलासी सिध्मलोऽऽन्धोऽदृक्^४ मूर्च्छाले मूर्त्तमूर्च्छितौ ॥ ६१ ॥
 ६ शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ।
 ७ मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा ९ स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥
 १० पिशितं तरसं मांसं पल्लं कव्यमामिषम् ।
 ११ उत्तमं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥

- १ न्युब्जः (त्रि), 'रोगसे कुबड़ा' का १ नाम है ॥
 २ वृद्धनाभिः, तुण्डिलः (+ तुन्दिलः), तुण्डिभः (+ तुन्दिभः । ३ त्रि),
 'ढोंढर' अर्थात् 'कब्ज आदिके कारण बढ़े हुए नाभिवाले' के ३ नाम हैं ॥
 ३ किलासी (= किलासिन्), सिध्मलः (२ त्रि), 'मिहुला, सेंहुआ
 या पपड़ीवाले रोगी' के २ नाम हैं ॥
 ४ अन्धः, अदृक् (= अदृश् । २ त्रि), 'अन्धा, सूर' के २ नाम हैं ॥
 ५ मूर्च्छालः, मूर्त्तः, मूर्च्छितः (३ त्रि), 'मूर्च्छा या मृगो रोगवाले'
 के ३ नाम हैं ॥
 ६ शुक्रम, तेजः (= तेजस्), रेतः (= रेतस्), बीजम् (+ बीजम्),
 वीर्यम्, इन्द्रियम् (६ न), 'वीर्य' अर्थात् 'मनुष्यके शरीरस्थ स्निग्ध तथा
 श्वेतवर्ण धातु' के ६ नाम हैं ॥
 ७ मायुः (पु), पित्तम् (न), 'पित्त' के २ नाम हैं ॥
 ८ कफः, श्लेष्मा (= श्लेष्मन् । २ पु), 'कफ' के २ नाम हैं ॥
 ९ त्वक् (= त्वच् । + त्वचः, पुः + त्वचा, स्त्री), असृग्धरा (+ असृ-
 ग्धारा । २ स्त्री), 'चमड़ा' के २ नाम हैं ॥
 १० पिशितम्, तरसम्, मांसम्, पल्लम्, कव्यम्, आमिषम् (६ न),
 'मांस' के ६ नाम हैं ॥
 ११ उत्तमम्, शुष्कमांसम् (२ न), वल्लरम् (+ वल्लुरम् । त्रि), 'सूखे
 मांस' के ३ नाम हैं ॥

१. 'तुन्दिलतुन्दिभौ' इति पाठान्तरम् । अत्र मूलपाठ एव समोचीनः, यतः 'तुण्डिलश्च-
 तनाभिस्तुन्दिस्तु जठरः' इति श्लो० स्वा० उक्त्या वृद्धनाभियुक्तस्यैव पर्यायतौचित्यप्रतीतिः ॥

२. अत्र नैरुक्ताः—'मांसं मक्षयितामुन्नयस्य मांसमिहादस्यइम् ।

पतन्मांसस्य मांसत्वे निरुक्तं मुनिरब्रवीत्' ॥ १ ॥ इति श्लो० स्वा० ॥

- १ रुधिरंऽसृग्लोहिताम्बरक्तक्षतजशोणितम् ।
 २ वुक्काऽग्रमांसं ३ हृदयं हृद् ४ मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥
 ५ पश्चाद् ग्रीवाशिरा मन्या ६ नाडी तु धमनिः शिरा ।
 ७ तिलकं क्लोमं ८ मस्तिष्कं गोदं ९ किट्टं प्रलोऽस्त्रिधाम् ॥ ६५ ॥

१ रुधिरम्, असृक् (= असृज्), लोहितम्, अम्ब्रम्, रक्तम्, क्षतजम्, शोणितम्. (७ न), 'रक्त, खून' के ७ नाम हैं ॥

२ वुक्का (स्त्री । + वुक्का = वुक्कन्, पु । + वुक्का, वृक्का; २ स्त्री), अग्रमांसम् (न । + वुक्काग्रमांसम्, न) 'क्लोजा' अर्थात् 'हृदयके भीतरवाले कमलके समानाकार मांस-पिण्ड-विशेष' के २ नाम हैं ॥

३ हृदयम्, हृत् (= हृद् । २ न), 'हृदय' के २ नाम हैं ।
 ("वुक्का....." १३ ४ नाम 'हृदय' के हैं, किसीका यह भी मत है) ॥

४ मेदः (= मेदस् । + मेदः । न) वपा, वसा (२ स्त्री), 'चर्बी' के ३ नाम हैं ॥

५ मन्या (स्त्री), 'गर्दनके पीछेवाली नस' का १ नाम है ॥

६ नाडी, धमनिः (= धमनी), शिरा (+ सिरा । ३ स्त्री), 'नस' के ३ नाम हैं ॥

७ तिलकम्, क्लोम (= क्लोमन् । २ न), 'पेटमें जल रहनेके स्थान' के २ नाम हैं ॥

८ मस्तिष्कम् (+ मस्तिष्कम्), गोदम् (+ गोदः, पु । २ न), 'दिमाग, मस्तिष्क, माइण्ड' के २ नाम हैं ॥

९ किट्टम् (न), मलम् (पु न), 'नाक, कान आदिके 'बारह मल' के २ नाम हैं ॥

१. "सिरा" इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—“पञ्चकोशप्रतीकांश्च रुचिरं चाप्यधोलुखम् ।

हृदयं तद्विज्ञानीयादिश्वस्थायतनं महत्” ॥ १ ॥ इति ॥

३. 'पञ्चकोशप्रतीकांश्च...' इत्यनुरोधादिदमेव समीचीनं प्रतिभाति ॥

४. तदुक्तं मनुना—'वसा शुक्रमसृक्मज्जा मूत्रविड प्राणकर्णविट् ।

श्लेष्माश्च दूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः' ॥ १ ॥ इति मनुः ५।१३५

- १ अन्त्रं पुरीतद् २ गुल्मस्तु प्लीहा पुंस्य ३ थ वस्नसा ।
 स्नायुः स्त्रियां ४ कालखण्डयकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥
 ५ सृणिका स्यन्दिनी लाला ६ दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।
 ७ 'नासामलं तु सिङ्घाणं ८ पिञ्जुषः कर्णयोर्मलम्' (१५)
 ९ मूत्रं प्रस्राव १० उच्चारवस्करौ शपलं शकृत् ॥ ६७ ॥
 'पुरीषं गूयवर्चस्कमस्त्री विष्टाविशौ स्त्रियौ ।

- १ अन्त्रम् (+ आन्त्रम्), पुरीतत् (२ न), 'अँत' के २ नाम हैं ॥
 २ गुल्मः, प्लीहा (= प्लीहन् । + प्लीहा = प्लीहा, स्त्री । २ पु),
 'गुल्म रोग' अर्थात् 'हृदय को दायाँ कोखमें होनेवाले मांस-पिण्ड-विशेष' के
 २ नाम हैं ॥
 ३ वस्नसा, स्नायुः (२ स्त्री), 'प्रत्येक अङ्ग-उपाङ्गके जोड़की नस'
 के २ नाम हैं ॥
 ४ कालखण्डम् (+ कालखण्डम्), यकृत् (२ न), 'यकृत्' अर्थात्
 'हृदयकी दाहिनी कोखमें होनेवाले मांस-पिण्ड-विशेष' के २ नाम हैं ॥
 ५ सृणिका (+ सृणिका), स्यन्दिनी, लाला (३ स्त्री), 'लार' के
 ३ नाम हैं ॥
 ६ दूषिका (+ दूषिका । स्त्री), 'कीचर' का १ नाम है ॥
 ७ [नासामलम्, सिङ्घाणम् (२ न), 'नकटी, नेठा' अर्थात् 'नाककी
 मैल' के २ नाम हैं] ॥
 ८ [पिञ्जुषम् (न), 'खोंट' अर्थात् 'कानकी मैल' का १ नाम है ॥]
 ९ मूत्रम् (न), प्रस्रावः (पु), 'पेशाब' के २ नाम हैं ॥
 १० उच्चारः, अवस्करः (२ पु), शपलम्, शकृत्, पुरीषम् (३ न),

अत्र भा० दी० तु 'कर्णविण्मूत्रविण्मखाः' इत्येवं तद्विभ्रमेव द्वितीयचरणमाहस्यवधेयम् ॥
 प्रसङ्गादेतेषां निर्गमस्थानानि गरुडपुराणोक्तानि लिख्यन्ते —

"द्वारैर्द्वादशभिर्मित्रं किट्टं देहादहिः स्रवेत् ।

कर्णाक्षिनासिका जिह्वा दन्ता नाभिर्नखा गुदम् ॥

पुच्छं शिरा वपुर्लोम मलस्थानानि चक्षते ॥ इति ग० पु० १५ । ६०-६१ ॥

१. 'पुरीषं गूयं वर्चस्कमस्त्री विष्टाविशौ स्त्रियौ' इति "गूयं पुरीषं वर्चस्कमस्त्री विष्टाविशौ
 स्त्रियौ" इति च कमङः स्त्री० स्वा० भा० दी० सम्मते पाठान्तरे ॥

- १ स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री २ कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥
- ३ स्याच्छरीरास्थि कङ्कालः ४ पृष्ठास्थि तु कशेरुका ।
- ५ शिरोऽस्थिनि करोटिः स्त्री ६ पार्श्वास्थिनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥
- ७ अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनो ८ स्य कलेवरम् ।
गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्म विग्रहः ॥ ७० ॥
कायो देहः कर्तावपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ।
- ९ पादाग्रं प्रपदं १० पदः 'पदङ्घ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

गूयम्, वर्चस्कम् (२ पु न), विष्टा, विट् (=विश् । + विट् = विष् । स्त्री),
'विष्टा, पाखाना' के ९ नाम हैं ॥

१ कर्परः (पु), कपालः (पु न) 'कपाल' के २ नाम हैं ॥

२ कीकसम्, कुल्यम्, अस्थि (३ न), 'हड्डी' के ३ नाम हैं ॥

३ (+ शरीरास्थि न), कङ्कालः (+ कङ्कः । पु), 'कङ्काल' ठठरी'
का १ नाम है ॥

४ (+ पृष्ठास्थि न), कशेरुका (+ कशेरुका । स्त्री), 'रीढ़' अर्थात्
'पीठके बीचकी हड्डी' का १ नाम है ॥

५ (+ शिरोऽस्थि न), करोटिः (+ करोटी । स्त्री), 'खोपड़ी' का
१ नाम है ॥

६ (+ पार्श्वास्थि, न), पर्शुका (+ पर्शुः । स्त्री), 'पँजड़ी' का १ नाम है ॥

७ अङ्गम् (न), प्रतीकः, अवयवः, अपघनः (३ पु), 'शरीरके अङ्ग'
के ४ नाम हैं । ('जैसे—हाथ, पैर, शिर, मुख,') ॥

८ कलेवरम्, गात्रम्, वपुः (= वपुष्), संहननम्, शरीरम्, वर्म
(= वर्मन् । ३ न), विग्रहः, कायः (२ पु), देहः (पु न), मूर्तिः, तनुः
(+ तनुः = तनुस्), तनूः (३ स्त्री), 'शरीर, देह' के १२ नाम हैं ॥

९ पादाग्रम्, प्रपदम् (२ न), 'पैरका चौवा' अर्थात् 'पैरके आगेवाले
हिस्से' के २ नाम हैं ॥

१० पादः, पद् (= पद् + पदः), अङ्घ्रिः (३ पु), चरणः (पु न),
'पैर' के ४ नाम हैं ॥

- १ तद्वग्रन्थी घुटिके गुल्फौ २ पुमान्पाणिस्तयोरधः ।
 ३ जङ्घा तु प्रसृता ४ जानूरुपर्वाऽष्टीवदस्त्रियाम् ॥ ७२ ॥
 ५ सक्थि क्लीवे पुमानूरु ६ स्तत्सन्धिः पुंसि वङ्गणः ।
 ७ गुदं त्वपानं पायुर्ना ८ वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥
 ९ कटी नाश्रोणिफलकं १० कटिः श्रोणिः ककुभती ।
 ११ पश्चाच्चितम्बः स्त्रीकट्याः १२ क्लीवे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥
 १३ कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयद्वाते कुकुन्दरे ।

- १ घुटिका (स्त्री), गुल्फः (पु), 'पैरकी घुट्टी' के २ नाम हैं ॥
 २ पाणिः (पु), 'पैरकी घुट्टीके नीचेवाले हिस्से' का १ नाम है ॥
 ३ जङ्घा, प्रसृता (२ स्त्री), 'जंघा' के २ नाम हैं ॥
 ४ जानु, ऊरुपर्वा (= ऊरुपर्वन् । २ न), अष्टीवत् (पु न । भा० दी० मतसे ३ पु न), 'घुटना, ठेहुन' के ३ नाम हैं ॥
 ५ सक्थि (= सक्थिन् न), ऊरुः (पु), 'घुटनेके ऊपरवालो हिस्से' के २ नाम हैं ॥
 ६ वङ्गणः (पु), 'घुटना तथा उसके ऊपरके जोड़' का १ नाम है ॥
 ७ गुदम्, अपानम् (२ न), पायुः (पु), 'पाखानाके रास्ता' के २ नाम हैं ॥
 ८ वस्तिः (पु स्त्री) 'मूत्राशय' का १ नाम है ॥
 ९ कटः (पु), श्रोणिफलकम् (न, भा० दी०), कमरके दोनों बगल' के २ नाम हैं ॥
 १० कटिः (+ कटी), श्रोणिः (+ श्रोणी), ककुभती (३ स्त्री), 'कमर' के ३ नाम हैं । ('अन्याचार्योक्तं मतसे 'कटः,' ५ नाम 'कमर' के हैं') ॥
 ११ नितम्बः (पु) 'स्त्रियों के चूतड़' का १ नाम है ॥
 १२ जघनम् (न), 'स्त्रियोंकी जंघा' का १ नाम है ॥
 १३ + कूपकः (पु), कुकुन्दरम् (+ कुकुन्दरम् । न) 'चूतड़पर पृष्ठ-वंशके नीचेवाले गढ़े' के २ नाम हैं ॥

- १ स्त्रियां स्फिचौ 'कटीप्रोथाऽवुपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥
- ३ भगं योनिर्द्वयोः ४ शिश्नो मेढ्रो 'मेहनशेफसी ।
- ५ मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः ६ पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥
- ७ 'पिचण्डकुक्षी जठरादरं तुन्दं ८ स्तनौ कुचौ ।
- ९ 'चूचुकं तु कुचाग्रं स्याद् १० न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥

१ स्फिक् (= स्फिच्, स्त्री) कटीप्रोथः (+ कटीप्रोथः, कटिः) प्रोथः, प्रोहः । पु), 'कुल्हा' अर्थात् 'कमरमें होने वाले मांस-पिण्ड के २ नाम हैं ॥

२ उपस्थः (पु न) 'भग और लिंग' अर्थात् 'स्त्री या पुरुषके पेशाब करनेके रास्ता' का १ नाम है ॥

३ भगम् (न), योनिः (पु स्त्री) 'स्त्रीके पेशाब करनेके रास्ता' के २ नाम हैं ॥

४ शिशनः, मेढ्रः (२ पु), मेहनम्, शेफः (= शेफस्, शेपः = शेपस्, शेफः = शेफ, शेपः = शेप' । २ न), 'शिशन, पुरुषके पेशाब करनेके रास्ता' के ४ नाम हैं ॥

५ मुष्कः, अण्डकोशः (+ अण्डकोषः), वृषणः (३ पु), 'अण्डकोश, फोता' के ३ नाम हैं ॥

६ त्रिकम् (न), 'पीठकी रीढ़के आधारपर तीन हड्डियोंके जोड़वाले स्थान-विशेष' का १ नाम है ॥

७ पिचण्डः (+ पिचिण्डः), कुक्षिः (२ पु), जठरम् (+ पु), उदरम्, तुन्दम् (३ न), 'पेट' के ५ नाम हैं ॥

८ स्तनः, कुचः (+ पयोधरः वक्षोजः । २ पु), 'स्तन' के २ नाम हैं ॥

९ चूचुकम् (+ चुचुकम् । + पु), कुचाग्रम् (२ न) 'स्तनके ऊपर वाले काले भाग' के २ नाम हैं ॥

१० क्रोडम् (न स्त्री), भुजान्तरम् (+ अङ्गम् । न), 'गोदी' के २ नाम हैं ॥

१. 'कटीप्रोथावुपस्थो' इति पाठान्तरम् । पृथक् नामद्वयमिति मते तु 'कटी प्रोथावुपस्थो' इति पाठान्तरम् ॥

२. मेहनशेफसी' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पिचिण्डकुक्षी' इति पाठान्तरम् ॥

४. चुचुकं तु' इति पाठान्तरम् ॥

५. 'शेफशेप' शब्दयोरदन्तत्वादेव 'शेपपुच्छलाङ्गूलेषु शुनः' (वा० ३९०२) इति वार्तिकसङ्गतिरन्यथा सान्तरत्वे मध्ये विसर्गस्यापि वक्तुमौचित्यम् ॥

- १ तद्वत्
- २ जङ्घा
- ५ सवि
- ७ गुदे
- ९ कट
- ११ प
- १३ द

- १ घु
- २ पा
- ३ ज
- ४ व
- मतसे ३
- ५
- के २ न
- ६
- ७
- २ ना

१ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 २ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 ३ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 ४ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 ५ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'

१ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 २ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 ३ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'

१ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 २ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 ३ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'

१ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 २ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 ३ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'

१ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 २ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 ३ 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'

- के २
- के

१. 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 २. 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'
 ३. 'रवी' नाम का अर्थ है 'पूत' न 'वर्ष'

- १ उरो वरसं च वक्षश्च २ पृष्ठं तु चरमं तनोः ।
 ३ स्कन्धो भुजशिरोऽसोऽस्त्री ४ सन्धी तस्यैव जघुणी ॥ ७८ ॥
 ५ बाहुमूलं उभे कक्षौ ६ पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।
 ७ मध्यमं चाग्रलग्नं च मध्योऽस्त्री ८ द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥
 भुजबाहू प्रवेष्टा दोः स्यात् ९ कफोणिस्तु कूर्परः ।

१ उरः (= उरस्), वरसम्, वक्षः (= वक्षस् । ३ न), 'छाती' के ३ नाम हैं । ('कोष्ठम्',) ५ नाम 'छाती' के हैं, यह अन्य आचार्यों का मत है) ॥

२ पृष्ठम् (न), 'पीठ' का १ नाम है ॥

३ स्कन्धः (पु), भुजशिरः (= भुजशिरस्, न), अंसः (पु न), 'कन्धे' के ३ नाम हैं ॥

४ जघु (न) 'कन्धे के जोड़' का १ नाम है ॥

५ बाहुमूलम् (न), कक्षः (+ कक्षयः । पु), 'कॉख' के २ नाम हैं ॥

६ पार्श्वम् (न पु), 'कोख' अर्थात् 'कॉख के नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥

७ मध्यमम्, अवलग्नम् (+ विलग्नम् । २ न), मध्यः (पु न । + ३ पु न) 'शरीरके मध्य भाग' के ३ नाम हैं ॥

८ भुजः, बाहुः (+ बाहः । २ पु स्त्री), प्रवेष्टः, दोः (= दोस् । + दोषा, स्त्री भागु० । २ पु), 'बाँह' के ४ नाम हैं ॥

९ कफोणिः (+ कफणिः, कपोनिः । पु स्त्री) कूर्परः (+ कर्परः । पु) 'कैहुनी' के २ नाम हैं ॥

१. 'स्यात्कफोणिस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. —मध्यमो मध्यजेऽन्यवत् । पुमान् स्वरे मध्यदेशेऽप्यवकर्त्तुं तु न स्त्रियाम्' (मेदि० पृ० ११८ श्लो० ४९-५०) इति 'अवकर्त्तुः स्त्रियां मध्ये त्रिषु स्याल्लग्नमात्रके' (मेदि० पृ० १०० श्लो० ५०) इति मेदिन्युक्ते 'अस्त्री' इत्यस्य त्रिभिः सम्बन्धः समीचीनः प्रतिभातीत्यवश्यम् ॥

३. 'कफोणिः कफनिर्द्वयोः' इति शब्दार्णवात् 'कफणिः कूर्परः स्मृतः' (अभि० रत्न० २ ३७८) इति इत्याद्युपाच्येत्यवश्यम् ॥

- १ अस्योपरि प्रगण्डः स्यात् २ प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥
 ३ मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः ।
 ४ पञ्चशाखः शयः पाणि ५ स्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥
 ६ अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः ७ पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी ।
 मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥
 ८ पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।
 ९ प्रादेश—

१ प्रगण्डः (पु) 'केहुनीके ऊपरवाले भाग' का १ नाम है ॥
 २ प्रकोष्ठः (पु । + न), 'केहुनीके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥
 ३ करभः (पु), 'हाथकी कलाईसे कनिष्ठातकवाले बाहरी मांसल भाग' का १ नाम है ॥

४ पञ्चशाखः, शयः (+ शभः, शवः), पाणिः (३ पु), 'हाथ' के ३ नाम हैं ॥
 ५ तर्जनी, प्रदेशिनी (+ प्रदेशनी । २ स्त्री), 'तर्जनी' अर्थात् 'अँगूठेके पासवाली अँगुली' के २ नाम हैं ॥

६ अङ्गुली (+ अङ्गुलिः, अङ्गुरिः, २ स्त्री; अङ्गुलः, पु), करशाखा (२ स्त्री), 'अङ्गुली' के २ नाम हैं ॥

७ अङ्गुष्ठः (पु), प्रदेशिनी (+ प्रदेशनी), मध्यमा, 'अनामिका', कनिष्ठा (४ स्त्री), अँगूठेसे लेकर कनिष्ठा तकवाली प्रत्येक अङ्गुली का क्रमशः १-१ नाम है ॥

८ पुनर्भवः (+ पुनर्नवः), कररुहः (२ पु), नखः, नखरः (+ त्रि । २ पु न), 'नाखून' 'नैह' के ४ नाम हैं ॥

९ प्रादेशः (पु), 'फैलाये हुए तर्जनी और अँगूठे बीचके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

१. 'शमः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशनी' इति पाठान्तरम् । नाममात्रा तु 'पाणिः शयः शमी हस्तः' इत्युभयं पपाठ' इति स्त्री० स्वी० ॥

२. 'पुनर्नवः' इति पाठान्तरम् ॥

३. अनया ब्रह्मणश्शिरश्छेदनादपवित्रत्वेन नामग्रहणायोग्यतया 'अनामिका' इति नाम्नः प्रसिद्धिः । अत एव यथायवसरेऽस्यां दर्भमयं पत्रिं धार्यत इत्यवधेयम् ॥

—१ ताल२गोकर्णास्तर्ज्जन्यादियुने तते ॥ ८३ ॥

३ अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः ।

४ पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृताङ्गुलौ ॥ ८४ ॥

५ द्वौ संहतौ सिंहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ।

६ पाणिनिकुञ्जः प्रसृति ७ स्तौ युतावज्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥

८ प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो ९ मुष्ट्या तु बद्ध्या ।

सरलिः स्या १० दरलिस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

१ तालः (पु), 'फैलाये हुए मध्यमा और अँगूठेके बीचके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

२ गोकर्णः (पु), 'फैलाये हुए अनामिका और अँगूठेके बीचके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

३ वितस्तिः (पु स्त्री), द्वादशाङ्गुलः (भा० दी०, पु), 'विस्तार' अर्थात् फैलाये हुए कनिष्ठा और अँगूठेके बीचके प्रमाण-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ चपेटः (+ चर्पटः, पु, + चपेटा, चपेटिका; २ स्त्री), प्रतलः (+ तलः, तालः), प्रहस्तः (३ पु), 'थपपड़, चटकन, के ३ नाम हैं ॥

५ सिंहतलः (+ संहतलः, सिंहतालः), प्रतलः (२ पु) 'अङ्गुली फैलाये हुए दोनों हाथोंको सटाने' के २ नाम हैं ॥

६ प्रसृतिः (स्त्री । + प्रसृतः, पु), 'टेढ़े किये (समेटे) हुए हाथ' का १ नाम है ॥

७ अज्जलिः (पु), 'अज्जलि' का १ नाम है ॥

८ हस्तः (पु) 'एक हाथ' अर्थात् 'दा विस्तार या चौबीस अङ्गुलके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

९ रलिः (+ सरलिः । पु स्त्री), 'निमूठ (मुट्ठीका बाँधकर) हाथसे नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

१० अरलिः (स्त्री पु), 'कनिष्ठा अङ्गुलीको फैलाये हुए मुट्ठी बाँधकर हाथसे नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

१. द्वौ संहतौ सिंहतलः प्रतलौ' इति मुकु० सम्मतं पाठान्तरम् । 'द्वौ संहतौ सिंहतलप्रतलौ' इति च पाठान्तरम् ॥ २. 'पाणिनिकुञ्जः' इत्यपपाठः' इति श्री० स्या० ॥

- १ व्यामो बाह्योः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ।
- २ ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥
- ३ कण्ठो गलो ४ ऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि ।
- ५ कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा ६ ऽवदुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥
- ७ वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।
- ८ क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥
- ९ ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ।

१ व्यामः (पु), 'दानों तरफ दानों हाथोंको फैलाकर नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

२ पौरुषम् (त्रि), 'पौरसासे नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है । ('खदे होकर हाथको ऊपर उठानेपर जो प्रमाण होता है, उसे 'पौरसा' कहते हैं, यह ४½ हाथका होता है') ॥

३ कण्ठः, गलः, (२ पु), 'कण्ठ' के २ नाम हैं ॥

४ ग्रीवा, शिरोधिः, कन्धरा (३ स्त्री), 'गर्दन' के ३ नाम हैं ॥

५ कम्बुग्रीवा (स्त्री), 'शङ्खके समान तीन रेखावाली गर्दन' का १ नाम है ॥

६ अवदुः, घाटा, कृकाटिका (३ स्त्री), 'घाँटी' के ३ नाम हैं । ('मा० दी० मतसे 'गर्दनके ऊपरवाले भाग' के और स्वा० सु० मतसे 'गर्दनके पीछेवाले भाग' के ये ३ नाम हैं') ॥

७ वक्त्रम्, आस्यम्, वदनम्, तुण्डम्, आननम्, लपनम्, 'मुखम् (७ न), 'मुखके बिल' के और उपचारसे 'मुखमात्र' के ७ नाम हैं ॥

८ घ्राणम् (न), गन्धवहा, घोणा, नासा (+ नसा, नस्या), नासिका (+ कुत्वा, सिद्धाणी । ४ स्त्री), 'नाक' के ५ नाम हैं ॥

९ ओष्ठः, अधरः, रदनच्छदः (३ पु), दशनवासः (= दशनवासस्, न), 'ओठ' के ४ नाम हैं ॥

१. मुखशब्दस्य साधुत्वप्रकारो निरुक्ते प्रोक्तस्तथा हि—

'प्राक्खनो मुहुदात्तश्च ततोऽच्च प्रत्ययो भवेत् ।

प्रजासृजा यतः खातं तस्मादाहुर्मुखं बुधाः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ अधस्ताच्चिबुकं २ गण्डौ कपोलौ ३ तत्परा हनुः ॥ ९० ॥
 ४ रदना दशना दन्ता रक्षा ५ स्तालु तु काकुदम् ।
 ६ रसज्ञा रसना जिह्वा ७ प्रान्ताबोष्ठस्य* सुक्लिणी ॥ ९१ ॥
 ८ ललाटमलिकं गोधि ९ कर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ।
 १० कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं ११ तारकाऽक्ष्णः कनीनिका ॥ ९२ ॥
 १२ लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुर्माक्षणी ।

दृग्दृष्टी—

- १ चिबुकम् (न), 'ओठ और ठुड्ढीके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ।
 २ गण्डः, कपोलः (+ कटः । २ पु), 'गाल' के २ नाम हैं ॥
 ३ हनुः (स्त्री), 'दाढ़ी, ठुड्ढी' का १ नाम है ॥
 ४ रदनः, दशनः, दन्तः (+ दंष्ट्रा, स्त्री), रदः (४ पु), 'दाँत' के ४ नाम हैं ॥
 ५ तालु, काकुदम्, (२ न), 'तालु' के २ नाम हैं ॥
 ६ रसज्ञा, रसना (+ रशना । + न), जिह्वा (+ लोला । ३ स्त्री) 'जीभ' के ३ नाम हैं ॥
 ७ सुक्लिणी (= सुक्लिणी स्त्री । + सुक्लिणी = सुक्लिणी स्त्री; सुक्लि = सुक्लिन्, = सुक्लि; सुक्लि = सुक्लिन्; सुक्लिम् = सुक्लि, सुक्लि = सुक्लिन्, = सुक्लि; सुक्लि = सुक्लिन्; सुक्लिम् = सुक्लि; ८ न), 'ओठके दोनों किनारों' का १ नाम है ॥
 ८ ललाटम्, अलिकम् (= अलीकम्, भालम् । २ न), गोधिः (पु), 'ललाट' के ३ नाम हैं ॥
 ९ भ्रूः (स्त्री), 'भौंह' का १ नाम है ॥
 १० कूर्चम् (न पु), 'दोनों भौंहके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥
 ११ तारका, कनीनिका (भा० दो०, स्त्री० स्वा० । २ स्त्री) 'आँखकी पुतली' के २ नाम हैं ॥
 १२ लोचनम् (+ विलोचनम्), नयनम्, नेत्रम्, ईक्षणम्, चक्षुः (= चक्षुस्), अक्षि (६ न), दृक् (= दृश्), दृष्टिः (२ स्त्री), 'आँख' के ८ नाम हैं ॥

१. सुक्लिणी” इति पाठान्तरम् ॥

२. यथाऽऽह श्रीहर्षः—“पित्तेन दूने रसने....” इति नैषधः ॥ ३।१४४ ॥

—१ चासु नेत्राम्बु रोदनं चास्त्रमश्रु च ॥ ९३ ॥

२ अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ ३ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।

४ कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

५ उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्ध्ना ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ।

६ चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥

७ तद्वृन्दे कैशिकं कैश्य ८ मलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।

९ तेललाटे अमरकाः १० काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

१ असु, नेत्राम्बु, रोदनम्, अस्त्रम्, अश्रु (+ बाष्पम् । ५ न), 'आँसू' के ५ नाम हैं ॥

२ अपाङ्गः (पु), 'आँसू'के किनारेवाले भाग' का १ नाम है ॥

३ कटाक्षः (पु), (+ अपाङ्गदर्शनम्, न), 'कटाक्ष' का १ नाम है ॥

४ वर्णः, शब्दग्रहः (२ पु), श्रोत्रम्, श्रुतिः (स्त्री) श्रवणम्, श्रवः (= श्रवस् । शेष ३ न), 'कान' के ६ नाम हैं ॥

५ उत्तमाङ्गम् (+ वराङ्गम्), शिरः (= शिरस् । + शिरः = शिर, १ पु), शीर्षम् (३ न), मूर्ध्ना (= मूर्धन्, पु); मस्तकः (पु न), 'सिर' मस्तक' के ५ नाम हैं ॥

६ चिकुरः (+ चिकुरः, चिहुरः^१), कुन्तलः, बालः (+ बालः), कचः, केशः, शिरोरुहः (+ शिरसिजः, मूर्धजः । ६ पु), 'केश, बाल' के ६ नाम हैं ॥

७ कैशिकम्, कैश्यम् (२ न), 'केशके समूह' का १ नाम है ॥

८ अलकः, चूर्णकुन्तलः (२ पु), 'अँगूठिया बाल' के २ नाम हैं ॥

९ अमरकः (पु), 'काकुल' अर्थात् 'बुलबुली यानी ललाटपर लटके हुए बाल' का १ नाम है ।

१० काकपक्षः, शिखण्डकः (+ शिखाण्डकः । २ पु), 'काकपक्ष' अर्थात् 'लक्ष्मीका जूड़ा, जुलुफी, शिखा-सामान्य के २ नाम हैं ॥

१. "शिरोवाची शिरोऽबन्तो रजोवाची रजस्तथा" इत्युक्तेरिति बोध्यम् ॥

२. 'कुन्तला मूर्धजाः शस्ताश्चिकुराश्चिहुरास्तथा' इति दुर्गोक्तेः । किन्तु 'चिहुर'शब्दस्य प्राकृत एव बाहुल्येन प्रयोग उपलभ्यते न तु संस्कृत इत्यवधेयम् ॥

३. "क्षत्रियाणां चूडा 'काकपक्ष' इति गोडः इति क्षी० स्वा० ॥

- १ 'कवरी केशवेशोऽ २ य धम्मिल्लः संयताः कचाः ।
 ३ शिखा चूडा केशपाशी ४ 'व्रतिनस्तु जटा सटा ॥ ९७ ॥
 ५ वेणिः प्रवेणी ६ शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ।
 ७ पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्याः कचात्परे ॥ ९८ ॥
 ८ तनूरुहं रोम लोम ९ तद्वृद्धौ श्मश्रु पुंमुखे ।
 १० आकल्पवेषौ नेपथ्यं—

१ कवरी (+ कवरी । स्त्री), केशवेशः (+ केशवेषः । पु), 'बालके रचना-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ धम्मिल्लः (पु), 'पटिया, जूड़ा' अर्थात् 'बाँधि हुए छिरियोंके बालके रचना-विशेष' का १ नाम है ॥

३ शिखा, चूडा, केशपाशी (३ स्त्री), 'शिखा, चुटिया, चुन्नी' के ३ नाम हैं ॥

४ जटा, सटा (२ स्त्री), 'जटा' अर्थात् 'आपसमें सटे हुए बाल या ऋषियोंकी जटा या जटामात्र' के २ नाम हैं ॥

५ वेणिः (+ वेणी), प्रवेणी (+ प्रवेणिः । २ स्त्री), 'बालकी गुथी हुई चोटी' के २ नाम हैं ॥

६ शीर्षण्यः, शिरस्यः (२ पु), 'निर्मल बाल' के २ नाम हैं ॥

७ पाशः, पक्षः, हस्तः (३ पु), ये तीन शब्द 'कच' शब्दसे परे रहने पर अर्थात् 'कचपाशः, कचपक्षः, कचहस्तः, (३ पु), या कच (केश) के पर्याय-वाचक शब्दसे परे रहने पर अर्थात् केशपाशः, केशपक्षः, केशहस्तः, बालपाशः, बालपक्षः, बालहस्तः (३ पु), इत्यादि नाम 'केश-समूह' के हैं ॥

८ तनूरुहम्, रोम (= रोमन्), लोम (= लोमन् । ३ न), 'रोम' के ३ नाम हैं ॥

९ श्मश्रु (+ श्मश्रु । न), 'दाढ़ीके बड़े हुए बाल' का १ नाम है ॥

१० आकल्पः, वेषः (+ वेशः । २ पु), नेपथ्यम् (न । + पु), 'आभूषण आदिसे उत्पन्न शोभा' के ३ नाम हैं ॥

१. "कवरी केशवेशोऽय" इति पाठान्तरम् ॥

२. "व्रतिनः सा जटा सटा" इति पाठान्तरम् । अत्र 'सा' शब्दः केशार्थकः ।

३. "श्मश्रु पुंमुखे" इति पाठान्तरम् ॥

—१ प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १९ ॥

- २ दशैते त्रिष्व ३ लङ्कर्ताऽलङ्कुरिण्यश्च ४ मण्डितः ।
 प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥१००॥
 ५ विभ्राड्भाजिण्युरोचिण्यु ६ भूषणं स्यादलङ्क्रिया ।
 ७ अलङ्कारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥१०१॥
 मण्डनं चा ८ य 'मुकुटं किरीटं पुष्पपुंसकम् ।
 ९ चूडामणिः शिरोरत्नं—

१ प्रतिकर्म (+ प्रतिकर्मन्), प्रसाधनम् (२ न), 'तिलक, फूल आदिसे सँवारने' के २ नाम हैं । 'आकल्पः.....' ५ नाम एकार्थक हैं, यह भी कई एक आचार्यों का मत 'है' ॥

२ यहाँ से लेकर आगेवाले दश शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ अलङ्कर्ता (+ अलङ्कर्तृ), अलङ्कुरिण्यः (+ मण्डनः । २ त्रि), 'अलङ्कृत (सुशोभित) करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ मण्डितः, प्रसाधितः, अलङ्कृतः, भूषितः, परिष्कृतः (+ परिष्कृतः । ५ त्रि), 'आभूषण इत्यादिसे सुशोभित' के ५ नाम हैं ॥

५ विभ्राट् (+ विभ्राज्), भाजिण्युः, रोचिण्युः (३ त्रि), 'आभूषण इत्यादिसे अधिक शोभनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

६ भूषणम् (न । + भूषा, स्त्री), अलङ्क्रिया (स्त्री), 'आभूषण इत्यादिसे सुशोभित करने' के २ नाम हैं ॥

७ अलङ्कारः, आभरणम्, परिष्कारः (+ परिष्कारः । १ ला और ३ रा पु), विभूषणम् (+ भूषणम्), मण्डनम् (शेष ३ न), 'आभूषण, गहना, के ५ नाम हैं ॥

८ मुकुटम् (+ मकुटम् । न), किरीटम् (पु न), 'मुकुट' के २ नाम हैं ॥

९ चूडामणिः (+ शिरोमणिः । पु), शिरोरत्नम् (न), 'शिरोमणि' के २ नाम हैं ॥

१. मकुटं किरीटं इति पाठान्तरम् ॥

२. इदमस्तु—वेधो हि वस्त्रालङ्कारप्रसाधनैरङ्गशोभा । प्रसाधनं तु समालम्भनं तिलक-पद्ममङ्गादिना (अङ्गशोभा) इति स्त्री० स्वा० ॥

—१ तरलो द्वारमध्यगः ॥ १०२ ॥

- २ बालपाश्या पारितथ्या ३ पत्रपाश्या ललाटिका ।
 ४ कर्णिका तालपत्रं स्यात् ५ कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥
 ६ ग्रैवेयकं कण्ठभूषा ७ लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।
 ८ स्वर्णैः प्रालम्बिका ९ श्योरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥
 १० हारो मुक्तावली ११ देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

१ तरलः (+ नायकः । पु) 'हारका सुमेरु' अर्थात् 'हार या माला के बीचवाले बड़े दाने' का १ नाम है ॥

२ बालपाश्या (+ बालपाश्या), पारितथ्या (२ स्त्री), 'स्त्रियोंकी छोटी या जूड़ामें लगानेके लिये सोने आदिकी पट्टी' (भूषण-विशेष) के २ नाम हैं ॥

३ पत्रपाश्या, ललाटिका (२ स्त्री), 'बन्दी, बेना आदि ललाटके भूषण' के २ नाम हैं ॥

४ कर्णिका (स्त्री), तालपत्रम् (+ ताडपत्रम् । न), 'कनकूल, ऐरन, तरकी, झूमक आदि कानके भूषण' के २ नाम हैं ॥

५ कुण्डलम्, कर्णवेष्टनम् (२ न), 'कुण्डल' के २ नाम हैं । ('कुण्डल' और 'कर्णिका' में यह भेद है कि 'कुण्डल' को स्त्री-पुरुष दोनों पहनते हैं और 'कर्णिका' को केवल स्त्रियाँ ही पहनती हैं) ॥

६ ग्रैवेयकम् (+ ग्रैवेयम्, ग्रैवम्, । न), कण्ठभूषा (स्त्री), 'हँसुली, कण्ठा, टीक आदि गलेके आभूषण' के २ नाम हैं ॥

७ लम्बनम् (न), ललन्तिका (स्त्री), 'गलेसे थोड़ा नीचे लटकनेवाले भूषण' के २ नाम हैं ॥

८ प्रालम्बिका (स्त्री), 'गलेसे थोड़ा नीचे लटकनेवाले सुवर्णके भूषण (सोनेकी हलकी सिकड़ी आदि)' का १ नाम है ॥

९ श्योरःसूत्रिका (स्त्री), 'मोतीके द्वार' का १ नाम है ॥

१० हारः (पु), मुक्तावली (स्त्री), 'हार' के २ नाम हैं ॥

११ देवच्छन्दः (पु), शतयष्टिका (स्त्री । भा० दो०) 'सौ लड़ीवाले हार' के २ नाम हैं ॥

१ हारभेदा' यष्टिभेदाद् गुच्छगुच्छार्द्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥

अर्द्धहारो माणवक एकावलीकयष्टिका ।

२ सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥

३ आवापकः पारिहार्यः कटकः वलयोऽस्त्रियाम् ।

१ गुच्छः (+ गुच्छः, गुत्स्थः), गुच्छार्द्धः (+ गुत्स्थार्द्धः गुत्स्थार्द्धः), गोस्तनः, अर्द्धहारः, माणवकः (५ पु), एकावली, एकयष्टिका, (२ स्त्री), ये ७ 'हारोंके भेदविशेष' हैं । ('इनमें वत्ताम लड़ीके हारका गुच्छ, चौबीस लड़ीके हारका गुच्छार्द्ध, चार लड़ीके हारका गोस्तन, बारह लड़ीके हारका अर्द्धहार, बीस लड़ीके हारका माणवक और एक लड़ीके हारका एकावली, एकयष्टिका 'नाम है') ॥

२ नक्षत्रमाला (स्त्री), 'सप्तविंशति मोतियोंके हार' का १ नाम है ॥

३ आवापकः, पारिहार्यः (२ पु), कटकः, वलयः (२ पु न), 'पहुँची, कड़ा आदि हाथके भूषण' के ३ नाम हैं ॥

१. 'यष्टिभेदाद् गुत्स्थगुत्स्थार्द्धगोस्तनाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. अत्र क्षी० स्वा०—'अन्ये त्वाख्यन्—'द्वाविंशततो गुच्छो गुच्छार्द्धादकत्वात् । चत्वारिंशततो गोस्तनो लम्बमानत्वात्, गोपुच्छोऽपि । चतुःपञ्चाशततोऽर्द्धहारो देवच्छन्दार्द्धत्वाद् । विंशततो माणवकोऽस्तत्वात्' इति' इत्याह ॥ अभिधानचिन्तामणौ हेमचन्द्राचार्यपादै-रुक्ता हारभेदाः प्रसङ्गादुच्यन्ते—

'देवच्छन्दः शतं साष्टं त्विन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ।

तदर्द्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ॥ १ ॥

अर्द्धं रश्मिः कलापोऽस्य द्वादश त्वर्द्धमाणवः ।

द्वादशार्द्धगुच्छः स्यात्पञ्च हारफलं लताः ॥ २ ॥

अर्द्धहारश्चतुःषष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ।

अपि गोस्तनगोपुच्छावर्द्धमर्द्धं यथोत्तरम् ॥ ३ ॥

इति हारयष्टिभेदादेकावलीकयष्टिका ।

कण्ठिकाऽप्यथ नक्षत्रमाला तत्संख्यमौक्तिकैः' ॥ ४ ॥

इति अभि० चिन्ता० ३३२२—३२६

अन्ये त्वेवमाहुः—'चतुःषष्टितो हारोऽथाष्टहीना यथोत्तरम् ।

रश्मिः कलापो माणवकोऽर्द्धहारोऽर्द्धगुच्छकः ॥ १ ॥

कलापच्छन्दो मन्दरः स्याद् गुच्छः सप्तयष्टिकाः' इति ।

अत्र केचित् 'रश्मिकलापो' इति वा पठित्वैकं नामेत्याहुः । शुक्रमतवाऽगमवाच चक्रं ब्रह्मम् ॥

विविधमतेन हाराणां संज्ञाया यष्टिसंख्यायाश्च बोधकचक्रम्

क्रमागतसंख्या	हारसंज्ञाः	हेमोक्तयष्टि- संख्याः	भा० दी० उक्ताः यष्टिसंख्याः	महे० उक्ताः यष्टिसंख्याः	क्षी० रथा० मते अन्योक्ता यष्टि- संख्याः	अन्योक्ताः यष्टिसंख्याः
१	देवच्छन्दः	१००	ॐ	ॐ	१०८	ॐ
२	इन्द्रच्छन्दः	१००८	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
३	विजयच्छन्दः	५०४	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
४	हारः	१०८	३४	ॐ	ॐ	६४
५	रश्मिकपाकः	५४	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
६	अर्द्धमाणवः	१२	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
७	अर्द्धगुच्छः	२४	२४	२४	ॐ	२४
८	हारफलम्	५	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
९	अर्द्धहारः	६४	ॐ	१२	५४	३२
१०	गुच्छः	३२	३२	३२	३२	७०
११	माणवः	१६	२०	२०	२०	४०
१२	मन्दरः	८	ॐ	ॐ	ॐ	८
१३	गोस्तनः	४	४	४	४०	ॐ
१४	गोपुच्छः	२	ॐ	ॐ	४०	ॐ
१५	एकावली	१	१	१	१	ॐ
१६	नक्षत्रमाळा	२७ मौ०	२७ मौ०	२७ मौ०	२७ मौ०	ॐ
१७	रश्मिः ।	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	५६
१८	कक्षापः	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	४८
१९	कक्षापच्छन्दः	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	१६

- १ केयूरमङ्गदं तुल्ये २ अङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥
- ३ साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा स्यात् ४ कङ्कणं करभूषणम् ।
- ५ स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥
कलीवे सारसनं चाक्षय्य पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु ।
- ७ पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जारी नूपुरोऽस्त्रयाम् ॥ १०९ ॥
हंसकः पादकटकः ८ किङ्किणी ध्रुवघण्टिका ।
- ९ त्वक्फलकिमिरोमाणि वस्त्रयोनिः—

१ केयूरम् , अङ्गदम् (२ न), 'विजायठ, बाजुबन्द, बहरबूटा' के २ नाम हैं ॥

२ अङ्गुलीयकम् (+ अङ्गुरीयकम् । न । + पुं), उर्मिका (स्त्री), 'अँगूठी' के २ नाम हैं ॥

३ अङ्गुलिमुद्रा (स्त्री), 'नाम खुदी हुई अँगूठी' का १ नाम है ॥

४ कङ्कणम् , करभूषणम् (२ न), 'कङ्कण, ककना' के २ नाम हैं ॥

५ मेखला, काञ्ची, सप्तकी, रशना (+ रसना, सिम्पन्नी । ४ स्त्री), सारसनम् (न), 'स्त्रियोंकी करधनी' के ५ नाम हैं । (यद्यपि १ लक्ष्मीवाली करधनीकी 'काञ्ची', ८ लक्ष्मीवालीकी 'मेखला', १६ लक्ष्मीवालीकी 'रशना' और २५ लक्ष्मीवालीकी 'कलाप' संज्ञा अन्य ग्रन्थोंमें कही गयी है, तथापि वहाँ उक्त भेदविशेषका आश्रय नहीं किया गया है) ॥

६ शृङ्खलम् (त्रि), 'पुरुषोंकी करधनी' का १ नाम है ॥

७ पादाङ्गदम् (न) तुलाकोटिः (+ तुलाकोटी । स्त्री), मञ्जरीः (+ मञ्जरीलः), नूपुरः (२ पु न), हंसकः, पादकटकः (२ पु), 'पावजेब' के ६ नाम हैं ॥

८ किङ्किणी (+ किङ्किणिः, कङ्किणी), ध्रुवघण्टिका (१ स्त्री), 'घूँघूर' के २ नाम हैं ॥

९ वस्त्रयोनिः (स्त्री), 'जिनके कपड़े बनते हैं उन छात्र, फल, कृमि और रोंए' का १ नाम है । ('तीसी, केला आदि के छालसे, कपास

१. 'कङ्किणी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'अयं मेथिस्वमिहानं राघवस्याङ्गुरीयकः' (अट्टि ८।१२८) इत्युक्तेरिति मुकुटः ॥

३. 'एकयष्टिर्मखेकाञ्ची मेखला त्वष्टिका ।

रशना षोडश त्रेया कलापः पञ्चविंशकः' ॥ १ ॥

इत्युक्ता भेदास्त्वहं नामिता इत्यवबोधम् ॥

१ दश त्रिषु ॥ ११० ॥

२ वालकं कौमादि ३ फालं तु कार्पासं वादरं च तत् ।

४ कौशेयं कृमिकोशोत्थं ५ राङ्गवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥

आदिके फलसे, रेशमवाले कृमि (कीड़े) के कोएसे और भेंड़, दुग्मा भेंड़ा, मृग आदिके रोएँसे कपड़े बनते हैं; अतः 'ऊन छाल, फल, कृमि और रोएँ' का 'वस्त्रयोनिः (स्त्री), यह १ नाम है") ॥

१ यहाँसे दश शब्द त्रिलिङ्ग हैं । ("वालकम्, बौमम्, फालम्, कार्पासम्, वादरम्, कौशेयम्, राङ्गरम्, अनाहतम्, निष्प्रवाणि, तन्त्रकम्' स्त्री० स्वा० या० दी० मतसे ये १० शब्द त्रिलिङ्ग हैं । वाक्कम् बौमम् (न') फालम्, कार्पासम्, वादरम्, कौशेयम्, कृमिकोशोत्थम्, राङ्गवम्, मृगरोमजम्, अनाहतम्, निष्प्रवाणि, तन्त्रकम् ('व' शब्दसे इसका संप्रह हुआ है), सुभूति और महेश्वरके मतसे शेष ११ शब्द त्रिलिङ्ग हैं") ॥

२ वाक्कम्, बौमम् (+ न । २ त्रि), 'तिसीवट या केले आदिके छालसे बने हुए कपड़े' के २ नाम हैं ॥

३ फालम्, कार्पासम्, वादरम् (+ वादरम् । ३ त्रि), 'कपास इत्यादि-के फलसे बने हुए कपड़े' अर्थात् 'सूती कपड़े' के ३ नाम हैं ॥

४ कौशेयम्, कृमिकोशोत्थम् (भा० दी०, स्त्री० स्वा० । + कृमिकोषोत्थम् । २ त्रि), 'पीताम्बर आदि रेशमी कपड़ा' अर्थात् 'रेशमवाले कीर्षी' कोएके बने सूतसे बुने हुए कपड़े' के २ नाम हैं ॥

५ राङ्गवम्, मृगरोमजम् (भा० दी०, स्त्री० स्वा० । २ त्रि), 'दुशाला, शाल, अलवान, कम्बल आदि ऊनी कपड़ा' अर्थात् 'मृग (भेंड़ा आदि पशु) के रोएँके बने सूतसे बुने हुए कपड़े' के या 'रङ्गनामक मृग-विशेषके रोएँके बने सूतसे बुने हुए कपड़े' के २ नाम हैं ॥

१. 'बौमं दुकूलं स्याद् द्वे तु' (२.१।११३) इत्यत्र 'दुकूल'शब्दसाहचर्यात् 'बौमं' क्लोषमेवेत्याशयः । अत एव 'कृमिकोशोत्थ-मृगरोमज'शब्दयोरपि पर्यायता, 'तत्रोक्त'शब्द-स्यैकादशसङ्ख्यकता च सिध्यति । स्वा० या० दी० मते तु 'कृमिकोशोत्थ-मृगरोमज'शब्द-योरनं पर्यायता, 'बौम' शब्दश्च त्रिलिङ्ग एव, अत एव 'दश त्रिषु' इति ग्रन्थकारोक्तिः संगच्छते इति बोध्यम् ॥

- १ अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ।
- २ तस्यादुद्गमनीयं यद्वौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् । ११२॥
- ३ पत्रोर्णं धौतकौशेयं ४ बहुमूल्यं महाधनम् ।
- ५ क्षौमं दुकूलं स्याद् ६ द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ॥ ११३॥
- ७ स्त्रियां बहुव्ये वस्त्रस्य 'दशाः स्युर्वस्तयो द्वयोः ।
- ८ दैर्घ्यमायाम् आरोहः—

१ अनाहतम् (+ अहतम्), निष्प्रवाणि, तन्त्रकम् (भा० दी० स्त्री० स्वा० । ३ त्रि), नवाम्बरम् (न), भा० दी० स्त्री० स्वा० के मतसे 'जो पहना, धुलाया या फटा हुआ नहीं हो उस कपड़े' के और महेश्वरके मतसे 'कोरे कपड़े' के ४ नाम हैं ॥

२ उद्गमनीयम् (न), 'धुलाये हुए कपड़े' का नाम है । ('धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्' यहाँ पर 'युग' शब्द अविवक्षित है) ॥

३ पत्रोर्णम् (न), धौतकौशेयम् (भा० दी० । २ न), 'धुलाये हुए रेशमी कपड़े' के २ नाम हैं ॥

४ बहुमूल्यम्, महाधनम् (भा० दी० । २ न), 'वेशकीमती वस्तु' के २ नाम हैं ॥

५ क्षौमम् (त्रि । + न), दुकूलम् (न), 'पीताम्बर' के २ नाम हैं ॥

६ निवीतम् (+ निवृत्तम्), प्रावृतम् (२ न), 'ढके हुए वस्त्र' के २ नाम हैं ॥

७ दशाः (स्त्री नि० व०), वस्तयः (भा० दी० । स्त्री पु नि० व० । + वर्तयः ; २ एक व० भो हैं), 'कपड़ोंकी किनारी, धारी, दस्ती' के २ नाम हैं ॥

८ दैर्घ्यम् (न), आयामः, आरोहः (+ आनाहः । २ पु), 'कपड़े आदिकी

१. 'दशाः स्युर्वस्तयोर्द्वयोः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'आनाहः' इति पाठान्तरम् ॥

३. युगशब्दस्याविवक्षायां लक्ष्यं यथा—

'गृहीतपत्युद्गमनीयश्चा' । कुमारसम्भव ७।११ इति ॥

'धौतमुद्गमनीयं च —' इति इलायुधश्च (अमि० रत्न० २।३९६) ॥

'वर्तिवस्ति' शब्दयोरेकवचनत्वञ्चापि । तथा हि इलायुधः—'वर्तिवस्तिर्दशाः सिचः' (अमि० रत्न० २।३९६) इति ॥

—१ परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥

- २ पटच्चरं जीर्णवस्त्रं ३ समौ नक्तककर्पटौ ।
 ४ वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥
 ५ सुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्ववराशिः स्थूलशाटकः ।

लम्बाई' के ३ नाम हैं ॥

१ परिणाहः (पु), विशालता (स्त्री), 'कपड़े आदिकी चौड़ाई' के २ नाम हैं ॥

२ पटच्चरम्, जीर्णवस्त्रम् (२ न), 'पुराने कपड़े' के २ नाम हैं ॥

३ नक्तकः (+ लक्तकः), कर्पटः (२ पु), सुकु० महे० मतसे 'पुराने कपड़ेके टुकड़े' के, भा० दी० मतसे 'कमाल' अर्थात् 'पसीना आदिको पोंछने-वाले छोटे वस्त्र' के और स्त्री० स्वा० मतसे 'दूध, पानी आदिको छाननेवाले कपड़े' के २ नाम हैं ॥

४ वस्त्रम्, आच्छादनम्, वासः (= वासस्), चैलम् (+ चेलम्), वसनम्, अंशुकम् (+ चांसम्, प्रोतः । ६ न), 'कपड़ामात्र' के ६ नाम हैं ॥

५ सुचेलकः (पु), पटः (पु न । + पु स्त्री स्त्री० स्वा० '), 'अच्छे कपड़े' के २ नाम हैं ॥

६ वराशिः (+ वरासिः । + पु), स्थूलशाटकः (२ त्रि), 'मोटे कपड़े' के २ नाम हैं । ('सुचेलकः,' ४ शब्द एकार्थक हैं, यह भी आचार्यों का मत है) ॥

१. 'लक्तककर्पटौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पटोऽस्त्री ना वराशिः' इति । ३. 'पटोऽस्त्री ना वरासिः' इति च काचित् पाठान्तरम् ॥

४. पटोऽस्त्री कर्पटः शाटः सिचयप्रोतलक्तकाः' इति रभसोक्तेः, 'पटश्चित्रपटे वस्त्रोऽस्त्री, प्रियाकद्रुमे पुमान्' (मेदि० पृ० ३६ श्लो० १९) इति मेदिन्युक्तेश्च 'अस्त्रीति चिन्त्यम्, दयो-रदर्शनात्' इति स्त्री० स्वा० वचसश्चिन्त्यत्वमुक्तम् भा० दी० । स्त्री० स्वा० तु 'अस्त्रीति चिन्त्यम्, दयोर्दर्शनात्' इत्येवोक्तत्वात् 'अपटीक्षेपेण' इति कदयाच्च भा० दी० उक्तेरेव चिन्त्यत्वम् । 'अमरमंशुकमुक्तं वस्त्रं सिचयः पटः पोतः' (अमि० रत्न० २।३९३) इति इकायुषोक्त्या तु 'पट' शब्दस्य पुंस्त्वमात्रमेवायातोत्पवधेयम् ॥

—१ परिणाहो विशालता ।

- २ पटच्चरं जीर्णवस्त्रं ३ समौ नक्तकर्पटौ
४ वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ।
५ सुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्दवराशिः स्थूलशाटकः

लम्बाई' के ३ नाम हैं ॥

१ परिणाहः (पु), विशालता (स्त्री), 'कपड़े आदिकी च २ नाम हैं ॥

२ पटच्चरम्, जीर्णवस्त्रम् (२ न), 'पुराने कपड़े' के २ नाम हैं ।

३ नक्तकः (+ लक्तकः), कर्पटः (२ पु), मुकु० महे० मतसे कपड़ेके टुकड़े' के, भा० दी० मतसे 'रुमाल' अर्थात् 'पसीना आदि वाले छोटे वस्त्र' के और स्त्री० स्वा० मतसे 'दूध, पानी आदिको ल कपड़े' के २ नाम हैं ॥

४ वस्त्रम्, आच्छादनम्, वासः (= वासस्), चैलम् (+ चेलम्) अंशुकम् (+ चीरम्, प्रोतः । ६ न), 'कपड़ामात्र' के ६ नाम हैं ।

५ सुचेलकः (पु), पटः (पु न । + पु स्त्री स्त्री० स्वा० ' कपड़े' के २ नाम हैं ॥

६ वराशिः (+ वरासिः । + पु), स्थूलशाटकः (२ त्रि कपड़े' के २ नाम हैं । ('सुचेलकः,' ४ शब्द एकार्थक हैं आचार्यों का मत है) ॥

१. 'लक्तककर्पटौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पटोऽस्त्री ना वराशिः' इति । ३. 'पटोऽस्त्री ना वरासिः' इति च काचित्कं प

४. पटोऽस्त्री कर्पटः शाटः सिचयप्रोतलक्तकाः' इति रमसोक्तेः, 'पटश्चित्रा प्रियालक्ष्मणे पुमान्' (मेदि० पृ० ३६ श्लो० १९) इति मेदिन्युक्तेश्च 'अस्तीति चि रदर्शनात्' इति स्त्री० स्वा० वचसश्चिन्त्यत्वमुक्तम् भा० दी० । स्त्री० स्वा० चिन्त्यम्, द्वयोर्दर्शनात्' इत्येवोक्तत्वात् 'अपटीक्षेपेण' इति लक्षणाच्च भा० चिन्त्यत्वम् । 'अम्बरमंशुकमुक्तं वस्त्रं सिचयः पटः पोटाः' (अमि० रत्न० २॥ इत्याशुषोकथा तु 'पट' शब्दस्य पुंस्त्वमात्रमेवायातीयवधेयम् ॥

- १ निचोलः प्रच्छदपटः २ लघौ रत्नककम्बलौ ॥ ११६ ॥
- ३ अन्तरीयोपसंन्यानपरिधानान्यधौऽशुकौ ।
- ४ द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहदतिका तथा ॥ ११७ ॥
संन्यानमुत्तरीयं च ५ चोलः कूर्पासकौऽस्त्रियाम् ।
- ६ नीशारः स्यात्प्रावरणे द्विमाम्बलितिवारणे ॥ ११८ ॥
- ७ अधोऽरुक् वस्त्राणां स्याच्चण्डातकप्रस्त्रियाम् ।
- ८ स्यात्त्रिष्वपपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥
- ९ अस्त्री वितानमुल्लोचो—

१ निचोलः (+ निचुलः । त्रि), प्रच्छदपटः (२ पु), महे० भा० दी० मतसे 'पालकी आदिके ओढ़ार या स्वारङ्गी, सिनार आदिके गिलाफ' (खोली) के, लो० स्वा० मतसे 'रज्जाई, तोसक, तकिया आदिकी खोली' के और अन्याचार्यों के मतसे 'बुर्की' अर्थात् 'यवन आदिकी स्त्रियाँ पदों के वास्ते जिसको ओढ़कर पूरे शरीरको छिपाकर बाहर निकलती हैं उस वस्त्र-विशेष' के १ नाम हैं ।

२ रत्नकः, कम्बलः (२ पु), 'कम्बल' के २ नाम हैं ॥

३ अन्तरीयम्, उपसंन्यानम्, परिधानम्, अधौऽशुकम् (४ न), 'कमर-से नीचे पहने जानेवाले धोती, पायजामा, साड़ी आदि कपड़ों' के ४ नाम हैं ॥

४ प्रावारः (+ प्रावरः), उत्तरासङ्गः (२ पु), बृहदतिका (स्त्री), संन्यानम्, उत्तरीयम् (२ न), 'कमरसे ऊपर धारण करने योग्य दुपट्टा, चादर, पगड़ी आदि कपड़ों' के ५ नाम हैं ॥

५ चोलः (+ चोली, स्त्री), कूर्पासकः (पु न), 'स्त्रियोंकी चोली, कुर्ती आदि' के २ नाम हैं ॥

६ नीशारः (पु), 'रज्जाई, दुलाई या शीतसे बचनेके लिये ओढ़े जानेवाले वस्त्रमात्र' का १ नाम है ॥

७ अधोऽरुक् (न), चण्डातकम् (न पु), 'लहंगा' के २ नाम हैं ॥

८ आप्रपदीनम् (त्रि), 'पैरतक लटकनेवाले कपड़े' का १ नाम है ॥

९ वितानम् (न पु), उल्लोचः (पु), 'चूँदवा' के २ नाम हैं ॥

- १ दूष्याद्यं वस्त्रवेशमनि ।
 २ प्रतिसीरा 'जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥
 ३ 'परिकर्माङ्गसंस्कारः स्याधन्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।
 ५ उद्धर्तनोत्सादने द्वे समे ६ आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥
 स्नानं ७ चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकोऽथ प्रबोधनम् ।
 अनुबोधः ९ पत्रलेखा १० पत्राङ्गुलिरिमे समे ॥ १२२ ॥

१ दूष्यम् (+ दूश्यम् । न), आदि ('आदि' शब्दसे 'पटकुटी' (स्त्री), पटवासः (= पटवासस्), पटगृहम्, पटकुड्यम् (३ न), इत्यादिका संग्रह है), 'कपड़ेके घर, डेरा, रावटी, तम्बु आदि' का नाम है ॥

२ प्रतिसीरा, जवनिका (+ यमनिका), तिरस्करिणी (+ तिरस्कारिणी, तिरस्करणी । ३ स्त्री), 'कनात, पर्दा' के ३ नाम हैं ॥

३ परिकर्म (= परिकर्मन् । + प्रतिकर्म = प्रतिकर्मन् । न), अङ्गसंस्कारः (पु), 'कुङ्कुम आदिसे शरीरके संस्कार करने' के २ नाम हैं ॥

४ मार्ष्टिः, मार्जना, मृजा (३ स्त्री) 'झाड़ पौछकर शरीरको साफ करने' के ३ नाम हैं ॥

५ उद्धर्तनम्, उत्सादनम् (+ उच्छादनम् । २ न), उबटन, वेशन, सावुन आदिसे शरीरको मलने' के २ नाम हैं ॥

६ आप्लावः, आप्लवः (२ पु), स्नानम् (न), 'स्नान करने' के ३ नाम हैं ॥

७ चर्चा (स्त्री), चार्चिक्यम् (न), स्थासकः (पु), शरीरमें चन्दन आदि लगाने' के ३ नाम हैं ॥

८ प्रबोधनम् (न), अनुबोधः (पु), 'निकले हुए गन्धको फिरसे स्नाने' के २ नाम हैं । ('जैसे—'कस्तूरीके गन्धके निकल जानेपर मदिरा छोड़नेसे उसका गन्ध फिर आ जाता है') ॥

९ पत्रलेखा, पत्राङ्गुलिः (२ स्त्री), 'कस्तूरी, केसर, मेंहदी या चन्दन आदिसे गाल या स्तनादिपर पत्ते, फूल आदिकी चित्रकारी करने' के २ नाम हैं ॥

१. 'यमनिका' इति पाठान्तरम् । २. प्रतिकर्माङ्गसंस्कारः इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पत्राङ्गुलिरिमे स्त्रियौ' इति पाठान्तरम् ॥

- १ तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ।
द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियारमथ कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥
काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्योक्तपीतने ।
रक्तसंकोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥
- २ लाक्षा राक्षा जतु क्लीबेयावोऽलक्तो द्रुमामयः ।
- ४ लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञायथ जायकम् ॥ १२५ ॥
कालायकं च कालानुसार्य चादथ समार्थकम् ।
वंशिकागुरुराजार्हलोहकि (कु) मिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥

१ तमालपत्रम्, तिलकम्, चित्रकम्, विशेषकम् (२ रा ४ था पुं न । शेष न), 'कस्तूरी, चन्दन, भस्म आदिसे टीका (तिलक) लगाने' के ४ नाम हैं ॥

२ कुङ्कुमम्, काश्मीरजन्म (= काश्मीरजन्मन्), अग्निशिखम्, वरम्, बाह्योक्तम् (+ बाह्यिकम्, बह्योक्तम्, बह्यिकम्), पीतनम्, रक्तम् (+ अष्ट-वसंज्ञम् ; खूनके पर्यायवाचक नाम), संकोचम्, पिशुनम्, धीरम् (+ वीरम्) लोहितचन्दनम् (११ न) 'केसर, कुङ्कुम' के ११ नाम हैं ॥

३ लाक्षा, राक्षा (+ रक्ता । २ स्त्री), जतु (न), यावः, अलक्तः, द्रुमा-मयः (३ पु), लाट्टी, लाक्षा, लाख, महावर' के ६ नाम हैं ॥

४ लवङ्गम्, देवकुसुमम्, श्रीसंज्ञम् (श्री अर्थात् लक्ष्मीके पर्यायवाले सब नाम । ३ न), 'लौंग' के ३ नाम हैं ॥

५ जायकम्, कालायकम् (+ कालेषकम्), कालानुसार्यम् (३ न), 'पीला चन्दन, जायकनामक गन्धद्रव्य' के ३ नाम हैं ॥

६ वंशिकम् (+ वंशिकम्), अगुरु (+ पु । + अगुरु), राजार्हम्, लोहम् (+ पु), क्रि(कु) मिजम्, जोङ्गकम् (६ न), भा० दी० मतसे 'अगर' के ६ नाम हैं ॥

१. 'वी(धी)रलोहितचन्दनम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कालेषकं च' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'वंशिकागुरुराजार्हलोहकि(कु)मिजजोङ्गकम्' इति पाठान्तरम् ॥

४. भन्दन्वस्त्वेवमाह—

'काष्ठा पल्लवा राक्षा दीक्षिन्व कुमिजं जतु ।

कृतभ्यानङ्गमाता च द्रुमव्याधिरक्तकः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ 'कालागुर्वगुरु २ स्यात्तु मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ।
 ३ यश्चधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि १२७ ॥
 बहुरूपोऽप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ।
 ५ तुरस्कः पिण्डकः सिहो यावनोऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥
 श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ ।
 ७ मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी च—

१ कालागुरु, अगुरु (+ अगुरु । २ न), भा० दी० मतसे 'काला अगुरु' के २ नाम हैं : ('महे० मतसे 'वंशिकम्,', ७ नाम 'अगुरु' के हैं) ॥

२ मङ्गल्या (स्त्री), 'बेलाके फूलके समान सुगन्ध देनेवाले अगुरु' का १ नाम है ॥

३ यश्चधूपः (+ धूपः), सर्जरसः, रालः (+ राला, स्त्री, अरालः), सर्वरसः, बहुरूपः (५ पु), 'राल, धूप' के ५ नाम हैं ॥

४ वृकधूपः, कृत्रिमधूपः (२ पु), 'अनेक सुगन्धित पदार्थोंको मिलाकर बनाये हुए धूप' के १ नाम हैं ॥

५ तुरस्कः, पिण्डकः, सिंहः (सिंहः), यावनः (४ पु), 'लोहवान' के ४ नाम हैं ॥

६ पायसः, श्रीवासः (+ श्रीः), वृकधूपः (+ वृकः), श्रीवेष्टः (+ श्री-पिष्टः) सरलद्रवः (५ पु), 'सरल देवदारुके गोंदसे बने हुए सुगन्धित द्रव्य विशेष' के ५ नाम हैं ॥

७ मृगनाभिः (+ नाभिः), मृगमदः (+ मृगः, मदः ६ । २ पु), कस्तूरी (स्त्री), 'कस्तूरी' के ३ नाम हैं ॥

१. 'कालागुर्वगुरु स्यात्तन्मङ्गल्या' इति पाठान्तरम् । अत्र पक्षे यन्मल्लिगन्धि अगुरु तत्तु 'मङ्गल्या' स्यादित्येव सम्बन्धो बोधः, तत्र मूलपाठ एव समीचीन इत्यवधेयम् ॥

२. 'सिंहो यावनोऽप्यथ' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'श्रीवेष्टसरलद्रवौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'मुख्यराट्कृत्रियये नाभिः पुंस्ति प्राण्यङ्गके द्वयोः ।

चक्रमध्ये प्रधाने च स्त्रियां कस्तूरिकामदे' ॥ १ ॥

इति रभसोक्तेः नामिशब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

५. 'मृगनाभिर्मृगमदः मृगः कस्तूरिकापि च' इत्युक्तेर्मृगा शब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

६. 'मदो रेतसि कस्तूरी गर्वे इषेभदानयोः' (मेदिनी पृ० ७९ श्लो० १२) इत्युक्तेः मद्शब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

१—अथ कोलकम् ॥ १२९ ॥

ककोलकं कोशफलरमथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।

घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताम्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥

३ गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्द्रनोऽस्त्रियाम् ।

४ तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥

५ तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ।

कुचन्दनं चाप्य जातीकोपजातीफलैः समैः ॥ १३२ ॥

१ कोमलम् (+ कोरकम्), ककालकम्, कोशफलम् (+ कोषफलम् ।
३ न) 'कङ्कोल' के ३ नाम हैं ॥

२ कर्पूरम् (पु न), घनसारः, चन्द्रसंज्ञः (चन्द्रमाके पर्यायवाचक सब शब्द), सिताम्रः (+ सिताम्रः । ३ पु), हिमवालुका (स्त्री), 'कर्पूर' के ५ नाम हैं ॥

३ गन्धसारः, मलयजः (२ पु), भद्रश्रीः (स्त्री), चन्दनः (पु न), 'मलयगिरि चन्दन' के ४ नाम हैं ॥

४ तैलपर्णिकम्, गोशीर्षम्, (२ न); हरिचन्दनम् (पु न), 'सफेद ठण्डा चन्दन, कमलके समान गन्धवाले चन्दन और कपिल या पोले वर्ण-वाले चन्दन' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

५ तिलपर्णी (स्त्री), पत्राङ्गम् रञ्जनम्, रक्तचन्दनम्, कुचन्दनम् (४ न), 'लाल चन्दन' के ५ नाम हैं ॥

६ जातीकोषम् (+ जातिकोशम्, जातीकोषः, कोषः^१), जातीफलम् (+ फलम्^२ । २ न) 'जायफल' के २ नाम हैं ॥

१. 'सिताम्रो हिमवालुका' इति पाठान्तरम् ॥

२. —'कोशः कोष इवाण्डजे कुडमले चषके दिव्येऽर्थचये यन्निश्चिन्वयोः । जातीकोशोऽसिपिधाने—' (अने० संग्र० २।५४६—५४७), इति, —'अथ जनिषु जातिः सामान्यगात्रयोः । मालत्यामामलक्यां च चुस्त्र्यां कम्बिलजन्मनोः । जातीफले छन्दसि च' (अने० संग्र० २।१६८—१६९) इति हेमचन्द्राचार्योक्तैः जाति-कोष-कोशशब्दानां पर्यायतत्त्ववधेयम् ॥

३. 'फलं हेतुफले जातीफले फलकसत्ययोः' (अमि० चिन्ता० २।४९९) इति हेमचन्द्राचार्योक्त्या 'फल' शब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

- १ कर्पूरागुरुकस्तूरीकङ्कोलैर्यक्षकदमः ।
- २ गात्रानुलेपनी वर्त्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥
- ३ चूर्णानि वासयोगाः स्युधर्भावितं वासितं त्रिषु ।
- ५ संस्कारो गन्धभात्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥
- ६ मास्यं मालास्रजौ मूर्त्ति—

१ 'यक्षकदमः' (पु), 'कर्पूर, अमर, कस्तूरी और कङ्कोल; इन चारोंको बराबर-बराबर देकर बनाये हुए लेप-विशेष' का १ नाम है ॥

२ गात्रानुलेपनी, वर्त्तिः (२ स्त्री), 'घर्णकम् , विलेपनम् (२ न), 'लेप करनेके लिये पीसे या धिसे हुए गन्धद्रव्य विशेष' के ४ नाम हैं । ('स्त्री० स्वा० मत से दो-दो शब्द एकार्थक हैं') ॥

३ चूर्णम् (न), वासयोगः (पु), 'कपड़े आदिको सुवासित करनेके योग्य चूर्ण किये हुए गन्धद्रव्य-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ भावितम्, वासितम् (२ त्रि), 'सुवासित कपड़ा आदि' के २ नाम हैं । ('स्त्री० स्वा० मतसे गन्धद्रव्य अर्थात् इतर आदिसे सुगन्धित किये हुए कपड़े आदिको 'भावित' और केतकी, केवड़ा या गुलाब आदि से सुगन्धित किये हुए कपड़े आदिको 'वासित' कहते हैं') ॥

५ अधिवासनम् (न), 'गुलाबजल या सुगन्धित फूल आदिसे पान, तिल आदिका सुवासित करने' का १ नाम है ॥

६ मास्यम् (न), माला, स्रज् (= स्रज् । २ स्त्री), 'शिरसे धारण की हुई माला' के ३ नाम हैं । ('यहाँ 'मूर्त्ति' शब्दके अविवक्षित होनेसे

१. तदुक्तं व्याहिना—

'कर्पूरागुरुकस्तूरीकङ्कोलपुष्पानि च ।

एकीकृतमिदं सर्वं यक्षकदमं इष्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

बन्वन्तरिस्तु मिश्रमेवाह । तथा—

'कुङ्कुमागुरुकस्तूरीकर्पूरं चन्दनं तथा ।

महासुगन्धमित्युक्तं नामतो यक्षकदमः ॥ १ ॥ इति ॥

२. गात्रानुलेपनी वर्त्तिर्विगन्धय विलेपनम् ।

घर्णकञ्चाथ विच्छिन्तिः स्त्री कषायोऽङ्गरागे' ॥ १ ॥

अथ रमसोक्तिमनुसृत्येदमित्यवधेयम् ॥

—१ केशमध्ये तु गर्भकः ।

- २ प्रअष्टकं शिखालम्बि ३ पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥
 ४ प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात् ५ कण्ठाद्वैकक्षिकं तु तत् ।
 यत्तिर्यक्क्षिप्तमुरसि ६ शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥
 ७ रचना स्यात्परिस्पन्द ८ आभोगः परिपूर्णता ।
 ९ उपधानं तूपबर्हः १० शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥
 शयनं ११ मञ्जपर्यङ्कपट्यङ्काः खट्वया समाः ।

‘मालामात्र’ के भी ये ३ नाम हैं) ॥

१ गर्भकः (पु), ‘केशके बीचमें लगायी हुई माला’ का १ नाम है ॥

२ प्रअष्टकम् (न), ‘शिखा या चोटीसे लटकती हुई माला’ का

१ नाम है ॥

३ ललामकम् (न), ‘ललाटपर धारण की हुई माला, मुण्डमाला’ का १ नाम है ॥

४ प्रालम्बम् (न), ‘गलेमें सीधे लटकती हुई माला’ का १ नाम है ॥

५ वैकक्षिकम् (न), ‘जनेऊकी तरह तिछी पहनी हुई माला’ का

१ नाम है ॥

६ आपीडः, शेखरः (१ पु), ‘शिखामें रफखी हुई माला’ के २ नाम हैं ॥

७ रचना (स्त्री), परिस्पन्दः (+ परिस्पन्दः । पु), ‘माला आदि को बनाने (गूथने)’ के २ नाम हैं ॥

८ आभोगः (पु), परिपूर्णता (स्त्री), ‘सेवा-शुश्रूषा आदि सब प्रकारके उपचारोंसे परिपूर्ण होने’ के २ नाम हैं ॥

९ उपधानम् (न), उपबर्हः (पु), ‘तकिया’ के २ नाम हैं ॥

१० शय्या (स्त्री), शयनीयम्, शयनम् (२ न), ‘शय्या, बिछौना’ के ३ नाम हैं । (‘भा० दी० मतसे ‘तोसक आदि’ के ये ३ नाम हैं) ॥

११ मञ्जः, पर्यङ्कः, पट्यङ्कः (३ पु), खट्वा (स्त्री), ‘पलंग, खटिआ आदि’ के ४ नाम हैं । (किसी २ के मतसे ‘मञ्ज’ यह १ नाम ‘मचान या

१. ‘स्यात्परिस्पन्दः’ इति वाचस्पत्यम् ॥

- १ गेन्दुकः कन्दुको २ दीपः प्रदीपः ३ पीठमासनम् ॥ १३८ ॥
 ४ समुद्रकः संपुटकः ५ प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।
 ६ प्रसाधनी कङ्कतिका ७ पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९ ॥
 ८ दर्पणे 'मुकुरादर्शो' ९ न्यजनं तालवृन्तकम् ।

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

ऊँचे 'लिहासन आदि' का और 'पर्यङ्कः, पर्यङ्कः' ये २ नाम 'पल्लंग, मसहरी आदि' के तथा 'खट्वा' यह एक नाम 'खटिया' का है) ॥

१ गेन्दुकः (+ गिन्दुकः, गेण्डुकः, गण्डुकः), कन्दुकः (२ पु), 'गेन्द' के २ नाम हैं ॥

२ दीपः, प्रदीपः (+ स्नेहाशः, कज्जलध्वजः, दशेन्धनः, गृहमणिः, क्षोषातिलकः शिखातरुः, दीपवृक्षः, ज्योत्स्नावृक्षः :^२ ८ पु । २ पु) 'चिराग' के २ नाम हैं ॥

३ पीठम्, आसनम् (२ न), 'आसन' के २ नाम हैं ॥

४ समुद्रकः, संपुटकः (२ पु), 'डब्बा सम्पुट' के २ नाम हैं ॥

५ प्रतिग्राहकः (वै० प्रतिग्रहः), पतद्ग्रहः (२ पु), 'उगलदान, पिक-दान' के २ नाम हैं ॥

६ प्रसाधनी, कङ्कतिका (२ स्त्री), 'कङ्कनी' के २ नाम हैं ॥

७ पिष्टातः, पटवासकः (२ पु), 'बुक्का' के २ नाम हैं ॥

८ दर्पणः, मुकुरः (+ मकुरः, मङ्कुरः), आदर्शः (+ आरमदर्शः । ३ पु), 'शीशा-आइना' के ३ नाम हैं ।

९ न्यजनम्, तालवृन्तकम् । (+ तालवृन्तम् । २ न), 'पंखा' के २ नाम हैं ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

१. 'मुकुरादर्शो' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं त्रिकाण्डशेषे—'दीपस्तु स्नेहाशः कज्जलध्वजः ।

दशेन्धनो गृहमणिः क्षोषातिलक इत्यपि ॥ १ ॥

शिखातरुदीपवृक्षो ज्योत्स्नावृक्षोऽप्य—' इति ॥

७ अथ ब्रह्मवर्गः ।

- १ सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।
वंशोऽन्ववायः सन्तानो २ वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥
- ३ विप्रक्षत्रियविट्शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ।
- ४ 'राजबीजी राजवंश्यो ५ बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥
- ६ 'महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।
- ७ ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥
आश्रमोऽस्त्री—

७. अथ ब्रह्मवर्गः ।

- १ सन्ततिः (स्त्री), गोत्रम् , जननम् , कुलम् (१ न), अभिजनः, अन्वयः, वंशः, अन्ववायः, सन्तानः (५ पु), 'वंश, कुल, खान्दान' के ९ नाम हैं ॥
- २ वर्णः (पु), 'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये ४ 'वर्ण' हैं ॥
- ३ चातुर्वर्ण्यम् (न), 'ब्राह्मण आदि पूर्वोक्त चार वर्णोंके समुदाय' का १ नाम है ॥
- ४ राजबीजी (= राजबीजिन्), राजवंश्यः (२ पु), 'राजकुलमें उत्पन्न व्यक्ति' के २ नाम हैं ॥
- ५ बीज्यः, कुलसंभवः (२ पु), 'कुलमें उत्पन्न व्यक्ति' के २ नाम हैं ॥
- ६ महाकुलः (+ महाकुलः), कुलीनः (+ कुल्यः, कौलेयकः), आर्यः, सभ्यः, सज्जनः, साधुः (१ पु), 'सज्जन, उत्तम कुलमें उत्पन्न व्यक्ति' के १ नाम हैं ॥
- ७ ब्रह्मचारी (= ब्रह्मचारिन्), गृही (= गृहिन्), वानप्रस्थः, भिक्षुः (४ पु), ये चार 'आश्रम' ऋग्वेदाख्य हैं अर्थात् आश्रमः (पु न), 'ब्रह्मचर्याश्रमः, गृहस्थाश्रमः, वानप्रस्थाश्रमः, संन्यासाश्रमः (४ पु न), ये ४ 'आश्रम' हैं ।

१. राजबीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'महाकुलकुलीनार्य' इति पाठान्तरम् ॥

३. तदुक्तं याज्ञवल्क्येन—

'ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाण्यस्यो द्विधाः' । इति याज्ञ० १।१० ॥

—१ द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।

विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥

३ विद्वान् विपश्चिद्वापञ्चः सन् सुधीः कोविदो बुधः ।

धीरो मनीषी^१ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पण्डितः कविः ॥ ५ ॥

धीमान् सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ।

दूरदर्शी दीर्घदर्शी—

१ द्विजातिः (+ द्विजः), ^२अग्रजन्मा (= अग्रजन्मन्), भूदेव (+ महोसुरः, भूसुरः, ...), वाडवः, विप्रः, ब्राह्मणः (६ पु), 'ब्राह्मण' के १ नाम है ॥

२ षट्कर्मा (= षट्कर्मन्, पु), 'यज्ञ करना, पढ़ना, दान देना, यज्ञ कराना, पढ़ाना और दान लेना; इन' ६ कर्मोंसे युक्त ब्राह्मण' का १ नाम है ॥

३ विद्वान् (= विद्वस्), विपश्चित्, दोषज्ञः, सन् (= सत्); सुधीः, कोविदः, बुधः, धीरः, मनीषी (= मनीषिन्), ज्ञः, प्राज्ञः (+ प्रज्ञः), संख्यावान् (= संख्यावत्), पण्डितः, कविः, धीमान् (= धीमत्), सूरिः (+ सूरि = सूरिन्), कृती (= कृतिन्), कृष्टिः, लब्धवर्णः, विचक्षणः, दूरदर्शी (= दूरदर्शिन् । + दूरदृक् = दूरदृश्), दीर्घदर्शी (+ दीर्घदर्शिन् । २२ पु), 'विद्वान्' के २२ नाम हैं ॥

१. 'ज्ञः प्रज्ञः' इति पाठान्तरम् ॥

२. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् इति श्रुतेरित्यवधेयम् ॥

३. तदुक्तम्—'इज्याऽध्ययनदानानि राजनाध्यापनं तथा ।

प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्मा विप्र उच्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

४ ब्राह्मणानां षट् कर्माण्याह मनुः—

'अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा ।

दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामुक्तमग्रम्' ॥ १ ॥ इति मनुः १।१८८

—१ श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

२ 'मीमांसको जैमिनीये ३ वेदान्ती ब्रह्मवादिनि (१६)

४ वैशेषिके स्यादौलूक्यः ५ सौगतः शून्यवादिनि (१७)

६ 'नैयायिकस्त्वक्षपादः—

१ 'श्रोत्रियः, छान्दसः (२ पु), 'वेद पढ़नेवाले ब्राह्मण' के २ नाम हैं ॥

२ [मीमांसकः, जैमिनीयः (२ पु), 'मीमांसक' अर्थात् 'मीमांसा शास्त्रको जाननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

३ [वेदान्ती (= वेदान्तिन्), ब्रह्मवादी (= ब्रह्मवादिन् । २ पु), 'वेदान्ती' अर्थात् 'वेदान्त शास्त्र जाननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

४ [वैशेषिकः, औलूक्यः (२ पु), 'कणादिसम्मत द्रव्य आदि ('द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव') 'सात पदार्थोंका माननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

५ [सौगतः शून्यवादी (= शून्यवादिन् । २ पु), 'संसारका कारण शून्य (कोई नहीं) है, इस सिद्धान्तको माननेवाले नास्तिक' के २ नाम हैं] ॥

६ [नैयायिकः, अक्षपादः (+ आक्षपादः । २ पु), 'गौतमसम्मत प्रमाण आदि ('प्रमेय, संशय, प्रयाजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय,

१. 'मीमांसको.....साङ्ख्यकापिलौ' इत्येष क्षेत्रकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

२. 'नैयायिकस्त्वक्षपादः' इति पाठः क्षी० स्वा० व्याख्योक्तः ॥

३. तदुक्तं हेमाद्रिणा चतुर्वर्गचिन्तामणौ दानखण्डस्य तृतीयप्रकरणे —

'एकां शाखां सकल्पां वा षड्भिरक्षरणीत्य वा ।

षट्कर्मनिरतो विप्रः श्रोत्रियो नाम धर्मवित्' ॥ १ ॥

इति च० चिन्ता० पु० २७ ॥

४. तथा चाह विशनाथः—

'द्रव्यं गुणस्तथा कर्म सामान्यं च विशेषकम् ।

समवायस्तथाऽभावः पदार्थाः सप्त कीर्तिताः ॥ १ ॥

इति सिद्धा० मुक्ता० १।१ ॥

—१ स्याद्स्याद्वादिक आर्हकः (१८)

२ चार्वाकलौकायतिकौ ३ 'सत्कार्ये' साङ्ख्यकापिलौ (१९)

४ उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादिकृद् गुरुः ।

वाद, अरण, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान') 'सोलह पदार्थोंको माननेवाले नैयायिक' के २ नाम हैं ॥

१ [स्याद्वादिकः, आर्हकः (+ आर्हतः । २ पु), 'मोक्ष है तो हो और नहीं है तो न हो इस सिद्धान्तको माननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

२ [चार्वाकः, लौकायतिकः (२ पु), 'बौद्ध' अर्थात् 'बुद्धदेवके मतानुयायी' के २ नाम हैं] ॥

३ [साङ्ख्यः, कापिलः (२ पु), 'कपिलमुनिसम्मत सांख्यशास्त्रके सिद्धान्तको माननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

४ ३ उपाध्यायः, अध्यापकः (२ पु), 'उपाध्याय' अर्थात् 'वेदके एकदेशको वा वेदाङ्गोंको वृत्तिके लिये पढ़ानेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ ४ गुरुः (पु), 'गुरु' अर्थात् 'निषेकादि संस्कारको सविधि करके अज्ञादिसे बाधन करते हुए पढ़ानेवाले' का १ नाम है ॥

१. 'सत्कार्यौ' इति पाठः क्षी० स्वा० व्याख्योक्तः ॥

२. तदुक्तम्—'प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयवतर्कनिर्णयवादअल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः' इति न्या० द० १। १॥

३. उपाध्यायकृष्णमुक्तं मनुना—

'एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः ।

योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते' ॥ १ ॥ इति मनुः १।१४१ ॥

शुक्लकृष्णमुक्तं मनुना—

'निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि ।

सम्भावयति चान्तेन स विप्रो गुरुश्च्यवते' ॥ १ ॥ इति मनुः १।१४२ ॥

- १ मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य २ 'आदेशा त्वन्वरे व्रती ॥ ७ ॥
 यष्टा च यजमानश्च ३ स सोमवति दीक्षितः ।
 ४ इज्याशीलो यायजूको ५ यज्ञा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥
 ६ 'स गीर्पतीष्ट्या स्थपतिः ७ सोमपीथी तु सोमपाः ।
 ८ सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

१ 'आचार्यः (पु), 'आचार्य' अर्थात् 'मन्त्रोंकी व्याख्या करनेवाले या शिष्यका यज्ञोपवीत संस्कारकर कल्प और रहस्यके सहित वेदको पढ़ानेवाले ब्राह्मण' का १ नाम है ॥

२ व्रती (= व्रतिन्), यष्टा (यष्टृ), यजमानः (पु), 'यजमान' अर्थात् 'यज्ञ करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ दीक्षितः (पु), 'सोमवत्' (अग्निष्टोमादि) यज्ञमें ऋत्विजोंको आदेश देनेवाले यजमान' का १ नाम है ॥

४ इज्याशीलः, यायजूकः (२ पु), 'बारबार यज्ञ करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ यज्ञा (= यज्ञवन् पु), 'विधिपूर्वक यज्ञ किये हुए' का १ नाम है ॥

६ स्थपतिः (पु), 'बृहस्पतिके मन्त्रसे यज्ञ करनेवाले' का १ नाम है ॥

७ सोमपीथी (= सोमपीथिन् । + सोमपीती = सोमपीतिन्), सोमपाः (+ सोमपः । २ पु), 'सोमयज्ञ करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ सर्ववेदाः (= सर्ववेदस् पु), 'यज्ञमें सर्वस्व दक्षिणा देनेवाले' का १ नाम है । ('विश्वजित् आदि यज्ञोंमें सर्वस्व दक्षिणा दी जाती है, जैसे—

१. 'आदिष्टी इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स तु गीर्पतीष्ट्या स्थपतिः सोमपीती तु सोमपाः' इति पाठान्तरम् ॥

आचार्यलक्षणमुक्तं मनुना—

'उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः ।

सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते' ॥ १ ॥ इति मनुः २।१४० ॥

- १ अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती २ गुरोस्तु यः ।
 लब्धानुश्रुः समावृत्तः ३ सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥
 ४ छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये ५ शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ।
 ६ एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सप्रब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥
 ७ सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवश्चित्तवानग्निमग्निचित् ।

१ रघुने विश्वजित् यज्ञकर सर्वस्व दक्षिणा दी यी । विश्वजित् आदि यज्ञका यह नाम है, यह भा० दी० का मत चिन्त्य है') ॥

१ अनूचानः (पु), 'ठ्याकरण आदि ६ अङ्गोंके सहित वेदको पढ़नेवाले' का १ नाम है ॥

२ समावृत्तः (पु), 'गुरुकी आज्ञा पाकर गृहस्थाश्रममें रहनेके लिये गुरुकुलसे लौटे हुए ब्रह्मचारी' का १ नाम है ॥

२ सुत्वा (सुवन् पु), 'यज्ञके अन्तमें अवभृथनामक स्नान किये हुए' का १ नाम है ॥

४ छात्रः, अन्तेवासी (= अन्तेवासिन्), शिष्यः (३ पु), 'शिष्य, छात्र' के ३ नाम हैं ॥

५ शैक्षाः, प्राथमकल्पिकाः (२ पु । बहुवचन अविवक्षित होनेसे एकवचन भी होता है ।) 'अध्ययनको प्रथम आरम्भ किये हुए ब्रह्मचारी आदि' के २ नाम हैं ॥

६ सप्रब्रह्मचारिणः (= सप्रब्रह्मचारिन्, पु) 'आपसमें समान वेद, समान व्रत और समान आचारवाले ब्रह्मचारियों का १ नाम है ॥

७ सतीर्थ्यः, एकगुरुः (भा० दी० । २), 'सहपाठी, एक गुरुसे पढ़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ अग्निचित् (पु), 'अग्निहोत्री' का १ नाम है ॥

१. यथाऽऽह रघुवंशे कविकुलकमलदिवाकरः काळिदासः—

'स विश्वजितमावृडे यज्ञं सर्वस्वदक्षिणम्' इति रघुवंशः ४ । ८६ ॥

२. तदुक्तं हेमाद्रिणा चतुर्वर्गचिन्तामणौ दानखण्डस्य परिभाषाख्ये तृतीयप्रकरणे—

'वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञः श्रद्धात्मा पापवर्जितः ।

शेषं ओत्रिषवत्प्राप्तः सौज्ज्वलान इति स्मृतः' ॥ १ ॥

इति चतु० चिन्ता० दा० खं० पु० २८ ॥

- १ पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् ॥ १२ ॥
- २ उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्यात् ३ ज्ञात्वारम्भं उपक्रमः ।
- ४ यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥
- ५ पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ।
- ६ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

१ ऐतिह्यम् (न), इतिह (अव्य०), 'परम्परागत उपदेश' के १ नाम हैं ॥

२ उपज्ञा (स्त्री), 'गुरूपदेशके विना उत्पन्न सर्वप्रथम ज्ञान' का १ नाम है । ('जैसे—वाल्मीकिकी उपज्ञा 'रामायण' है और पणिनि की उपज्ञा 'अष्टाध्यायी सूत्रपाठ' है') ॥

३ उपक्रमः (पु), 'गुरु आदिसे ज्ञान प्राप्तकर आरम्भ करने' का १ नाम है ॥

४ यज्ञः, सवः, अध्वरः, यागः, सप्ततन्तुः, मखः, क्रतुः (७ पु), 'यज्ञ' के ७ नाम हैं ॥

५ पाठः (पु), 'वेदादिपाठ करने'को 'ब्रह्मयज्ञः' (पु); होमः (पु), 'हवन करने'को 'देवयज्ञः' (पु); अतिथीनां सपर्या, (स्त्री), 'अन्न, जलपान, शय्यादि देकर अतिथियोंके सत्कार करने'को 'नृत्ययज्ञः' (पु); तर्पणम् (न), 'अन्न, जल, पिण्डदान, आद्य, आदिसे पितरोंको सन्तुष्ट करने'को 'पितृयज्ञः' (पु); बलिः (पु), 'बलिवैश्वदेव अर्थात् काकादिको बलि देने या बलिदान करने'को 'भूतयज्ञः' (पु), कहते हैं ॥

६ ये (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, अतिथियज्ञ, पितृयज्ञ और भूतयज्ञ) ५ महायज्ञः (पु), अर्थात् 'पञ्चमहायज्ञ' हैं ॥

१. तदुक्तं मनुना—अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् ।

होमो देवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ १ ॥

पञ्चेतान्मो महायज्ञान्—

इति मनुः १।७०—७१ ॥

- १ समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः ।
आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥
- २ प्राग्वंशः प्राग्वविर्गोहात् ३ सदस्या विधिदर्शिनः ।
- ४ सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥
- ५ अभ्वर्युर्द्रातृहोतारो यजुःसामग्विदः क्रमात् ।

१ समज्या, परिषद् (= परिषद् । + पर्षत् = पर्षद्), गोष्ठी, सभा, समितिः, संसद् (= संसद्), आस्थानी (७ स्त्री), आस्थानम् (न), सदः (= सदस् न स्त्री), 'सभा' के ० नाम हैं । ('सम्प्रति सभा' शब्दका सामान्यतः व्यवहार किया जाता है') ॥

२ प्राग्वंशः (पु), 'हवनशालाके पूर्व तरफ यजमानको बैठनेके लिये बनाये हुए स्थान या गृह-विशेष'का १ नाम है ॥

३ सदस्यः (पु), 'यज्ञमें न्यूनाधिक विधिको देखनेवाले ऋत्विग-विशेष' का १ नाम है ॥

४ सभासद् (= सभासद्), सभास्तारः, सभ्यः, सामाजिकः (४ पु), 'सभासद्' के ४ नाम हैं ॥

५ अभ्वर्युः, द्राता (= द्रातृ), होता (= होतृ । ३ पु), 'यजुर्वेद, सामवेद और ऋग्वेद जाननेवाले' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

महर्षियाश्चवत्स्येनाप्युक्तन्—

'बहिकर्मस्वबाहोमस्वाध्यायातिसत्क्रियाः । भूतपित्रमरब्रह्ममनुष्याणां महामन्त्राः' ॥ १ ॥

इति याज्ञ० स्मृतिः १।१०२ ॥

यथा वा—'पाठो होमश्चातिथीनां सपर्यां तर्पणं बलिः ।

पते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः' ॥ १ ॥ इति ॥

१. यथाऽऽइ सभाकक्षणं मनुः—

'यस्मिन्वेद्ये निषीदन्ति विप्रा वेदविदस्तथाः ।

राक्षसाधिकृतो विद्वान् ब्राह्मणस्तां सभां विदुः' ॥ १ ॥ इति मनुः ८।११॥

- १ आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥
- २ वेदिः परिष्कृता भूमिः ३ समे स्थण्डिलचत्वरः ।
- ४ च्वालो यूषकटकः ५ कुम्भा सुगहना वृत्तिः ॥ १८ ॥
- ६ यूषाग्रं तर्म ७ निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ।
- ८ दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयो त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥

१ २ आग्नीध्र, ऋत्विक् (= ऋत्विज्), याजकः (३ पु), यज्ञ करानेवाला यजमान धन आदिसे जिसका चरण करे उन आग्नीध्र आदि (ब्रह्मा, उद्गाता, होता, अध्वर्यु, १७^३) यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणों के ३ नाम हैं ॥

२ वेदिः (+ वेदी । स्त्री), 'यज्ञके लिये डमरु-तुल्याकार बनाई हुई या साफ की हुई भूमि' का १ नाम है ॥

३ स्थण्डिलम्, चत्वरम् (२ न), 'यज्ञके लिये साफ किये गये स्थान-विशेष' के २ नाम हैं । ('सम्प्रति चत्वर शब्दको चबूतरा के अर्थमें भी प्रयुक्त किया जाता है')

४ च्वालो, यूषकटकः (भा० दी० । २), 'यज्ञ-स्तम्भके ऊपर बलयाकार (गोल) बनाये हुए काष्ठ-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ कुम्भा (स्त्री), 'चण्डाल, अन्त्यज आदि यज्ञको न देख सकें, इस निमित्तसे यज्ञभूमिके चारों तरफ बनाये हुए घेरे का १ नाम है ॥

६ यूषाग्रम्, तर्म (= तर्मन् । २ न) 'यज्ञ-स्तम्भके ऊपरी भाग' के २ नाम हैं ॥

७ अरणिः (पु स्त्री) 'जिसको परस्परमें रगड़कर यज्ञार्थ अग्नि निकाली जाय, उस काष्ठ-विशेष' का १ नाम है ॥

८ दक्षिणाग्निः, गार्हपत्यः, आहवनीयः (३ पु), ये ३ 'अग्निके भेद' हैं ॥

१. 'क्वचित्पु त्रयाणां इन्द्रः पठयत' इति भा० दी० ॥

२. तथा हि कात्याः—'वृताः कुर्वन्ति ये यज्ञमृत्विजस्ते—' इति ॥

३. 'आद्यशब्दात् 'पोतुप्रशास्तृब्राह्मणाच्छस्यच्छावाग्रावस्तुद्ब्रह्ममेवावरणमपिस्थातु-प्रतिहन्तुनेष्टनेतृसुब्रह्मण्याः' इत्यं सप्तदशत्विजः' इति स्त्री० स्वा० ॥

४. ब्राह्मणसर्वस्वे इलायुधेन पञ्चाग्नय उक्तास्तथा हि—

'आवसय्याहवनीयो दक्षिणाग्नितथैव च ।

अन्वाहार्यो गार्हपत्य इत्येते पञ्च ब्रह्मणः ॥ १ ॥ इति ॥

- १ अग्नित्रयमिदं त्रेता २ प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।
 ३ समूहः परिचार्योपचार्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥
 ४ यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ।
 तस्मिन्नानाय्यो ५ ऽथाग्न्यायौ स्वाहा च हुतभुक्तिप्रया ॥ २१ ॥
 ६ ऋक्सामिधेनी धार्या च या स्यादग्निसमिन्धने ।
 ७ गायत्रीप्रमुखं छन्दो—

१ त्रेता (स्त्री), 'दक्षिणाग्नि, गार्हपत्याग्नि और आहवनीयाग्नि इन तीन अग्नियोंके समुदाय' का १ नाम है ॥

२ प्रणीतः (पु), 'मन्त्रसे संस्कृत अग्नि' का १ नाम है ॥

३ समूहः, परिचार्यः उपचार्यः (३ पु), 'यज्ञ-सम्बन्धी अग्निका स्थान-विशेष, या स्थान विशेषकी अग्नि' के ३ नाम हैं ॥

४ आनाय्यः (पु), 'गार्हपत्यनामक अग्निसे लाकर मन्त्रसे संस्कृत दक्षिणाग्नि' का १ नाम है ॥

५ अग्न्यायौ, स्वाहा, हुतभुक्तिप्रया (+ अग्निप्रिया । ३ स्त्री), 'अग्निकी स्त्री, स्वाहा' के ३ नाम हैं ॥

६ सामिधेनी, धार्या (२ स्त्री), 'अग्निमें समिधा (लकड़ी) छोड़कर अग्निको जलानेमें प्रयोग किये जानेवाले मन्त्र' के २ नाम हैं ॥

७ छन्दः (= छन्दस्, न), 'गायत्री आदि छन्द' का १ नाम है ।
 उक्ता १, अस्युक्ता २, मध्या ३, प्रतिष्ठा ४, सुप्रतिष्ठा ५, गायत्री ६, उष्णिक् ७, अनुष्टुप् ८, बृहती ९, पङ्क्ति १०, त्रिष्टुप् ११, जगती १२, अतिजगती १३, शकरी १४, अतिशकरी १५, अष्टि १६, अत्यष्टि १७, छति १८ अतिछति १९, कृति २०, प्रकृति २१, आकृति २२, विकृति २३, संस्कृति २४, अतिकृति २५, शकृति २६, ये छन्दबीज छन्द होते हैं । किसी २ ने 'गायत्री.....उक्ती' तक २१ ही छन्द माने हैं) ॥

१. वृत्तरत्नाकरे केदारेण छन्दोलक्षणमुक्तम् । तथा हि—

'आरभ्यैकाक्षरात्पादादेकैकाक्षरबद्धितैः ।

पृथक् छन्दो अत्रेपादैर्यावत्पद्विशति गतम्' ॥ १ ॥ इति वृ० २० १।१७

- १ हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
- २ आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्वधियोगतः ।
- ३ धुवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
- ४ पृषदाज्यं सदध्याज्ये ५ परमान्नं तु पायसम् ।
- ६ हव्य ७ कव्ये^२दैवपिड्ये अन्ने—

- १ चरुः (पु), 'अग्निमें हव्यन किये जानेवाले अन्न' का १ नाम है ॥
- २ आमिक्षा (+ आमीक्षा मु० । स्त्री), 'औंटे हुए गर्म दूधमें दही छोड़नेपर उत्पन्न विकार-विशेष या छाँछ' का १ नाम है ॥
- ३ धुवित्रम् (+ धवित्रम् । न), 'यज्ञ में आग सुलगाने के वास्ते मृगचर्मके बने हुए पंखे' का १ नाम है ॥
- ४ पृषदाज्यम् (+ पृषातकम् । न) 'दही मिले हुए घी' का १ नाम है ॥
- ५ परमान्नम् , पायसम् (२ न), 'क्षीर, हविष्य' के २ नाम हैं ॥
- ६ हव्यम् (न), 'देवान्न' अर्थात् 'हवनके द्वारा देवताओंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥
- ७ कव्यम् (न), 'पिड्यान्न' अर्थात् 'ब्राह्मण-भोजनादिके द्वारा पितरोंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥

तेषां नामानि च तेनैवोक्तानि । तथा हि—

'उक्ताऽत्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठाऽन्या सुपूर्विका ।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पङ्क्तिरेव ॥ १ ॥
त्रिष्टुप् च जगती चैव तथाऽतिजगती मता ।
शकरी सातिपूर्वा स्यादष्ट्यस्यष्टी ततः स्मृते ॥ २ ॥
धृतिश्चातिधृतिश्चैव कृतिः प्रकृतिरात्कृतिः ।
विकृतिः संस्कृतिश्चापि तथाऽतिकृतिरत्कृतिः' ॥ ३ ॥

इति वृत्तरत्नाकरः १।१९-२१ ॥

गङ्गादासदछन्दोमञ्जर्यान्तु 'उक्ता-अत्युक्ता-शकरी'णां स्थाने 'उक्ता' अत्युक्ता,
शकरी' इत्येवं नामान्याह ॥

१. 'धवित्रं—' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'दैवपित्र' इति पाठान्तरम् ॥

- १ हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
- २ आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्वधियोगतः ।
- ३ धुवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
- ४ पृषदाज्यं सदध्याज्ये ५ परमान्नं तु पायसम् ।
- ६ हव्य ७ कव्ये^१दैवपिण्ड्ये अन्ने—

- १ चरुः (पु), 'अग्निमें हव्यन किये जानेवाले अन्न' का १ नाम है ॥
- २ आमिक्षा (+ आमीक्षा मु० । स्त्री), 'औंटे हुए गर्म दूधमें दही छोड़नेपर उत्पन्न विकार-विशेष या छाँछ' का १ नाम है ॥
- ३ धुवित्रम् (+ धवित्रम् । न), 'यज्ञ में आग सुलगाने के वास्ते मृगचर्मके बने हुए पंखे' का १ नाम है ॥
- ४ पृषदाज्यम् (+ पृषातकम् । न) 'दही मिले हुए घी' का १ नाम है ॥
- ५ परमान्नम् , पायसम् (२ न), 'क्षीर, हविष्य' के २ नाम हैं ॥
- ६ हव्यम् (न), 'देवान्न' अर्थात् 'हवनके द्वारा देवताओंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥
- ७ कव्यम् (न), 'पिण्यान्न' अर्थात् 'ब्राह्मण-भोजनादिके द्वारा पितरोंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥

तेषां नामानि च तेनैवोक्तानि । तथा हि—

- 'उक्ताऽत्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठाऽन्या सुपूर्विका ।
- गायत्र्युष्णिगतुष्टुप् च बृहती पङ्क्तिरेव ॥ १ ॥
- त्रिष्टुप् च जगती चैव तथाऽतिजगती मता ।
- शकरी सातिपूर्वा स्यादष्ट्यस्यष्टी ततः स्मृते ॥ २ ॥
- धृतिश्चातिधृतिश्चैव कृतिः प्रकृतिरात्कृतिः ।
- विकृतिः संस्कृतिश्चापि तथाऽतिकृतिरत्कृतिः' ॥ ३ ॥

इति वृत्तरत्नाकरः १।१९-२१ ॥

गङ्गादासचन्द्रमोमजय्यान्तु 'उक्ता-अत्युक्ता-शकरी'णां स्थाने 'उक्ता' अत्युक्ता, शकरी' इत्येवं नामान्याह ॥

१. 'धवित्रं—' इति पाठान्तरम् ॥
२. 'दैवपित्र' इति पाठान्तरम् ॥

—१ पात्रं सुवाधिकम् ॥ २४ ॥

- २ ध्रुवोपभृज्जुह्व ३ नां तु सुवो भेदाः 'सुवः स्त्रियः ।
 ४ उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥
 ५ परम्पराकं 'शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।
 ६ वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥
 ७ साध्नाय्यं हवि ८ रग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।
 ९ दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे १० तत्कर्माहं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥

१ पात्रम् (न), 'सुवा आदि (चमस, प्रोक्षणी, प्रणीता, सूर्प, व्यजन, बल्लखल, मुसल, प्रह,) वर्तन' का १ नाम है ॥

२ ध्रुवा, उपभृज्, जुह्वः (३ स्त्री), ये ३ 'सुवाके भेद' हैं ॥

३ + सुवः (पु), लुक् (= लुच् । + सुः । स्त्री), 'सुवा' अर्थात् 'अग्निमें घी डालनेवाले काष्ठनिर्मित यज्ञ-पात्र-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ उपाकृतः (पु), 'वेदमन्त्रसे अभिमन्त्रित कर यज्ञमें मारे हुए पशु' का १ नाम है ॥

५ परम्पराकम्, शमनम् (+ शसनम्, ससनम्), प्रोक्षणम् (३ न), 'यज्ञमें पशुको मारने' के ३ नाम हैं ॥

६ प्रमीतः, उपसंपन्नः, प्रोक्षितः (३ त्रि), 'यज्ञमें मारे हुए पशु' के ३ नाम हैं ॥

७ साध्नाय्यम्, हविः (= हविष्, भा० दी० । २ न), 'हवन करने योग्य हविष्य आदि पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

८ हुतम् (भा० दी०), वषट्कृतम् (२ त्रि), 'अग्निमें हवन किये हुए हविष्य आदि पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

९ अवभृथः (पु), 'यज्ञके अन्तमें किये जानेवाले यज्ञ-समाप्ति-सूचक ज्ञान-विशेष' का १ नाम है ॥

१० यज्ञियम् (त्रि), 'यज्ञके योग्य पदार्थ' का १ नाम है । ('जैसे—'ब्राह्मण, हविष्यादि अन्न, स्थान.....') ॥

२. 'सुवः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शसनम्' इति लुक् पाठः इति स्त्री० स्वा० । 'ससनम्' इत्यन्य इति भा० दी० ॥

- त्रिष्व१थ क्रतुर्कर्म२ पूर्तं खातादि कर्म यत् ।
 ३ अमृतं ४ विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥
 ५ त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।
 विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥
 प्रादेशनं निर्वपण-अपवर्जनमंहतिः ।

- १ 'इष्टम् (न), 'यज्ञ कार्यं, दान देने' का १ नाम है ॥
 २ 'पूर्तम् (न), 'बाधली, कुआँ, तालाब आदि खुदवाने तथा औषधालय, देवालय आदि बनवाने' का १ नाम है ॥
 ३ 'अमृतम् (न), 'यज्ञसे बचे हुए द्रविष्य' का १ नाम है ॥
 ४ 'विघसः (पु), 'ब्राह्मण, अतिथि आदिके भोजनके बाद बचे हुए अन्न' का १ नाम है ॥
 ५ त्यागः (पु), विहापितम्, दानम्, उत्सर्जनम् (+ उत्सर्गः, पु), विसर्जनम्, विश्राणनम्, वितरणम्, स्पर्शनम्, प्रतिपादनम्, प्रादेशनम्, निर्वपणम्, अपवर्जनम् (११ न) अंहतिः (स्त्री), 'दान देने' के ११ नाम हैं ॥

१. हेमाद्रौ दानखण्डे शङ्कोक्तमिष्टलक्षणं यथा—
 'अग्निहोत्रं तपः सत्यं वेदानां चैव पावनम् । आतिथ्यं वैधदेवं च हृष्टमित्यभिधीयते ॥ १ ॥
 एकाग्रिकादौ यत्कर्म त्रेतायां यच्च हूयते । अन्तर्वेद्यां च यद्दानमिष्टं तदभिधीयते' ॥ २ ॥
 इति हेमा० दा० खं० पृ० २१ ॥
२. हेमाद्रौ दानखण्डे शङ्कोक्तं पूर्त्तलक्षणम्—
 'रोगिणां परिचर्या च पूर्त्तमित्यभिधीयते' । इति
 व्यासोक्तम्—'पुष्करिण्यस्तथा वाप्यो देवतायतनानि च ।
 अन्नदानमथारामाः पूर्त्तमित्यभिधीयते ॥ १ ॥ इति ।
 नारदोक्तम्—
 'ग्रहोपरागे यद्दानं सूर्यसंक्रमणेषु च ।
 द्वादश्यादौ तु यद्दानं तदेतत्पूर्त्तमुच्यते' ॥ १ ॥ इति हेमा० दा० खं० पृ० २१ ॥
- ३-४. अमृतविघसयोर्लक्षणं मनुराह । तद्यथा—
 'विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः ।
 विघसो मुक्तशेषं तु यज्ञशेषं तथाऽमृतम्' ॥ १ ॥ इति मनुः १ । २८५ ॥

- १ मृतार्थं 'तद्वद् दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदैहिकम् ॥ ३० ॥
 २ पितृदानं निवापः स्यात् ३ आद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।
 ४ अन्वाहार्यमासिकं ५ ऽशोऽष्टमोऽङ्गः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥
 ६ पर्येषणा परीष्टिश्चा ऽन्वेषणा च गवेषणा ।

१ और्ध्वदैहिकम् (+ और्ध्वदैहिकम् । न) 'मरे हुएके उद्देश्यसे मरने के दिनसे एकादशाह तक दिये हुए पिण्ड-दान आदि' का १ नाम है ॥

२ पितृदानम् (न), निवापः (पु), 'सपिण्डीकरणके बाद पितरोंके उद्देश्यसे दिये हुए पिण्ड-दान' का १ नाम है ॥

३ आद्धम् (न), 'आद्ध' अर्थात् 'पितरोंके उद्देश्यसे शास्त्रानुसार किये जानेवाले पिण्डदान आदि कार्य' का १ नाम है ॥

४ 'अन्वाहार्यम् (न), मासिकः (पु, आ० दी०); 'अमावस्याको किये जानेवाले मासिक आद्ध' के २ नाम हैं ॥

५ 'कुतपः (+ कुतपः । पु न), 'दिनका आठवाँ हिस्सा, सप्तम मुहूर्त (१४ घटी) के उपरान्त तथा नवम मुहूर्त (१७-१८ घटी) के मध्यका आद्ध योग्य समय विशेष' का १ नाम है ॥

६ पर्येषणा, परीष्टिः (२ स्त्री), महे० मतसे 'आद्धमें ब्राह्मणोंकी सेवा करने' के २ नाम हैं ॥

७ अन्वेषणा, गवेषणा (२ स्त्री), महे० मतसे 'धर्मान्वेषण करने' के २ नाम हैं । ('आ० दी० मतम 'पर्येषणा.....' ४ नाम 'धर्मादिके खोज करने' के हैं') ॥

१. 'तद्वद्दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदैहिकम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदाह मनुः—'पितृयज्ञं तु निर्वर्त्य विप्रश्चेन्दुक्षयेऽश्निमान् ।

पिण्डान्वाहार्यकं आद्धं कुर्यान्मासानुमासिकम् ॥ १ ॥

पितृणां मासिकं आद्धमन्वाहार्यं विदुर्दुधाः ।

तन्नामिषेण कर्तव्यं प्रशस्तेन प्रयत्नतः' ॥२॥ इति मनुः २।१२२-१२३॥

३. कुतपलक्षणं यथा—

'मुहूर्तात्सप्तमादूर्ध्वं मुहूर्तान्नवमादधः । स कालः कुतपो ज्ञेयः.....' इति ॥

'दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति आस्करे ।

स कालः कुतपो यत्र पितृभ्यो दत्तमक्षयम्' ॥ १ ॥ इति स्मृतिरिति । स्त्री० स्वा०॥

- १ सनिस्त्वध्वेषणा २ 'याञ्जाऽभिषस्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥
- ३ षट् तु त्रिष्व ४ अर्थमर्थार्थे ५ पाद्यं पादाय वारिणि ।
- ६ क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥
- ८ स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ।
- ९ 'प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्च—

१ सनिः, अध्वेषणा (२ स्त्री), 'गुरु' पिता, माता आदि श्रेष्ठ जनोंकी सेवा करने और प्रार्थनापूर्वक गुरु आदि श्रेष्ठ जनोंको किसी काममें प्रवृत्त करने' के २ नाम हैं ॥

२ याञ्जा, अभिषस्तिः (+ अभिषस्तिः), याचना, अर्थना (४ स्त्री), 'याचना करने, माँगने' के ४ नाम हैं ॥

३ यहाँ से ६ शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ अर्थ्यम् (त्रि), 'अर्थ (अर्थ देने) के लिये जल' का १ नाम है ॥

५ पाद्यम् (त्रि), 'पाद्य (पैर धोने) के लिये जल' का १ नाम है ॥

६ आतिथ्यम् (त्रि), 'अतिथियों के निमित्त वस्तु' का १ नाम है ॥

७ आतिथेयम् (त्रि), 'अतिथियोंके विषयमें सज्जन (अच्छा व्यवहार करनेवाले), का १ नाम है ॥

८ आवेशिकः, आगन्तुः (२ त्रि), अतिथिः (+ अतिथिः पु; अतिथी स्त्री), 'अतिथि' के ३ नाम हैं ॥

९ [प्राघूर्णिकः, प्राघुणकः (+ आवेशिकः । २ पु), 'अभ्यागत' के २ नाम हैं] ॥

१. 'याञ्जाऽभिषस्ति—' इति पाठान्तरम् ॥

२. प्राघूर्णिकः.....गौरवम्' इत्यंशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

३. अतिथिलक्षणान्युच्यन्ते—

तिथिपूर्वोत्सवाः सर्वे त्यक्ता येन महात्मना ।

सोऽतिथिः सर्वभूतानां शेषानभ्यागतान्विदुः' ॥ १ ॥ इति यमः ॥

कचित् — 'शेषः प्राघुणिकः स्मृतः' इति तुरीयपादः ॥

'दूराच्चोपगतं भ्रान्तं वैश्वदेव उपस्थितम् ।

अतिथिं तं विभानीयात्तातिथिः पूर्वमागतः' ॥ १ ॥ इति व्यासश्च ॥

'अध्वनीनोऽतिथिर्ज्ञेयः ओत्रियो वेदपारगः' इति याज्ञ० १।१११ ॥

—१ अभ्युत्थानं तु गौरवम् (२०)

- २ पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्याऽर्हणाः समाः ॥ ३४ ॥
 ३ वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याप्युपासना ।
 ४ व्रज्याऽटाट्या पर्यटनं ५ चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥ ३५ ॥
 ६ उपस्पर्शस्वाचमन ७ मथ मौनमभाषणम् ।
 ८ प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः (२१)
 ९ वाल्मीकिश्चा ९ थ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः (२२)

१ [अभ्युत्थानम् , गौरवम् (२ न), 'अभ्युत्थान' अर्थात् 'बड़े लोगोंके आनेपर उठकर अगवानी करने' के २ नाम हैं] ॥

२ पूजा, नमस्या, अपचितिः, सपर्या, अर्हा, अर्हणा (६ स्त्री), 'पूजा' के ६ नाम हैं ॥

३ वरिवस्या, शुश्रूषा, परिचर्या (+ उपचर्या, परेष्टिः), उपासना (+ न । ४ स्त्री), 'शुश्रूषा करने' के ४ नाम हैं ॥

४ व्रज्या, अटाट्या (+ अटा, अट्या, महे० । २ स्त्री), पर्यटनम् (+ भ्रमणम् । न), 'धूमने' के ३ नाम हैं ॥

५ चर्या (+ ईर्या मुनि० । स्त्री), 'ध्यान' मौन इत्यादि योगमार्गोंमें स्थित होने का १ नाम है ॥

६ उपस्पर्शः (पु), आचमनम् (न), 'आचमन करने' के २ नाम हैं ॥

७ मौनम् , अभाषणम् (२ न), मौन या चुप रहने के २ नाम हैं ॥

८ [प्राचेतसः, आदिकविः, मैत्रावरुणिः (मैत्रावरुणः), वाल्मीकिः (+ वाल्मीकिः, वल्मीकिः, वल्मिकः । ४ पु), 'वाल्मीकि मुनि' के ४ नाम हैं] ॥

९ [गाधेयः, विश्वामित्रः, कौशिकः (+ कौषिकः । ३ पु), 'विश्वामित्र मुनि' के ३ नाम हैं] ॥

१. 'परिचर्याप्युपासनम्' इति पाठान्तरम् ।

२. 'प्राचेतसः.....सुतः' अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यते ॥

३. 'वाल्मीकिश्चा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः' (२३)
- २ आनुपूर्वी स्त्रियां 'वावृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥ ३६ ॥
पर्यायश्चा ३ तिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ।
- ४ नियमो व्रतमस्त्री ५ तच्छोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥
- ६ 'औपवस्तं तूपवासो ७ विवेकः पृथगात्मता ।
- ८ स्याद् ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्धि ९ रथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥
पाठे ब्रह्माञ्जलिः—

१ [व्यासः, द्वैपायनः, पाराशर्यः, सत्यवतीसुतः (४ पु), 'व्यास मुनि' के ४ नाम हैं ॥

२ आनुपूर्वी (स्त्री । + आनुपूर्व्यम्), आवृत्, परिपाटी (+ परिपाटिः । २ स्त्री), अनुक्रमः, पर्यायः (२ पु) 'क्रम' अर्थात् 'सिलसिला' के ५ नाम हैं ॥

३ अतिपातः, पर्ययः, उपात्ययः, (३ पु), 'विना क्रम' अर्थात् 'बेसिल-सिला' के ३ नाम हैं ॥

४ नियमः (पु), व्रतम् (न पु), 'नियम या व्रत' के २ नाम हैं ॥

५ पुण्यकम् (न), 'उपवासादि (सान्तपन, कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, प्राजा-पत्य, चान्द्रायण आदि) शास्त्र-विहित व्रत' का १ नाम है ॥

६ औपवस्तम् (+ औपवस्त्रम्, उपवस्तम् । न), उपवासः (+ उपो-षितम्, उपोषणम् । पु), 'उपवास, उपास' के २ नाम हैं ॥

७ विवेकः (पु), पृथगात्मता (भा० दी०, स्त्री), 'प्रकृति और पुरुषके भेद-ज्ञान वा भावोंके पृथक् स्वरूप-ज्ञान' के २ नाम हैं ॥

८ ब्रह्मवर्चसम् (न), वृत्ताध्ययनर्धिः (भा० दी०, स्त्री) 'ब्रह्मवर्चस' अर्थात् 'सदाचार और वेदाभ्यासकी वृद्धि या सशक्ति' के २ नाम हैं ॥

९ 'ब्रह्माञ्जलिः (पु), 'वेदादि पढ़नेके पहले और अन्तमें

१. 'वावृत्परिपाटिरनुक्रमः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'औपवस्त्रम्' इति पाठान्तरम्-॥

३. यथाऽऽह मनुः—'ब्रह्मारम्भेऽवसाने च पादौ ग्राह्यौ गुरोः सदा ।

संहृत्य हस्तावध्येयं स हि ब्रह्माञ्जलिः स्मृतः ॥ १ ॥

व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुपसंग्रहणं गुरोः ।

सम्येन सम्यः स्पष्टव्यो दक्षिणेन च दक्षिणः ॥ २ ॥ इति मनुः २।७१-७२

—१ पाठे 'विप्रश्नो ब्रह्मबिन्दवः ।

२ ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं ३ कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३६ ॥

४ मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पो ५ अनुकल्पस्तु ततोऽधमः ।

२ संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ॥ ४० ॥

७ समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ।

व्यस्त हाथसे (दहने हाथसे दहिना और बायें हाथसे बायाँ) गुरुको पैरको छूकर प्रमाण करने' का १ नाम है ॥

१ ब्रह्मबिन्दुः (पु), 'वेदादि पढ़नेके समय मुखसे निकले हुए जल-कण (थूकमिश्रित जल की छोटी २ बूँद)' का १ नाम है ॥

२ ब्रह्मासनम् (न) 'ध्यान और योगके आसन' का १ नाम है ॥

३ कल्पः, विधिः, क्रमः (३ पु) 'शास्त्रोक्त विधि' के ३ नाम हैं ॥

४ मुख्यः (पु), 'शास्त्रोक्त प्रधान विधि' का १ नाम है ॥

५ अनुकल्पः (पु), 'शास्त्रोक्त गौण (अप्रधान, अभाव पक्षीय) विधि' का १ नाम है ॥

५ उपाकरणम् (न), 'संस्कारके साथ २ वेदको ग्रहण करने' का १ नाम है ॥

७ पादग्रहणम् , अभिवादनम् (२ न), 'अपने नामको कहते हुए प्रणाम करने' के २ नाम हैं ॥

१. 'विप्लुषो ब्रह्मबिन्दव' इति पाठान्तरम् ॥

२. यथा 'ब्रीहिरियंजेत' इति श्रुतौ ब्रीहिश्रवणात् 'ब्रीहिरिमेव यजेत नान्येन द्रव्येण' इति श्रुत्यर्थात् ब्रीहिकरणमुपादानं प्रधानमतो ब्रीहिरियाङ्करणं मुख्यः कल्पः ॥

३. ब्रीहिरिक्ताभावावे नित्यनैमित्तिकादिविधिक्षयो मा भूदित्यतो ' इति श्रुत्या नीवारेणापि यागो विधीयत इति नीवारकरणकमुपादानमप्रधानमतो नीवारेण यागकरणमनुकल्पः ॥

४. तदाह मनुः—

'अभिवादात्परं विप्रो व्यापांसमभिवादयेत् ।

असौ नामाहमस्मीति स्वं नाम परिकीर्तयेत्' ॥ १ ॥ इति मनु २।१२२ ॥

- १ भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥
- २ तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी ३ वाचंयमो मुनिः ।
- ४ तपःक्लेशसहो दान्तो ५ वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥
- ६ ऋषयः सत्यवचसः—

१ भिक्षुः, परिव्राट् (= परिव्राज् । + परिव्राजकः), कर्मन्दी (= कर्म-
न्दिन्), पाराशरी (= पाराशरिन्), मस्करी (= मस्करिन् । ५ पु),
'संन्यासी' के ५ नाम हैं ॥

२ तपस्वी (= तपस्विन्), तापसः, पारिकाङ्क्षी (= पारिकाङ्क्षिन् ।
३ पु), 'तपस्वी' के ३ नाम हैं ॥

३ वाचंयमः, मुनिः (२ पु), 'मुनि' के २ नाम हैं । ('किसी किसी के
मतसे ये २ नाम भी 'संन्यासी' के ही पर्याय हैं) ॥

४ तपःक्लेशसहः (भा० दी०), दान्तः (२ पु), 'तपस्या के क्लेश-
को सहनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ वर्णी (= वर्णिन्), 'ब्रह्मचारी (= ब्रह्मचारिन्), 'ब्रह्मचारी' के
२ नाम हैं ॥

६ ऋषिः, सत्यवचाः (= सत्यवचस् । २ पु), 'ऋषि-सामान्य' के
२ नाम हैं । (श्रुतर्षि १, काण्डर्षि २, परमर्षि ३, महर्षि ४, राजर्षि ५, ब्रह्मर्षि ६
और देवर्षि ७; ये 'सात ऋषियोंके भेद' हैं) ॥

'आत्मनाम गुरोर्नाम नामातिकृपणस्य च । श्रेयस्कामो न गृह्णीयाज्ज्येष्ठापत्यकलत्रयोः' ॥ ११ ॥

इति वचनेन यद्यपि श्रेयस्कामुकस्यात्मनामग्रहणं निषिद्धन्तथापि जन्मदादये दिने तत्पि-
त्रादिकृतनाक्षत्रनामपरम् । विस्तरतस्तु वैयाकरणलघुमञ्जूषायां स्मृत्यन्तरे वा प्रपञ्चितमत्र
विस्तरमयात्र लिखितमिति तत् एवावधार्यम् ॥

१. तदुक्तम्—'कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ।

सर्वथा मेषुनत्यागः ब्रह्मचर्यं तदुच्यते' ॥ १ ॥

एतत्कर्मसंग्रहो 'ब्रह्मचारी' भवति ।

२. ऋषयः सप्तविधाः । ते यथा—श्रुतर्षिः पवित्रकथादिभ्रवणकर्ता १, काण्डर्षिः
वेदानां प्रधानकाण्डस्योपदेष्टा २, परमर्षिः मुनिमेकप्रभृतयः ३, महर्षिः व्यासादयः ४,
राजर्षिः विश्वामित्रादयः ५, ब्रह्मर्षिः वसिष्ठादयः ६, देवर्षिः नारदादयः ७ इति ॥

—१ 'स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती ।

२ ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते ॥ ४३ ॥

३ यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ ।

स्थाण्डिलश्चा ४ य विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः ॥ ४४ ॥

५ पवित्रः प्रयतः पूतः ६ 'पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः ।

१ स्नातकः, आप्लुतः, (+ आप्लवव्रती = आप्लवव्रतिन्, आप्लुतव्रती = आप्लुतव्रतिन् । पु), 'स्नातक' अर्थात् 'वेदव्रतको समाप्त होनेपर गुरुकी आज्ञासे समाप्ति-सूचक स्नान-विशेष (समावर्तन) किये हुए ब्रह्मचारी' के २ नाम हैं । ('स्नातक'के ३ भेद हैं—वेदको समाप्तकर और व्रतको विना समाप्त किये समावर्तन संस्कारवाला विद्यास्नातक १, व्रतको समाप्तकर और वेदको विना समाप्त किये समावर्तन संस्कारवाला व्रतस्नातक २, तथा वेद और विद्या दोनों को समाप्तकर समावर्तन संस्कारवाला विद्याव्रतस्नातक ३ ^३) ॥

२ निर्जितेन्द्रियग्रामः (भा० दी०), यती (= यतिन्), यतिः (३ पु), 'जितेन्द्रिय' के ३ नाम हैं ॥

३ स्थण्डिलशायी (= स्थण्डिलशायिन्), स्थाण्डिलः (२ पु), 'स्थाण्डिल (विना साफ सुथरा की हुई अकृत्रिम भूमि) पर सोनेवाले व्रती' के १ नाम हैं ॥

४ विरजस्तमाः (= विरजस्तमस्), द्वयातिगाः (२ पु), 'सत्त्वगुणी' के २ नाम हैं ॥

५ पवित्रः, प्रयतः, पूतः (३ पु), 'पवित्र' के ३ नाम हैं ॥

६ 'पाखण्डः (+ पाषण्डः), सर्वलिङ्गी (= सर्वलिङ्गिन् । २ पु), 'पाखण्डी' अर्थात् 'दुष्ट शास्त्रमें स्थित बौद्ध आदि खपणक (संन्यासी)' के १ नाम हैं ॥

१. 'स्नातकस्त्वाप्लवव्रती' इति 'स्नातकस्त्वाप्लुतव्रती' इति च पाठान्तरे ॥

२. 'पाषण्डाः' इति पाठान्तरम् ॥

३. एतत्सर्वं याज्ञवल्क्यस्मृतावाचाराध्याये (१।११०) मिताक्षरायां सुस्पष्टम् ॥

४. तदुक्तम्—'पाखनाच्च त्रयीधर्मः पाखण्डेन निगद्यते ।

तं खण्डयन्ति ते यस्मात्पाखण्डास्तेन हेतुना' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ पालाशो दण्ड आषाढो व्रते २ रामभस्तु वैणवः ॥ ४५ ॥
- ३ अस्त्री कमण्डलुः कुण्डो ध्रुवतिनामासनं वृषी ।
- ५ अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री ६ भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥ ४६ ॥
- ७ स्वाध्यायः स्याज्जपः—

१ आषाढः (आषाढकः, आषाढः । पु), 'ब्रह्मचर्यावस्थामें ब्राह्मणसे धारण किये हुए पल्लवके दण्ड' का १ नाम है ॥

२ रामभः (पु), 'ब्रह्मचर्यावस्थामें धारण किये हुए बाँसके दण्ड' का १ नाम है ॥

३ कमण्डलुः (पु न), कुण्डो (स्त्री), 'कमण्डलु' के २ नाम हैं ॥

४ वृषी (+ वृसी । स्त्री), 'ब्रह्मचारी आदि व्रतियोंके आसन' का १ नाम है ॥

५ अजिनम्, चर्म (= चर्मन् । २ न), कृत्तिः (स्त्री), 'मृगादिके चमड़े' के ३ नाम हैं ॥

६ भैक्षम् (त्रि), 'भिक्षामें मिले हुए पदार्थ' का १ नाम है ॥

७ स्वाध्यायः, जपः (२ पु), 'नियमसे वेदादिके अभ्यास करने' के २ नाम हैं । 'जप ३ प्रकारका होता है—वाचिक १, उपनिषद् २ और मानस ३ । इनको उत्तरोत्तर श्रेष्ठ^३ कहा गया है') ॥

१. 'वृसी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'ब्राह्मणो वैश्वपालाशौ क्षत्रियो वटखादिरौ ।

पैलवौदुम्बरौ वैश्या दण्डानहन्ति धमेतः' ॥ १ ॥

इति मनुः २।४५॥

३. हारीतोक्ता जपभेदास्तेषां लक्षणानि चात्र प्रदर्श्यन्ते—

“.....त्रिविधो जपयज्ञः स्यात्तस्य तत्त्वं निबोधत ॥

वाचिकश्चाप्युपांशुश्च मानसश्च त्रिधाऽकृतिः । त्रयाणामपि यज्ञानां श्रेष्ठः स्यादुत्तरोत्तरः ॥

यदुच्चनीचोच्चरितैः शब्दैः स्पष्टपदाक्षरैः । मन्त्रमुच्चारयेदाचा जपयज्ञस्तु वाचिकः ॥

—१ सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ।

- २ सर्वेनसामपध्वंसि जप्यं त्रिविधमर्षणम् ॥ ४७ ॥
 ३ दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ।
 ४ शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत् कर्म तथमः ॥ ४८ ॥
 ५ नियमस्तु स तत् कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ।

१ सुत्या (स्त्री), अभिषवः (पु), सवनम् (न), 'सोमलता (यज्ञो-
 षधि) को कूटने' के ३ नाम हैं ॥

२ अवमर्षणम् (त्रि), 'सब पापोंको नाश करनेवाले जप' (ऋचा
 आदि) का १ नाम है ॥

३ दर्शः, पौर्णमासः (२ पु), 'अमावास्या और पूर्णिमाको होने-
 वाले यज्ञ' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

४ यमः (पु), 'जीवनभर शरीरसे करने योग्य संयम' का १ नाम
 है । ('अहिंसा १, सत्य २, अस्तेय (किसीकी कोई वस्तु बिना दिये या पूछे
 न लेना) ३, ब्रह्मचर्य ('आठ प्रकारके मैथुनका त्याग) ४ और अपरिग्रह
 (हिंसादि अनेक दोषोंको देखकर दान नहीं लेना ५) ये पाँच यम' हैं') ॥

५ नियमः (पु), 'नियम' अर्थात् 'जो कार्य जीवन पर्यन्त नहीं हो सके
 किन्तु विशेष २ समयपर किया जाय उस कार्य' का १ नाम है । ('शौच अर्थात्

शनैश्चारयेन्मन्त्रं किञ्चिदोष्ठीं प्रचालयेत् । किञ्चिच्छूत्रगयोग्यः स्यात्स उपांशुर्जपः स्मृतः ॥
 धिया पदाक्षरश्रेण्या अवर्णमपदाक्षरम् । शब्दार्थचिन्तनाभ्यां तु तदुक्तं मानसं स्मृतम् ॥
 इति हारीतस्मृतिः ४।४०-४४

१. अष्टाङ्गमैथुनलक्षणं यथा—

‘स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुरुभाषणम् ।

संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च ॥ १ ॥

एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः’ । इति ॥

२. 'तदुक्तं भगवत्पतञ्जलिना—'तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा' इति
 यो० सू० २।१० ॥

- १ 'क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु' (२४)
- २ उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ॥ ४९ ॥
- ३ प्राचीनावीतमन्यस्मिन् ४ निवीतं कण्ठलम्बितम् ।

मिट्टी जल आदिये बाहरी और पञ्चगव्य-पान आदिये भीतरी पवित्रता १, सन्तोष २, तप (चान्दायन, कृच्छ्र, सान्त्वयन आदि व्रत) ३, स्वाध्याय (वेदादिका अध्ययन) ४, ईश्वरप्रणिधान (परमेश्वरकी पूजा आदि) ५, 'ये पाँच नियम' हैं) ॥

३ [क्षौरम्, भद्राकरणम्, मुण्डनम् (३ न), वपनम् (त्रि), 'मुण्डन कराने' के ४ नाम हैं] ॥

२ उपवीतम्, ब्रह्मसूत्रम् (भा० दी० । × यज्ञसूत्रम् २ न) 'बायें कन्धेके ऊपरसे दाहिने तरफ नीचेकी ओर लटकते हुए जनेऊ' के २ नाम हैं । ('उपवीत जनेऊको धारण करनेवालेका 'उपवीती' (= उपवीतिन् पु), यह १ नाम है') ॥

३ प्राचीनावीतम् (न), 'दाहिने कन्धेके ऊपरसे बायीं तरफ नीचेको लटकते हुए जनेऊ' का १ नाम है । ('प्राचीनावीत जनेऊका धारण करने वालेका 'प्राचीनावीती' (= प्राचीनावीतिन् पु) यह १ नाम है') ॥

४ निवीतम् (न) 'मालाकी तरह गर्दनसे सीधे नीचे की ओर लटकते हुए जनेऊ' का १ नाम है । ('निवीत जनेऊको धारण करनेवाले का 'निवीती' (= निवीतिन् पु) यह १ नाम है') ॥

१. तदुक्तं भगवत्पतञ्जलिना—'शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा' इति यो० सू० २। ३२ ॥

२-३-४. उपवीति-प्राचीनावीति-निवीतिनां रुक्षणमाह मनुस्तथा—

'उद्धृते दक्षिणे पाणानुपवीत्युच्यते द्वित्रः ।

सन्धे प्राचीन आवीती निवीती कण्ठसज्जे' ॥ १ ॥ मनुः २। ३६ ॥

छन्दोगपरिशिष्टे च—

'ब्रह्मसूत्रेऽत्र सन्धेऽस्ते स्थिते यज्ञोपवीतिता ।

प्राचीनावीतिताऽसन्धे कठस्थे तु निवीतिता' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैवं २ स्वरूपाङ्गुल्योर्मूले कायम् ॥ ५० ॥
 ३ मध्यंऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः 'पित्र्यं' ४ मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् ।
 ५ म्याव ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ॥ ५१ ॥
 ६ देवभूयोदकं तद्धत ७ कृच्छ्रं सान्त्वननादिकम् ।
 ८ संन्यासवत्यनशने पुमान् प्रायोऽप्यथ वीरहा ॥ ५० ॥
 नष्टाग्निः—

१ दैवम् (न), 'दैवतीर्थ' अर्थात् 'हाथकी अङ्गुलियोंके आगेवाले भाग' का १ नाम है ॥

२ कायम् (न), 'कायतीर्थ' अर्थात् 'हाथकी कनिष्ठा अङ्गुलीके नीचे-वाले भाग' १ नाम है ॥

३ पित्र्यम् (+ पैत्र्यम्, पैत्रम् । न), 'पितृतीर्थ' अर्थात् 'हाथके अँगूठे और तर्जनी अङ्गुलीके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

४ ब्राह्मम् (न), 'ब्रह्मतीर्थ' अर्थात् 'हाथके अँगूठेके मूलभाग' का १ नाम है ॥

५ ब्रह्मभूयम्, ब्रह्मन्वम्, ब्रह्मसायुज्यम् (न), 'मोक्ष' अर्थात् ब्रह्ममें लीन हो जाने' के ३ नाम हैं ॥

६ देवभूयम् (न) आदि (देवत्वम्, देवसायुज्यम्; २ न), 'देवतामें लीन हो जाने' के ३ नाम हैं ।

७ 'कृच्छ्रम् (न) 'सान्त्वन आदि (चान्द्रायण, पराक और प्राजापत्य आदि) व्रत' का १ नाम है ॥

८ प्रायः (पु), 'संन्यास-पूर्वक भोजनको छोड़ने' का १ नाम है ॥

९ वीरहा (= वीरहन् । + विरहा=विरहन्), नष्टाग्निः (२ पु), 'प्रमादसे जिस अग्निहोत्रीकी आग वृक्ष गयी हो उस अग्निहोत्री' के २ नाम हैं

१. 'दैत्र्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

२-३-४-५. ब्राह्म-काय-दैव-पित्र्य-तीर्थानां लक्षणान्याह मनुः । तथा हि—

'अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं-तीर्थं प्रचक्षते ।

कायमङ्गुलिनुलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः' ॥ १ ॥ इति मनुः २।५९ ॥

६. मेकपुरःसरकृच्छ्रमेवास्तद्विधिश्च याज्ञवल्क्यस्मृतौ (३।३१५—३२५), मनुस्मृतौ २।२११—२२५) च द्रष्टव्याः ।

—१ कुहना लोभान्मिथ्येर्थापथकल्पना ।

२ ब्राह्म्यः संस्कारहीनः स्यादेदस्वाध्यायो निराकृतिः ॥ ५३ ॥

४ धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिपरवकीर्णी अतवतः ।

६ सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति लुप्ते यस्मिन्नुदेति च ॥ ५४ ॥

अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ।

७ परिवेत्ताऽनुत्ताऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥ ५५ ॥

१ कुहना (लां), 'दम्भसे ध्यान-मौनादि धारण करने, धनलाभ-से मिथ्या धर्माचरण करने' का १ नाम है ॥

२ 'ब्राह्म्यः, संस्कारहीनः (भा० दी० । २ पु), 'यथोचित समयपर यज्ञोपवीत संस्कारसे हीन हिजालि (ब्राह्मण, चरित्र और वैश्य)' के २ नाम हैं ॥ ब्राह्मण चरित्र तथा वैश्यका शर्माश्रमसे क्रमशः १६, २२ और २४ वर्षकी अवस्थातक यज्ञोपवीत नहीं होने पर उन्हें 'ब्राह्म्य' कहते हैं) ॥

३ अस्वाध्यायः (भा० दी०), निराकृतिः (२ पु), 'वेदको नहीं पढ़नेवाले' के २ नाम हैं । ('ब्राह्म्यः,' ४ नाम एकार्थक हैं, यह भी कई एक आचार्योंका मत है) ॥

४ धर्मध्वजी (= धर्मध्वजिन्), लिङ्गवृत्तिः (२ पु), 'भिक्षा आदि मिलनेके लिये जटा-भस्मादि धारणकर झूठा साधु बनने' के २ नाम हैं ॥

५ अवकीर्णी (= अवकीर्णिन्), अतवतः (भा० दी० । २ पु), 'नियम-से चलनेवाला ब्रह्मचर्यादि व्रत जिसका बोझ ही में भग्न हो गया हो उस ब्रह्मचारी आदि व्रती' के २ नाम हैं ॥

६ अभिनिर्मुक्तः, अभ्युदितः (२ पु), 'जिसके सोते रहनेपर सूर्योदय हो और जिसके सोते रहने पर सूर्यास्त हो उस'का क्रमशः १-१ नाम है ॥

७ परिवेत्ता (= परिवेत्तृ, पु), 'बड़े भाईके अविवाहित (बिना व्याह किये हुए) रहनेपर विवाहित (व्याह किये हुए) छोटे भाई' का १ नाम है ॥

१. ब्राह्म्यलक्षणमाह मनुस्तथा—

'भाषोदशाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते ।

आद्याविंशत्क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ १ ॥

अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः ।

सावित्रीपतिता ब्राह्म्या भवन्त्यार्यविर्हिताः ॥ २ ॥ इति मनुः ११८—१९

- १ परिवृत्तिस्तु तज्ज्यायान् २ विवाहोपयमौ समौ ।
 तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥
 ३ 'व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ।
 ४ त्रिवर्गो धर्मकामार्थे चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥
 ६ सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं ७ जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ।

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

१ 'परिवृत्तिः (पु), 'जिसका छोटा भाई विवाहित हो उस अविवाहित बड़े भाई' का १ नाम है ॥

विवाहः, उपयमः, परिणयः, उद्वाहः, उपयामः (५ पु), पाणिपीडनम् (+ पाणिग्रहणम्, करपीडनम्,) । न) 'विवाह' के ६ नाम हैं ॥

३ व्यवायः, ग्राम्यधर्मः (२ पु), मैथुनम्, निधुवनम्, रतम् (३ न), 'मैथुन' अर्थात् 'स्त्रीके साथ सम्भोग करने'के ५ नाम हैं ॥

४ त्रिवर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म और काम के समुदाय' का १ नाम है ॥

५ चतुर्वर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म और काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

६ चतुर्भद्रम् (न), 'सुखद अर्थ, धर्म, काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

७ जन्याः (पु), 'समान अवस्थावाले वर (दुग्धा) के प्रेमी या बधूकी पालकी देनेवाले' का १ नाम है ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

१. 'व्यवायो ग्राम्यधर्मश्च रतं निधुवनं च सा' इति केचिस्पठन्ति' इति महेश्वरः ॥

२. परिवेत्तृपरिवित्त्योर्लक्षणं यथा—

येऽप्येत्तृकलत्रेषु कुर्वन्ते दारसंग्रहम् । ज्ञेयास्ते परिवेत्तारः परिवित्तिस्तु पूर्वजः ॥१॥ इति ॥

- १ परिवृत्तिस्तु तज्ज्यायान् २ विवाहोपयमौ समौ ।
 तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥
 ३ 'व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ।
 ४ त्रिवर्गो धर्मकामार्थश्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥
 ६ सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं ७ जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ।
 इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

१ 'परिवृत्तिः (पु), 'जिसका छोटा भाई विवाहित हो उस अविवाहित बड़े भाई' का १ नाम है ॥

विवाहः, उपयमः, परिणयः, उद्वाहः, उपयामः (५ पु), पाणिपीडनम् (+ पाणिग्रहणम्, करपीडनम्,) । न) 'विवाह' के ६ नाम हैं ॥

३ व्यवायः, ग्राम्यधर्मः (२ पु), मैथुनम्, निधुवनम्, रतम् (३ न), 'मैथुन' अर्थात् 'स्त्रीके साथ सम्भोग करने'के ५ नाम हैं ॥

४ त्रिवर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म और काम के समुदाय' का १ नाम है ॥

५ चतुर्वर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म और काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

६ चतुर्भद्रम् (न), 'सुखद अर्थ, धर्म, काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

७ जन्याः (पु), 'समान अवस्थावाले वर (दुल्हा) के प्रेमी या बधूकी पालकी देनेवाले' का १ नाम है ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

१. 'व्यवायो ग्राम्यधर्मश्च रतं निधुवनं च सा' इति केचिरपठन्ति' इति महेश्वरः ॥

२. परिवेत्तपरिविस्त्योर्लक्षणं यथा—

येऽप्येज्यकलत्रेषु कुर्वन्ते दारसंग्रहम् । शेषास्ते परिवेत्तारः परिविस्त्यस्तु पूर्वजः ॥ ११ ॥ इति ॥

८. अथ क्षत्रियवर्गः ।

- १ मूर्द्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।
- २ राजा राट् पार्थिवश्चामृषभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥
- ३ राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्वाधीश्वरः ।
- ३ चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपः—

८ अथ क्षत्रियवर्गः ।

१ मूर्द्धाभिषिक्तः (+ मूर्द्धावपिक्तः), राजन्यः, 'बाहुजः, क्षत्रियः, विराट् (= विराज् । ५ पु), 'क्षत्रिय' के ५ नाम हैं ॥

२ राजा (= राजन्), राट् (= राज्), पार्थिवः चमाभृत् (+ चमाभृक् = चमाभुज्, महीभृक् = महीभुज्,), नृपः, भूपः (+ महीपः, भूपतिः, भूपालः, महीपतिः, महीपालः), महीक्षित् (+ अधिपः, नराधिपः, नरेशः । ७ पु), 'राजा' के ७ नाम हैं ॥

३ अधीश्वरः (= अप्रतिरथः । पु), 'सब तरफके राजाओंको वशमें करनेवाले राजा'का १ नाम है ॥

४ चक्रवर्ती (= चक्रवर्तिन्), सार्वभौमः (२ पु), चक्रवर्ती राजा' अर्थात् 'समुद्र-पर्यन्त पृथ्वीकी रक्षा करनेवाले राजा' के २ नाम हैं । ('१ भरत २ सगर, ३ मघवा, ४ सनत्कुमार, ५ शान्ति, ६ कुन्धु, ७ अर (ये तीनों जिन थे), ८ कार्तवीर्य, ९ पद्म, १० हरिवेण, ११ जय और १२ ब्रह्मदत्त, ये बारह राजा भारतवर्षमें चक्रवर्ती हुए हैं, ये सब इक्ष्वाकु वंशमें उत्पन्न थे') ॥

१. 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः—' इति श्रुतेः ॥

२. तदुक्तं हेमचन्द्राचार्यैः—

'चक्रवर्ती सार्वभौमस्ते तु द्वादश भारते ॥

आर्यमिर्भरतरतत्र सगररतु सुमित्रभूः । मघवा वैजयिरथाश्वसेननृपनन्दनः ॥
सनत्कुमारोऽथ शान्तिः कुन्धुरो जिना अपि । सुभूमस्तु कार्तवीर्यः पद्मः पद्मोत्तराम्बजः ॥
हरिवेणो हरिस्तुतो जयो विजयनन्दनः । ब्रह्मसूनुर्ब्रह्मदत्तः सर्वप्रीक्ष्वाकुवंशजाः' ॥

[अमि० चिन्ता० ३:३५५-३५८ ॥

—१ अन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

२ येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।

शास्ति यश्चाक्षया राज्ञः स सम्राडश्च राजकम् ॥ ३ ॥

४ राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात् ।

५ मन्त्री धीसचिवोऽमात्योऽप्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

१ मण्डलेश्वरः (पु), 'मण्डल (इसके 'बारह' प्रकृति अर्थात् भेद होते हैं) या देशको शासन करनेवाले राजा' का १ नाम है ॥

१ सम्राट् (= सम्राज्, पु) भा० दी० मतसे 'जिसने राजसूय यज्ञ किया हो, मण्डल (इसकी बारह प्रकृतियां होती हैं) का स्वामी हो और सब राजाओंको जीतकर अपने वशमें कर लिया हो उस राजा' का और किसी २ के मतसे पूर्वोक्त १-१ गुणोंसे भी युक्त राजा' का १ नाम है ॥

३ राजकम् (न), 'राजसमूह' का १ नाम है ॥

४ राजन्यकम् (न), 'क्षत्रियोंके समुदाय' का १ नाम है ॥

५ मन्त्री (= मन्त्रिन्), धीसचिवः अमात्यः (+ सामवायिकः । १ पु)

'मन्त्री' अर्थात् 'बुद्धिविषयक सहायता देनेवाले मन्त्री' के ३ नाम हैं ॥

६ कर्मसचिवः (पु) 'प्रत्येक काममें सहायता देनेवाले मन्त्री' का १ नाम है ॥

१. मण्डलस्य द्वादश प्रकृतयो भवन्ति । ता यथा—१ विजेनुमभ्युद्यतो विजिगीषुः
२ सद्गज-कृत्रिम-स्वभूम्यनन्तरस्त्रिविधोऽरिः, ३ असंहतयोररिविजिगीष्वोर्निग्रहे समर्थो मध्यमः,
४ अरिविजिगीषुमध्यमानामसंहतानां निग्रहे समर्थ उदासीनः, ५ विजिगीषुमित्रम्, ६ अरि-
मित्रम्, ७ विजिगीषुमित्रमित्रम्, ८ अरिमित्रमित्रम्, ९ पार्णिग्राहः, १० आक्रन्दः,
११ पार्णिग्राहासारः, १२ आक्रन्दासारश्चेति । सविस्तरमेतद्विवरणं वीरमित्रोदयस्य राज-
नीतिप्रकाशे द्वादशराजमण्डलप्रकरणस्य ३२० तमे पृष्ठे द्रष्टव्यम् ॥

एत एव द्वादश राजमण्डलभेदाः क्षीरस्वामिभिरुक्तास्तथा हि—

'अरिमित्रमरेमित्रं मित्रमित्रमतः परम् ।

तथाऽरिमित्रमित्रञ्च विजिगीषोः पुरः स्मृताः ॥ १ ॥

पार्णिग्राहस्तथाऽऽक्रन्द आसारश्च तयोः पृथक् ।

मध्यमोऽप्युदासीन इति द्वादश राजकम् ॥ २ ॥ इति ॥

१ महामात्राः प्रधानानि २ पुरोधस्तु पुरोहितः ।

३ द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विपाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥

१ महामात्रः (पु), प्रधानम् (न । + पु) 'प्रधान मन्त्री, राजाके खास सलाहकार' के २ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे 'कर्मसचिवः' आदि ३ नाम 'काममें सहायता देनेवाले मन्त्रि' के ही हैं') ॥

२ पुरोधाः (= पुरोधस्), पुरोहितः (+ सौवस्तिकः । २ पु) 'पुरोहित' के २ नाम हैं ॥

३ 'प्राड्विपाकः, अक्षदर्शकः (+ आक्षदर्शकः, अक्षपटलिकः । २ पु), 'व्यवहार (मुकदमे) को देखनेवाले' अर्थात् 'न्यायाधीश' के २ नाम हैं । ('व्यवहारके प्रधान अट्टारह भेद होते हैं')

१. नानामतेन प्राड्विपाकलक्षणाच्युन्ते—

'विवादानुगतं पृष्ठा पूर्ववाक्यं प्रयततः ।

विचारयति येनासौ प्राड्विपाकस्ततः स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

कचित्—ससभ्यस्तत्प्रयततः' इत्येवं द्वितीयः पादः ॥

अन्यच्च—'विवादे पृच्छति प्रश्नं प्रतिप्रश्नं तथैव च ।

नयपूर्वं प्रावदति प्राड्विपाकस्ततः स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

१. मनुष्यदश व्यवहारानाह—

'तेशामाद्यमृणादानं निक्षेपोऽस्त्रामविक्रयः ।

सम्भूय च समुत्थानं दत्तस्थानपकर्म च ॥ १ ॥

वेतनस्यैव चादानं संनिद्रश्च व्यतिक्रमः ।

कथविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः ॥ २ ॥

सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके ।

स्तेयं च साहसं चैव स्त्रीसंग्रहणमेव च ॥ ३ ॥

स्त्रीपुंघर्मो विभागश्च धूतमाह्वय एव च ।

पादान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविद्' ॥ ४ ॥

इति मनुः ८४-७ ॥

'पषामेव प्रभेदोऽन्यः शतमष्टोत्तरं भवेत् ।

क्रियाभेदान्मुष्याणां शतशाखं निगच्छते' ॥ १ ॥

इति नारदोक्त्याऽस्यानेकधा भेदास्ते इह विस्तरमयात्रोच्यन्ते ॥

- १ 'प्रतीहारो द्वारपालद्वास्थद्वास्थितदर्शकाः ।
 २ रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थोऽथाध्यक्षधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥
 ४ स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे ५ गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
 ६ भौरिकः कनकाध्यक्षो ऽरुण्याध्यक्षस्तु नैषिकः ॥ ७ ॥
 ८ अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वेशिको जनः ।
 ९ सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥
 १० शण्डो वर्षवरस्तुल्यौ—

१ प्रतीहारः (+ प्रतिहारः), द्वारपालः, द्वास्थः (+ द्वाःस्थः), द्वास्थितः (+ द्वाःस्थितः), दर्शकः (+ द्वास्थितदर्शकः द्वास्थोपस्थितदर्शकः, द्वौवारिकः ५ पु), 'द्वारपाल, ज्योतीदार' के ५ नाम हैं ॥

२ रक्षिवर्गः, अनीकस्थः (२ पु), 'राज आदिके अङ्गरक्षक' के २ नाम हैं ॥

३ अध्यक्षः, अधिकृतः (२ पु), 'अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

४ स्थायुकः (पु), 'एक ग्रामके अध्यक्ष' का १ नाम है ॥

५ गोपः (पु), 'बहुत ग्रामोंके अध्यक्ष' का १ नाम है ॥

६ भौरिकः (+ हैरिकः) कनकाध्यक्षः (२ पु), 'सुवर्णके अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

७ रुण्याध्यक्षः नैषिकः (२ पु), 'टकराल' (रुपया आदि सिक्का ढालनेके कारखाने) के अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

८ अन्तर्वेशिकः (+ अन्तर्वेशिकः १ पु), 'रनिदालमें नियुक्त पुरुष' का १ नाम है ॥

९ सौविदल्ल, कञ्चुकी (+ कञ्चुकिन्), स्थापत्याः, सौविदः (४ पु), 'कञ्चुकी' अर्थात् 'राजाओंके पादमें या रनिदालमें बाहरी रक्षाके लिये बेंतकी पतली छड़ी लिये हुए आने-जानेवाले बृद्ध पुरुष' के ४ नाम हैं ॥

१० शण्डः (+ षण्डः), 'वर्षवरः (२ पु), 'नपुंसक, जनसा' के २ नाम हैं ॥

१. प्रतीहारो द्वारपालो द्वास्थोपस्थितदर्शकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'हैरिकः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. षण्डो' इति पाठान्तरम् ॥

४. वर्षवरलक्षणं यथा—

—१ सेवकार्यनुजीविनः ।

२ विषयानन्तरो राजा शत्रुर्मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥

४ उदासीनः परतरः ५ पाणिग्राहस्तु पृष्ठतः ।

६ रिपौ वैरिस्पन्नारिद्विषद्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥

द्विद्विषपक्षाद्वितामित्रदस्सुशत्रवश्चत्रवः ।

अभिघातिपरारातिप्रत्यथिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥

७ वयस्यः स्निग्धः सवया ८ अथ मित्रं सखा सुहृत् ।

१ सेवकः, अर्थी (= अर्थिन्), अनुजीवी (= अनुजीविन् । + अनुचरः ३ पु), 'सेवक, नौकर' के ३ नाम हैं ॥

२ शत्रुः (पु), 'अपने देश (राज्य) के समीपवाले देशके राजा का १ नाम है ॥

३ मित्रम् (न), 'पूर्वोक्तसे मित्र राजा' का १ नाम है ॥

४ उदासीनः (पु), 'उदासीन' अर्थात् 'पूर्वोक्त शत्रु और मित्रके लक्षणसे मित्र राजा' का १ नाम है ॥

५ पाणिग्राहः (पु), 'राजाके युद्धादि-यात्रामें पीछेसे किलेपर चढ़ाई करनेवाले या योद्धाके पीछेसे रक्षा करनेवाले राजा' का १ नाम है ॥

६ रिपुः, वैरी (= वैरिन्), सपन्नः, अरिः, द्विषन् (= द्विषत्), द्वेषणः, दुर्हृदः, द्विद् (= द्विष्), विपक्षः, अहितः, अमित्रः, दस्सुः, शत्रुः, शत्रुः, अभिघाती (= अभिघातिन् । + अभिघातिः), परः, अरातिः, प्रत्यर्थी (= प्रत्यर्थिन्), (परिपन्थी (= परिपन्थिन् । १९ पु), 'वैरी' के १९ नाम हैं ॥

७ वयस्यः, स्निग्धः, सवयाः (= सवयस् । ३ पु), 'समान अवस्था-वाले मित्र' के ३ नाम हैं ॥

८ १ मित्रम् (न), २ सखा (= सखि), सुहृत् (= सुहृद् । + सान्-सपदीनः । २ पु), 'मित्र, दोस्त' के ३ नाम हैं ॥

यि त्वत्पसत्त्वाः प्रथमाः क्षीबाश्च स्त्रीस्त्वभाविनः ।

जात्या न दुष्टाः कार्येषु ते वै वर्षवराः स्मृताः ॥ १ ॥ इति ॥

१-२-३. अस्यागसदनो बन्धुः सदैवानुगतः सुहृत् ।

एकक्रियं भवेन्मित्रं समप्राणः सखा स्मृतः ॥ १ ॥ इति ॥

- १ सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥
- २ यथार्हदर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ।
चारश्च गूढपुरुषश्चाष्टप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥
- ५ सांख्यसरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणकावपि ।
स्युर्मौहूर्त्तिकमौहूर्त्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥
- ६ तान्त्रिकी ज्ञातांसिद्धान्तः ७ सञ्जी गृहपतिः समौ ।
- ८ लिपिकारोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥
- ९ लिखिताक्षरविन्यासे लिपिलिबिहमे स्त्रियौ ।

१ सख्यम्, साप्तपदीनम् (+ सौहृदम्, सौहार्दम्, सौहृदीयम्, आज-
र्यम्, मैत्री । २ न), 'दास्ती, मित्रता' के २ नाम हैं ॥

२ अनुरोधः (पु), अनुवर्तनम् (न), 'अनुकूल रहने' के २ नाम हैं ॥

३ यथार्हदर्णः, प्रणिधिः, अपसर्पः (+ अवसर्पः), चरः, स्पशः, चारः, गूढ-
पुरुषः (७ पु), 'गुप्तचर, स्त्रीक्रिया' के ७ नाम हैं ॥

४ आसः, प्रत्ययितः (२ त्रि), 'विश्वासपात्र पुरुषादि' के २ नाम हैं ॥

५ सांख्यसरो, ज्योतिषिकः (+ ज्योतिषिकः), दैवज्ञः, गणकः, मौहूर्त्तिकः,
मौहूर्त्तः, ज्ञानी (= ज्ञानिन्), कर्तान्तिकः (८ पु), 'ज्योतिषि' के ८ नाम हैं ॥

६ तान्त्रिकः, ज्ञातसिद्धान्तः (२ पु), 'सिद्धान्तको ठीक २ जानने-
वाले' के २ नाम हैं ॥

७ सञ्जी (= सञ्जिन्), गृहपतिः (२ पु), 'अज्ञादिको सर्वदा दान-
करनेवाले गृहस्थ' के २ नाम हैं ॥

८ लिपिकारः (+ लिपिकरः, लिबिकरः, लिपिङ्करः, लिबिङ्करः), अक्षरचणः,
अक्षरचुञ्चुः, लेखकः (४ पु), 'लेखक, क्रातिव' के ४ नाम हैं ॥

९ लिपिः (+ लिपी), लिभिः (स्त्री), 'लिखे हुए अक्षर चित्रादि'
के २ नाम हैं । ('महो' के मतसे 'लिखितम्, अक्षरसंस्थानम् (+ लिखिता-
क्षरसंस्थानम्, अक्षरविन्यासः । २ न), इन शब्दोंके भी पर्याय होने से ४
नाम उक्तार्थक हैं') ॥

१. 'प्रणिधिरवसर्पश्चरः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'लिपिकरः' इति 'लिपिङ्करः' इति पाठान्तरे ॥

३. 'लिखिताक्षरसंस्थाने' इति पाठान्तरम् ॥

१ स्यात्संदेशहरो दूतो २ दूत्यं तज्जाचकर्मणी ॥ १६ ॥

३ अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।

४ 'स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥

राज्याङ्गानि प्रकृतयः ५ पौराणां श्रेणयोऽपि च ।

६ सन्धिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥

षड्गुणाः—

१ संदेशहरः, दूतः (२ पु), 'दूत, संदेश पहुंचानेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ दूत्यम् (+ दौत्यम् । न), 'दूतके काम या भाव' का १ नाम है ॥

३ अध्वनीनः, अध्वगः, अध्वन्यः, पान्थः, पथिकः (५ पु), 'पथिक' राही, मुसाफिर' के ५ नाम हैं ॥

४ स्वामी (=स्वामिन्), अमात्यः, सुहृत् (=सुहृद्), कोशः (+ कोषः । ४ पु), राष्ट्रम्, दुर्गम्, बलम् (३ न), 'राजा, मन्त्री, मित्र, सज्जाना, राज्य, किला और सेना' का वाचक क्रमशः १-१ शब्द है, इन सातोंके 'राज्याङ्गम् (न), प्रकृतिः (स्त्री)' ये २ नाम हैं अर्थात् राजा आदि, ...७^२ 'राज्याङ्ग और प्रकृति' कहलाते हैं ॥

५ पौराणां श्रेणयः (स्त्री), अर्थात् 'नगरवासियोंको भी राज्याङ्ग और प्रकृति' कहते हैं; इस तरह 'राज्याङ्ग या प्रकृति' के ८ भेद हैं ॥

६ सन्धिः, विग्रहः, यानम्, आसनम्, द्वैधम् (३ न), आश्रयः (शेष ३ पु), ये ६ 'नीति जाननेवालोंके गुण' हैं । ('प्रसङ्गवश इनके

१. अयमेव श्लोको हेमचन्द्राचार्यरचितेऽभिधानचिन्तामणौ (१।३७८) समुपलभ्यते ॥

२. राज्याङ्गस्य सप्ताङ्गत्वं कामन्दक उक्तम् । तथा हि—

'स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रञ्च दुर्गं कोषो बलं सुहृत् ।

परस्परपकारीदं सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

३. 'अमात्याद्याश्च पौराश्च सद्भिः प्रकृतयः स्मृताः' । इति कात्यायन राज्यस्याष्टाङ्गस्य-
मपि सिद्धयति ॥

४. षड्गुणा मनुना उक्तास्तथा हि—

'सन्धि च विग्रहं चैव यानमासनमेव च ।

द्वैधीभावं संश्रयं च षड्गुणाश्चिन्तयेत्सदा' ॥ १ ॥ इति मनुः, ७।१६०॥

‘लक्षण कहते हैं—सुवर्णादि, धन, हाथी, घोड़ा आदि देकर वैरीसे मेल करनेको सन्धि १, शत्रुके राज्यविको लूटने या अग्नि आदि लगाकर वैर या युद्ध करनेको विग्रह २, जीतनेकी इच्छामे चढ़ाई या युद्धयात्रा करनेको यान ३, अपने पक्षके दुर्बल होनेमे किला आदिको पुष्ट तथा सुरक्षितकर चुपचाप बैठ जानेको आसन ४, बलवान्के साथ मित्रता और दुर्बलके साथ वर करनेको या आधी सेनाके साथ चढ़ाई कानेको द्वैध ५, तथा शत्रुसे पीड़ित होकर अपनी रक्षाके लिये उदासीन या मध्यम राताके झरणमें जानेको आश्रय ६ कहते हैं; इनके भी^२ अनेक भेद होते हैं’) ॥

१. एतेषां लक्षणानि वीरमित्रोदयस्य राजनीतिप्रकाश उक्तानि । तथा हि—

‘पणवन्धः स्मृतः’ सन्धिरपकारस्तु विग्रहः ।

जिगीषोः शत्रुविषये यानं यात्राऽभिधीयते ॥ १ ॥

विग्रहेऽपि स्वके देशे स्थितिरासनमुच्यते ।

बलाद्धेन प्रयाणं तु द्वैधीभावः स उच्यते ॥ २ ॥

उदासीने मध्यमे वा संश्रयात्संश्रयः स्मृतः’ ।

इति वीरमित्रोदयः पृ ३२४ ।

२. सन्ध्यादीनां भेदानाह मनुस्तथा हि—

‘सन्धिं तु द्विविधं विद्याद्राजा विग्रहमेव च ।

उभे यानासने चैव द्विविधः संश्रयः स्मृतः ॥ १ ॥

समानयागकर्मा च विपरीतस्तथैव च ।

तदास्वायतिसंयुक्तः सन्धिर्ज्ञेयो द्विलक्षणः ॥ २ ॥

स्वयंकृतश्च कार्यार्थमकाले काल एव वा ।

मित्रस्य चैवापकृते द्विविधो विग्रहः स्मृतः ॥ ३ ॥

एकाकिनश्चात्यधिके कार्ये प्राप्ते यदृच्छया ।

संहृतस्य च मित्रेण द्विविधं यानमुच्यते ॥ ४ ॥

क्षीणस्य चैव कमशो दैवात्पूर्वकृतेन वा ।

मित्रस्य चानुरोधेन द्विविधं स्मृतमासनम् ॥ ५ ॥

बलस्य स्वामिनश्चैव स्थितिः कार्यार्थसिद्धये ।

द्विविधं कीर्यते द्वैधं षाड्गुण्यगुणवेदिभिः ॥ ६ ॥

अर्थसम्पादनार्थं च पीड्यमानस्य शत्रुभिः ।

साधुषु व्यपदेशार्थं द्विविधः संश्रयः स्मृतः ॥ ७ ॥

इति मनुः ७ १६२—१६८ ॥

विस्तरभियाऽन्यत्रोक्ता एतेषां भेदोपभेदा नोच्यन्त इति तेऽन्वतो द्रष्टव्याः ॥

१- शक्त्यस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।

२ क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥

३ स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोषदण्डजम् ।

४ भेदो दण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥

१ शक्तिः (स्त्री), 'शक्ति' अर्थात् 'सामर्थ्य' 'प्रभाव, उत्साह और मन्त्र (गुप्त सलाह)' से होती है अर्थात् प्रभावज, उत्साहज और मन्त्रज' ये ३ शक्तियाँ हैं । ('कोष और दण्ड बल प्रभावज शक्ति १, विक्रम-बल उत्साहज शक्ति २, और सन्धि आदि षड्गुण तथा सामादि उपायका यथावत् प्रयोग मन्त्रज शक्ति ३, है') ॥

२ क्षयः (पु), स्थानम् (न), वृद्धिः (स्त्री), क्रमशः कृषि आदि 'अष्टवर्ग'की कमी होनेको क्षय, सामान्य रहने (कमी-बेसी नहीं होने) को स्थान और बढ़नेको वृद्धि कहते हैं । ये ही तीनों (क्षयः, स्थानम् , वृद्धिः), नीति जाननेवालोंका त्रिवर्ग है; त्रिवर्गः (पु), है ॥

३ प्रभावजः, प्रतापः (२ पु), 'प्रताप' अर्थात् 'खजाने तथा शासनसे उत्पन्न तेज' के २ नाम हैं ॥

४ भेदः, दण्डः (पु), साम (= सामन्), दानम् (२ न), क्रमशः चैरीके मन्त्री आदिको गुप्तचर आदिके द्वारा फाँदकर अपने पक्षमें लाकर शत्रुको वशमें करनेको भेद १, अपराधियोंके शासन करनेको दण्ड २, माटे वचन या अन्याय उपायोंसे क्रोध दूर करनेको साम ३ और किसी वस्तुके देनेको दान ४ कहते हैं । ये ही चारो (भेदः, दण्डः, साम दानम्), नीति जाननेवालों के उपाय हैं, उपायः (पु) है । ('१ भेदके तीन, २ दण्डके दो चार,

१. अष्टवर्गो यथा—कृषिवेणिकपथो दुर्गः सेतुः कुञ्जरवन्धनम् ।

खन्याकरबलादानं शून्यानां च विवेचनम् ॥ १ ॥ इति ॥

२. तदुक्तं याज्ञवल्क्येन—

‘उपायाः साम दानं च भेदो दण्डस्तथैव च ॥ इति याज्ञ० स्मृ० १।३४६ ।

मनुं प्रति मत्स्येनोपायस्य सप्तविधत्वमुक्तं तथा हि—

‘साम भेदस्तथा दानं दण्डश्च मनुजैश्चर । उपेक्षा च तथा माया इन्द्रजालं च पार्थिव ॥ १ ॥

प्रयोगाः कथिताः सप्त तन्मे निगदतः शृणु’ बीर० राज० प्रक० पृ० २८० ॥

१ साहसं तु दमो दण्डः २ साम सान्त्वश्मथो समौ ।
भेदोपजापाधुपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥

३ साम के चार और ४ धानके पाँच भेद होते हैं ^{१)})

१ साहसम् (न) दण्डः, दमः (२ पु) 'दण्ड' के ३ नाम हैं ॥

२ साम (= सामम्), सान्त्वम् (२ न), 'साम शान्त करने' के २ नाम हैं ॥

३ भेदः, उपजापः (२ पु), 'भेद' के २ नाम हैं ॥

४ उपधा (स्त्री), 'मन्त्रों आदिके धर्म, धन काम और भयादिको जाननेके लिये उनकी राजाद्वारा परीक्षा करने' का १ नाम है ॥

१. भेदस्त्रिधा तथा हि—

स्नेह्रागापनयनं संहर्षोत्पादनं तथा ।

संतर्जनं च भेदश्चैर्भेदस्तु त्रिविधो मतः ॥ १ ॥ इति ॥

नारदेन दण्डस्य द्वैविध्यं मनुना च चतुर्विधत्वमुक्तम् । तत्र क्रमशः प्रदर्श्यते—

'शारीरश्चार्थदण्डश्च दण्डश्च द्विविधो मतः ।

शारीरस्ताडनादिस्तु मरणान्तः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥

काकिन्यादिस्त्वर्थदण्डः सर्वस्वान्तस्तथैव च' । इति नारदोक्तम् ।

'वाग्दण्डं प्रथमं कुर्याद्विदण्डं तदनन्तरम् ।

तृतीयं धनदण्डं तु वधदण्डमतः परम्' ॥ १ ॥ इति मनुः ८।१२९ ॥

अग्निपुराणे सामश्चतुर्विधत्वमुक्तन्तथा हि—

'चतुर्विधं स्मृतं साम उपकारानुकीर्तनम् ।

मिथः सम्बन्धकथनं मृदुपूर्वं च भाषणम् ॥ १ ॥

आयतेर्दर्शनं वाचा तत्रा (वा) इमिति चार्पणम् । इति ॥

दानस्य पञ्चविधमुक्तमग्निपुराणे, तथा हि—

'यः संप्राप्तवन्नोत्सर्गं उत्तमाधममध्यमः ।

प्रतिदानं तदा तस्य गृहीतस्यानुमोदनम् ॥ १ ॥

द्रव्यदानमपूर्वं च तथैवेष्टप्रवर्त्तनम् ।

देयं च प्रतिमोक्षश्च दानं पञ्चविधं स्मृतम्' ॥ २ ॥

पञ्चमुपायानां प्रयोगकाण्डादिकं विविधसम्मतभेदप्रकाराश्चात्र ग्रन्थविस्तरमिया नोक्षि-
क्षिताः । ते वीरमित्रोदयस्य राजनीतिप्रकाशे पृ० २७८ तमे द्रष्टव्याः ॥

- १ पञ्च त्रिष्व २ षडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ।
- ३ विविक्तविजनच्छन्ननि शलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥
रहश्चोपांशु चालिङ्गे ४ रहस्यं नञ्चवे त्रिषु ।
- ५ 'समौ विश्रम्भविश्वासी ६ श्रेयो श्रेयो वयोचित्वात् ॥ २३ ॥
- ७ अश्रेयस्यायकत्वास्तु देशरूपं समञ्जसम् ।
- ८ युक्तमौपायकं लभ्यं भजमानाभिनीतघट् ॥ २४ ॥
न्याय्यं च त्रिषु घट् ९ संप्रधारणा तु समर्थनम् ।
- १० अववावस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥
शिष्टिश्लाघा च—

- १ यहाँसे ५ शब्द मिले हैं ॥
- २ अषडक्षीणः (त्रि), 'केवल दो आदमियोंकी की हुई गुप्त सलाह' का १ नाम है ॥
- ३ विविक्तः, विजनः, छन्नः, निःशलाकाः (४ त्रि), रहः (= रहस् न), रहः (= रहः), उपांशु (२ अव्य०), 'एकान्त' के ७ नाम हैं ॥
- ४ रहस्यम् (त्रि), 'रहस्य, छिपाने योग्य, सलाह आदि' का १ नाम है ॥
- ५ विश्रम्भः (+ विश्रम्भः), विश्वासः (२ पु), 'विश्वास' के २ नाम हैं ॥
- ६ श्रेयः (पु), 'अनुचित' का १ नाम है ॥
- ७ अश्रेयः, न्यायः, कृपः (३ पु), देशरूपम्, समञ्जसम् (२ न), 'न्याय' के ५ नाम हैं ॥
- ८ युक्तम्, लौपयिकम्, लभ्यम्, भजमानम् आदि नीतम्, न्याय्यम् (६ त्रि) 'न्याययुक्त कार्य या द्रव्यादि' के ६ नाम हैं ॥
- ९ संप्रधारणा (स्त्री), समर्थनम् (न), 'लक्षित और अनुचितका विचारकर निश्चय करने' के २ नाम हैं ॥
- १० अववावः, निदेशः निर्देशः, (३ पु), शासनम् (न), शिष्टिः, श्लाघा (२ स्त्री), 'आज्ञा, हुक्म' के ६ नाम हैं ॥

१. 'समौ विश्रम्भविश्वासी' इति पाठान्तरम् ॥

—१ संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।

१ आगोऽपराधो मन्तुश्च ३ समे तूद्दानबन्धने ॥ २६ ॥

४ द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो ५ भागधेयः करो बलिः ।

६ घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री ७ प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

८ उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।

९ यौतकादि तु यदेयं सुदायो हरणं च तत् ॥ २८ ॥

१० तत्कालस्तु तदात्वं स्यात् ११ दुत्तरः काल आयतिः ।

१ संस्था, मर्यादा, धारणा, स्थितिः (४ स्त्री), 'उचित मार्गपर रहने' के ४ नाम हैं ॥

२ आगः (= आगस् न), अपराधः, मन्तुः (२ पु), 'अपराध, कसूर' के ३ नाम हैं ॥

३ तूद्दानम्, बन्धनम् (२ न), 'बाँधने या कैद करने' के २ नाम हैं ॥

४ द्विपाद्यः (पु), 'द्विगुने दण्ड' का १ नाम है ॥

५ भागधेयः, करः, बलिः (३ पु) 'कर मालगुजारी' के २ नाम हैं ॥

६ शुल्कः (पु न), 'घाट जङ्गल और नदी आदिकी आमदनीसे दिये जानेवाले राज-भाग (टेक्स)' का १ नाम है ॥

७ प्राभृतम्, प्रदेशनम् (२ न), 'मित्रादिको खुश करनेके लिये दिये जानेवाले पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

८ उपायनम्, उपग्राह्यम् (२ न), उपहारः (पु), उपदा (स्त्री), भा० दी० मतसे 'राजाको दिये जानेवाले भेंट, नजराना' के ४ नाम हैं । प्राभृतम्, 'देवता, राजा, मित्रादिको खुश करनेके लिये दिये जानेवाले भेंट' के ६ नाम हैं ॥

९ यौतकम् (+ यौतकम् । न), सुदायः (पु) हरणम् (न), 'यज्ञोपवीत आदिमें दी हुई भिक्षा या दामादको दिये जानेवाले दहेज' के ३ नाम हैं ॥

१० तत्कालः (पु), तदात्वम् (न), 'वर्तमान काल, बीतते हुए समय' के २ नाम हैं ॥

११ आयतिः (स्त्री), 'आनेवाले समय, भविष्यत्काल' का १ नाम है ॥

१. 'यौतकादि' इति पाठान्तरम् ॥

- १ सांघट्टिकं फलं सद्य २ उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥
 ३ अदृष्टं वह्नितोयादि ४ दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
 ५ महीभुजामदिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥
 ६ प्रक्रिया त्वधिकारः स्या ७ चामरं तु प्रकीर्णकम् ।
 ८ नृपासनं यत्तद्भद्रासनं ९ सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
 हैमं १० छत्रं त्वातपत्रं—

१ सांघट्टिकम् (न), 'व्यापार आदिके बाद शीघ्र मिलनेवाले फल' का १ नाम है ॥

२ उदर्कः (पु), 'भविष्यमें होनेवाले फल' का १ नाम है ॥

३ अदृष्टम् (न), 'भागसे जलने, पानीसे बह जाने आदि' (आदि पदसे 'व्याधि, दुर्भिक्ष, मरण, बहुत वर्षा, सूखा, मृग, मूषक' का संग्रह है) के भय' का १ नाम है ॥

४ दृष्टम् (न), 'अपने राज्यमें चोर, जङ्गल आदिका भय तथा दूसरे राज्यसे दाह और चढ़ाई आदिके भय' का १ नाम है ।

५ अहिभयम् (न), 'अपने पक्ष (मन्त्री आदि) से होनेवाले राजा आदिके भय' का १ नाम है । ('पक्षके ७ भेद हैं') ॥

६ प्रक्रिया (स्त्री), अधिकारः (पु), 'व्यवस्थाको ठीक करने' के १ नाम हैं ॥

७ चामरम् (+ चमरम् ; चमरः पु, चापरा स्त्री), प्रकीर्णकम् (२ न), 'चँवर' के २ नाम हैं ॥

८ नृपासनम्, भद्रासनम् (२ न), 'मणि आदिके बने हुए राजाके आसन' के २ नाम हैं ॥

९ सिंहासनम् (न), 'सुवर्णके बने हुए राजाके सिंहासन' का १ नाम है ॥

१० छत्रम्, आतपत्रम् (२ न), 'छाता' के २ नाम हैं ॥

१. पक्षः सप्तधा, तथा हि—

'निजोऽयं मैत्रश्च समाश्रितश्च सम्बन्धतः कार्यसमुद्भवश्च ।

भूषा गृहीतो विविधोपचारैः पक्षं बुधाः सप्तविधं वदन्ति' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ राजस्तु नृपलक्ष्म तत् ।

२ भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो ३ भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥

४ निवेष्टः शिविरं पण्डे ५ सज्जनं तूपरक्षणम् ।

६ हथयश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुर्विधम् ॥ ३३ ॥

७ दन्ती दन्तावल्लो हस्ती द्विरदोऽनेकपा द्विषः ।

मत्तङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥

इभः स्तम्बेरमः पक्षी ८ यूथनाथस्तु यूथपः ।

१ नृपलक्ष्म (= नृपलक्ष्मन्, न), 'राजाके छाते' का १ नाम है ॥

२ भद्रकुम्भः, पूर्णकुम्भः (२ पु), 'मङ्गलके लिये जलसे भरे हुए घड़े' के २ नाम हैं ॥

३ भृङ्गार (पु), कनकालुका (स्त्री), 'भारी, हथहर (स्वर्णके पात्र-विशेष), के २ नाम हैं ॥

४ निवेष्टः (पु), शिविरम् (= शिविरम् । न), 'सेनाके उहरनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥

५ सज्जनम्, तूपरक्षणम् (२ न), 'सेनाकी रक्षाके वास्ते नियम किये हुए पहरे' के २ नाम हैं ॥

६ सेनाङ्गम् (न), 'हाथी, रथ, घोड़ा और पैदल ये ४ सेनाके' अङ्ग' हैं । ('नाग, जहाज आदिका रथमें, किरात, मझाह आदिका पैदलमें और सेना आदिका हाथी में अन्तर्भाव होनेसे उनका पृथक् प्रहण नहीं किया गया है')

७ दन्ती (= दन्तिन्), दन्तावल्लः, हस्ती (= हस्तिन्), द्विरदः, अनेकपाः, द्विषः, मत्तङ्गजः, गजः, नागः, कुञ्जरो, वारणः, करी (= करिन्), इभः, स्तम्बेरमः, पक्षी (= पक्षिन् । + साम्भजः, सिन्धुरः, कुम्भी = कुम्भिन् । १५ पु), 'हाथी' के १५ नाम हैं । ('यहाँमें श्लो० ४३ तक गजप्रकरण है') ॥

८ यूथनाथः, यूथपः (२ पु), 'झुण्डके स्वाभी' के २ नाम हैं ॥

१. तदुक्तं हेमचन्द्राचार्यैः—

'गजो वाजी रथः पत्तिः सेनाङ्गं स्याच्चतुर्विधम्' ॥

इति अमि० चिन्ता० ३।४।१५ ॥

१ मदोत्कटो मदकलः २ कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥

३ प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः ४ समानुद्धान्तनिर्मदौ ।

५ 'राजवाह्यस्त्वौपवाह्यः ६ सन्नाह्यः समरोचितः' (२५)

७ हास्तिकं गजता वृन्दे ८ करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥

० गण्डः कटो १० मदो दानं ११ वमथुः करशीकरः ।

११ कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसः—

१ मदोत्कटः, मदकलः (२ पु), 'मतवाले हाथी' के २ नाम हैं ॥

२ कलभः (+ करभः), करिशावकः (पु), 'तीस वर्षसे कम उम्रवाले हाथीके बच्चे' के २ नाम हैं ॥

३ प्रभिन्नः, गर्जितः, मत्तः (३ पु), 'जिसका मद गिर रहा हो उस हाथी' के ३ नाम हैं ॥

४ उद्धान्तः, निर्मदः (२ पु), 'जिसका मद गिरकर समाप्त हो गया हो उस हाथी' के २ नाम हैं ॥

५ [राजवाह्यः, औपवाह्यः (+ उपवाह्यः । २ पु), 'राजाके चढ़ने योग्य हाथी' के २ नाम हैं] ॥

६ [सन्नाह्यः, समरोचितः (२ पु), 'लड़ाईके योग्य हाथी' के २ नाम हैं] ॥

७ हास्तिकम् (न), गजता (स्त्री), 'हाथियोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

करिणी, धेनुका, वशा (३ स्त्री), 'हाथिनी' के ३ नाम हैं ॥

९ गण्डः (भा० दी०), कटः (२ पु), 'हाथीके गाल' के २ नाम हैं ॥
('उपलक्षण होनेसे प्राणिमात्रके गालके भी ये दो नाम हैं') ॥

१० मदः (पु), दानम् (न), 'हाथीके मद' के २ नाम हैं ॥

११ वमथुः, करशीकरः (२ पु), 'हाथीके सूँड़से निकले हुए पानीके छींटे' के २ नाम हैं ॥

१२ कुम्भः (पु), 'हाथीके मस्तकके ऊपरवाले दोनों मांस-पिण्डों' का १ नाम है ॥

—१ तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥

२ अवग्रहो ललाटं स्याद्विषिका त्वक्षिकूटकम् ।

४ अपाङ्गदेशो निर्याणं ५ कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥

६ अधः कुम्भस्य चाहित्थं ७ प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।

८ आसनं स्कन्धदेशः स्यात् ९ पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

१ 'विदुः (पु), 'हाथीके मस्तकके ऊपरवाले दोनों मांसपिण्डोंके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

२ अवग्रहः (+ अवग्रहः । पु), 'हाथीके ललाट' का १ नाम है ॥

३ ईषिका (+ ईषीका, इषिका, इषीका । स्त्री), अक्षिकूटकम् (न) 'हाथीकी आँखके गोलाकार भाग' के २ नाम हैं ॥

४ निर्याणम् (न), 'हाथीकी आँखके किनारेवाले भाग' का १ नाम है ॥

५ चूलिका (स्त्री), 'हाथीकी कनपट्टी' (कानकी जड़वाले भाग) का १ नाम है ॥

६ चाहित्थम् (न), 'हाथीके शिरके ऊपरवाले दोनों मांस-पिण्ड-के नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥

७ प्रतिमानम् (न), हाथीके दोनों दाँतोंके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

८ आसनम् (न), 'हाथीका कन्धा' अर्थात् 'हाथीवानके बैठनेकी जगह' का १ नाम है ॥

९ पद्मकम् , बिन्दुजालकम् (भा० दी० । + बिन्दुजालकम् । ९ न), 'हाथियोंके मुखमें कमलाकार छोटे २ जाल चिह्न विशेष' के २ नाम हैं ॥

१. 'स्याद्विषीकाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. यदाह पालकाप्यः—

'तत्र रक्षाविताने द्वे विदू द्वौ अवगणे गतौ ।

प्राक्च पश्चाच्च तिर्यक्च षड्भेदात्कुक्ष्यधारणा' ॥ १ ॥

'तत्रारक्षाविताने' इत्येवं पाठभेदः अमि० चिन्ता० (४१२९२) व्याख्यानं समुपलभ्यते ॥

- १ पक्षभागः पार्श्वभागो २ दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।
- ३ द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४० ॥
- ४ 'तोत्रं वेणुक ५ मालानं बन्धस्तम्भे ६ ऽथ शृङ्खले ।
अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥
- ८ दृष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात् ९ कल्पना सज्जना समे ।
- १२ प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

१ पक्षभागः, पार्श्वभागः (भा० दी० । २ पु), 'हाथीके पार्श्वभाग' (बगल) के २ नाम हैं ॥

२ दन्तभागः (पु), 'हाथीके आगेवाले भाग' का १ नाम है ॥

३ गात्रम् , अवरम् , (+ अवरम् , अपरम् । २ न), 'हाथीके आगेवाले जङ्घा आदि पूर्वार्द्ध शरीर और पीछेवाले जङ्घा आदि परार्द्ध शरीर' के १—१ नाम हैं ॥

४ तोत्रम् , वेणुकम् (+ वैणुकम् । २ न), 'हाथीको मारनेवाले डण्डे या चाबुक आदि' के २ नाम हैं ॥

५ मालानम् (न), 'हाथीको बाँधनेवाले खूंटे' का १ नाम है ॥

६ शृङ्खलम् (त्रि^२), अन्दुकः (+ अन्दूः स्त्री । पु), निगडः (पु न), 'हाथीकी बेड़ी' (बाँधनेवाली सिकड़ी) के ३ नाम हैं ॥

७ अङ्कुशः (पु न), सृणिः (+ शृणिः । स्त्री), 'अङ्कुश' के २ नाम हैं ॥

८ दृष्या (+ चूष्या, चूषा सुकु०), कक्ष्या, वरत्रा (३ स्त्री), 'हाथीके कसनेवाले रस्से' के ३ नाम हैं ॥

९ कल्पना, सज्जना (स्त्री), 'गेरू आदिसे हाथीकी सजावट करने' के २ नाम हैं ॥

१० प्रवेणी (+ प्रवेणः । स्त्री), आस्तरणम् (न), वर्णः, परिस्तोमः (+ वर्णपरिस्तोमः । २ पु), कुथः (पु स्त्री), 'हाथीके झूले' के ५ नाम हैं ॥

१. 'तोत्रं वैणुकमालानं बन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खला' इति पाठान्तरम् ॥

२. तथा च मेदिनी—'शृङ्खला पुंस्कटीवस्त्रकधे च निगडे त्रिषु' इति मे० पु० १६८ ॥

- १ वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं २ वारी तु गजबन्धनी ।
 ३ घोटके 'वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥
 वाजिवाहार्धगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ।
 ४ आजानेयाः कुलीनाः स्युः ५ विनीताः साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥
 ६ 'वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ।
 ७ ययुरश्वोऽश्वमेधीयो ८ जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

१ वीतम् (न) 'लङ्घनेमें असमर्थ हाथी-घोड़े' का १ नाम है ॥

२ वारी, गजबन्धनी (भा० दी० । २ छां), 'हाथीखाना' अर्थात् 'हाथी बाँधनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥

३ घोटकः (+ घोटः), वीतिः (+ पीतिः), तुरगः, तुरङ्गः, अश्वः, तुरङ्गमः, वाजी (= वाजिन्), वाह, अर्वा (= अर्धन्), गन्धर्वः, हयः, सैन्धवः, सप्तिः (१३ पु), 'घोड़े' के १३ नाम हैं । ('यहाँसे श्लो० ५० तक 'अश्वप्रकरण है') ॥

४ आजानेयः (पु), 'अच्छे घोड़े' का १ नाम है ॥

५ विनीतः, साधुवाही (+ साधुवाहिन् भा० दी० । २ पु); 'अच्छी २ चालसे शिक्षित घोड़े' के २ नाम हैं ॥

६ वनायुजः (+ वानायुजः), पारसीकः, काम्बोजः, बाह्लिकः (+ बाह्लिकः, बाह्लोकः, बाह्लोकः । ४ पु) 'वनायु, पारस, काम्बोज और बाह्लिक देशोंमें पैदा होनेवाले घोड़े' के क्रमशः १-१ नाम हैं । (किसी-किसी के मतसे प्रथम दो नाम 'पारसी घोड़े' के और अन्तवाले दो नाम उक्तार्थक हैं) ॥

७ ययुः, अश्वमेधीयः (भा० दी० । २ पु), 'अश्वमेध यज्ञमें छोड़े जानेवाले घोड़े' के २ नाम हैं ॥

८ जवनः (+ प्रजवी = प्रजविन्), जवाधिकः (भा० दी० । २ पु), 'बहुत तेज चलनेवाले घोड़े' के २ नाम हैं ॥

१. पीतितुरग— इति पाठान्तरम् ॥ २. 'वानायुजः' इति पाठान्तरम् ॥

३. अश्वशास्त्रे आजानेयकक्षणमुक्तन्तया हि—

'शक्तिभिन्नदृश्याः स्वरूपाश्च पदे-पदे ।

आजानन्ति यतः संज्ञामाजानेयास्ततः स्यूताः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ पृष्ठयः स्थौरी २ सितः कर्को ३ रथयो वोढा रथस्य यः ।
 ४ बालः किशोरो ५ वाङ्मन्त्रा वदवा ६ वाङ्मन्त्रं गणे ॥ ४६ ॥
 ७ त्रिणाश्वीनं यदश्वेन दिनैकेन गम्यते ।
 ८ कश्यं तु मध्यमश्वानां ९ हेषा हेषा च निस्वनः ॥ ४७ ॥
 १० निगालस्तु गलोद्देशो ११ वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।
 १२ आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वलितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥

१ पृष्ठयः, स्थौरी (= स्थौरिन् । २ पु), 'अन्न आदि जिसपर लादा जाय उस घोड़े' के २ नाम हैं ॥

२ कर्कः (पु), 'स्फेद घोड़े' का १ नाम है ॥

२ रथयः (पु), 'रथमें चलनेवाले घोड़े' का १ नाम है ॥

४ किशोरः (पु), 'बछेड़ा' अर्थात् 'बच्चे घोड़े' का १ नाम है । ('उपलक्षणतया 'किशोर' शब्द मनुष्यादिके बालकका भी वाचक है') ॥

५ वामी, अश्वा, वदवा (३ स्त्री), 'घोड़ी' के ३ नाम हैं ॥

६ वाङ्मन्त्रं (न), 'घोड़ियोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

७ आश्वीनम् (त्रि), 'एक दिनमें घोड़ेसे चलने योग्य रास्ता या देशादि' का १ नाम है ॥

८ कश्यम् (न), 'घोड़ेके मध्य भाग' का १ नाम है ॥

९ हेषा, हेषा (२ स्त्री), 'दिनदिनाहट, घोड़ेकी बोली' के २ नाम हैं ॥

१० 'निगालः, गलोद्देशः (भा० दी० । २ पु), 'घोड़ेकी गर्दनके पीछेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

११ अश्वीयम् (+ आश्वीयम्), आश्वम् (२ न), 'घोड़ोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

१२ आस्कन्दितम् (+ उत्तेरितम्, उपकण्ठम्), धौरितकम् (+ धोरितकम्, धोरितम्, धौर्यम्, धारणम्), रेचितम् (+ उत्तेजितम्) वलितम्,

१. 'धोरितकं' इति पाठान्तरम् ॥

२. अश्वशास्त्रे निगाललक्षणमुक्तमन्यथा—

घण्टाबन्धसमीपस्थो निगालः कथ्यते बुधैः इति ॥

- गतयोऽमः पञ्च धारा १ घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।
 २ कविका तु खलीनोऽस्त्री ३ शफं कवी खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥
 ४ पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गूले ५ बालहस्तश्च बालधिः ।
 ६ त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥

प्लुतम् (५ न), घोड़ोंके सरपट दौड़ने, दुलफी चलने, पोहया चलने, उछाल मारकर चलने और चौकड़ी मारकर चलने का क्रमशः १-१ नाम है । 'धारा' (स्त्री) 'घोड़ोंके पूर्वोक्त पांच 'बालों' का १ नाम है ॥

१ घोणा (स्त्री), प्रोथम् (पु न), भा० दी० मतसे 'घोड़ेके चक्कर लगाने' के २ नाम हैं और महे० मतसे 'घोड़ेकी नाक' का 'प्रोथम्' यह १ नाम है ॥

२ कविका (+ कवी, कवियम् न । स्त्री), खलीनः (पु न), 'घोड़ेकी लगाम' के २ नाम हैं ॥

३ शफम् (न), खुरः (+ छुरः । पु), 'घोड़ेकी सूँ' (खुर) के २ नाम हैं ॥

४ पुच्छः (पु न), लूमम्, लाङ्गूलम् (+ लाङ्गुलम् । २ न), 'घोड़ेकी दुम (पूँछ)' के ३ नाम हैं ॥

५ बालहस्तः, बालधिः (२ पु), 'घोड़ेकी पूँछके बालबाले अगले भाग' के २ नाम हैं ॥ (यद्यपि 'शफ' आदि शब्द अश्वप्रकरणमें कथित हैं, तथापि इन (शफम्, बालधिः) शब्दों का प्रयोग गौ आदि पशुओंके भी खुर आदि अर्थत्रयमें होता है) ॥

६ उपावृत्तः, लुठितः (२ त्रि), 'थकावट दूर करनेके लिए जमीनपर लोटे हुए घोड़े' के २ नाम हैं ॥

१. अत्र क्षी० स्वा० 'क्रमस्वन्यथा । यथाहुः—

'भोरितं बलितं धारा प्लुतमुत्तेजितं क्रमात् । उत्तेरितं चेति पञ्च शिक्षयेत्तुरगं गतम् ॥ १ ॥
 भोरितं गतिमात्रे यद्योजितं वरिगतं पुरः । अग्रकायसमुल्लासात्कुञ्चितास्यं नतत्रिकम् ॥ २ ॥
 पूर्वापरोन्नमनतः क्रमादारोपणं प्लुतम् । उत्तेजितं मध्यवेगं योजनं इक्षववल्गया ॥ ३ ॥
 उत्तेरितेति वेगान्धो न शृणोति न पश्यति' इति ॥

इत्याह 'हेमचन्द्राचार्यैरप्यन्यथैव क्रमो लिखितः' सोऽभिधानचिन्तामणौ (४।३१२-३१५) द्रष्टव्यः ॥

'शिशुपालवध'स्य व्याख्यायां 'सर्वङ्गुषा' यां मल्लिनाथेन—'अश्वशास्त्रे तु संशान्तरेणोक्ताः—
 'गतिः पुला चतुष्का च तद्वन्मध्वजवा परा । पूर्णवेगा तथा चान्या पञ्च धाराः प्रकीर्तिताः'
 एकेका त्रिविधा धारा ह्यशिक्षाविधौ मता । लघ्वी मध्या तथा दीर्घा ज्ञात्वेता योजयेत्
 क्रमात्' इति । 'अभ्याकुलं'—(५।६०) श्लोकस्य व्याख्यानेऽश्वगतीनां भिन्नानि नामानि ।

- १ याने चक्रिणि युद्धार्थं शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
- २ असौ 'पुष्परथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥
- ३ कर्णिरथः प्रवहणं हयनं च समं त्रयम् ।
- ४ क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद् ५ गन्त्री कम्बलिवाहकम् ॥ ५२ ॥
- ६ शिबिका याप्ययानं स्याद् ७ दोला प्रेङ्गादिका स्त्रियाम् ।
- ८ उभौ तु द्वैपर्वयाघ्रौ द्वीपिचर्मवृते रथे ॥ ५३ ॥
- ९ पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।
- १० रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

१ शताङ्गः, स्यन्दनः, रथः (३ पु), 'लड़ाईके रथ' के ३ नाम हैं ।
('यहाँसे आगे श्लोक ६१ तक 'रथ-प्रकरण' है') ॥

२ पुष्परथः (+ पुष्परथः ।), 'यात्रा, उत्सव आदि में चढ़नेके लिये बनाये हुए रथ' का १ नाम है ॥

३ कर्णिरथः (पु), प्रवहणम्, हयनम् (+ हयनम् । २ न), 'स्त्रियोंके चढ़नेके लिये पर्दा आदिसे आड़ किये हुए रथ' के ३ नाम हैं ॥

४ अनः (= अनस्, न), शकटः (पु न), 'गाड़ी' के २ नाम हैं ॥

५ गन्त्री (स्त्री), कम्बलिवाहकम् (आ० दी० । + गन्त्रीकम्, बलिवाहकम् । न), 'छोटी गाड़ी' के २ नाम हैं ॥

६ शिबिका (+ शिविका । स्त्री), याप्ययानम् (न), 'पालकी' के २ नाम हैं ॥

७ दोला (+ दोली), प्रेङ्गा, आदि ('शयनरुट्वा,' । २ स्त्री), 'झूला, हिंडोला' के २ नाम हैं ॥

८ द्वैपः, वैयाघ्रः (२ त्रि), 'बाघके चमड़ेसे मढ़े हुए रथ' के २ नाम हैं ॥

९ पाण्डुकम्बली (+ पाण्डुकम्बलिन्, त्रि), 'पाण्डु (धूसर) कम्बल-से मढ़े या ढके हुए रथ' का १ नाम है ॥

१० काम्बलः, वास्त्रः (१ त्रि), आदि 'कम्बल और कपड़े आदिसे ढके हुए रथ' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

- १ त्रिषु द्वेपादयो २ रथ्या रथकट्या रथवज्रे ।
 ३ धूः स्त्री क्लीबे यानमुखं ४ स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥
 ५ चक्रं रथाङ्गं ६ तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।
 ७ पिण्डिका नामि ८ रथाग्रकीलके तु द्व्यारणिः ॥ ५६ ॥
 ९ रथगुप्तिर्वरुथो ना १० कूबरस्तु युगन्धरः ।
 ११ अनुकर्षो दादधस्थं—

- १ 'द्वेप' (२।८।५३) आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥
 २ रथ्या, रथकट्या (स्त्री), रथवज्रम् (भा० दो०, पु न), 'रथोंके स्तम्भ' के ३ नाम हैं ॥
 ३ धूः (= धुर, स्त्री), यानमुखम् (न), 'रथके धूरा' के २ नाम हैं ॥
 ४ रथाङ्गम् (न), अपस्करः (पु), 'रथके 'अवयव' के २ नाम हैं ॥
 ५ चक्रम्, रथाङ्गम्, (२ न), 'रथ, गाड़ी आदिके पहिये' के २ नाम हैं ॥
 ६ नेमिः (+ नेमी । स्त्री), प्रधिः (पु), 'हाल, रथके पहियेके ऊपर चाले परिधि' के २ नाम हैं ॥
 ७ पिण्डिका (+ पिण्डी), नामिः (+ नामी । २ स्त्री), 'पहियेके बीचवाले भाग (जिसमें चारों तरफ से काठ जुड़े रहते हैं)' के २ नाम हैं ॥
 ८ अणिः (पु स्त्री), 'धूरामें लगानेवाली किल्ली' का १ नाम है ॥
 ९ रथगुप्तिः (स्त्री), वरुथः (पु), 'लड़ाईमें शत्रुके प्रहारसे बचनेके लिये रथमें लगाये हुए लोहा आदिक पद' के २ नाम हैं ॥
 १० कूबरः, युगन्धरः (२ पु), 'जुआ, फड़, रथमें घोड़ा आदि जोते जानेवाले काष्ठ या जुएके काठको बांधे जानेवाले स्थान' के २ नाम हैं ॥
 ११ अनुकर्षः (+ अनुकर्षा = अनुकर्षन् । पु), 'रथके नीचेवाले काष्ठ' के २ नाम हैं ॥

२. इयं महेश्वरोक्तिमुकुटानुरोधेन । सामान्येन रथाङ्गस्याक्षयुगचक्रादिकमपस्करः, इति । अग्रे रथाङ्गत्वेन गतार्थस्यापि 'चक्रम्' इति विशेषतो नामान्तरप्रतिपादनाय 'तस्यान्ते नेमिः' इत्युक्तये च रथाङ्गस्यानुवादः' इति चोक्तवान् । आनुजिदोषितस्तु 'रथारम्भकं चक्रादन्यद' इति क्षीरस्वामिप्रन्यानुरोधात् 'चक्रमिजस्य रथारम्भकचक्रस्य' इमे द्वे नामनो'त्युक्तवान् ॥

—१ प्रासङ्गो ना 'युगाद्युगः ॥ ५७ ॥

२ सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धारणम् ।

३ परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥

४ आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।

५ नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ ५९ ॥

'सव्येष्टदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ।

६ रथिनः स्यन्दनारोहा—

१ प्रासङ्गः (प्रसङ्गयः पु), महे० मतसे 'रथ आदिके जुआठ, फड़' का और भा० दी० मतसे 'नये बछवाको पहले पहल शिक्षा देनेके लिये उसके कन्धेपर रखके जानेवाले काष्ठ' का १ नाम है ॥

२ वाहनम् , यानम् , युग्यम् , पत्रम् , धारणम् (५ न) 'वाहनमात्र' अर्थात् 'हाथी, घोडा, इत्यादि (श्लो० ३३) से लेकर देला (श्लो ५३) तक सब' के ये ५ नाम हैं ॥

३ वैनीतकम् (+ प्राबन्धिकम् । न पु), 'परम्परावाली सवारी, कहाँर आदिके द्वारा घारी २ से ढोई जानेवाली पालकी, डोली आदि' का १ नाम है ॥

४ आधोरणः, हस्तिपकः, हस्त्यारोहः, निषादी (= निषादिन् । ४ पु) 'हाथीवान' के ४ नाम हैं । ('किसी १ के मत से २-२ शब्द एकार्थक हैं') ॥

५ नियन्ता (= नियन्तृ), प्राजिता (प्राजितृ), यन्ता (= यन्तृ), सूतः, क्षत्ता (= क्षत्तृ), सारथिः, सव्येष्टः (सव्येष्टा = सव्येष्टृ), दक्षिणस्थः (८ पु), 'रथके परिचार' अर्थात् 'रथ हाँकनेवाला ड्राइवर, काँचवान, गादीवान, वगैरैवान, एककावान और पीछे चढ़नेवाले जो दौड़कर आगेकी भीड़को हटाकर फिर पीछे चढ़ जाते हैं, इत्यादि' के ८ नाम हैं ॥

६ रथी (= रथिन्), स्यन्दनारोहः (२ पु) 'रथपर चढ़कर लड़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'युगान्तरम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'सव्येष्टदक्षिणस्थौ' इति पाठान्तरम् ॥

३. इन् भा नुजिदीक्षितोक्तिः 'युगान्तरम्' इति पाठमङ्गीकृत्येवधेयम् ॥

—१ अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥

- २ भटा योधाश्च योद्धारः ३ सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।
 ४ सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥
 ५ बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।
 ६ परिधिस्थः परिचरः ७ सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥
 ८ कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री ९ यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ।
 बध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गोऽथ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥
 शीर्षण्यं च शिरस्त्रे—

- १ अश्वारोहः, सादी (= सादिन् । २ पु), 'घुड़सवार' के २ नाम हैं ॥
 २ भटा, योधा, योद्धा (= योद्धु । ३ पु), 'लड़नेवाले वीर' के ३ नाम हैं ॥
 ३ सेनारक्षः, सैनिकः (२ पु), 'सेनाके पहरेदार' के २ नाम हैं ॥
 ४ सैन्यः, सैनिकः (२ पु), 'सैनिक' अर्थात् 'सेनामें रहनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ साहस्रः, सहस्री (= सहस्रिन् । २ पु), 'एक हजार योद्धाओंवाले सूबेदार आदि' के २ नाम हैं ॥

६ परिधिस्थः, परिचरः (२ त्रि), 'अपराधी सैनिकोंको दण्ड देनेके लिये राजा से नियुक्त पुरुष' के २ नाम हैं ॥

७ सेनानीः, वाहिनीपतिः (२ पु), 'सेनापति' के २ नाम हैं ॥

८ कञ्चुकः (पु), वारबाणः (पु न), 'शत्रुके प्रहारसे बचनेके लिये लोहे आदिके बनाये हुए सन्नाह, झूल' के दो नाम हैं ॥

९ सारसनम् (न), अधिकाङ्गः (+ अधिपाङ्गः, विपाङ्गः । पु), 'झूल (कवच) को सिंहर रदनैके लिये कमरमें कसनेकी पट्टी आदि' के २ नाम हैं ॥

१० शीर्षकम्, शीर्षण्यम्, शिरस्त्रम् (३), 'लड़ाई के समय पहने जानेवाले टोप, या टोपीमात्र' के ३ नाम हैं ॥

—१ अथ तनुवर्मं वर्मं दंशनम् ।

उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

२ आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।

३ सन्नद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥

४ त्रिष्वामुक्तादयो ५ वर्मभृतां कावचिकं शणे ।

६ 'पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥

पद्मश्च पदिकश्चाथ पादातं पत्तिसंहतिः ।

८ शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायाधुधियायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

१ तनुवर्म, वर्म (= वर्मन्), दंशनम् (३ न), उरश्छदः, कङ्कटकः, जगरः (+ जगरः । ३ पु), कवचः (पु न), 'कवच' के ७ नाम हैं ॥

२ आमुक्तः, प्रतिमुक्तः, पिनद्धः, अपिनद्धः, (४ त्रि), भा० दी० महे० आदिकं मतसे 'पहने हुए कवच' के और सु० मतसे 'पहनेहुए वस्त्रादि' के ४ नाम हैं ॥

३ सन्नद्धः, वर्मितः, सज्जः, दंशितः, व्यूढकङ्कटः (५ त्रि), 'कवच आदिको पहनकर लड़ाईके लिये तैयार मनुष्य' के ५ नाम हैं ॥

४ 'आमुक्त' आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

५ कावचिकम् (न); 'कवच पहने हुए पुरुषादिके शृण्ड' का १ नाम है ॥

६ पदातिः (+ पदातः, पादातिः, पादातः), पत्तिः, पदगः, पादातिकः (+ पादातिगः, पादातिकः), पदाजिः, पद्मः, पदिकः (७ पु), 'पैदल' के ७ नाम हैं ॥

७ पादातम् (न), पत्तिसंहतिः (भा० दी०, स्त्री), 'पैदलके शृण्ड' के २ नाम हैं ॥

८ शस्त्राजीवः, काण्डपृष्ठः (+ काण्डपृष्ठः सु०), आयुधीयः, आयुधिकः (४ त्रि), 'हथियारकी नौकरीसे जीविका चलानेवाले' के ४ नाम हैं ॥

१. पदातिपत्तिपदगपादावित्पदाजयः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ कृतद्वस्तः सुप्रयोगविशिषः कृतपुङ्गवत् ।
- २ अपराद्धपृष्ठकोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ॥ ६८ ॥
- ३ धन्वी धनुष्मान्धानुको निषङ्गयस्त्री धनुर्धरः ।
- ४ स्यात्काण्डवान्स्तु काण्डीरः ५ शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥
- ६ याष्टीकपारश्वधिकौ 'यष्टिपश्वहेतिकौ' ।
- ७ नैस्त्रिशिकोऽसिहेतिः स्वात् ८ समौ प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७० ॥
- ९ चर्मौ फलकपाणिः स्यात्—

१ कृतद्वस्तः, सुप्रयोगविशिषः, कृतपुङ्गवः (३ त्रि), 'बाण चलानेमें निपुण' के ३ नाम हैं ॥

२ अपराद्धपृष्ठकः (त्रि), 'निशाना खुके हुए' का १ नाम है ॥

३ धन्वी (= धन्विन्), धनुष्मान् (= धनुष्मत्), धानुषकः, निषङ्गी (= निषङ्गिन्), अस्त्री (= अस्त्रिन् । + यस्त्री = यस्त्रिन्), धनुर्धरः (६ त्रि), 'धनुष धारण करनेवाले' के ६ नाम हैं ॥

४ काण्डवान् (= काण्डवत्), काण्डीरः (२ त्रि), 'बाण धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ शाक्तीकः, शक्तिहेतिकः (२ त्रि), 'शक्तिनामक शस्त्र धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ याष्टीकः, पारश्वधिकः (२ त्रि), 'लाठी और फरसा धारण करनेवाले' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

७ नैस्त्रिशिकः, असिहेतिः (भा० दी० । २ त्रि), 'तलवार धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ प्रासिकः, कौन्तिकः (२ त्रि) 'प्रास और कुन्त (भाजा) धारण करनेवाले' का क्रमशः १-१ नाम है, ('प्रासिके मतसे दोनों शब्द एकार्थक हैं') ॥

९ चर्मौ (= चर्मिन्), फलकपाणिः (२ त्रि), 'चर्मनामक हथियार (ढाक) धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'परवधः परशो न दृष्टः, अतः 'यष्टिंस्वधितिहेतिकौ' इति काश्मीराः पठन्ति' इति क्षी० स्वा० । किन्तु—कुठारस्तु परशुः पशुं परवधौ । परश्वधः स्वधितिश्च' (अभि० चिन्ता० ३ ४५०) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेरुक्तहेतुदानमभिश्चिरकरम् ॥

—१ पताकी वैजयन्तिकः ।

२ अनुप्लव 'सहायश्चानुचरोऽभिसरः समाः ॥ ७१ ॥

३ पुरोगाग्रेसर-प्रष्टा-अग्रतःसर-पुरःसराः ।

पुरोगमः पुरोगामी ४ मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥

५ जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यौ ६ जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ ।

७ तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥

८ जय्यो यः शक्यते जेतुं ९ जेयो जेतव्यमात्रके ।

१ पताकी (= पताकिन्), वैजयन्तिकः (२ त्रि), 'पताका धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ अनुप्लवः, सहायः, अनुचरः, अभिसरः (+ अभिचरः । ४ त्रि), 'अनुचर' के ४ नाम हैं ॥

३ पुरोगः, अग्रेसरः (+ अग्रसरः), प्रष्टा, अग्रतःसरः, पुरःसरः, पुरोगमः, पुरोगामी (= पुरोगामिन् । ७ त्रि), 'आगे चलनेवाले' के ७ नाम हैं ॥

४ मन्दगामी (= मन्दगामिन्), मन्थरः (२ त्रि) 'धीरे २ चलने वाले' के २ नाम हैं ॥

५ जङ्घालः (+ जङ्घलः), अतिजवः (+ अतिबलः । २ त्रि), 'बहुत तेज चलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ जङ्घाकरिकः, जाङ्घिकः (२ त्रि), 'बौड़ाहा, डाँक ढोनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ तरस्वी (= तरस्विन्), त्वरितः, वेगी (= वेगिन्), प्रजवी (= प्रजविन्), जवनः, जवः (६ त्रि), 'शीघ्रता करनेवाले' के ६ नाम हैं ॥

८ जय्यः (त्रि) 'जीते जा सकनेवाले' का १ नाम है । ('जैसे-रामेण रावणो जय्यः' अर्थात् 'राम रावणको जीत सकते हैं' इस वाक्यमें रामका रावण जय्य हुआ,') ॥

९ जेयः (त्रि), 'जीतने योग्य' का १ नाम है । ('जैसे—'जेयं मनः इन्द्रियं वा' अर्थात् 'मन या इन्द्रिय जीतने योग्य है' इस वाक्यमें मन और इन्द्रिय जेय हैं '.....') ॥

२. 'सहायश्चानुचरोऽभिचरः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ जैत्रस्तु जेता २ यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७३ ॥
 सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रिणोऽभ्यमित्रिण इत्यपि ।
 ३ ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥
 ४ स्वादुरस्वानुरसिला ५ रथिका रथिरो रथी ।
 ६ कामङ्गमनुकामीनो ७ अत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥
 ८ शूरो वीरश्च विक्रान्तो ९ जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।

१ जैत्रः, जेता (=जेतृ । २ त्रि), 'विजयपाल, जीतनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ अभ्यमित्रः, अभ्यमित्रिणः, अभ्यमित्रिणः (१ त्रि), 'अपने पराक्रमसे शत्रुका सामना करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ ऊर्जस्वलः, ऊर्जस्वी (= ऊर्जस्विन् । २ त्रि), 'बहुत बलवान्' के २ नाम हैं ॥

४ उरस्वान् (= उरस्वत्), उरसिलः (२ त्रि), 'चौड़ी छातीवाले' के २ नाम हैं ॥

५ रथिकः (+ रथिनः), रथिरः, रथी (= रथिन् । ३ त्रि), 'रथके स्वामी' के ३ नाम हैं ॥

६ कामङ्गामी (= कामङ्गामिन् । + कामगामी = कामगामिन्), अनुकामीनः (२ त्रि), मतलब भर (यथेष्ट) चलने वाले' के २ नाम हैं । (महे० मतसे पहले शब्दका पर्यायवाचक नहीं होनेसे १ ही नाम है) ॥

७ अत्यन्तीनः (त्रि), 'अत्यन्त चलनेवाले' का १ नाम है ॥

८ शूरः, वीरः, विक्रान्तः (३ त्रि), 'बहुलवान्, बहादुर' के ३ नाम हैं ॥

९ जेता (= जेतृ), जिष्णुः, जित्वरः (३ त्रि), 'सर्वदा विजय करनेवाले' के ३ नाम हैं । ('जैसे—रामचन्द्र, इन्द्र और अर्जुन आदि') ॥

१. 'ऊर्जातिशयान्वितः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'रथिनो रथिको रथी' इति मा० दो० महे० सम्मतः पाठः । मूलस्थः क्षी० रश० मुकु० सम्मतः । 'रथिन इत्यपपाठ' इति च क्षी० रश० आहुः ॥

- १ सांयुगीनो रणे साधुः २ शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥
 ३ ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीकिनी चमूः ।
 वरुथिनी पलं सैन्यं चक्रं आनीकमस्त्रियम् ॥ ७८ ॥
 ४ व्यूहस्तु बलविन्यासो ५ भेदा दण्डादयो वृद्धिः ।
 ६ प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः ७ सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

- १ सांयुगीनः (त्रि), 'लड़ाईमें व्यतुर' का १ नाम है ॥
 २ 'शस्त्राजीव' शब्द (श्लो० ६७) से यहाँ तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥
 ३ ध्वजिनी, वाहिनी, सेना, पृतना, अनीकिनी, चमूः, वरुथिनी (७ स्त्री),
 बलम्, सैन्यम्, चक्रम् (२ ल), अनीकम् (न पु), 'सेना, पलटन' के ११
 नाम हैं ॥
 ४ 'व्यूहः' (पु), 'व्यूह' अर्थात् आदि 'लड़ाईमें सेनाको रखने के कायदे, मोर्चा
 बन्दी का १ नाम है ॥
 ५ दण्डः (पु) आदि ('भोग, मण्डल, असंहत, डालस, अचल, दंड,
 चक्रव्यूह, मकर, पताछा, सर्वतोभद्र, का संग्रह है'), 'व्यूह' अर्थात्
 'लड़ाईमें सेनाको रखने के कायदे मोर्चाबन्दी' के पृथक् १-१ नाम हैं ॥
 ६ प्रत्यासारः (+ प्रत्यासरः), व्यूहपार्ष्णिः (२ पु), 'व्यूहके पीछे-
 वाले सेना-भाग' के २ नाम हैं ॥
 ७ सैन्यपृष्ठः (महे०), प्रतिग्रहः (+ ररिग्रहः, पतद्ग्रहः । २ पु),
 'सेनाके पीछेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

१. व्यूहलक्षणं यथा—

'मुखे रथा दयाः पृष्ठे तत्पृष्ठे च पदातयः ।

पार्श्वयोश्च गजाः कार्या व्यूहोऽयं परिकीर्तितः ॥ १ ॥ इति ॥

२. व्यूहस्य कतिचिद्भेदान् सलक्षणमाह कामन्दकिस्तथा हि—

'तिर्यग्भृत्तिस्तु दण्डः स्याद्भोगोऽन्वाभृत्तिरेव च ।

मण्डलः सर्वतो भृत्तिः पृथग्भृत्तिरसंहतः' ॥ १ ॥ इति ।

श्री० स्वा० व्यूहनामान्याह । तथा हि—यदाहुः—

'दण्डो मण्डलभोगौ चाप्युत्सन्नश्चापलो दण्डः ।

व्यूहास्तेषां विशेषाः स्युश्चक्रव्यूहादयोऽपि च' ॥ १ ॥ इति' इति ॥

- १ एकैभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका ।
 २ पत्न्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
 अनीकिनी ३ दशानीकिन्यक्षौहिणी—

१ 'पत्तिः (स्त्री), 'पत्ति' अर्थात् जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों उस सेना-विशेष' का १ नाम है ॥

२ सेनामुखम् (न), गुल्मः, गणः (२ पु), वाहिनी, पृतना, चमूः, अनीकिनी (४ स्त्री), 'पत्ति आदि (सेनामुखं, गुल्मः,) के तिगुना करनेपर सेनामुख आदि (गुल्मः, गणः, अनीकिनी) संख्या सेना-विशेषकी होती है' अर्थात् १ पत्ति (३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ पैदल), को सेनामुख; ३ सेनामुख (९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल) को गुल्म; ३ गुल्म (२७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े और १३५ पैदल) को 'गण' कहते हैं । इसी प्रकार 'वाहिनी, पृतना, चमू और अनीकिनी' में भी तिगुना समझना चाहिये ॥

३ 'अक्षौहिणी (स्त्री), आ० दी० क्षी० स्वा० आदिके मतसे 'दस अनी-

१. भारतोक्तं पत्तिलक्षणं यथा—

'एको गजो रथश्चैको नराः पञ्च पदातयः । त्रयश्च तुरगास्तज्जैः पत्तिरित्यभिधीयते' ॥ १ ॥ इति ॥

यद्वा—'एको इस्ती एकश्च रथवरखय एव च तुरङ्गाः ।

पञ्चैव च पदातय एषा पत्तिर्ज्ञातव्या' ॥ १ ॥ इति ॥

२. अक्षौहिणीप्रमाणं यथा—

'अक्षौहिण्यामित्यधिकैः सप्तस्या द्वाष्टमिः शतैः ।

संयुक्तानि सङ्ख्याणि गजानामेकविंशतिः ॥ १ ॥ (२१८७० गजाः)

एवमेव तु संख्यानं रथानां कीर्तितं बुधैः । (२१८७० रथाः)

पञ्चषष्टिसङ्ख्याणि षट् शतानि दशैव तु ॥ २ ॥

संख्यातास्तुरगास्तज्जैर्विना रथतुरङ्गमैः । (६५६१० अश्वा रथाश्वान् विना)

नृणां शतसङ्ख्याणि सङ्ख्याणि तथा नव ॥ ३ ॥

शतानि त्रीणि चान्यानि पञ्चाशच्च पदातयः' (१०९३५० पदातयः) इति ॥

किनी (२१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल) संख्यावाले सेना-विशेष' का १ नाम है । ('महे० ने तो-दशानीकिनी' (स्त्री), तीन अनीकिनी (६५६१ हाथी, ६५६१ रथ, १९६८३ घोड़े और ३२८०५ पैदल) संख्यावाले सेना-विशेष' का १ नाम और 'अक्षौहिणी' (स्त्री) 'तीन दशानीकिनी (१९६८३ हाथी, १९६८३ रथ, ५९०४९ घोड़े और ९८४१५ पैदल) संख्यावाले सेना-विशेष' का १ नाम है, ऐसा कहा है । किन्तु टिप्पणीमें लिखे हुए भरतादि-वाक्यप्रमाण-विरुद्ध होनेसे महे० का मत ठीक नहीं है ।^१ 'महाक्षौहिणी' (स्त्री), 'हाथी, रथ, घोड़े और पैदलको मिलाकर १३२१२४९०० संख्यावाली सेना विशेष' का एक नाम है । पत्तिसे लेकर महाक्षौहिणीतक सबके अलग २ प्रमाण दृष्टतया^३ चक्र में देखिये) ॥

भारतेऽक्षौहिणी मानं यथा —

'अक्षौहिण्याः प्रमाणन्तु खाङ्गाष्टैकदिकैर्गजैः ॥

रथैरेतेह्यैस्त्रिजैः पञ्चप्लेश पदातिभिः' ॥ १ ॥ इति ॥

'अङ्गानां वामतो गतिः' इत्यमियुक्तोक्तेः २१८७० गजाः, इत्यन्मिता एव रथाश्च, एत-
त्त्रिगुणिताः (२१८७० × ३ = ६५६१०) अश्वाः, गजसंख्यापञ्चगुणिताः (२१८७० × ५ =
१०९३५०) पदातयः' इति भारताशयः । हेमचन्द्राचार्यैरप्यक्षौहिणीमानं पूर्वोक्तसंख्याक्रमे-
वाङ्गीकृतम्, किन्तु पत्यादिक्रमो भिन्नस्तथा —

'एकैकैरथा ऋश्वा-पत्तिः पञ्चपदातिका । सेना सेनामुखं गुल्मो वाहिनी पृतना चमूः ॥ १ ॥
अनीकिनी च पत्तेः स्यादिभायैस्त्रिगुणैः क्रमात् ॥ दशानीकिन्यक्षौहिणी—' ॥ २ ॥

इति अमि० चिन्ता ३ । ४१२—४१३ ॥

१. भानुजिदीक्षितमतमेवात्र समीचीनम्, 'अक्षौहिण्याः.....पदातयः' इति स्वटीकार्या
प्रमाणत्वेनोपन्यस्तसाङ्गत्रयश्लोकविरोधेन व्याघातात्, भरतहेमचन्द्राचार्योक्तिविरोधाच्च ॥

२. महाक्षौहिणीप्रमाणं यथा—

'खद्वयं निधिवेदाक्षिचन्द्राक्षयसिहिमांशुभिः ।

महाक्षौहिणिका प्रोक्ता संख्यागणितकोविदैः' ॥ १ ॥ इति ॥

३. सकलनिष्कर्षाऽत्र चक्रे द्रष्टव्यः—

चम्पूराभायणे 'अलक्षत स.....' (युद्धकाण्डे श्लो० ७९) इत्यस्यानन्तरं 'तत्क्षण.....
यातुधानपतिः' इति गद्यस्य टीकायां लिखितमक्षौहिणीप्रमाणमन्यदेव, तद्यथा—

'प्रयुतं नवसाहस्रं पञ्चाशत्त्रिंशतं मयाः । पादातं षष्टिसाहस्रं षट्छती दश वाजिनः ॥
एकविंशतिसाहस्र-शतानामेकसप्ततिः । द्विरदाः स्यन्दना यत्र साक्षौहिण्युच्यते बुधैः ॥ इति ॥

मङ्गलकोषे त्वेवमुक्तम्—

'नवनागसहस्राणि नागे नागे शतं रथाः । रथे-रथे शतं चाश्वा अश्वे-अश्वे शतं नराः ॥' इति ॥

—१ अथ संपदि ॥ ८१ ॥

संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च—

१ संपत् (= संपद् । + सम्पदा), सम्पत्तिः, श्रीः, लक्ष्मीः (४ स्त्री),
'सम्पत्ति' के ४ नाम हैं ॥

पर्यादिसेनाविशेषे गजस्थानादिसंख्याबोधकचक्रम् ।

क्रमिकसंख्या	सैन्यसंख्या-विशेषसंज्ञाः	सैन्यसंख्या-विशेषसंज्ञाः	गजसंख्या	रथसंख्या	अश्वसंख्या (रथाश्वान् विहाय)	पदातिसंख्या	सर्वसङ्कलनं
१	पत्तिः	पत्तिः	१	१	३	५	१०
२	सेना	सेनामुखम्	३	३	९	१५	३०
३	सेनामुखम्	गुरुमः	९	९	२७	४५	९०
४	गुरुमः	गणः	२७	२७	८१	१३५	२७०
५	वाहिनी	वाहिनी	८१	८१	२४३	४०५	८१०
६	पृतना	पृतना	२४३	२४३	७२९	१२२५	२४३०
७	चमूः	चमूः	७२९	७२९	२१८७	३६४५	७२९०
८	अनौकिनी	अनौकिनी	२१८७	२१८७	६५६१	१०९३५	२१८७०
९	*	दशानौकि (महेश्वरम-तेनेदम्)	६५६१	६५६१	१९६८३	३२८०५	६५६१०
१०	*	अक्षौहिणी (महेश्वरम-तेनेदम्)	१९६८३	१९६८३	५९०४९	९८४१५	१९६८३०
११	अक्षौहिणी	अक्षौहिणी (मानुजिदी-क्षितमतेनेदं)	२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०९३५०	२१८७००
१२	*	महाक्षौहिणी (महेश्वर-व्याख्याका)	१०९३५०	१०९३५०	३२८०५०	६६०६५०	१०९३५००

—१ विपत्त्यां विपदापदौ ।

- २ आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथान्त्रियौ ॥ ८२ ॥
 धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।
 इष्वासोऽप्यथ कर्णस्य कालपुष्टं शरासनम् ॥ ८३ ॥
 ५ कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुनपुंसकौ ।
 ६ कोटिरस्याटनी ७ गोधे तले ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥
 ६ तस्तदस्तु धनुर्मध्यं ९ मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।
 १० स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

१ विपत्तिः, विपत् (= विपद् । + विपदा), आपत् (= आपद् । + आपत्तिः, आपदा । ३ स्त्री), 'आपत्ति' के ३ नाम हैं ॥

२ आयुधम्, प्रहरणम्, शस्त्रम्, अस्त्रम् (४ न), 'हथियार' के ४ नाम हैं ॥

३ धनुः (= धनुस् । + धनुः पु, धनुः स्त्री), चापः (२ पु न), धन्व (= धन्वन् । + धन्वम्), शरासनम्, कोदण्डम्, कार्मुकम् (४ न), इष्वासः (+ आसः । पु), 'धनुष' के ७ नाम हैं ॥

४ कालदृष्टम् (न), 'कर्णके धनुष' का १ नाम है ॥

५ गाण्डीवः, गाण्डिवः (२ पु न), 'अर्जुनके धनुष' के २ नाम हैं ॥

६ कोटिः (+ कोटी), अटनी (+ अटनिः । २ स्त्री), 'धनुषके दोनों छोर (किनारे), के २ नाम हैं ॥

७ गोधा (स्त्री), तलम् (न), 'दस्ताना' अर्थात् 'धनुषकी तांतके चोटसे बचनेके लिये हाथमें पहननेके लिए जो चमड़े आदि का बनाया जाता है उसके' २ नाम हैं ॥

८ छस्तकः (पु), धनुर्मध्यम् (भा० दी० न), 'धनुषके बीचवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

९ मौर्वी, ज्या, शिञ्जिनी (१ स्त्री), गुणः (पु), 'धनुषकी डोरी, या तांत' के ४ नाम हैं ॥

१० प्रत्यालीढम्, आलीढम् (२ न), आदि ('आदिसे 'समपादम्,

- १ लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च २ शराभ्यास उपासनम् ।
 ३ पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥
 'कलम्बमार्गणशराः पञ्चो रोप इषुर्द्वयोः ।
 ४ प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः ५ पक्षो वाजस्त्रिषूत्तरे ॥ ८७ ॥
 ६ निरस्तः प्रहिते बाणे—

विशाखम्, मण्डलम् (३ न), का संग्रह है) 'धनुषधारियोंके बैठनेके' पांशु आसन विशेष (तरीके), हैं । ('इनमें—बांये जङ्घेको आगे बढ़ाकर ठठाने और दाहिनी जङ्घेको पीछे खींचकर समेटनेको प्रत्यालीढ १, दहिने जङ्घेको आगे बढ़ाकर ठठाने और बांये जङ्घेको पीछे खींचकर समेटनेका आलीढ २, दोनों पैरोंको बराबर रखनेको समपाद ३, दोनों पैरोंको फैलानेको वैशाख ४ और दोनों पैरोंको गोलाई के समान रखनेको मण्डल ५, कहते हैं') ॥

१ लक्षम्, लक्ष्यम्, शरव्यम् (३ न), 'निशाने' के ३ नाम हैं ॥

२ शराभ्यासः (पु), उपासनम् (न), 'बाण चलानेका अभ्यास करने' के २ नाम हैं ॥

३ पृषत्कः, बाणः, विशिखः, अजिह्मः, खगः, आशुगः, कलम्बः, मार्गणः, शरः (+ सरः), पञ्चो (= पञ्चिन्), रोपः (११ पु), इषुः (पु स्त्री), 'बाण' के १२ नाम हैं ॥

४ प्रक्ष्वेडनः (+ प्रक्ष्वेदनः), नाराचः (१ पु), 'लोहेके बाण' के २ नाम हैं ॥

५ पक्षः, वाजः, (२ पु), 'बाणमें लगे हुए पङ्ख (कङ्कपत्र), के २ नाम हैं ॥

६ निरस्तः (त्रि), 'धनुषसे छोड़े हुए बाण' का १ नाम है ॥

१. 'कलम्बमार्गणशराः' इति पाठान्तरम् ॥

२. भरते (रभसे) न तु धनुर्धराणां षट् स्थितिप्रकारा उक्तास्तथा हि—

'वैष्णवं समपादं च वैशाखं मण्डलं तथा ।

प्रत्यालीढमयालीढं स्थानान्येतानि षण्णाम्' ॥ १ ॥ इति ॥

३. पृथक् षट्क्रमस्येति विग्रहः । ते च षट् धनुर्वेद उक्तास्तथा हि—

'पङ्कः शरस्तथा शर्यं पङ्कस्तानुयुक्तूनि च' । इति ॥

—१ विषाक्ते दिग्घलितकौ ।

- २ तूणोपासकतूणीर-निषङ्गा इषुधिर्वयोः ॥ ८८ ॥
 तूण्यां ३ खङ्गे तु निखिंशचन्द्रहासासिरिष्ठयः ।
 कौक्षेयको मण्डलाग्रः 'करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥
 ४ त्सरः खङ्गादिमुद्यौ स्याद् ५ मेखलातन्निबन्धनम् ।
 ५ फलकोऽस्त्री फलं चर्म ७ संप्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥
 ८ द्रुघणो मुद्गरघनौ ९ 'स्यादीली करवालिका ।

१ विषाक्तः विषयः, लितकः (३ त्रि), 'विषमं बुझाये हुए बाण' के ३ नाम हैं ॥

२ तूणः, उपासकः, तूणीरः, निषङ्गः (३ पु), इषुधिः (पु स्त्री), तूणी (स्त्री), 'तरकस' अर्थात् 'चमड़े आदिके बने हुए धनुषधारियोंके पीठपर बाँधे-जानेवाले, बाण रखनेके थैले' के ६ नाम हैं ॥

४ खङ्गः, निखिंशः, चन्द्रहासः, असिः, रिष्टिः (+ ऋष्टिः), कौक्षेयकः, मण्डलाग्रः, करवालः (+ करपालः), कृपाणः (९ पु), 'तलवार' के ९ नाम हैं ॥

४ त्सरः (पु), 'तलवार आदिकी मूठ' का १ नाम है ॥

५ मेखला (स्त्री), 'तलवारको लटकानेके लिये चमड़े आदिकी बनी हुई कमरमें कसी जानेवाली पेटी, लड़ाईमें तलवार हाथसे छूट न जाय इस वास्ते कलाईपर बाँधे हुए चमड़े आदि या तलवार के ग्यान' का १ नाम है ॥

६ फलकः (पु न), फलम्, चर्म (= चर्मन् । २ न), 'ढाल' के २ नाम हैं ॥
 संप्राहः (पु) 'ढालकी मूठ' का १ नाम है ॥

८ द्रुघणः (+ द्रुघनः), मुद्गरः, घनः (३ पु), 'मुद्गर' के ३ नाम हैं ॥

९ ईली (+ इलिः, ईलिः, इली), करवालिका (+ करपालिका । २ स्त्री), एक तरफ धारवाली छोटी तलवार या गुप्ती के २ नाम हैं ॥

१. 'करपालः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्यादिलिः करवालिका' इति 'करपालिका' इति च पाठान्तरे ॥

- १ भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ २ परिधः परिघातनः ॥ ९१ ॥
 ३ द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ।
 ४ स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च चक्षुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥
 ५ वा पुंसि शल्यं ६ शङ्कुर्ना ७ वल्ला तोमरोऽस्त्रियाम् ।
 ७ प्रासस्तु कुन्तः ८ कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्चिकोटीयः ॥ ९३ ॥
 १ सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसंनहनार्थकः ।

१ भिन्दिपालः (+ भिण्डिपालः), सृगः (२ पु), 'नलिका नामक हथियार और गुल्लेख' अर्थात् 'छोटे २ पत्थर या कंकड़ फेंकने के वास्ते खड़ या चमड़े के बने हुए साधन विशेष, या डेलबांस' के २ नाम हैं ॥

२ परिधः, परिघातनः (२ पु), 'लोहा मढ़ी हुई लाठी' के २ नाम हैं ॥

३ कुठारः (पु स्त्री), स्वधितिः, परशुः, परश्वधः (+ परस्वधः, पश्वधः । ३ पु) 'फड़सा, कुल्हाड़ी' के ४ नाम हैं ।

४ शस्त्री, अस्त्रिपुत्री, क्षुरिका (+ क्षुरिका), असिधेनुका (४ स्त्री), 'छुरी' के ४ नाम हैं ॥

५ शल्यम् (न पु), शङ्कुः (पु), 'बाण के नोक (अगले भाग)' के २ नाम हैं ॥

६ सर्वला (+ शर्वला । स्त्री), तोमरः (पु न) 'तोमर, गुर्ज या गड़ाँसे' के २ नाम हैं ॥

७ प्रासः (+ प्राशः), कुन्तः (२ पु), 'भाला' के २ नाम हैं ॥

८ कोणः (पु), पालिः (+ पाली), अश्रिः (+ अश्री), कोटिः (+ कोटी । ३ स्त्री), 'तलवार आदि हथियारों के किनारे या नोक' के ४ नाम हैं ॥

९ सर्वाभिसारः, सर्वौघः (२ पु), सर्वसंनहनम् (न), 'चतुरङ्गिणी मेना को तैयार करने' के ३ नाम हैं ॥

- १ 'लोहाभिसारोऽस्त्रभृतः राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥
- २ यत्सेनयाऽभिगमनमरौ तदभिषेगनम् ।
- ३ यात्रा वज्याऽभिनिर्माणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥
- ४ स्यादासारः 'प्रसरणं' प्रचक्रं चलितार्थकम् ।
- ६ अद्विदान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥

१ 'लोहाभिसारः (+ लोहाभिहारः । पु), 'लड़ाईके लिये तैयार शस्त्रधारियों या राजाओंकी आरती या आरतीके बादवाले कृत्य-विशेष या युद्धयात्राके पहले की जानेवाली हथियारोंकी पूजा' का १ नाम है ॥

२ अभिषेगनम् (न), 'वैरीके सामने सेना-सहित जाने' का १ नाम है ॥

३ यात्रा, वज्या (२ स्त्री), अभिनिर्माणम्, प्रस्थानम्, गमनम् (३ न), गमः (पु), 'यात्रा, प्रस्थान, जाने' के ३ नाम हैं ॥

४ आसारः (पु), प्रसरणम् (+ प्रसरणी, प्रसरणिः । न) 'सेनाके सब तरफ फैल जाने' के २ नाम हैं । (किसी २ के मतसे 'पीछेसे आने-वाली सेना' को आसारः और 'घास, भूसा, जल, अन्न और इन्धन आदि इकट्ठा करनेके लिये सेनासे बाहर फैलनेको प्रसरणम् कहते हैं ' ॥

५ प्रचक्रम्, चलितम् (२ न), 'यात्रा की हुई सेना' के २ नाम हैं ॥

६ अभिक्रमः (+ अतिक्रमः । पु), 'निडर होकर वैरीके सामने यो-द्धाके गमन करने' का १ नाम है ॥

१. 'लोहाभिहारो' इति 'नीराजनो विधिः' इति 'नीराजनाद्विधिः' इति च पाठान्तराणि ।

२. 'प्रसरणी' इति पाठान्तरम् ॥

३. विधिल्लोहाभिसारस्तु राज्ञां नीराजनोत्तरः' इत्युक्तेर्नीराजनादनन्तरं कर्मलोहाभि-सारः, इति मुनिः । 'लोहाभिसारस्तु विधिः परो नीराजनान्तुपैः' इति दगोऽपि तथैव । अत एव 'नीराजनाद्विधिः' इत्येके पठन्ति' इति स्त्री० स्वा० ॥

४. अनयोमित्रार्थत्वादेव—

'निरुद्धबीबासारप्रासारा इव गा वजम्' इति माघः (२।६४)' इति स्त्री० स्वा० ॥

- १ वैतालिका 'बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।
 २ स्युर्मागधास्तु 'मगधा ४ बन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥
 ५ संशसकास्तु समयत्संग्रामादनिवर्तिनः ।
 ६ रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांशुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥
 ७ चूर्णं क्षोदः ८ समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।

१ वैतालिकः, बोधकरः (२ पु), 'राजाको जगानेके लिये प्रातः काल या विशिष्ट अवसरों पर राजाके स्तुतिपाठ करनेवाले बन्दी, भाट' के २ नाम हैं ॥

२ चाक्रिकः (+ चक्रिकः), 'घाण्टिकः (+ घटिकः । २ पु), 'घण्टा बजानेवाले या घड़ियारी नामक बाजाको बजानेवाले बन्दी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

३ मागधः, मगधः (+ मधुकः सु० । २ पु), 'राजाकी वंशावलीको वर्णन करनेवाले बन्दी' के २ नाम हैं ॥

४ बन्दी (= बन्दिन्), स्तुतिपाठकः (२ पु), 'राजाकी स्तुति करनेवाले बन्दी' के २ नाम हैं । (ची० स्वा० के मतसे 'मागधः,' ४ नाम एकार्थक अर्थात् 'बन्दीमात्र' के हैं ॥

५ संशसकः (पु), 'शपथ देने या स्वयं प्रतिज्ञा करनेके कारण लड़ाईसे नहीं लौटनेवाले योद्धा' का १ नाम है ॥

६ रेणुः (पु स्त्री), धूलिः (+ धूली । स्त्री), पांशुः (+ पांसुः । पु), रजः (= रजस् न), 'धूल' के ४ नाम हैं ॥

७ चूर्णम् (न । + पु), क्षोदः (पु), 'महीन धूल' के २ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे 'रेणुः,' ६ नाम 'धूलमात्र' के हैं) ॥

८ समुत्पिञ्जः, पिञ्जलः (२ पु), 'अधिकव्याकुल सेना' के २ नाम हैं ॥

१. 'बोधकराश्चाक्रिका घटिकार्थकाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'मधुका' इति मुकुटसम्मत्तं पाठान्तरम् ॥

३-४. तदुक्तम्—

'वैतालिकाश्च कथ्यन्ते कविभिः सौखशयिकाः ।

राज्ञः प्रबोधसमये घण्टाश्चिह्वास्तु घाण्टिकाः' ॥ १५ इति ॥

- १ पताका वज्रयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥
- २ सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ।
- ३ अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥
- ४ आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्सम्भावनाऽऽत्मनि ।
- ५ अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहङ्कारः ॥ १०१ ॥
- ६ द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च ।
शक्तिः पराक्रमः प्राणो ऽ विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥
- ८ वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि घा रणे ।
- ९ युद्धमायोधनं जन्यं प्रघनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥

१ पताका, वैजयन्ती (२ स्त्री), केतनम् (न), ध्वजम् (न पु), 'पताका, झण्डे' के ४ नाम हैं । (किसीके मतसे प्रथम दो नाम उक्तार्थक और अन्तवाले दो नाम 'पताकाके दण्ड' के हैं) ॥

२ वीराशंसनम् (न), 'लड़ाईके अत्यन्त भयङ्कर मैदान' का १ नाम है ॥

३ अहंपूर्विका (स्त्री), 'मैं पहले पहुंचा-मैं पहले पहुंचा ऐसे कहते हुए स्पर्द्धासे योद्धाओंके दौड़ने' का १ नाम है ॥

४ आहोपुरुषिका (स्त्री), 'अभिमानपूर्वक अपनेमें सामर्थ्यका प्रकट करने' का १ नाम है ॥

५ अहमहमिका (स्त्री), 'आपसमें अहङ्कार करने' का १ नाम है ॥

६ द्रविणम् , तरः (= तरस्), सहः (= सहस् । + सहः = सह पु, सहा स्त्री), बलम् , शौर्यम् , स्थाम (= स्थामन्), शुष्मम् (+ शुष्मा = शुष्मन्, पु न । ७ न), शक्तिः (स्त्री), पराक्रमः, प्राणः (+ ओजः = ओजस्, ऊर्जः = ऊर्जस् । २ पु), 'पराक्रम, बल' के १० नाम हैं ॥

७ विक्रमः (पु), अतिशक्तिता (स्त्री), 'अधिक बल' के २ नाम हैं ॥

८ वीरपानम् (+ वीरपाणम् । न), 'लड़ाईमें जानेके समय या लड़ाईसे लौटनेपर उत्साह को बढ़ानेके लिये मदिरादि-पान करने' का १ नाम है ॥

९ युद्धम् , आबोधनम् , जन्यम् , प्रघनम् , प्रविदारणम् , युधम् ,

सुधमास्कन्दनं संख्यं समीकं 'सांपरायिकम् ।

अस्त्रिधां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥

'संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ।

अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥

समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिधुघः ।

१ नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥

३ श्वेडा तु सिंहनादः स्यात् ४ करिणां घटना घटा ।

५ क्रन्दनं योधसंरावो ६ वृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥

आस्कन्दनम्, संख्यम्, समीकम्, सांपरायिकम् (+ संपरायिकम् । १० न),
समरः, अनीकः, रणः (३ पु न), कलहः, विग्रहः, संप्रहारा, अभिसंपातः,
कलिः, संस्फोटः (+ संस्फोटः, संफोटः), संयुगाः, अभ्यामर्दः (+ अभिमर्दः),
समाघातः, संग्रामः, आहवाः, समुदायः (१३ पु), संयत् (+ पु), समितिः,
आजिः, समित्, युत् (= युध् । ५ स्त्री), 'लड़ाई, युद्ध' के ३१ नाम हैं ॥

१ नियुद्धम्, बाहुयुद्धम् (२ न), 'कुस्ती, दक्कल' के २ नाम हैं ॥

२ तुमुलम्, रणसंकुलम् (भा० दी० । २ न), 'खूब जमकर लड़ाई
होने या व्याकुल होने' के २ नाम हैं ॥

३ श्वेडा (+ श्वेला । स्त्री), सिंहनादः (पु), 'लड़ाईमें सिंहके समान
गर्जने' के २ नाम हैं ॥

४ घटना (भा० दी०), घटा (२ स्त्री), 'हाथियोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

५ क्रन्दनम् (न), योधसंरावः (भा० दी०, पु), 'स्पर्द्धासे प्रतिपक्ष-
वाले योद्धाओंको ललकारने या बुलाने' के २ नाम हैं ॥

६ वृंहितम्, करिगर्जितम् (२ न), 'हाथियोंके गर्जने' के २ नाम हैं ॥

१. 'संपरायिकम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः' इति युक्तः पाठः इति स्त्री० स्वा० । 'संफोटः'
इति तु भरतः इति ॥

- १ विस्फारो धनुषः स्थानः २ पटहाडाम्बरौ समौ ।
 - ३ प्रसभं तु बलारकारो हठोऽय स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥
 - ५ अजन्यं कर्त्तव्यत्वात् उत्पत्तिः स्वयं वयम् ।
 - ६ मूर्च्छां त कश्मलं मोहोऽप्यवगर्हन्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥
 - ८ अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं ९ विजयो जयः ।
 - १० वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥
 - ११ प्रद्रावोद्द्रावोऽद्रावसंदावाः विद्रवो द्रवः ।
- अपकमोऽपयानं च—

- १ विस्फारः (पु), 'धनुषके टङ्कार' का १ नाम है ॥
- २ पटहा; आढम्बरः (२ पु), 'नगाड़ा या दमदमा' के २ नाम हैं ॥
- ३ प्रसभम् (न), बलारकारः, हठः (२ पु) 'जबर्दस्ती करने' के २ नाम हैं ॥
- ४ स्खलितम्, छलम् (२ न), 'कपट करने' अर्थात् युद्धके नियमको तोड़कर' छल करने के २ नाम हैं ॥
- ५ अजन्यम् (न), उत्पातः, उपसर्गः (२ पु), उत्पात' के ३ नाम हैं ॥
- ६ मूर्च्छा (स्त्री), कश्मलम् (न), मोहः (पु), 'बेहोशी, मूर्च्छा' के ३ नाम हैं ॥
- ७ अवमर्दः (पु), पीडनम् (न), 'अन्नादिसे परिपूर्ण देशको राजा-के शत्रु द्वारा पीडित करने' के २ नाम हैं ॥
- ८ अभ्यवस्कन्दनम् (+ अवस्कन्दनम्), अभ्यासादनम् (+ धादि, धाटी । २ न) आ० दी० के मनसे 'मारकर शक्तिहीन' करने के और महे० के मतसे 'छापा मारने' अर्थात् कपटसे एकाएक आक्रमण करने' के २ नाम हैं । (' + सौप्तिकम् (न) 'रातमें छापा मारने' का १ नाम है) ॥
- ९ विजयः, जयः (२ पु), 'जीतने' के २ नाम हैं ॥
- १० वैरशुद्धिः (स्त्री), प्रतीकारः (पु) वैरनिर्यातनम् (न), शत्रुताको दूर करने' के ३ नाम हैं ॥
- ११ प्रद्रावः, उद्द्रावः, संद्रावः, संदावः, विद्रवः, द्रवः, अपकमः (७ पु), अपयानम् (न), लड़ाईमें पीठ दिखाने (भागने)' के ८ नाम हैं ॥

—१ रणे भङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥

- २ पराजितपराभूतौ त्रिषु ३ नष्टतिरोहितौ ।
 ४ प्रमापणं निवर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ १११ ॥
 प्रवासनं परासनं निषूदनं निर्हिसनम् ।
 निर्वासनं संक्षपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११२ ॥
 निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।
 निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११३ ॥
 उद्धासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च ।
 'आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥
 ५ 'व्यापादनं विशसनं कदनं च निशुम्भनम्' (२६)

१ भङ्गः (३भा० दी०,) पराजयः (२ पु), 'ह्वारने' के २ नाम हैं ॥

२ पराजितः (+ जितः), पराभूतः (+ परिभूतः, अभिभूतः । १ त्रि), 'लड़ाईमें हारे हुए' के २ नाम हैं ॥

३ नष्टः, तिरोहितः (२ त्रि), 'लड़ाईसे भागकर छिपे हुए' के २ नाम हैं ॥

४ प्रमापणम्, निवर्हणम् (+ निवर्हणम्), निकारणम्, विशारणम् (+ विशारणम्, निशारणम्), प्रवासनम्, परासनम्, निषूदनम् (+ निषूदनम्), निर्हिसनम्, निर्वासनम्, संक्षपनम्, निर्ग्रन्थनम् (+ निर्ग्रन्थनम्), अपासनम्, निस्तर्हणम्, निहननम्, क्षणनम्, परिवर्जनम्, निर्वापणम्, विशसनम्, मारणम्, प्रतिघातनम् (+ प्रतिघातनम्), उद्धासनम्, प्रमथनम्, क्रथनम्, उज्जासनम् (२४ न), आलम्भः, पिञ्जः, विशरः, घातः, उन्माथः (+ उन्मथः), वधाः (६ पु), 'मारने' के ३० नाम हैं ॥

५ [व्यापादनम्, विशसनम्, कदनम्, निशुम्भनम् (४ न) 'मारने' के ४ नाम हैं] ॥

१. 'आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा' इति पाठान्तरम् ॥

२. अयमंशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपकम्यते इति क्षेत्रकरूपेणात्र निहितः ॥

३. 'अङ्गशब्दस्य रणेऽन्वयित्वादिवमसत् ॥

- १ स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।
अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११६ ॥
- २ 'प्रमयोऽस्त्री दीर्घनिद्रा हिंसा संस्था प्रमीलनम्' (२७)
- ३ परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ।
मृतप्रमीतौ त्रिवेते ४ चित्ता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥
- ५ कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।
- ६ श्मशानं स्यात्पितृवनं ७ कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥
- ८ प्रग्रहोपग्रहौ बन्धां—

१ पञ्चता (+ पञ्चत्वम् न । स्त्री), कालधर्मः (+ कालः), दिष्टान्तः, प्रलयः, अत्ययः, अन्तः, नाशः (६ पु), मृत्युः (पु स्त्री), मरणम् (न), निधनः (पु न), 'मृत्यु' के १० नाम हैं ॥

२ [प्रमयः (पु न), दीर्घनिद्रा, हिंसा, संस्था (३ स्त्री), प्रमीलनम् (न), 'मरणे' के ५ नाम हैं] ॥

३ परासुः, प्राप्तपञ्चत्वः, परेतः, प्रेतः, संस्थिताः, मृतः, प्रमीतः (७ त्रि), 'मरे हुए' के ७ नाम हैं ॥

४ चित्ता, चित्या, चितिः (३ स्त्री), 'चित्ता' के ३ नाम हैं ॥

५ कबन्धः (+ रुण्डः । पु न), 'घड़, बिना शिरके शरीर' का १ नाम है ॥

६ श्मशानम्, पितृवनम् (+ पितृकाननम्, प्रेतवनम्, करवीरम् । २ न), 'श्मशान' के २ नाम हैं ॥

७ कुणपः (पु), शवः (पु न), 'सुर्दे' के २ नाम हैं ॥

८ प्रग्रहः, उपग्रहः (२ पु), बन्दी (+ वन्दी । स्त्री), महे० मतसे 'कैदी, बँधुआ, गिरफ्तार' के और भा० दी० मतसे 'बन्दीगृह (कोत, हवा-कात), के ३ नाम हैं । (यहाँ महे० का मत ठीक प्रतीत होता है' ॥

१. अयमंशः स्त्री० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यते इति क्षेपकरूपेणात्र निहितः ॥

२. कबन्धलक्षणं यथा—

'युद्धे योद्धृषु शत्रेषु सहस्रं कृतमूर्द्धसु ।

तदावेशात्कबन्धः स्यादेको मूर्द्धा क्रियान्वितः' ॥ १ ॥ इति ॥

उपचाराः सामान्यतः शिरोहीनकलेवरैऽपि कबन्धशब्दव्यवहार इत्यवधेयम् ॥

—१ कारा स्याद्वन्धनालये ।

२ पुंसि भूम्यसवः प्राणाश्चैव ३ जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥

४ आयुर्जीविनकालो ना ५ जीवातुर्जीवनौषधम् ।

इति चन्द्रियवर्गः ॥ ८ ॥

—२४७—

९. अथ वैश्यवर्गः ।

६ ऊरव्या ऊरुजा अर्या वश्य भूमिस्पृशं विशः ।

७ आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

१ कारा (स्त्री), बन्धनालयम् (भा० दी०, न), 'जेल' के २ नाम हैं ॥

२ असवः (= असु), प्राणाः (२ पु निश्च व० व०) 'प्राण' के २ नाम हैं ॥

३ जीवः (पु), असुधारणम् (भा० दी०, न), 'जीने, प्राणको धारण करने' के २ नाम हैं ॥

४ आयुः (= आयुस् न), जीवितकालः (भा० दी०, पु), 'उम्र, आयु' के २ नाम हैं ॥

५ जीवातुः (पु न), जीवनौषधम् (भा० दी०, न), 'जिलानेवाली दवा' के २ नाम हैं । (जैसे—लक्ष्मणजीके लिये संजीवनी वृक्षा.....) ॥

इति चन्द्रियवर्गः ॥ ८ ॥

—२४८—

९. अथ वैश्यवर्गः ।

६ ऊरव्या, ७ ऊरुजा, अर्या, वैश्यः, भूमिस्पृक् (= भूमिस्पृश), विक् (= विश् । ६ पु), 'वैश्य' के ६ नाम हैं ॥

७ आजीवः (पु), जीविका, वार्ता, वृत्तिः (३ स्त्री), वर्तनम् (+ वेतनम्), जीवन्म् (२ न), 'जीविका वेतन' के ६ नाम हैं ॥

१. 'जीवातुर्जीवनौषधम्' इत्युपाध्यायः' इति श्लो० स्वा० ॥

२. 'वृत्तिर्वर्तनजीवने' इति पाठान्तरम् ॥

३. अक्षणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृत ऊरु तदस्य यद्वैश्यः' इति श्रुत्युक्तेः ॥

- १ द्वित्रयां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।
- २ 'सेवा श्ववृत्तिश्चैरनृतं कृषिउच्छिष्टं त्वनम् ॥ २ ॥
- ५ द्वे याचितायाचितयोर्व्यासृज्यं मृतामृतं ।
- ६ सत्यानृतं वणिग्भावः स्यात्—

१ कृषिः (स्त्री), पाशुपाल्यम्, वाणिज्यम् (न. वणिज्यम्, वणिज्या, कुषीदम् । न), 'खेती, पशुपालन और व्यापार' के ३ 'वृत्तिः' (स्त्री)
२ 'वैश्योकी वृत्तिर्वा' हैं ॥

२ सेवा (भा० दी०), 'श्ववृत्तिः' (२ स्त्री), 'सेवा' के २ नाम हैं ॥

३ अनृतम् (+ प्रमृतम् । भा० दी०, न) 'कृषिः' (स्त्री), 'खेती' के ३ नाम हैं ॥

४ उच्छिष्टम् (+ उच्छ्रिः, शिष्टम्, शिष्टोच्छ्रिः), श्वनम् (२ न), 'गृहस्थके खलिहान या खेतसे सब अन्न उठाकर ले जानेके बाद १-१ दाना चूंगने (बीनने), के २ नाम हैं ॥

५ मृतम्, 'अमृतम्' (२ न), 'याचना करनेपर और बिना याचना किये मिली हुई वस्तु' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

६ 'सत्यानृतम्, वणिग्भावः' (भा० दी० न । + वाणिज्यम्, वणिज्यम्; वणिज्या । पु), 'व्यापार' के २ नाम हैं ॥

१. 'ऋतामृताभ्यां जीवेतु मृतेन प्रमृतेन वा । सत्यानृताभ्यामपि वा न श्ववृत्त्या कदाचन ॥१॥

इति मनुक्ताः (४१४) षड् वृत्तीरुपक्रम्याह—सेवेति ।

२. 'प्रमृतम्' इति सभ्यः पाठः इति क्षी० स्वा० ।

३. तदुक्तं भगवता श्रीकृष्णेन—

'कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावज्ञम्' इति गीता १८।४४ ॥

४. तदुक्तम्—'शुनो वृत्तिः स्मृता सेवा गर्हितं तद् द्वित्रन्मनाम् ।

हिंसादोषप्रधानत्वादनृतं कृषिरुच्यते ॥ १ ॥ इति ।

'सेवा श्ववृत्तिराख्याता तस्मात्तां परिवर्जयेत्' इति मनुः ४।६ ॥

५-६-७. तदुक्तं मनुना—

ऋतमुच्छिष्टं श्वेयममृतं स्यादयाचितम् ।

—१ ऋणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥

- उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ।
 ३ याचजयाऽऽप्तं याचितकं ४ नियमादापमित्यकम् ॥ ४ ॥
 ५ उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् ।
 ६ कुसीदिको वार्धुषिको वृद्धयाजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥
 ७ क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः ।
 ८ क्षेत्रं व्रैह्यशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवो द्वि यत् ॥ ६ ॥
 यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं द्वि तत् ।

१ ऋणम्, पर्युदञ्चनम् (२), उद्धारः (पु), 'कर्ज' के ३ नाम हैं ॥

२ अर्थप्रयोगः (पु), कुसीदम् (+ कुशीदम्, कुशीदम् । न), वृद्धिजी-
 विका (स्त्री), 'व्याज, सुद' के ३ नाम हैं ॥

३ याचितकम् (न), 'याचना करनेसे मिले हुए पदार्थ' का १ नाम है ॥

४ आपमित्यकम् (न), 'बदलेमें मिले हुए' का १ नाम है ॥

५ उत्तमर्णः, अधमर्णः (२ त्रि), 'कर्ज देनेवाले और लेनेवाले' का
 क्रमशः १-१ नाम है ॥

६ कुसीदिकः (+ कुशीदिकः, कुशीदिकः) वार्धुषिकः, वृद्धयाजीवः, वार्धुषिः
 (+ वार्धुषी = वार्धुषिन् । ४ त्रि), 'कर्ज देकर सूदसे जीविका चलाने-
 वाले' के ४ नाम हैं ॥

७ क्षेत्राजीवः, कर्षकः (+ कर्षकः), कृषिकः, कृषीवलः (४ त्रि),
 'किसान गृहस्थ' के ४ नाम हैं ॥

८ व्रैह्यम्, शालेयम्, यव्यम्, यवक्यम्, षष्टिक्यम् (५ त्रि), 'व्रीहि,
 शालि (एक प्रकारका उत्तम धान), दूँड़वाला जौ, बिना दूँड़वाला जौ
 और साठी (साठ दिनमें तैयार होनेवाला धान-विशेष) के पैदा होने योग्य
 खेतों' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

मृगं तु याचितं भैक्षं प्रमृतं कर्षणं स्मृतम् ॥ ९ ॥

सत्यानृक्षं तु बाणिज्यं तेन चैवापि कीव्यते ॥ इति मनुः ४ । ५-६ ॥

१. 'व्रीहिशाल्युद्भवक्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'द्वि' इत्युपाध्यायः इति क्षी० स्वा० ॥

- १ तिल्यं तैलीनवरन्माषोमाणुभक्ता द्विरुपता ॥ ७ ॥
- २ मौद्गीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षमम् ।
- ४ 'शाकशेनादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम्' (२८)
- ५ बीजाकृतं 'तूतकृष्टे ६ सीत्यं कृष्टं च हव्यवत् ॥ ८ ॥
- ७ त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहव्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।
- ८ द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥

१ तिल्यम्, तैलीनम् (२ त्रि), 'तिल पैदा होने योग्य खेत' के २ नाम हैं ॥

२ + माष्यम्, + माषोणम्; + उष्यम्, + औमीनम्; + अणव्यम्, + आणवीनम्; + भङ्ग्यम्, + भङ्गीनम् (८ त्रि), 'उड़द, तीसी' (अलसी), 'चीना और सनई पैदा होने योग्य खेत' के क्रमशः २-२ नाम हैं ॥

३ मौद्गीनम्, कौद्रवीणम् (२ त्रि), आदि (+ गोधूमीनम्, काठायीनम्, कौलथीनम्, प्रैयङ्गवीणम्, चाणकीनम् (५ त्रि) '.....', 'मूंग और कोदो आदि (गन्धू, मटर, कुश्मी, चीना और चना, ...) पैदा होने योग्य खेत' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

४ [शाकशाकटम्, शाकशाकिनम् (२ त्रि), 'साग पैदा होने योग्य खेत आदि (देश, स्थान, समय आदि)' के २ नाम हैं] ॥

५ बीजाकृतम्, उपकृष्टम् (भा० दी० । + उपकृष्टम् २ त्रि), 'बीज होनेके बाद जोते हुए खेत' के २ नाम हैं ॥

६ सीत्यम् (+ शीत्यम्), कृष्टम्, हव्यम् (३ त्रि), 'जोते हुए खेत' के ३ नाम हैं ॥

७ त्रिगुणाकृतम्, तृतीयाकृतम्, त्रिहव्यम्, त्रिसीत्यम् (+ त्रिशीत्यम् । ४ त्रि), 'तीन बार जोते हुए खेत' के ४ नाम हैं ॥

८ द्विगुणाकृतम्, द्वितीयाकृतम्, द्विहव्यम्, द्विसीत्यम् (+ द्विशीत्यम्), शम्बाकृतम् (५ त्रि), 'दो बार जोते हुए खेत' के ५ नाम हैं । ('किसीके

- १ द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।
- २ खारीवापस्तु खारीक उ उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥
- ५ पुन्नपुंश्चकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रमस्य तु ।
कैदारकं खारकैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥
- ६ लोष्टानि लेष्टवः पुंसि ७ कोटिशो लोष्टभेदनः ।
- ८ प्राजनं तोदनं तोत्वं ९ खनित्रभवदारणे ॥ १२ ॥
- १० दात्रं लवित्रम्—

मतसे 'शम्बाकृतम्' यह १ नाम 'अच्छी तरह सीधा जोतनके बाद तिछाँ जोते हुए खेत' का नाम है') ॥

१ द्रौणिकः, आढकिकः (२ त्रि), आदि (प्रास्थिकः, कौडविकः; २ त्रि), 'एक द्रोण और एक आढक आदि (एक प्रस्थ (सेर) एक कुडव (छटाक) आदि) बोन आदिके योग्य खेत आदि (उतना पकाने या रखने योग्य बर्तन या उतना खाने योग्य मनुष्यादि, '.....') का क्रमशः १-१ नाम है ॥

२ खारीकः (खारीवापः भा० दी०) (त्रि), 'एक खारी बोनके योग्य खेत' का १ नाम है ॥

३ 'उत्तमर्ण' (श्लो० ५) शब्दसे यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ वप्रः (पु न), केदारः (पु), क्षेत्रम् (न), 'खेत, क्यारी' के ३ नाम हैं ॥

५ कैदारकम् (+ कैदारम्), कैदार्यम्, क्षेत्रम् (भा० दी० + क्षेत्रम् महे०), कैदारिकम् (४ न), 'खेतोंके समूह' के ४ नाम हैं ॥

६ लोष्टम् (न । + पु), लेष्टुः (पु), 'ढेला' के २ नाम हैं ॥

७ कोटिशः (+ कोटीशः), लोष्टभेदनः (२ पु), 'ढेलोंको फोड़ने-वाली मुंगरी के या हेंगा' अर्थात् 'काष्ठ या दो बाँसोंसे बनाये गये पटेला' के २ नाम हैं ॥

८ प्राजनम् (+ प्रवयणम्), तोदनम्, तोत्त्रम् (३ न), 'चाबुक-पैना' के ३ नाम हैं ॥

९ खनित्रम्, अवदारणम् (२ न), 'खन्ता' अर्थात् 'कुदाल, फरसा, शमा, गैता आदि जमीन खोदनेवाके हथियार' के २ नाम हैं ॥

१० दात्रम्, लवित्रम् (२ न) 'हँसुआ' के २ नाम हैं ॥

१. 'क्षेत्रम्' इति महेपरसम्मतं पाठान्तरम् ॥

—१ आबन्धो योत्रं योक्त्रमथो' फलम् ।

१ निरीशं कुटकं फालः कृषको ३ लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥

गोदारणं च सीरोष्ठस्य शम्भ्या स्त्री युगकीलकः ।

२ ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात् २ सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥

७ पुंसि मेघिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुवन्धने ।

८ आशुर्व्रीहिः पाटलः स्यात्—

१ आबन्धः (पु) योत्रम्, योक्त्रम् (२ न), 'जोती, जोता' अर्थात् 'जुवामें बांधी जानेवाली रस्सी' के २ नाम हैं ॥

२ फलम्, निरीशम् (+ निरीषम्), कुटकम् (+ कूटकम् । ३ न), फालः, कृषकः (+ कृषिकः पु, कृषिका स्त्री । २ पु), 'फार' के ५ नाम हैं । ('किसीके मतसे प्रथमवाले ३ नाम जिसमें फारको गाढ़ा जाता है उस काष्ठके और अन्त-वाले २ नाम उक्तार्थक हैं') ॥

३ लाङ्गलम्, हलम् (+ हालः), गोदारणम् (३ न), सीरः (+ शी-रः । पु), 'हल' के ४ नाम हैं ॥

४ शम्भ्या (स्त्री), युगकीलकः (पु), 'सहला, जुआठकी कील' के २ नाम हैं ॥

५ ईषा (ईशा । स्त्री), लाङ्गलदण्डः (भा० दी०, पु), 'हरिश' के २ नाम हैं ॥

६ सीता (+ शीता), लाङ्गलपद्धतिः (भा० दी० । स्त्री), 'हराई' अर्थात् 'हलके चलानेसे पड़ी हुई लकीर' के २ नाम हैं ॥

७ मेघिः (+ मेघिः । पु), खलेदारु (भा० दी० पु न) 'मेह' अर्थात् 'दूबनी करनेके समय बैलोंके रस्सी बांधे जानेवाले बड़े खूँटे' के २ नाम हैं ॥

८ आशुः (+ न) व्रीहिः (+ आशुव्रीहिः पु), पाटलः (+ पाटलिः । २ पु), 'साठी' अर्थात् 'साठ दिनमें तैयार होनेवाले धान' के ३ नाम हैं ॥

१. अत्र 'फलम्' इति पाठमुक्त्वा 'इतो हलप्रकरणमारम्भमित्यर्थः' इति स्त्री० स्वा० आहुः ॥

२. 'निरीशं कूटकं फालः कृषिकः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'मेघिः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ शितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥

२ तोकमस्तु तत्र हरिते ३ कलायस्तु सतीनकः ।

हरेणुखण्डिकौ चास्मिन् ४ कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥

५ मङ्गल्यको मसूरोऽथ ६ मकुष्ठकमयुष्टका ।

वनमुद्गे ७ सर्षपे तु द्वौ ८ तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥

८ सिद्धार्थस्त्वेष धवलौ ९ गोधूमः सुमनः समौ ।

१० स्याद्यावकस्तु ११ कुलमाषः १२ क्षणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

१ शितशूकः (+ सितशूकः), यवः (२ पु), 'जौ' के २ नाम हैं ॥

२ तोकमः (पु), 'हरे जौ' का १ नाम है ॥

३ कलायः, सतीनकः (+ सातीनकः), हरेणुः, खण्डिकः (४ पु), 'मटर, कबिलि' के ४ नाम हैं ॥

४ कोरदूषः, कोद्रवः (+ काद्रवः । २ पु), 'कोदो' के ३ नाम हैं ॥

५ मङ्गल्यकः, मसूरः (+ मसुरः, मसूरा, मसुरा; २ स्त्री । २ पु), 'मसूर' के २ नाम हैं ॥

६ मकुष्ठकः (+ मकुष्ठकः, मकुष्ठः, मुकुष्ठः, मकूष्ठकः, मुकुष्टकः), मयुष्टका (+ मयुष्टकः, मयष्टकः, मपष्टकः, मपष्टः, मपुष्टकः, मपुष्टः) वनमुद्गः (३ पु), 'वनमूंग या मोठ नामक अन्न-विशेष' के २ नाम हैं ॥

७ सर्षपः (+ सरिषपः), तन्तुभः (+ तुन्तुभः), कदम्बकः (३ पु), 'सरसों' के ३ नाम हैं ॥

८ सिद्धार्थः (+ रसोद्घनः, भूतनाशनः । पु), 'सफेद सरसों' का १ नाम है ॥

९ गोधूमः सुमनः (२ पु), 'गेहूँ' के २ नाम हैं ॥

१० यावकः कुलमाषः (+ कुलमासः । २ पु), 'अधसूखे जौ' के और रचितके मतसे 'बिना टूँडवाले जौ' के २ नाम हैं ॥

११ क्षणकः, हरिमन्थकः (+ हरिमन्थः, हरिमन्थजः । २ पु), 'चना' के २ नाम हैं ॥

१ शितशूकयवौ इति पाठान्तरम् ॥

२ मकुष्ठकमयुष्टकौ इति पाठान्तरम् ॥

३ 'तन्तुभकदम्बकौ' इति पाठान्तरम् ॥

४ 'कुलमासक्षणकः' इति मुकुटपाठः इति भा० दी० ॥

- १ द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ।
- २ क्षवः^१ क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकासुरी ॥ १९ ॥
- ३ स्त्रियौ कङ्कुप्रियङ्गू द्वे ४ अतसी स्यादुमा क्षुमा ।
- ५ मातुलानी तु भङ्गायां ६ व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥
- ७ किंशारुः^३ सस्यशूकं स्यात् ८ कणिशं सस्यमञ्जरी ।
- ९ धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः—

१ तिलपेजः, तिलपिञ्जः (+ जर्तिलः । २ पु), 'विना तेलवाली तिल' के २ नाम हैं ॥

२ क्षवः, क्षुताभिजननः (+ क्षुधाभिजननः । २ पु), राजिका, कृष्णिका (+ कृष्णका), आसुरी (+ सुरी, असुरी । ३ स्त्री), 'राई' काला सरसो' के ५ नाम हैं ॥

३ कङ्कुः (+ कङ्कुः, कङ्कुः कङ्गू), प्रियङ्गुः (२ स्त्री), 'ककुनी' अर्थात् 'टांगुन' के २ नाम हैं ॥

४ अतसी, उमा, क्षुमा (३ स्त्री), 'तीसी, अलसी' के ३ नाम हैं ॥

५ मातुलानी, भङ्गा (२ स्त्री), 'भांग' के २ नाम हैं ॥

६ अणुः (पु), 'खाना' का १ नाम है ॥

७ किंशारुः (पु), सस्यशूकम् (+ शस्यशूकम् । भा० दी०, न । + पु मुकु०), 'टूंड' के २ नाम हैं ॥

८ कणिशम् (+ कणिषम् । न । + पु), सस्यमञ्जरी (+ शस्यमञ्जरी । भा० दी०, स्त्री, 'धान आदिके बाल' के २ नाम हैं ॥

९ धान्यम् (न), व्रीहिः, स्तम्बकरिः (२ भा० दी० । २ पु), 'धान्य-मात्र' के ३ नाम हैं । ('धान्य' सत्रह प्रकारके होते हैं) ॥

१. क्षुधाभिजननः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शस्यशूकं स्यात्कणिशं शस्यमञ्जरी' इति पाठान्तरम् ॥

३. क्षी० स्वा० व्याख्याने सप्तदश धान्यान्मुक्तानि, तथा हि—

'व्रीहिर्यवो मसूरो गोधूमो मुद्गमाषतिलचणकाः ।

अणवः प्रियङ्गुकोद्रवमशुष्टकाः शलिराढक्यः ॥ १ ॥

द्वौ च कुलायकुल्यौ शणः सप्तदशानि धान्यानि' ॥ इति ॥

—१ स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥

२ नाडी नालश्च काण्डोऽस्य ३ पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

४ 'कडङ्गरो वुसं छीवे ५ धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

६ शूकोऽस्त्री शृङ्गतीक्ष्णात्रे ७ शमी' शिम्बा ८ त्रिपुत्ररे ।

'क्रद्धमावसितं धान्यं ९ पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

१ स्तम्बः, गुच्छः (भा० दी० । २ पु), 'तृण यवादिके गुच्छे' के २ नाम हैं ॥

२ नाडी (स्त्री), नालम् (न), 'यवादिके डण्ठल' के २ नाम हैं ॥

३ पलालः (पु न), 'पुआल' का १ नाम है ॥

४ कडङ्गरः (+ कडङ्गरः । पु), वुसम् (+ वुषम् । न), 'पुअःले आदिके भूसे' के २ नाम हैं ॥

५ धान्यत्वक् (= धान्यत्वच्, भा० दी०, स्त्री), तुषः (पु), 'धानके भूसे' के २ नाम हैं ॥

६ शूकः (पु न). 'धान्य या तृण आदिके चिकने और नुकीले टूट आदि' का १ नाम है । ('धान्य-तृणसे पृथक् बिच्छू आदिके डङ्कका भी यह वाचक है, अत एव इसका किंशारु (श्लो० २१ में उक्त) शब्दसे अलग निर्देश है') ॥

७ शमी : (+ शमिः), शिम्बा (+ शिम्बिः, शिम्बी, सिम्बा, सिम्बिः, सिम्बी । २ स्त्री), 'छीमी, फली' अर्थात् 'मटर, केराव आदिकी ढेंदी' के २ नाम हैं ॥

८ शृङ्गम् (+ रिद्धम्), आवसितम् (+ अवसितम् । २ त्रि), 'हवा-में ओसाकर इकट्ठा करने योग्य धान आदि अन्न' के २ नाम हैं ॥

९ पूतम्, बहुलीकृतम् (२ त्रि), ओसाये हुए धान आदि अन्नकी राशि' के २ नाम हैं ॥

१. 'कडङ्गरः' इति हरदत्तपाठः' इति महे० भा० दी० ॥

२. 'सिम्बा' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'रिद्धमावसितं' इति पाठान्तरम् ॥

- १ माषादयः शमीधान्ये २ शूकधान्ये यवादयः ।
 ३ शालयः कलमाद्याश्च पष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥
 ४ तृणधान्यानि नीवाराः ५ स्त्री १ गवेधुर्गवेधुका ।
 ६ १अयोग्रं मुसलं स्त्री ७ स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥
 ८ प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री ९ चालनी तितठः पुमान् ।
 १० २स्यूतप्रसेवौ—

१ १ शमीधान्यम् (न), 'उरद आदि (मसूर, मूंग,.....) अन्न' का १ नाम है ॥

२ शूकधान्यम् (न), 'टूँडवाले जौ आदि (गेहू, धान,....), अन्न' का १ नाम है ॥

३ शालिः (पु), 'कलम (जड़हन धान), साठी आदि धान' का १ नाम है ॥

४ तृणधान्यम् (न), नीवारः (पु) 'तीनी, सांवा, कोदो आदि' का १ नाम है ॥

५ गवेधुः (+ गवेडुः, मुकु०), गवेधुका (२ स्त्री), 'मुनियोंके अन्न विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ अयोग्रम् (+ अयोनिः), मुसलः (२ पु न) 'मुसल' के २ नाम हैं ॥

७ उदूखलम्, उलूखलम् (२ न), 'ओखली' के २ नाम हैं ॥

८ प्रस्फोटनम् (न), शूर्पम् (+ सूर्पम् । पु न), 'सूप' के २ नाम हैं ॥

९ चालनी (स्त्री । + चालनम् न), तितठः (पु । + न), 'चालनी' के २ नाम हैं ॥

१० स्यूतः (+ स्योनः मुकु०), प्रसेवः (२ पु), 'बोरा या कपड़े आदिके थैले' के २ नाम हैं ॥

१. 'गवेडु—' इति मुकुटः ॥ २. 'अयोनिः' इत्येके पेटुः' इति स्त्री० स्वा० ॥

३. 'स्योनप्रसेवौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. तथा च रत्नकोषः—'माषो मुद्गो राजमाषः कुकृत्यश्चणकस्तिलः ।

काकाण्डकीवर इति शमीधान्यगणः स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ 'कण्डोलपिटौ २ कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

समानौ ३ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।

४ पौरोगवस्तद्व्यक्षः ५ सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥

६ आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ।

७ आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार ८ इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

९ अश्मन्तमुद्धानमधिभ्रयणी चुल्लिरन्तिका ।

१० अङ्गारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥

हसन्त्यपि—

१ कण्डोलः, पिटः (+ पिटकः, पिण्डः स्त्री० स्वा० । २ पु), 'बाँस या बैत आदिके बने हुए दौरी, डालो, ओड़ा आदि' के २ नाम हैं ॥

२ कटः, किलिञ्जकः (२ पु), 'बाँसकी बनी हुई झाँपी आदि' के २ नाम हैं ॥

३ रसवती (स्त्री), पाकस्थानम्, महानसम् (२ न), 'रसोइया घर, पाकशाला' के ३ नाम हैं ॥

४ पौरोगवः (त्रि), 'पाकशालाके मालिक' का १ नाम है ॥

५ सूपकारः, बल्लवः (२ त्रि), स्त्री० स्वा० के मतसे 'व्यञ्जन' (तरकारी, कहीं आदि) बनानेवाले रसोइयादर' के २ नाम हैं ॥

६ अरालिकः, आन्धसिकः, सूदा, औदनिकः, गुणः (५ त्रि), स्त्री० स्वा० के मतसे 'रसोइयादर, पाचक' के ५ नाम हैं । भा० दो० महे० आदिके मतसे 'सूपकारः' आदि ७ नाम 'रसोइयादर' के ही हैं ॥

७ आपूपिकः, कान्दविकः, भक्ष्यकारः (+ भक्षकारः, भक्ष्यकारः । ३ त्रि), 'पुआ, पुड़ी, कचौड़ी आदि बनानेवाले, हलवाई' के ३ नाम हैं ॥

८ 'पौरोगव' (स्त्री० २७) शब्दसे यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

९ अश्मन्तम् (+ अश्मन्तः, पु), उद्धानम्, (उष्मानम्, उद्धानम्, उद्धानम् । २ न), अधिभ्रयणी, चुल्लिः (+ चुल्लो), अन्तिका (+ अन्विका, अन्ती । ३ स्त्री), 'चुलही' के ५ नाम हैं ॥

१० अङ्गारधानिका (+ अङ्गारधानी, अङ्गारपात्री), अङ्गारशकटी, हसन्ती (+ हसन्तिका), हसनी (४ स्त्री), 'बोरसी, 'अँगोठी' के ४ नाम हैं ॥

१. 'कण्डोलपिण्डौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'अश्मन्त उष्मानं' इति 'अश्मन्तमुद्धानं' इति च पाठान्तरे ॥

—१ अथ न स्त्री स्यादङ्कारोऽलातमुल्लुक् ।

२ वलीबेऽम्बरीषं आष्टो ३ ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥

४ अलिञ्जरः स्यान्मणिकः ५ कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।

६ पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं ७ कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

घटः कुटनिपा न वल्ली शरावो वर्धमानकः ।

९ ऋजीषं पिष्टपचनं—

१ अङ्कारः (पु न), अलातम्, उल्लुक् (२ न), भा० दी० के मतसे 'अङ्कार' के ३ नाम हैं । तथा मुकु० और महे० के मतसे पहला नाम 'अङ्कार' का और अन्तवाले दो नाम 'लुआठ' के हैं ॥

२ अम्बरीषम् (न । + पु), आष्टः (पु), 'स्वापर' अर्थात् 'चना आदि-को भूँजनेके वर्तन' या भाङ् 'भंसार' के २ नाम हैं ॥

३ कन्दुः (+ कन्दूः । पु स्त्री), स्वेदनी (स्त्री), 'मदिरा बनानेके वर्तन या भट्टी' के २ नाम हैं ॥

४ अलिञ्जरः (+ अलञ्जरः) मणिकः (२ पु), 'कुण्डा, भाँड़' के ३ नाम हैं ॥

५ कर्करी, आलुः (+ आलुः), गलन्तिका (+ गलन्ती । ३ स्त्री), 'गड़आ, हथहर या झंझरा' के ३ नाम हैं ॥

६ पिठरः (पु । + न), स्थाली, उखा (+ उषा २ स्त्री), कुण्डम् (न), 'तसला' बटुआ, बटलोही' के ४ नाम हैं ॥

७ कलशः (+ कलसः । त्रि), घटः (पु स्त्री), कुटः, निपाः (२ पु न) 'घड़े' के ४ नाम हैं ॥

८ शरावः (+ सरावः । पु न), वर्धमानकः (पु), 'ढकना, कसोरा' के २ नाम हैं ॥

९ ऋजीषम् (+ ऋजीषम्), पिष्टपचनम् (२ न), 'तावा' के २ नाम हैं ॥

१. 'अलञ्जरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्थाल्युषा कुण्डं कलशस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सरावः' इति दन्तवाविरपि—' इति मुकुटः' इति भा० दी० ॥

४. 'ऋजीषं' इति पाठान्तरम् ॥

—१ कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

२ कुतूः कुत्तेः स्नेहपात्रं ३ सैवालपा कुतुपः पुमान् ।

४ सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥

५ दर्विः कम्बिः खजाका च ६ 'स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः' ।

७ अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रुं रस्य तु नालिका ॥ ३४ ॥

कलम्बश्च कडम्बश्च—

१ कंसः (पु न), पानभाजनम् (+ कोशिका, पारी, मखिका, चपकः । न), 'दूध आदि पीनेका प्याहा, ग्लास आदि' के २ नाम हैं ।

२ कुतूः (स्त्री), स्नेहपात्रम् (भा० दो०, न), 'कुप्पा' अर्थात् 'तेल रखने-के लिये चमड़ेके बने हुए बड़े बर्तन' के २ नाम हैं ॥

३ कुतुपः (पु), 'कुप्पी' अर्थात् 'तेल रखनेके लिये चमड़ेके बने हुए छोटे बर्तन' का १ नाम है ॥

४ आवपनम्, भाण्डम्, पात्रम्, अमत्रम्, भाजनम् (५ न), 'बर्तन' के ५ नाम हैं ॥

५ दर्विः (+ दर्वी), कम्बिः (+ कम्बी), खजाका (३ स्त्री), 'कलजुग' के ३ नाम हैं ॥

६ तर्दूः (+ तन्दूः । स्त्री), दारुहस्तकः (पु), 'डल्लू' अर्थात् 'भात-दाळ आदि परोसनेके उपयोगी बर्तन' के २ नाम हैं ॥

७ शाकम् (न पु), हरितकम् (न), शिग्रुः (पु) 'भाजी, साग' के ३ नाम हैं ॥

८ नालिका (+ नाडिका, नाडी । 'मुकु० स्त्री) कलम्बः, कडम्बः (पु), 'सागके डंठल' के ३ नाम हैं ॥

१. 'स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पञ्चापि (दर्व्यादयो दारुहस्तकान्ताः) पर्यायाः । उक्तहैमा ('दर्वी पणातर्द्वीः') तुरो-
भात' इति मा० दो० । किन्तु हेमचन्द्रकृतेऽनेकार्थसंग्रहे '—दर्वी पणातर्द्वीः' (अने० संग्र०
२।५२४) इत्यालम्भात्, तेनैव विरचितेऽभिधानचिन्तामणौ 'कम्बिः दर्विः खजाकाऽप्य-
स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः' (अभि० चिन्ता० ४.८७) इत्युक्तेश्च तदसदित्यवश्यम् ॥

३. 'नालं काण्डे मृगाके च नाडी शाके कडम्बके' (अने० संग्र० २।४९४) इति

—१ वेसवार उपस्करः ।

- २ तिन्निडीकं च चुकं च वृक्षम्लश्मथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥
 मरीचं कोलकं कृष्णमुषणं धर्मपत्तनम् ।
 ४ जीरको जरणोऽज्राजी कणा ५ कुणो नु जीरके ॥ ३६ ॥
 सुपवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्जिका ।
 ६ आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्या ७ दथ छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥

१ 'वेसवारः' (+ वेषवारः), उपस्करः (२ पु), 'छोंक देनेके लिये जीरा आदि फोरन या मसाला' के २ नाम हैं ॥

२ तिन्निडीकम्, चुकम्, वृक्षम्लम् (+ वृक्षम्लम् । ३ न), 'चूक, अमचुर' के ३ नाम हैं ॥

३ वेल्लजम्, मरीचम् (+ मरिचम्), कोलकम्, कृष्णम्, उषणम्, (+ उषणम्), धर्मपत्तनम् (+ धर्मपत्तनम् । ६ न) 'मिर्च' के ६ नाम हैं ॥

४ जीरकः, जरणः (२ पु), अज्राजी, कणा (२ स्त्री), 'सफेद जीरा' के ४ नाम हैं ॥

५ सुपवी, कारवी, पृथ्वी (+ पृथ्वीका), पृथुः, काला, (+ कालिका, उपकालिका), उपकुञ्जिका, (+ कुञ्जिका, कुञ्जी । ६ स्त्री), 'काला जीरा' के ६ नाम हैं ॥

६ आर्द्रकम्, शृङ्गवेरम्, (२ न), 'अदरक, आदि' के २ नाम हैं ॥

७ छत्रा (स्त्री), वितुन्नकम्, कुस्तुम्बुरु (+ कुस्तुम्बुरी), धान्याकम्

हेमोक्तेः 'नाला न ना पद्मदण्डे च नाली शाककडम्बके' इति (मेदि० पृ० १५९ । श्लो० २८) मेदिन्युक्तेष्वेत्यवधेयम् ॥

१. 'वेषवारः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कृष्णमुषणं धर्मपत्तनम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कणा कृष्णा तु पिप्पली' इत्येके पेडुः' इति क्षी० स्वा० ॥

४. तदुक्तमात्रेयसंहितायाम् —

'चित्रकं पिप्पलीमूलं पिप्पलीचन्वनागम् ।

धान्याकं रजनीश्वेततण्डुलाश्च समांशकाः ॥ १ ॥

वेसवार इति ख्यातः शाकादिषु नियोजयेत् ॥ इति ॥

अथवा—'२० पलानि हरिद्रायाः, १० पलानि धान्याकस्य, ५ पलानि शुद्धजीरकस्य, २ ३/४ पलानि मेथिकायाः, एतच्चतुष्टयं मज्जितमेव ग्राह्यम्; ३ पलानि मरीचस्य, ३ पलं राम-ठस्य । एतत्सर्वमेकत्र संमदितं वेसवार इत्युच्यते' इत्यन्ये' इति महे० भा० दी० ॥

- कुस्तुम्बुरु च^१ धान्याकश्मथ शुण्ठी महौषधम् ।
 स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वमेषजम् ॥ ३८ ॥
 २ आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि च ।
 अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च^२ काञ्जिके ॥ ३९ ॥
 ३ सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं दिङ्गु रामठम् ।
 ४ तत्पत्नी कारवी पृथ्वी बाष्पिका कवरी पृथुः ॥ ४० ॥
 ५ निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।
 ६ सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं^३ वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

(+ धान्याकम्, धान्यकम्, धन्यम्, धनीयकम्, धनेयकम्, धन्या । ३),
 'धनियाँ' के ४ नाम हैं ॥

१ शुण्ठी (+ शुण्ठिः । स्त्री), महौषधम्, विश्वम् (न स्त्री), नागरम्,
 विश्वमेषजम् (शेष न), 'सौंठ' के ५ नाम हैं ॥

२ आरनालकम् (+ आरनालम्) सौवीरम्, कुल्माषम्, अभिषुतम् (+ कु-
 ल्माषाभिषुतम्), अवन्तिसोमम्, धान्याम्लम् (+ धान्याम्लम्), कुञ्जलम्,
 काञ्जिकम् (+ काञ्जिकम् । ८ न), 'कांजी' के ७ नाम हैं ॥

३ सहस्रवेधि (= सहस्रवेधिन्), जतुकम्, बाह्लीकम् (+ बह्लिकम्),
 दिङ्गु, रामठम् (५ न), 'हींग' के ५ नाम हैं ॥

४ + स्वपत्नी, कारवी, पृथ्वी, बाष्पिका (+ वाष्पिका), कवरी (+ क-
 वर्दी), पृथुः (६ स्त्री), 'हींगके पेड़के पत्ते' के ६ नाम हैं ॥

५ निशाख्या (+ 'निशा' अर्थात् रातके वाचक सब नाम), काञ्चनी,
 पीता, हरिद्रा, वरवर्णिनी (५ स्त्री), 'हल्दी' के ५ नाम हैं ॥

६ अक्षीवम् (+ अक्षिवम्), वशिरम् (+ वसिरम्) 'समुद्री नमक' के
 २ नाम हैं ॥

१. 'धान्यकम्' इति भा० दी० 'धन्यक' इति मुकु० सम्मते पाठान्तरम् ॥

२. 'काञ्जिके' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'स्वपत्नी कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'सिर' इति पाठान्तरम् ॥

- १ सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ।
- २ रोमकं वसुकं ३ पाक्यं विडं च कृतके व्रजम् ॥ ४२ ॥
- ४ सौवर्चलोऽक्षरुणके ५ तिलकं तत्र मेनके ।
- ६ मत्स्यण्डी फाणितं ७ खण्डविकारः शर्करा सिता ॥ ४३ ॥
- ८ कूचिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाद्या तु माजिता ।

१ सैन्धवः (पु), शीतशिवम् (+ सितशिवम्), माणिमन्थम् (+ माणिबन्धम्), सिन्धुजम् (३ न), 'सैन्धो' नमक, या सिन्धुदेशमें पैदा होनेवाले नमक के ४ नाम हैं ॥

२ रोमकम्, वसुकम् (+ वस्तकम् । ३ न), 'सौम्य' नमक के २ नाम हैं ॥

३ पाक्यम्, विडम् (+ विडम् । ३ न), 'खारा नमक या खरिया नमक' के २ नाम हैं ।

४ सौवर्चलम्, अक्षम्, रुक्मम् (३ न), 'सोचर नमक' के ३ नाम हैं ॥

५ तिलकम् (न), 'काला नमक' का १ नाम है ॥

६ मत्स्यण्डी (स्त्री), फाणितम् (न), 'राव' के २ नाम हैं ॥

खण्डविकारः (पु), शर्करा, सिता (२ स्त्री), 'मिश्री, चीनी, शर्कर' के ३ नाम हैं । ('भा० दी० मतसे 'मत्स्यण्डी,' ३ नाम 'राव' के और 'शर्करा, सिता' ये २ नाम 'चीनी आदि' के हैं । अन्याचार्यों के मतमें 'मत्स्यण्डी,' ५ नाम एकार्थक हैं) ॥

८ कूचिका, क्षीरविकृतिः (भा० दी० । + किलाटी । २ स्त्री, 'माषा, खोवा' के २ नाम हैं ॥

९ रसाद्या, माजिता (+ शिखरिणी । २ स्त्री), 'दही, खांड (चीनी), घी, मिर्च और सोंठसे बनाई हुई चटनी' के २ नाम हैं, इसे गुजराती लोग 'सिखरन या सिकरन' कहते हैं) ॥

१. 'सितशिवं माणिबन्धं' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'वस्तकं पाक्यं विडं' इति पाठान्तरम् ॥

३. तथा च सूद (पाक) शास्त्रम्—

'अर्धाढकः सुचिरपयुषितस्य दध्नः खण्डस्य षोडश पलानि शशिप्रभस्य ।

सर्पिः पलं मधु पलं मरिचं द्विकर्षं शुण्ठयाः पलार्द्धमपि चार्द्धपलं चतुर्णाम् ॥ १ ॥

सूक्ष्मे पटे कलनया मृदुपाणिघृष्टा कर्पूरवृक्षसुरभीकृतपात्रसंस्था ।

एषा वृकोदरवृता सरसा रसाद्या वास्वादिता भगवता मधुसूदनेन' ॥ २ ॥ इति ॥

- १ म्यात्तेमनं तु निष्ठानं २ त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥
- ३ शूलाकृतं भट्टित्रं स्याच्छूल्यश्चमुख्यं तु पेटरम् ।
- ५ 'संस्कृतं सर्पिषा दध्ना सापिष्कं दधिकं क्रमात् (२९)
- ६ उदलावणिकं तत्स्याद्यत्सिद्धं लवणाम्भसा' (३०)
- ७ प्रणीतमुपसम्पन्नं ८ प्रयस्तं म्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥
- ९ म्यात्पिच्छिलं तु विजिलं १० संमृष्टं शोधितं समे ।

१ तेमनम्, निष्ठानम् (२ न), 'दही-बारा, कढ़ी आदि' के २ नाम हैं।
 २ यहाँसे आगे 'वासित' (श्लो० ४६) शब्द तक एव शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥
 ३ शूलाकृतम्, भट्टित्रम्, शूल्यम् (३ त्रि), 'लोहे के छड़ से पकाये हुए मांस' के ३ नाम हैं ॥

४ शूल्यम्, पेटरम् (२ त्रि), 'बटुपमें पकाये हुए भात आदि' के २ नाम हैं ॥

५ [सापिष्कम्, दाधिकम् (२ त्रि), 'घी और दही में बनाये हुए पदार्थ' का क्रमशः १-१ नाम है] ॥

६ [उदलावणिकम् (त्रि), 'पानी और नमक में बनाये हुए पदार्थ' का १ नाम है] ॥

७ प्रणीतम्, उपसम्पन्नम् (२ त्रि), 'रस आदिमें बनाये हुए रसिभाव आदि पदार्थ या तैयार भोजनमात्र' के २ नाम हैं ॥

८ प्रयस्तम् सुसंस्कृतम् (२ त्रि) 'परिश्रमसे पकाये (बनाये) हुए उत्तमोत्तम भोज्य पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

९ पिच्छिलम्, विजिलम् (+ विजिलम्, विजलम्, विजिविलम्, विजि-
 पिलम्, विज्जनम्, । २ त्रि), 'रसदार तरकारी, पतली दही आदि' के २ नाम हैं ॥

१० संमृष्टम्, शोधितम् (२ त्रि), 'केश, कीड़ा आदि चुनकर साफ किये हुए अन्नादि' के २ नाम हैं ॥

१. 'संस्कृतं.....लवणाम्भसा' इत्ययमंशः क्षो० स्वा० व्याख्याने 'शूल्योख्य' शब्दयोर्मध्ये एव पठ्यते इत्येतोऽस्य प्रकृतोपयोगितयाऽयं मया मूले क्षेत्ररूपेण स्थापितः ॥

- १ चिकणं मसृणं स्निग्धं २ तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥
- ३ आपकं पौलिरभ्यूषां ४ लाजाः पुंभूमि 'चाक्षताः ।
- ५ पृथुकः स्याच्चिपिटको ६ धाना 'भृष्टयवे स्त्रियः ॥ ४७ ॥
- ७ पूषोऽपूपः पिष्टकः स्यात् ८ करम्भो दधिसक्तवः ।
- ९ भिस्सा स्त्री भक्तमन्वोऽजमोदतोऽस्त्री स दादिविः ॥ ४८ ॥
- १० भिस्सटा दग्धिका—

१ चिकणम्, मसृणम्, स्निग्धम् (३ त्रि), 'चिकने पदार्थ' के ३ नाम हैं ।
२ भावितम्, वासितम् (२ त्रि), 'हीन आदिसे सुवासित व्यञ्ज-
नादि' के २ नाम हैं ॥

३ आपक्वम् (न), पौलिः, अभ्यूषाः (+ अभ्योषः, अभ्युषः । २ पु),
'होरहा, मुरमुरा, ऊमी, हावुस आदि अधपके (नताये हुए) पदार्थ'
के ३ नाम हैं ॥

४ लाजाः (+ स्त्री), अक्षताः (२ पु नि० व० व०), 'लावा, खील'
अर्थात् 'भूजे हुए धान आदि' के २ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे 'लाजाः'
यह १ नाम उक्तार्थक है और 'अक्षताः' यह १ नाम 'देवताओं को चढ़ाने के
योग्य चावल' का है') ॥

५ पृथुकः, चिपिटकः (+ चिपिटः । २ पु), 'चिउड़ा' के २ नाम हैं ॥

६ धानाः (स्त्री नि० व० व०), 'भुने हुए जौ' अर्थात् 'फरही या बहुरी'
का १ नाम है ॥

७ पूषः, अपूपः, पिष्टकः (३ पु), 'पूषा, मालपूषा आदि' के
३ नाम हैं ॥

८ करम्भः (+ करम्भः । पु), दधिसक्तवः (भा० दी०, नि० व० व०),
'दहीसे युक्त सत्तू' के २ नाम हैं ॥

९ भिस्सा (स्त्री), भक्तम्, अन्वः (= अन्धस्), अजम् (३ न),
ओदनः (पु न), दीदिविः (पु । + स्त्री), 'भात' के ६ नाम हैं ॥

१० भिस्सटा, दग्धिका (२ स्त्री), 'जले हुए भात आदि' के २ नाम हैं ॥

१. 'चाक्षतम्' इति मुकुटः' इति भा० दी० ॥ २. 'भृष्टयवे' इति पागन्तरम् ॥

—१ सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ।

२ 'मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥

३ यवागूरुष्णका आणा विलेपी तरला च सा ।

४ 'अक्षणाभ्यञ्जने तैलं ५ कृसरस्तु तिलौदनः' (३१)

६ गव्यं त्रिषु गवां सर्वं ७ गोविट् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥

८ तत्तु शुद्धं करीषोऽस्त्री ९ दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।

१० पयस्यमाज्यदध्यादि ११ द्रव्यं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥

१ सर्वरसाग्रम् (मा० दौ०), मण्डम् (२ नपु), 'माड्' के २ नाम हैं ॥

२ मासरः, आचामः, निस्त्रावः (+ विस्त्रावः मुकु० । ३ पु), 'मातके मांङ्' के ३ नाम हैं ॥

३ यवागूः, उष्णका, आणा, विलेपी, तरला (५ स्त्री), 'लपसी, हलुआ' के ५ नाम हैं । (थोड़े गर्मपानी में पकाये गये चावल को 'अक्ष', चौगुने पानी में 'विलेपी', चौदहगुने पानी में 'मण्ड', छगुने पानी में 'यवागू', और अठारहगुने पानी में 'यूष' रंजाएँ 'मैषज्यरसनावली' में कही गयी हैं; तथापि उक्त भेद यहाँ विवक्षित नहीं हैं) ॥

[अक्षणम्, अभ्यञ्जनम्, तैलम् (३ न), 'तैल' के ३ नाम हैं] ॥

५ [कृसरः (+ कृशरः, त्रिसरः २ पु । २ स्त्री), + तिलौदनः (२ पु), 'तिलयुक्त अन्न या खिसदी' के २ नाम हैं] ॥

६ गव्यम् (त्रि), 'गायके दूध, दही, घी, गोबर आदि' का १ नाम है ॥

७ गोविट् (= गोविष स्त्री), गोमयम् (न पु), 'गोबर' के २ नाम हैं ॥

८ करीषः (पु न), 'सूखे गोबर' अर्थात् 'गोहरी, गोहरा, गोहठा, उपला, कँहरा आदि' का १ नाम है ॥

९ दुग्धम्, क्षीरम् पयः (= पयस् । + गोरसः, ऊधस्थम्, सोमजम्, स्तन्यम् । ३ न), 'दूध' के ३ नाम हैं ॥

१० पयस्यम् (त्रि) 'दूधसे बने हुए दही, खोया, मक्खन, घी आदि पदार्थ' का १ नाम है ॥

११ द्रव्यम् (+ द्रव्यम्, त्रयम्, पञ्चलम् न), 'पतले दही' का १ नाम है ॥

१. मासराचामविस्त्रावा इति मुकुटः इति मा० दौ० ॥

२. अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने मूलरूपेणोपलभ्यते ॥

३. 'त्रयस्यम्' इति मुकुटः इति मा० दौ० ॥

४. तदुक्तं मैषज्यरसनावल्यां सप्तचत्वारिंशत्पृष्ठे चौ० सं० पुस्तकाक्षरमुद्रिते 'अन्नं पञ्चगुणे साध्यं विलेपी च चतुर्गुणे । मण्डश्चतुर्दशगुणे यवागूः षट्गुणेऽमसि ॥ अष्टाङ्गदशगुणे तोये यूषः शार्ङ्गधरेरितः ॥' इति ॥

- १ घृतमाख्यं हविः सर्पिर्नवनितं नवोद्धतम् ।
- ३ तत्तु हैयङ्गवोनं यद्धयोगोदोहोद्धतं घृतम् ॥ ५२ ॥
- ४ दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमणि गोरसः ।
- ५ तत्क्रं बुद्धश्चिन्मथितं पान्नाम्बुधाम्बु निजं नमः ॥ ५३ ॥
- ६ मण्डं दधिधवं मस्तु ७ पीयूषोऽभिनवं नमः ।

१ घृतम्, आख्यम्, हविः (= हविस् + हविष्यम्), सर्पिः (= सर्पिस् + न), 'घी' के ४ नाम हैं ॥

३ नवनितम्, नवोद्धतम् (३ न), 'मक्खन' के २ नाम हैं ॥

३ हैयङ्गवोनम् (न), 'नैनू' अर्थात् 'एक दिनके बासी दूधसे निकाले हुए मक्खन' का १ नाम है ॥

४ दण्डाहतम्, कालशेयम्, अरिष्टम् (३ न), गोरसः (पु), 'मथनीसे महे (मथन क्रिये) हुए गोरस' के ३ नाम हैं ॥

५ तक्रम्, उद्धितम् (+ उद्धितम्), मथितम् (३ न), 'चौथाई पानी, आधा पानी और बिना पानीवाले दही' के क्रमशः १—१ नाम हैं । ('धन्वन्तरिने 'दुग्ने पानीवाले दहीका 'श्वेतरसम्', आधे पानीवाले दहीका 'उद्धितम्', तिहाई पानीवाले दहीका 'तक्रम्' और बिना पानीवाले दहीका 'मथितम्' नाम है' ऐसा कहा है') ॥

६ मस्तु (न), मा० दी० के मतसे 'कपड़ेमें बांधकर निकाले हुए दहीके पानी' का और महे० के मतसे 'दहीकी छादही' (जमे हुए दहीकी, मलाई, उपरी भाग) का १ नाम है ॥

७ पीयूषः (+ पेयूषम् । पु । + न), 'थोड़े दिनकी या 'सात दिन तककी व्याई हुई गायके दूध' अर्थात् 'फेनुस' का १ नाम है ॥

१. तदुक्तं धन्वन्तरिणा—'दिगुणाम्बु श्वेतरसमदोदकमुद्धितम् ।

तत्क्रं त्रिमागभिन्नाम्बु केवलं मथितं स्मृतम्' ॥ १ ॥ इति ॥

२. 'पीयूषं सप्तदिवसावधिचीरे तथाऽघृते' (मेदि० पु० १८३ श्लो० ४१) इति मेदिन्युक्ते, तथैव विश्वकोषोक्तेश्च 'सप्त दिवसावधिप्रसूताया गोः पयसः 'पीयूष' संज्ञा; अतः परन्तु क्षीरा-दिसंज्ञैव । इत्युच्यते 'ऊषस्यं क्षीरं' स्याद् दुग्धं स्तन्यं पयश्च पीयूषम्' (अमि० रत्न० २।११९) इति 'पीयूष' शब्दस्य सामान्यतः क्षीरपययितामेवाहृत्यवधेयम् ॥

- १ अनशाया वुभुक्षा क्षुद् १ ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥
 ३ सपीतिः स्त्री तुल्यपानं ४ सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
 ५ उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो ६ जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥
 जेमनं क्लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ।
 ७ सौहित्यं तर्पणं वृत्तिः ८ फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥
 ९ कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।
 १० गोपे गोपालगोसङ्ख्यगोधुगाभीरवत्तवाः ॥ ५७ ॥

१ अनशाया, वुभुक्षा, क्षुद् (= क्षुध् । + क्षुधा, पसा । ३ स्त्री), 'भूक्ष' के ३ नाम हैं ॥

२ ग्रासः, कवलः (२ पु), 'ग्रास, कौर' के २ नाम हैं ॥

३ सपीतिः (स्त्री), तुल्यपानम् (न), 'साथमें पान करने' के २ नाम हैं ॥

४ सग्धिः (स्त्री), सहभोजनम् (न), 'साथमें भोजन करने' के २ नाम हैं ॥

५ उदन्या, पिपासा, तृट् (= तृष् । + तृषा, तृष्णा । ३ स्त्री), तर्षः (पु) 'प्यास' के ४ नाम हैं ॥

६ जग्धिः (स्त्री), भोजनम्, जेमनम् (+ जमनम्, जवनम् । २ न), क्लेहः (+ लेपः), आहारः, निघासः (+ निघसः), न्यादः (+ अभ्यवहारः पु, प्रत्यवसानम्, खादनम्, अशनम्, भक्षणम् । ४ पु), 'भोजन' के ७ नाम हैं ॥

७ सौहित्यम्, तर्पणम् (२ न), वृत्तिः (स्त्री), 'वृत्ति, अघाने' के ३ नाम हैं ॥

८ फेला (+ फेली, पिण्डोलिः । स्त्री), भुक्तसमुज्झितम् (न), 'आकर छोड़े हुए जूटे' के २ नाम हैं ॥

९ कामम्, प्रकामम्, पर्याप्तम्, निकामम्, इष्टम्, यथेप्सितम् (६ क्रि याविशेषण), 'इच्छानुसार, काफी, मतलबभर' के ६ नाम हैं ॥

१० गोपः, गोपालः, गोसङ्ख्यः, गोधुक् (= गोबुद् । + गोबुहः), आभीरः (+ अभीरः), गच्छवः (६ पु), 'अहीर, गोप, ग्वाला' के ६ नाम हैं ॥

- १ गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं २ द्वौ गवीश्वरे ।
 गोमान्गोमी ३ गोकुलं तु गोधनं स्याद् गवां व्रजे ॥ ५८ ॥
 ४ त्रिष्वशितङ्गवीनं तद् गावो यत्राशिताः पुरा ।
 ५ उक्षा भद्रो बलीवर्दः ऋषभा वृषभा वृषः ॥ ५९ ॥
 अनड्वान्सौरभेयो गौक्षकृष्णां संक्षितरीक्षकम् ।
 ७ गव्या गोत्रा गवां ८ वात्सधेन्योर्वात्सक्येभ्युके ॥ ६० ॥
 ९ वृषो महान्महोक्षः स्याद् १० वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ।
 ११ उत्पन्न उक्षा जातोक्षः १२ सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥

१ पादबन्धनम् (न), 'गाय, बैल, घाँ, गददे, जगद् वाँधे जाने घाले पशुओं' का १ नाम है ॥

२ गवीश्वरः, गोमान् (= गोमत्), गोमी (गोमिन् । ३ पु), 'साँड़' के ३ नाम हैं ॥

३ गोकुलम्, गोधनम् (२ न), 'गौओंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

४ आशितङ्गवीनम् (त्रि), गौओंके चराते या खिलानेके पुराने स्थान' का १ नाम है ॥

५ उक्षा (= उक्षन्) भद्रः, बलीवर्दः (+ बलीवर्दः, बलीवर्दः), ऋषभः, वृषभः, वृषः, अनड्वान् (= अनड्वह्), सौरभेयः, गौः (= गो । + शक्रः, शाक्रः, शाङ्करः, ककुक्षान् = ककुक्षत् । ९ पु), 'बैल' के ९ नाम हैं ॥

६ औक्षकम् (न), 'बैलोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

७ गव्या, गोत्रा (२ स्त्री), 'गायोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

८ वात्सकम्, धेनुकम् (२ न), 'बछवों तथा धेनुओं (नई व्याई हुई गायों) के झुण्ड' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

९ महोक्षः (पु), 'बड़े डीलवाले बैल' का १ नाम है ॥

१० वृद्धोक्षः, जरद्गवः, (२ पु), 'बूढ़े बैल' के २ नाम हैं ॥

११ जातोक्षः (पु), 'बछवेकी अवस्थाको छोड़कर जवान हुए बैल' का १ नाम है ॥

१२ तर्णकः (पु), 'शीघ्र पैदा हुए बछवे' का १ नाम है ॥

- १ शकृत्करिस्तु वत्सः स्याद्दम्भ्यवत्सतरो समौ ।
 २ आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः ४ षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥
 ५ स्कन्धदेशे त्वस्य बहः ६ सास्ना तु गलकम्बलः ।
 ७ स्यान्नस्तिस्तु नस्योतः ८ प्रष्ठवाङ् युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥
 ९ युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।
 १० अतति तेन तद्वाढास्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

- १ शकृत्करिः, वत्सः (२ पु), 'छोटे बछ्खे' के २ नाम हैं ॥
 २ दम्भ्यः, वत्सतरः (२ पु), 'जोतने के योग्य तैयार हुए बछ्खे के २ नाम हैं ॥
 ३ आर्षभ्यः (पु) 'साँड़ बनाने योग्य बछ्खे' का १ नाम है ॥
 ४ षण्डः (+ शण्डः), गोपतिः, इट्चरः (+ इत्वरः । ३ पु), 'स्कन्ध-
 च्छन्द घूमनेवाले साँड़' के ३ नाम हैं ॥
 ५ बहः (पु), 'बैलके कन्धे' का १ नाम है ॥
 ६ सास्ना (स्त्री), गलकम्बलः (पु), 'लार' अर्थात् गाय-बैलों के
 गलेमें लटकनेवाले चमड़े के २ नाम हैं ॥
 ७ नस्तिस्तु, नस्योतः (+ नस्तोतः । २ पु), 'नाथे हुए गौ आदि' के
 २ नाम हैं ॥
 ८ प्रष्ठवाङ् (= प्रष्ठवाह् । + पष्ठवाङ् = पष्ठवाह्), युगपार्श्वगः (२ पु),
 'पहले पहल बछ्खेको हलमें चलना सिखलानेके लिये जुआठमें बाँधे
 हुए काठ' के २ नाम हैं ॥
 ९ युग्यः, प्रासङ्ग्यः, शाकटः (३ पु), 'जुआठको ढोनेवाले बैल, दमन
 करने (हलमें चलना सिखलाने) के लिये पहले पहल कन्धे पर रखे हुये
 काठको ढोनेवाले बैल और गाड़ीको खींचनेवाले बैल' का क्रमशः
 १—१ नाम है ॥
 १० हालिकः, सैरिकः (२ पु), 'हलसे खोदे जानेवाले, हलको ढोने-
 वाले, हलवाहा (हलको चलानेवाला) हलमें चलनेवाले बैल' के २ नाम हैं ॥

१. 'गोपतिरित्चरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्कन्धदेशस्तु' इति 'स्कन्धदेशस्वरय' इति च पाठान्तरम् ॥

३. 'नस्तोतः पष्ठवाङ्' इति पाठान्तरम् ॥

- १ धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरन्धराः ।
- २ उभावैकधुरीणैकधुरावैकधुरावहै ॥ ६५ ॥
- ३ स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ।
- ४ माहेयी सौरभेयी गौरुस्त्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥
अर्जुन्यध्व्या रोहिणी स्याऽपदुत्तमा गोषुक्कनैचिकी ।
- ६ वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥
- ७ द्विहायनी द्विवर्षा गौरैकाब्दा त्येकहायनी ।

१ धूर्वहः धुर्यः, धौरेयः, धुरीणः, धुरन्धरः (५ पु), 'धुरा (भार) को ढोनेवाले बैल' के ५ नाम हैं ॥

२ एकधुरीणः, एकधुरः, एकधुरावहः (३ पु), 'सिर्फ एक तरफ (दहने या बायें) 'चलनेवाले बैल' के ३ नाम हैं ॥

३ सर्वधुरीणः, सर्वधुरावहः (भा० दी० । २ पु), 'दहने और बायें दोनों तरफ चलनेवाले बैल' के २ नाम हैं ॥

४ माहेयी (+ मही), सौरभेयी (+ सुरभिः), गौः (+ गो), उस्त्रा, माता (= मातृ), शृङ्गिणी, अर्जुनी, अध्व्या, रोहिणी (९ स्त्री), 'गाय' के ९ नाम हैं ॥

५ नैचिकी (+ नीचिकी । स्त्री), 'उत्तम गाय' का १ नाम है ॥

६ शबली, धवला (२ स्त्री), आदि ('कृष्णा, कपिला, पाटला; ३ स्त्री,) 'वर्ण' (रंग) आदि (प्रमाण और शरीर आदि) के भेदसे 'चितकबरी, धावर, आदि (काली, कपिल या कइल और पाटल या लाल,) 'गायों' का क्रमशः १—१ नाम है । ('प्रमाण भेदसे जैसे—'दीर्घा, ह्रस्वा, खर्वा (३ स्त्री), । शरीर-भेदसे जैसे—पिङ्गाक्षी, लम्बकर्णी, तीक्ष्णशृङ्गी, (३ स्त्री),') ।

७ द्विहायनी, द्विवर्षा (भा० दी०), एकाब्दा (भा० दी०), एकहायनी, चतुरब्दा (भा० दी०), चतुर्हायणी, त्र्यब्दा (भा० दी०), त्रिहायणी (८ स्त्री),

- चतुरव्दा चतुर्हायण्येवं ऽथव्दा विहायणी ॥ ६८ ॥
 १ वशा बन्ध्या २ऽवतोका तु स्रवद्गर्भा ३ऽथ सन्धिनी ।
 आकान्ता वृषभेणा ४ऽथ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥
 ५ कात्यायसर्पा प्रजने ६ ॐ प्रष्टौही बालगर्भिणी ।
 ७ स्यादचण्डी तु सुकरा ८ बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥
 ९ चिरप्रसूता वष्कयिणी—

‘दो वर्ष, एक वर्ष, चार वर्ष और तीन वर्षकी उम्रवाली गौ’ के क्रमशः १—२ नाम हैं ॥ (उपलक्षणसे मानवादि के छिप भी इन शब्दोंका प्रयोग होता है) ॥

१ वशा, बन्ध्या (+ वन्ध्या । १ स्त्री), ‘बाँझ (बच्चा नहीं पैदा करने-वाली) गौ आदि’ के २ नाम हैं ॥

२ अवतोका (+ वतोका), स्रवद्गर्भा (२ स्त्री), ‘अकस्मात् जिसका गर्भ गिर गया हो उस गौ आदि’ के २ नाम हैं ॥

३ सन्धिनी (स्त्री), वादी (साँड़के साथ संगम की) हुई गाय’ का १ नाम है ॥

४ वेहद् (= वेहत्), गर्भोपघातिनी (भा० दी० । + वृषोपगा । २ स्त्री), ‘साँड़के साथ संयोगकर गर्भको नष्ट की हुई गाय’ के २ नाम हैं ॥

५ कात्या (अन्य मतसे), उपसर्पा (२ स्त्री), ‘उठी हुई (साँड़के साथ मैथुन करनेकी इच्छा करनेवाली) ‘गाय’ के २ नाम हैं ॥

६ प्रष्टौही (+ पष्टौही), बालगर्भिणी (भा० दी० । २ स्त्री), ‘आँकर (पहले पहल गर्भ धारण की हुई), ‘गाय’ के २ नाम हैं ॥

७ अचण्डी, सुकरा (+ सुशकरी । २ स्त्री), ‘सूधी गाय’ के २ नाम हैं ॥

८ बहुसूतिः, परेष्टुका (२ स्त्री), ‘बहुत बच्चा पैदा की हुई गाय’ के २ नाम हैं ॥

९ चिरप्रसूता, वष्कयिणी (+ वष्कयणी, वष्कयणी । २ स्त्री) ‘बकेना (बहुत दिनों की ध्याई हुई) गाय’ के २ नाम हैं ॥

—१ धेनुः स्यान्नवसूतिका ।

२ सुव्रता सुखसंदोह्या ३ पीनोष्ठी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥

४ द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा ५ धेनुष्या बन्धके स्थिता ।

६ समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥

७ ऊधस्तु क्लीबमापीनं ८ समां शिवककीलकौ ।

९ न पुंसि दाम संदानं १० पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥

१ धेनुः, नवसूतिका (+ नवसूतिः । २ स्त्री), 'थोड़े दिनोंकी व्याई हुई गाय' के २ नाम हैं ॥

२ सुव्रता, सुखसंदोह्या (+ सुखसंदोह्या । २ स्त्री), 'विना झंझट किये दूही जानेवाली गाय' के २ नाम हैं । ('इसी तरह 'दुःखदोह्या, कटा (२ स्त्री), 'दुःख (मुश्किल) से दूही जानेवाली गाय' के २ नाम हैं') ॥

३ पीनोष्ठी, पीवरस्तनी (२ स्त्री), 'मोटे २ स्तनवाली गाय' के २ नाम हैं ॥

४ द्रोणक्षीरा, द्रोणदुग्धा (२ स्त्री), 'एक द्रोण (२५६ पल = १०२४ भर करीब १३ सेर तथा आयुर्वेदिक तौलसे १६ सेर) दूध देनेवाली गाय' के २ नाम हैं ॥

५ धेनुष्या (+ पीतदुग्धा । स्त्री), 'बंधक रक्खी हुई गाय' का १ नाम है ॥

६ समांसमीना (स्त्री), 'घनपुरही' (प्रतिवर्ष बच्चा देनेवाली) गाय' का १ नाम है ॥

७ ऊधः (= ऊधस्), आपीनम् (२ न), 'गायके थन' के २ नाम हैं ॥

८ शिवकः, कीलकः (२ पु), 'गौओंको बांधनेके खूँटे' के २ नाम हैं ॥

९ दाम (= दामन् न स्त्री), संदानम् (न), भा० दी० के मतसे 'नोय' अर्थात् 'दूहनेके समय गायोंके पैरको बांधनेवाली रस्सी' के और महे० के मतसे 'पगड़ा' के २ नाम हैं ॥

१० पशुरज्जुः, दामनी (+ बन्धनी । २ स्त्री), भा० दी० के मतसे 'पगड़ा' अर्थात् 'पशुको बांधनेकी रस्सी के और महे० के मतसे 'दँवरी' अर्थात् 'घान आदिकी दँवनीके समय अनेक पशुओंको बांधनेवाली रस्सी—जिसका एक छोर मेंह में लगे रहनेसे चारो ओर घूमा करता है'—के और अन्य आचार्योंके मतसे 'पशुओंके छान' अर्थात् 'पैर बांधनेकी रस्सी' के २ नाम हैं ॥

- १ वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।
 २ 'कुठरो दण्डविष्कम्भो ३ मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥
 ४ उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः ५ करभः शिशुः ।
 ६ करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ॥ ७५ ॥
 ७ अजा छागी ८ 'शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे ।
 ९ मेढोरभोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥
 १० उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।

१ वैशाखः, मन्थः, मन्थानः, मन्थाः (= मथिन्), मन्थनदण्डकः (+ खजका, छुब्धः । ५ पु), 'मथनीके डण्डे' के ५ नाम हैं ॥

२ कुठरः (+ कूटरः), दण्डविष्कम्भः (२ पु), 'जिसमें मथनीके डण्डेको बांधकर दही महा जाता है उस खम्भे आदि' के २ नाम हैं ॥

३ मन्थनी, गर्गरी (+ कलशी । २ स्त्री), 'कहूतरी' अर्थात् 'जिसमें दहीको महा जाता है उस पात्र' के २ नाम हैं ॥

४ उष्ट्रः, क्रमेलकः, मयः, महाङ्गः (+ दासेरकः, दाशेरः, दीर्घजङ्घः, दीर्घ-ओवः, रवणः, धूम्रकः, कण्टकाशनः । ४ पु), 'ऊँट' के ४ नाम हैं ॥

५ करभः (पु), 'ऊँटके तीन वर्षतकके उम्रवाले बच्चे' का १ नाम है ॥

६ शृङ्खलकः (पु), लकड़ीकी बनी हुई सिकड़ीसे बांधे हुए 'ऊँटके बच्चे' का १ नाम है ॥

७ अजा, छागी (२ स्त्री) 'बकरी, छेर' के २ नाम हैं ॥

८ शुभः (+ स्तभः, तुभः), छागः (छगः), वस्तः (+ वस्तः), छगलकः (+ छगलः), अजः (५ पु), 'बकरा, खरसी' के ५ नाम हैं ॥

९ मेढः (+ मेण्डकः), उरभ्र, उरणः, ऊर्णायुः, मेघः, वृष्णिः, एडकः, (+ डडुः, हुडः । ७ पु) 'भेंड़े' के ७ नाम हैं ॥

१० औष्ट्रकम्, औरभ्रकम्, आजकम् (३ न), 'ऊँटों, भेंड़ों और बकरी-के झुण्ड' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

१. 'कुठरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शुभच्छागवस्तच्छगलका' इति 'स्तभच्छागवस्तच्छगलका' इति पाठान्तरे ॥

- १ चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥
- २ वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥
- ३ विक्रेता स्याद्विक्रयिकः ४ क्रयविक्रयिकौ समौ ।
- ५ वाणिज्यं तु वणिज्या स्यादन्मूल्यं वन्नोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥
- ७ नीवी परिपणो मूलधनं ८ लाभोऽधिकं फलम् ।
- ९ परिदानं परीवर्त्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥

१ चक्रीवान् (= चक्रीवत्), बालेयः (+ बालेयः), रासभः, गर्दभः, खराः (+ क्रूरः, शङ्खकर्णः, वैशाखनन्दनः । ५ पु), 'गर्दहे' के ५ नाम हैं ॥

२ वैदेहकः, सार्थवाहः, नैगमः (+ निगमः), वाणिजः, वणिक् (= वणिज्), पण्याजीवः, आपणिकः, क्रयविक्रयिकः (८ पु), 'वनियाँ, व्यापारी' के ८ नाम हैं ॥

३ विक्रेता (= विक्रेत्), विक्रयिकः (२ पु), 'बेचनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ क्रयिकः, क्रयिकः (+ क्रेता = क्रेत् । २ पु), 'खरीददार' के २ नाम हैं ॥

५ वाणिज्यम् (न), वणिज्या (स्त्री), 'व्यापार' के २ नाम हैं ॥

६ मूल्यम् (न), वरनः, अवक्रयः (२ पु), 'कीमत, दाम' के ३ नाम हैं ॥

७ नीवी (+ नीविः । स्त्री), परिपणः, मूलधनम् (न) 'व्यापार-में लगाये हुए मूलधन' के ३ नाम हैं ॥

८ लाभः (पु), अधिकम्, फलम् (२ भा० दी० । २ न), 'मुनाफा, फायदा, लाभ' के २ नाम हैं ॥

९ परिदानम् (+ प्रतिदानम् । न), परीवर्त्तः (+ परिवर्त्तः) नैमेयः (+ वैमेयः), निमयः (+ विमयः । ३ पु), 'किसी पदार्थादिको बदल-बदल करने' के ४ नाम हैं ॥

- १ पुमानुपनिधिर्न्यासः २ प्रतिदानं तदर्पणम् ।
 ३ क्रये प्रसारितं क्रय्यं ४ क्रयं केतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥
 ५ विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं ६ क्रय्यादयस्त्रिषु ।
 ७ क्लीबे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥
 ८ विपणो विक्रयः ९ संख्याः सङ्ख्येये ह्यादश त्रिषु ।

१ उपनिधिः, न्यासः (+ निक्षेपः । २ पु), 'थाती, धरोहर रखने' के २ नाम हैं ॥

२ प्रतिदानम् (न), 'धरोहर (थाती), को वापस करने' का १ नाम है ॥

३ क्रय्यम् (त्रि), 'सौदा' अर्थात् 'ग्राहकोंको खरीदनेके लिये दूकानपर फैलाई हुई वस्तु' का १ नाम है ॥

४ क्रयम् (त्रि), 'खरीदने योग्य वस्तु' का १ नाम है ॥

५ विक्रेयम्, पणितव्यम्, पण्यम् (३ त्रि), 'बेचने योग्य वस्तु' के ३ नाम हैं ॥

६ 'क्रय्य आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

७ सत्यापनम् (+ सत्यापना स्त्री । न), सत्यङ्कारः (पु), सत्याकृतिः (स्त्री), 'साई, वयाना, पडशान्स, पेशगी' के ३ नाम हैं ॥

८ विपणः, विक्रयः (२ पु), 'बेचने' के २ नाम हैं ॥

९ 'एकः, द्वौ, त्रयः, ... नवदश' भा० द्वी० के मतसे 'एक, दो, तीन, ... नवदश (उन्नीस) संख्या' का, और 'एकः, द्वौ, त्रयः, ... अष्टादश' महे०, मुकु०, स्त्री० रवा० आदिके मतसे 'एक दो, तीन, ... अष्टादश तक संख्या' का वाचक क्रमशः १-१ शब्द है । ये (एक, द्वि, ...) शब्द गिने जानेवाले वस्तुके वाचक रहने-पर त्रिलिङ्ग होते हैं । ('जैसे—'एको ब्राह्मणः, एका ब्राह्मणी, एकं वस्त्रम्; द्वौ ब्राह्मण्यौ, द्वे ब्राह्मण्यौ, द्वे वस्त्रे; ...', इन वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्द क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' हैं । अत एव 'एक और द्वि' शब्दका भी क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग' में प्रयोग हुआ है । मूलमें 'द्वि' शब्द के अवधारणार्थक होनेसे सामानाधिकरण्य (एको ब्राह्मणः, द्वौ ब्राह्मणौ, त्रयो ब्राह्मणाः; एका ब्राह्मणी, द्वे ब्राह्मण्यौ, तिस्रो ब्राह्मण्यः

१ विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः सङ्ख्येयसङ्ख्ययोः ॥ ८३ ॥

एकं वस्त्रम्, द्वे वस्त्रे, त्रीणि वस्त्राणि;) से ही व्यवहार होता है; वैय-
धिकरण्य ('एको ब्राह्मणस्य, द्वौ ब्राह्मणयोः, त्रयो ब्राह्मणानाम्; एका ब्राह्म-
ण्याः, द्वे ब्राह्मण्योः, तिस्रो ब्राह्मणीनाम्; एकं वस्त्रस्य, द्वे वस्त्रयोः, त्रीणि वस्त्रा-
णाम्,) से व्यवहार नहीं होता है' । इसमें भी 'एकः' द्वौ, त्रयः, चत्वारः'
अर्थात् 'एक, द्वि, त्रि और चतुर्' (एक, दो, तीन और चार संख्याके वाचक)
शब्दोंके तीनों लिङ्गोंमें भिन्न २ रूप होते हैं और 'पञ्च, षट्, ...अष्टादश' अर्थात्
'पञ्चन्' षष्,अष्टादशन्' (पांच, छः,अठारह संख्याके वाचक)
शब्दके रूप तीनों लिङ्गोंमें एक समान होते हैं । ('क्रमशः उदाहरण ।
पहला (तीनों लिङ्गोंमें भिन्न रूपवाले शब्द) जैसे—'एको ब्राह्मणः, एका ब्राह्मणी,
एकं वस्त्रम्, द्वौ ब्राह्मणौ, द्वे ब्राह्मण्यौ, द्वे वस्त्रे, त्रयो ब्राह्मणाः, तिस्रो ब्राह्मण्यः,
त्रीणि वस्त्राणि, चत्वारो ब्राह्मणाः, चतस्रो ब्राह्मण्यः, चत्वारि वस्त्राणि' इन वाक्योंमें
'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्दके क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक
लिङ्ग' होनेसे 'एक, द्वि, त्रि और चतुर्' शब्दोंका क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग
और नपुंसकलिङ्ग' में प्रयोग हुआ है' । दूसरा (तीनों लिङ्गोंमें समान लिङ्गवाले
शब्द) जैसे—'पञ्च ब्राह्मणाः, पञ्च ब्राह्मण्यः, पञ्च वस्त्राणि,'; इन
वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्दके क्रमशः 'पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और
नपुंसकलिङ्ग' होनेपर भी 'पञ्चन्' शब्दका प्रयोग तीनों लिङ्गोंमें समान ही हुआ
है, भिन्न २ नहीं; इसी तरह 'षट्, सप्तन्, ...अष्टादश' (छ, सात,
अठारह' संख्याके वाचक) शब्दोंके भी तीनों लिङ्गोंमें समान ही रूप होते हैं ।
विशेषः—ये सब लिङ्ग भेद केवल संस्कृतमें ही होते हैं, हिन्दी आदिमें नहीं' ॥
१ 'एकोनविंशतिः, विंशतिः,पराद्धम्' ('उन्नीस, बीस;पराद्ध'

१. 'दशा (अष्टादशा) न्तसंख्यावाचिनः शब्दाः प्रायः संख्येयवचना एव, क्वचित्तेषां
संख्यावाचकत्वमपि । यथा—'द्व्येकयोदिवचनैकवचने' (पा० सू० १।४।२२) इति 'बहुपु
बहुवचनम्' (पा० सू० १।४।२१) इति च । 'कयोर्द्वयाः, केषां बहुनाम्' (पात०
भाष्य १।४।२१) इति पातञ्जलभाष्यात्क्वचिद्वृत्तावपि; किन्तु सत्यपि प्रयोगे तत्रापि
(अवृत्तावपि) संख्येयगतदिखादि संख्यायामारोप्य संख्यावाचकेभ्योऽपि दिवचनाच्चेव,
उक्तभाष्यानुरोधादिति सर्वतन्त्रस्वतन्त्राः काशीनाथशास्त्रिचरणाः ॥

१ सङ्ख्यार्थे द्विवचस्वे स्तनस्तासु चानवतेः स्त्रियः ।

२ पङ्क्तेः शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

संख्याके वाचक) शब्द संख्या (गिनती) और संख्येय (गिनी जानेवाली वस्तु) के अर्थमें प्रयुक्त होनेपर एकवचन ही होते हैं । ('क्रमशः उदाहरण । पद्मता (संख्या अर्थमें) जैसे—'ब्राह्मणानां विंशतिः, शतम्, सहस्रंवा' इस वाक्यमें 'ब्राह्मण' शब्दके बहुवचन रहनेपर भी 'विंशति, शत, सहस्र,' शब्दका एकवचनमें ही प्रयोग हुआ है । दूसरा (संख्येय अर्थात् गिन्ने योग्य वस्तुके अर्थमें) जैसे—'एकोनविंशतिः, शतं, सहस्रं, लक्षं वा ब्राह्मणाः,' इस वाक्यमें 'ब्राह्मण' शब्द के बहुवचन होनेपर भी 'एकोनविंशति, शत, सहस्र, लक्ष,' शब्दों का 'एकवचन' में ही प्रयोग हुआ है; बहुवचनमें नहीं) ॥

१ 'एकोनविंशतिः,पराद्धम्' ('उन्नीस'.....पराद्ध'—तक संख्याके वाचक) शब्द संख्याके अर्थमें 'द्विवचन और बहुवचन' भी होते हैं । ('जैसे—'द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः; एकं शतम्, द्वे शते, त्रीणि शतानि;' इन वाक्योंमें 'विंशति और शत' शब्दका तीनों वचन (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन) में प्रयोग हुआ है । इसी तरह अन्यान्य (एकविंशति, द्वाविंशति, ...शत, सहस्र, ...पराद्ध) शब्दोंके विषयमें भी जानना चाहिये') ॥

२ 'विंशतिः,नवनवतिः' (बीस, ...निन्नानवे' तक संख्या-वाचक) शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग हैं । (जैसे—विंशत्या पुरुषैः कृतम्, सप्ततिर्वस्त्राणि, नवत्या नदीनां जलम्,' इन वाक्योंमें 'पुरुष, वस्त्र और नदी' शब्दके क्रमशः 'पुंलिङ्ग, नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग होनेपर भी विंशति (बीस), सप्तति (सत्तर), नवति, (नववे)' शब्दोंका प्रयोग केवल 'स्त्रीलिङ्ग' में ही हुआ है, अन्य लिङ्गों (नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग) में नहीं' ॥

३ पङ्क्तिः (स्त्री), शतम्, सहस्रम् (२ न), आदि ('आदि पदसे 'युतम् (न पु), लक्षम् (न स्त्री), प्रयुतम् (न पु), कोटिः (स्त्री), अर्बुदम् (न पु), अब्जम् (+ वृन्दम्), खर्वम्, निखर्वम्, महापक्षम् (+ महा-व्युजम्), शङ्कुः (पु स्त्री), जलधिः (+ वार्द्धिः, वारिधिः, । पु),

१ यौतवं द्रुवयं पाठ्यमिति मानार्थकं त्रयम् ।

अन्त्यम्, मध्यम्, परार्द्धम् (शेष न), का संग्रह है), 'दहाई (दश), सैकड़ा और हजार आदि (आदिसे 'दश हजार' व्याख्य, दश लाख, करोड़, दश करोड़, अरब, दश अरब, खर्ब, दश खर्ब, नील, दश नील, पद्म, दश पद्म, शङ्ख, दश शङ्ख) संख्या (गिनती) का क्रमशः १-१ नाम है । ये क्रमशः उत्तरोत्तर (पहलेकी अपेक्षा दूसरे) दशगुने होते हैं । (जैसे—दश पङ्क्ति = शतम् (सौ), दश शत = सहस्रम् (हजार), इत्यादि समझना चाहिये) ॥

१ यौतवम् (+ पौतवम्), द्रुवयम्, पाठ्यम्, मानम् (भा० दी० । ४ न), 'नापना, तौलना, प्रमाण' के ४ नाम हैं । ('यह 'तुला (तराजू), अङ्गुलि (हाथ, फूट, गज, बाँस आदि), प्रस्थ (पौवा, सेर, पसेरी आदि) के भेदसे तीन प्रकार' का होता है; उनमेंसे १-१ का क्रमशः 'ठन्मानम्, परिमाणम्, प्रमाणम्, (३ न)' यह १-१ नाम है । 'हेमचन्द्राचार्यने तो

१. तदुक्तं मात्करीयलीलवत्याम्—

'एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः ।

अर्बुदमब्जं खर्वनिखर्वमहापद्मशङ्खवस्तस्मात् ॥ १ ॥

अक्षयश्चान्त्यं मध्यं परार्द्धमिति दशगुणोत्तरं संज्ञाः ।

संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैः ॥ २ ॥

क्षी० स्वा० तु स्वध्याख्यायां प्रयुत-लक्ष'शब्दयोः, 'अर्बुद-कोटि'शब्दयोश्च परस्पर पर्यायितां 'अन्त्यं मध्यं परार्द्धम्' इत्यत्र 'मध्यम् अन्त्यं परार्द्धम्, इति व्यत्यासं चाहुस्तथा—

'एकदशशतसहस्राण्ययुतं प्रयुताख्यलक्षमथ नियुतम् ।

अर्बुदकोटिन्यर्बुदपदमं खर्व निखर्वमिति दशभिः ॥ १ ॥

गुणानाम्हावशकू समुद्रमध्यान्तमथ परार्द्धं च ।

स्वहृतं परार्द्धमिति तत्स्वहृतं पूर्यते संख्या ॥ २ ॥ इति ॥

पतद्विषये मतान्तरदिग्भूभिः चतुर्वर्गचिन्तामणेर्दानखण्डस्य १२८ पृष्ठे हेमचन्द्राचार्यविरचितेऽभिधानचिन्तामणौ (३ । ५३७—५३८) च द्रष्टव्यम् ॥

२. तदुक्तम्—

ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं परिमाणं तु सर्वतः ।

आयामस्तु प्रमाणं स्यात्संख्या भिन्ना तु सर्वतः ॥ १ ॥ इति ॥

- मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थौर्गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥
 २ ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री ३ पलं कर्षचतुष्टयम् ।
 ४ सुवर्णविस्तौ हेमोऽक्षे ५ कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥
 ६ तुला स्त्रियां पलशतं ७ भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।
 ८ आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

चौतवम्, दुवदम्, पाच्यम्, (३ न) 'तराजूसे तौलने' का, 'सेर-पौवा, छटाक आदिसे तौलने' का, और 'हाथ, अङ्गुल, गज, फूट आदिसे नापने' का क्रमशः १-१ नाम है' ऐसा कहा है') ॥

१ आद्यमाषकः (पु), पांच गुञ्जा (रत्ती)' अर्थात् 'एक आना भर' का १ नाम है ॥

२ अक्षः (पु), कर्षः (पु न), 'सोलह आद्यमाषक (आनाभर)' अर्थात् 'एक रुपया भर' के २ नाम हैं ॥

३ पलम् (ल), 'चार कर्ष (हाथ) भर' का १ नाम है ॥

४ सुवर्णः (+ न) विस्तः (२ पु), 'एक मोहर' अर्थात् 'अस्सी रत्ती भर या १६ आने भर सुवर्ण' के २ नाम हैं ॥

५ कुरुविस्तः (पु), 'एक पल (चार मोहर भर या तीन सौ बीस रत्ती भर) सुवर्ण' का १ नाम है । (उपचारसे सुवर्णसे भिन्न अर्थमें भी 'पल,' शब्दोंका प्रयोग होता है) ॥

६ तुला (स्त्री), 'सौ पल' अर्थात् '४०० रुपया भर या नम्बरी एक पसेरी भर' का १ नाम है ॥

७ भारः (पु), 'बीस तुला' अर्थात् '२० पसेरी या ढाई मन' का १ नाम है । ('यही एक आदमीका बोझ होता है') ॥

८ आचितः (पु । + न) 'दश भार अर्थात् '२५ मन' का १ नाम है । यह एक गाड़ीका बोझ होता है ॥

१. तदुक्तमभिधानचिन्तामणौ हेमचन्द्राचार्यपादैः—

'तुण्डैः पौतवं मानं द्रव्यं कुडवादिभिः' पाठ्यं इत्यादिभिः—' इति १।५४७ ॥

१ कार्षापणः कार्षिकः स्यात् २ कार्षिके ताम्रिके पणः ।

४ अस्त्रियाढकद्रोणौ स्यारी वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥

'कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।

१ कार्षापणः, कार्षिकः (१ पु), 'रूपये' के २ नाम हैं ॥

२ पणः (पु) 'पैसे' का १ नाम है । ('श्लो० ८५ से यहाँ तक 'तुल्यमान' कहा गया, पड़ते (१:१:८३-८७) में 'अङ्गुलिमान' कह चुके हैं; अब क्रम-ब्राम 'प्रस्थमान' कह रहे हैं') ॥

३ आढकः, द्रोणः (२ पु न), स्यारी (+ स्यारः पु । स्य), वाहः, निकु-
ञ्चकः, कुडवः (+ कुटपः मुकु०; कुडपः), प्रस्थः (४ पु), इत्यादि (मानो,
भञ्जिका, प्रवर्तः, सूर्यः, ...), 'आढक आदि तौल-विशेष' का क्रमशः १-१
नाम है । ('इसका सविस्तर वर्णन' टिप्पणी और चक्र में स्पष्ट है') ॥

१. 'कुटपः' इत्यपीति मुकुटः इति मा० दी० ॥

२. शाङ्गधरसंहितायां तुल्यमानविवरणं विस्तरतो निर्दिष्टमन्त्रं प्रदर्शयते —

'न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां ज्ञायते कश्चित् ॥

अतः प्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया ।

असरेणुः कुपे प्रोक्तः त्रिशता परमाणुभिः ॥ १ ॥

असरेणुस्तु पञ्चायनाम्ना वंशी निगद्यते ।

बाह्यान्तरगते मानौ यस्सूक्ष्मं दृश्यते रजः ॥ २ ॥

तस्य त्रिशचतस्रो भागः परमाणुः स कथ्यते ।

बह्यान्तरगतेः सूर्यकरैर्वंशी विज्ञेयते ॥ ३ ॥

बह्वंशीभिर्मरीचि स्यात्ताम्रिः बह्मिस्तु राजिका ।

तिसृषी राजिका मधु सर्षपः प्रोच्यते कुपे ॥ ४ ॥

यवोऽष्टसर्षपैः प्रोक्तो गुग्गुला स्यात्तच्चतुष्टयम् ।

बह्मिस्तु रश्मिकाभिः स्थान्माषको हेमभान्यको ॥ ५ ॥

मासेश्चतुर्भिः क्षाणः स्याद्वरणः स निगद्यते ।

टङ्कः स एव कथितस्तद्द्वयं कोल उच्यते ॥ ६ ॥

क्षुद्रको बटकश्चैव द्रवणः स निगद्यते ।

कोलद्वयं च कर्षं स्यात्स प्रोक्तः पाणिमानिका ॥ ७ ॥

अथः पित्तुः पाणितलं किञ्चित्पाणिश्च तिन्दुकम् ।

विहाकपदकं चैव तथा बोडशिका मया ॥ ८ ॥

करमध्यं हंसपदं सुवर्णं कवलग्रहः ।
 उदुम्बरं च पर्यायैः कर्षं एव निगद्यते ॥ ९ ॥
 स्यात्कार्षाभ्यामर्द्धपलं शुक्तिरष्टमिका तथा ।
 शुक्तिभ्यां च पलं ज्ञेयं मुष्टिरात्रं चतुर्थिका ॥ १० ॥
 प्रकुञ्जः षोडशो बिल्वं पलमेवात्र कीर्यते ।
 पलाभ्यां प्रसृतिर्ज्ञेया प्रसृतश्च निगद्यते ॥ ११ ॥
 प्रसृतिभ्यामक्षलिः स्यात्कुडवोऽंशरावकः ।
 अष्टमानं च स ज्ञेयः कुडवाभ्यां च मानिका ॥ १२ ॥
 शरावोऽष्टपलं तद्वज्रैश्च मत्र विचक्षणैः ।
 शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाऽऽकम् ॥ १३ ॥
 माजनं कंसपात्रं च चतुःषष्टिपलं च तत् ।
 चतुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशो नल्वणीर्मणः ॥ १४ ॥
 उन्मानश्च घटो राशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञकाः ।
 द्रोणाभ्यां शूर्पङ्गुभ्यो च चतुष्पष्टिशरावकाः ॥ १५ ॥
 शूर्पाभ्यां च भवेद् द्रोणी वाही गोणी च सा स्मृता ।
 द्रोणीचतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभिः ॥ १६ ॥
 चतुःसहस्रपलिका षण्णवत्यधिका च सा ।
 पलानां दिसहस्रं च भारः एकः प्रकीर्तितः ॥ १७ ॥
 तुला पलशतं ज्ञेया सर्वत्रैवैष निश्चयः । इति ।

माषादि स्वार्यन्तं मानं श्लोकेनैकेनोपसंहरति—

माषटक्काक्षबिल्वानि कुडवः प्रस्थमाढकम् ॥

राशिर्गोणी खारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणाः । इति च शाङ्ग० सं० १।१।१४-३३

तेनैवोक्तरीत्या मागधमानमुक्त्वा कालिङ्गमानमुक्तम् । तद्यथा—

‘यवो द्वादशभिर्गौरसप्तपैः प्रोच्यते बुधैः ।

यवद्वयेन गुञ्जा स्यात्त्रिगुञ्जो बल्ल उच्यते ॥ १ ॥

माषो गुञ्जामिरष्टाभिः सप्तभिर्वा भवेत्क्वचित् ।

स्याच्चतुर्माषकैः शाणः स निष्कष्टङ्क एव च ॥ २ ॥

गद्याणो माषकैः षड्भिः कर्षः स्याद्दशमाषकः ।

चतुष्कपैः फलं प्रोक्तं दशशाणमितं बुधैः ॥ ३ ॥

चतुष्पलैश्च कुडवं प्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः’ ॥ इति—

पतयोः (मागध-कालिङ्गमानयोः) मागधमानस्य प्राशस्त्यं निर्दिशति—

‘कालिङ्गं मागधं चेति द्विविधं मानमुच्यते ।

कालिङ्गान्मागधं श्रेष्ठं मानं मानविदो विदुः’ ॥ इति च शाङ्ग० सं० १।१।३९-४

अथ तुल्यमानबोधकचक्रम् ।					
अथ मागधमानम् ।					
१	१ परमाणुः	३६ त्रसरेणुः	१२	२ शुक्ता	१ पलम् (४ मरी)
२	३० परमाणवः	१ त्रसरेणुः	१४	२ पले	१ प्रसृतिः
३	६ त्रसरेणवः	१ मरीचिः	१५	२ प्रसृती	१ कुडवः (३ सेर)
४	६ मरीचयः	१ राजिका(राई)	१६	२ कुडवौ	१ मानिका (३ सेर)
५	३ राजिकाः	१ तर्षपः(सरसो)	१७	२ मानिके	१ प्रस्थः (१ सेर)
६	८ तर्षपाः	१ यवः (जौ)	१८	२ प्रस्थाः	१ आढकः
७	४ यवाः	१ गुञ्जा (रत्तो)	१९	४ आढकाः	१ द्रोणः
८	६ गुञ्जाः	१ माषः (मासा)	२०	२ द्रोणौ	१ शूर्पः
९	४ माषाः	१ शणः	२१	२ शूर्पौ	१ द्रोणी
१०	२ शणौ	१ कोळः	२२	४ द्रोण्यः	१ खारी
११	२ कोलौ	१ कर्षः (रुपया)	२३	२००० पलानि	१ भारः (२३ मन)
१२	२ कर्षौ	१ शुक्तिः	२४	१०० पलानि	१ तुला(पसेरी=५५सेर)
अथ कलिङ्गमानम् ।					
१	११ इवेतसर्षपाः	१ यवः	६	६ माषाः	१ गद्याणः (३ तोळा)
२	२ यवौ	१ गुञ्जा	७	१० माषाः	१ कर्षः (१ मरी)
३	२ गुञ्जाः	१ वल्लः	८	४ कर्षाः	१ पलम्
४	८ वा ७ गुञ्जाः	१ माषः (मासा)	९	४ पलानि	१ कुडवः
५	४ माषाः	१ शणः	शेषं सर्वं मागधमानबोधकम् ।		

देशादिभेदेनैतन्मानस्य विविधा भेदाः सन्ति । ते चात्र विस्तारमयात्रोच्छिखितास्तद्विदुः-
 क्षुमिः 'मनुस्मृतौ' (८।१३१-१३७), याज्ञवल्क्यस्मृतौ (१।३६२-३६४), चतुर्वर्गविन्यामणौ
 (हेमाद्रौ) दानखण्डे (५० १२६-१३०), विष्णु-कात्यायन-नारद-अगस्ति-विष्णुपुत्र-जीवि-
 ष्वपुराणविष्णुधर्मोत्तर-बराहपुराण-पद्मपुराण-गोपथब्राह्मण-स्कन्दपुराणोक्ता मानभेदा द्रष्टव्याः ।

- १ पादस्तुरीयो भागः स्यादंशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥
- २ द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ।
हिरण्यं द्रविणं शुग्ममर्थरैविभवा अपि ॥ ९० ॥
- ३ * स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ।
- ४ ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं रुप्यं तद्वयमाहृतम् ॥ ९१ ॥
- ५ गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ।
- ६ शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागः—

१ पादः (पु), 'चौथाई भाग' का १ नाम है ॥

२ अंशः, भागः, वण्टकः (३ पु), 'भाग, हिस्सा' के ३ नाम हैं ॥

३ द्रव्यम्, वित्तम्, स्वापतेयम्, रिक्थम्, ऋक्थम्, धनम्, वसु, हिरण्यम्, द्रविणम्, शुग्मम् (१० न), अर्थः, राः (= रै । + पु स्त्री), विभवाः (३ पु), 'धन' के १३ नाम हैं ॥

४ कोशः (+ कोषः । पु), हिरण्यम् (न), 'सोना-चांदी' अर्थात् 'सिक्का बने हुए और बिना सिक्का बने हुए सोना-चांदीमात्र' के २ नाम हैं ॥

५ कुप्यम् (न), 'सोना-चांदीसे भिन्न तांबा आदि धातु' का १ नाम है ॥

६ रुप्यम् (न), 'सिक्का बने हुए सोना, चांदी, तांबा, गिल्टी आदि' का १ नाम है । (सोना जैसे—असर्फी गिन्नी आदि । चांदी जैसे—रुपया, अठन्नी, आदि । तांबा जैसे—पैसा, धेला, पाई आदि । गिल्टी जैसे—चवन्नी, दुअन्नी, एकन्नी) ॥

७ गारुत्मतम्, मरकतम् (२ न), अश्मगर्भः, हरिन्मणिः (२ पु), 'पद्मा या मरकत मणि' के ३ नाम हैं ॥

८ शोणरत्नम् (न), लोहितकः, पद्मरागः (२ पु) 'पद्मराग मणि, लाल' के ३ नाम हैं ॥

—१ अथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥

मुक्ताऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुत्रपुंसकम् ।

३ रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥

४ स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।

१ मौक्तिकम् (न), मुक्ता (स्त्री), 'मोती' के २ नाम हैं ॥

२ विद्रुम (पु), प्रवालः (पु न), 'मूँगे' के २ नाम हैं ॥

३ रत्नम् (न), मणिः (+ मणी । पु स्त्री), 'रत्न, मणि' अर्थात् 'पद्मा, लाल, हीरा, मोती आदि जवाहरात' के २ नाम हैं । ('सोना १, चाँदी २, मोती ३, लाजावर्त ४ और मूँगा ५, अथवा—'सोना १, हीरा २, नीलमणि ३, पद्मराग (लाल) ४ और मोती ५, ये 'पञ्चरत्न' हैं । मोती १, सोना २, वैदूर्यमणि (सूर्यकान्त) ३, पद्मरागमणि (लाल) ४, पुष्कराज ५, गोमेदमणि ६, नीलमणि ७, पद्मा ८ और मूँगा ९, ये नव 'महारत्न' हैं । 'हीरा १, मोती २, सोना ३ चाँदी ४, चन्दन ५, शङ्ख ६, चर्म ७ और वस्त्र ८, ये आठ 'रत्नकी जातियाँ' हैं') ॥

४ स्वर्णम् , सुवर्णम् , कनकम् , हिरण्यम् , हेम (= हेमन्), हाटकम् ,

१. तदुक्तम्—

'सुवर्णं रजतं मुक्ता राजावर्तं प्रवालकम् ।

रत्नपञ्चकमाख्यातं शेषं वस्तु प्रचक्षते ॥' १ ॥ इति ॥

अथवा—

'कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ।

पद्मानि पञ्चरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः' ॥ १ ॥ इति ॥

२. तदुक्तम्—

'मुक्ताफलं हिरण्यं च वैदूर्यं पद्मरागकम् ।

पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुडं तथा ॥ १ ॥

प्रवालशुक्रान्धुक्तानि महारत्नानि वै नव' ॥ इति ॥

३. तदुक्तं वाचस्पतिना—

'हीरकं मौक्तिकं स्वर्णं रजतं चन्दनानि च ।

शङ्खधर्मं च वस्त्रं चेत्यष्टौ रत्नस्य जातयः' ॥ १ ॥ इति ॥

तपनीयं^१ शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्तुरम् ॥ ९४ ॥

चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।

रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥

१ अलङ्कारसुवर्णं यच्छुद्धीकनकमित्यदः ।

२ दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥

३ रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामयः ताम्रकम् ।

शुक्लं म्लेच्छमुखं द्रव्यप्रवरिष्टोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥

तपनीयम्, शातकुम्भम् (शातकौम्भम्),^१ गाङ्गेयम्, भर्म (= भर्मन् । + भर्मः = भर्म पु), कर्तुरम् (+ कर्तुरम्), चामीकरम्, जातरूपम्, महारज-
तम्, काञ्चनम्, रुक्मम्, कार्तस्वरम्, जाम्बूनम् (१८ न), अष्टापदः
(पु न । + कलधौतम्, अर्जुनम्, कल्याणम्, भूतम् ४ न...), 'सुवर्ण' के
१९ नाम हैं ॥

१ शृङ्गीकनकम् (+ शृङ्गी स्त्री, शृङ्गि = शृङ्गि, कनकम् ; १ न । न),
'भूषण बने हुए सोने' का १ नाम है ॥

२ दुर्वर्णम्, रजतम्, रूप्यम् ; खर्जूरम् (+ खर्जूरम्), श्वेतम् (+ कल-
धौतम्, तारम् ; हंस, चन्द्रमा और कुमुदके पर्यायवाचक सब शब्द । ५ न),
'चांदी' के ५ नाम हैं ॥

३ रीतिः (+ रीति, रिरी, रीरी । स्त्री), आरकूटः (पु न), 'पीतल' के
२ नाम हैं ॥

४ ताम्रकम् (+ ताम्रम्), शुक्लम् (+ शुक्लम्), म्लेच्छमुखम्,
द्रव्यम्, वरिष्टम्, उदुम्बरम् (+ औदुम्बरम्, रक्तम् । १ न), 'तांबा' के १
नाम है ॥

१. 'शातकौम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्तुरम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. गङ्गाया अपत्यं गाङ्गेयम् । तदुक्तं वायुपुराणे—

‘यं गर्भं सुषुवे गङ्गा पावकादीप्ततेजसम् ।

तदुत्वं पर्वते न्यस्तं हिरण्यं समपद्यत’ ॥ १ ॥ इति ॥

३. तदुक्तम्—‘तीरमृत्तदसं प्राप्य मुखवायुविशोषिता ।

जाम्बूनदास्यं भवति सुवर्णं सिद्धभूषणम्’ ॥ १ ॥ इति ॥

- १ लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।
अश्मसारोऽथ मण्डूर^१ सिंहाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥
- २ सर्वं च तैजसं लोहं^२ विकारस्त्वयसः कुशी ।
- ५ क्षारः काचोऽथ चपलो रसः सूतश्च^३ पारदे ॥ ९९ ॥
- ७ गवलं माहिषं शृङ्गमभ्रकं गिरिजामले ।

१ लोहः (+ लौहः । पु न), शस्त्रकम् (+ शस्त्रम्), तीक्ष्णम्, पिण्डम्, कालायसम् (+ कुष्णायसम्, कृष्णामिषम्), अयः (= अयस् । ५ न), अश्मसारः (+ गिरिसारम्, शिलासारम् । पु । + न), 'लोहे' के ७ नाम हैं ॥

२ मण्डूरम्, सिंहाणम् (+ सिंहाणम्, सिंघानम्, सिङ्घाणम् । २ न), 'मण्डूर' अर्थात् 'लोहेकी मैल' के २ नाम हैं ॥

३ लोहम् (+ लौहम् । न), 'सब तरह के धातु (तैजस पदार्थ)' का १ नाम है । ('सुवर्ण १, चाँदी २, तौबा ३, पीतल ४, काँसा ५, रौंसा ६, सीसा ७ और लोहा ८, ये आठ 'लोहेके भेद' होते हैं') ॥

४ कुशी (स्त्री), लोहेके बने हुए हथियार, बर्तन आदि वस्तु या फार' का एक नाम है ॥

५ क्षारः, काचः (२ पु), 'काँच' के २ नाम हैं ॥

६ चपलः, रसः^४, सूतः, पारदः (+ पारतः । ४ पु), 'पारा' के ४ नाम हैं ॥

७ गवलम् (न), 'भैंसे की सींग' का १ नाम है ॥

८ अभ्रकम्, गिरिजामलम् (+ गिरिजम्, अमलम् । २ न), 'अभ्रक' के २ नाम हैं ॥

१. सिंघानमपि' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पारते' इति पाठान्तरम् ॥

३. तदुक्तम्—'सुवर्णं रजतं ताम्रं रीतिः कांस्यं तथा त्रपु ।

सीसं कालायसं चैवमष्टौ लोहानि चक्षते' ॥ १ ॥

४. पारतस्तु मनाक् पाण्डुः सूतस्तु रहितो मलात् ।

पारदस्तु मनाक् शीतः सर्वे तुल्यगुणाः स्मृताः' ॥ १ ॥

इति श्रद्धार्णवोक्तभेदाविवक्षयोक्तिरित्यवधेयम् ॥

१ स्रोतोञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥

२ तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।

३ कर्परी^१ दार्विका काथोद्भवं तुत्थं^४ रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥

रसगर्भं ताक्ष्यशैलं—

१ स्रोतोञ्जनम्, सौवीरम्, कापोताञ्जनम् (+ कापोतम्), यामुनम् (४ न), 'सुमी' के ४ नाम हैं ॥

२ तुत्थाञ्जनम् (+ तुत्थम्), शिखिग्रीवम्, वितुन्नकम्, मयूरकम् (४ न), 'तूतिया' के ४ नाम हैं ॥

३ कर्परी, दार्विका (२ स्त्री), तुत्थम् (+ तुन्नम् । न), 'घिसकर तैयार किये हुये अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

४ रसाञ्जनम्, रसगर्भम्, ताक्ष्यशैलम् (३ न), 'रसाञ्जन' अर्थात् 'नेत्रमें लगानेके अञ्जन-विशेष'के ३ नाम हैं । ('महे० के मतसे 'तुत्थाञ्जनम्', कर्परी' 'तूतिया' के ५ नाम और 'रसाञ्जनम्', दारुहल्दीके काथ (काढा) के समभाग बकरीके दुधमें तूतियाको घिसकर तैयार किये हुए अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं । स्त्री० स्वा० के मतसे 'तुत्थाञ्जनम्', 'तूतिया' के ५ नाम और 'दार्विकाथोद्भवम्, तुत्थरसाञ्जनम्', ४ नाम (भा० दी० के कथनानुसार ५ नाम) द्वितीय अर्थमें हैं । धन्वन्तरि और हेमचन्द्राचार्यके^२ तो भिन्न ही क्रम हैं') ॥

१. 'दार्विकाकाथोद्भवं तुत्थरसाञ्जनम्' इति स्त्री० स्वा०, 'दार्विकाकाथोद्भवं तुत्थं रसाञ्जनम्' इति महे० सम्मतः पाठः, मूलस्थो भा० दी० सम्मतः पाठः ॥

२. तथा च धन्वन्तरिः—

'अञ्जनमेकं कुण्णसौवीरं स्यात्सुवीरजम् । कापोतकं यामुनं च स्रोतोऽञ्जनमुदाहृतम् ॥१॥ इति॥

तदुक्तं हेमचन्द्राचार्यैरभिधानचिन्तामणौ—

'अथ तुत्थं शिखिग्रीवं तुत्थाञ्जनमयूरके । मृषातुत्थं काश्यनीलं हेमतारं वितुन्नकम् ॥ १ ॥

स्यात्तु कर्पूरकातुत्थममृतासङ्गमञ्जनम् । रसगर्भं ताक्ष्यशैलं तुत्थे दार्वीरसोद्भवे ॥ २ ॥

इति अमि० चिन्ता० ४।११८-११९ ॥

—१ गन्धाश्मनि तु 'गन्धिकः ।

सौगन्धिकश्च २ चक्षुष्याकुल्यान्यौ तु कुलस्थिका ॥ १०२ ॥

३ रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पुष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।

४ पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके ॥ १०३ ॥

५ गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।

६ बोल्लगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥

७ हिण्डीरोऽम्बिकफः फेनः ८ सिन्दूरं नागसंभवम् ।

९ नागसीसकयोगेष्टवप्राणि—

१ गन्धाश्मा (= गन्धाश्मन्), गन्धिकः (+ गन्धकः), सौगन्धिकः (३ पु), 'गन्धक' के ३ नाम हैं ॥

२ चक्षुष्या, कुलाही, कुलस्थिका (३ स्त्री), 'काला सुर्मा' के ३ नाम हैं ॥

३ रीतिपुष्पम्, पुष्पकेतु, पुष्पकम् (+ पौष्पकम्), कुसुमाञ्जनम् (+ पुष्पाञ्जनम् । ४ न), 'तपाये हुप पीतलसे निकली हुई मैल के द्वारा बनाये हुप सुर्मे' के ३ नाम हैं ॥

४ पिञ्जरम्, पीतनम् (+ पीतकम्, गौरम्), तालम्, आलम् (+ अलम्), हरितालकम् (+ हरितालम् । ५ न), 'हरताल' के ५ नाम हैं ॥

५ गैरेयम्, अर्थ्यम्, गिरिजम्, अश्मजम्, शिलाजतु (५ न), 'शिला-जीत' के ५ नाम हैं ॥

६ बोल्ल, गन्धरसः (+ रसगन्धः) प्राणः, पिण्डः (+ पिष्टः), गोपरसः (+ गोपः, रसः, गोसः मुकु० । ५ पु), 'गन्धरस' के ५ नाम हैं ॥

७ हिण्डीरः (+ हिण्डीरः, हिण्डिरः), अम्बिकफः, फेनः (३ पु), 'स-मुद्रफेन' के ३ नाम हैं ॥

८ सिन्दूरम्, नागसंभवम् (+ नागजम्, शृङ्गारभूषणम्, चीनपिष्टम् । २ न), 'सिन्दूर' के २ नाम हैं ॥

९ नागम्, सीसकम् (+ सीसम् सीसपत्रम्), योगेष्टम्, वप्रम् (+ व-प्रम् मुकु० । ४ न), 'सीसा' के ४ नाम हैं ॥

१. 'गन्धकः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'गोसरसाः' इति मुकुटः इति मा० दी० ॥

३. 'हिण्डीरोम्बिकफः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ त्रयु पिच्छटम् ॥ १०५ ॥

१ रङ्गवङ्गे २ अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम् ।

स्यात्कुसुमं वह्निशिखं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥

३ मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्णं शशलोमनि ।

६ मधु क्षौद्रं माक्षिकादि ७ मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥

८ मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नागजिह्विका ।

९ नैपाली कुनटी गोला—

१ त्रयुः पिच्छटम्, रङ्गम्, वङ्गम् (+ मृदङ्गम्, आलानम् । ४ न), 'रांगा' के ४ नाम हैं ॥

२ पिचु, तूलः (+ पिचुतूलः, पिचुङ्गः । २ पु), 'कई कपास' के २ नाम हैं ॥

३ कमलोत्तरम्, कुसुमम्, वह्निशिखम्, महारजनम् (४ न), 'कुसुम (बरें) के फूल' के ४ नाम हैं ॥

४ मेषकम्बलः, ऊर्णायुः (२ पु) 'भेड़के बालके कम्बल' के २ नाम हैं ॥

५ शशोर्णम्, शशलोम (= शशलोमम् । २ न), 'खरगोश के रोंए' के २ नाम हैं ॥

६ मधु, क्षौद्रम्, माक्षिकम्, आदि (+ आमरम्, वाटकम्, पौत्तिकम्, सारधम्, ... । ३ न), 'मधु शहद' के ३ नाम हैं ॥

७ मधूच्छिष्टम्, सिक्थकम् (२ न), 'शहदसे निकाले हुए मोम' के २ नाम हैं ॥

८ मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्रा, नागजिह्विका (+ नागजिह्वा, शिला । ४ स्त्री), 'मनसिल' के ४ नाम हैं ॥

९ नैपाली (+ शिला), कुनटी, गोला (३ स्त्री), 'नेपाली मैनसिल' के ३ नाम हैं । (भा० क्षी० आदिके मतसे 'मनःशिला' ७ नाम 'मैनसिल' के ही हैं ॥

१. रङ्गवङ्गेऽथ पिचुङ्गः इत्यत्र पाठे तु 'इदृदेद्विचर्चनं प्रगृह्यम्' (पा० सू० १।१।११) इति प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या—' (पा० सू० ६।१।१२५) इति प्राप्तप्रकृतिभावाभावो गजनिर्मौलिकयेत्यवधेयम् ॥

२. माक्षिकं तैलवर्णं स्याद् घृतवर्णं तु पौत्तिकम् ।

विज्ञेयं अमरं श्वेतं क्षौद्रं तु कपिलं स्पृष्टम् ॥ २ ॥

इति निम्बुकभेदाविवक्षयेयमुक्तिरित्यवधेयम् ॥

—१ यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥

पाकयोः^१ सज्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।

२ सौवर्चलं स्याद्भुक्तं^२ ४ त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

५ शिमुजं श्वेतमरिचं^३ ६ मोरटं मूलमैक्ष्वरम् ।

७ ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥

८ गोलोमी भूतकेशः^४ ९ पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।

१० त्रिकटु^५ ज्युषणं^६ त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

इति वैश्यदर्गः ॥ ९ ॥

१ यवक्षारः, यवाग्रजः, पाकयः (३ पु) 'जवाक्षार' के ३ नाम हैं ॥

२ सज्जिकाक्षारः, कापोतः, सुखवर्चकः (३ पु) 'सज्जीक्षार' के ३ नाम हैं ॥

३ सौवर्चलम्, त्वक्क् (२ न), 'क्षार-भेद या सोचरक्षार' के २ नाम हैं । 'भा० दी० आदिके मतसे 'सज्जिकाक्षारः,' ५ नाम 'सज्जी-क्षार' के ही हैं) ॥

४ त्वक्क्षीरी (+ तुकाक्षीरी, तुकाशुभा, वांशी), वंशरोचना (+ वंशलो-चना, वंशजा । २ स्त्री), 'वंशलोचन' के २ नाम हैं ॥

५ शिमुजम्, श्वेतमरिचम् । २ न), 'सहिजनके बीज' के २ नाम हैं ॥

६ मोरटम् (न), 'ऊख (गखे) की जड़' का १ नाम है ॥

७ ग्रन्थिकम्, पिप्पलीमूलम्, चटकाशिरः (= चटकाशिरस् । + चटका-क्षी, शिरः = शिर पु । ३ न), 'पिप्परामूल' के ३ नाम हैं ॥

८ गोलोमी (स्त्री), भूतकेशः (पु), 'जटामौसी' के २ नाम हैं ॥

९ पत्राङ्गम्, रक्तचन्दनम् (२ न), 'रक्तसार' अर्थात् 'लाल चन्दनके समान एक काष्ठ-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१० त्रिकटु, ज्युषणम् (+ ज्युषणम्), ज्योषम् (३ न), 'त्रिकटु' अर्थात् 'पिपल, सोंठ और मिर्चके समुदाय' के ३ नाम हैं ॥

११ त्रिफला (+ तृफला, वरा । स्त्री), फलत्रिकम् (न) 'त्रिफला' अर्थात् 'आंवला, हरे और बहेड़े के समुदाय' के २ नाम हैं ॥

इति वैश्यदर्गः ॥ ९ ॥

१०. अथ शूद्रवर्गः ।

- १ शूद्रश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।
- २ आचण्डःलात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥
- ३ शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनाः ।
- ५ शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो ऽ मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥
- ७ माहिष्योऽर्धाक्षत्रिययोः ८ क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ।

१०. अथ शूद्रवर्गः ।

१ शूद्रः, अवरवर्णः, ^१ वृषजः, ^२ जघन्यजः (+ पथः, यजः । ४ पु), 'शूद्र' के ४ नाम हैं ॥

२ संकीर्णः (+ वर्णसङ्कर । पु), 'वर्णसङ्कर' अर्थात् 'भिन्न २ जातिवाले माता-पिताके संयोगसे उत्पन्न 'अम्बष्ठ, करण' आदि जाति-विशेष' का १ नाम है ॥

३ करणः (पु), 'शूद्रवर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

४ अम्बष्ठः (पु), 'वैश्य वर्णकी स्त्री और ब्राह्मण वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

५ उग्रः (पु), 'शूद्र वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

६ मागधः (पु), 'क्षत्रिय वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

७ माहिष्यः (+ माहिषः । पु), 'वैश्य वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

८ क्षत्ता (= चतु पु), 'क्षत्रिय वर्णकी स्त्री और शूद्र वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'बदई' का १ नाम है ॥

१. उदुक्तं नारदेन—

'वृषो हि मगवान् धर्मस्तस्य यः कुरुते क्वम् । वृषलं तं विमानोवाह—' इति ॥

मनुरपि (८।१६) 'क्व' स्थाने 'क्वम्' इति पठित्वा वदेवाह ॥

२. —यद्गतां शूद्रो भजायत' इति श्रुत्युक्तेरित्यशेषेणम् ॥

१ ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्त्वस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥

२ रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य सम्भवः ।

४ स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

१ सूतः (पु), 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'सारथिका काम करनेवाले' का १ नाम है ॥

२ वैदेहकः (वैदेहः, विदेहः । पु), 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

३ रथकारः (पु), 'करणी स्त्री (शूद्र वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न कन्या) और माहिष्य आतिके पुरुष (वैश्य वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न पुत्र) से उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

४ चण्डालः (+ चण्डालः । पु) 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और शूद्र वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'चाण्डाल' का १ नाम है । ('इन सब (श्लो० २-४ के 'प्रमाण टिप्पणी में स्पष्ट हैं और सुगमतया जाति-ज्ञानके लिये चक्र देखिये') ॥

१. याज्ञवल्क्यस्मृतौ पूर्वोक्ता अन्याश्च सङ्करजातय उक्तान्तथा हि—

‘विप्रान्मूर्धावसिक्तस्तु क्षत्रियायां विशः क्षियाम् ।

अम्बष्ठः शूद्रायां निषादो जातः पाराशवोऽपि वा ॥ १ ॥

वैश्याशूद्रयोस्तु राजन्यान्माहिष्योऽथौ मुतौ स्मृतौ ।

वैश्यात्तु करणः शूद्रायां वित्रास्वेष विविः स्मृतः ॥ २ ॥

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतो वैश्याद्वैदेहिकस्तथा ।

शूद्राजातस्तु चाण्डालः सर्वधर्मरहितकृतः ॥ ३ ॥

क्षत्रिया मागधं वैश्यान्शूद्रात्क्षत्तारमेव च ।

शूद्रादायोगवं वैश्या जनयामास वै सुतम् ॥ ४ ॥

माहिष्येण करण्यां तु रथकारः प्रजायते ।

असत्सन्तस्तु विज्ञेयाः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ ५ ॥

इति याज्ञ० स्मृति० १ । ११-१५ ॥

एतद्विज्ञानां वर्णसङ्कराणामुत्पत्तिमूलं कर्माणि च मनुस्मृतौ (१० । ८—५२), जोड-नसीस्मृतौ, गौतमस्मृतेश्चतुर्थाध्याये, वसिष्ठस्मृतेरष्टादशाध्याये च सविस्तरं द्रष्टव्यम् ॥

९ कारुः शिल्पी २ संहतस्तेर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ।

१ कारुः, शिल्पी (= कृत्विपन् । २ पु), 'कारीगर' के २ नाम हैं ।
('बढ़ई १, लुत्तावा २, नई ३, खोवा ४ और खटार ५ ये पांच 'शिल्पी' हैं) ॥

२ श्रेणिः (पु स्त्री), 'एक जाति के कारीगरों के समूह' का १ नाम है ॥

अनुलोमज-प्रतिकोऽज्जातुत्पत्तिबोधवचनम् ।			
संख्या	वितृजातेः	मातृजातौ जातः	पुत्रजातिः
१	विप्राव	क्षत्रियायाम्	मूर्धावसिक्तः
२	"	वैश्यायाम्	अम्बष्ठः
३	"	शूद्रायाम्	निषादःपाराशवो वा
४	क्षत्रियाव	वैश्यायाम्	माहिष्यः
५	"	शूद्रायाम्	उग्रः
६	वैश्याव	"	करणः
७	क्षत्रियाव	ब्राह्मण्याम्	सूतः
८	वैश्याव	"	वैदेहकः
९	शूद्राव	"	चण्डालः
१०	वैश्याव	क्षत्रियायाम्	मागधः
११	शूद्राव	"	क्षत्ता
१२	"	वैश्यायाम्	आयोगवः
१३	माहिष्याव	करण्याम्	रथकारः

१. तदुक्तम्—

'तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा।

पञ्चमश्वर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ 'कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी २ मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥
- ३ कुम्भकारः कुलालः स्यात् ४ पलगण्डस्तु लेपकः ।
- ५ तन्त्रवायः कुविन्दः स्यात् ६ तुल्यवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥
- ७ रङ्गाजीवचित्रकरः ८ शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
- ९ पादुकृष्णकारः स्यात् १० व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
- ११ नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः ।

१ कुलकः (+ कुलिकः), कुलश्रेष्ठी (= कुलश्रेष्ठिन् । २ पु), 'बान्दानी (कुलीन) कारीगर' के २ नाम हैं ॥

२ मालाकारः, मालिकः (२ पु), 'माली' के २ नाम हैं ।

३ कुम्भकारः, कुलालः (१ पु), 'कुम्हार' के २ नाम हैं ।

४ पलगण्डः, लेपकः (२ पु), 'मकान आदिमें चूना आदि लगाने वाले आति-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ तन्त्रवायः (+ तन्त्रवायः, तन्त्रवापः), कुविन्दः (+ कुविन्दः २ पु), 'जुलाहा' अर्थात् 'कपड़ा बुननेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ तुल्यवायः, सौचिकः (२ पु), 'दर्जी' के २ नाम हैं ॥

७ रङ्गाजीवः, चित्रकरः (२ पु), 'रंगसाज' अर्थात् 'कपड़ेको रंगने वा छापर चित्रकारी आदि करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ शस्त्रमार्जः असिधावकः (२ पु), 'स्नान चढ़ानेवाले या शस्त्रों की सफाई और मरम्मत आदि करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ पादुकृत (+ पादकृत, पादुकाकृत), चर्मकारः (२ पु), 'बामर' के २ नाम हैं ॥

१० व्योकारः, लोहकारकः (+ लोहकारः, अयस्कारः, अयस्करः । २ पु) 'लुहार' के २ नाम हैं ॥

११ नाडिन्धमः, स्वर्णकारः, कलादः, रुक्मकारकः (+ रुक्मकारः, मुष्टिकः, हेममुष्टिकः । ४ पु), 'सुनार' के ४ नाम हैं ॥

१. 'कुलिकः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'तन्त्रवायः' इति 'तन्त्रवापः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः २ शौत्त्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥
 ३ तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।
 ४ ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः ५ कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥
 ६ क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्त्तिनापितान्तावसायिनः ।
 ७ निर्णोजकः स्याद्भजकः ८ शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥
 ९ जाबालः स्यादजाजीवो—

१ शाङ्खिकः, काम्बविकः (२ पु), 'शङ्खकी चूड़ी आदि बनानेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ शौत्त्विकः ताम्रकुट्टकः (२ पु) 'तमेड़ा' अर्थात् 'ताँबेके वर्तन आदि बनानेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ तक्षा (= तक्षन्), वर्धकिः, त्वष्टा (= त्वष्टृ), रथकारः काष्ठतट् (= काष्ठतत् + स्थपतिः । ५ पु), 'बढ़ई' के ५ नाम हैं ॥

४ ग्रामाधीनः (भा० दी०), ग्रामतक्षः (२ पु), 'गाँवके बढ़ई' के २ नाम हैं ॥

५ कौटतक्षः, अनधीनकः (भा० दी० । २ पु), 'स्वतन्त्र बढ़ई' के २ नाम हैं ॥

६ क्षुरी (= क्षुरिन् । + क्षुरमर्दी = क्षु(मर्दिन्), मुण्डी (= मुण्डिन् । + मुण्डिः, मुण्डकः), दिवाकीर्त्तिः, नापितः, अन्तावसायी (= अन्तावसायिन् । + चण्डिलः । ५ पु) 'हजाम' के ५ नाम हैं ॥

७ निर्णोजकः, भजकः (२ पु), 'धोबी' के २ नाम हैं ॥

८ शौण्डिकः मण्डहारकः (+ सुराजीवी = सुराजीविन्, कल्यपालः, पानवणिक = पानवणिज्, ध्वजः, वारिवासः । २ पु), 'कलवार या मद्य बनानेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ जाबालः, अजाजीवः (२ पु), 'गँडेरिये या भैंड़िहारे' के २ नाम हैं ॥

१- 'रथकारस्तु' इति पाठान्तरम्, अत्र पाठे 'भ्वन्तायादि न पूर्वमाक्' (१ । १ । ५) इति पूर्वप्रतिशविरोधात् 'रथकार' शब्दस्य 'तक्षणः' पर्यायता न स्यादित्यवधेयम् ॥

—१ 'देवाजीवस्तु देवलः ।

- २ स्यान्माया शम्भरी ३ मायाकारस्तु 'प्रतिहारकः ॥ ११ ॥
 ४ शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः ।
 भरता इत्यपि नटा ५ च्चारणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥
 ६ मार्दङ्गिका मौरजिकाः ७ पाणिवादास्तु पाणिघाः ।
 ८ वेणुध्माः स्युर्वैणविका ९ वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ १३ ॥
 १० जीधान्तकः शाकुनिको ११ द्वौ वागुरिकजालिकौ ।

१ देवाजीवः (+ देवाजीवी = देवाजीविन्), देवलः, (२ पु), 'पण्डा, पुजारी आदि' के २ नाम हैं ॥

२ माया, शम्भरी (२ स्त्री), 'जादू' के २ नाम हैं ॥

३ मायाकारः, प्रतिहारकः (+ प्रतिहारकः, प्रातिहारिकः । २ पु), 'जादूगर' के २ नाम हैं ॥

४ शैलाली (= शैलालिन्), शैलूषः, जायाजीवः, कृशाश्वि (= कृशाश्विन्), भरतः (+ भारतः), नटः (६ पु), 'नट' के ३ नाम हैं ॥

५ च्चारणः, कुशीलवः (२ पु) 'कथक' के २ नाम हैं ॥

६ मार्दङ्गिकः मौरजिकः (२ पु), 'मृदङ्ग बजानेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ पाणिवादः, पाणिघः (२ पु), 'हाथकी ताली बजाकर मृदङ्ग, तबला आदि बाजाओंके अनुकरणको करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ वेणुध्मः, वैणविकः (२ पु), 'वंशी या मुरली बजानेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ वीणावादः, वैणिक (२ पु), 'वीणा बजानेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० जीधान्तकः, शाकुनिकः (२ पु), 'बहेलिये या चिड़ियोंको मारने वाले' अर्थात् 'चिड़्डीमार' के २ नाम हैं ॥

११ वागुरिकः, जालिकः (२ पु), 'जालसे पशु-पक्षी, मछली आदि-को फँसानेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'देवाजीवी तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'प्रातिहारकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. यथाह बृहस्पतिः—'कृशाश्वेन च यस्मिन् नटसूत्रमधीयते ।

रङ्गावतारी शैलूषो नटो भरतभारतौ ॥ १ । इति ॥

- १ वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥
- २ भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ।
- ३ वार्तावहो वैवधिको ऽ भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥
- ५ विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।
'निहीनोऽपसदो जालमः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥
- ६ भृत्ये 'दासेरदासेयदासगोष्यकचेटकाः ।
नियोज्यकिङ्करप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥
- ७ 'पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ।
- ८ मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

१ वैतंसिकः, कौटिकः, मांसिकः (३ पु), 'मांस वेचनेवाले वधिक आदि' के ३ नाम हैं ॥

२ भृतकः, भृतिभुक् (= भृतिभुज्), कर्मकरः, वैतनिकः (४ पु), 'मजदूर या वेतन लेनेवाले नौकर' के ४ नाम हैं ॥

३ वार्तावहः, वैवधिकः (+ विवधिकः, वीवधिकः । २ पु), 'काँवर या बहूँगी ढोनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ भारवाहः, भारिकः (+ भारी = भारिन् । २ पु), 'बोझ ढोनेवाले कुली आदि' के २ नाम हैं ॥

५ विवर्णः, पामरः, नीचः, प्राकृतः, पृथग्जनः, निहीनः, अपसदः (+ अप-
शदः), जालमः, क्षुल्लकः (+ क्षुल्लकः), इतर (१० पु), 'नीच' के १० नाम हैं ॥

६ भृत्यः, दासेरः, दासेयः, दासः (+ दाशः), गोष्यकः, चेटकः (+ चेडकः),
नियोज्यः, किङ्करः, प्रैष्यः (+ प्रेष्यः), भुजिष्यः, परिचारकः (११ पु),
'नौकर, भृत्य' के ११ नाम हैं ॥

७ पराचितः, परिस्कन्दः (+ परिस्कन्दः, परिस्कन्धः, परिस्कन्धः), परजातः
(+ पराजितः), परैधितः (४ पु), 'दूसरेके द्वारा पालित' के ४ नाम हैं ॥

८ मन्दः, तुन्दपरिमृजः (+ तुन्दपरिमाजः,) आलस्यः, शीतकः, अलसः
(+ आलसः), अनुष्णः (६ पु), 'आलसी' के ६ नाम हैं ॥

१. 'निहीनाऽपसदो' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'दासेरदासेयदाश—' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'पराधितपरैधिताः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ।
- २ चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्त्तिजनङ्गमाः ॥ १९ ॥
निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।
- ३ भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥
- ४ व्याधो मृगवधाजीवा मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ।
- ५ कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरी मृगदंशकः ॥ २१ ॥
शुनको भषकः श्वा स्याद्वल्ग्वर्कस्तु स योगितः ।
- ७ श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः ८ सरमा शुनी ॥ २२ ॥

१ दक्षः, चतुरः, पेशलः, पटुः, सूत्थानः, उष्णः (+ निशालसः । ६ पु),
'चालाक, चतुर' के ६ नाम हैं ॥

२ चण्डालः, प्लवः, मातङ्गः, दिवाकीर्त्तिः, जनङ्गमः (+ जलङ्गमः),
विषादः, 'श्वपचः (+ श्वपाकः), अन्तेवासी (= अन्तेवासिन्), चाण्डालः,
पुक्कसः (+ पुक्कसः, वृक्कपः । १० पु), 'चाण्डाल' के १० नाम हैं ॥

३ किरातः, शबरः (+ शवरः), पुलिन्दः (+ पुलिङ्कः । १ पु), ये
तीन 'म्लेच्छजातिः (स्त्री), २ 'म्लेच्छ (चाण्डाल) के जाति-विशेष' हैं ॥

४ व्याधः, मृगवधाजीवः, मृगयुः, लुब्धकः (४ पु), 'व्याध' के ४
नाम हैं ॥

५ कौलेयकः, सारमेयः, कुक्कुरः (+ कुकुरः, कुर्कुरः), मृगदंशकः (+ मृग-
दंशः), शुनकः (+ शुनः, शुनिः), भषकः, श्वा (= श्वन् । + श्वानः, कपिलः,
शिवारिः, मण्डलः, कृतज्ञः । ७ पु), 'कुत्ते' के ७ नाम हैं ॥

६ अलर्कः (पु), 'पागल या रोगी कुत्ते' का १ नाम है ॥

७ विश्वकद्रुः (पु), 'शिकारी कुत्ते' का १ नाम है ॥

८ सरमा, शुनी (स्त्री), 'कुतिया' के २ नाम हैं ॥

१. 'श्वपचो होमः तुक्कसो मृतपः' इत्यवान्तरभेदोऽत्र न विवक्षित इत्यवधेयम् ॥

२. तदुक्तम्—'गोमांसमक्षको यस्तु लोकबाह्यं च भाषते ।

सर्वाचारविहीनोऽसौ म्लेच्छ इत्यभिधीयते' ॥ १ ॥ इति ॥

- १ विट्चरः सुकरो ग्राम्यो २ वर्करस्तृणः पशुः ।
- ३ आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ॥
- ४ दक्षिणार्कलुब्धयोगादक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।
- ५ चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोक्षकाः ॥ २४ ॥
प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटश्चरमलिभ्लुचाः ।
- ६ चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं ७ लोभ्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥
- ८ वीतसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ।
- ९ उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद् १० वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

१ विट्चरः (पु), 'ग्रामके सूअर' का १ नाम है ॥

२ वर्करः (पु); 'जवान पशु' का १ नाम है ॥

३ आच्छोदनम्, मृगव्यम् (+ मृगव्या स्त्री । २ न), आखेटः (पु), मृगया (+ पापद्धिः । स्त्री), 'शिकार' के ४ नाम हैं ॥

४ दक्षिणेर्मा (= दक्षिणेर्मन् पु), 'व्याधके मारनेसे बहने भागमें घाववाले मृग आदि पशु, का १ नाम है ॥

५ चौरः (+ चोरः, चोरिः), ऐकागारिकः, स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोक्षकः, प्रतिरोधी (= प्रतिरोधिन् । + प्रतिरोधकः), परास्कन्दी (= परास्कन्दिन्), पाटच्चरः, मलिभ्लुचः (+ पारिपन्धिकः, रात्रिचरः । १० पु), 'चोर' के १० नाम हैं ॥

६ चौरिका (+ चोरिका । स्त्री), स्तैन्यम्, चौर्यम्, स्तेयम् (३ न), 'चोरी' के ४ नाम हैं ॥

७ लोभ्रम् (+ लोभ्रम्, लोतम्, चोरितम् । न), 'चोरीके धन या वस्तु आदि' का १ नाम है ॥

८ वीतंसः (+ वितंसः । पु) 'फन्दा' अर्थात् 'पशु-पक्षियोंको फँसानेके लिये जाल आदि साधन-विशेष' का १ नाम है ॥

९ उन्माथः (पु), कूटयन्त्रम् (+ पाशयन्त्रम् । न), 'पशु-पक्षियोंको फँसानेवाले यन्त्र-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१० वागुरा, मृगबन्धनी (२ स्त्री), 'पशु या मृगको फँसानेके जाल-विशेष' के २ नाम हैं ॥

- १ 'शुक्लं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।
- २ उद्धाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्धाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥
- ३ पुंसि वेमा 'वायदण्डः ४ सूत्राणि नरि तन्तवः ।
- ५ वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये ६ पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥ २८ ॥
- ७ 'पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता ।
- ८ 'स्यात्सालभञ्जिका स्तम्भे—

१ शुक्लम् (+ सुम्भम् , शुम्भम् , शुम्भम् , ३ न; शुक्ला, सुक्वी, २ स्त्री), वराटकम् (+ वटाकरः । + पु । २ न), रज्जुः (स्त्री), वटी (त्रि । + स्त्री), गुणः (+ वटीगुणः त्रि । पु), 'रम्सी' के २ नाम हैं ॥

२ उद्धाटनम् (+ उद्धाटनम्), घटीयन्त्रम् (२ न), 'कुँसे पानी निकालेवाले पुरवट मोट, रँहट आदि साधन' के २ नाम हैं ॥

३ वेमा (= वेमन् । + न), वायदण्डः (+ वापदण्डः । २ पु), 'जुलाहोंके शास्त्र-विशेष' अर्थात् 'जिससे कपड़ा बुनते समय सूत बराबर किया जाता है उस हथियार' के २ नाम हैं ॥

४ सूत्रम् (न), तन्तुः (पु । + सूत्रतन्तुः), 'सूत' के २ नाम हैं ॥

५ वाणिः, व्यूतिः (+ व्युतिः । २ स्त्री), 'कपड़े आदिको बुनने' के २ नाम हैं ॥

६ 'पुस्तम् (न), 'मिट्टी, कपड़े या चमड़े आदिसे लीपने या पुतली बनाने' का १ नाम है ॥

७ पाञ्चालिका (+ पञ्चालिका), पुत्रिका (१ स्त्री), 'हाथी-दाँत या कपड़े आदिकी-पुतली' के २ नाम हैं ॥

८ [सालभञ्जिका (+ सालभञ्जि । स्त्री), 'लकड़ीकी पुतली' का १ नाम है] ॥

१. 'शुक्लं वराटकः' इति 'सुम्भं वटाकरः' इति च पाठान्तरे, द्वितीयं पाठान्तरं 'स्वामि' सम्मतमिति मा० दी० । परन्तेन तथा पाठान्तरानुक्ते मा० दी० चिन्त्यः ।

२. 'वापदण्डः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'पञ्चालिका' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'स्यात्सालभञ्जिका'.....'त्रिषु' इत्ययमंशः मा० दी० स्त्री० स्वा० मूले नोपलभ्यते, किन्तु क्षी० स्वा० व्य.ख्याने मूलरूपेणोपलभ्यते । 'जतुत्रपु'.....'त्रिषु' इत्युत्तरार्द्धं तु महे० व्याख्याने मूले चोपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

५. तदुक्तम्—'मृदा वा दारुणा वाय बस्त्रेणाप्यथ चर्मणा ।

लोहररनैः कृतं वापि पुस्तमिष्यमिषीयते' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ लेप्येनाञ्जलिकारिका (३२)

२ जतुत्रपुविकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु' (३३)

३ पिटकः पेटकः 'पेटा मञ्जूषाऽऽथ 'विहङ्गिका ॥ २९ ॥

भारयष्टिऽस्तदालम्बि शिक्यं काचोऽऽथ पादुका ।

पादूरुपानत्स्त्री ७ सैवानुपदीना पदायता ॥ ३० ॥

८ नध्री वध्री वरत्रा स्याऽदश्वदेस्ताडनी कशा ।

१२ चाण्डालिका तु 'कण्डोलवीणा चण्डालवल्ली' ॥ ३१ ॥

१ [अञ्जलिकारिका (स्त्री), 'लेप्यमयी पुनली' का १ नाम है] ॥

२ जातुषम्, त्रापुषम् (२ त्रि), 'लोह और रौंगेकी पुनली' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

३ पिटकः, पेटकः (२ पु), पेटा (+ पेडा मुकु०, पीडा स्त्री० स्वा०), मञ्जूषा (२ स्त्री), 'पेटी, मँपोली, बक्स आदि' के ४ नाम हैं । 'स्त्री० स्वा०' के मतसे पहलेवाले २ नाम 'छोटी शॉपी' के और अन्तवाले २ नाम 'बड़े शॉपी, बक्स आदि' के हैं ॥

४ विहङ्गिका (+ विहङ्गमा), भारयष्टिः (२ स्त्री), 'बहँगीके डण्डे' के २ नाम हैं ॥

५ शिक्यम् (न) काचः (पु), 'बहँगीके डण्डेमें लटकते हुए सिकहर' के २ नाम हैं ॥

६ पादुका, पादुः, उपानत् (= उपानह् । + पादत्राणम् ३ स्त्री), 'जूता काड़ाऊँ, बूट, सिलेपड़, चटकी आदि' के ३ नाम हैं ॥

७ अनुपदीना (स्त्री) 'पैताबा या पूरे पैरके जूते'(बूट)'का १ नाम है ॥

८ नध्री, वध्री, वरत्रा (३ स्त्री), 'चमड़ेकी रस्सी' के ३ नाम हैं ॥

९ कशा (स्त्री) 'कोड़ा या चाबुक' का १ नाम है ॥

१० चाण्डालिका (+ चण्डालिका), कण्डोलवीणा (+ कण्टोलवीणा, कण्डोली), चण्डालवल्ली (३ स्त्री), 'चण्डाल आदि नीचोंके किंगरी नामक बाजा' के ३ नामक हैं ॥

१. 'पाडा' इति 'पेडा' इति च क्रमशः स्त्री० स्वा० मुकु० संमतं पाठान्तरम् ॥

२. 'विहङ्गमा' इति मुकुटसंग्रतं पाठान्तरम् ॥ ३. 'कण्टोलवीणा' इति पाठान्तरम् ॥

- १ नाराची स्यादेषणिका २ शाणस्तु निकषः कषः ।
- ३ वृश्चनः 'पत्रपरशु ४ रीषिका तूलिका समे ॥ ३२ ॥
- ५ तैजसावर्तनी मूषा ६ भस्त्रा चर्मप्रसेषिका ।
- ७ 'आफोटनी वेधनिका ८ कृपाणी कर्त्तरी समे ॥ ३३ ॥
- ९ वृक्षादनी वृक्षभेदी १० टङ्कः 'पाषाणदारणः ।
- ११ क्रकचोऽस्त्री करपत्रम्—

१ नाराची, एषणिका (२ स्त्री), 'सोना-चाँदी तोलनेवाले काँटे' के २ नाम हैं ॥

२ शाणः, निकष, कषः (३ पु), 'कसौटी या सान' के ३ नाम हैं ॥

३ वृश्चनः (+ वृश्चनः), पत्रपरशुः (२ पु), 'सोना-चाँदी आदि काटनेकी छेनी आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

४ ईषिका (+ एषिका, इषिका, हषीका), तूलिका (+ तुलिः । २ स्त्री), 'कूँची, चित्रमें रंग भरनेकी कलम' के २ नाम हैं ॥

५ तैजसावर्तनी (+ आवर्तनी), मूषा (+ मूषी, मुषा, मुषी । १ स्त्री), 'सोना-चाँदी गलानेकी घरिया (मिट्टीके पात्र-विशेष)' के २ नाम हैं ॥

६ भस्त्रा, चर्मप्रसेविका (+ चर्मप्रसेवकः पु । २ स्त्री), 'भाथी' के २ नाम ॥

७ आस्फोटनी (+ लास्फोटनी); वेधनिका (+ वेधनी । १ स्त्री), 'मोती-मणि आदि छेदनेवाली बर्मी' के २ नाम हैं ॥

८ कृपाणी, कर्त्तरी (१ स्त्री), 'सोना चाँदी आदि काटनेवाली कैंची' के २ नाम हैं ॥

९ वृक्षादनी (स्त्री), वृक्षभेदी (= वृक्षभेदिन् पु), 'काष्ठ काटनेवाले वस्त्रा, वटाली आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

१० टङ्कः (+ तङ्कः । पु न), पाषाणदारणः (+ पाषाणदारकः । पु), 'पाषाण तोड़नेवाले टांकी, छेनी, धन आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

११ क्रकचः (पु न), करपत्रम् (न), 'लकड़ी चीरनेवाले आरा, शाह या आरी आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

१. 'पत्रपरशुरेषिका' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'लास्फोटनी' इति मुकुटः इति भा० दी० ॥

३. 'पाषाणदारकः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ आरा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥

- २ सुर्मी स्थूणायःप्रतिमा ३ शिल्पं कर्म कलादिकम् ।
 ४ प्रतिमानं प्रतिविम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ॥ ३५ ॥
 प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधिः ५ रुपमोपमानं स्यात् ।
 ६ वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृशः सदृशः सदृक् ॥ ३६ ॥
 साधारणः समानश्च ७ स्युरुत्तरपदे त्वमी ।
 निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ॥ ३७ ॥
 ८ कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम् ।

१ आरा, चर्मप्रभेदिका (२ स्त्री), 'चमड़ा काटनेवाले हथियार' के २ नाम हैं ॥

२ सुर्मी (+ सुर्मिः), स्थूणा, अयःप्रतिमा (३ स्त्री), 'लोहेकी मूर्ति' के ३ नाम हैं ॥

३ शिल्पम् (न), 'कला (कारीगरी) आदि कौशलके काम' का १ नाम है ॥

४ प्रतिमानम्, प्रतिविम्बम् (२ न), प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृतिः, अर्चा (५ स्त्री), प्रतिनिधिः (पु), 'प्रतिमा, फोटो, तस्वीर' के ८ नाम हैं ॥

५ उपमा (स्त्री), उपमानम् (न), 'उपमा, मिसाल' के २ नाम हैं ।
 ('किसी २ के मतसे 'प्रतिमानम्,' ७ नाम एकार्थक हैं') ॥

६ समः, तुल्यः, सदृशः, सदृशः, सदृक् (= सदृश्), साधारणः, समानः (७ त्रि), 'सदृश, समान, बराबर' के ७ नाम हैं ॥

७ निभः, संकाशः, नीकाशः, प्रतीकाशः, उपमा, आदि (+ भृतः, रूपः, वक्षः, देशः, देशीयः । ५ त्रि), ये, ५ शब्द किसी शब्दके उत्तरमें रहनेपर उसके सदृश अर्थको कहते हैं । ('जैसे-राजनिभः, राजसंकाशः,' अर्थात् 'राजाके समान' । उत्तरपद शब्द समासमें रुढ़ है. अत एव 'चन्द्रेण निभः' यहाँपर यद्यपि 'चन्द्र' शब्दके उत्तरमें 'निभ' शब्द है, तथापि सदृश अर्थका बोध नहीं करता') ॥

८ कर्मण्या (+ भर्मण्या), विधा, भृत्या, भृतिः (४ स्त्री,) भर्म (= भ-

- भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ॥ ३८ ॥
 १ सुरा इलिप्रिया हाला परिस्फुट्टरुणात्मजा ।
 गन्धोत्तमाप्रसन्नेराकादम्बर्यः परिस्फुता ॥ ३९ ॥
 मदिरा कश्यमद्ये चाप्यरवदंशस्तु भक्षणम् ।
 ३ शुण्डा पानं मदस्थानं ४ मधुवारा मधुकमाः ॥ ४० ॥
 ५ मध्वासवो माधवको मधु माध्वीकमद्वयोः ।
 ६ मैरेयमासवः सीधुः—

मन्), वेतनम्, भरण्यम्, भरणम्, मूल्यम् (५ न), निर्वेशः, पणः (१ पु),
 'वेतन तनखाह या मजदूरी' के ११ नाम हैं ॥

१ सुरा, इलिप्रिया, हाला. परिस्फुत्, वरुणात्मजा (+ वारुणी), गन्धो-
 त्तमा, प्रसन्ना हरा, कादम्बरी, परिस्फुता (+ परिस्फुता), मदिरा (+ मद्विष्टा,
 स्वादुरसा । ११ स्त्री), कश्यम्, मद्यम् (+ कश्यम्, हारहूरम्, कपिशायनम् ।
 ३ न), 'मदिरा, शराब' के १३ नाम हैं ॥

२ अरवदंशः (+ उपदंशः, चक्षुणम्, चर्वणम् । पु), 'मदिरा पीनेके
 समय रुचि बढ़नेके लिये नमकीन चना आदि चबाने' का १ नाम है ॥

३ शुण्डा (स्त्री), पानम् (+ शुण्डापानम्), मदस्थानम् (३ न),
 'मदिरा पीनेके स्थान' के ३ नाम हैं ॥

४ मधुवारः, मधुकमः (२ पु), 'मदिरा पीनेके बारी' के २ नाम हैं ॥

५ मध्वासवः, माधवकः (२ पु), मधु, माध्वीकम् (+ माद्वीकम् ।
 २ न), 'मधुपके शराब' के ४ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे प्रथम २ नाम
 उक्तार्थक और अन्तवाले १ नाम 'दाखके शराब' के हैं ॥

६ 'मैरेयम् (न), असवः (पु), सीधुः (+ शीधुः । पु न), ऊज
 (गङ्गा) के रस या शाक आदिसे बने हुए मदिरा' के ३ नाम हैं ॥

१. 'माद्वीकमद्वयोः' इति भा० दी० सम्मतं 'माद्वीकमद्ययोः' इति च स्त्री० स्वा० सम्मतं
 पाठान्तरम् । 'अत्र 'मद्य'स्योक्तत्वात् 'अद्वयोः' इत्येवं पाठः' इत्युक्तम्, सामान्यविशेषरूपस्वे-
 नादोषात्' इति स्त्री० स्वा० ॥

२. 'शीधुरिक्षुरसैः पञ्चैरपञ्चैरासवो भवेत् । मैरेयं घातकीपुष्पशुण्डाणामुत्तंरितम्' ॥ १ ॥
 इति माधवोक्तभेदाविवक्षयेयमुक्तिः ॥

—१ मेदको जगलः समौ ॥ ४१ ॥

२ सन्धानं स्यादभिषवः ३ किण्वं पुंसि तु' नम्रहः ।

४ 'कारोत्तरः सुरामण्ड ५ आपानं पानगोष्ठिका ॥ ४२ ॥

६ चषकोऽस्त्री पानपात्रं ७ सरकोऽप्यनुतर्षणम् ।

८ 'धूर्त्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्त्तो द्यूतकृतसमाः ॥ ४३ ॥

९ स्युर्लभकाः प्रतिभुवः १० सभिका द्यूतकारकाः ।

१ मेदकः, जगलः (२ पु), 'मदिराके काढ़े या मदिरा बनानेके लिये पीसे हुए पदार्थ विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ सन्धानम् (न), अभिषवः (पु) 'मदिरा बनाने' के २ नाम हैं ॥

३ किण्वम् (न), नम्रहः (+ नम्रहः । पु), 'चावल आदिको उबाल (ढूँट) कर तैयार किये हुए मदिराके बीज' के २ नाम हैं ॥

४ कारोत्तरः (+ कारोत्तमः), सुरामण्डः (भा० दी० । २ पु), मदिराके माँड़ (ऊपरी हिस्सा) के २ नाम हैं ॥

५ आपानम् (न), पानगोष्ठिका (+ पानगोष्ठी । स्त्री), 'मदिरा पीनेके जमाव (अट्ठा), के २ नाम हैं ॥

६ चषकः (पु न), पानपात्रम् (न), 'मदिरा पीनेके प्याले के २ नाम हैं ॥

७ सरकः (पु न), अनुतर्षणम् (न), 'मदिरा पीने या परोसने (ढूँटने), के २ नाम हैं । 'मुकु० के मतमे 'चषकः, ...' ४ नाम 'मदिरा पीनेके प्याले' के ही हैं' ॥

८ धूर्त्तः (+ धार्त्तः), अक्षदेवी (= अक्षदेविन्); कितवः, अक्षधूर्त्तः, द्यूतकृत (५ पु), 'जुवाड़ी या जुवा खेलनेवाले' के ५ नाम हैं ॥

९ लभकः, प्रतिभूः (२ पु), 'मध्यस्थ, बीचवान, जामिनदार' के २ नाम हैं ॥

१० सभिकः, द्यूतकारकः (२ पु), 'नालदार' अर्थात् 'जुवा खेलानेवाले के २ नाम हैं ॥

१. 'नम्रहः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कारोत्तमः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'वाचोऽक्षदेवी' इति पाठान्तरम् ॥

- १ द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ॥ ४४ ॥
- २ पणोऽक्षेषु ग्लहोऽस्मास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ।
- ४ परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम् ॥ ४५ ॥
- ५ अष्टापदं शारिफलं ६ प्राणिद्युतं समाह्वयः ।
- ७ उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ॥ ४६ ॥

१ द्यूतः (पु न), अक्षवती (स्त्री), कैतवम् (न), पणः (पु), 'जुआ' के ४ नाम हैं ॥

२ पणः, ग्लहः (२ पु), 'जुपमें दाघपर रक्खे हुप रुपया आदि' के २ नाम हैं ॥

३ अक्षः, देवनाः, पाशकः (+ प्राशकः । ३ पु), 'पाशा' के ३ नाम हैं ॥

४ परिणायः (पु न), 'शारी (गोटी) को चल्ने' के २ नाम हैं ॥

५ अष्टापदम् (पु न), शारिफलम् (न), 'बिसात' अर्थात् 'गोटियोंको रखने (खेलनेके समय बिछाने) के लिये कपड़े या काष्ठके बने हुप आधार—विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ प्राणिद्युतम् (भा० दी० । न), 'समाह्वयः (पु), 'बाजी रखकर पशु-पक्षियों (मुर्गा, तीतर, भेंडा आदि) को लड़ाने' के २ नाम हैं ॥

७ ग्रन्थकार 'उक्ता—' इस श्लोकसे सब लिङ्गवाले शब्दोंके सब लिङ्गोंके नहीं कहनेके दोषका निवारण करते हैं । इस 'शूद्रवर्ग' में अवयवार्थक (मार्दङ्गिक, मौरजिक आदि) शब्द काव्य, दुराण और कोषोंमें प्रायः पुंलिङ्गमें ही उपलब्ध होनेके कारण यहाँ भी वे पुंलिङ्गमें ही कहे गये हैं, वे (मार्दङ्गिक और मौरजिक आदि) शब्द उसके धर्म और योग आदिके वशसे अन्य जातिमें वृत्ति होने पर तदनुसार (वृत्तिके अनुसार) स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक भी होते हैं, ऐसे जानना चाहिये । और अवयवार्थको छोड़कर समुदायमें शक्त (कुम्भकार कुलाल, करण आदि) जो शब्द यहाँ (शूद्रवर्गमें) केवल पुंलिङ्गमें ही कहे गये हैं, वे (कुम्भकार, कुलाल, करण आदि) शब्द शूद्र आदि शब्दोंके समा-

१. तदुक्तम्—

'अप्राणिभिः कृतं यत्तु लोके तद् द्यूतमुच्यते ।

प्राणिभिः क्रियते यत्तु स विज्ञेयः समाह्वयः' ॥ १ ॥ इति ॥

तादृम्यादन्यतो वृत्तावृत्त्या लिङ्गान्तरेऽपि ते ।

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

अथ काण्डसमाप्तिः—

१ 'इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

द्वितीयकाण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना'परपर्यायके
अमरकोषे' द्वितीयो भूम्यादिकाण्डः समाप्तः ॥

स्त्रीवाचक होनेपर^१ स्त्रीलिङ्गमें और नपुंसकमें वृत्ति होनेपर नपुंसकलिङ्गमें प्रयुक्त होते हैं, ऐसा समझना चाहिये । ('उदाहरण क्रमशः । यौगिक शब्द, तीनो लिङ्गमें जैसे—मार्दङ्गिकः पुरुषः, मार्दङ्गिका स्त्री, मार्दङ्गिकं कुलम् ; मौर-
जिकः पुरुषः, मौरजिकी स्त्री, मौरजिकं कुलम् ; रुढ शब्द, तीनों लिङ्गों-
में जैसे—कुम्भकारः पुरुषः, कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कुलम् ; कुलालः पुरुषः,
कुलाली स्त्री, कुलालं कुलम् , करणः पुरुषः, करणी स्त्री, करणं कुलम् ;'
इसी प्रकार अन्यान्य शब्दोंके उदाहरणकी समझना चाहिये') ॥

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

अथ काण्डसमाप्तिः—

१ श्री अमरसिंहके बनाये हुए नाम (भूः, भूमिः, अचला.....) और
लिङ्ग (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) को बतलानेवाले 'नामलिङ्गानुशा-
सन' अर्थात् 'अमरकोष' नाम इस ग्रन्थमें 'भूमि आदि ('आदि शब्दसे पुर,
शैल, वनोपधि, आदि १० वर्गोंका संग्रह है') वर्गवाला यह दूसरा काण्ड
(भाग) अङ्ग (मृत्, शाखा, नगर, आदि और उपाङ्ग मृत्सा आदि) के
सहित समर्थित होकर सम्पूर्ण हुआ ॥

इति पण्डितप्रवरश्री'रामस्वार्थमिश्र' तनुजश्री 'हरगोविन्दमिश्र' विरचितायां
'मणिप्रभा'ख्या'अमरकोष' व्याख्यायां द्वितीयो भूम्यादिकाण्डः समाप्तः ॥

१. अयं श्लेषकश्लोकः स्त्री० स्वा० मूलपुस्तके नोपलभ्यते, महे० मा० दी० पुस्तकयोर्मूल-
मात्रमुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

२. 'वातेरस्त्रीविषयाद्युपपत्त (पा० सू० ४।१। ६३) इत्यनेनेति श्रेयम् ॥

अथ तृतीयकाण्डम्

वर्गभेदान् कथयति—

१ विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ।

लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये 'वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

१ सर्वसाधारण होनेसे 'सामान्यकाण्ड' नामक इस प्रकरणमें विशेष्य (स्त्री, दारा, कलत्र आदि पहले कहे हुए शब्द) के अधीन लिङ्ग और वचन-वाले 'सुकृती साधु.....' शब्दोंसे विशेष्यनिघ्नवर्ग १, आपसमें भिन्न-जातीय अर्थवाले 'कर्मपरायण,.....' शब्दोंसे संकीर्णवर्ग २, अनेक अर्थवाले 'नाक, लोक,.....' शब्दोंसे नानार्थवर्ग ३, 'आङ्,.....' अव्यय शब्दोंसे अव्ययवर्ग ४, और प्रत्यय अर्थात् 'टाप्, डेप्, घञ्, क्,.....' के द्वारा लिङ्गबोधक शब्दोंसे लिङ्गादिसंग्रहवर्ग ५, कहता हूँ। विशेष्यनिघ्न आदि ५ वर्गोंके क्रमशः उदाहरण । १ विशेष्यनिघ्नवर्ग जैसे—'सुकृतिनी साध्वी पुण्यवती वा स्त्री,.....' । २ संकीर्णवर्ग जैसे—'कर्मपरायण,.....' आदि शब्दोंसे 'कारीगरी, आदि किसी काममें लगे हुएका बोध होता है । ३ नानार्थ-वर्ग जैसे—'नाक, लोक,.....' यहाँ पहलेवाले 'नाक, शब्दके 'स्वर्ग और आकाश' तथा दूसरे 'लोक' शब्दके 'संसार और जन' ये २-२ अर्थ हैं । ४ अव्ययवर्ग जैसे—'आङ्' के 'योक्' मर्यादा और वाक्य, ये २ अर्थ हैं । ५ लिङ्गादिसंग्रहवर्ग जैसे—'लेफालिजा, अजा,.....' शब्दोंमें 'टाप्' आदि प्रत्ययोंसे स्त्रीलिङ्गका बोध होता है') । इन ५ वर्गोंके पूर्वोक्त स्वर्गादि वर्ग ही संश्रय हैं अर्थात् ये विशेष्यनिघ्न आदि वर्ग स्वतन्त्र नहीं हैं। अथवा—हेतुभूत विशेषणादिसे से ५ वर्ग इस सामान्यकाण्डमें अवान्तरवर्ग (जैसे—नानार्थवर्गमें-कान्तादिवर्ग, अव्ययवर्गमें—अनेकार्थ एकार्थवर्ग, और लिङ्गादिसंग्रहवर्गमें—स्त्री-लिङ्गादिवर्ग) का संश्रय करते हैं ॥

१. 'वर्गसंग्रह' शब्दके पेटुः । सामान्यकाण्डे ये ५ वर्गः स 'वर्गसंग्रह' इति योजना इति स्त्री० स्था० ॥

परिभाषा—

१ 'स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।
गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥

१. अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः ।

२ सुकृती पुण्यवान् धन्यो—

१ जिस प्रकार स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग आदिके सहित (स्त्री, दारा, कलत्र,..... शब्द) पदोंसे स्त्री, दारा, कलत्र आदि जो विशेष्य हैं, उनके भेदक गुण (सुकृती, साधु,.....) द्रव्य (दण्ड,.....) और क्रिया (पढ़ना, पढ़ाना, पकाना, बोलना,.....) से युक्त शब्द वैसे ही होते हैं अर्थात् प्रथम काण्डमें प्रायः रूप आदिके भेदसे लिङ्गका ज्ञान होता है, किन्तु इस (सामान्य) काण्डमें जो शब्द कहे गये हैं, वे शब्द 'गुण, द्रव्य और क्रिया' से युक्त विशेष्योंके अधीन हैं । ('तीनोंके क्रमशः उदाहरण । १ गुणयुक्त जैसे—सुकृतिनी, साध्वी पुण्यवती वा स्त्री; सुकृतिनः, साधवः, पुण्यवन्तो वा दाराः ; सुकृति, साधु, पुण्यवत् वा कलत्रम् ; । २ द्रव्ययुक्त जैसे—दण्डिनी स्त्री, दण्डिनो दाराः, दण्डि कलत्रम् ; । ३ क्रियायुक्त जैसे—'अध्यापिका स्त्री, अध्यापका दाराः, अध्यापकं कलत्रम्;..... । इन उदाहरणोंमें 'स्त्री, दारा और कलत्र' शब्दोंके क्रमशः 'स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' होनेसे गुणयुक्त 'सुकृती, साधु,.....' शब्द, द्रव्ययुक्त 'दण्डि,.....' शब्द और क्रियायुक्त 'अध्यापिका,.....' शब्द भी क्रमशः 'स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग'में ही प्रयुक्त होते हैं । इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये) ॥

१. अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः ।

१ सुकृती (= सुकृतिन्), पुण्यवान् (पुण्यवत्), धन्यः (१ जि), भाग्यवान्' के ३ नाम हैं ॥

१. 'दारावत्' इति पाठो युक्तः । 'स्त्रीदाराद्यैरित्येके, स्त्रीपुन्नपुंसकैरित्यर्थ' इति स्त्री० स्वा० ।

—१ महेच्छस्तु महाशयः ।

२ हृदयालुः * सुहृदयो ३ महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

४ प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षितः ।

वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥

५ पूजः प्रतीक्ष्यः ६ सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।

७ 'दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

८ 'स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ।

९ जैवात्कः स्यादायुष्मान् —

१ महेच्छः, महाशयः (२ त्रि), 'बड़े एवं उन्नत अभिप्रायवाले' के २ नाम हैं ।

२ हृदयःलुः (+ हृदयिकः), सुहृदयः (सुहृदयः । २ त्रि), 'अच्छे स्वभाववाले' के २ नाम हैं ॥

३ महोत्साहः, महोद्यमः (+ उद्यमवान् = उद्यमवत् । २ त्रि), 'उद्यमी' के ३ नाम हैं ॥

४ प्रवीणः, निपुणः, अभिज्ञः, विज्ञः, निष्णातः, शिक्षितः, वैज्ञानिकः (+ विज्ञानिकः), कृतमुखः, कृती (= कृतिन्), कुशलः (+ कृतकर्मा = कृत-कर्मन्, कृतार्थः, कृतकृत्यः, कृतहस्तः । १० त्रि), 'शिक्षित, ज्ञानी, लोक-चतुर' के १० नाम हैं ॥

५ पूज्यः, प्रतीक्ष्यः (२ त्रि), 'पूजा करने योग्य' के २ नाम हैं ॥

६ सांशयिकः, संशयापन्नमानसः (२ त्रि), 'सन्देहयुक्त' के २ नाम हैं ॥

७ दक्षिणीयः (+ दक्षिण्यः), दक्षिणार्हः, दक्षिण्यः (+ दक्षिण्यः । ३ त्रि), 'दक्षिणा देने योग्य ब्राह्मणादि' के ३ नाम हैं ॥

८ वदान्यः (+ वदान्यः), स्थूललक्ष्यः (+ स्थूललक्ष्यः), दानशौण्डः, बहुप्रदे (४ त्रि) 'बहुत दान करने वाले' के ४ नाम हैं ॥

९ जैवात्कः, आयुष्मान् (= आयुष्मत् । २ त्रि), 'बहुत उम्रवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'सहृदयः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

२ परीक्षकः कारणिको ३ वरदस्तु ॥ समर्थकः ।

४ हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना दृष्टमानसः ॥ ७ ॥

५ दुर्मना विमना अन्तर्मनाः ६ स्यादुत्क उन्मनाः ।

७ दक्षिणे सरलोदारौ ८ सुकलो दातृभोक्तरि ॥ ८ ॥

९ तत्परः प्रसितासक्ता १० विष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

१ अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् (= शास्त्रविद् । २ त्रि), 'शास्त्र पढ़े हुए' के २ नाम हैं ॥

२ परीक्षकः, कारणिकः (आक्षरालिकः । २ त्रि), 'परीक्षा करने-वाले या मठादिमें ब्रह्मण आदिकी परीक्षाकर दान आदि दे-वाले दानाध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

३ वरदः, समर्थकः (+ समर्थुः । २ त्रि), 'वर देने वाले' के २ नाम हैं ॥

४ हर्षमाणः, विकुर्वाणः, प्रमनाः (= प्रमनस्), दृष्टमानसः (४ त्रि), 'प्रसन्न चित्तवाले' के ४ नाम हैं ।

५ दुर्मनाः (= दुर्मनस्), विमनाः (= विमनस्), अन्तर्मनाः (= अन्तर्मनस् । ३ त्रि), 'उदास चित्तवाले' के ३ नाम हैं ॥

६ उत्कः, उन्मनाः (= उन्मनस् । + सोत्कण्ठः, उत्कण्ठितः, उत्सुकः । २ त्रि), 'उत्सुक' के २ नाम हैं ॥

७ दक्षिणः, सरलः, उदारः (३ त्रि), 'सरल स्वभाववाले' के ३ नाम हैं ॥

८ सुकलः (त्रि), 'दिल खोजकर देने और खानेवाले' का १ नाम है ॥

९ तत्परः, प्रसितः आसक्तः (३ त्रि), 'तैयार, काममें लगे हुए' के ३ नाम हैं ॥

१० इष्टार्थोद्युक्तः, उत्सुकः (२ त्रि), 'अपने इष्टसिद्धिके लिये काममें लगे हुए' के २ नाम हैं । ('अन्याचार्योके मतसे 'तत्परः,' ५ नाम एकार्थक हैं । पाठभेदसे 'तत्परः,' ३ और 'आविष्टः' ये ४ नाम पूर्वार्थक और 'उद्युक्तः, उत्सुकः' ये २ नाम 'उत्सुक' के हैं) ॥

१. समर्थुः इति पाठान्तरम् ॥

२. 'प्रसितासक्ताविष्टा उद्युक्त' इति पाठान्तरम् ॥

- १ प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥
- २ गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणद्वितलक्षणौ ।
- ३ इभ्य आढयो धनी ४ स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥
अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।
- ५ अधिकर्द्धिः समृद्धः स्याद् ६ कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥
स्याद्भ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ।
- ७ वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो द्वि सः ॥ १२ ॥
- ८ निर्वायः कार्यकर्त्ता यः सम्पन्नः सत्त्वसम्पदा ।

१ प्रतीतः, प्रथितः, ख्यातः (+ विख्यातः, प्रसिद्धः), वित्तः, विज्ञातः, विश्रुतः (६ त्रि), 'मशहूर, प्रसिद्ध' के ६ नाम हैं ॥

२ कृतलक्षणः, आहतलक्षणः (आहितलक्षणः । २ त्रि), 'विद्या, शिल्प आदि किसी गुणसे प्रसिद्ध' के २ नाम हैं ॥

३ इभ्यः, आढयः, धनी (= धनिन् + धनिकः । ३ त्रि), 'धनी' के ३ नाम हैं ॥

४ स्वामी (= स्वामिन्), ईश्वरः, पतिः, ईशिता (ईशितृ), अधिभूः, नायकः, नेता (= नेतृ), प्रभुः (विभुः), परिवृढः, अधिपः (१० त्रि), 'स्वामी, मालिक' के १० नाम हैं ॥

५ अधिकर्द्धिः, समृद्धः (१ त्रि), 'बहुत समृद्धिवाला' के १ नाम हैं ॥

६ कुटुम्बव्यापृतः, भ्रम्यागारिकः (२ त्रि), वराधिः (नि० पु), 'परिवारके पालन-पोषणमें लगे हुए' के ३ नाम हैं ॥

७ सिंहसंहननः (त्रि), 'सुडौल तथा सुन्दर शरीरवाले' का १ नाम है ॥

८ निर्वायः (दिव्यः । त्रि),^१ सत्त्वसंपत्ति (सुख-दुःखमें बराबर सहसाह) से काम में लगनेवाले का १ नाम है ॥

१. 'निर्वायः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'स्यसनेऽभ्युदये वापि क्वचिकारि सदा मनः ।

तत्तु सत्त्वमिति प्रोक्तं नयविद्भिर्बुधैः किम् ॥ १ ॥ इति ॥

- १ अवाचि मूकोऽथ^१ मनोजवसः पितृसन्निभः ॥ १३ ॥
 २ सत्कृत्यालङ्कृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ।
 ४ लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान् ५ स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥
 ६ दयालुः कारुणिकः कृपालुः सुरतः समाः ।

१ अवाक्: (= अवाच्), मूकः (२ त्रि), 'गूंगे' के २ नाम हैं ॥

२ मनोजवसः (+ मनोजवः, मनोजवाः = मनोजवस्), पितृसन्निभः (२ त्रि), 'ज्ञान, पद या अवस्थादिके कारण पिताके समान पूज्य व्यक्ति' के २ नाम हैं ॥

३ कूकुदः (+ कूकुदः । त्रि), 'कन्याको भूषण वस्त्रादिसे अलङ्कृतकर विद्वान् धरको तुलाकर कन्यादान करनेवाले' का १ नाम है । ('इस तरह 'ब्राह्म-विवाह' में होता है । ब्राह्म १, देव २, अर्ष ३, प्रजापत्य ४, आसुर ५, गान्धर्व ६, राक्षस ७ और पैशाच ८, ये आठ प्रकार के विवाह होते हैं') ॥

४ लक्ष्मीवान् (= लक्ष्मीवत्), लक्ष्मणः, श्रीलः (+ रलीलः), श्रीमान् (= श्रीमत् । ४ त्रि), 'श्रीमान्' के ४ नाम हैं ॥

५ स्निग्धः, वत्सलः (२ त्रि), 'स्नेह करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ दयालुः, कारुणिकः, कृपालुः, सुरतः (+ सुरतः । ४ त्रि), 'दया करनेवाले' के ४ नाम हैं ॥

१. 'मनोजवः स' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं मनुना—'ब्राह्मो देवस्तथैवार्षः प्रजापत्यस्तथासुरः ।

गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽवधमः ॥ १ ॥

तत्र 'ब्राह्मविवाह'कक्षणम्—

आच्छाद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम् ।

आहूय दानं कन्याया ब्राह्मं धर्मं प्रचक्षते' ॥१॥ इति च मनुः ॥१२१, २७॥

अधिकं द्रष्टुमिच्छुकैर्मनुस्मृतौ (१।२१-३४), इक्ष्वाकस्मृतौ (४।२-३), याज्ञवल्क्यस्मृतौ (१।५८-६१), चतुर्वर्गचिन्तामणेः (हेमाद्रेः) वानवाण्डे (पु० ६४५-६४८) च द्रष्टव्यम् ॥

- १ स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥
- २ परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ।
- ३ अधोनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥
- ४ खलपूः स्याद्बहुकरो ५ दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।
- ६ जाह्नमोऽसमीक्ष्यकारी स्यात् ७ कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥
- ८ कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः ९ क्रियावान् कर्मसूद्यतः ।
- १० स कर्मः कर्मशीलो यः—

१ स्वतन्त्रः, अपावृतः, स्वैरी (= स्वैरिन् । स्वैरः) स्वच्छन्दः, निरवग्रहः (+ निर्यन्त्रणः, निरङ्कुशः, स्वाधीनः, यथाकमो = यथाकामिन् । ५ त्रि), 'स्वतन्त्र' के ५ नाम हैं ॥

२ परतन्त्रः, पराधीनः, परवान् (= परवत्), नाथवान् (= नाथवत् । ४ त्रि), 'पराधीन' के ४ नाम हैं ॥

३ अधीनः, निघ्नः, आयत्तः, अस्वच्छन्दः, गृह्यकः (५ त्रि), 'वश' अशीन' के ५ नाम हैं । ('एक आचार्य के मतसे 'परतन्त्रः,'.....' ९ नाम 'पराधीन' के ही हैं') ॥

४ खलपूः बहुकरः (२ त्रि), 'खलिहान या जमीनको साफ करने-वाले' के २ नाम हैं ॥

५ दीर्घसूत्रः (+ दीर्घसूत्री = दीर्घसूत्रिन्), चिरक्रियः (२ त्रि), 'दीर्घ-सूत्री' अर्थात् 'काममें बहुत देर लगानेवाले, के २ नाम हैं ॥

६ जाह्नमः, असमीक्ष्यकारी (= असमीक्ष्यकारिन् । २ पु), 'बिना वि-चार के काम करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ कुण्ठः (त्रि), 'थोड़ा काम करनेवाले' अर्थात् 'काम करनेमें मन्द' का १ नाम है ॥

८ कर्मक्षमः, अलङ्कर्मिणः (२ त्रि), 'काम करनेमें समर्थ' के २ नाम हैं ॥

९ क्रियावान् (= क्रियावत् । त्रि), 'काममें लगे या तैयार रहनेवाले' का १ नाम है ॥

१० कर्मः, कर्मशीलः, (२ त्रि), महे० के मतसे 'सर्वदा काममें लगे रहनेवाले' के और भा० दो० के मतसे 'बिना फलकी इच्छा किये काम करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

—१ कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

- २ भरण्यभुक्कर्मकरः ३ कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।
 ४ अपस्नातो मृतस्नातः ५ आमिषाशी तु शौक्लः ॥ १९ ॥
 ६ बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ।
 ७ पराजः परपिण्डादो ८ भक्षको घस्मरोऽन्नरः ॥ २० ॥
 ९ आधूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते ।
 १० उभौ त्वात्मम्भरिः कुक्षिम्भरिः श्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

१ कर्मशूरः, कर्मठः (२ त्रि), 'आरम्भ किये हुए कामको यत्नपूर्वक पूरा करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ भरण्यभुक् (= भरण्यभुज् । + भरण्यभुक् = कर्मण्यभुज्), कर्मकरः (२ त्रि), 'मजदूर या मूल्य लेकर काम करनेवाले नौकर आदि' के २ नाम हैं ॥

३ कर्मकारः (त्रि), 'विना वेतन आदि लिये काम करनेवाले' का १ नाम है । (जैसे—स्वयंसेवक, अमदानी,) ॥

४ अपस्नातः, मृतस्नातः (२ त्रि), 'मरे हुए परिवार आदिके उद्देश्यसे स्नान किये हुए' के २ नाम हैं ॥

५ आमिषाशी (= आमिषाशिनः), शौक्लः (+ शाक्लः, शुक्लः । २ त्रि), 'मांस खानेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ बुभुक्षितः क्षुधितः, जिघत्सुः, अशनायितः (४ त्रि), 'भूखे हुए' के ४ नाम हैं ॥

७ पराजः, परपिण्डादः (२ त्रि), 'दूसरेके अन्नको खाकर जीनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ भक्षकः, घस्मरः, अन्नरः (३ त्रि), 'बहुत खानेवाले' के ३ नाम हैं ॥

९ आधूनः, औदरिकः (२ त्रि), 'अत्यन्त भूखे हुए' के २ नाम हैं ॥

१० आत्मम्भरिः, कुक्षिम्भरिः (+ उदरम्भरिः । २ त्रि), 'पेट' अर्थात् 'अपने पेट भरनेसे मतलब रखनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'कर्मण्यभुक्कर्मकरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. अर्थं प्राक् (२।१०—१५) उक्तोऽपि पर्यायान्तररूपनायेह पुनरप्युक्तः ॥

- १ सर्वाज्ञानस्तु सर्वाज्ञभोजी २ गृध्रस्तु गर्धनः ।
लुब्धोऽभिलाषुकस्तृणक् ३ समी लोलुपलोलुभी ॥ २१ ॥
- ४ सोन्मादस्तून्मदिणुः स्यादविनीतः समुद्धतः ।
- ६ मत्ते शौण्डाकदक्षीबाः ७ कालुके कमिताऽनुकः ॥ २३ ॥
- कम्रः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः ।
- ८ छेको विदग्धे ९ व्यसनिपञ्चभद्रावुपप्लुते (१)

१ सर्वाज्ञानः, सर्वाज्ञभोजी (= सर्वाज्ञभोजिन् । १ त्रि), 'सर्व जातिके अन्नको खानेवाले औद्यङ् परमहंस आदि' के २ नाम हैं । (ऐसा पक्षी होता था, किन्तु वर्तमानमें तो स्पर्शस्पर्शका विचार अत्यन्त सिध्दिल होने से ऐसे ही व्यक्तियोंकी संख्या अधिक हो गयी है) ॥

२ गृध्रः (+ गृध्नः), गर्धनः, लुब्धः, अभिलाषुकः, तृणक् (= तृणज् । + तृणकः । ५ त्रि), भा० दी० के मतसे 'लोभी' के ५ नाम हैं । ('महे० आदिके मतसे गृध्रः, ' २ नाम 'आकाङ्क्षा करनेवाले' के और 'लुब्धः, ' १ नाम 'अभिलाष करनेवाले' के हैं) ॥

३ लोलुपः, लोलुभः (२ त्रि), 'अत्यन्त लोभी' के २ नाम हैं ॥

४ सोन्मादः (+ उन्मदः, सून्मदः), उन्मदिणुः (२ त्रि), 'पागल' के २ नाम हैं ॥

५ अविनीतः, समुद्धतः (+ निर्मयादः । २ त्रि), 'उद्धत' के २ नाम हैं ॥

६ मत्तः, शौण्डः, उदकटः (+ उद्रिक्तः), क्षीबः (+ क्षीबा = क्षीबन् । ४ त्रि), 'मतवाले' के ४ नाम हैं ॥

७ कामुकः, कमिता (= कमित्), अनुकः, वम्रः, कामयिता (= कामयित्), अभीकः, कमनः, कामनः, अभिकः (१ त्रि), 'कामी' के ९ नाम हैं ॥

८ [छेकः, विदग्धः (२ त्रि), 'विदग्ध, चतुर' के २ नाम हैं] ॥

९ [व्यसनी (= व्यसनिन्), पञ्चभद्रः, उपप्लुतः (+ विप्लुतः । ३ त्रि), 'व्यसनी' के ३ नाम हैं ॥

१. 'गृध्रस्तु' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'उन्मदस्तून्मदिणुः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कामनः कमनोऽभिकः' इति तु युक्तः पाठः इति क्षी० स्वा० ॥

४. 'छेको.....विटः' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूकमुपलभ्यते, इत्यतोऽस्य प्रकृतोपयोगितयात्र क्षेपकरूपेण मया निहितः ॥

- १ वेश्यापतिर्भुजङ्गः स्यात् २ पिङ्गः पल्लविको विटः (२)
 ३ विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रयः ॥ २४ ॥
 ४ वश्यः प्रणेयो ५ निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।
 ६ धृष्टे 'धृष्टण्वियातश्च ७ प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥
 ८ स्यादधृष्टे तु शालीनो ९ विलक्षो विस्मयान्विते ।
 १० अधीरे कातरः ११ क्स्ते भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥

१ [वेश्यापतिः (+ गणिकापतिः), भुजङ्गः (२ पु), 'वेश्याके पति' अर्थात् 'रणवीराज' के २ नाम हैं] ॥

२ [पिङ्गः, पल्लविकः (+ पल्लवकः), विटः (+ न । ३ पु), 'विट' के ३ नाम हैं] ॥

३ विधेयः, विनयग्राही (= विनयग्राहिन्), वचनेस्थितः, आश्रयः (४ त्रि), 'आज्ञाकारी' के ४ नाम हैं । (किसी २ आचार्यके मतसे प्रथम दो नाम मिले विनय सिलखलाया जाय उसके तथा अन्तवाले दो नाम आज्ञाकारीके हैं) ॥

४ वश्यः, प्रणेयः (२ त्रि), 'वशमें रहनेवाले' के २ नाम हैं । ('किल्ली २ के मतसे 'विधेयः,' ६ नाम एकार्थक हैं ') ॥

५ निभृतः, विनीतः, प्रश्रितः (३ त्रि), 'विनीत' के ३ नाम हैं ॥

६ धृष्टः, धृष्टणक् (= धृष्टणज् । + धृष्टण्) वियातः (३ त्रि), 'ढीठ' के ३ नाम हैं ॥

७ प्रगल्भः, प्रतिभान्वितः (२ त्रि), 'प्रतिभाशाली' (नवीन २ बुद्धिवाले ^२) के २ नाम हैं ॥

८ अधृष्टः, शालीनः (२ त्रि), 'सलज्ज' अर्थात् 'जो ढीठ नहीं हो उस' के २ नाम हैं ॥

९ विलक्षः, विस्मयान्वितः (२ त्रि), 'आश्चर्यसे युक्त' के २ नाम हैं ॥

१० अधीरः, कातरः (२ त्रि) 'भूख, प्यास या भय आदिसे व्याकुल' के २ नाम हैं ॥

११ क्स्ते (= क्स्तुः), भीरुः, भीरुकः, भीलुकः (+ वरितः । ४ त्रि), 'डरे हुए या डरनेवाले' के ४ नाम हैं ॥

१. 'धृष्टण्वियातश्च' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'प्रज्ञा नवनशीर्म्भश्चाकिनी प्रतिभा मता' ॥ इति ॥

- १ आशंसुराशंसितरि २ गृहयालुग्रहीतरि ।
 ३ भद्रालुः भद्रया युक्ते षपतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥
 ५ लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णु ६ वन्दाररभिवादके ।
 ७ शरारुर्वातुको द्विष्टः ८ स्याद्वर्षिष्णुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥
 ९ उत्पतिष्णुस्तुत्पतिता १० ऽलङ्कारिष्णुस्तु मण्डनः ।
 ११ भूष्णुर्भविष्णुर्भविता १२ वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥
 १३ निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्यात्—

१ आशंसुः, आशंसिता (= आशंसितु । २ त्रि), 'अपने मनोरथको पूरा करनेकी इच्छावाले' के १ नाम हैं ॥

२ गृहयालुः, ग्रहीता (= ग्रहीतु । २ त्रि), 'लेने (ग्रहण करने) वाले' के २ नाम हैं ॥

३ भद्रालुः, (त्रि), 'भद्रा करनेवाले' का १ नाम है ॥

४ पतयालुः, पातुकः (२ त्रि), 'गिरनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ लज्जाशीलः, अपत्रपिष्णुः (२ त्रि), 'लज्जाकरनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ वन्दारः, अभिवादकः (२ त्रि), 'प्रणाम (वन्दगी आदि) करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ शरारुः, वातुकः, द्विष्टः (२ त्रि), 'हिंसा करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ वर्षिष्णुः, वर्धनः (२ त्रि), 'बढ़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ उत्पतिष्णुः, उत्पतिता (= उत्पतितु । २ त्रि), 'उत्पन्ननेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० अलङ्कारिष्णुः, मण्डनः (२ त्रि), 'अलंकृत करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

११ भूष्णुः, भविष्णुः, भविता (= भवितु । २ त्रि) 'होनहार' के २ नाम हैं ॥

१२ वर्तिष्णुः, वर्तनः (२ त्रि), 'वर्तने (व्यवहारमें काने) वाले' के २ नाम हैं ॥

१३ निराकरिष्णुः, क्षिप्नुः (+ क्षिप्नुः । २ त्रि), 'निकाखने या बहिष्कार करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

—१ सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ।

- २ ज्ञाता तु विदुरो विन्दुः विकारी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥
 ४ विस्तारो विस्मरः प्रसारी च विस्तरिणि ।
 ५ सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥
 ६ क्रोधनोऽमर्षणः क्रोधी ७ चण्डस्तव्यस्तकोपनः ।
 ८ जागरूको जागरिता ९ घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥
 १० स्वप्नश्चातुर्निद्रालु ११ निद्राणश्चिरी समी ।

१ सान्द्रस्निग्धः (सः ० दो०), मेदुरः (२ त्रि), 'घन, गन्धिन वा चिकने' के २ नाम हैं ॥

२ ज्ञाता (= ज्ञातृ), विदुरः, विन्दुः (१ त्रि), 'जागनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ विकारी (= विकारिन् । + विकारी = विकारिन्), विकस्वरः (+ विकस्वरः । २ त्रि), 'खिलने (फूलने) वाले फूल आदि' के २ नाम हैं ॥

४ विस्तारः, विस्मरः, प्रसारी (= प्रसारिन्), विस्तारी (= विसारिन् । ३ त्रि), 'फैलनेवाली लता आदि' के ४ नाम हैं ॥

५ सहिष्णुः, सहनः, क्षन्ता (= क्षन्तृ), तितिक्षुः, क्षमिता (= क्षमिन्), क्षमी (= क्षमिन् । १ त्रि), 'क्षमा करनेवाले' के ६ नाम हैं ॥

६ क्रोधनः (+ क्रोधी = क्रोधिन्), अमर्षणः, क्रोधी (= क्रोधिन् ; + रोषणः, कोपनः । ३ त्रि) 'क्रोध करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

७ चण्डः, अत्यन्तकोपनः (२ त्रि), 'बहुत क्रोध करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ जागरूकः, जागरिता (= जागरितृ । २ त्रि), 'जागनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ घूर्णितः, प्रचलायितः (२ त्रि), 'घूर्णित' अर्थात् निद्रा या नशा आदिसे व्याकुल होकर झूमनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० स्वप्नश्च (= स्वप्नञ्), शयालुः (२ त्रि), 'सोनेवाले' के २ नाम हैं ॥

११ निद्राणः (+ निद्रितः), शयितः (+ सुप्तः । २ त्रि) 'सोये हुए' के २ नाम हैं ॥

- १ पराङ्मुखः पराचीनः २ स्यादवाङ्मयघोमुखः ॥ ३३ ॥
- ३ देवानश्चति देवध्रयङ् ४ विश्वध्रयङ् विश्वगश्चति ।
- ५ यः सहाश्चति सध्रयङ् स ६ स तिर्यङ् यस्तिरोऽश्चति ॥ ३४ ॥
- ७ वदो वदावदो वक्ता ८ वागीशो वाक्पतिः स्वमौ ।
- ९ वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी १० वावदूकोतिवक्त्रिः ॥ ३५ ॥
- ११ स्याज्जल्पाकर्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ।
- १२ दुर्मुखे मुखराबद्धमुखी—

१ पराङ्मुखः (+ विमुखः), पराचीनः (२ त्रि), 'विमुख' के २ नाम हैं ॥

२ आवाङ् (= अवाच्), अधोमुखः (+ अवाचीनः । २ त्रि), 'नीचे मुख करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ देवद्रयङ् (= देवद्रयच् त्रि), 'देवताओंकी पूजा करनेवाले' का १ नाम है ॥

४ विश्वद्रयङ् (= विश्वद्रयच् । + विश्वद्रयङ् = विश्वद्रयच् । त्रि), 'सब तरफ जाने या पूजा करनेवाले' का १ नाम है ॥

५ सध्रयङ् (= सध्रयच् त्रि), 'साथ २ चलने रहने या पूजा करनेवाले' का १ नाम है ॥

६ तिर्यङ् (= तिर्यच्), 'तिर्यङ् (टेढ़ा) चलनेवाले' का १ नाम है ॥

७ वदः, वदावदः, वक्ता (= वक्तु । ३ त्रि), 'बहुत बोलनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

८ वागीशः, वाक्पतिः (२ त्रि), 'सुन्दर बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ वाचोयुक्तिपटुः (+ वाचोयुक्तिः, पटुः), वाग्मी (= वाग्मिन् । २ त्रि) 'युक्तियुक्त बोलनेवाले या नैयायिक आदि' के २ नाम हैं ॥

१० वावदूकः, अतिवक्ता (= अतिवक्तु । २ त्रि), 'चतुरतासे अधिक बोलनेवाले' के २ नाम हैं । (भा० दी० के मतसे 'वाचोयुक्तिपटुः,') ४ नाम एकार्थक हैं ॥

११ जल्पाकः, वाचालः, वाचाटः, बहुगर्ह्यवाक् (बहुगर्ह्यवाच् । ४ त्रि), 'निप्रयोजन अधिक बोलनेवाले' के ४ नाम हैं ॥

१२ दुर्मुखः, मुखरः, अबद्धमुखः (३ त्रि) 'अप्रिय बोलनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

—१ 'शक्त्वाः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥

२ लोहलः स्यादस्फुटवाग् ३ गर्हावादी तु कद्वदः ।

४ समौ कुवादकुचरौ ५ स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥

६ रवणः शब्दनो ७ नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।

८ जडोऽङ्गः—

१ शक्त्वाः (+ शक्त्वाः, शक्त्वाः), प्रियंवदः (२ त्रि), 'प्रिय बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ लोहलः, अस्फुटवाक् (= अस्फुटवाच् । २ त्रि), 'अस्पष्ट बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ गर्हावादी (= गर्हावादिन्), कद्वदः (+ दुर्वाक् = दुर्वाच् । २ त्रि) 'बुरा बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ कुवादः, कुचरः (२ त्रि), 'दोषयुक्त या दोषारोपण करते हुए बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ असौम्यस्वरः, अस्वरः (२ त्रि), 'कौवे आदिकी तरह रुखे स्वरसे बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ शब्दनः, रवणः (२ त्रि), 'विशेष शब्द करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ नान्दीवादी (= नान्दीवादिन्), नान्दीकरः (२ त्रि), नान्दी' (स्तुति-विशेष) को करनेवाले या नाटकके आरम्भमें मङ्गलपाठ करनेवाले पात्र' के २ नाम हैं ॥

८ 'जडः, अङ्गः (२ त्रि), 'जड़, मूर्ख' के २ नाम हैं ॥

१. 'शक्त्वाः' इति स्त्री० स्वा० 'शक्त्वाः' इति सर्ववर्त्य संज्ञाः पाठः ॥

२. नान्दीलक्षणं भरत आह । तद्यथा—

'आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रवर्तते ।

'देवदिनृपश्रीनां तस्मान्नान्दीति कीर्तिता' ॥ १ ॥

जडलक्षणं यथा—

'इष्टं वाऽनिष्टं वा सुखदुःखे वा न चेद् यो मोक्षाय ।

विन्दति परवशगः स भवेदिह जडसंज्ञकः पुरुषः' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ * एवमुक्तस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥

- २ तूष्णीशीलस्तु तूष्णीको ३ ननोऽवासा दिगम्बरे ।
 ४ निष्कासितोऽवकृष्टः स्यात् ५ अपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ३९ ॥
 ६ 'आत्तगर्वोऽभिभूतः स्याद् ७ दापितः साधितः समौ ।
 ८ प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्याता निराकृतः ॥ ४० ॥
 ९ 'निकृतः स्याद्विप्रकृतो १० विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।

१ एवमुक्तः (+ अनेहमुक्तः । त्रि), 'बोलने और सुननेमें अशिक्षित, बहरे, गूंगे' के २ नाम हैं ॥

२ तूष्णीशीलः, तूष्णीकः (२ त्रि), 'चुप रहनेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ ननः, अवासाः (= अवासस् । + विवासाः = विवासस्), दिगम्बरः (३ त्रि), 'नंगे' के ३ नाम हैं ॥

४ निष्कासितः (+ निष्कामितः), अवकृष्टः (२ त्रि), 'निकाले हुए' के २ नाम हैं ॥

५ अपध्वस्तः, धिक्कृतः (२ त्रि), 'धिक्कारे हुए' के २ नाम हैं ॥

६ आत्तगर्वः (+ आत्तगन्धः), अभिभूतः (२ त्रि), 'दूटे हुए अमानवाले' के २ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे 'अपध्वस्तः', ' ४ नाम एकार्थक हैं') ॥

७ दापितः (+ दायितः), साधितः (२ त्रि), 'जिससे धन आदि दिलाया गया हो उसके या दिलाये हुए धन आदि' के २ नाम हैं ॥

८ प्रत्यादिष्टः, निरस्तः, प्रत्याख्यातः, निराकृतः (४ त्रि), 'अनादरके साथ निकाले या हटाये हुए' के ४ नाम हैं ॥

९ निकृतः (+ निःकृतः), विप्रकृतः (२ त्रि), 'अनादर पाये हुए' के २ नाम हैं ॥

१० विप्रलब्धः, वञ्चितः (२ त्रि), 'ठगे गये' के २ नाम हैं ॥

१. 'जहोऽनेहमुक्तस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'आत्तगन्धोऽभिभूतः स्वाद्विभूतः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'निकृतः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ मनोदहतः प्रतिदहतः प्रतिबद्धो हरश्च सः ॥ ४१ ॥
 २ अधिक्षितः प्रतिक्षितो श्वेदो कालितसंयतो ।
 ३ आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात् ५ कान्दिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥
 ६ आक्षारितः क्षारितोऽभिगस्तो ७ संकसुकोऽस्थिरः ।
 ८ व्यसनार्तोपरक्तो द्वौ ९ विहस्तव्याकुलो समौ ॥ ४३ ॥
 १० विक्लवो विह्वलः ११ स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।
 १२ कश्यः कशाहं—

१ मनोदहतः, प्रतिदहतः, प्रतिबद्धः, हतः (४ त्रि), 'काम पूरा न होनेसे दूटे हुए मनवाले (हतोत्साह, मनदूट)' के ४ नाम हैं ॥

२ अधिक्षितः, प्रतिक्षितः (२ त्रि), 'जिससे डाढ़' (ईर्ष्या) करता हो उसीके सामने तिरस्कृत' के २ नाम हैं ॥

३ बद्धः, कालितः, संयतः (३ त्रि), 'रस्सी आदिसे बाँधे हुए' के ३ नाम हैं ॥

४ आपन्नः, आपत्प्राप्तः (२ त्रि), 'दुःखमें पड़े हुए' के २ नाम हैं ॥

५ कान्दिशीकः, भयद्रुतः (२ त्रि), 'भयसे भागे हुए' के २ नाम हैं ॥

६ आक्षारितः, क्षारितः, अभिगस्तः (३ त्रि), 'चोरी या मैथुन आदि बुरे कामके विषयमें झूठा (बिना किये भी) लोकापवाद पाये हुए' के ३ नाम हैं ॥

७ संकसुक्तः, अस्थिरः (२ त्रि), 'स्थिर नहीं रहनेवाले' के २ नाम हैं ।

८ व्यसनार्तः, उपरक्तः (२ पु) 'व्यसनसे दुःखी' के २ नाम हैं ॥

९ विहस्तः, व्याकुलः (२ त्रि), 'व्याकुल' (शोक आदिके कारण कर्तव्य (अपने करने योग्य काम), के निष्पत्ति नहीं करनेवाले) के २ नाम हैं ॥

१० विक्लवः, विह्वलः (२ त्रि), 'विह्वल' (शोकादि के कारण अपने शरीरको संभालनेमें असमर्थ) के २ नाम हैं ॥

११ विवशः, अरिष्टदुष्टधीः (२ त्रि); 'मृत्युकाल समीप होनेसे अस्थिर बुद्धिवाले' के २ नाम हैं ॥

१२ कश्यः, कशाहः (२ त्रि), 'कोड़ेसे मारने योग्य मनुष्य, धाँड़े आदि' के २ नाम हैं ॥

—१ सद्यस्ते स्वाततायी वधोद्यते ॥ ४४ ॥

२ द्वेष्ट्ये त्वत्तिगतो ३ वध्यः शीर्षच्छेद्यः ४ मौसमौ ।

४ द्विष्ट्यो विषेण यो वध्यो ५ मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥

६ 'शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा ७ चपलश्चिकुरः समौ ।

१ 'आततायी (= आततायिन् त्रि), 'आततायी' अर्थात् 'मारनेके लिपे तैयार' का १ नाम है ॥

२ द्वेष्ट्यः, अत्तिगतः (२ त्रि), 'आँखों में गड़े हुए' अर्थात् 'बैर करने योग्य' के २ नाम हैं ॥

३ वध्यः, शीर्षच्छेद्यः (२ त्रि), 'मारने योग्य, या शिर काट लेने योग्य' के २ नाम हैं ॥

४ विष्यः (त्रि), 'विष खिलाकर मारने योग्य' का १ नाम है ॥

५ मुसल्यः (त्रि), 'मुसलसे मारने योग्य' का १ नाम है ॥

६ शिश्विदानः, अकृष्णकर्मा (= अकृष्णकर्मन् । २ त्रि), 'पुण्य कर्म करनेवाले' के (तथा पाठभेदसे—'शिश्विदानः, कृष्णकर्मा (= कृष्णकर्मन् । २ त्रि), 'पाप कर्म करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ चपलः, चिकुरः (२ त्रि), 'चपल या दोषको बिना विचारे ही मारनेके लिप तैयार' के २ नाम हैं ॥

३. 'शिश्विदानः कृष्णकर्मा' इति पाठान्तरम् ॥

४. वधस्थोपलक्षगतयाऽन्येऽपि संग्रह्यास्त आततायिनो यथा—

'अग्निदो गोरदश्चैव शस्त्राणिर्धनापहः ।

क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते आततायिनः' ॥ १ ॥ इति ॥

यथा वा—

'उद्यत्तासिर्विषाग्निश्च शायोद्यतकरस्तथा ।

आधर्वणेन हन्ता च पिशुनश्चापि राजनि ॥ १ ॥

भार्यातिक्रमकारी च रन्धान्वेषणतत्पराः ।

एवमाद्यान्विजानीयास्तत्त्वानिवाततायनिः' ॥ २ ॥

इति याज्ञ० स्मृति० २।२१ मितच्छटा ॥

- १ दोषैकदृक्पुरोभागी २ निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥
 ३ कर्णेजपः सूचकः स्यात् ४ पिशुनो दुर्जनः खलः ।
 ५ नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो ६ धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥
 ७ अञ्जे भूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशः ।
 ८ कदर्यं कृपणक्षुद्रकिपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥
 ९ निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ।
 १० वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

१ दोषैकदृक् (= दोषैकदृश्), 'पुरोभागी' (= पुरोभागिन् । २ त्रि)
 'केवल दोषको ही देखनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ निकृतः, अनृजुः, शठः (३ त्रि), 'शठ' के ३ नाम हैं ॥

३ कर्णेजपः, सूचकः (२ त्रि), 'सुगतस्त्रोर' के २ नाम हैं ॥

४ पिशुनः, दुर्जनः, खलः (३ त्रि) 'आपसमें फूट करानेवाले' के २ नाम हैं । (हेमचन्द्राचार्यने 'कर्णेजपः, ...' सब पर्यायोंको एकार्थक माना है) ॥

५ नृशंसः, घातुकः, क्रूरः, पापः (४ त्रि) 'क्रूर' के ४ नाम हैं ॥

६ धूर्तः, वञ्चकः (२ त्रि), 'ठग' के २ नाम हैं ॥

७ अञ्जः, मूढः, यथाजातः, मूर्खः, वैधेयः, बालिशः (+ मातृमुखः, मातृशा-
 स्तितः, अमेघाः = अमेघस् । ६ त्रि), 'मूर्ख' के ६ नाम हैं ॥

८ कदर्यः, कृपणः, क्षुद्रः, किपचानः, मितंपचः (+ किपचः, अनमितंपचः,
 कीनाशः, इहमुष्टिः । ५ त्रि), 'कृपण, कंजूस' के ५ नाम हैं ॥

९ निःस्वः, दुर्विधः, दीनः, दरिद्रः, दुर्गतः (+ दुःस्थः, अकिञ्चनः, कीकटः ।
 ५ त्रि) 'दरिद्र' के ५ नाम हैं ॥

१० वनीयकः (+ वनीपकः), याचनकः, मार्गणः, याचकः, अर्थी (= अ-
 र्थिन् । + तर्कुनः । ५ त्रि), 'याचक, माँगनेवाले' के ५ नाम हैं ॥

१. 'वनीपकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'वत्कात्वाः—

'दोषैकमादिदृक्पुः पुरोभागीति कथ्यते' इति स्त्री० स्वा० ॥

तद्वशा—.....'कर्णेजपस्तु दुर्जनः । पिशुनः सूचको नीचो दिजिहो मत्सरी खलः ।'

इति अमि० चि० १।४४

१ अहङ्कारवानहंयुः २ शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।

३ दिव्योपपादुका देवा ४ नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥

५ स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः ६ पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ।

७ उद्भिदस्तरुगुल्माद्याः—

१ अहङ्कारवान् (= अहङ्कारवत्), अहंयुः (२ त्रि), 'अहङ्कार (भम-
ण्ड) करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ शुभंयुः, शुभान्वितः (२ त्रि) 'शुभयुक्त' के दो नाम हैं ॥

३ 'दिव्योपपादुकः' (त्रि), 'स्वर्गीय देवता आदि' को कहते हैं ॥

४ जरायुजः (त्रि), 'गर्भसे उत्पन्न होनेवाले मनुष्य, गौ आदि को कहते हैं ॥

५ स्वेदजः (त्रि), 'पसीनेसे उत्पन्न होनेवाले खटमल, डंस, मश, चीलर आदि' को कहते हैं ॥

६ अण्डजः (त्रि), 'अण्डसे उत्पन्न होनेवाले पक्षी, साँप, मछली, मगर, चींटी आदि' की कहते हैं ॥

इति प्राणिवर्गः ।

७ उद्भिद् (= उद्भिद् त्रि), 'पेड़, लता, भाड़ी, घास, आदि' को कहते हैं । ('इस तरह अयोनिज १, जरायुज २ स्वेदज ३, अण्डज ४ और उद्भिज ५, ये ५ 'भूतों (जीवों) की सृष्टि' हैं; इनके चौदह अवान्तर भेद होते हैं') ॥

१. नरकव्यावृत्तये दिव्यपदम् । मातापित्रादिदृष्टकारणनिरपेक्षा अदृष्टसङ्कृतेभ्योऽणुभ्यो जाता ये देवास्ते दिव्योपपादुका उच्यन्ते इति भा० दी० । हेमचन्द्राचार्यैः 'यथोपपादुका देवनारका' (अभि० चिन्ता० ४-४२३) इति देवनारकसामान्यतया 'दिव्योपपादुक'शब्द उक्तः ॥

२. 'प्राणिनां विशेष्यनिष्पन्नासूचक' इति यावत् प्रोच्यमानवर्गान्तर्गत एवायम् ॥

३. तथा च क्षीरस्वामी—'इत्थमयोनिजजरायुजस्वेदजाण्डजोद्भिज्जत्वेन पञ्चधा भूतसर्गः । एषामेवा (वा) न्तरभेदाच्चतुर्दशविधत्वम् । यदाहुः—

'अष्टविकल्पो दैवस्तिर्यग्योनिश्च पञ्चधा भवति ।

मानुष्य एकविधः समासाद्भौतिकः सर्गः ॥ १ ॥

पैशाचो राक्षसो याक्षो गान्धर्वः शाक्र एव च ।

सौम्यश्च प्राजापत्यश्च ब्राह्मोऽष्टौ देवयोनयः ॥ २ ॥ 'इति' ॥

—१ उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥

- २ सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ।
कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥
३ तदसेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।
४ अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥
५ निकृष्टप्रतिकृष्टार्थरेफयाप्यावमाधमाः ।

१ उद्भिद (= उद्भिद्), उद्भिज्जम् (२ त्रि), उद्भिदम् (न) 'पेङ्क, लता, झाड़ी, घास आदि पौधों' के ३ नाम हैं ॥

२ सुन्दरम्, रुचिरम्, चारु, सुषमम्, साधु, शोभनम्, कान्तम्, मनोरमम् (+ मनोहरम्), रुच्यम्, मनोज्ञम्, मञ्जु, मञ्जुलम् (+ मनोहारि = मनोहारिन्, हारि = हारिन्, वल्लु, अभिरामम्, वन्धुरम् । १२ त्रि), 'सुन्दर, मनोहर' के १२ नाम हैं ॥

३ असेचनकम् (+ असेचनकम् । त्रि), 'जिसके देखते रहनेसे मन तृप्त नहीं हो ऐसे अत्यन्त सुन्दर पदार्थ' का १ नाम है ॥

४ अभीष्टम्, अभीप्सितम्, हृद्यम्, दयितम्, वल्लभम्, प्रियम् (६ त्रि), 'प्रिय, अभीष्ट' के ६ नाम हैं ॥

५ निकृष्टः, प्रतिकृष्टः (+ अपकृष्टः), अर्वा (= अर्वन्), रेफः (+ रेपः), याप्यः (+ याव्यः), अवमः, अधमः, कुपूयः (+ कपूयः), कुत्सितः, अवद्यः,

हेमचन्द्राचार्यैरष्टौ जीवोत्पत्तिस्थानान्युक्तानि । तथा हि —

‘अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पीतजाः कृञ्जरादयः ।

रसजा मद्यकीटाद्या नृगवाद्या जरायुजाः ॥

यूकाद्याः स्वेदजा मत्स्यादयः संमूर्च्छनोद्भवाः ।

खजनास्तूद्भिदोऽथोपपादुका देवनारकाः ॥

अस्योनय इत्यष्टौ—’ इति अभि चिन्ता० ४१४२१—४२३ ॥

१. 'मनोहरम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'तदसेचनकम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'निकृष्टप्रतिकृष्टार्थरेफयाप्यावमाधमाः' इति पाठान्तरम् ॥

- कुपूयकुरिसतावद्यखेटगर्ह्याणकाः समाः ॥ ५४ ॥
 १ मलीमलं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ।
 २ पूतं पवित्रं मेध्यं च ३ वीघ्रं तु' विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥
 ४ निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।
 ५ असारं फल्गु ६ शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥
 ७ क्लीवे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।
 मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनववार्ध्यवत् ॥ ५७ ॥
 परार्ध्याग्रप्राग्रहरप्राग्रथाग्रव्याग्रीयमग्रियम् ।
 ८ श्रेयाञ्छ्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

खेटः, गर्ह्यः, अणकः (+ आणकः । १३ त्रि) 'खराय नीच' के १३ नाम हैं ॥

१ मलीमलम् , मलिनम् (+ म्लानम्), कच्चरम्, मलदूषितम् (+ कश्मलम् । ४ त्रि), 'मैले गन्दे' के ४ नाम हैं ॥

२ पूतम्, पवित्रम्, मेध्यम् (+ पावनम् । ३ त्रि), 'पवित्र' के ३ नाम हैं ॥

३ वीघ्रम्, विमलार्थकम् (+ विमलात्मकम् भा० दी० । २ त्रि), 'स्वभावतः पवित्र' के २ नाम हैं ॥ (यथा—तीर्थजल, अग्नि,) ॥

४ निर्णिक्तम् , शोधितम् , मृष्टम् , निःशोध्यम् , अनवस्करम् (५ त्रि), 'साफ किये हुए' के २ नाम हैं ॥

५ असारम् , फल्गु (२ त्रि), 'निर्बल, निस्तत्त्व. निःसार' के २ नाम हैं ॥

६ शून्यम् (+ शुन्यम्) वशिकम् , तुच्छम् , रिक्तम् (+ रिक्तम् ४ । त्रि), 'तुच्छ खाली' के ४ नाम हैं ॥

७ प्रधानम् (नि० न), प्रमुखः, प्रवेकः, अनुत्तमः, उत्तमः, मुख्यः, वर्यः, वरेण्यः, प्रवर्हः, अनववार्ध्यः, परार्ध्यः, अग्रः, प्राग्रहरः, प्राग्रथः, अग्रथः, अग्रीयः, अग्रियः (१६ त्रि), 'मुखिया प्रधान' के १७ नाम हैं ॥

८ श्रेयान् (= श्रेयस्), श्रेष्ठः, पुष्कलः, सत्तमः, अतिशोभनः (५ त्रि)

- १ स्युत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जराः ।
 सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५६ ॥
 २ अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ।
 ३ विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥
 वङ्गोरुविपुलं ४ पीनपीवनी तु स्थूलपीवरे ।
 ५ स्तोकाल्पक्षुल्लकाः ६ सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु ॥ ६१ ॥

‘बहुत शोभनेवाले’ के ५ नाम हैं । (अन्यार्थार्थों के मतसे प्रधानम्,
 २१ नाम ‘शोभन’ के हैं) ॥

१ व्याघ्रः, पुङ्गवः, ऋषभः, कुञ्जरः, सिंह, शार्दूलः, नागः (७ पुं), आदि
 (+ मुखः, । पुं,) ‘उत्तरपद (शब्दके आगे) में रहनेपर पूर्व शब्द
 के श्रेष्ठार्थ’ को कहते हैं । (‘जैसे—‘नरव्याघ्रः, नरपुङ्गवः, नरुपसर्जः, ...’)
 यहाँपर ‘नर’ शब्दके बाद में ‘व्याघ्र और पुङ्गव’ शब्द, तथा ‘पुरुष’ शब्दके
 बाद में ‘ऋषभ’ शब्द है, अतः ‘नरमें श्रेष्ठ, पुरुषोंमें श्रेष्ठ’ यह अर्थ
 होता है’) ॥

२ अप्राग्र्यम् (+ उपाग्रम् । त्रि), अप्रधानम् उपसर्जनम् (२ नि० न),
 ‘अप्रधान’ के २ नाम हैं ॥

३ विशङ्कटम्, पृथु, बृहत्, विशालम्, पृथुलम्, महत्, वङ्गम्, उरु, विपु-
 लम् (९ त्रि), ‘बड़े विशाल’ के ९ नाम हैं ॥

४ पीनम्, पीव (= पीवन्), स्थूलम्, पीवरम् (४ न), ‘मोटे’ के
 ४ नाम हैं ॥

५ स्तोकः, अल्पः, क्षुल्लकः (३ त्रि), ‘थोड़े’ के ३ नाम हैं ॥

६ सूक्ष्मम्, श्लक्ष्णम्, दभ्रम्, कृशम्, तनु, (५ त्रि), मात्रा, त्रुतिः

१. ‘श्रेष्ठार्थवाचकाः’ इति पाठान्तरम् ॥

२. ‘वर्षे प्रधानं युक्तमनुत्तमं सत्तमं प्रवर्णं च’ इति नाममालायां (सत्तमस्य) । ‘अग्रं
 प्राग्रहं श्रेष्ठं मुख्यवर्षप्रवर्णम्’ इति त्रिकाण्डशेषे च श्रेष्ठस्य पाठात् एकविंशतिरेव शोभनस्य
 इत्यन्ये’ इति भा० दी० ॥

स्त्रियां मात्रा वृद्धिः पुंसि लवलेशकणाणवः ।

१ अत्यल्पेऽलिपष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

२ प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदध्रं बहुलं बहु ।

'पुरुहः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥

३ परः शताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात् ।

४ गणनीये तु गणेर्यं ५ संख्यातं गणिनं ६ मथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥

विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् ।

'समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके ॥ ६५ ॥

(+ वृद्धी । २ नि० स्त्री), लवः, लेशः, कणः, अनुः (३ नि० पु), 'पतले' के ११ नाम हैं । ('भा० दी० के मत से 'स्तोकः,.....' १४ नाम 'सूक्ष्म' के ही हैं') ॥

१ अत्यल्पम् (भा० दी०), अलिपष्ठम्, अल्पीयः (= अल्पीयस्) कनीयः (= कनीयस्), अणोयः (= अणीयस् । ५ त्रि), 'बहुत काम' के ५ नाम हैं ॥

२ प्रभूतम्, प्रचुरम्, प्राज्यम्, अदध्रम्, बहुलम्, बहु, पुरुहः (+ पुरुहम्, पुरहम्), पुरु, भूयिष्ठम्, स्फारम् (+ स्फिरम्), भूयः (= भूयस्) भूरि (१२ त्रि), 'बहुत' काफ़ी' के १२ नाम हैं ॥

३ परःशतम् (त्रि), आदि (परःसहस्रम्, परोऽयुतम्, परोलक्षम्, ...), 'सौ आदि (हजार, दश हजार, लाख,) से अधिक' का १ नाम है ॥

४ गणनीयम्, गणेर्यम् (१ त्रि), 'गिन्ती करने योग्य पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

५ संख्यातम्, गणितम् (२ त्रि), 'गिने हुए' के २ नाम हैं ॥

६ समम् ('यह केवल इसी सम्पूर्ण अर्थ में सर्वनामसंज्ञक है') सर्वम्, विश्वम्, अशेषम्, कृत्स्नम्, समस्तम्, निखिलम्, अखिलम्, निःशेषम्, समग्रम्, सकलम्, पूर्णम् (+ पूर्वम्), अखण्डम्, अनूनकम् (+ अनूनम् । १४ त्रि), 'सम्पूर्ण पूरे समूचे' के १४ नाम हैं ॥

१. 'पुरुहु पुरु' इति 'पुरुहं पुरु' इति च पाठान्तरे ॥

२. 'समग्रसकलाखण्डपूर्वादि स्यादनूनके' इति क्षी० स्वा० पाठान्तरम् ॥

- १ घने निरन्तरं सान्द्रं २ पेलवं विरलं तनु ।
 ३ समीपे निकटासन्नसन्निकृष्टसनीडवत् ॥ ६६ ॥
 'सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् ।
 'उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥
 ४ संसक्ते 'त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ।
 ५ नेदिष्ठमन्तिकतमं ६ स्याद् दूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥
 ७ दवीयश्च दविष्टं च सुदूरं ८ दीर्घमायतम् ।
 ९ वर्तुलं निस्तलं वृत्तं—

१ घनम्, निरन्तरम्, सान्द्रम् (३ त्रि), 'घन गग्निन' के ३ नाम हैं ॥

२ पेलवम्, विरलम्, तनु (३ त्रि) 'विरल, फरक २ चाले' में ३ नाम हैं ॥

३ समीपः, निकटः, आसन्नः, सन्निकृष्टः, सनीडः, सदेशः, अभ्याशः (+ अभ्यासः), सविधः, समर्यादः, सवेशः, उपकण्ठः, अन्तिकः, अभ्यर्णः, अभ्यग्रा (१४ त्रि), अभितः (अव्य०), 'समीप, नजदीक' के १५ नाम हैं ॥

४ संसक्तम्, अव्यवहितम्, अपदान्तरम् (+ अपदान्तरम् (३ त्रि), 'सटे (मिले) हुप' के ३ नाम हैं ॥

५ नेदिष्ठम् (+ नेदीयः = नेदीयस्), अन्तिकतमम् (२ त्रि), 'बहुत समीपवाले' के २ नाम हैं ।

६ दूरम्, विप्रकृष्टकम् (+ विप्रकृष्टम् । २ त्रि), 'दूरवाले' के २ नाम हैं ॥

७ दवीयः (दवीयस्), दविष्टम्, सुदूरम् (३ त्रि), 'बहुत दूरवाले' के ३ नाम हैं ॥

८ दीर्घम्, आयतम् (२ त्रि), 'लम्बे' के २ नाम हैं ॥

९ वर्तुलम्, निस्तलम्, वृत्तम् (३ त्रि), 'गोलाकार' के ३ नाम हैं ॥

१. 'सदेशाभ्याससविध—' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्राभिपतिता इमी' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

—१ बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥

- २ उच्चप्रांशून्नतोदप्रोच्छ्रितास्तुङ्गे ३ ऽथ वामने ।
न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्युः ४ रवाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥
५ अरालं वृजिनं जिह्वमूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ।
आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेष्टितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥
६ ऋजुवज्जिह्वप्रगुणौ ७ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।
८ शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥
९ स्थःस्नुः स्थिरतरः स्थेया१०नेकरूपतया तु यः ।
कालव्यापी स कूटस्थः—

१ बन्धुरम् (+ बन्धूरम्), उन्नतानतम् (२ त्रि), 'ऊँच-बाल, ऊँचे-नीचे' के २ नाम हैं ॥

२ उच्चः, प्रांशुः, उन्नतः, उदग्रः, उच्छ्रितः, तुङ्गः (+ उत्तुङ्गः, उद्धुरः । ६ त्रि), 'ऊँचे' के ६ नाम हैं ॥

३ वामनः, न्यङ् (= न्यच्), नीचः, खर्वः, ह्रस्वः (५ त्रि), 'वामन, नीचे, छोटे' के ५ नाम हैं ॥

४ अवाग्रम्, अवनतम्, आनतम् (३ त्रि), 'नीचे की ओर झुके हुए' के ३ नाम हैं ॥

५ अरालम्, वृजिनम्, जिह्वम्, ऊर्मिमत्, कुञ्चितम्, नतम्, आविद्धम्, कुटिलम्, भुग्नम्, वेष्टितम्, वक्रम् (+ भङ्गुरम् । ११ त्रि), 'टेढ़े' के ११ नाम हैं ॥

६ ऋजुः, अजिह्वः, प्रगुणः (३ त्रि), 'सीधे' के ३ नाम हैं ॥

७ व्यस्तः, अप्रगुणः, आकुलः (३ त्रि), 'धबड़ाये हुए, आकुल' के ३ नाम हैं ॥

८ शाश्वतः (+ शाश्वतिकः), ध्रुवः, नित्य, सदातनः, सनातनः (५ त्रि), 'नित्य' अर्थात् 'सर्वदा स्थिर रहनेवाले' के ५ नाम हैं ॥

९ स्थास्नुः, स्थिरतरः, स्थेयान् (= स्थेयस् । ३ त्रि), 'अत्यन्त स्थिर' के ३ नाम हैं ॥

१० कूटस्थः (त्रि), 'सदा एक समान रहनेवाले' (आकाश, आत्मा आदि) का १ नाम है ॥

—१ स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

- २ चरिणु जङ्गमचरं असमिद्धं चराचरम् ।
- ३ चलनं कम्पनं कम्पं ४ चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥
चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ।
- ५ अतिरिक्तः समधिको ६ दृढसन्धिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥
- ७ कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ।
जरटं मूर्त्तिमन्मूर्त्तं ८ प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥
- ९ पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ।

१ स्थावरः, जङ्गमेतरः (२ त्रि), 'स्थावर (नहीं चलनेवाले) पहाड़, पेड़, लता आदि' के २ नाम हैं ॥

२ चरिणु, जङ्गमम्, चरम्, असम्, इङ्गम्, चराचरम् (३ त्रि), 'चल (चलने-फिरनेवाले) मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग आदि' के ६ नाम हैं ॥

३ चलनम्, कम्पनम्, कम्पम् (३ त्रि), महे० के मतसे 'काँपने (हिलने) वाले' के ३ नाम हैं ॥

४ चलम्, लोलम्, चलाचलम्, चञ्चलम्, तरलम्, पारिप्लवम्, परिप्लवम् (७ त्रि), महे० के मतसे 'चल' अर्थात् 'चलनेवाले' के ७ नाम हैं । (भा० दी० के मतसे 'चलनम्,' १० नाम 'चल' के हैं ॥

५ अतिरिक्तः, समधिकः (२ त्रि), 'अतिरिक्त फालतू' के २ नाम हैं ॥

६ दृढसन्धिः, संहतः (२ त्रि), 'अच्छी तरह मिले या जुटे हुए' के २ नाम हैं ॥

७ कर्कशम् (+ कक्खटम्, खक्खटम्), कठिनम्, क्रूरम्, कठोरम्, निष्ठुरम्, दृढम्, जठरम्, मूर्त्तिमत्, मूर्त्तम् (९ त्रि), 'कठोर, कड़े' के ९ नाम हैं ॥

८ प्रवृद्धम्, प्रौढम्, एधितम् (३ त्रि), 'बढ़े हुए' के ३ नाम हैं ॥

९ पुराणम्, प्रतनम्, प्रत्नम्, पुरातनम्, चिरन्तनम् (५ त्रि), 'प्राचीन, पुराने' के ५ नाम हैं ॥

१. 'खक्खटं' इति 'कक्खटं' इति च पाठान्तरे ॥

१ प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥

नूतनश्च २ सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ।

३ अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम् ॥ ७८ ॥

४ प्रत्यक्षे^१ स्यादैन्द्रियकं ५ मप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।

६ एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥ ७९ ॥

अप्येकसर्गं एकाग्रथोऽप्येकायनगतोऽपि सः ।

७ पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या—

१ प्रत्यग्रः, अभिनवः, नव्यः, नवीनः, नूतनः, नवः, नूतनः (७ त्रि), 'नवीन, नये' के ७ नाम हैं ॥

२ सुकुमारम्, कोमलम्, मृदुलम्, मृदु (४ त्रि), 'कोमल, मुलायम' के ४ नाम हैं ॥

३ अन्वक्, अन्वक्षम्, अनुगम्, अनुपदम् (महे० के मतसे ४ नपुंसक तथा अव्यय और क्षी० स्वा० के मतसे 'अन्वक्, अन्वक्ष, अनुपद' ये ३ अव्यय और 'अन्वक्ष, अनुपद' ये २ नपुंसक), 'बाद पीछे' के ४ नाम हैं ॥

४ प्रत्यक्षम् (+ समक्षम्), ऐन्द्रियकम् (२ त्रि), 'इन्द्रियसे ग्राह्य (ग्रहण करने योग्य)' के २ नाम हैं । ('जैसे—'कर्णेन्द्रियका ग्राह्य शब्द, नेत्रेन्द्रियका ग्राह्य घटपटादिका रूप,') ॥

५ अप्रत्यक्षम् (+ अन्ध्यक्षम्, अत्यध्यक्षम्), अतीन्द्रियम् (२ त्रि), 'इन्द्रियसे अग्राह्य (नहीं ग्रहण करने योग्य), के २ नाम हैं । (जैसे... परमाणु, ...') ॥

६ एकतानः, अनन्यवृत्तिः एकाग्रः (+ एकाग्रः), एकायनः, एकसर्गः, एकाग्रथः, एकायनगतः (७ त्रि), 'एकाग्र' के ७ नाम हैं ॥

७ आदिः (नि० पु), पूर्वः, पौरस्त्यः, प्रथमः, आद्यः (+ आदिमः, अग्रथः, अग्रिमः, अग्रीयः । ४ त्रि), 'पहला, प्रथम' के ५ नाम हैं ॥

१. 'स्यादैन्द्रियकमनध्यक्षमतीन्द्रियम्' इति '—मत्यध्यक्षमतीन्द्रियम्' इति च पाठान्तरे ॥

२. '—वृत्तिरैकाग्रैकायनावपि' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अथास्त्रियाम् ॥ ८० ॥

- अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः ।
 २ मोघं निरर्थकं ३ स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्लवणम् ॥ ८१ ॥
 ४ साधारणं तु सामान्य ५ मेकाकी 'त्वेक एककः ।
 ६ 'भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥
 ७ 'उच्चावचं नैकभेद ८ मुच्चण्डमविलम्बितम् ।
 ९ अरुन्तुदं तु मर्मस्पृक्

१ अन्तः (पु न), जघन्यम्, चरमम्, अन्त्यः, पाश्चात्यः, पश्चिमः
 (+ अन्तिमः । ५ त्रि), 'अन्त (आखीर) वाले' के ६ नाम हैं ॥

२ मोघम्, निरर्थकम् (२ त्रि), 'निष्फल, बेकाम' के २ नाम हैं ॥

३ स्पष्टम् (+ विस्पष्टम्), स्फुटम् (+ प्रस्फुटम्), प्रव्यक्तम् (+ व्यक्तम्), उल्लवणम् (४ त्रि), 'स्पष्ट' के ४ नाम हैं । (किसीके मतसे 'स्पष्टम्, स्फुटम्' ये २ नाम 'स्पष्ट' के और 'प्रव्यक्तम्, उल्लवणम्' ये २ नाम 'खुलासा, साफ' के हैं) ॥

४ साधारणम्, सामान्यम् (२ त्रि), 'साधारण, मामूली' के २ नाम हैं ॥

५ एकाकी (= एकाकिन्), एकः, एककः, (+ एकलः । ३ त्रि), 'अकेले' के ३ नाम हैं ॥

६ भिन्नः (भिन्नके पर्यायवाचक सत्र शब्द), अन्यतरः (+ एकतरः), एकः, त्वः, अन्यः, इतरः (६ त्रि), 'भिन्न, दूसरे, अलग' के ६ नाम हैं ॥

७ उच्चावचम्, नैकभेदम् (२ त्रि), 'अनेक प्रकारवाले' के २ नाम हैं ॥

८ मुच्चण्डम्, अविलम्बितम् (+ अविलम्बयम् । २ त्रि), 'जल्दबाज, शीघ्रता करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ अरुन्तुदः, मर्मस्पृक् (= मर्मस्पृश् । २ त्रि), 'मर्मस्थलको पीड़ा देनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. एकलः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'एकतरः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बनम्' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अबाधं तु निरर्गलम् ॥ ८३ ॥

- २ प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्टु च ।
- ३ वामंशरीरं सव्यस्या ४ अपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥
- ५ संकटं ना तु संबाधः ६ कलिलं गहनं समे ।
- ७ सकीर्णं संकुलाकीर्णं ८ मुण्डितं परिधापितम् ॥ ८५ ॥
- ९ 'ग्रन्थितं संदितं दब्धं—

१ अबाधम्, निरर्गलम् (+ उदामम्, उच्छृङ्खलम्, निरङ्कुशम् । २ त्रि), 'अबाध' अर्थात् 'बिना रोक-टोकवाले' के २ नाम हैं ॥

२ प्रसव्यम्, प्रतिकूलम्, अपसव्यम्, अपष्टु (+ अपष्टुरम्, विलोमम्, प्रतीपम्, विपरीतम् । ४ त्रि), 'प्रतिकूल, उलटा' के ४ नाम हैं ॥

३ सव्यम् (त्रि), 'शरीरके वाम भाग' का १ नाम है ॥

४ अपसव्यम् (त्रि), 'शरीरके दाहिने भाग' का १ नाम है ॥

५ संकटम् (त्रि), संबाधः (नि० पु), 'तङ्क रास्ता, या गली आदि' के २ नाम हैं ॥

६ कलिलम्, गहनम् (२ त्रि), 'दुःप्रवेश्य (मुश्किलसे प्रवेश करने योग्य) रास्ता, गली' जङ्गल आदि' के २ नाम हैं ॥

७ संकीर्णम् (+ कीर्णम्), संकुलम् (+ आकुलम्), आकीर्णम् (३ त्रि), 'सभा, देवदर्शन या मेले आदिके कारण मनुष्य आदिसे ठसाठस भरे हुए स्थान आदि' के ३ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे 'कलिलम्, ' ५ नाम और किसीके मतसे 'संकटम्, ' ७ नाम एकार्थक हैं) ॥

८ मुण्डितम्, परिधापितम् (२ त्रि), 'मुण्डित' अर्थात् 'मुण्डन किये हुए' के २ नाम हैं ॥

९ ग्रन्थितम् (+ गुन्थितम्, ग्रथितम्), संदितम् (+ गुम्फितम्), दब्धम् (३ त्रि), 'गुथी हुई माखा आदि' के ३ नाम हैं ॥

१. अत्र—“ग्रन्थितम्” इत्यपि पाठः । ‘गुम्फितं गुम्फितं चेत्यपि पाठः’ इति महे० । “ग्रन्थितम्, इति कचित्”—इति पीयूषव्याख्या ।—‘मवितं मर्दितम्, इति पाठे ‘मृद क्षोदे’ अनेकार्थत्वादग्रन्थने’ इति स्वामी, इति मुकुट” इति दाधिमथाः । किन्तु मुकुटोक्तं क्षी० स्वा० वचनं तद्गीकायां नोपलभ्यत इत्यवश्यम् ॥

—१ विस्त्रुतं विस्त्रुतं ततम् ।

- २ अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात् ३ प्राप्तप्रणिहितं समे ॥ ८६ ॥
 ४ वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते ।
 ५ लुत्तनुन्नास्तनिष्ठयूताविद्धक्षितेरिताः समाः ॥ ८७ ॥
 ६ परिक्षितं तु निवृत्तं ७ मूषितं मुषितार्थकम् ।
 ८ प्रवृद्धप्रसृते ९ न्यस्तनिसृष्टे १० गुणितादते ॥ ८८ ॥
 ११ निदिग्धोपचिते १२ गूढगुप्ते १३ गुण्ठितरूपिते ।

१ विस्त्रुतम्, विस्त्रुतम्, ततम्, (३ त्रि), 'फैले हुए' के ३ नाम हैं ॥

२ अन्तर्गतम्, विस्मृतम् (२ त्रि), 'भूले हुए' के २ नाम हैं ॥

३ प्राप्तम्, प्रणिहितम् (२ त्रि), 'पाये हुए' के २ नाम हैं ॥

४ वेल्लितः, प्रेङ्खितः, आधूतः, चलितः, आकम्पितः, धुतः (६ त्रि),
 'थोड़ासा कँपे हुए' के ६ नाम हैं ॥

५ लुत्तः, लुक्कः, अस्त, निष्ठयूतः (+ निष्ठूतः), आविद्धः, क्षितः, ईरितः
 (७ त्रि), 'भेजे या किसी काममें लगाये हुए' के ७ नाम हैं ॥

६ परिक्षितम्, निवृत्तम् (+ वल्यितम्, परिवेष्टितम्, परीतम् ।
 (२ त्रि), 'खाई या दिवाल आदिसे घिरे हुए' के २ नाम हैं ॥

७ मूषितम्, मुषितम् (मुषितके पर्यायवाचक सब शब्द । २ त्रि),
 'चुराए हुए' के २ नाम हैं ॥

८ प्रवृद्धम्, प्रसृतम् (२ त्रि), 'पसारे हुए' के २ नाम हैं ॥

९ न्यस्तम्, निसृष्टम् (२ त्रि), 'फँके हुए' के २ नाम हैं ॥

१० गुणितम्, आहतम् (२ त्रि), 'गुणा किये हुए अङ्क या वटी
 (घरी) हुई रस्सी आदि' के २ नाम हैं ॥

११ निदिग्धम्, उपचितम् (२ त्रि), 'बड़े (पुष्ट) हुए' के २ नाम हैं ॥

१२ गूढम्, गुप्तम् (२ त्रि), 'गुप्त' के २ नाम हैं ॥

१३ गुण्ठितम् (+ गुण्ठितम्), रूपितम् (२ त्रि), 'धूल आदिमें लिपटे
 हुए' के २ नाम हैं । (जैसे—'पदातिरन्तर्गिरिणोरुपितः' किरात १।३४) ॥

१ द्रुतावदीर्णे २ उद्गूर्णोद्यते ३ 'काचित्शिक्षियते ॥ ८९ ॥

४ घ्राणघ्राते ५ दिग्धलिप्ते ६ समुदक्तोद्घृते समे ।

७ वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥

८ रुग्णं भुग्ने ९ ऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते ।

१० स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं ११ ह्रीणह्रीतौ तु लज्जिते ॥ ९१ ॥

१ द्रुतम् , अवदीर्णम् (२ त्रि), 'पिघले हुए' के २ नाम हैं ॥

२ उद्गूर्णम् , उद्यतम् (२ त्रि), 'उठाए हुए खड्ग आदि, उठाकर तौल आदि का अन्दाजा किये हुए. या लोके हुए गैद आदि' के २ नाम हैं ॥

३ काचित् , शिक्षितम् (२ त्रि), 'खिकहरपर रखे हुए' (पाठभेद-से—कारितम् , शिक्षितम् (२ त्रि), 'खिखलाये हुए' के) २ नाम हैं ॥

४ घ्राणम् , घ्रातम् (२ त्रि), 'सूँधे हुए' के २ नाम हैं ॥

५ दिग्धम् , लिप्तम् (२ त्रि), 'लिपे हुए स्थान आदि' के २ नाम हैं ॥

६ समुदक्तम् , उद्घृतम् (२ त्रि), 'नदी, तालाब, कुँए आदिसे निकाले हुए पानी आदि' के २ नाम हैं ॥

७ वेष्टितम् , वलयितम् , संवीतम् , रुद्धम् , आवृतम् (५ त्रि), 'चारो तरफसे घेरे हुए' के ५ नाम हैं ॥

८ रुग्णम् , भुज्जम् (२ त्रि) 'व्यथित या टूटे हुए' के २ नाम हैं ॥

९ निशितम् (+ निशातम्), क्षुतम् , शातम् (+ शितम्), तेजितम् (४ त्रि), 'सान आदि देकर तेज किए हुए तलवार, भाला, चाकू आदि' के ४ नाम हैं ॥

१० विनाशोन्मुखम् (भा० दी०), पक्वम् (२ त्रि), 'पके हुए या शीघ्र नष्ट होनेवाले' के २ नाम हैं ॥

११ ह्रीणः, ह्रीतः, लज्जितः (३ त्रि), 'लजाये हुए' के ३ नाम हैं ॥

- १ वृत्ते तु^१ वृतवावृत्तौ २ संयोजित उपाहितः ।
 ३ प्राप्यं गम्यं समासाद्यं ४ स्यन्नं रीणं स्तुतं स्तुतम् ॥ ९२ ॥
 ५ संगूढः स्यात्संकलितो ६ ऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।
 ७ विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥
 ८ अवरीणो^२ धिक्कृतश्चाप्य ९ अवध्वस्तोऽवचूर्णितः ।

१ वृत्तः, वृतः, वावृत्तः (+ व्यावृत्तः । ३ त्रि), 'स्वयंवर आदि में स्वीकार किये हुए वर आदि' के ३ नाम हैं ॥

२ संयोजितः (— संयोगितः), उपाहितः (२ त्रि), 'जोड़े हुए' के २ नाम हैं ॥

३ प्राप्यम्, गम्यम्, समासाद्यम् (३ त्रि), 'जो मिल सके उस' के ३ नाम हैं ॥

४ स्यन्नम्, रीणम्, स्तुतम्, स्तुतम् (४ त्रि), 'टपके, चूप या बड़े हुए जल आदि' के ४ नाम हैं ॥

५ संगूढः, संकलितः (२ त्रि), 'जोड़े हुए अङ्क आदि' के २ नाम हैं ॥

६ अवगीतः, ख्यातगर्हणः (२ त्रि), 'संसार-प्रसिद्ध निन्दावाले' के ४ २ नाम हैं ॥

७ विविधः, बहुविधः (+ बहुरूपः), नानारूपः (+ नानाविधः) पृथग्विधः (+ पृथग्रूपः । ४ त्रि), 'अनेक प्रकार के पदार्थ आदि' के नाम हैं ॥

८ अवरीणः, धिक्कृतः (२ त्रि) 'धिक्कारे हुए' के २ नाम हैं ॥

९ अवध्वस्तः (+ अपध्वस्तः), अवचूर्णितः (२ त्रि) 'चूर्ण किये हुए' के २ नाम हैं ॥

१. त्रियते वृत्तः । वर्तते वृत्यते वा वृत्तः । वावृतः, वृतु वावृतु वरणे (वर्तते) इत्थम-
 बुद्ध्या 'वृतम्यावृतौ' इति पेटुः, लक्ष्येऽपि—ततो वावृत्तमानसेति (माना सेति.....)
 इति मट्टिः (४२८) इति क्षी० स्वा० । किन्तु सांप्रतिके मट्टिपुस्तके 'वावृत्यमानासौ' इति
 पाठ उपलभ्यते । 'वृतव्यावृत्तौ' इति महे० सम्मतं पाठान्तरम् ॥

२. 'धिक्कृतश्चाप्यपध्वस्तः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ अनायासकृतं फाण्टं २ स्वनितं ध्वनितं समे ॥ १४ ॥
 ३ बद्धे संदानितं मृतमुदितं संदितं सितम् ।
 ४ निष्पक्वे कथितं ५ पाके क्षीराज्यद्वविषां शृतम् ॥ १५ ॥
 ६ निर्वाणो मुनिवद्व्यादा ७ निर्वातस्तु गतेऽनिले ।
 ८ पक्वं परिणते ९ गूनं हन्ने १० मीढं तु सूत्रिते ॥ १६ ॥
 ११ पुष्टे तु पुषितं —

१ अनायासकृतम् (आ० दी०), फाण्टम् (२ त्रि), 'विना परिध्रम से तैयार होनैवाले' अफला आदिके काढ़ा विशेष" के २ नाम हैं ॥

२ स्वनितम्, ध्वनितम् (२ त्रि), 'ध्वनिन' अर्थात् 'अव्यक्त शब्द' के २ नाम हैं ॥

३ बद्धम्, संदानितम्, मृतम् (+ मूर्णम्), उदितम् (+ उदितम्), संदितम्, सितम् (+ यन्त्रितम्, नियमितम् । ६ त्रि), 'बँधे हुए' के ६ नाम हैं ॥

४ निष्पक्वम्, कथितम् (२ त्रि), 'अच्छी तरह पकाए या उबाले हुए' के २ नाम हैं ॥

५ शृतम् (त्रि), 'पके हुए दूध, घी और द्रव्य आदि या पाक-मात्र' का १ नाम है । (जैसे — 'शृतं क्षीरम्, अर्थात् 'पका हुआ दूध,') ॥

६ निर्वाणः (त्रि), 'मुक्तिप्राप्त मुनि या बुझी हुई अग्नि आदि' का १ नाम है ॥

७ निर्वातः (त्रि), 'विना द्रव्यके स्थान आदि' का १ नाम है ॥

८ पक्वम्, परिणतम् (२ त्रि), 'पके हुए' के २ नाम हैं ॥

९ गूनम्, हन्नम् (१ त्रि), 'पाखाना किए हुए' के २ नाम हैं ॥

१० मीढम्, सूत्रितम् (२ त्रि), 'पेशाब किए हुए' के २ नाम हैं ॥

११ पुष्टम्, पुषितम् (२ त्रि), 'पाले हुए, के २ नाम हैं ॥

—१ सोढे^१ शान्त २ मुद्धान्तमुद्गते ।

- ३ दान्तस्तु दमिते ४ शान्तः शमिते ५ प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ९७ ॥
 ६ जप्तस्तु जपिते ७ छन्नश्छादिते ८ पूजितेऽञ्जितः ।
 ९ पूर्णस्तु पूरिते १० क्लिष्टः क्लेशिते ११ अवसिते सितः ॥ ९८ ॥
 १२ प्रुष्टः प्लुष्टोषिता दग्धे १३ तष्ट्वष्टौ तनूकृते ।
 १४ वेधितच्छिद्रितौ विद्धे १५ विन्नवित्तौ विचारिते ॥ ९९ ॥

१ सोढम्, शान्तम् (२ त्रि), 'क्षमा किए हुए' के २ नाम हैं ॥

२ उद्धान्तम् (+ उद्धानम्, उद्धानम्), उद्गतम् (२ त्रि), 'वमन (उल्टी) किये हुये' के २ नाम हैं ॥

३ दान्तः, दमितः (२ त्रि) 'दमन किए हुए चत्स आदि' के २ नाम हैं ॥

४ शान्तः, शमितः (२ त्रि), 'शान्त किये गये' के २ नाम हैं ॥

५ प्रार्थितः, अर्दितः (२ त्रि), 'प्रार्थना किये हुए' के २ नाम हैं ॥

६ जप्तः, जपितः (२ त्रि), 'जनाए हुये' के २ नाम हैं ॥

७ छन्नः, छादितः (२ त्रि), 'ढके (छिपाये) हुए' के २ नाम हैं ॥

८ पूजितः, अञ्जितः (अर्चितः । २ त्रि), 'पूजा किए हुए' के २ नाम हैं ॥

९ पूर्णः, पूरितः (२ त्रि), 'पूरा किए हुए' के २ नाम हैं ॥

१० क्लिष्टः, क्लेशितः (२ त्रि), 'क्लेश पाए हुए' के २ नाम हैं ॥

११ अवसितः, सितः (२ त्रि), 'समाप्त' के २ नाम हैं ॥

१२ प्रुष्टः, प्लुष्टः, उषितः, दग्धः (४ त्रि), 'जले हुए' के ४ नाम हैं ॥

१३ तष्टः, त्वष्टः (२ त्रि), 'बसूले आदिसे छीलकर पतली की हुई लकड़ी आदि' के २ नाम हैं ॥

१४ वेधितः, छिद्रितः, विद्धः (३ त्रि), 'बर्मी या सूई आदि से छेदे हुए' के ३ नाम हैं ॥

१५ विन्नः, वित्तः, विचारितः (+ आलोचितः । ३ त्रि), 'सोचे हुए' के ३ नाम हैं ॥

१. 'शान्तमुद्धानमुद्गते' इति 'शान्तमुद्धानमुद्गते' इति च पाठान्तरे ।

२. 'पूजितेऽर्चितः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ निष्प्रमे विगतारोकौ २ विलीने विद्रुतद्रुतौ ।
- ३ सिद्धे निवृत्तनिष्पन्नौ ४ दारिते भिन्नभेदितौ ॥१००॥
- ५ ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसंततौ ।
- ६ स्याद्वर्हितं नमस्थितनमसितमपचायिताचितापचितम् ॥१०१॥
- ७ वरिवसिते वरिवस्थितमुपासितं चोपचरितं च ।
- ८ संतापितसंततौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ॥१०२॥
- ९ हृष्टे मत्तस्तुतः प्रहृष्टः प्रमुदितः प्रीतः ।

१ निष्प्रमः, विगतः, अरोकः (३ त्रि), 'विना प्रमाधाले' के १ नाम हैं ॥

२ विलीनः, विद्रुतः, द्रुतः (३ त्रि), 'स्वयं पिघले हुए बर्फ आदि' के ३ नाम हैं ॥

३ सिद्धः, निवृत्तः, निष्पन्नः (३ त्रि), 'सिद्ध हुए काम आदि' के ३ नाम हैं ॥

४ दारितः, भिन्नः, भेदितः (३ त्रि), 'फाड़े (अलग किये, चिरे) हुए काकड़ी या कपड़े आदि' के ३ नाम हैं ।

५ ऊतम्, स्यूतम्, उतम्, तन्तुसंततम्, (भा० दी० । ४ त्रि) 'बुने हुए कपड़े, थोरे, पाट आदि' के ४ नाम हैं ॥

६ अवर्हितम्, नमस्थितम्, नमसितम्, अपचायितम्, अर्चितम्, अपचितम् (६ त्रि), 'प्रणाम किये गये देवता, माता-पिता आदि गुरुजन' के ६ नाम हैं ॥

७ वरिवसितम्, वरिवस्थितम्, उपासितम्, उपचरितम् (४ त्रि), पूजित (पूजा किये गये) या सेवित देवता, माता-पिता आदि गुरुजन' के ४ नाम हैं ॥

८ संतापितः, संतप्तः, धूपितः, धूपायितः, दूनः (४ त्रि) 'तपाये या गर्म किए हुए सोना-चाँदी आदि' के ५ नाम हैं ॥

९ हृष्टः, मत्तः, तुतः, प्रहृष्टः, प्रमुदितः, प्रीतः (६ त्रि), 'खुश सन्तुष्ट' के ६ नाम हैं ॥

- १ छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् ॥१०३॥
- २ स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।
- ३ लब्धं प्राप्तं विन्नं भाषितमासादितं च भूतं च ॥१०४॥
- ४ अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।
- ५ आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ॥१०५॥
- ६ त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च ।
- ७ अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितञ्च परिभूते ॥१०६॥
- ८ त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे ।
- ९ उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् ॥१०७॥

१ छिन्नम्, छातम्, लूनम्, कृत्तम्, दातम्, दितम्, छितम्, वृक्णम् (८ त्रि), 'काटे हुए काष्ठ आदि' के ८ नाम हैं ॥

२ स्रस्तम्, ध्वस्तम्, भ्रष्टम्, स्कन्नम्, पन्नम्, च्युतम्, गलितम् (७ त्रि) 'गीरे हुए' के ७ नाम हैं ॥

३ लब्धम्, प्राप्तम्, विन्नम्, भाषितम्, आसादितम्, भूतम् (६ त्रि), 'पाये हुए' के ६ नाम हैं ॥

४ अन्वेषितम्, गवेषितम्, अन्विष्टम्, मार्गितम्, मृगितम् (५ त्रि) 'ढूँढे (खोजे) हुये' के ५ नाम हैं ॥

५ आर्द्रम्, सार्द्रम्, क्लिन्नम्, तिमितम्, स्तिमितम्, समुन्नम्, उत्तम् (७ त्रि) 'भीगे हुए' के ७ नाम हैं ॥

६ त्राणम्, त्रातम्, रक्षितम्, अवितम्, गोपायितम्, गुप्तम् (५ त्रि), 'रक्षा किये (बचाये) हुए' के ६ नाम हैं ॥

७ अवगणितम्, अवमत्तम्, अवज्ञातम्, अवमानितम्, परिभूतम् (५ त्रि), 'अपमान किये हुए' के ५ नाम हैं ॥

८ त्यक्तम्, हीनम्, विधुतम्, समुज्झितम्, धूतम्, उत्सृष्टम् (६ त्रि), 'छोड़े हुए' के ६ नाम हैं ॥

९ उक्तम्, भाषितम्, उदितम्, जल्पितम्, आख्यातम्, अभिहितम्, लपितम् (७ त्रि), 'कहे हुए' के ७ नाम हैं ॥

- १ वृद्धं वृद्धितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ।
- २ ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥
'संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।
- ३ ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९ ॥
अपि मीर्णवर्णिताभिष्टुतडितानि स्तुतार्थानि ।
- ४ 'भक्षितचर्वितलीढप्रत्यभमितगिलितखादितप्सातम् ॥ ११० ॥
अभ्यवहृतान्नजम्बप्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते ।
- ५ 'ब्राह्मण्यो ब्राह्मणहितो ६ वीतदम्भस्त्वकल्मषः (३)

१ वृद्धम्, वृद्धितम्, मनितम्, विदितम्, प्रतिपन्नम्, अवसितम्, अवगतम् (७ त्रि), 'माने या समझे हुये' के ७ नाम हैं ॥

२ ऊरीकृतम् (+ उरीकृतम्), उरीकृतम्, अङ्गीकृतम्, आश्रुतम् (+ प्रतिश्रुतम्), प्रतिज्ञातम्, संगीर्णम्, विदितम् (+ संविदितम्), संश्रुतम्, समाहितम्, उपश्रुतम्, उपगतम् (११ त्रि), 'स्वीकार (मंजूर) किये हुए' के ११ नाम हैं ॥

३ ईलितम्, शस्तम्, पणायितम्, पनायितम्, प्रणुतम्, पणितम्, पनितम्, मीर्णम्, वर्णितम्, अभिष्टुतम्, ईडितम्, स्तुतम् (१२ त्रि), 'स्तुति (बढ़ाई) किये हुए' के १२ नाम हैं ।

४ भक्षितम्, चर्वितम्, लीढम् (+ लिप्तम्), प्रत्यवसितम्, गिलितम्, खादितम्, प्सातम्, अभ्यवहृतम्, अन्नम्, जम्बम्, प्रस्तम्, ग्लस्तम्, अशितम्, भुक्ते (१४ त्रि), 'खाये, चबाये, चाटे, घोंटे (निगले) हुए' के १४ नाम हैं ॥

५ [ब्राह्मण्यः, ब्राह्मणहितः (२ त्रि), 'ब्राह्मणके लिए हित' के २ नाम हैं]

६ [वीतदम्भः, अकल्मषः (२ त्रि), 'निष्पाप, दम्भसे रहित' के २ नाम हैं] ॥

१. 'संगीर्णं संविदितं संश्रुतं' मित्यपि कचित्पाठः' इति महे० ॥

२. 'भक्षितचर्वितक्षिप्तप्रत्यवसित—' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'ब्राह्मण्यो.....धोमुखे' इत्ययं श्लेषकांशः स्त्री० स्वा० व्याख्यायां 'वाच्यं च— ब्राह्मण्यो.....धोमुखे' इत्येवं मूळभाजमुपक्रम्यते । अस्व च प्रकृतोपयोगितायादयं भवा मूळे श्लेषकत्वेन स्थापितः ॥

- १ असंमतः प्रणाययः स्या २ चक्षुष्यः प्रियदर्शनः (४)
 ३ वैरागिको विरागार्हः ४ संशितस्तु सुनिश्चितः (५)
 ५ ईर्ष्यालुः कुहनो ६ गोष्ठश्चोऽन्यद्वेषा स्वगेहगः (६)
 ७ तीक्ष्णोपायेन योऽन्विच्छेत्स आयःशूलिको जनः (७)
 ८ गेहेशूरे गृहेनर्दी पिण्डीशूरो ९ ऽथ संस्कृतः (८)
 व्युत्पन्नप्रहतक्षुण्णा १० अन्वेष्टाऽनुपदी समौ (९)
 ११ नीलीरागः स्थिरस्नेहो १२ हरिद्रारागकोऽन्यथा (१०)
 १३ आसीन उपविष्टः स्या १४ ऊर्ध्वस्थोऽर्ध्वदमौस्थिते (११)

- १ [असंमतः, प्रणाययः (२ त्रि), 'असंमत' के २ नाम हैं] ॥
 २ [चक्षुष्यः, प्रियदर्शनः (२ त्रि), 'देखनेमें प्रिय' के २ नाम हैं] ॥
 ३ [वैरागिकः, विरागार्हः (२ त्रि), 'विराग के योग्य' के २ नाम हैं]
 ४ [संशितः, सुनिश्चितः (२ त्रि) 'सुनिश्चित' के २ नाम हैं] ॥
 ५ [ईर्ष्यालुः, कुहनः (२ त्रि), 'ईर्ष्या करनेवाले' के २ नाम हैं] ॥
 ६ [गोष्ठश्चः (त्रि), 'घरबैठे दूसरेसे द्वेष करनेवाले' का १ नाम है]
 ७ [आयःशूलिकः (त्रि), 'सरल उपायसे भी होने योग्य कामको तीक्ष्ण (कठोर) उपायसे करनेवाले' का १ नाम है] ॥
 ८ [गेहेशूरः, गेहेनर्दी (= गेहेनर्दिन्), पिण्डीशूरः (३ त्रि) 'घरमें ही बहादुर बननेवाले' के ३ नाम हैं] ॥
 ९ [संस्कृतः, व्युत्पन्नः, प्रहतः, क्षुण्णः (४ त्रि), 'शास्त्रादिसे संस्कृत, व्युत्पन्न' के ६ नाम हैं] ॥
 १० (अन्वेष्टा (= अन्वेष्टृ), अनुपदी (= अनुपदिन् । २ त्रि), 'खोज (अनुसन्धान) करनेवाले' के २ नाम हैं] ॥
 ११ (नीलीरागः, स्थिरस्नेहः (२ त्रि), 'स्थिर (पक्के) प्रेमवाले' के २ नाम हैं] ॥
 १२ [हरिद्रारागकः (त्रि), 'अस्थिर (लच्चे) प्रेमवाले' का १ नाम है] ॥
 १३ [आसीनः, उपविष्टः (२ त्रि), 'बैठे हुए' के २ नाम हैं] ॥
 १४ [ऊर्ध्वस्थः, ऊर्ध्वदमः, स्थितः (३ त्रि) 'खड़े या ठहरे हुये' के ३ नाम हैं] ॥

- १ उत्पश्य उन्मुखे २ गृह्यः पक्षे (क्षये) न्युज्जस्त्वधोमुखे' (१२)
- ४ क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः ॥१११॥
'क्षिप्रश्रुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुप्रकर्षार्थाः ।
- ५ साधिष्ठद्राधिष्ठरस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥११२॥
बाढव्यायतबहुगुरुधामनबुन्दारकातिशये ।
- ६ 'ग्राम्ये ग्रामेयकग्रामीणा ७ श्वाच्छिन्नो बलाद्धृते (१३)
- ८ चोरिते मुषितं मुष्टं ९ स्थपुटं तु नतोन्नतम् (१४)
- १० उत्पाटितान्मूलितार्थमुद्धृतम्—

- १ [उत्पश्यः, उन्मुखः (२ त्रि), 'उन्मुख' के २ नाम हैं] ॥
- २ [गृह्यः, पक्षः (+ पक्षयः । २ त्रि), 'पक्ष (तरफदार)' के २ नाम हैं] ॥
- ३ [न्युज्जः, अधोमुखः (१ त्रि) 'कुबड़ा या नीचे मुखाश्रुकाये हुए' के २ नाम हैं] ॥
- ४ क्षेपिष्ठः, क्षोदिष्ठः, प्रेष्ठः, वरिष्ठः, स्थविष्ठः, बंहिष्ठः, (६ त्रि), 'बहुत जल्द, बहुत खोटा या छोटा, बहुत प्रिय, बहुत बड़ा, बहुत मोटा, और बहुत ज्यादा' का क्रमशः १—१ नाम है ॥
- ५ साधिष्ठः, द्राधिष्ठः, स्फेष्ठः, गरिष्ठः, हसिष्ठः, वृन्दिष्ठः (६ त्रि), 'बहुत भला, बहुत लम्बा, बहुत स्थिर, बहुत भारी, बहुत छोटा और बहुत प्रधान' का क्रमशः १—१ नाम है ॥
- ६ [ग्राम्यः, ग्रामेयकः, ग्रामीणः (३), 'देहाती' के ३ नाम हैं] ॥
- ७ [श्वाच्छिन्नः, बलाद्धृतः (२ त्रि), बलपूर्वक (जबर्दस्ती से) पकड़े या छिने हुए' के २ नाम हैं] ॥
- ८ [चरितम्, मुषितम्, मुष्टम् (३ त्रि), 'चुराये हुए' के ३ नाम हैं] ॥
- ९ [स्थपुटम्, नतोन्नतम् (१ त्रि), 'ऊँचे-नीचे' के २ नाम हैं] ॥
- १० [उत्पाटितम्, उन्मूलितम्, उद्धृतम् (३ त्रि), 'उखाड़े हुए' के ३ नाम हैं] ॥

१. 'बहुलप्रकर्षार्थाः' इति पाठान्तरम् । 'पीवर' इति पाठस्त्वयुक्तः चन्दोमङ्गात् । 'पीव' इति पाठे नान्तो युक्तः' इति मा० दी० । परमत्रायाँछन्दसो लक्षणस्य सर्वथा सातु समन्वयेन च्छन्दोमङ्गाभावाच्चिन्त्येयमुक्तिः ।

२. 'ग्राम्ये.....स्फुटे' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां 'वाच्यं च—'ग्राम्ये... स्फुटे' इत्येवं मूत्रमात्रमुपलभ्यते । अस्य च प्रकृतोपयोगितयाऽयं मया मूले क्षेपकत्वेन स्थापितः ।

—१ बहिते वृढम् (१५)

२ आचितं निचितं ३ पूर्णं पूरितं ४ निभृतं भृतम् (१६)

५ प्रतिश्रितं प्रविष्टं स्याद्दन्तगण्डं निरर्थकं (१७)

७ न्यञ्जितं स्यादधःक्षिप्तं ८ उदञ्जितम् (१८)

९ स्पष्टञ्चितं १० चतुर्थं तु तृतीयं तुर्यं ११ मास्थिते (१९)

आकारे श्लिष्टसंपृक्तः १२ खचिते लुपितभूषितौ (२०)

१३ प्रचर्चितं प्रतीष्टं १४ द्वेष्यामृष्याभ्रिगताः समाः (२१)

१५ श्यानं शीने—

१ [बहितम्, वृढम् (२ त्रि), 'बड़े हुए' के २ नाम हैं] ॥

२ [आचितम्, निचितम् (२ त्रि), 'घटे हुए' के २ नाम हैं] ॥

३ [पूर्णम्, पूरितम् (२ त्रि), 'पूरे हुए' के २ नाम हैं] ॥

४ [निभृतम्, भृतम् (२ त्रि), 'बश में रहनेवाले' के २ नाम हैं] ॥

५ [५ प्रतिश्रितम्, प्रविष्टम् (२ त्रि), 'प्रवेश किये (घुसे) हुए' के २ नाम हैं] ॥

६ [भ्रन्तगण्डु, निरर्थकम् (२ त्रि), 'निरर्थक, बेमतलब' के २ नाम हैं] ॥

७ [न्यञ्जितम्, अधःक्षिप्तम् (२ त्रि), 'नीचे फेंके हुए' के २ नाम हैं] ॥

८ [उदञ्जितम् (त्रि), 'उपर फेंके हुए' का १ नाम है] ॥

९ [स्पष्टम्, अक्षितम् (२ त्रि), 'स्पष्ट' के २ नाम हैं] ॥

१० [चतुर्थम्, तृतीयम्, तुर्यम् (३ त्रि), 'चौथे' के ३ नाम हैं] ॥

११ [श्लिष्टसंपृक्तः (त्रि), 'स्थायी आकारवाले' का १ नाम है] ॥

१२ [खचितः, लुपितः, भूषितः (३ त्रि), 'रत्न-जवाहिरात आदि से जड़े हुए भूषण आदि' के ३ नाम हैं] ॥

१३ [प्रचर्चितम्, प्रतीष्टम् (२ त्रि), 'चन्दनादि छिड़के हुए स्थान आदि' के २ नाम हैं] ॥

१४ [द्वेष्यः, अमृष्यः, अभ्रिगतः (३ त्रि), 'आँखमें गड़े हुए, चैरी' के तीन नाम हैं] ॥

१५ [श्यानम्, शीनम्, (२ त्रि), 'जमे हुए घी आदि' के २ नाम हैं] ॥

१— अन्विषतेऽन्वीतं २ प्रकाशप्रकटौ स्फुटौ (२२)

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

२ अथ संकीर्णवर्गः ।

३ प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णं लिङ्गमुच्येत ।

१ [अन्विषतम्, अन्वीतम् (२ त्रि), 'युक्त, सहित' के २ नाम हैं] ॥

२ [प्रकाशः, प्रकटः, स्फुटः (३ त्रि), 'प्रकट, स्पष्ट' के ३ नाम हैं] ॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

२ अथ संकीर्णवर्गः ।

३ पूर्वोक्त शब्दोंके आपसमें संकीर्ण होने (मिल जाने) के भयसे पहले नहीं कहे हुए शब्दोंके संग्रहके वास्ते 'प्रकृति—' इस श्लोकसे द्वितीय 'संकीर्ण-वर्ग' का आरम्भ करते हैं । संकीर्ण अर्थ और संकीर्ण लिङ्गसे आरब्ध होनेके कारण 'संकीर्णवर्ग' नामके इस प्रकरणमें 'प्रकृति १, प्रत्यय २ आदि (आदि)से रूपभेद ३, साहचर्य ४, के अर्थका संग्रह है) से लिङ्गोंको समझना चाहिये । ('प्रत्येकके क्रमशः उदाहरण। १ला प्रकृत्यर्थ जैसे—अपरस्पराः (त्रि), इस उदाहरणमें 'परवस्त्रिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' (पा० सू० २:४।४६) इस सूत्रसे पर (भागे) वाले शब्दके लिङ्गका अतिदेश होनेसे यहाँ (अपरस्पर शब्दमें) 'पर' शब्दके त्रिलिङ्ग होनेके कारण 'अपरस्पर' शब्द भी त्रिलिङ्ग है । इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये । २रा प्रत्ययार्थ जैसे—'शान्तिः, कृतिः, चितिः, विपतिः,.....' (स्त्री), 'हसितम्, हसनम्, जल्पितम्, शयनम्' (४ न), 'आकरः, रामः, सन्धिः,.....' (३ पु) इन उदाहरणोंमें 'स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और पुल्लिङ्ग' में किन्, आदि प्रत्ययोंके होनेसे ये शब्द भी क्रमशः स्त्रीलिङ्ग आदिमें प्रयुक्त होते हैं । इसी तरह अन्यान्य (३ रा रूपभेद और ४था साहचर्यके) उदाहरणका भी स्वयं तर्क कर लेना चाहिये)

- १ कर्म क्रिया २ तरसातस्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥
 ३ साकल्यासङ्गवचने 'पारायणतुरायणे ।
 ४ यदृच्छा स्वैरिता ५ हेतुशून्या^२ स्वास्या विलक्षणम् ॥ २ ॥
 ६ शमथस्तु शमः शान्ति ७ दान्तिस्तु दमथो दमः ।
 ८ अवदानं कर्म वृत्तं—

१ कर्म (= कर्मन् न), क्रिया (स्त्री), 'काम' के २ नाम हैं ॥

२ अपरस्परम् (१ ले अर्थमें नपुं० और दूसरे अर्थमें त्रि०^४) 'लगातार काम होते रहना, और लगातार काम करनेवाला' इन दो अर्थोंमें है ॥

३ पारायणम् , तुरायणम् (+ परायणम् , + त्रि^५ । २ न), 'पूर्ण कथन (कहना, वक्तव्य) और प्रासङ्गिक (अवसरके अनुकूल) कथन' का क्रमशः १—१ नाम हैं ॥

४ यदृच्छा, स्वैरिता (२ स्त्री), 'स्वतन्त्रता' के २ नाम हैं ॥

५ विलक्षणम् (न), 'विचित्र' अर्थात् 'निष्कारण ठहरने' का १ नाम है ॥

६ शमथः, शमः (२ पु), शान्तिः (स्त्री), 'शान्ति' के तीन नाम हैं ॥

७ दान्तिः (स्त्री), दमथः, दमः (२ पु) 'इन्द्रियोंको अपने वशमें करने' के ३ नाम हैं ॥

८ अवदानम् (+ अपदानम्), कर्मवृत्तम् (भा० दी० । २ न) 'भीते हुए काम, अच्छे काम' के २ नाम हैं ॥

१. "पारायणतुरायणे" इति "पारायणपरायणे" इति च पाठान्तरे ॥

२. "स्वास्या" इति पाठान्तरम् ॥

३. "अवदानं कर्म वृत्तं (कर्मवृत्तं)" इति "अपदानं—" इति च पाठान्तरे ॥

४. प्रथमार्थे (क्रियासातस्ये) 'अपरस्पर'शब्दस्य क्लीबत्वं यथा—'अपरस्परं गच्छन्ति स्त्रियः, पुरुषाः, कुकानि वा' । द्वितीयार्थे (क्रियावत्तां सातस्ये) 'अपरस्पर'शब्दस्य त्रिकृत्वत्वं यथा—'अपरस्पराः स्त्रियः, अपरस्पराणि कुकानि, अपरस्पोऽन्वयः;.....' ॥

५. 'पारायण' शब्दस्य क्लीबत्वमात्रे यथा—

"रत्नपारायणं नाम्ना लङ्केयं मम मैथिलि" इति मट्टिः ५।८९ ॥

'परायण' शब्दस्य त्रिकृत्त्वत्वे यथा—

"अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्विबोधिता" इति कु० सं० ४।१॥

—१ 'काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥

२ वशक्रिया संवननं ३ मूलकर्म तु कर्मणम् ।

४ विधूननं विधुवनं ५ तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥

६ पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तचारणमित्यपि ।

७ 'सेवनं सीवनं स्यूति ८ विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥

९ आक्रोशनमभीषङ्गः १० संवेदो वेदना न ना ।

११ संमूर्च्छनमभिव्याप्तिः—

१ काम्यदानम् (+ कामदानम्), प्रवारणम् (+ प्रचारणम् । २ न) 'मनचाहा' दान देने' के २ नाम हैं ॥

२ वशक्रिया (स्त्री), संवननम् (+ संवपनम्, संवदनम् । न) 'मन्त्र-मणि आदिसे वशमें करने' के २ नाम हैं ॥

३ मूलकर्म (= मूलकर्मन्, भा० दी०), कर्मणम् (२ न), 'जड़ी-बूटी आदिसे उखाटन, मारण, मोहन आदि करने' के २ नाम हैं ॥

४ विधूननम् (+ विधुननम्), विधुवनम् (२ न), 'कँपाने' के २ नाम हैं ॥

५ तर्पणम्, प्रीणनम्, अवनम् (३ न), 'तृप्त करने' के ३ नाम हैं ॥

६ पर्याप्तिः (स्त्री), परित्राणम्, हस्तधारणम् (+ हस्तधारणम् । ३ न), 'भारने के लिये उद्यत (तैयार) को रोकने' के ३ नाम हैं ॥

७ सेवनम् (+ सेवः पु), सीवनम् (१ न), स्यूतिः (स्त्री), 'सिलाई करने' के ३ नाम हैं ॥

८ विदरः (पु), स्फुटनम् (+ स्फोटनम् । न), भिदा (स्त्री), 'फटने या अलग होने' के ३ नाम हैं ॥

९ आक्रोशनम् (न), अभीषङ्गः (+ अभिषङ्गः । पु), 'गाली या शाप देने' के २ नाम हैं ॥

१० संवेदः (पु) वेदना (स्त्री न), 'अनुभव' के २ नाम हैं ॥

११ संमूर्च्छनम् (न), अभिव्याप्तिः (स्त्री), 'व्याप्त होने' अर्थात् 'चारों तरफसे बढ़ने या भर जाने' के २ नाम हैं ॥

१. 'कामदानं' इति पाठान्तरम् ।

२. 'हस्तधारम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सेवस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

—१ याच्वा भिक्षाऽर्थनाऽर्दना ॥ ६ ॥

२ वर्धनं छेदने ३ ऽथ द्वे 'आनन्दसभाजने' ।

आप्रच्छन्न ४ मथाम्नायः संप्रदायः ५ क्षये क्षिया ॥ ७ ॥

६ ग्रहे ग्राहो ७ वशः कान्ति ८ रक्षणस्त्राणे ९ रणः कणे ।

१० व्यधो वेधे ११ पचा पाके १२ हवो हूतो १३ वरो वृतौ ॥ ८ ॥

१४ ओषः प्लोषे १५ नयो नाये—

१ याच्वा, भिक्षा, अर्थना, अर्दना (४ स्त्री), 'माँगने' के ४ नाम हैं ॥

२ वर्धनम्, छेदनम्, (२ न), 'काटने' के २ नाम हैं ॥

३ आनन्दनम् (+ आमन्त्रणम्), सभाजनम्, आप्रच्छन्नम् (३ न), 'मित्र या गुरुजन आदिके आनेपर अभ्युत्थान (उठकर भगवानी), आलिङ्गन आदि और कुशल-प्रश्न आदि द्वारा उनके सत्कार करने' के ३ नाम हैं ॥

४ आम्नायः संप्रदायः (१ पु), रिवाज, कुलक्रमागत (खान्दानी) रहन-सहन या गुरु-परम्परागत उपदेश आदि' के २ नाम हैं ॥

५ क्षयः (पु), क्षिया (स्त्री), 'घटने या कम होने' के २ नाम हैं ॥

६ ग्रहः, ग्राहः (२ पु), 'ग्रहण करने, लेने' के २ नाम हैं ॥

७ वशः (पु), कान्तिः (स्त्री), 'चाहना इच्छा' के २ नाम हैं ॥

८ रक्षणः (+ रक्षा स्त्री), त्राणः (२ पु), 'रक्षा' के १ नाम हैं ॥

९ रणः, कणः (८ पु), 'शब्द करने' के २ नाम हैं ॥

१० व्यधः, वेधः, (२ पु), 'छेदने' के २ नाम हैं ॥

११ पचा (+ पक्तिः । स्त्री), पाकः (पु), 'पकाने' के २ नाम हैं ॥

१२ हवः (पु), हूतिः (स्त्री), 'पुकारने या बुलाने' के २ नाम हैं ॥

१३ वरः (पु), वृतिः (स्त्री), 'घेरे या तप, सेवा आदिसे प्रसन्न होकर देवता, गुरु आदिके वरदान देने' के २ नाम हैं ॥

१४ ओषः, प्लोषः (+ प्रोषः । २ पु), 'दाह' के २ नाम हैं ॥

१५ नयः, नायः (२ पु), 'नीति' के २ नाम हैं ॥

१. 'आमन्त्रणसभाजने इति पाठान्तरम् ॥ २. 'रक्ष' इत्यपपाठः' इति क्षी० स्था० ॥

३. तथा च काश्यः—तपोभिरिष्यते यस्तु देवेभ्यः स वरो मतः' । इति ॥

१—ज्यानिर्जीर्णौ २ भ्रमो भ्रमौ ।

३ स्फातिर्वृद्धौ ४ प्रथा ख्यातौ ५ स्पृष्टिः पृक्तौ ६ स्नवः स्रवे ॥ ९ ॥

७ पथा समृद्धौ ८ स्फुरणे स्फुरणा ९ प्रमितौ प्रमा ।

१० प्रसूतिः प्रसवे ११ श्रूयते प्राधारः १२ क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥

१३ उत्कर्षोऽतिशये १४ सन्धिः श्लेषे १५ विषय आश्रये ।

१ ज्यातिः, जीर्णः, (२ स्त्री), 'पुराना होने' के २ नाम हैं ॥

२ भ्रमः (पु), भ्रमिः (स्त्री), 'भ्रमण करने' के २ नाम हैं ॥

३ स्फातिः, वृद्धिः (२ स्त्री), 'बढ़ने' के २ नाम हैं ॥

४ प्रथा, ख्यातिः, (२ स्त्री), 'प्रसिद्धि' के २ नाम हैं ॥

५ स्पृष्टिः, पृक्तिः (२ स्त्री), 'स्पर्श करने' के २ नाम हैं ॥

६ स्नवः, स्रवः (२ पु), 'धीरे-धीरे चूने' के २ नाम हैं ॥

७ पथा (+ विधा), समृद्धिः (२ स्त्री), 'बढ़ने' के २ नाम हैं ॥

८ स्फुरणम् (+ स्फुलनम्, स्फोरणम्, स्फारणम्, स्फरणम् : न), स्फुरणा (स्त्री), 'फरकने' के २ नाम हैं ॥

९ प्रमितिः, प्रमा (२ स्त्री), 'यथार्थ ज्ञान' के २ नाम हैं ॥

१० प्रसूतिः (स्त्री), प्रसवः (पु), 'बच्चा जनने (पैदा करने)' के २ नाम हैं ॥

११ श्रूयते, प्राधारः (२ पु), 'पानी आदिके धारासे चूने या बहने' के २ नाम हैं ॥

१२ क्लमथः, क्लमः (२ पु), 'ग्लानि, खेद' के २ नाम हैं ॥

१३ उत्कर्षः, अतिशयः (२ पु), 'उत्कर्ष, बढ़ाई' के २ नाम हैं ॥

१४ सन्धिः, श्लेषः (२ पु), 'जोड़, मेल' के २ नाम हैं ॥

१५ विषयः, आश्रयः (+ आश्रयः । २ पु), 'आश्रय, अवलम्ब' के २ नाम हैं ॥

- १ क्षिपायां क्षेपणं २ गीर्णिगिरौ ३ 'गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥
 ४ उन्नाय उन्नये ५ आयः श्रयणे ६ 'जयने जयः ।
 ७ निगादो निगदे ८ मादो मद ९ उद्देग उद्देगम् ॥ १२ ॥
 १० विमर्दनं परिमलोऽ ११ भ्युपपत्तिरनुग्रहः ।
 १२ 'निग्रहस्तद्विरोधः स्यात्—

१ क्षिपा (स्त्री), क्षेपणम् (न), 'प्रेरणा करने, चलाने या फेंकने' के २ नाम हैं ॥

२ गीर्णिः, गिरिः (२ स्त्री), 'निगलने' अर्थात् 'घोंटने' के २ नाम हैं ॥

३ गुरणम् (+ गूरणम्, गोरणम् । न), उद्यमः (पु), 'उद्यम, उद्योग' के २ नाम हैं ॥

४ उन्नायः, उन्नयः (२ पु), 'उन्नति या ऊहा' के २ नाम हैं ॥

५ आयः (पु), श्रयणम् (न), 'सेवा' के २ नाम हैं ॥

६ जयनम् (न), जयः (पु), 'जीत, विजय' के २ नाम हैं । ('क्षी० स्वा० सम्मत पाठभेदसे—'जपनम् (न), जपः (पु), 'जप' के २ नाम हैं') ॥

७ निगादः, निगदः (२ पु), 'स्पष्ट कहने' के २ नाम हैं ॥

८ मादः, मदः (२ पु), 'मद, हर्ष' के २ नाम हैं ॥

९ उद्देगः, उद्देगः (२ पु), 'घबराहट' के २ नाम हैं ॥

१० विमर्दनम् (न), परिमलः (पु), 'शरीरमें कुङ्कुम, चन्दन या उषटन आदिको लगाने' के २ नाम हैं ॥

११ भ्युपपत्तिः (स्त्री), अनुग्रहः (पु) 'अनुग्रह' अर्थात् भलाई करने या बुराई से बचाने' के २ नाम हैं ॥

१२ निग्रहः (पु), (+ निरोधः, भा० द्वी० पु), 'निग्रह' अर्थात् 'बुराई करने और भलाईसे बचाने (रोकने)' का १ नाम है । ('पाठभेदसे—'विग्रहः, विरोधः (२ पु), 'विरोध' (वैर) के २ नाम हैं') ॥

१. 'गूरणमुद्यमे' इति पाठान्तरम् । २. 'जपने जपः' इति क्षी० स्वा० सम्मतं पाठान्तरम् ॥
 ३. अयं पाठो महे० सम्मतः । 'निग्रहस्तु विरोधः' इति क्षी० स्वा० पुस्तकपाठः, तत्र—'निरोध' इति पाठयम् । 'विग्रहो विरोधो वा' इति क्षी० स्वा० । 'निग्रहस्तु निरोधः' इति भा० द्वी० पाठः समीचीनो भाति ॥

—१ अभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

२ मुष्टिबन्धस्तु संप्राहो ३ डिम्बे डमरविप्लवौ ।

४ बन्धनं प्रसितिश्चारः ५ स्पर्शः स्पष्टोपतप्तः ॥ १४ ॥

६ निकारो विप्रकारः स्या ७ दाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।

८ परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥

९ अपहारस्त्वपचयः १० समाहारः समुच्चयः ।

१ अभियोगः, अभिग्रहः (२ पु) 'युद्ध आदि में ललकारने' के २ नाम हैं ॥

२ मुष्टिबन्धः, संप्राहः (२ पु) 'मुट्टी बाँधने या प्रतिमल्ल आदिको पकड़ने' के २ नाम हैं ॥

३ डिम्बः, डमरः, विप्लवः (३ पु), 'प्रलय टूटना (डाका), या हथियारों की लड़ाई' के ३ नाम हैं । (जिसे बाळक रस्सी लपेटकर बचाते हैं, उस 'लट्ट' अर्थमें भी 'डिम्ब' शब्द का प्रयोग श्रीहर्षने नैषधचरितमें किया है^२) ॥

४ बन्धनम् (न), प्रसितिः (+ प्रसृतिः । स्त्री), चारः (+ स्वारः । पु) 'बन्धन' के ३ नाम हैं ॥

५ स्पर्शः (+ स्पशः), स्पष्टा (= स्पष्ट), उपतप्ता (= उपतप्त । ३ पु), 'संतप्त या उपताप रोगसे पीड़ित' के ३ नाम हैं ॥

६ निकारः, विप्रकारः (२ पु), 'अपकार, बुराई' के २ नाम हैं ॥

७ आकारः, इङ्गः (२ पु), इङ्गितम् (न), 'मतलब के अनुसार चेष्टा' के ३ नाम हैं ॥

८ परिणामः, विकारः (२ पु), विकृतिः, विक्रिया (२ स्त्री), 'विकार, स्वभावके बदलने' के ४ नाम हैं । ('किसी-किसी के मतसे २-२ शब्द एक-र्थक हैं') ॥

९ अपहारः, अपचयः (२ पु), 'छीन लेने या घटने' के २ नाम हैं ॥

१० समाहारः, समुच्चयः (२ पु), 'बंदीरने इकट्ठा या ढेरी करने' के २ नाम हैं ॥

१. 'प्रसृतिः स्वारः स्पशः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तथा — 'बालेन नक्तं समयेन युक्तं रौप्यं लसद्भिम्बमिन्दुविम्बम् ।'

इति नै० च० २२-५३

- १ प्रस्थाहार उपादानं २ विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥
 ३ अभिहारोऽभिग्रहणं ४ निर्हारोऽभ्यवर्षणम् ।
 ५ अनुहारोऽनुकारः स्यादर्थस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥
 ७ प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात् ८ प्रवहो गमनं बहिः ।
 ९ वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥
 १० हिंसाकर्माऽभिचारः स्यात् ११ जागर्या जागरा द्वयोः ।

१ प्रस्थाहारः (पु), उपादानम् (न), 'इन्द्रियोको अपने (इन्द्रियोंक) विषयोंसे हटाकर वशीभूत करने' के २ नाम हैं ॥

२ विहारः, परिक्रमः (२ पु), 'पैदल टहलने' के २ नाम हैं ॥

३ अभिहारः (+ अभ्याहारः । पु), अभिग्रहणम् (न), 'चुराने' के २ नाम हैं ॥

४ निर्हारः (पु), अभ्यवर्षणम् (न) 'पर आदिमें चुभे (गड़े) हुए काँटे आदिको निकालने' २ नाम हैं ॥

५ अनुहारः, अनुकारः (२ पु), 'अनुकरणम् (नकल) करने' के २ नाम हैं ॥

६ व्ययः (पु), 'स्वर्च' का १ नाम है ॥

७ प्रवाहः (पु), प्रवृत्तिः (स्त्री), 'पानी आदि तरल पदार्थोंके निरन्तर बहने' के २ नाम हैं ॥

८ प्रवहः (पु) 'जलादि के बाहर निकलने (बहने)' के २ नाम हैं ॥

९ वियामः, वियमः, यामः, यमः, संयामः, संयमः (१ पु), 'संयम' अर्थात् 'योगके संयमनामक अङ्ग-विशेष' के ६ नाम हैं । ('ची० स्वा० के मत से 'अनेक तरहके यम करने, उपरति (त्याग) मात्र और संयम करने' के क्रमशः १-२ नाम हैं') ॥

१० हिंसाकर्म (= हिंसाकर्मन् न । भा० दी०), अभिचारः (पु), 'हिंसा आदि करने' के २ नाम हैं ॥

११ जागर्या (+ जाग्रिया, जागर्तिः । स्त्री), जागरा (स्त्री पु), 'जागने के २ नाम हैं ॥

- १ विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः २ स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥
 ३ निर्वेश उपभोगः स्यात् ४ परिसर्पः परिक्रिया ।
 ५ विधुरं तु प्रविश्लेषे ६ अभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥
 ७ संक्षेपणं समसनं ८ पर्यवस्था विरोधनम् ।
 ९ परिसर्था परीसारः १० स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥
 ११ विस्तारो विग्रहो व्यासः १२ स च शब्दस्य विस्तरः ।
 १३ संवाहनं मर्दनं स्यात्—

- १ विघ्नः, अन्तरायः, प्रत्यूहः (१ पु), 'विघ्न' के ३ नाम हैं ॥
 २ उपघ्नः, अन्तिकाश्रयः (भा० दी० । २ पु), 'समीप रहने आश्रय करने' के २ नाम हैं ॥
 ३ निर्वेशः, उपभोगः (२ पु), 'उपभोग' के २ नाम हैं ॥
 ४ परिसर्पः (पु), परिक्रिया (स्त्री), 'परिवार आदि इष्टजनोंसे घिरे रहने' के ४ नाम हैं ॥
 ५ विधुरम् (न), प्रविश्लेषः (पु), 'परिवार आदि इष्टजनों से अलग होने' के २ नाम हैं ॥
 ६ अभिप्रायः, छन्दः, आशयः (३ पु०), 'आशय, भाव, मतलब' के ३ नाम हैं ॥
 ७ संक्षेपणम्, सञ्जनम् (२ न), 'संक्षेप (लाघव, थोड़ा हलका) करने' के २ नाम हैं ॥
 ८ पर्यवस्था (स्त्री), विरोधनम् (न), 'विरोध करने' के २ नाम हैं ॥
 ९ परिसर्था (स्त्री), परीसारः (+ परिसारः । पु), 'सब तरफ जाने' के २ नाम हैं ॥
 १० आस्या, आसना, स्थितिः (३ स्त्री), 'टिकाव या स्थिति' के ३ नाम हैं ॥
 ११ विस्तारः, विग्रहः व्यासः (३ पु) 'फैलाव' के ३ नाम हैं ॥
 १२ विस्तरः (पु), 'शब्द के फैलाव' का १ नाम है ॥
 १३ संवाहनम् (+ संवहनम्), मर्दनम् (२ न), 'शरीर को दबाने' के २ नाम हैं ॥

—१ विनाशः स्याददर्शनम् ॥ २२ ॥

- २ संस्तवः स्यात्परिचयः ३ प्रसरस्तु विसर्पणम् ।
 ४ नीवाकस्तु प्रयामः स्यात् ५ सन्निधिः सन्निकर्षणम् ॥ २३ ॥
 ६ लवोऽभिलावो लवने ७ निष्पावः पवने पवः ।
 ८ प्रस्तावः स्यादवसर ९ ह्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
 १० प्रजनः स्यादुपसरः ११ प्रश्रयप्रणयौ समौ ।

१ विनाशः (पु), अदर्शनम् (न), 'अभ्यर्घन होने या छिप जाने' के २ नाम हैं ॥

२ संस्तवः, परिचयः (२ पु), 'परिचय' अर्थात् 'जान-पहचान' के २ नाम हैं ॥

३ प्रसरः (पु), विसर्पणम् (न), 'घाव (व्रण) आदि के थाला' (फैलाव) के २ नाम हैं ॥

४ नीवाकः, प्रयामः (२ पु), 'धान्य आदिको एकत्रित करने' के २ नाम हैं ॥

५ सन्निधिः (पु), सन्निकर्षणम् (न), 'पास, समीप करने' के २ नाम हैं ॥

६ लवः, अभिलावः (२ पु), लवनम् (न) 'काटने' के ३ नाम हैं ॥

७ निष्पावः (पु), पवनम् (न), पवः (पु), 'धान आदि अन्नको ओसाने या सूख आदिसे फटककर भूसा अलग करने' के ३ नाम हैं ॥

८ प्रस्तावः, अवसरः (३ पु), 'अवसर' प्रसर, प्रस्ताव' के २ नाम हैं ॥

९ व्रसरः (+ तसरः । पु) सूत्रवेष्टनम् (न) 'कपड़ा बुननेके लिये जुलाहा आदी सूत लपेटने (ताना-पाई करने)' के २ नाम हैं ॥

१० प्रजनः, उपसरः (२ पु), 'पहली बार गर्भ धारण करने' के २ नाम हैं ॥

११ प्रश्रयः (+ प्रसरः), प्रणयः (२ पु), 'प्रेम, प्रीति' के २ नाम हैं ॥

१. प्रसरप्रणयौ इति पाठान्तरम् ॥

१ धीशक्तिर्निष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥

२ प्रत्युत्क्रमः^१ प्रयोगार्थः ४ प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।

५ स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः ६ संभ्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥

७ प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भः—

१ धीशक्तिः (स्त्री), निष्क्रमः (पु), 'बुद्धिके सामर्थ्य' के २ नाम हैं । ('सुतनेकी इच्छा १, सुनना २, ग्रहण करना ३, धारण करना (स्थिर अर्थात् ग्राह रखना) ४, ऊहा (तर्क) ५, अपोह ६, विज्ञान ७, और तत्त्वज्ञान ८, 'ये ८ बुद्धिके गुण^२ हैं') ॥

२ संक्रमः (पु न), दुर्गसंचरः (+ दुर्गसंचारः । पु), 'किलामें जाने, दुर्ग (किला) के मार्ग' के २ नाम हैं ॥

३ प्रत्युत्क्रमः (+ प्रत्युत्क्रान्तिः स्त्री) प्रयोगार्थः (+ प्रयुद्धार्थः । 'प्रयोग' (+ प्रयुद्ध) के पर्यायवाचक सब शब्द । २ पु), 'कार्यारम्भमें पहली बार प्रयोग करने या युद्धके लिये अच्छी तरह उद्योग करने' के २ नाम हैं ॥

४ प्रक्रमः, उपक्रमः (२ पु), 'पहली बार आरम्भ करने' के २ नाम हैं ॥

५ अभ्यादानम् (न), उद्धातः (+ उपोद्धातः^३), आरम्भः (२ पु), 'आरम्भमात्र' के ३ नाम हैं । ('भा० दी० के मतसे 'प्रक्रमः,' ६ नाम 'आरम्भ' के ही हैं') ॥

६ संभ्रमः (पु), त्वरा (+ त्वरिः । स्त्री), 'शीघ्रता, जल्दीबाजी' के २ नाम हैं ॥

७ प्रतिबन्धः, प्रतिष्ठम्भः (२ पु), 'कार्य आदिमें रुकावट पड़ने' के २ नाम हैं ॥

१. 'प्रयुद्धार्थः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।

ऊहापोहौ च विज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः' ॥ २ ॥ इति ॥

३. 'उपोद्धात'लक्षणं यथा—

'चिन्तां प्रकृतिसिद्धार्थानुपोद्धातः प्रचक्षते' ॥ इति ॥

—१ अवनायस्तु ^१ निपातनम् ।

- २ उपलम्भस्त्वनुभवः ३ समालम्भा विलेपनम् ॥ २७ ॥
 ४ विप्रलम्भो विप्रयोगो ५ विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।
 ६ विभावस्तु प्रतिख्यातिः ७ अवेशः प्रतिजागरः ॥ २८ ॥
 ८ निपाठनिपटौ पाठे ९ तेमस्तेमौ समुन्दने ।
 १० आदीनवास्रवौ क्लेशे ११ मेलके सङ्गसङ्गमौ ॥ २९ ॥
 १२ संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ।

१ अवनायः (पु), निपातनम् (+ निपातनम् । न), 'नाचे झुकने' के २ नाम हैं ॥

२ उपलम्भः, अनुभवः (२ पु), 'अनुभव प्राप्ति' के २ नाम हैं ॥

३ समालम्भः (पु), विलेपनम् (न), 'चन्दन आदि लपेटने' के २ नाम हैं ॥

४ विप्रलम्भः, विप्रयोगः (२ पु), 'अलग होने' के २ नाम हैं ॥

५ विलम्भः (पु), अतिसर्जनम् (न), 'बहुत देने' के २ नाम हैं ॥

६ विभावः (पु), प्रतिख्यातिः (+ प्रविख्यातिः । स्त्री), 'बहुत प्रसिद्धि' के २ नाम हैं ॥

७ अवेशः (स्त्री), प्रतिजागरः (पु), 'किसी वस्तु आदिकी निगरानी (देखभाल) करने' के २ नाम हैं ॥

८ निपाठः, निपटः, पाठः (३ त्रि), 'पढ़ने' के ३ नाम हैं ॥

९ तेमः, स्तेमः (२ पु), समुन्दनम् (न), 'पानी आदिसे भीगने' के ३ नाम हैं ॥

१० आदीनवः, आस्रवः (+ आश्रवः), क्लेशः (३ पु), 'दुःख' के ३ नाम हैं ॥

११ मेलकः (+ मेलः), सङ्गः, सङ्गमः (१ पु), 'मेल, मिलाप' के ३ नाम हैं ॥

१२ संवीक्षणम् (+ अन्वीक्षणम्, अन्वेषणम्, गवेषणम्), विचयनम्, मार्गणम् (३ न), मृगणा (+ मृगया । स्त्री), मृगः (पु), 'ढूँढ़ने, ढूँढ़ने' के ५ नाम हैं ॥

१. 'निपातनम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'अन्वीक्षणमन्वेषणम्' इत्येके पेटुः' इति स्त्री० स्वा० ॥

३. 'मृगया' इति मुकुटः ॥

- १ परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥
- २ निर्वर्णनं तु निध्यानं^१ दशनालोकनेक्षणम् ।
- ३ प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥
- ४ उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।
- ५ अतनं च ऋताया च हृणीया च घृणार्थकाः ॥ ४२ ॥
- ६ स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।
- ७ पर्ययोऽतिक्रमस्तास्मिन्नातपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥
- ८ प्रषणं यत्समाह्वय तत्र स्यात्प्रातशासनम् ।

१ परिरम्भः (+ परीरम्भः), परिष्वङ्गः, संश्लेषः (३ पु), उपगूहनम् (न), 'आलिङ्गन करने या लिपटने' के ४ नाम हैं ।

२ निर्वर्णनम्, निध्यानम्, दर्शनम्, आलोकनम्, ईक्षणम् (+ आलोकनक्षमम् । ५ न), 'देखने' के ५ नाम हैं ॥

३ प्रत्याख्यानम्, निरसनम् (२ न), प्रत्यादेशः (पु), निराकृतिः (स्त्री), 'मना करने' के ४ नाम हैं ॥

४ उपशायः, विशायः (२ पु), 'पहरेदार आदिके बारी २ से सोने' के २ नाम हैं ॥

५ अतनम् (न), ऋतीया, हृणीया (+ हृणिया), घृणा (३ स्त्री), 'घृणा' के ४ नाम हैं ॥

६ व्यत्यासः, विपर्यासः, व्यत्ययः, विपर्ययः (+ विपर्यायः । ४ पु), 'उलटा, कमरदित' के ४ नाम हैं ॥

७ पर्ययः, अतिक्रमः, अनिपातः, उपात्ययः (४ त्रि), 'अतिक्रम' (क्रम को छोड़कर आगे बढ़ने) के ४ नाम हैं ॥

८ प्रतिशासनम् (न), 'नौकर आदिको बुलाकर कहीं भेजने या किसी काममें लगाने' का १ नाम है ॥

- १ स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥
 निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्धनः ।
 ३ स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्भो येन निह्न्यते ॥ ३५ ॥
 ४ आविधो विध्यते येन तत्र ५ विष्वक्समे निघः ।
 ६ उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥
 ७ निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु ।
 ८ आरत्यवरतिविरतय उपरामेऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः ॥ ३७ ॥
 निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिधानि ।

१ संस्तावः (पु), 'यज्ञमें ब्राह्मणोंकी स्तुति करनेके लिये नियत स्थान-विशेष' का १ नाम है ॥

२ उद्धनः (पु), 'ठेढ़ा' अर्थात् 'जिस लकड़ीपर रखकर दूसरी लकड़ी छीलते हैं उस नीचेवाली लकड़ी' का १ नाम है ॥

३ स्तम्बघ्नः, स्तम्बघनः (१ पु), 'घास काटने के हथियार खुरपा आदि, या तीनीके धानको झटका देकर झाड़नेके लिये बाँस या लड़ीमें बाँधे हुए दौरी आदि वर्तन' के २ नाम हैं ॥

४ आविधः (पु), 'वर्मा' का १ नाम है ॥

५ निघः (पु), 'सब तरफ से एक समान जमे या लगाये हुए पेड़ आदि' का १ नाम है ॥

६ उत्कारः, निकारः (२ पु), 'धान आदि अन्नको ओसाने या फटकने' के २ नाम हैं ॥

७ निगारः, उद्गारः, विक्षावः, उद्ग्राहः (४ पु), 'निगलने' (घोंटने), घमन (डफ्टी, कय) करने, छींकने और डकारने' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

८ आरतिः, अवरतिः, विरतिः (३ स्त्री), उपरामः (पु), 'रुकने' के ४ नाम हैं ॥

९ निष्ठेवः (पु न), निष्ठ्यूतिः (स्त्री), निष्ठेवनम्, निष्ठीवनम् (२ न), 'थूकने' के ४ नाम हैं ॥

- १ जवने जूतिः २ सातिस्त्ववसाने स्यादथ ज्वरे जूतिः ॥ ३८ ॥
 ४ उदजस्तु पशुप्रेरणमकरणिरित्यादयः शापे ।
 ६ गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ॥ ३८ ॥
 ७ आपूपिकं शाकुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ।
 ८ माणवानां तु माणव्यं ९ सहायानां सहायता ॥ ४० ॥
 १० हव्या हलानां ११ ब्राह्मण्यवाङ्मये तु द्विजन्मनाम् ।
 १२ द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठथमनुकमात् ॥ ४१ ॥

१ जवनम् (न), जूतिः (स्त्री), 'त्रेग' के २ नाम हैं ॥

२ सातिः (स्त्री), अवसानम् (न), 'समाप्ति, अन्त' के २ नाम हैं ॥

३ ज्वरः (पु), जूतिः (स्त्री), 'ज्वर, बुझार' के २ नाम हैं ।

४ उदजः (पु), पशुप्रेरणम् (भा० दी०, न), पशुओंको हाँकने स्तलकारने या किसी तरह प्रेरणा करने' के २ नाम हैं ॥

५ अकरणिः (स्त्री), आदि ('आदिसे अजननिः, स्त्री; अवप्राहः, निप्राहः, २ पु,'), 'शाप देने' का १ नाम है ॥

६ औपगवकम् (न), आदि ('आदिसे गार्गकम्, दाचकम्, २ नः,' 'औपगव 'उपगु' के गोत्रमें उपपन्न आदि' (आदिसे 'गार्ग्य, दाचि,') के समूह' का १ नाम है ॥

७ आपूपिकम्, शाकुलिकम् (२ न), आदि (आदिसे 'साकुलकम्, चाणकम्, २ नः,'), 'पूआ, पुड़ी आदि (आदिसे 'सत्तू, चना') के समूह (ढेरी)' का १—१ नाम है ॥

८ माणव्यम् (न), 'लड़कोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

९ सहायता (स्त्री), 'सहायोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

१० हव्या (स्त्री), 'हलोंके समूह' का १ नाम है ॥

११ ब्राह्मण्यम्, वाङ्मयम् (२ न), 'ब्राह्मणोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

१२ पार्श्वम्, पृष्ठम् (२ न), 'पशुओं (पँजरीकी हड्डियों) और पीठोंके समूह' का क्रमशः १—१ नाम है । (इन दोनोंका यज्ञमें स्मरण होता है अत एव ये दोनों यज्ञ-विषयक हैं) ॥

१ खलानां खलिनी खल्याप्यर्थ मानुष्यकं नृणाम् ।

ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ॥ ४२ ॥

अपि साहस्रकारीषवार्मणाथर्वणादिकम् ।

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ नानार्थवर्गः ।

३ नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिता ।

भूरि प्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

१ खलिनी, खल्या (२ स्त्री), 'खलिहानके समूह' के २ नाम हैं ॥

२ मानुष्यकम् , ग्रामता, जनता, धूम्या, पाश्या, गल्या (५ स्त्री), 'साहस्रम् , कारीषम् , वार्मणम् , आथर्वणम् (शेष ५ न), आदि (आदिसे 'वार्मणम् , आङ्गारम् ,), 'मानुष्य, ग्राम, जन, धूम, पाश (जाल), बड़ा काश, हजार, कूँडरा (उपला या गोहरा), कवचधारा, अथर्वण, आदि (आदिसे चमड़ा, अङ्गार,), इनके समूह' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ नानार्थवर्गः ।

३ वच्यमाण (आगे कहे जानेवाले) इस कान्तादि (आदिसे—खान्त, शास्त, चान्त,) वर्ग में अनेक अर्थवाले भी कई शब्द कहे गये हैं जो पहलेके पर्वाचों में नहीं कहे गये हैं और पण्डित-जनोंने काव्य-प्राण आदि ग्रन्थोंमें 'पृथुक, गरुमत् , रजस्' आदि जिन शब्दों का बहुधा प्रयोग किया है वे (पृथुक, गरुमत् , रजस् आदि) शब्द पहले स्वर्गवर्ग आदिके पर्यायोंमें तथा यहाँ भी कहे गये हैं । ('जैसे-पृथुक शब्द 'पोतः पाकोऽर्भको हिमः पृथुकः शावकः किञ्च' (२।५।३८) यहाँ 'बालक' अर्थमें और 'पृथुकः स्याच्चपिटकः' (२।५।३७) यहाँ 'चिड़का' अर्थमें कहे जानेपर भी इस नानार्थवर्गमें 'पृथुक-

अथ कान्ताः शब्दाः ।

१ आकाशे त्रिदिवे नाको २ लोकस्तु भुवने जने ।

‘अपिटाभकौ’ (३।३।३) उक्त दोनों (बालक और चिडड़ा) अर्थों में फिर कहा गया; ‘गरुडमत्’ शब्द ‘गरुडमान्’ गरुडस्ताचर्यो—’ (१।१।२९) यहाँ ‘गरुड’ अर्थमें और ‘—नीडोज्जवा गरुडमन्तो पित्सन्तो नभसङ्गमाः’ (२।५।३४) यहाँ ‘पक्षी’ अर्थमें कहे जानेपर भी इस नानार्थवर्गमें ‘पक्षिताचर्यौ गरुडमन्तौ’ (३।१।५८) उक्त दोनों (पक्षी और गरुड) अर्थोंमें फिर कहा गया; ‘तमस्’ शब्द ‘तमस्तु’ राहुः स्वर्भानुः—’ (१।३।१६) यहाँ ‘राहु’ अर्थमें, ‘गुणाः सत्त्वं रजस्तमः’ (१।५।२९) यहाँ ‘सत्त्वादि गुण’ अर्थमें और ‘अन्धकारोऽस्त्रियां धमन्तं तमिस्त्वं तिमिरं तमः’ (१।८।३) यहाँ ‘अन्धकार’ अर्थमें कहे जानेपर भी इस नानार्थवर्गमें ‘राहौ ध्वान्ते गुणे तमः’ (३।१।२३१) उक्त तीनों (राहु, सत्त्वादि गुण और अन्धकार) अर्थोंमें पुनः कहा गया; इसी तरह विद्वान् जन अन्यान्य उदाहरणोंका भी तर्क कर लें) । यद्यपि ‘जम्बुक’ शब्दके क्रमशः ‘स्यार, वरुण’ और ‘बालिश’ शब्दके ‘मूर्ख, बालक’ ये २-२ अर्थ हैं तथापि इन्हें पण्डित-जनोंने क्रमशः ‘स्यार और मूर्ख’ इन्हीं १-१ अर्थोंमें उक्त (जम्बुक और बालिश) शब्दोंका प्रयोग किया है, अन्य दो (वरुण और बालक) अर्थोंमें नहीं, अत एव ग्रन्थकारने भी वैसा ही किया है (अर्थात् जैसे—‘जम्बुक’ शब्दको ‘सृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरव-जम्बुकाः’ (१।५।५) यहाँपर ‘स्यार’ अर्थमें कहकर इस नानार्थवर्गमें जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ’ (३।१।३) ‘स्यार और वरुण’ दोनों अर्थोंमें कहा है । इसी तरह ‘बालिश’ शब्दको भी ‘अज्ञे मृदयथाजातमूर्खवैधेयबालिशः’ (३।१।४८) यहाँ ‘मूर्ख’ अर्थमें कहकर इस नानार्थवर्गमें ‘शिशवज्ञे च बालिशः’ (३।१।११८) ‘मूर्ख और बालक’ दोनों अर्थोंमें कहा है । इसी तरह अन्यान्य उदाहरणों का तर्क करना चाहिये) ।

अथ कान्ताः शब्दाः ।

१ ‘नाकः’ (पु) के स्वर्ग, आकाश, २ अर्थ हैं ॥

२ ‘लोकः’ (पु) भुवन (संसार), जन, २ अर्थ हैं ॥

- १ पद्ये यशसि च श्लोकः २ शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥
 ३ जम्बुकौ क्रोष्टवर्णौ ४ पृथुकौ विप्रिटाभकौ ।
 ५ 'आलोकौ दर्शनद्योनौ ६ भेरीपट्टमानकौ ॥ ३ ॥
 ७ उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः ८ कलङ्कोऽङ्गापवादयोः ।
 ९ तक्षकौ नागवर्धकयोश्चरकः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥
 ११ मासते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः ।
 १२ स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥
 १३ उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ।
 १४ कमण्डलौ च चरकः—

- १ 'श्लोकः' (पु) के पद्य, यश, २ अर्थ हैं ।
 २ 'सायकः' (पु) के बाण, तलवार, २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'जम्बुकः' (पु) के स्यार, वरुण, २ अर्थ हैं ॥
 ४ 'पृथुकः' (पु) के चिठड़ा, बालक, २ अर्थ हैं ॥
 ५ 'आलोकः' (पु) के दर्शन (देखना), प्रकाश, २ अर्थ हैं ॥
 ६ 'आनकः' (+ आणकः । पु) के भेरी, नगाड़ा, २ अर्थ हैं ॥
 ७ 'अङ्कः' (पु) के उत्सङ्ग (क्रोड, गोदा), चिह्न, २ अर्थ हैं ॥
 ८ 'कलङ्कः' (पु) के चिह्न लाञ्छन, २ अर्थ हैं ॥
 ९ 'तक्षकः' (पु), के 'तक्षक' नामका सर्प, बदर्ह २ अर्थ हैं ॥
 १० 'मर्कः' (पु) के स्फटिक मणि, सूर्य, मदार या एकवन (आक नामक पौधा), ३ अर्थ हैं ॥
 ११ 'कः' (पु) के हवा, ब्रह्मा, सूर्य, ३ अर्थ; 'कम्' (न) के शिर, पानी, २ अर्थ हैं ॥
 १२ 'पुलाकः' (पु) के तीनी (नीवार) धान या धानकी भूसी, संक्षेप, अन्न (भात) का अवयव, ३ अर्थ हैं ॥
 १३ 'पेचकः' (पु) के उल्लू, हाथीकी पूँछकी जड़ (मांस-पिण्ड-विशेष), २ अर्थ हैं ॥
 १४ 'करकः' (पु) के कमण्डलु, बनौरी (ओछा), २ अर्थ हैं ॥

'आलोकौ दर्शनद्योनौ भेरीपट्टमानकौ' इति पाठान्तरम् ॥

—१ सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥

- २ किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च ३ शूककीटे च वृश्चिकः ।
 ४ प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिवेकदेशे तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥
 ५ स्याद्भूतिकं तु भूमिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेऽपि च ।
 ६ ज्योतिस्त्रिकायां च घोषे च कोशातक्यथ ७ कट्फले ॥ ८ ॥
 सिते च खदिरे सोमवल्कः स्या ८ दय सिंहके ।
 तिलकल्के च पिण्याको ९ बाहिकं रामटेऽपि च ॥ ९ ॥
 १० महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ।
 ११ रुक्तापशङ्कास्वातङ्कः १२ स्वल्पेऽपि शूलकस्त्रिषु ॥ १० ॥
 १३ जैवातुकः शशाङ्केऽपि—

- १ 'विनायकः' (पु) के बुद्धदेव, गणेश, गरुड, गुरु, विघ्न, ५ अर्थ हैं ॥
 १ 'किष्कुः' (पु) के हाथभर, वित्तभर (प्रमाण-विशेष), २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'वृश्चिकः' (पु) के बिच्छू, आठवीं राशि (लग्न), मौंरा, केकड़ा, ओषधि-विशेष, ५ अर्थ हैं ॥
 ४ 'प्रतीकः' (त्रि) का प्रतिकूल, १ अर्थ और 'प्रतीकः' (पु) का अवयव (हिस्सा), १ अर्थ है ॥
 ५ 'भूतिकम्' (न) के चिरायता, 'रोहिंस' नामक घास, भूतृण, ३ अर्थ हैं ॥
 ६ 'कोशातकी' (स्त्री) के चिचिदा, तरोई या परवल, २ अर्थ हैं ॥
 ७ 'सोमवल्कः' (पु) के कायफल, दुधिया (सफेद) खैर २ अर्थ हैं ॥
 ८ 'पिण्याकः' (पु) के छोड़वान, तिलकी खली, २ अर्थ हैं ॥
 ९ 'बाहिकम्' (+ बाह्यिकम् । न) के हींग, बाह्यिक देश का (काबुली) घोड़ा, कुंकुम, ३ अर्थ हैं ॥
 १० 'कौशिकः' (पु) के इन्द्र, गुग्गुलु, उल्लू पक्षी, हँपेरा, ४ अर्थ हैं ॥
 ११ 'आतङ्कः' (पु) के रोग, ताप, शङ्का, मुरझा जानेका शब्द, ४ अर्थ हैं ॥
 १२ 'शूलकः' (त्रि) के छुद्र, नीच, जैनसम्प्रदायका तपस्वि-विशेष, २ अर्थ हैं ॥
 १३ 'जैवातुकः' (पु) का चन्द्रमा, १ अर्थ और 'जैवातुकः' (त्रि) के आयुष्मान् (चिरजीवी), कृश, भेषज, ३ अर्थ हैं ॥

—१ खुरेऽव्यश्वस्य वर्तकः ।

- २ व्याघ्रेऽपि पुण्डरीकीं ना ३ यथान्यामपि दापकः ॥ ११ ॥
 ४ 'सालावृकाः' कपिकोऽपुश्वानः ५ स्वर्णेऽपि गौरिकम् ।
 ६ पाडार्थेऽपि व्यलीक स्या ७ दलाक त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥
 ८ शालान्वयादनूके द्वे ९ शल्के शकलवलकले ।
 १० साष्टे शते सुवर्णां द्वेऽग्न्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥
 दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री ११ कल्कोऽस्त्री शमलानसोः ।
 दभ्येऽव्यश्वस्य पिताकोऽम्ब्री शूलशङ्करधन्वनोः ॥ १४ ॥

- १ 'वर्तकः' (पु) के सुम (घोड़े का खुर), 'वत्तक' नामका पक्षी, २ अर्थ हैं ॥
 २ 'पुण्डरीकः' (पु) के बाघ, आग, दिग्गज, ३ अर्थ और 'पुण्डरीकम्' (न) के सफेद छाता, औषध-विशेष, श्वेत कमल, ३ अर्थ हैं ॥
 ३ 'दीपकः' (+ दीप्यकः । पु) के अजमोदा जवाइन, मोरशिखा, चिराग, ३ अर्थ और 'दीपकम्' (न) का दीपकालङ्कार, १ अर्थ है ॥
 ४ 'सालावृकः' (+ सालावृकः । पु) के बन्दर, स्यार, कुत्ता, ३ अर्थ हैं ॥
 ५ 'गौरिकम्' (न) के सुवर्ण (सोना), गेरू (एक प्रकारका धातु-विशेष), २ अर्थ हैं ॥
 ६ 'व्यलीकम्' (न) के पीडा, वैलचय, २ अर्थ हैं ॥
 ७ 'अलीकम्' (न) के अप्रिय, झूठ (असत्य), छलाट, ३ अर्थ हैं ॥
 ८ 'अनूकम्' (न) के शील, वंश, २ अर्थ हैं ॥
 ९ 'शल्कम्' (न) के खण्ड (टुकड़ा या हिस्सा), छिलका २ अर्थ हैं ॥
 १० 'निष्कः' (पु न) के १०८ अशर्फी सोनेका बना हुआ छातीका भूषण (चन्द्रहार, सिकड़ी, हलका आदि) सोनेका पल (४ भरी सोना), मोहर, (अशर्फी), ४ अर्थ हैं ॥
 ११ 'कल्कः' (पु न) के मैला (विट्), पाप, दग्ध, ३ अर्थ हैं ॥
 १२ 'पिताकः' (पु न) के शङ्करजीका त्रिशूल, शङ्करजीका धनुष, धूलि-की वर्षा, ३ अर्थ हैं ॥

- १ धेनुका तु करेण्वां च २ मेघजाले च कालिका ।
- ३ कारिका^१ यातनावृत्त्याः ४ कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥
कारिहस्तेऽङ्गुला पञ्चबीजकोश्या ५ त्रिषूत्तरे ।
वृन्दारकौ रूपिमुख्याध्वेके मुख्यान्यकेवलाः ॥ १६ ॥
- ७ स्याद्दाम्भिकः कौकुटिका यश्चादूरेरितक्षणः ।
- ८ लालाटिकः^२ प्रभोर्भातदर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥

१ 'धेनुका' (स्त्री) के हथिनी, नयी व्याई हुई गाय, २ अर्थ और 'धेनुकः' (पु) का दान-विशेष, १ अर्थ है ॥

२ 'कालिका' (स्त्री) के मेघजाल (बरसाती समय, मेघ-समूह, नया मेघ), या स्वर्ण आदिका दोष (कालिमा), सुरा (मदिरा), काली देवी, ४ अर्थ हैं ॥

३ 'कारिका' (स्त्री) के यातना (बहुत बुरी तरहसे कष्ट भोगना), कारिका (जैसे—मुक्तावली, वाक्यपदीय, साहित्यदर्पण आदिमें), नटी, कृति, नापितादिका कर्म (हजामत आदि), ५ अर्थ हैं ॥

४ 'कर्णिका' (स्त्री) के कानका भूषण (कनफूल, ऐरन, आदि), हाथीकी सूँड़, हाथके बीचकी झंगुलि, कमलका छत्ता (जिसमें कमलगट्टे रहते हैं), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'वृन्दारकः' (त्रि) के मनोहर या अनेक रूप धारण करनेवाला मायावी, श्रेष्ठ, देवता, ६ अर्थ हैं ॥

६ 'एकः' (त्रि) के प्रधान, दूसरा, केवल (सिर्फ), पहला अङ्क, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'कौकुटिकः' (त्रि) के दम्भ करनेवाला, पाससे चेष्टा आदिको देखनेवाला, २ अर्थ हैं ॥

८ 'लालाटिकः' (त्रि) के स्वामीके ललाट (+ भाव) को देखनेवाला (इसलिये कि स्वामी क्या आज्ञा देते हैं, स्वामीका मेरे ऊपर कैसा भाव है, ...) भृत्य, काम करने में असमर्थ, २ अर्थ हैं ॥

- १ 'भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटकौऽस्त्रियाम् (२३)
- २ सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टकः (२४)
- ३ पाकौ पक्तिशिशु ४ मध्यरत्ने नेतरि नायकः (२५)
- ५ पर्यङ्कः स्यात्परिकरेद्भ्याख्याप्तेऽपि च लुब्धकः (२६)
- ७ पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपिऽगुरौ देश्ये च देशिकः (२७)
- ९ खेटकौ ग्रामफलकौ १० धीवरेऽपि च जालिकः (२८)

१ ['कटकः' (पु न) के पहाड़के बीचका भाग, कङ्कण (कँगना), चक्र, ३ अर्थ हैं] ॥

२ ['कण्टकः' (त्रि) के सूई, काँटा या टूँड आदिका नोक (आगेवाला हिस्सा), क्षुद्र (छोटा) बैरी, रोमाञ्च (रोंभाका खड़ा होना), ३ अर्थ हैं] ॥

३ ['पाकः' (पु) के पकाना, बालक, २ अर्थ हैं] ॥

४ ['नायकः' (पु) के मालाके बीचवाली मनियौ (सुमेरु), नेता (किसी कामके आगे चलनेवाला मुखिया आदि), २ अर्थ हैं] ॥

५ ['पर्यङ्कः' (पु) के परिकर (नौकर आदि आत्मीय जन), पङ्कज या मचान, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['लुब्धकः' (त्रि) के बाघ, लोभी, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['पेटकः' (त्रि) के समूह, पिटाही (बक्स, झपोली आदि), २ अर्थ हैं] ॥

८ ['देशिकः' (त्रि) के गुरु, देशमें होनेवाला पदार्थ (जैसे—देशिकं वासः, देशिका, पुत्तलिका, देशिकोऽश्वः,), २ अर्थ हैं] ॥

९ ['खेटकः' (त्रि) के ग्राम, ढाल, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['जालिकः' (त्रि) के मल्लाह, ग्रामज अलि, जालकी वृत्तिसे जीविका करनेवाला, ३ अर्थ हैं] ॥

१. 'भूभृन्नितम्ब.....दर्पाश्मदारणो' इत्ययं क्षेत्रकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यानेऽमरवि-
वेकपुस्तके च मूलमात्रमुपलभ्यते । 'मृङ्गाण्डे....द्रवके' (५० ४२९) इत्येष क्षेत्रकांशश्च क्षी०
स्वा० व्याख्यायामेवोपलभ्यत इत्यतोऽयमप्यंशः क्षेत्रकरूपेणैव मया सूत्रे निक्षिप्त इत्यवधेयम् ॥

२. 'आर्द्रायामपि लुब्धकः' इति पाठान्तरम् ॥

- १ पुष्परेणौ च किञ्जल्कः २ शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च (२९)
- ३ स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका ४ वार्द्धकं भाववृन्दयोः (३०)
- ५ करिष्यां चापि गणिका ६ दारकौ बालभेदकौ (३१)
- ७ अन्धेऽन्धनेडमूकः स्या ८ टड्कौ दर्पाश्मदारणौ (३२)
- ९ मृङ्गाण्डेऽप्युष्टिका १० मन्थे खज्जको रसदर्बके (३३)

इति कान्ताः शब्दाः ।

अथ खान्ताः शब्दाः ।

११ मयूखस्त्वट्करज्वाला १२ स्वलिबाणौ शिलीमुखौ ।

१३ शङ्खो निधौ ललाटास्थित कम्बौ न स्त्री—

१ ['किञ्जल्कः' (त्रि) के फूलका पराग, कमल-कंसर, २ अर्थ हैं] ॥

२ ['शुल्कः' (पु न) के स्त्रीका धन, रुपया (महसूल, कर, फीस आदि), १ अर्थ हैं] ॥

३ ['उत्कलिका' (स्त्री) के नदी आदिकी तरङ्ग, हँसी-मजाक, ठट्कण्टा, ३ अर्थ हैं] ॥

४ ['वार्द्धकम्' (त्रि) के बुढ़ापा, बूढ़ोंका समूह, २ अर्थ हैं] ॥

५ ['गणिका' (स्त्री) के हथिनी, वेश्या, १ अर्थ हैं] ॥

६ ['दारकः' (पु) के लड़का, भेद करनेवाला, १ अर्थ हैं] ॥

७ ['अनेडमूकः' (पु) के अन्धा, मूर्ख (कहने-सुननेमें अक्षिणित), शठ, ३ अर्थ हैं] ॥

८ ['टड्कः' (पु) के दर्प, पत्थरको चीरनेवाली टॉकी, १ अर्थ हैं] ॥

९ ['उष्टिका' (स्त्री) के मिट्टीका मध्य भाण्ड-विशेष, ऊटिरी, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['खज्जकः' (पु) के मथनीका ढण्डा, कलखुल, युद्ध, ३ अर्थ हैं] ॥

इति कान्ताः शब्दाः ।

अथ खान्ताः शब्दाः ।

११ 'मयूखः' (पु) के शोभा, किरण, ज्वाला, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'शिलीमुखः' (पु) के भौरा, बाण, २ अर्थ हैं ॥

१३ 'शङ्खः' (पु) के निधि (खजाना-विशेष), ललाटकी हड्डी, ३ अर्थ और 'शङ्खः' (पु न) का शङ्ख, १ अर्थ है ॥

—१ इन्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥

२ घृणिज्वाले अपि शिखे—

इति खान्ताः शब्दाः ।



अथ गान्ताः शब्दाः ।

—३ शैलवृक्षौ नगावगौ ।

४ आशुगौ वायुविशिखौ ५ शरार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥

६ पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च ७ पूगः क्रमुकवृन्दयोः ।

८ पशवाऽपि मृगा ९ वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥ २० ॥

१० परागः कौसुमे रेणौ स्नानायादौ रजस्थपि ।

११ गजेऽपि नागमातङ्गौ—

१ 'खम्' (न), के इन्द्रिय, शून्य, आकाश, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'शिखा' (स्त्री) के किरण, ज्वाला, मोरकी शिखा, शिखामात्र (चोटी), ३ अर्थ हैं ॥

इति खान्ताः शब्दाः ।



अथ गान्ताः शब्दाः ।

३ 'नगः, अगः' (२ पु) के पहाड़, पेड़, २ अर्थ हैं ॥

४ 'आशुगः' (पु) के वायु, बाण, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'खगः' (पु) के बाण, सूर्य, पक्षी, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'पतङ्गः' (पु) के पक्षी, सूर्य, २ अर्थ हैं ॥

७ 'पूगः' (पु) के सुपारी (कसैली), समूह, २ अर्थ हैं ॥

८ 'मृगः' (पु) के पशु, हरिण, पौँचवीं नक्षत्र, याचना, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'वेगः' (पु) के प्रवाह, तेजी, २ अर्थ हैं ॥

१० 'परागः' (पु) के फूलका पराग, स्नान करने योग्य सुगन्धित चूर्ण (पावडर), धूलि, विख्याति, पर्वत, ५ अर्थ हैं ॥

११ 'नागः' (पु) के हाथी, साँप, नागकेशर, ३ अर्थ और 'मातङ्गः' (पु) के हाथी, चण्डाल, २ अर्थ हैं ॥

—१ अपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥

- २ सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाभ्यायसृष्टिषु ।
 ३ योगः सन्नहनोपायभ्यानसंगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥
 ४ भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावद्वेश्च फणकाययोः ।
 ५ चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले त्रिषु ॥ २३ ॥
 ६ कपौ च प्लवगः ७ शापे त्वभिषङ्गः पराभवे ।
 ८ यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥
 ९ स्वर्गोपपशुवाग्वज्रदिङ्मन्त्रघृणिभूजले ।
 लक्षदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौर्ल्लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥

१ 'अपाङ्गः' (पु) के तिलक, नेत्रका प्रान्त (किनारा), २ अर्थ हैं ॥

२ 'सर्गः' (पु) के स्वभाव, त्याग, निश्चय, काव्यके प्रकरण (जैसे—
 वाचमिक, नैषध, माघ, किरात, रघुवंश आदिका प्रकरण), सृष्टि, ५ अर्थ हैं ॥

३ 'योगः' (पु) के कवच, साम-दाम आदि उपाय, ध्यान (चित्तको
 एकाग्र करना), संगति, युक्ति, विश्वासघातक, ६ अर्थ हैं ॥

४ 'भोगः' (पु) के सुख, स्त्री आदिकी मजदूरी या वेतन, सौंपका
 फण, सौंपका शरीर, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'सारङ्गः' (पु) के चातक पक्षी, हरिण, हाथी, ३ अर्थ और 'सारङ्गः'
 (त्रि) का चितकाबर, १ अर्थ है ॥

६ 'प्लवगः' (पु) के बन्दर, मेढक, सूर्यका सारथि, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'अभिषङ्गः' (पु) के शाप, पराभव, शपथ, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'युगः' (पु) के रथ-गाड़ी आदिका जुआठ (जुवा), १ अर्थ और
 'युगम्' (न) के युग (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग), जोड़ा, २ अर्थ हैं ॥

९ 'गौः' (= गो, लक्ष्यानुसार पु स्त्री) के स्वर्ग, बाण, पशु (गाय, बैल,
 साँड़ आदि), जाक (बोली), वज्र, दिशा (पूर्व, पश्चिम आदि), आँख, सूर्य,
 पृथ्वी, पानी १० अर्थ हैं । (लक्ष्यानुसार पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग जैसे—स्वर्ग, बाण,
 पशु (वैन) आदिके पुंलिङ्ग रहनेपर 'गौ' शब्द पुंलिङ्ग; वाक्, पशु (गाय,
 बाखी), दिशा आदिके स्त्रीलिङ्ग रहनेसे 'गौ' शब्द स्त्रीलिङ्ग होना) ॥

१० 'लिङ्गम्' (न) के चिह्न, लिङ्ग (पुरुषके पेशाबका रास्ता), १ अर्थ है ॥

- १ शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च २ वराङ्गं मूर्द्धगुह्ययोः ।
 ३ भगं श्रीकामसाहाय्यवीर्ययत्तार्ककीर्त्तिषु ॥ २६ ॥
 इति गान्ताः शब्दाः ।

अथ धान्ताः शब्दाः ।

- ४ परिघः परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽम्भसां रये ।
 ६ मूढ्ये पूजाविधावर्घोऽद्वोदुःखव्यसनेऽवघम् ॥ २७ ॥
 ८ त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः—
 इति धान्ताः शब्दाः ।

१ 'शृङ्गम्' (न) के प्राधान्य, शिखर (पहाड़की चोटी), सींग, १ अर्थ हैं ॥
 २ 'वराङ्गम्' (न) के मस्तक, गुह्येन्द्रिय या योनि (स्त्री के पेशाबका रास्ता), २ अर्थ हैं ॥

३ 'भगम्' (न) के शोभा, इच्छा, साहाय्य (प्रशंसा या बढ़ाई), सामर्थ्य, यत्न, सूर्य, यश, धर्म, ८ अर्थ और 'भगः' (पु) का सूर्य, १ अर्थ है ॥
 इति गान्ताः शब्दाः

अथ धान्ताः शब्दाः

४ 'परिघः' (+ पलिघः । पु) के 'परिघ' नामका हथियार (लोहा मढ़ी हुई लाठी), योग-भेद, २ अर्थ हैं ॥

५ 'ओघः' (पु) के समूह, जलका प्रवाह, शीघ्रतासे नाचना, परस्परा, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'अर्घ्यः' (पु) के मूल्य (कीमत), पूजा-विधि (अतिथि आदिके आनेपर या देव-पूजामें किया हुआ 'अर्घ्य' नामका सरकार-विशेष, २ अर्थ हैं ॥

७ 'अघम्' (न) के पाप, दुःख, व्यसन (जुआ खेलने आदिकी आदत), ३ अर्थ हैं ॥

८ 'लघुः' (त्रि) के दृष्ट, कम, २ अर्थ हैं ॥

इति धान्ताः शब्दाः ।

अथ चान्ताः शब्दाः ।

—१ काचाः शिष्यमृद्देदहमृजः ।

- २ 'विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः ३ पावके शुचिः ॥ २८ ॥
मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।
४ अभिष्वङ्गेस्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥
इति चान्ताः शब्दाः ।

अथ छान्ताः शब्दाः ।

- ५ 'प्रसन्ने भल्लकेऽप्यच्छो ६ गुच्छः स्तबकहारयोः (३४)
७ परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः' (३५)
इति छान्ताः शब्दाः ।

अथ चान्ताः शब्दाः ।

- १ 'काचः' (पु) के सिकहर, काच, आँखका रोग-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥
२ 'प्रपञ्चः' (पु) के विपर्यास (उलटा-पुलटा), शब्द का फैलाव, संश्लेष ३ अर्थ हैं ॥
३ 'शुचिः' (पु) के आग, आषाढ मास, मन्त्रो, शृङ्गार रस, ४ अर्थ और
'शुचिः' (त्रि) के सफेद वस्तु, पवित्र, शुद्ध चित्तवाला, ३ अर्थ हैं ॥
४ 'रुचिः' (स्त्री) के अभिष्वङ्ग (राग), स्पृहा (चाह), सूर्य आदि
की किरण, शोभा, ४ अर्थ हैं ॥
इति चान्ताः शब्दाः ।

अथ छान्ताः शब्दाः ।

- ५ ['अच्छः' (पु) के प्रसन्न, भालू, स्फटिक मणि, ३ अर्थ हैं] ॥
६ ['गुच्छः' (पु) के फूल-फल आदिका गुच्छा, ३२ या ७० लड़ीका
हार-विशेष, २ अर्थ हैं] ॥
७ ['कच्छः' (पु) के कपड़े आदिको पहिरना, अञ्चल, २ अर्थ और 'कच्छः'
(त्रि) का पानीका किनारा, १ अर्थ है] ॥
इति छान्ताः शब्दाः ।

१. 'विपर्यासे च विस्तारे' इति पाठो युक्तः' इति स्त्री० स्वा० ॥

अथ जान्ताः शब्दाः ।

- १ केकितार्क्ष्यावहिभुजौ २ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ।
 ३ अजा विष्णुहरच्छामा ४ गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥
 ५ धर्मराजौ जिनयमौ ६ कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ।
 ७ वलजे क्षेत्रपूर्वारे वलजा वल्गुदर्शना ॥ ३१ ॥
 ८ समे क्षमांशे रणेऽप्याजिः ९ प्रजा स्यात्सन्ततौ जने ।
 १० अब्जौ शंखशशांकौ च ११ स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥

इति जान्ताः शब्दाः ।

अथ जान्ता शब्दाः ।

- १ 'अहिभुक्' (+ अहिभुज् पु) के मोर, गरुड २ अर्थ हैं ॥
 २ 'द्विजः' (पु) के दौत, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों वर्ण, अण्डज (चिड़िया, साँप, मछली, मगर आदि), ३ अर्थ हैं ॥
 ३ 'अजः' (पु) के विष्णु, शिवजी, छाग (खस्सी), रघुके पुत्र ('अज' नामका रघुवंशी राजा), ब्रह्मा, कामदेव, ६ अर्थ हैं ॥
 ४ 'व्रजः' (पु) के गोष्ठ (गौओंके ठहरनेका स्थान गोशाला आदि), रास्ता, समूह, ३ अर्थ हैं ॥
 ५ 'धर्मराजः' (पु) के जिन (बुद्धदेव), यमराज, युधिष्ठिर, ३ अर्थ हैं ॥
 ६ 'कुञ्जः' (पु न) के हाथी का दौत, कुञ्ज (लता आदिसे गलोंके समान बना हुआ स्थान विशेष), २ अर्थ हैं ॥
 ७ 'वलजम्' (न) के क्षेत्र, नगरका फाटक या द्वार, २ अर्थ और 'वलजः' (त्रि) का देखने में प्रिय लगनेवाला, १ अर्थ है ॥
 ८ 'आजिः' (स्त्री) के बराबर (समतल) जमीन, युद्ध, २ अर्थ हैं ॥
 ९ 'प्रजाः' (स्त्री) के सन्तान (पुत्र या पुत्री), प्रजा (रैयत), २ अर्थ हैं ॥
 १० 'अब्जः' (पु) के शंख, चन्द्रमा, धन्वन्तरि, ३ अर्थ और 'अब्जम्' (न) का कमल, १ अर्थ है ॥
 ११ 'निजम्' (त्रि) के आत्मीय (अपना), नित्य, २ अर्थ हैं ॥

इति जान्ताः शब्दाः ।

अथ जान्ताः शब्दाः ।

- १ पुंस्यात्मनि' प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः
- २ संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्वर्यसूचना ॥ ३३ ॥
- ३ 'दोषज्ञौ वैद्यविद्वांसौ बुधो विद्वान् सोमजोऽपि च (३६)
- ५ विज्ञौ प्रवीणकुशलौ ६ कालज्ञौ ज्ञानिकुकुटौ' (३७)

इति जान्ताः शब्दाः ।

अथ टान्ताः शब्दाः ।

- ७ काकेभगण्डौ करटौ ८ गजगण्डकटी कटौ ।
- ९ शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चमणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥

अथ जान्ताः शब्दाः ।

- १ 'क्षेत्रज्ञः' (पु) का आत्मा, १ अर्थ और 'क्षेत्रज्ञ' (त्रि) का क्षेत्रज्ञ (शरीर को जाननेवाला ज्ञानी पुरुष । + प्रधान), १ अर्थ है ।
- २ 'संज्ञा' (स्त्री) के चेतना (होश, ज्ञान), नाम हाथ-भौ आदिका इशारा, गायत्री, सूर्य की स्त्री, ५ अर्थ हैं ॥
- ३ ['दोषज्ञः' (पु) के वैद्य, विद्वान्, २ अर्थ हैं] ॥
- ४ ['बुधः' (पु) के विद्वान्, 'बुध' नामका ग्रह, ब्रह्मा, ३ अर्थ हैं] ॥
- ५ ['विज्ञः' (पु) के प्रवीण (निपुण), चतुर, २ अर्थ हैं] ॥
- ६ ['कालज्ञः' (पु) के ज्ञानी, मुर्गा, २ अर्थ हैं] ॥

इति जान्ताः शब्दाः ।

अथ टान्ताः शब्दाः ।

- ७ 'करटः' (पु) के कौआ, हाथियोंका कपोल (गाल) २ अर्थ हैं ॥
- ८ 'कटः' (स्त्री) के हाथियोंका कपोल, कमर, २ अर्थ हैं ॥
- ९ 'शिपिविष्टः' (+ शिपिविष्टः, शिपिविष्टः । पु) के खलवाट (रोग

१. 'प्रधाने' इति पाठान्तरम् ॥

२. दोषज्ञौ.....'कुकुटौ' इत्ययं क्षेत्रज्ञांशः माहेश्वरोव्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यते इत्यतोऽस्य प्रकृतोपयोगितयाऽयं मूले स्थापितः ॥

- १ देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा २ दिष्टं देवेऽपि न द्वयोः ।
 ३ रस्ते कटुः कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥
 ४ रिष्टं क्षेमाशुभाभावेऽध्वरिष्टे तु शुभाशुभे ।
 ६ मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥
 अयोधने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ।
 ७ सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥
 ८ आर्त्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो ९ मूले लग्नकचे जटा ।

आदिके कारण जिसके शिरके बाल गिर गये हों), खराब चमड़ेवाला (+ नपुंसक
 ली० स्वा०), शिवजी विष्णुजी, ४ अर्थ हैं ॥

१ 'त्वष्टा' (= त्वष्टृ पु), के विश्वकर्मा (देवताओंका बर्द्ध या कारीगर),
 वारह सूर्योंमें से एक सूर्य, बर्द्ध, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'दिष्टम्' (न) का भाग्य, १ अर्थ और 'दिष्टः' (पु) का समय,
 १ अर्थ है ॥

३ 'कटुः' (पु) का कड़वा, १ अर्थ; 'कटु' (न) का नहीं करने योग्य'
 १ अर्थ और 'कटुः' (त्रि) के मत्सर (दूसरे की भलाईसे द्वेष करना), तीक्ष्ण,
 १ अर्थ हैं ॥

४ 'रिष्टम्' (न) के कल्याण, अशुभका अभाव, २ अर्थ हैं ॥

५ 'अरिष्टम्' (पु) के शुभ, अशुभ, २ अर्थ हैं ॥

६ 'कूटम्' (न पु) के माया, निश्चल (आकाशादि), हरिना आदि
 फँसानेका का यन्त्र-विशेष (जाल आदि), कपट, असत्य, गल्ला (अन्न आदि
 की ढेरी), लोहका हथौरा, पहाड़की चोटी, हलके आगेवाला भाग, ९ अर्थ हैं ॥

७ 'त्रुटि' (स्त्री) के चोटी इलायची, समय-भेद, न्यूनता (कमी)
 संशय, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'कोटिः' (स्त्री) के धनुषके दोनों छोर, प्रकर्ष, कोण करोड़ (संख्या-
 विशेष), ४ अर्थ हैं ॥

९ 'जटा' (स्त्री) के पेड़ आदिकी जड़, जटा (मुनि आदिके सटे हुए
 बाल), जटामासी, ३ अर्थ हैं ॥

१ व्युष्टिः फले समृद्धौ च २ दृष्टिर्ज्ञानेऽक्षिण दर्शनै ॥ ३८ ॥

३ इष्टियागेच्छयोः ४ 'सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ।

५ कष्टे तु कृच्छ्रगहने ६ दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥

पटुर्द्वौ वाच्यलिङ्गौ च—

७ 'पोटा दासी द्विलिङ्गा च ८ घृष्टी घर्षणसूकरौ (३८)

९ घटा गोष्ठ्यां हस्तिपङ्क्तौ १० कृपीटमुदरे जले' (३९)

इति दान्ताः शब्दाः ।



अथ दान्ताः शब्दाः ।

—११ नीलकण्ठः शिवेऽपि च ।

१ 'व्युष्टिः' (स्त्री) के फल (प्रयोजन), समृद्धि, २ अर्थ हैं ॥

२ 'दृष्टिः' (स्त्री) के ज्ञान, आँख, देखना, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'इष्टिः' (स्त्री) के यज्ञ, इच्छा, २ अर्थ हैं ॥

४ 'सृष्टम्' (+ सृष्टिः स्त्री । त्रि), के निश्चित बहुत (काफी), छोड़ा हुआ, बनाया हुआ, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'कष्टम्' (त्रि) के दुःख, गहन (मुश्किलसे करने योग्य काम आदि), २ अर्थ हैं ॥

६ 'पटुः' (त्रि) के चतुर, निरालसी, रोग, ३ अर्थ हैं] ॥

७ ['पोटा' (स्त्री) के दासी, स्त्री पुरुषके चिह्नोंसे युक्त स्त्री, २ अर्थ है] ॥

८ ['घृष्टिः' (पु) के घिसना, सूअर, २ अर्थ हैं] ॥

९ ['घटा' (स्त्री) के सभा, हाथियोंकी कतार, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['कृपीटम्' (न) के पेट, पानी, २ अर्थ हैं] ॥

इति दान्ताः शब्दाः ।



अथ दान्ताः शब्दाः ।

११ 'नीलकण्ठः' (पु) के शिवजी, मोर, २ अर्थ हैं ॥

१. 'सृष्टिनिश्चिते बहुले त्रिषु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पोटा'.....जले इत्ययं श्लेषकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यत इत्य-
तोऽयं प्रकृतोपयोगितया श्लेषकत्वेनात्र स्थापितः ॥

- १ पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसुलोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥
 २ निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः ३ काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।
 ४ त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि ५ कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः ॥ ४१ ॥
 इति ढान्ताः शब्दाः ।

अथ ढान्ताः शब्दाः ।

- ६ दण्डोऽस्त्री लगुडोऽपि स्याद् ७ गुडो गोलेश्रुपाकयोः ।
 ८ सर्पमांसात्पशू व्याडौ ९ गोभ्रूवाचस्त्रिबडा इलाः ॥ ४२ ॥
 १० क्ष्वेडा वंशशलाकापि ११ नाडी नालोऽपि षट्क्षणे ।

१ 'कोष्ठः' (पु) के कोष्ठ (पेटके भीतरका एक भाग), कोठिला या बखार, घरका भीतरी भाग, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'निष्ठा' (स्त्री), के निष्पत्ति (सिद्धि), नाश, आखीर, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'काष्ठा' (स्त्री) के वृद्धि, मर्यादा, पूर्व आदि दिशा, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'ज्येष्ठः' (त्रि) के बहुत उत्तम, बड़ा भाई आदि, वृद्ध, ३ अर्थ और 'ज्येष्ठः' (पु) का ज्येष्ठ महीना, १ अर्थ है ॥

५ 'कनिष्ठः' (त्रि) बालक, छोटा भाई आदि, थोड़ा ३ अर्थ हैं ॥

इति ढान्ताः शब्दाः ।



अथ ढान्ताः शब्दाः ।

६ 'दण्डः' (पु न) के डण्डा, सजा, २ अर्थ हैं ॥

७ 'गुडः' (पु) के मिट्टीकी गोली, गुड, २ अर्थ हैं ॥

८ 'व्याडः' (पु) के सौंप, बाघ, २ अर्थ हैं ॥

९ 'इडा, इला' (२ स्त्री) के गौ, पृथ्वी, वचन, बुधकी स्त्री, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'क्ष्वेडा' (स्त्री) के पिंजड़ा-दौरी आदि बनाने के लिये बाँस आदिको झीलकर चिकनी और पतली की हुई शलाका, सिंहकी गर्जना, २ अर्थ हैं ॥

११ 'नाडी' (स्त्री) के छः क्षण (एक घटी या २४ मिनट) का समय-विशेष, नाड़ी (नस), नाल (डंठल), ३ अर्थ हैं ॥

- १ काण्डोऽस्त्री दण्डबाणार्धवर्गावसरवारिषु ॥ ४३ ॥
- २ स्याद्भाण्डमश्वभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने ।
- ३ 'संघातप्रासयोः पिण्डी द्वयोः पुंसि कलेवरे (४०)
- ४ गण्डौकपोलविस्फोटौ ५ मुण्डकं त्रिषु मुण्डिते' (४१)

इति ढान्ताः शब्दाः ।



अथ ढान्ताः शब्दाः ।

- ६ भृशप्रतिज्ञयोर्बाढं ७ प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥
- ८ शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ—

१ 'काण्डः' (पु न) के दण्ड, बाण, निन्दित, वर्ग (प्रकरण, जैसे—
वाल्मीकीयमें—वालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, ... अमरकोषमें—प्रथमकाण्ड, ...),
अवसर, पानी, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'भाण्डम्' (न) के घोड़ेका भूषण, बर्तन, व्यापार आदिमें लगाये हुए
वनिये आदिका मूल धन, ३ अर्थ हैं ॥

३ ['पिण्डी' (स्त्री पु) के समूह, प्रास, २ अर्थ और 'पिण्डी' (पु)
का शरीर, १ अर्थ है] ॥

४ ['गण्डः' (पु) के गाल, विस्फोट (फोड़ा आदि), २ अर्थ हैं] ॥

५ ['मुण्डकम्' (+ मुण्डम् । त्रि) के मुण्डित, शिर, २ अर्थ हैं] ॥

इति ढान्ताः शब्दाः ।

अथ ढान्ताः शब्दाः ।

६ 'बाढम्' (न) का अत्यन्त, १ अर्थ और 'बाढम्' (अ०) के प्रतिज्ञा,
स्वीकार, २ अर्थ हैं ॥

७ 'प्रगाढम्' (न) के अत्यन्त, कष्ट, २ अर्थ हैं ॥

८ 'दृढः' (त्रि) के समर्थ, मोटा या पुष्ट, अच्छी तरह, ३ अर्थ हैं ॥

'संघात'...मुण्डिते इति श्लेषकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यते इति प्रकृतो-
पयोगितयाऽयं मया मूले श्लेषकत्वेन निहितः ॥

—१ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ।

इति ढान्ताः शब्दाः ।

अथ णान्ताः शब्दाः ।

- २ भ्रूणोऽर्भके स्त्रैण गर्भे ३ बाणो बलिसुते शरे ॥ ४५ ॥
 ४ कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे ५ संघाते प्रमथे गणः ।
 ६ पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च ॥ ४६ ॥
 ७ मौर्व्या द्रव्याश्रिते सत्त्वशौर्यसन्ध्यादिके गुणः ।
 ८ निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥
 ९ वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाक्षरे ।

१ 'व्यूढः' (त्रि) के रचित, मिला हुआ (संहत), २ अर्थ हैं ॥

इति ढान्ताः शब्दाः ।

अथ णान्ताः शब्दाः ।

- १ 'भ्रूणः' (पु) के बालक, स्त्रीका गर्भ, २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'बाणः' (पु) के बलिका पुत्र (बाणासुर), बाण, २ अर्थ हैं ॥
 ४ 'कणः' (पु) के अत्यन्त सूक्ष्म (पानीकी छोटी २ बूदें, मोतीके दाने, ...), धान्य (अन्न) की खुद्दी, २ अर्थ हैं ॥
 ५ 'गणः' (पु) के समूह, शिवजीके दूत, सेनाकी संज्ञा-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥
 (देखिये—२।८।८१ की टिप्पणी)
 ६ 'पणः' (पु) के जुआ आदिमें दावपर रक्खा हुआ धन आदि, वेतन या मजदूरी, कीमत, धन, ४ अर्थ हैं ॥
 ७ 'गुणः' (पु) के धनुषकी ताँत, रूप-रस आदि २४ गुण, सत्त्व-रजस्—तमस् ३ गुण, बहादुरी, चातुर्य-पाण्डित्य आदि गुण, सन्धि-विग्रह आदि (पृ० २६९) ६ गुण, इन्द्रिय, ६ अर्थ हैं ॥
 ८ 'क्षणः' (पु) के निकम्मा होकर बैठे रहना, एक घड़ीका बारहवाँ हिस्सा या ३ मिनटका समय—विशेष, उत्सव, ३ अर्थ हैं ॥
 ९ 'वर्णः' (पु) के ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र ये ४ जाति, सफेद-लाल-पीला आदि रंग तथा स्तुति (व्रत, गुण, गीतका ताल-विशेष, यज्ञ) ये अर्थ और 'वर्णम्' (न) का अक्षर, १ ही अर्थ है ॥

- १ अरुणो भास्करोऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु ॥ ४८ ॥
- २ स्थाणुः शर्वेऽप्यथ द्रोणः काकेऽप्याष्टजौ रवे रणः ।
- ५ ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥
- ६ ऊर्णा मेषादिलोमिन् स्यादावर्ते चान्तरा 'भ्रुवोः' ।
- ७ हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥
त्रिषु पाण्डौ च हरिणः ८ स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ।
- ९ तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे १० जुगुप्साकरुणे घृणे ॥ ५१ ॥
- ११ वणिक्पथे च विपणिः १२ सुरा प्रत्यक्च वारुणी ।

१ 'अरुणः' (पु) का सूर्य, सूर्यका सारथि, सन्ध्या समयकी लालिमा, कुष्ठ, ४ अर्थ और 'अरुणः' (त्रि) का लाला रङ्गवाला, १ अर्थ है ॥

२ 'स्थाणुः' (पु) के शिवजी, सुस्थ (बिना डाल-पातका सूखा हुआ पेड़) आदि स्थिर पदार्थ, २ अर्थ हैं ॥

३ 'द्रोणः' (पु) के कौआ, द्रोणाचार्य, द्रोण (परिमाण-विशेष), ३ अर्थ हैं ॥

४ 'रणः' (पु) के लड़ाई, शब्द, २ अर्थ हैं ॥

५ 'ग्रामणीः' (पु) का नाई (हजाम), १ अर्थ और 'ग्रामणीः' (त्रि) के श्रेष्ठ, ग्रामका स्वामी (सरपञ्च, डीहा), २ अर्थ हैं ॥

६ 'ऊर्णा' (स्त्री) के ऊन (भेंड़ आदिका रोंआ), दोनों भौंहोंके बीचवाला भाग, २ अर्थ हैं ॥

७ 'हरिणि' (स्त्री) के मृगो, सोनेकी मूर्ति, हरे रंगवाली, ३ अर्थ और 'हरिणः' (त्रि) के पाण्डु (कुछ २ पीलापन लिये सफेद) रंग, हरिना, २ अर्थ हैं ॥

८ 'स्थूणा' (स्त्री) के घरका खम्भा, लोहेकी मूर्ति, रोग-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'तृष्णा' (स्त्री) के स्पृहा (अभिलाषा), प्यास, २ अर्थ हैं ॥

१० 'घृणा' (स्त्री) के घृणा (नफरत), करुणा, २ अर्थ हैं ॥

११ 'विपणिः' (स्त्री) के बाजार (कटरे) की गली, दूकान, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'वारुणी' (स्त्री) के मदिरा, पश्चिम दिशा, २ अर्थ हैं ॥

- १ करेणुरिभ्यां स्त्री नेभे २ द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥
 ३ शरणं गृहरक्षित्रोः ४ श्रीपर्णं कमलेऽपि च ।
 ५ विषाभिमरलोद्देषु तीक्ष्णं क्लीवे खरे त्रिषु ॥ ५३ ॥
 ६ प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्तापप्रमातृषु ।
 ७ करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥
 ८ प्राण्युत्पादे संसरणमसंवाधचमूगतौ ।
 घण्टापथेऽथ वान्तान्ते 'समुद्रिरणमुन्नये ॥ ५५ ॥
 १० अतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभेदन्तयोः ।

१ 'करेणुः' (स्त्री) का हथिनी, १ अर्थ और 'करेणुः' (पु) का हाथी, १ अर्थ है ॥

२ 'द्रविणम्' (न) के बल, धन, २ अर्थ हैं ॥

३ 'शरणम्' (न) के मकान (घर), रक्षक, २ अर्थ हैं ॥

४ 'श्रीपर्णम्' (न) के कमल, अरणि (यज्ञमें रगड़कर आग पैदा करने योग्य काष्ठ-विशेष), २ अर्थ हैं ॥

५ 'तीक्ष्णम्' (न) के विष, लड़ाई, लोहा, ३ अर्थ और 'तीक्ष्णम्' (त्रि) का तेज हथियार आदि, १ अर्थ है ॥

६ 'प्रमाणम्' (न) के हेतु (जैसे—पहाड़पर अग्निका अनुमान करनेमें धुआँ हेतु है, ...), सीमा (हद), शास्त्रकी इयत्ता, प्रमाता, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'करणम्' (न) के कामकी सिद्धिमें अत्यंत उपकारक (जैसे—मारनेमें बाण-तलवार आदि), क्षेत्र, शरीर, इन्द्रिय, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'संसरणम्' (न) के प्राणियोंकी उत्पत्ति, सेनाका निर्विघ्न आगे बढ़ना, राजमार्ग (सड़क), ३ अर्थ हैं ॥

'समुद्रिरणम्' (+ समुद्ररणम् । न) के उत्पत्ती (वमन, कय) किया हुआ अन्न आदि, किसी चीजको ऊपर खींचना या उठाना, उखाड़ना, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'विषाणम्' (त्रि) के सींग, हाथीका दाँत, २ अर्थ हैं ॥

१ प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्या प्रहे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥

२ संकीर्णो 'निचिताशुद्धाविरिणं शून्यमूषरम् ।

४ 'सेतौ च वरणो ५ वेणी नदीभेदे कचोच्चये' (४२)

इति णान्ताः शब्दाः ।

अथ तान्ताः शब्दाः ।

६ देवसूर्यो विवस्वन्तौ ७ सरस्वन्तौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥

८ पक्षिताक्षर्यो गरुत्मन्तौ ९ शकुन्तौ भासपक्षिणौ ।

१० अग्न्युत्पातौ धूमकेतू ११ जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥

१ 'प्रवणम्' (त्रि) के ढालू जमीन, नम्र, २ अर्थ और 'प्रवणः' (पु) का चौरास्ता, १ अर्थ है ॥

२ 'संकीर्णः' (त्रि) के व्याप्त (फैला या भरा हुआ), अशुद्ध (दो जातियोंका मेल), २ अर्थ हैं ॥

३ 'इरिणम्' (+ इरणम्, ईरणम्, ईरिणम्, विरिणम् । न) के खाली स्थान, ऊसर जमीन, २ अर्थ हैं ॥

४ ['वरणः' (पु) के पुल, बाँस या तार, काँटा आदिका घेरा, २ अर्थ हैं] ॥

५ ['वेणी' (स्त्री), के नदी-विशेष केशकी चोटी २ अर्थ हैं] ॥

इति णान्ताः शब्दाः ।

अथ तान्ताः शब्दाः ।

६ 'विवस्वान्' (= विवस्वत् पु), के देवता, सूर्य हैं ॥

७ 'सरस्वान्' (= सरस्वत् पु) के नद (शोणभद्र, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि), समुद्र, २ अर्थ हैं ॥

८ 'गरुत्मान्' (= गरुत्मत् पु) के पक्षी, गरुड़ २ अर्थ हैं ॥

९ 'शकुन्तः' (पु) के गिद्ध, चिड़िया-मात्र २ अर्थ हैं ॥

१० 'धूमकेतुः' (पु) के आग, भविष्यमें होनेवाले उत्पातका सूचक तारा-विशेष, २ अर्थ हैं ॥

११ 'जीमूतः' (पु) के बादल पहाड़ २ अर्थ हैं ॥

१. 'निचिताशुद्धाविरिणम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. सेतौ...कचोच्चये' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यानेऽपि मूलमात्रमुपलभ्यते ॥

- १ हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे २ मरुतौ पवनामरौ ।
 ३ यन्ता हस्तिपके सूते ४ भर्ता घातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥
 ५ यानपात्रे शिशौ पोतः ६ प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ।
 ७ प्रहभेदे ध्वजे केतुः ८ पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥
 ९ स्थपतिः कारुभेदेऽपि १० भूभृद्भूमिधरे नृपे ।
 ११ मूर्द्धाभिषिक्तो भूपेऽपि १२ ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥
 १३ विष्णावप्यजिताव्यक्तौ—

- १ 'हस्तः' (पु) के हाथ, हस्त नामक तेरहवौ नक्षत्र, २ अर्थ हैं ॥
 २ 'मरुत्' (पु) के वायु, देवता, २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'यन्ता' (= यन्त्र पु) के हाथीवान, सारथि (कोचवान, एकावान, द्वाइवर आदि), २ अर्थ हैं ॥
 ४ 'भर्ता' (= भर्तृ पु), बह्मा, पोषण (रक्षा) करनेवाला, पति, ३ अर्थ हैं ॥
 ५ 'पोतः' (पु) के जहाज, बालक, २ अर्थ हैं ॥
 ६ 'प्रेतः' (पु) के प्रेत (योनि-विशेष) मरा हुआ जीव, २ अर्थ हैं ॥
 ७ 'केतुः' (पु) के केतु नामका ग्रह, पताका २ अर्थ हैं ॥
 ८ 'सुतः' (पु) के राजा पुत्र, २ अर्थ हैं ॥
 ९ 'स्थपतिः' (पु) के बढ़ई, कंचुकी, बृहस्पतिके मन्त्रसे यज्ञ करनेवाले, ६ अर्थ हैं ॥
 १० 'भूभृत्' (पु) के पहाड़, राजा, २ अर्थ हैं ॥
 ११ 'मूर्द्धाभिषिक्तः' (पु), के राजा, प्रधान, मन्त्री, क्षत्रियमात्र ब्राह्मण जातिके पितासे क्षत्रिय जातिकी मातामें उत्पन्न संतान, ५ अर्थ हैं ॥
 १२ 'ऋतुः' (पु) के स्त्रियोंका मासिक धर्म, हेमन्त आदि (१।४।१३ में उक्त) छः ऋतु २ अर्थ हैं ॥
 १३ 'अजितः' (पु) के विष्णु, शिवजी, २ अर्थ और 'अजितः' (त्रि) का नहीं हारा हुआ १ अर्थ, तथा 'अव्यक्तः' (पु) के विष्णु, शिवजी, मूर्ख, ३ अर्थ; 'अव्यक्तम्' (न) महदादिक, आत्मा २ अर्थ और 'अव्यक्तम्' (त्रि) का अस्पष्ट, १ अर्थ हैं ॥

१—सूतस्त्वष्टरि सारथौ ।

- २ व्यक्तः प्राज्ञेऽपि ३ 'दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥
 ४ क्षता स्यात्सारथौ द्वाभ्यो^१ क्षत्रियायां च शूद्रजे ।
 ५ वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कार्त्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥
 ६ आनर्त्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्धिशेषयोः ।
 ७ कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥
 ८ 'श्लेष्मादिरसरक्तादिमहाभूतानि तद्गुणाः ।

१ 'सूतः' (पु) के बड़ई, सारथि, क्षत्रिय जातिके पितासे ब्राह्मण जातिकी मातामें उत्पन्न संतान, बन्दी, घारा, ५ अर्थ और 'सूतः' (त्रि) के जन्मा (पैदा) हुआ, प्रेरित, २ अर्थ हैं ॥

२ 'व्यक्तः' (पु) के विद्वान्, स्पष्ट, २ अर्थ हैं ॥

३ 'दृष्टान्तः' (पु) के तर्क आदि शास्त्र, उदाहरण, २ अर्थ हैं ॥

४ 'क्षता' (= क्षत्र पु), के सारथि, द्वारपाल, शूद्र जातिके पितासे क्षत्रिय जातिकी मातामें उत्पन्न संतान, वेरया-पुत्र, नियुक्त, ब्रह्मा, ६ अर्थ हैं ॥

५ 'वृत्तान्तः' (पु) के प्रकरण (अवसर), प्रकार (तरह, भाव, यथा-पाँच प्रकारके छः प्रकारके,.....) साकल्य (पूरा २), बात, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'आनर्त्तः' (पु) के लड़ाई, नाचघर, देश-विशेष (पश्चिम समुद्रके पासकी द्वारावती अर्थात् द्वारकापुरी), ३ अर्थ हैं ॥

७ 'कृतान्तः' (पु) के यमराज, सिद्धान्त, भाग्य, पापकर्म, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'धातुः' (पु) के कफ आदि (थूक, खखार, पित्त, आदि), रस (भोजन करने बाद उत्पन्न अन्नादिका विकार-विशेष), खून आदि (चर्बी, मज्जा, वीर्य, मांस, पीव, हड्डी आदि), पृथ्वी आदि, (जल तेज, वायु, आकाश), पञ्च महाभूत, उन (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) के गुण (गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द), इन्द्रिय (आँख आदि पूर्वोक्त (१।५।८) ११ इन्द्रिय), हरताल, मैनसिल, गेरू आदि पत्थरके विकारसे उत्पन्न धातुः भूः, एष,

१. 'दृष्टान्तावुभौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'वेद्यायां च' इत्यपपाठश्छन्दोमङ्गात् ।

३. 'श्लेष्मादिरस्थिरक्तादिमहाभूतानि' इति पाठान्तरम् ॥

इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥

१ कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ।

२ कासू सामर्थ्ययोः शक्तिश्मूर्तिः क्वाठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥

४ विस्तारवल्बयोर्वततिः खर्वसती रात्रिवेश्मनोः ।

६ क्षयार्चयोरपचितिः ७ सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

८ 'अतिः' पीडाधनुःकोटयोर्जातिः सामान्यजन्मनोः ।

१० प्रचारस्यन्दयो रीतिः—

पच आदि शब्दोत्पत्तिके कारण-भूत व्याकरणशास्त्रसम्मत धातु, सोना-चाँदी-तौबा-पीतल आदि धातु, ९ अर्थ हैं ॥

१ 'शुद्धान्तः' (पु) के रनिवास (राजाका महल—जहाँ सब कोई नहीं जा सकता ऐसा राजाकी रानियोंका निवासगृह), राजाकी खिर्राँ, अशौचका अन्त, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'शक्तिः' (स्त्री) के बर्झी, सामर्थ्य, २ अर्थ हैं ॥

३ 'मूर्तिः' (स्त्री) के कठोरता, शरीर, २ अर्थ हैं ॥

४ 'व्रततिः' (स्त्री) के विस्तार, लता, २ अर्थ हैं ॥

६ 'अपचितिः' (स्त्री) के क्षय, पूजा, खर्च, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'सातिः' (स्त्री) के दान (गज-मदका जल), अन्त, २ अर्थ हैं ॥

८ 'अतिः' (+ आर्तिः । स्त्री) के दुःख, धनुषका दोनोंका किनारा (छोर) २ अर्थ हैं ॥

९ 'जातिः' (स्त्री) के सामान्य अर्थात् जाति (जैसे—गोत्व, ब्राह्मणत्व, आदि), जन्म, मालती नामका फूल, छन्द, जातीफल, गोत्र, आँवला, ७ अर्थ हैं ॥

१० 'रीतिः' (स्त्री) के रिवाज (रस्म, लोकाचार), छन्द, धोरे २ बहना, टपकना, पीतल, लोहेकी मैल (मण्डूर), वैदर्भी आदि (गौड़ी, पाञ्चाली, लाटिका) काव्यके रसादि-संबन्धी चार^१ रीति, ५ अर्थ हैं ॥

१. 'आर्तिः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं विश्वनाथेन—'पदसंवटना रीतिरङ्गसंस्थाविशेषवत् ।

उपकर्त्री रसादीनां, सा पुनः स्याच्चतुर्विधा ॥

वैदर्भी चाथ गौड़ी च पाञ्चाली लाटिका तथा ।

इति सा० द० १।६।४४-६४५ ॥

—१ ईतिडिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥

२ उदयेऽधिगमे प्राप्तिरेवमेता त्वन्नित्रये युगे ।

४ वीणाभेदेऽपि महती ५ भूतिर्भस्मनि संपदि ॥ ६९ ॥

६ नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्यथ संगरे ।

सङ्गे सभायां समितिः ८ क्षयवासावपि क्षितिः ॥ ७० ॥

९ रवेरर्विश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ।

१० जगती जगति च्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥

१ 'ईतिः' (स्त्री) के विप्लव (बहुत वर्षा होना, सूखा पड़ना अर्थात् वर्षाका न होना; टिड्डी, मुसे, सुग्गेका, लगना, राजाका पास आना; ये ६ 'उप-द्रव'), परदेश जाना, २ अर्थ हैं ॥

२ प्राप्तिः' के उत्पत्ति, पाना, २ अर्थ हैं ॥

३ 'त्रेता' (स्त्री) के दक्षिण, गार्हपत्य और हवनीय नामके तीन अग्नि-विशेष, त्रेता नामक युग, २ अर्थ हैं ॥

४ 'महती' (स्त्री) के नारद ऋषिकी वीणा, महत्त्वसे युक्त (बड़ी) स्त्री, २ अर्थ हैं ॥

५ 'भूतिः' (स्त्री) के भस्म (राख), सम्पत्ति, हाथीका शृङ्गार, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'भोगवती' (स्त्री) के दर्पोंकी नदी, सर्पोंकी नगरी (पाताल), २ अर्थ हैं ॥

७ 'समितिः' (स्त्री) के युद्ध, सङ्ग, सभा ३ अर्थ हैं ॥

८ 'क्षितिः' (स्त्री) के विनाश, निवास, पृथ्वी कालभेद, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'हेतिः' (स्त्री) के सूर्यकी किरण, हथियार, आगकी ज्वाला ३ अर्थ हैं ॥

१० 'जगती' (स्त्री) के संगार, चारह अक्षर के (जैसे—वंशस्थ, तोटक, इन्द्रवंशा आदि) छन्द, पृथ्वी, जन, ४ अर्थ हैं ॥

१. क्षितिः' इति पाठान्तरम् ॥

२. इत्यथ पङ्क् भवन्ति । ता यथा —

'अतिदृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुक्राः ।

प्रत्यासन्नाश्च राजानःपडेता ईतयः स्मृताः' ॥ इति ।

अचित्तु—स्वचक्रं पर चक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः इत्येवमुत्तरार्द्धं दृश्यते ॥

- १ 'पङ्क्तिश्छन्दोऽपि दशमं २ स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ।
 ३ पत्तिर्गतौ च ४ मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः ॥ ७२ ॥
 ५ प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च ६ कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ।
 ७ सिकताः स्युर्बालुकापि ८ वेदे भवसि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥

‘पङ्क्तिः’ (स्त्री) के दश अक्षरके (जैसे—चम्पकमाला, मनोरमा, मत्ता आदि) छन्द, पंक्ति (कतार), २ अर्थ हैं ॥

२ ‘आयतिः’ (स्त्री) के प्रभाव, उत्तर काल, २ अर्थ हैं ॥

३ ‘पत्तिः’ (स्त्री) के चलना, योद्धा, सेना—विशेष (१० २९२ या १८१८०) पैदल ४ अर्थ हैं ॥

४ ‘पक्षतिः’ (स्त्री) का पक्ष (शुक्ल या कृष्ण) की प्रथम तिथि अर्थात् प्रतिपदा, चिद्विया आदिके पङ्क्तिकी जड़, २ अर्थ हैं ॥

५ ‘प्रकृतिः’ (स्त्री) के योनि, लिङ्ग (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसक), स्वभाव, शिल्पी (कारीगर), नागरिक—मन्त्री, आदि, गुणसारथ्य, ६ अर्थ हैं ॥

६ ‘वृत्तिः’ (स्त्री) के कैशिकी आदि (आरभटी, शाश्वती, भारती) काव्य—सम्बन्धी चार ‘वृत्ति, जीविका, सूत्रादिका अर्थ हैं ॥

७ ‘सिकताः’ (स्त्री लि० ब० व०) के बालू, बालूसे युक्त स्थान या देश चीनी, ३ अर्थ हैं ॥

८ ‘श्रुतिः’ (स्त्री) के वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद), कान, वार्ता, ३ अर्थ हैं ॥

१. पंक्तिश्छन्दो दशापि स्यात् इति पाठान्तरम् ॥

२. भारती शाश्वती चैव कैशिक्यारभटी तथा ।

अतस्त्रौ वृत्तयश्चैताः यासु नाट्यं प्रतिष्ठितम् ॥ इति ।

दशरूपकेऽपि ‘तद्व्यापारात्मिका वृत्तिश्चतुर्धा, तत्र कैशिकी’ (दशरू० २१४७) इत्यारभ्य ‘चतुर्थी भारती सापि वाच्या नाटकलक्षणे (दशरू० २१६० इत्यन्तेन तद्भेदा) उक्तं अत्रे च—

‘शृङ्गारे कैशिकी वीरे सात्वत्यारभटी पुनः ।

रसे रौद्रे च भीमस्ते वृत्तिःसर्वत्र भारती’ ॥ (दशरू० २१६१)

इत्यनेन करयाः कोपयोग इति कथितम् ॥

- १ वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च यादिति ।
- २ गुप्तिः क्षितिर्व्युदासेऽपि ३ धृतिर्धातुवर्धयोः ॥ ७३ ॥
- ४ बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि ।
- ५ 'वासिता स्त्रीकारण्याश्च ६ वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ॥ ७४ ॥
वार्ते फल्गुन्यरोगे च त्रिध्व ७ ऋ न घृतामृतम् ।
- ८ कलधौतं रूप्यहेम्नो ९ निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥
- १० श्रुतं शास्त्रावधृतयो ११ युगपर्यातयोः कृतम् ।
- १२ अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानर्थाश्च च ॥ ७७ ॥

- १ 'वनिता' (स्त्री) के अत्यन्त प्यारी स्त्री, स्त्रीमात्र, २ अर्थ हैं ॥
- २ 'गुप्तिः' (स्त्री) के जमीनका गढा (गुफा या सुरङ्ग), जेलखाना, रक्षा ३ अर्थ हैं ॥
- ३ 'धृतिः' (स्त्री) के धारण, धैर्य, योग-विशेष, यज्ञ, पुष्टि, ५ अर्थ हैं ॥
- ४ 'बृहती' (स्त्री) के रेंगनी (भट्कटैया), नव अक्षर का (जैसे-मणिबन्ध, ...) छन्द, बड़ी, विश्वावसुकी वीणा, वस्त्र विशेष ५ अर्थ हैं ॥
- ५ 'वासिता' (+ वासिता । स्त्री) के स्त्री, हथिनी, २ अर्थ हैं ॥
- ६ 'वार्ता' (स्त्री) के जीविका, बात, २ अर्थ और 'वार्ताम्' (त्रि) के सारहीन (निस्तत्त्व, निर्बल), नीरोग, २ अर्थ हैं ॥
- ७ 'घृतम्' (न) के घी, पानी, २ अर्थ और 'घृतम्' (त्रि) का प्रदीप्त, १ अर्थ तथा 'अमृतम्' (न) के अमृत, पानी, घी, यज्ञ-शेष, अयाचित, मोक्ष ६ अर्थ और 'अमृतः' (पु) के घन्वन्तरि, देवता, २ अर्थ हैं ॥
- ८ 'कलधौतम्' (न) चाँदी, सोना, २ अर्थ हैं ॥
- ९ 'निमित्तम्' (न) के कारण, चिह्न, २ अर्थ हैं ॥
- १० 'श्रुतम्' (न) का शास्त्र, ३ अर्थ और 'श्रुतम्' (त्रि) का सुना हुआ, १ अर्थ है ॥
- ११ 'कृतम्' (न) के सत्ययुग, पर्याप्त (पूरा, काफी); २ अर्थ हैं ॥
- १२ 'अत्याहितम्' (न) के बड़ा भय, जीनेकी आशा छोड़कर किया हुआ बहुत बड़ा साहस, २ अर्थ हैं ॥

१. 'वासिता' इति पाठान्तरम् ॥

- १ युक्ते क्षमादायुते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ।
 २ वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥
 ३ महद्वाज्यं चा ४ वगीतं जन्वे स्याद् गर्हिते त्रिषु ।
 ५ श्वेतं रूप्येऽपि ६ रजतं हेमिन् रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥
 ७ त्रिष्वतो ८ जगद्विज्ञेऽपि ९ रक्तं नील्यादि राशि च ।

१ 'भूतम्' (न) के युक्त (उचित), पृथ्वी आदि (जल, वायु, तेज और आकाश), सत्य, ३ अर्थ और 'भूतम्' (त्रि) के प्राणी, बीता हुआ, सदृश, प्राप्त, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'वृत्तम्' (न) के श्लोक आदि पद्यमात्र (जिनमें मात्राकी नहीं किन्तु वर्णोंकी गणना हो वह पद्यविशेष^१), चरित्र, २ अर्थ और 'वृत्तः' (त्रि) क बीता हुआ, दृढ़ (मजबूत), गोलाकार, अधीत (पढ़ा हुआ), ४ अर्थ हैं ॥

३ 'महत्' (त्रि) का बड़ा, १ अर्थ और 'महत्' (न) का राज्य, १ अर्थ है ॥

४ 'अवगीतम्' (न) का जनापवाद, १ अर्थ और 'अवगीतः' (त्रि) के सिद्धान्त, निन्दित, दुष्ट (+ दृष्ट अर्थात् देखा गया), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'श्वेतम्' (न) का चोँदी १ अर्थ; 'श्वेतः' (त्रि) का सफेद पदार्थ, १ अर्थ; 'श्वेतः' (पु) के द्वीप-विशेष, पर्वत-विशेष, २ अर्थ और + 'श्वेता' (स्त्री) के कौड़ी, काष्ठपाटली, शङ्खिनी, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'रजतम्' (न) सोना, चोँदी, २ अर्थ और 'रजतम्' (त्रि) का सफेद वर्णवाला पदार्थ १ अर्थ है ॥

७ यहाँसे सब तान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

८ 'जगत्' (त्रि) का जङ्गम, १ अर्थ; 'जगत्' (न) का संसार, १ अर्थ और 'जगत्' (पु) का वायु, १ अर्थ है ॥

९ 'रक्तम्' (न) का लाल रंग, खून, कुङ्कुम, ३ अर्थ, 'रक्तः' (त्रि) के अनुरक्त, रंगा हुआ कपड़ा आदि, २ अर्थ हैं ॥

१. 'त्रिष्वितो' इति पाठान्तरम् ॥
 त्वादिवचनं प्रथमाभावे ।

२. एतच्च द्रष्टव्यं छन्दोमन्त्रादी 'पद्यं चतुष्पदी'

- १ अवदातः क्षिते पीते शुद्धे २ बद्धाङ्गनौ सितौ ॥ ८० ॥
 ३ युक्तेऽतिसंस्कृते मर्विण्याभिनीतो ४ ऽऽ संस्कृतम् ।
 कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्य ५ नन्तोऽव्यवधायि ॥ ८१ ॥
 ६ ख्याते दृष्टे प्रतीतो ७ ऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ।
 ८ विविक्तौ पूतविजनौ ९ मूर्च्छितौ मूढलोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥
 १० द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ ११ शितौ धव्यमेवजौ ।
 १२ सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यहिते च सत् ॥ ८३ ॥
 १३ पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते ।

- १ 'अवदातः' (त्रि) के सफेद, पीला, शुद्ध, ३ अर्थ हैं ॥
 २ 'सितः' (त्रि) बँधा हुआ, समाप्त, श्वेत, (सफेद) पदार्थ, ३ अर्थ हैं ।
 ३ 'अभिनीतः' (त्रि) के कृत्रिम (बनावटी, नकली), अत्युत्तम, सहनशील, ३ अर्थ हैं ॥
 ४ 'संस्कृतम्' (त्रि) के बनाया (संस्कार किया) हुआ, उत्तम, भूषित, ३ अर्थ और 'संस्कृतम्' (न) का पणिन्यादि के लक्षणोंसे सिद्ध अर्थात् संस्कृत भाषा, १ अर्थ है ॥
 ५ 'अनन्तः' (त्रि) का अन्तरहित, १ अर्थ, 'अनन्तः' (पु) के शेष-नाग, विष्णु, २ अर्थ और 'अनन्तम्' (न) का आकाश, १ अर्थ है ॥
 ६ 'प्रतीतः' (त्रि) के प्रसिद्ध, प्रसन्न, जाना हुआ, ३ अर्थ हैं ॥
 ७ 'अभिजातः' (त्रि) के श्रेष्ठ कुलमें उत्पन्न (खान्दानी), विद्वान्, न्याययुक्त, ३ अर्थ हैं ॥
 ८ 'विविक्तः' (त्रि) के पवित्र, एकान्त, विवेकवाला, ३ अर्थ हैं ॥
 ९ 'मूर्च्छितः' (त्रि) के मूर्ख, वृद्धिसे युक्त, बेहोश, ३ अर्थ हैं ॥
 १० 'शुक्तः' (त्रि) के खट्टा (काँजी), कठोर, २ अर्थ हैं ॥
 ११ 'शितः' (त्रि) के सफेद, काला, २ अर्थ हैं ॥
 १२ 'सत्' (त्रि) के सत्य, साधु (सज्जन), विद्यमान, प्रशस्त (उत्तम), पूजित, धीर, मान्य, ७ अर्थ हैं ॥
 १३ 'पुरस्कृतः' (त्रि) के पूजित, शत्रुसे आक्रान्त, अग्रे किया हुआ, श्रेष्ठ, ४ अर्थ हैं ।

- १ निषातावाश्रयावाप्तौ क्षत्रामेवं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥
 २ जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युर्उच्छ्रिता ३ उत्थितास्त्वमी ।
 वृद्धिप्रत्ययतोत्पन्ना ४ आहतौ सादराचितौ ॥ ८५ ॥
 ५ 'कर्मविपाके ६ पि गति ६ गर्मुत् द्वेस्युल्लवणे तृणे (४३)
 ७ क्रतुमुञ्छशिले सत्ये शोभनेऽपि चिवक्षितम् (४४)
 ८ उदास्थितः प्रतीहारे चरमेदे ९ समाहितः (४५)
 ध्यानस्थे चाप्य १० 'नीकस्थो गजलक्षणवेदिनि (४६)
 ११ अद्धारचनयोर्भक्तिर्गौण्यां वृत्तौ च सेवने (४७)

१ 'निषातः' (त्रि) के निवासस्थान, वायुसे रहित देश-स्थान आदि, हथियारसे अमेद्य कवच, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'उच्छ्रितः' (त्रि) के उत्पन्न, अभिमानी, बढ़ा हुआ, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'उत्थितः' (त्रि) के वृद्धिवाला, प्रवृत्त (लगा हुआ, तैयार), उत्पन्न, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'आहतः' (त्रि) के सत्कारसे युक्त, आदर पाया हुआ, २ अर्थ हैं ॥

५ ['गतिः' (स्त्री) के कर्म-विपाक, गमन, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['गर्मुत्' (पु) के सोना, स्पष्ट, तृण; ३ अर्थ हैं] ॥

७ ['क्रतुम्' (न) के उञ्छशिल (खेत या खलिहान आदिसे अन्नका १-१ दाना चूंगना), सत्य, सुन्दर, ३ अर्थ हैं] ॥

८ ['उदास्थितः' (पु) का प्रतीहार(द्वार)-दूत-विशेष, अध्यक्ष, ३ अर्थ हैं ॥

९ ['समाहितः' (त्रि) के ध्यानमें मग्न, आहित, प्रतिज्ञात, समाधान करनेवाला, ४ अर्थ हैं] ॥

१० ['नीकस्थः' (पु) के युद्धमें स्थित, हाथी के लक्ष्णों को जानने-वाला, राजरक्षक, ३ अर्थ हैं] ॥

११ ['भक्तिः' (स्त्री) के श्रद्धा, रचना-विशेष, गौणी वृत्ति, सेवा करना, ४ अर्थ हैं] ॥

१. 'कर्मविपाकेऽपि.....स्थितिः' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां दुर्गवचनत्वे-नोपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितयाऽत्र क्षेपकत्वेन निहितः ।

२. तान्तशब्देषु भान्तशब्दपठनमनुचितं प्रतिभाति ॥

३. यकारान्तः कथमुक्तः क्षी० स्वा० ॥

- १ आतौ लब्धप्रत्ययितौ २ नता पुत्रश्च पुत्रयोः (४८)
 ३ समूहोत्पन्नयोजित ४ मल्लिजिह्वीपिनीन्द्रयोः (४९)
 ५ सौतिकेऽपि प्रपातो ६ ऽथावपातः वतमावटौ (५०)
 ७ समित्सङ्गे रणेऽपि स्त्री ८ व्यवस्थायासपि स्थितिः (५१)

इति तान्ताः शब्दाः ।

अथ ध्यान्ताः शब्दाः ।

- ९ अर्थोऽभिधेयैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।
 १० 'निदानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले सुरौ ॥ ८६ ॥

- १ ['आतः' (त्रि) के लब्ध (मिला हुआ), विश्वस्त, २ अर्थ हैं] ॥
 २ ['नतः' (= नष्ट पु), का पोता (पुत्रका पुत्र), नाती (पुत्रिका पुत्र), २ अर्थ हैं] ॥
 ३ ['जातम्' (न) का समूह, १ अर्थ और 'जातम्' (त्रि) का उत्पन्न, १ अर्थ है] ॥
 ४ ['अहिजित्' (पु) के विष्णु, इन्द्र, २ अर्थ हैं] ॥
 ५ ['प्रतापः' (पु) के पहाड़ का झरना, लेटना, २ अर्थ हैं] ॥
 ६ ['अवपातः' (पु) के अतट (बिना किनारावाला), गढा, २ अर्थ हैं] ॥
 ७ ['समित्' (स्त्री) के संग, जुद्ध, २ अर्थ हैं] ॥
 ८ ['स्थितिः' (स्त्री) के व्यवस्था, निवासस्थान, टिकाव, ३ अर्थ हैं] ॥

इति तान्ताः शब्दाः ।

अथ ध्यान्ताः शब्दाः ।

- ९ 'अर्थः' (पु) के कहनेयोग्य, धन, वस्तु, प्रयोजन, (उद्देश्य, मतलब), निवृत्ति, ५ अर्थ हैं ॥

- १० 'तीर्थम्' (न) के कृपादिके पासका जलशय (गढा । + सीढ़ी मुकुं । + निदान अर्थात् उपाय), बौद्धशास्त्रसे भिन्न शास्त्र, ऋषिसे सेवित जल, गुरु, यज्ञ, पुण्यक्षेत्र, यज्ञवाला, स्त्री-रज, योनि, पात्र, दर्शन, ११ अर्थ हैं ॥

१. 'निदानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे' इति पाठान्तरम् ॥

- १ समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे हितेऽपि च ।
 २ दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ ३ वीथी पङ्क्यपि ॥ ८७ ॥
 ४ आस्थानीयत्नयोरास्था ५ प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ।
 ६ 'शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थः ७ संस्थाऽऽधारे स्थितौ मृतौ (५२)

इति धान्ताः शब्दाः ।

अथ दान्ताः शब्दाः ।

- ८ अभिप्रायवशौ छन्दा ९ वद्धौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥
 १० अपवादौ तु निन्दाश्चे ११ दायादौ सुतबान्धवौ ।
 १२ पादा रश्म्यङ्घ्रितुर्याशा १३ अन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः ॥ ८९ ॥

- १ 'समर्थः' (त्रि) के बलवान् , सम्बद्ध अर्थ, हित, ३ अर्थ हैं ॥
 २ 'दशमीस्थः' (त्रि) के क्षीण रागवाला (प्रेमहीन), वृद्ध, २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'वीथी' (स्त्री) के रास्ता (गली), पङ्क्ति (कतार), गृहप्रान्त,
 ३ अर्थ हैं ॥
 ४ 'आस्था' (स्त्री) के सभा, उपाय, आलम्बन, अपेक्षा, ४ अर्थ हैं ॥
 ५ 'प्रस्थः' (पु) के शिखर (कँगूरा), परिमाण-विशेष (सेर), २ अर्थ हैं ॥
 ६ ['ग्रन्थः' (पु) के शास्त्र, धन, २ अर्थ हैं] ॥
 ७ ['संस्था' (स्त्री) के आधार, स्थिति, मृति, संस्था (सभा, सोसायटो
 आदि), ४ अर्थ हैं] ॥

इति धान्ताः शब्दाः ।

अथ दान्ताः शब्दाः ।

- ८ 'छन्दः' (पु) के अभिप्राय, वश, २ अर्थ हैं ॥
 ९ 'वद्धः' (पु) के मेघ, वर्ष, पर्वत विशेष, मोथा, ४ अर्थ हैं ॥
 १० 'अपवादः' (पु) के निन्दा, आज्ञा, विभ्रम्भ, निरवकाश (बाधक)
 सूत्रादि, ४ अर्थ हैं ॥
 ११ 'दायादः' (पु) के पुत्र, परिवार, २ अर्थ हैं ॥
 १२ 'पादः' (पु) के किरण, पैर, चौथाई हिस्सा, ३ अर्थ हैं ॥
 १३ 'तमोनुत्' (= तमोनुद् पु) के चन्द्र, अग्नि, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा व्याख्यानेऽमरविवेकमूलपुस्तके तद्व्याख्याने चोपलभ्यते ॥

- १ निर्वादो जनवादेऽपि २ शादो जम्वालदाप्यथोः ।
- ३ आरावे रुदिते आतर्याक्रन्दो दावणे रणे ॥ १० ॥
- ४ स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि ५ सूदः स्यद् व्यञ्जनेऽपि च ।
- ६ गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो ७ हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ११ ॥
- ८ प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽध्वियाप् ।
- ९ स्त्री संविज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु ॥ १२ ॥

१ 'निर्वादः' (पु) के जनापवाद, सिद्धान्त, २ अर्थ हैं ॥

२ 'शादः' (पु) के कीचड़ (पक), घाल २ अर्थ हैं ॥

३ 'आक्रन्दः' (पु) के कष्ट युक्त शब्द, रोना, रत्नक, भयकर युद्ध, ४ अर्थ हैं ॥

४ 'प्रसादः' (पु) के अनुग्रह, प्रसन्नता, काव्य का 'गुण-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'सूदः' (त्रि) के व्यञ्जन (कढ़ी, बरी, तरकारी आदि), रसोइयादार, २ अर्थ हैं ॥

६ 'गोविन्दः' (पु) के गोष्ठ (गोशाला) का मालिक, विष्णु, बृहस्पति, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'आमोदः' (पु) के हर्ष, दूर ही से चित्तको आकर्षित करनेवाला कस्तूरी आदिका गन्ध, २ अर्थ और 'मदः' (पु) के हर्ष, कस्तूरी, वीर्य (शुक्र), गर्व (अहङ्कार), हाथीका मद, ५ अर्थ हैं ॥

८ 'ककुदः' (पु न) के प्राधान्य, राज-चिह्न (छत्र, चंबर आदि), वैल या साँहका डील, पहाड़की चोटी, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'संविद्' (= संविद् स्त्री) के ज्ञान, संभाषा (संभाषण । + संकेत), कर्मका नियम वा व्यवस्थापन, लड़ाई, नाम, तोषण, आचार, प्रतिज्ञा, ८ अर्थ हैं ।

१. विश्वनाथेन प्रसादलक्षणमुक्तन्तथा—

‘चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्तं शुष्केन्धनमिवानलः ।

स प्रसादः समस्तेषु रतेषु रचनासु च’ ॥ इति सा० द० ६ । ६३१ ॥

कान्यप्रकाशे च—‘शुष्केन्धनादिवत्स्वच्छजलवत्सहसैव यः ।

व्याप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितरितिः’ ॥ इति ॥

- १ धर्मे रहस्युपनिषत् २ स्यादतौ बत्सरे शरत् ।
 ३ पदं व्यवसितप्राणस्थानलक्ष्माञ्छिवस्तुषु ॥ ९३ ॥
 ४ गोष्पदं सेविते माने ५ प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ।
 ६ त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू ७ मृदू चातीक्ष्णकोमलौ ॥ ९४ ॥
 ८ मूढाल्पापटुनिर्भग्या मन्दाः स्युः ९ द्वौ तु शारदौ ।
 प्रत्यग्राप्रतिभौ १० विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥
 इति दकारान्ताः शब्दाः ।

अथ धकारान्ताः शब्दाः ।

११ व्यामो वटश्च न्यग्रोधौ—

१ 'उपनिषत्' (= उपनिषद् स्त्री) के धर्म, एकान्त, वेदान्त (ग्रन्थ-विशेष), ३ अर्थ हैं ॥

२ 'शरत्' (= शरद् स्त्री) के शरद् ऋतु (पृ० ४२), वर्ष, २ अर्थ हैं ॥

३ 'पदम्' (न) के व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, पैर, शब्द (सुबन्ध और तिङन्त), वाक्य, एक वस्तु, व्यवसाय, अपदेश, १० अर्थ हैं ॥

४ 'गोष्पदम्' (न) के गौओंसे सेवित स्थान, गौके चरणतुल्य प्रमाण-वाला गदा २ अर्थ हैं ॥

५ 'आस्पदम्' (न) के प्रतिष्ठाका स्थान, काम, १ अर्थ हैं ॥

६ 'स्वादुः' (त्रि) के इष्ट, मधुर, स्वादिष्ट, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'मृदुः' (त्रि) के तेजोहीन, कोमल, २ अर्थ हैं ॥

८ 'मन्दः' (त्रि) के अल्प, बेवकूफ भाग्यहीन, शिथिल, स्वच्छन्द, रोगी, शनि, ७ अर्थ हैं ॥

९ 'शारदः' (त्रि), के नया (टटका), डरपोक (ढिठाई से हीन), शरद् ऋतुमें उत्पन्न, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'विशारदः' (त्रि) के विद्वान्, प्रतिभावाला, २ अर्थ हैं ॥

इति दान्ताः शब्दाः ।

अथ धान्ताः शब्दाः ।

११ 'न्यग्रोधः' (पु) के व्याम (अँकवारभर अर्थात् फैलाये हुए दोनों हाथोंके धरेका प्रमाण-विशेष), बरगद (बड़) का पेड़, २ अर्थ हैं ॥

—१ उत्सेधः काय उन्नतिः ।

२ पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥

३ परिविर्व्यव्ययतरोः शाखाणामुपसूर्यके ।

४ वन्धकं व्यसनं चेतःपीडाऽधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥

५ स्युः समर्थगनीवाकनियमाश्च समाधयः ।

६ दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥

मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतभ्यानुवर्तने ।

१ 'उत्सेधः' (पु) के शरीर, उन्नति (ऊँचाई), २ अर्थ हैं ॥

'विवधः, वीवधः' (२ पु) के वहँगी या काँवर, रास्ता, बोझ, ३ अर्थ ॥

३ 'परिविः' (पु) के यज्ञ-सन्बन्धी पेड़ (पलाश, शमी आदि) की शाखा, परिवेष नामका सूर्यके चारों तरफवाला घेरा, गोलाई, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'आधिः' (पु) के वन्धक (ऋण लेनेके समय विश्वासके लिये महाजनके पास रखी हुई चीज अर्थात् थाती, धरोहर), आपत्ति, मानसिक पीड़ा, अधिष्ठान, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'समाधिः' (पु) के समर्थन, चुप रहना, नियम (अपनेको ब्रह्मरूप समझना), ३ अर्थ हैं ॥

६ 'अनुबन्धः' (पु) के दोष लगाना, नष्ट होनेवाले (प्रकृति, प्रत्यय, आगम, आदेश आदिमें इत्संज्ञा होनेपर लुप्त होनेवाले) अक्षर (जैसे—एध, डुपचष्, सु, औट्, तिप्, डीष्, णट्, नुट्, धुट्, नुम्, ...में क्रमशः अकार, डु तथा अष्, उ, ...वर्ण), पिता आदि श्रेष्ठोंकी आज्ञा माननेवाला बालक, प्रकरणागत विषयोंका अनुवर्तन (जैसे—वैरानुन्धः, ...) ४ अर्थ हैं ॥

१. सूतसंहितायां समाधिलक्षणमुक्तं तथा—

'सोऽहं ब्रह्म न संसारी न मत्तोऽन्यत्कदाचन ।

इति विद्यात्स्वमात्मानं स समाधिः' प्रकीर्तितः ॥ इति ॥

अन्यच्च—समाधिः तु सभाधानं जीवात्मपरमात्मनोः ।

ब्रह्मण्येव स्थितायां स समाधिः प्रत्यगात्मनः ॥ इति ॥

भगवता पतञ्जलिना योगसूत्रेऽपि—

'तदेतत्तन्मात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः' ॥ इति यो० सू० ४ । ३ इति ॥

- १ विधुविष्णौ चन्द्रमसि २ परिच्छेदे बिलेऽवधिः ॥ ९९ ॥
 ३ विधिर्विधाने दैवेऽपि ४ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ।
 ५ बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि ६ स्कन्धः समुदयेऽपि च ॥ १०० ॥
 ७ देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् ।
 ८ विधा विधौ प्रकारे च ९ साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥
 १० बधूर्जाया स्नुषा स्त्री च ११ सुधालेपोऽमृतं स्नुही ।
 १२ संधा प्रतिज्ञा मर्यादा १३ भ्रष्टा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥
 १४ मधु मधे पुष्परसे सौद्रेपि—

- १ 'विधुः' (पु) के विष्णु, चन्द्रमा, कर्पूर, ३ अर्थ हैं ॥
 २ 'अवधिः' (पु) के समान (हृद्), बिल या गढ़ा, समय, ३ अर्थ हैं ॥
 ३ 'विधिः' (पु) के विधान (कानून), भाग्य, ब्रह्मा, समग्र, प्रकार, ५ अर्थ हैं ॥
 ४ 'प्रणिधिः' (पु) के याचना करना, दूत, २ अर्थ हैं ॥
 ५ 'बुधः' (पु) के पण्डित, बुधनामक ग्रह २ अर्थ और 'वृद्धः' (त्रि) के पण्डित, पुराना या बूढ़ा, बड़ा हुआ, ३ अर्थ हैं ॥
 ६ 'स्कन्धः' (पु) के समूह, सैन्यभाग, काण्ड (शाखा, डाल), कन्धा, राजा, ५ अर्थ हैं ॥
 ७ 'सिन्धुः' (पु) के सिन्धुदेश, नद-विशेष (यह पञ्जाब-में है), समुद्र, ३ अर्थ और 'सिन्धुः' (स्त्री) का नदी, १ अर्थ है ॥
 ८ 'विधा' (स्त्री) के विधि, प्रकार (तरह, जैसे-द्विविधा, त्रिविधा, ...), हाथी-घोड़े आदिका भोजन, वेतन, वृद्धि ५ अर्थ हैं ॥
 ९ 'साधुः' (त्रि) के रमणीय, सज्जन (महात्मा), बनियाँ, ३ अर्थ हैं ॥
 १० 'बधूः' (स्त्री) के पत्नी, पतोड़ (पुत्र-भतीजा आदिकी स्त्री), स्त्री-मात्र ३ अर्थ हैं ॥
 ११ 'सुधा' (स्त्री) के लेप, अमृत, सेंहुड, ३ अर्थ हैं ॥
 १२ 'संधा' (स्त्री) के स्वीकार, मर्यादा, प्रतिज्ञा, ३ अर्थ हैं ॥
 १३ 'भ्रष्टा' (स्त्री) के आदर, काङ्क्षा, २ अर्थ हैं ॥
 १४ 'मधु' (न) के मदिरा फूलका रस, शहद, दूध ४ अर्थ और 'मधुः' (पु) के वसन्त (चैत्र-वैशाख) ऋतु, मधु नामका दैत्य, चैत्र महीना, एक प्रकारका पेड़, ४ अर्थ हैं ॥

—१ अन्धं तमस्यपि ।

- २ अतस्त्रिषु ३ समुन्नद्धौ पण्डितंमन्यगर्हितौ ॥ १०३ ॥
 ४ ब्रह्मबन्धुरधिष्ठेने निर्देशे ५ ऽथावलम्बितः ।
 अविदूरोऽप्यवष्टब्धः ६ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ॥ १०४ ॥
 ७ 'लेशेऽपि गन्धः ८ संबाधः गृह्यसंकुलयोरपि (५३)
 ९ बाधा निषेधे दुःखेऽपि १० ज्ञातृचान्द्रिसुरा बुधाः' (५४)

इति धान्ताः शब्दाः ।



१ 'अन्धम्' (न) का अन्धकार, १ अर्थ और 'अन्धः' (त्रि) का अन्धा,
 १ अर्थ हैं ॥

२ यहाँसे आगे सब तान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ 'समुन्नद्धः' (त्रि) के स्वयं पण्डित न होते हुए भी अपनेको पण्डित
 समझनेवाला, अभिमानी, २ अर्थ हैं ॥

४ 'ब्रह्मबन्धुः' (त्रि) के निन्दा, (जैसे—हे ब्रह्मबन्धो ! दुष्टोऽसि,
), निर्देश, २ अर्थ हैं ॥

५ 'अवष्टब्धः' (त्रि) के अवलम्बित (आश्रित), समीप (पासवाला),
 बैधा हुआ, रुका हुआ ४ अर्थ हैं ॥

६ 'प्रसिद्ध' (त्रि), के विख्यात, सुशोभित, २ अर्थ हैं ॥

७ ['गन्धः' (पु) के लेख, गन्ध (सुवास), २ अर्थ हैं] ॥

८ ['संबाध' (पु) के गुप्त, सङ्कुल (भीड़ आदिसे ठसठस भरा
 हुआ), २ अर्थ हैं] ॥

९ ['बाधा' (स्त्री) के निषेध, दुःख, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['बुधः' (पु) के ज्ञाननेवाला, बुध नामका ग्रह, देवता, ३ अर्थ हैं] ॥

इति धान्ताः शब्दाः ।



१. अयं श्लोकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने मूलमात्रमुपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितया
 श्लोकात्वेन स्थापितः ॥

अथ नान्ताः शब्दाः ।

- १ सूर्यवह्नी चित्रभानू २ भानू रश्मिदिवाकरौ ।
 ३ भूतात्मनौ घातुदेहौ ४ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥
 ५ प्रावाणौ शैलपाषाणौ ६ पत्रिणौ शरपक्षिणौ ।
 ७ तरुशैलौ शिखरिणौ ८ शिखिनौ वद्विबर्हिणौ ॥ १०६ ॥
 ९ प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहा १० वथ सादिनौ ।
 द्वौ सारथिद्वयारोहौ ११ वाजिनोश्चेषुपक्षिणः ॥ १०७ ॥
 १२ कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्य १३ थ द्वायनाः ।
 वर्षाचिर्वीहिभेदाश्च १४ चन्द्रान्यर्का विरोचनाः ॥ १०८ ॥

अथ नान्ताः शब्दाः ।

- १ 'चित्रभानु' (पु) के सूर्य, अग्नि, २ अर्थ हैं ॥
 २ 'भानु' (पु) के किरण, सूर्य, २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'भूतात्मा' (= भूतात्मन् पु) के ब्रह्मा, शरीर, २ अर्थ हैं ॥
 ४ 'पृथग्जनः' (पु) के मूर्ख, नीच, २ अर्थ हैं ॥
 ५ 'प्रावा' (= प्रावन् पु) के पहाड़, पत्थर, २ अर्थ हैं ॥
 ६ 'पत्री' (= पत्रिन् पु) के बाण, पत्ती, बाज चिड़िया, रथिक, पहाड़,
 ५ अर्थ हैं ॥
 ७ 'शिखरी' (= शिखरिन् पु), के पहाड़, २ अर्थ हैं ॥
 ८ 'शिखी' (= शिखिन् पु) के मोर, अग्नि, पेड़, मुर्गा, पत्ती, बाण,
 कैतु नामका ग्रह, ७ अर्थ हैं ॥
 ९ 'प्रतियत्नः' (पु) के लिप्सा, वन्दी-ग्रहणादि, संस्कार, ३ अर्थ हैं ॥
 १० 'सादी' (= सादिन् पु) के सारथि, घुड़सवार, २ अर्थ हैं ॥
 ११ 'वाजी' (= वाजिन् पु) के घोड़ा, बाण, पत्ती, ३ अर्थ हैं ॥
 १२ 'अभिजनः' (पु) के वंश (खान्दान), जन्म-भूमि, ख्याति,
 कुलसमूह, ४ अर्थ हैं ॥
 १३ 'द्वायनः' (पु) के वर्ष, किरण, नीवार (तिन्नी) आदि अन्न, ३ अर्थ हैं ॥
 १४ 'विरोचना' (पु) के चन्द्र, अग्नि, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥

- १ 'क्लेशेऽपि वृजिनो २ विश्वकर्माकसुरशिखिनोः ।
- ३ आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्षम् ॥ १०९ ॥
- ४ 'शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः ।
- ५ अभिमानोऽर्थादिदपे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ॥ ११० ॥
- ६ 'घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ।
- ७ इनः सूर्ये प्रभौ ८ राजा मृगाङ्के क्षत्रिये नृपे ॥ १११ ॥
- ९ वाणिन्यौ नर्तकीदूतौ १० स्रवन्त्यामपि वाहिनी ।

१ 'वृजिनः' (पु) का क्लेश (+ केश), 'वृजिनम्' (न) का पाप, रक्तचर्म २ अर्थ और 'वृजिनः' (त्रि) का कुटिल, १ अर्थ है ॥

२ 'विश्वकर्मा' (= विश्वकर्मन् पु) के सूर्य, देवताओंका कारीगर (बढ़ई), २ अर्थ हैं ॥

३ 'आत्मा' (= आत्मन् पु) के यत्न, धैर्य, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर, ज्ञेत्रज्ञ (ज्ञानी पुरुष), ७ अर्थ हैं ॥

४ 'घनाघनः' (पु) के इन्द्र, घातुक (हिंसा करनेवाला) मतवाला हाथी, बरसनेवाला साल (वर्ष), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'अभिमानः' (पु) के घन आदिका घमण्ड, ज्ञान, प्रेम, हिंसा, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'घनः' (पु) के बादल, कड़ापन, लोहेका मुद्गर, बाहुल्य, मुस्त, ५ अर्थ और 'घनः' (त्रि) के कठोर, गम्भिर, कौंसेका बाजा, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'इनः' (पु) के सूर्य, प्रभु या समर्थ, श्रेष्ठ, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'राजा' (= राजन् पु) के चन्द्रमा, क्षत्रिय, राजा, स्वामी, यक्ष, इन्द्र, ६ अर्थ हैं ॥

९ 'वाणिनी' (स्त्री) के नाचनेवाली वेश्या आदि, दूती, चतुर स्त्री, मतवाली स्त्री, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'वाहिनी' (स्त्री) के नदी, सेना, सेनाका भेद-विशेष (२।८।८१ का चक्र), ३ अर्थ हैं ॥

१. 'क्लेशे' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शक्रघातुकमत्तेभवर्षुकाब्दो घनाघनः' इति पाठान्तरम् ॥

३. कचित्तु — 'घनो.....निरन्तरे' इत्ययमंशः 'अभिमानो.....हिंसयोः' इत्ययानन्तरं पठ्यते ॥

- १ ह्यदिन्यौ वज्रतडितौ २ वन्दायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥
 ३ त्वदेहयोरपि तनुः ४ सूनाऽघोजिह्विकापि च ।
 ५ क्रतुविस्तारयारस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥
 मन्दे ६ ऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ।
 ७ 'वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ॥ ११४ ॥
 ८ उत्साहने च 'हिसायां सूचने चापि गन्धनम् ।
 ९ आतञ्जनं प्रतीवापत्रवनाप्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥

- १ 'ह्यादिनी' (स्त्री) के वज्र (इन्द्रका अस्त्र-विशेष), विजली, २ अर्थ हैं ॥
 २ 'कामिनी' (स्त्री) के बच्चा (बाँदा अर्थात् पेड़के ऊपर ही उत्पन्न काष्ठ-विशेष), स्त्री, काम (इच्छा) करनेवाला स्त्री, विलासिनी स्त्री, ४ अर्थ हैं ॥
 ३ 'तनुः' (स्त्री) के त्वचा (छाल, चमड़ा), शरीर, २ अर्थ और 'तनुः' (त्रि) के कृश, थोड़ा, विरल, ३ अर्थ हैं ॥
 ४ 'सूना' (स्त्री) के गलेकी चाँटी, प्राणियोंका वक्षस्थान, सन्तान, ३ अर्थ हैं ॥
 ५ 'वितानम्' (न पु) के यज्ञ, विस्तार, चँदोवा, ३ अर्थ और 'वितानम्' (त्रि) के तुच्छ, मन्द, २ अर्थ हैं ॥
 ६ 'केतनम्' (न) के कार्य, पताका, निमन्त्रण (मित्रोंको उत्सव आदिमें बुलाना), निवास, ४ अर्थ हैं ॥
 ७ 'ब्रह्म' (= ब्रह्मन् न) के ऋग्, यजुष्, साम ये तीनों वेद, तत्त्व, तप, ब्रह्म, ४ अर्थ और 'ब्रह्मा' (= ब्रह्मन् पु) के ब्राह्मण, ब्रह्मा, २ अर्थ हैं ॥
 ८ 'गन्धनम्' (न) के उत्साहित करना, हिंसा करना, आशय प्रकट करना, (+ हिंसा-प्रयुक्त सूचना स्त्री० स्वा०), प्रकाशन, ४ अर्थ हैं ॥
 ९ 'आतञ्जनम्' (न) के जोरन डालना (औंटी दूधमें दही छोवकर वही जमाना । + गलाये हुए सोनेमें दूसरे द्रव्यके साथ अवचूर्णन करना स्त्री० स्वा०), वेग, तर्पण (वृत्त) करना, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'वेदास्तत्त्वं' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'हिसार्थसूचने' इति स्त्री० स्वा० इति पाठान्तरम् ॥

- १ 'व्यञ्जन' लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ।
- २ स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥
- ३ स्यादुद्यानं निःसरणे धनभेदे प्रयोजने ।
- ४ अवकाशे स्थितौ स्थानं ५ क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥
- ६ उत्थानं पौरुषे तन्त्रे सन्निविष्टोद्गमेऽपि च ।
- ७ व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥
- ८ मारणे मृतसंस्कारे गतौ^१ द्रव्येऽर्थदापने ।
- निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यास्तु च साधनम् ॥ ११९ ॥

१ 'व्यञ्जनम्' (न) के चिह्न, दाढ़ी-मूँछ (हजामत), तेमन (दही कढ़ी, बरी बरा आदि) अवयव, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'कौलीनम्' (न) के लोकापवाद, पशु (भेंड़ा आदि) पक्षियों (सुर्गा-तीतर आदि) आदिकी लड़ाई, कुलीनता, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'उद्यानम्' (न) के निकलना, वागीचा, प्रयोजन, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'स्थानम्' (न) के अवकाश, स्थिति, सादृश्य (बराबरी), ज्योंका त्यों रहना (न घटना न बदना), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'देवनम्' (न) के क्रीडा आदिमें जीतनेकी इच्छा, व्यवहार, २ अर्थ और 'देवनः' (पु) का जुवा (घूत) १ अर्थ है ॥

६ 'उत्थानम्' (न) के पुरुषार्थ, तन्त्र (सैन्य, अपने मण्डल अर्थात् राज्य-विषयक चिन्ता, या पारिवारिक काम), उँचा उठना (उन्नति करना), पुस्तक, युद्ध, सिद्धान्त, ६ अर्थ हैं ॥

७ 'व्युत्थानम्' (न) के तिरस्कार, चोरी आदि विरुद्ध आचरण, स्वतन्त्रता, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'साधनम्' (न) के मरना (पारा आदिका शोधना), मरे हुएका संस्कार (दाह आदि) करना, जाना, धन, धन दिलाना (+ द्रव्यका उपपादन) धन पैदा करना, उपाय, पीछे २ चलना, सैन्य, मेढ़, १० अर्थ हैं ॥

१. लाञ्छनश्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'द्रव्योपपादने' इति पाठान्तरम् ॥

- १ निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ।
 २ व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामभ्रकोपजे ॥ १२० ॥
 ३ पक्ष्माक्षिलोमिनि किञ्जल्के तन्त्रवाद्यंशेऽप्यणीयसि ।
 ४ तिथिभेदे क्षणे पर्व ५ वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥
 ६ अकार्यगुह्ये कौपीनं ७ मैथुनं संगतौ रते ।
 ८ प्रधानं परमात्मा धीः ९ प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥
 १० प्रसूनं पुष्पफलयोः—

१ 'निर्यातनम्' (न) के वैरशुद्धि (शत्रु से बदला लेना), दान, धरोहर (याती) को वापस करना, ३ अर्थ हैं ।

२ 'व्यसनम्' (न) के विपत्ति, नीचे गिरना, (अवनति होना), काम-जन्य (शिकार, जुआ, मदिरा-पान, स्त्रीसङ्ग आदिसे उत्पन्न) दोष, क्रोधजन्य (कठोर वचन, कठिन दण्ड आदिसे उत्पन्न) दोष, निष्फल उद्यम, अशुभ भाग्य का बुरा फल, ६ अर्थ हैं ॥

३ 'पक्ष्म' (= पक्ष्मन् न) के बरौनी (आँखका रोंआ), किञ्जल्क (कमलकेसर), सूत आदिका बहुत महीना हिस्सा, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'पर्व' (पर्वन् न) के तिथि-भेद (अमावस्या-पूर्णिमा आदि, प्रतिपद् और पञ्चदशी अर्थात् अमावस्या पूर्णिमाकी सन्धि), उत्सव, ग्रन्थका अंश (जैसे—आदिपर्व, वनपर्व, आदि), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'वर्त्म' (वर्त्मन् न) के पपनी (आँखको ढाकनेवाला चमड़ा, पलक), रास्ता २ अर्थ हैं ॥

६ 'कौपीनम्' (न) के नहीं करने योग्य, लँगोटी, गुह्य (शिरन), ३ अर्थ हैं ॥

७ 'मैथुनम्' (न) के स्त्री आदिका सम्बन्ध, स्त्रीके साथ संभोग करना, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'प्रधानम्' (न) के परमात्मा, बुद्धि, मुख्य, साङ्ख्यशास्त्रोक्त प्रकृति, राजाका प्रधान सहाय, ५ अर्थ हैं ॥

९ 'प्रज्ञानम्' (न) के बुद्धि, चिह्न २ अर्थ हैं ॥

१० 'प्रसूनम्' (न) के फूल, फल, २ अर्थ हैं ॥

—१ निधनं कुलनाशयोः ।

- २ क्रन्दने रोदनाह्वाने ३ वर्ष्म देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥
 ४ गृहदेहत्वद्विप्रभावा धामान्यपथ चतुष्पथे ।
 सन्निवेशे च संस्थानं ६ लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥
 ७ आच्छादने संपिधानमपवारणमित्युभे ।
 ८ आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥
 ९ अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाभ्यासनेष्वपि ।
 १० रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि ११ वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥
 १२ तलिनं विरले स्तोके १३ वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ।
 १४ समानाः सत्समैके स्युः—

- १ 'निधनम्' (न) के कुल (वंश), नाश, २ अर्थ हैं ॥
 २ 'क्रन्दनम्' (न) के रोना, पुकारना, २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'वर्ष्म' (= वर्ष्मन् न) के शरीर, प्रमाण, २ अर्थ हैं ॥
 ४ 'धाम' (धामन् न) के घर, शरीर, तेज, प्रभाव, जन्म, शक्ति, ६ अर्थ हैं ॥
 ५ 'संस्थानम्' (न) के चौरास्ता, अवयव-विभाग, आकृति, मरना ४ अर्थ हैं ॥
 ६ 'लक्ष्म' (= लक्ष्मन् न) के चिह्न, प्रधान, २ अर्थ हैं ॥
 ७ 'आच्छादनम्' (न) के अच्छी तरह छिपना (अन्तर्धान होना) कपड़े आदिसे ढाँकना २ अर्थ हैं ॥
 ८ 'आराधनम्' (न) के साधन प्राप्ति होना, संतुष्ट करना, ३ अर्थ हैं ॥
 ९ 'अधिष्ठानम्' (न) के पहिया, ग्राम, प्रभाव, आक्रमण, ४ अर्थ हैं ॥
 १० 'रत्नम्' (न) के अपने जातिवालों (सामान्य वर्ग) में श्रेष्ठ, मणि (जवाहरात), २ अर्थ हैं ॥
 ११ 'वनम्' (न) के पानी, जङ्गल, निवास, घर, ४ अर्थ हैं के
 १२ 'तलिनम्' (त्रि) के विरल, गोड़ा, स्वच्छ, ३ अर्थ हैं ॥
 १३ इसक आगे सब नान्त शब्द वाच्यलिङ्ग (त्रिलिङ्ग) हैं ॥
 १४ 'समानः' (त्रि) के पण्डित, समान (तुल्य), मुख्य, ३ अर्थ
 'समानः' (पु) का नाभि-मण्डलमें रहनेवाली वायु, १ अर्थ हैं ॥

—१ पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥

- २ हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ ३ वेगिशूरी तरस्विनौ ।
 ४ अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तन्यापद्गतावपि ॥ १२८ ॥
 ५ 'लेख्यं भूम्यादिदानार्थं यातनाऽऽज्ञा च शासनम्' (५५)
 ६ निदानमवसानेऽपि ७ सार्थं वार्धुपिके धनी (५६)
 ८ कक्षापटेऽपि कौपीनं ९ न ना ज्ञानेऽपि बाधना (५७)
 १० द्युम्नं बले —

- १ 'पिशुनः' (त्रि) के दुष्ट, चुगलखोर, २ अर्थ हैं ॥
 २ 'हीनः, न्यूनः' (२ त्रि) के कम, निन्दनीय, २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'तरस्वी' (= तरस्विन् त्रि) के वेगवान्, शूरवीर, २ अर्थ हैं ॥
 ४ 'अभिपन्नः' (त्रि) के अपराधी, शत्रुसे आक्रान्त, विपत्तिमें पड़ा हुआ, ३ अर्थ हैं ॥
 ५ ['शासनम्' (न) के राजासे मिली हुई भूमि आदि जागीर, शास्त्र (जैसे—'अथ धर्मानुशासनम्' यो० सू० १११), आज्ञा, राज्य—लेख्य—भेद, शासन (दण्ड देना), ५ अर्थ हैं] ॥
 ६ ['निदानम्' (न) के अवसान (अन्त), रोग—निर्णय, आदि कारण, कारणमात्र, कारण समूह, शुद्धि, रोग ७ अर्थ हैं] ॥
 ७ ['धनी' (= धनिन् पु) के सुदखोर (व्याजपर रुपया देनेवाला महाजन), बनियोंका झुण्ड, धनवान्, ३ अर्थ हैं ॥
 ८ ['कौपीनम्' (न) के नहीं करने योग्य, गुच्छ (लिङ्ग), लंगोटी, ३ अर्थ हैं] ॥
 ९ ['बाधना' (स्त्री) के प्रतिरोध (रोक), स्वभाविक ज्ञान, हेतुभास-भेद, पीड़ा, न्यायोक्त, ५ अर्थ और पा० भे० से + 'वेदना' (स्त्री) के ज्ञान, दुःख, २ अर्थ हैं] ॥
 १० ['द्युम्नम्' (न) के बल, धन २ अर्थ हैं ॥

१ 'लेख्यं.....लाञ्छनम्' इत्ययं शेषकांशः स्त्री० स्वा० व्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यते इति प्रकृतोपयोगितयाऽत्र स्थापितः ।

२ 'न ना खेदेऽपि वेदना' इति शाठान्तरम् ।

१—अथ भार्यापि जनी २ दोषेऽपि लाञ्छनम्' (५८)

इति नान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

- ३ कलापो भूषणे बह्वे नूणीरे संहतावपि ।
- ४ परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥
- ५ गोधुग्गोष्ठपती गोपौ ६ हरविष्णू वृषाकपि ।
- ७ बाष्पमूष्माश्रु ९ 'कशिपुस्त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥
- १ तल्पं शय्याऽट्टदारेषु १० स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् २ ।

१ ['जनी' (स्त्री) के सीमन्तिनी (केश-वेशसे युक्त स्त्री), बहु २ अर्थ हैं] ॥

२ ['लाञ्छनम्' (न) के दोष, चिह्न, नाम, ३ अर्थ हैं] ॥

इति नान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

३ 'कलापः' (पु) के भूषण (गहना), मोरका पंख, तरकस (बाण रखने के लिये चमड़े आदिकी बना हुई श्लोकी-नूगीर), संहत (मिला हुआ), ४ अर्थ हैं ॥

४ 'परीवापः' (पु) के तम्बू कनात आदि, बाज बोना, थाला, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'गोपः' (पु) के गौ दुइनेवाला, गोशालाका स्वामी (अर्हार), देश या कुलका अध्यक्ष, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वृषाकपिः' (पु) के शिवजी, विष्णु भगवान्, अग्नि, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'कशिपुः' (पु) के अन्न, वस्त्र, २ अर्थ हैं ॥

९ 'तल्पम्' (न) के शय्या, अटारी, स्त्री ३ अर्थ हैं ॥

१० 'विटपः' (पु न) के गुच्छा, विस्तार, शाखा, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'कशिपू' इत्यपपाठ' इति स्था० स्वा० ॥

२. 'अस्त्रियाम्' इत्यस्य 'कशिपु-तल्प' शब्दभ्यां सम्बन्धपर के मा० दी० महे० वचने तु 'कशिपुर्भोज्यवस्त्रयोः' (अने० संग्रह ३।४७१) इति हेमचन्द्राचार्योक्त्या, 'कशिपुर्भोजना-

१ प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा वुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥

मेघलिङ्गा अमीरकूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ।

३ 'कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाहोऽष्टमेऽशके' (५९)

इति पान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

४ 'रवणै पुंसिः रेफः स्यात्कुत्सिने वाचयलिङ्गकः ॥ १३२ ॥

५ 'शिफाशिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि (६०)

१ 'प्राप्तरूपः, स्वरूपः, अभिरूपः' (१ त्रि) के विद्वान्, मनोहर
२ अर्थ हैं ॥

२ 'कच्छपी' (स्त्री) के सरस्वतीकी वीणा, कछुही, २ अर्थ हैं ॥

३ 'कुतपः' (पु) के ऊनी कपड़ा, दिनका आठवाँ हिस्सा,
२ अर्थ हैं] ॥

इति पान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

४ 'रेफः' (पु) के रेफः अर्थात् 'र' अक्षर, १ अर्थ और 'रेफः' (त्रि)
का निन्दित, १ अर्थ हैं ॥

५ 'शिफा' (स्त्री) के शिखा, नदी, जटामसी, माता, ४ अर्थ हैं] ॥

च्छदा—(अमि० रत्न० १।१२१) इति हलायुषोक्त्या, 'कशिपुर्भक्ताच्छादनयोरेकोक्त्या
'क्षक्'तयोः पुंसि' (मेदि० पृ० १०८ श्लो० १८) इति मेदिन्युक्त्या च 'कशिपु'शब्दस्य;
'तत्पमट्टे शय्याकलत्रयोः' (अने० संग्र० १।२९८) इति हेमचन्द्राचार्योक्त्या, 'तत्पमट्टे
कलत्रे च शयनीये च न द्वयोः' (मेदि० पृ० १०८ श्लो० ६) इति मेदिन्युक्त्या च
'तत्प' शब्दस्य च पुंस्त्वस्यैव लाभान्विन्ये ॥

१. 'कुतपो'.....'ऽशङ्के' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्या मूलमात्रं माहेश्वर्या
मूले चोपलभ्यते ॥

२. 'रवणै'.....'लिङ्गकः' इत्ययमंशः भा० दी० महे० मूले पठित्वा व्याख्यातः, शिफा.....
कीर्तितः' इत्ययमंशश्च महे० व्याख्याने मूलमात्रं पठ्यते । क्षी० स्वा० व्याख्यायां तु 'रवणै
.....कीर्तितः' इति सर्वोऽप्यंशः मूलमात्रमेव पठ्यते ।

१ शफं मूले तरुणां स्याद्गवादीनां खुरेऽपि च (६१)

२ गुम्फः स्याद् गुम्फने बाहोरलङ्कारे च कीर्तितः (६२)

इति फान्ताः शब्दाः ।

अथ 'वा (या)' न्ताः शब्दाः ।

३ अन्तर्गभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो विव्यगायने ।

४ कम्बुर्ना वलये शङ्खे ५ त्रिजिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥

६ पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुं बहुत्वेऽपि पूर्वज्ञान् ।

७ 'चित्रपुङ्खेऽपि कादम्बो ८ नितम्बःऽद्रितटे कटौ (६४)

१ ['शफम्' (न) के पेड़की जड़, पशुओं का खुर, २ अर्थ हैं] ॥

२ ['गुम्फः' (पु) के फूल माला आदिका गूथना, हाथका भूषण, २ अर्थ हैं] ॥

इति फान्ताः शब्दाः ।

अथ वा (वा) न्ताः शब्दाः ।

३ 'गन्धर्वः' (पु) का जन्म और मरणके मध्य समयमें स्थित प्राणी, मृगविशेष, पुंस्कोकिल, घोड़ा, स्वर्गके (हाहा, हूहू आदि) गायक, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'कम्बुः' (पु) के बङ्कण, शङ्ख, गज, घोड़ा या सितुही, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'त्रिजिह्वः' (पु) के साँप, चुगलखोर, २ अर्थ हैं ॥

६ 'पूर्वः' (त्रि) का पहला (जैसे-पूर्वो ग्रामः, पूर्व वनम्,), १ अर्थ; + 'पूर्वा' (स्त्री) पूर्व दिशा, १ अर्थ और 'पूर्वे' (पु नि० ब० व०) का पुरुखा (पुराने वंशवाले, पुरनिभां), ब्रह्मा, ३ अर्थ हैं ॥

७ ['कादम्बः' (पु) के चित्र पंखवाला पक्षि-विशेष (कलहंस), बाण, २ अर्थ हैं] ॥

८ ['नितम्बः' (पु) के, पहाड़का किनारा, कटि (चूतड़), २ अर्थ हैं] ॥

१. बयोः सावर्ण्याद्दान्ता बान्ताश्च शब्दा अत्र उक्ताः ॥

२. 'चित्रपुङ्खेऽपि'.....'फले' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यमानः प्रकृतोपयोगितयाऽत्र स्थापितः ॥

१ 'द्वी' फणापि २ बिम्बोऽस्त्री मण्डले चाकृतौ फले' (६४)

इति वा (वा) न्ताः शब्दाः ।



अथ भान्ताः शब्दाः ।

३ कुम्भौ घटेभमूर्ध्नाशौ ४ डिम्भौ तु शिशुबालिशौ ॥ १३४ ॥

५ स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ ६ शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ।

७ कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा ८ विश्वम्भः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥

९ स्याद्भेयो दुन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ।

१० स्यान्महारजने क्लीवं कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥

११ क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना—

१ ['द्वी' (स्त्री) के साँपकी फणा, कलछुल, २ अर्थ हैं] ॥

२ ['बिम्बः' (+ बिम्बः । पु न) के सूर्यादिका मण्डल, आकृति, प्रतिबिम्ब, बिम्बिका—फल (कुनरुन, त्रिकोलका फल), ४ अर्थ हैं] ॥

इति वा (वा) न्ताः शब्दाः ।

अथ भान्ताः शब्दाः ।

'कुम्भः' (पु) के घड़ा, हाथीके मस्तकका कुम्भ (मांस-पिण्ड-विशेष), कुम्भ नामका ग्यारहवाँ राशि, वेश्या-पति, कुम्भकर्णका पुत्र, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'डिम्भः' (पु) के बालक, मूर्ख, २ अर्थ हैं ॥

५ 'स्तम्भः' (पु) के खम्भा, जड़ता, २ अर्थ हैं ॥

६ 'शम्भुः' (पु) के ब्रह्मा, शिवजी, पूज्य, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'गर्भः' (पु) के कुक्षि (कोख), गर्भमें रहनेवाला बच्चा या गर्भ, बालक, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'विश्वम्भः' (+ विश्वम्भः । पु) के शृङ्गार-याचना, विश्वास, २ अर्थ हैं ॥

९ 'दुन्दुभिः' (पु) के मेरी बाजा, वरुण, दुन्दुभि नामका दैत्य, ३ अर्थ और 'दुन्दुभिः' (स्त्री) का लड़कों का खिलौना—विशेष, १ अर्थ है ॥

१० 'कुसुम्भम्' (न) के बरें (कुसुम) का फूल, सोना, २ अर्थ और 'कुसुम्भः' (पु) का कमण्डलु, १ अर्थ है ॥

११ 'नाभिः' (पु) के क्षत्रिय, जीतनेकी इच्छा करनेवाला या प्रधान

—१ सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ।

२ सभा संसदि सभ्ये च ३ त्रिविध्यक्षेऽपि बल्लभः ॥ ११७ ॥

इति भान्ताः शब्दाः ।

अथ भान्ताः शब्दाः ।

४ किरणप्रग्रहौ रश्मौ ५ कपिभेकौ प्लवङ्गमौ ।

६ इच्छामनोभवो कामौ ७ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १२८ ॥

८ धर्मः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ।

९ उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाभ्युपक्रमः ॥ १२९ ॥

राजा, पहियेके बीचवाला भाग, ३ अर्थ और 'नाभिः' (स्त्री) करतूरीकामद, १ अर्थ है ॥

१ 'सुरभिः' (स्त्री) का गौ, १ अर्थ; 'सुरभिः' (पु) के वसन्त ऋतु, जातीफल, चम्पा, ३ अर्थ और 'सुरभिः' (त्रि) के सुगन्धित, मनोहर, २ अर्थ हैं ॥

२ 'सभा' (स्त्री) के सभा (बैठक, कमेटी), धूल; मन्दिर, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'बल्लभः' (त्रि) के अभ्यक्ष, प्रिय, हैं ॥

इति भान्ताः शब्दाः ।

अथ भान्ताः शब्दाः ।

४ 'रश्मिः' (पु) के किरण, रस्सी २ अर्थ हैं ॥

५ 'प्लवङ्गमः' (पु) के बन्दर, मेढक, २ अर्थ हैं ॥

६ 'कामः' (पु) के इच्छा, कामदेव, काम्य, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'पराक्रमः' (पु) के सामर्थ्य उद्योग, २ अर्थ हैं ॥

८ 'धर्मः' (पु न) के पुण्य (यज्ञ, अहिंसा आदि), आचार (जैसे-धर्मशास्त्र, आदि), स्वभाव, उपक्रम, उपनिषत्, न्याय (जैसे-धर्माधिकारी, धर्माध्यक्ष, ...), ६ अर्थ और 'धर्मः' (पु) के यमराज, सोमलताका पान करनेवाला, जिन, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'उपक्रमः' (पु) के उपायको सोचकर किया हुआ आरम्भ, मन्त्रीके शील-परीक्षा करनेका उपाय, चिकित्सा, ३ अर्थ हैं ॥

- १ वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो २ नागरो वणिक् ।
 नैगमौ 'द्वौ ३ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ॥ १४० ॥
 ४ शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः ५ क्रान्तौ च विक्रमः ।
 ६ स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे ७ जिह्वस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १४१ ॥
 ८ 'उष्णेऽपि घर्मश्चेष्टालङ्कारे भ्रान्तौ च विभ्रमः ।
 १० गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च ११ जामिः स्वसुकुलस्त्रियोः ॥ १४२ ॥
 १२ क्षितिक्षान्तयोः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ।

- १ 'निगमः' (पु) के वाणिज्य, पुर (ग्राम), वेद, २ अर्थ हैं ॥
 २ 'नैगमः' (त्रि) के वेद-सम्बन्धी, नगर-वासी, २ अर्थ और 'नैगमः' (पु) के उपनिषद्, बनियाँ, २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'रामः' (पु) के बलदेवजी (कृष्णजीके बड़े भाई), परशुरामजी, रामचन्द्रजी, ३ अर्थ और 'रामः' (त्रि) के नीला, सुन्दर, सफेद, बागीचा, ४ अर्थ हैं ॥
 ४ 'ग्रामः' (पु) के शब्द आदि (पूर्व) में रहे तो समूह (जैसे—शब्दग्रामः, गुणग्राम अर्थात् क्रमशः शब्द-समूह, गुण-समूह, ...), गाँव, स्वर-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥
 ५ 'विक्रमः' (पु) के क्रान्ति (आक्रमण), पराक्रम, ३ अर्थ हैं ॥
 ६ 'स्तोमः' (पु) के स्तोत्र, यज्ञ, समूह, ३ अर्थ हैं ॥
 ७ 'जिह्वः' (पु) के कुटिल, आलसी, २ अर्थ हैं ॥
 ८ 'घर्मः' (पु) के धूप (घाम, रौंदा) पसीना, २ अर्थ हैं ॥
 ९ 'विभ्रमः' (पु) के हाव, भ्रान्ति, शोभा, पद्यका अलङ्कार विशेष, ४ अर्थ हैं ॥
 १० 'गुल्मः' (पु) के गुल्म (प्लीहा या कब्ज) रोग, कुश, बाल, ढाल आदि का गुच्छा, सेना-विशेष (१८८१ का चक्र), किला आदिका रक्षास्थान, ४ अर्थ हैं ॥
 ११ 'जामिः' (+ यामिः । स्त्री) के बहन (भगिनी), कुलस्त्री, २ अर्थ हैं ॥
 १२ 'क्षमा' (स्त्री) के पृथ्वी, माफी, २ अर्थ; 'क्षमम्' (न) का योग्य, १ अर्थ और 'क्षमम्' (त्रि) के शक्त (समर्थ), हित, २ अर्थ हैं ॥

१. 'द्वाविति ब्राह्मणस्य नैगमत्वे निषेधः' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'उष्णेऽपि'.....'विभ्रमः' इति क्षेपकांशः मा० दी० मूलव्याख्ययोर्नोपलभ्यते ॥

- १ त्रिषु श्यामौ हरितकृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा ॥ १४३ ॥
- २ ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु ।
- ३ सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये ४ प्रधाने प्रथमस्त्रिषु ॥ १४४ ॥
- ५ वामौ वल्गुप्रतीपौ ६ द्वाघमौ न्यूनकुत्सितौ ।
- ७ जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् ॥ १४५ ॥
- ८ 'ध्रमो मूर्च्छा तक्षभाण्डमजिराम्बुविनिर्गमः (६५)
- ९ ध्यामौ धूम्रास्फुटौ—

१ 'श्यामः' (त्रि) के हरित् (नीला रंग) वाला, काला रंगवाला, २ अर्थ; 'श्यामः' (पु) के काला रंग, नीला रंग, प्रयागका 'अक्षयवट' नामक वटवृक्ष, मेघ, वृद्धदारक (औषध-विशेष), पिक, ६ अर्थ; 'श्यामा' (स्त्री) के शारिवा (सखिन) नामक ओषधि, रात, सोमकता, गुन्दा, यमुना, तिधारा ओषधि, सोलह वर्षकी स्त्री, बिना बच्चा पैदा की हुई स्त्री, ८ अर्थ और 'श्यामम्' (न) के मिर्च, समुद्री नमक, २ अर्थ हैं ॥

२ 'लालामम्' (+ ललाम = ललामन् । न) के पूँछ, घोड़ा आदिके कलाटका चित्र (चिह्न-विशेष), घोड़ा, घोड़ेका गहना, पताका, प्रधान, शृङ्ग, रमणीय, प्रभाव, १० अर्थ हैं ॥

३ 'सूक्ष्मम्' (न) के अध्यात्म, कपट, २ अर्थ; 'सूक्ष्मः' (पु) का अग्नि, १ अर्थ और 'सूक्ष्मः' (त्रि) का अत्यन्त महीन या छोटा, १ अर्थ है ॥

४ 'प्रथमः' (त्रि) के पहला, प्रधान, २ अर्थ हैं ॥

५ 'वामः' (त्रि) के सुन्दर, प्रतिष्कूल, शिवजी, पयोधर, बायाँ, शत्रु, ६ अर्थ हैं ॥

६ 'अधमः' (त्रि) के धोड़ा, नीच (निन्दित), १ अर्थ है ॥

७ 'यातयामम्' (त्रि) के पुराना, उपभोग किया हुआ (जूठा या बासी), २ अर्थ हैं ॥

८ 'ध्रमः' (पु) के मूर्च्छा (बेहोशी), तक्षभाण्ड, जलका निर्गम, ३ अर्थ हैं] ॥

९ 'ध्यामः' (पु) के धुआँ, अस्पष्ट, २ अर्थ हैं ॥

—१ भीमा रुद्रभीषणपाण्डवाः' (६६)

इति मान्ताः शब्दाः ।

अथ यान्ताः शब्दाः ।

- २ तुरङ्गगरुडौ ताक्ष्यौ ३ निलयापचयौ क्षयौ ।
 ४ श्वशुर्यौ देवरश्यालौ ५ भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ॥ १४६ ॥
 ६ पर्जन्यौ रसदग्देन्द्रौ ७ स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः ।
 ८ तिष्यः पुष्ये कलियुगे ९ पर्यायोऽवसरे क्रमे ॥ १४७ ॥
 १० प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुपु ।
 रन्ध्रे शब्दे—

१ ['भीमः' (पु) के शिवजी, भयङ्कर, भीमसेन (युधिष्ठिरका भाई), अमलवैत ४ अर्थ हैं] ॥

इति मान्ताः शब्दाः ।

अथ यान्ताः शब्दाः ।

- २ 'ताक्ष्यः' (पु) के घोड़ा, गरुड़, सर्प, गरुड़का बड़ा भाई, ४ अर्थ हैं ॥
 ३ 'क्षयः' (पु) के घर, कमी (नाश), कल्पान्त, रोग-विशेष, ४ अर्थ हैं ॥
 ४ 'श्वशुर्यः' (पु) के देवर (पतिका छोटा भाई), शाला (स्त्रीका भाई), २ अर्थ हैं ॥
 ५ 'भ्रातृव्यः' (पु) के भाईका लड़का, शत्रु, २ अर्थ हैं ॥
 ६ 'पर्जन्यः' (पु) के गर्जता हुआ मेघ, इन्द्र, मेघका गर्जना, ३ अर्थ हैं ॥
 ७ 'अर्यः' (पु) के स्वामी, वैश्य, २ अर्थ हैं ॥
 ८ 'तिष्यः' (पु) के पुष्य नामका आठवां नक्षत्र, कलियुग, २ अर्थ हैं ॥
 ९ 'पर्यायः' (पु) के अवसर, सिलसिला (क्रम), प्रकार, निर्माण, ४ अर्थ हैं ॥
 १० 'प्रत्ययः' (पु) के अधीन, शपथ (कसम), ज्ञान, विश्वास, कारण, आचार, प्रसिद्ध, द्विद्र, प्रत्यय (जैसे—सन्, कथच्, काम्यच्, तिप्, तस्, क्षि, सु, औट्, जस्,), २ अर्थ हैं ॥

—१ अथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ॥ १४८ ॥

- २ स्थूलोच्चस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते ।
- ३ समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ॥ १४९ ॥
- ४ व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ।
- ५ अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यध्यापदि ॥ १५० ॥
- युद्धायत्योः संपरायः ७ पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ।
- ८ पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च सन्नयौ ॥ १५१ ॥
- ९ संघाते सन्निवेशे च संस्त्यायः १० प्रणयास्त्वमी ।
- ‘विश्रम्भयाच्चाप्रेमाणो ११ विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥ १५२ ॥
- १२ विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ।

१ ‘अनुशयः’ (पु) के बड़ा द्वेष, पछतावा, २ अर्थ हैं ॥

२ ‘स्थूलोच्चयः’ (पु) के असंपूर्णता, हाथियोंका मध्यम (न बहुत कम न बहुत अधिक) गतिसे चलना, पहाड़का बड़ा ढोका (चट्टान), ३ अर्थ हैं ॥

३ ‘समयः’ (पु) के शपथ, आचार, काल, सिद्धान्त, भाषा, बुद्धि, निर्देश, संकेत, ८ अर्थ हैं ॥

४ ‘अनयः’ (पु) के जुआ आदि खेलनेकी बुरी आदत, दुर्भाग्य, विपत्ति, अन्याय, ४ अर्थ हैं ॥

५ ‘अत्ययः’ (पु) के उल्लङ्घन, कष्ट, दोष, दण्ड, बड़ा उत्पात, ५ अर्थ हैं ॥

६ ‘संपरायः’ (पु) के युद्ध, आपत्ति, उत्तर काल, ३ अर्थ हैं ॥

७ ‘पूज्यः’ (पु) के श्वशुर, पूजा करने योग्य, २ अर्थ हैं ॥

८ ‘सन्नयः’ (पु) के सेनाके पीछे रहनेवाली सेना, समूह, २ अर्थ हैं ॥

९ ‘संस्त्यायः’ (पु) के समूह, स्थान-विशेष, विस्तार ३ अर्थ हैं ॥

१० ‘प्रणयः’ (पु) के विश्वास, याचना, प्रेम, परिचय, ४ अर्थ हैं ॥

११ ‘समुच्छ्रयः’ (पु) के विरोध, ऊँचाई, २ अर्थ हैं ॥

१२ ‘विषयः’ (पु) के देश, स्थान, शब्द आदि (स्पर्श, रूप, रस, गन्ध । इनमें कानका शब्द, त्वचाका स्पर्श, नेत्रका रूप, जिह्वाका रस और नाक का गन्ध विषय है), ३ अर्थ हैं ॥

- १ निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री २ सभायां च प्रतिश्रयः ॥ १५२ ॥
 ३ प्रायो भूम्न्यन्तगमने ४ मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि ।
 ५ रहस्योपस्थयोर्गुह्यं ६ सत्यं शपथतथ्ययोः ॥ १५४ ॥
 ७ वीर्यं बले प्रभावे च ८ द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ।
 ९ धिषण्यं स्थाने गुह्ये मेऽग्नौ १० भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ॥ १५५ ॥
 ११ कशेरुद्देश्नोर्गाङ्गेयं १२ विशल्या दन्तिकाऽपि च ।

- १ 'कषायः' (पुनः) के काढ़ा, कषाय (कसाव) रस, गेरुआ रंग, ३ अर्थ हैं ॥
 २ 'प्रतिश्रयः' (पु) के सभा, आश्रय, २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'प्रायः' (पु) के अधिकतर, अन्तिम यात्रा (मरना, जैसे 'प्रायोपवेशः कृतः' अर्थात् मर गया,.....), अनशन (भोजन-त्याग करना), तुल्य ४ अर्थ हैं ॥
 ४ 'मन्युः' (पु) के दीनता, यज्ञ, क्रोध, ३ अर्थ हैं ॥
 ५ 'गुह्यम्' (न) के रहस्य, उपस्थ (योनि, लिङ्ग), २ अर्थ हैं ॥
 ६ 'सत्यम्' (न) के कसम (शपथ), सत्य, २ अर्थ हैं ॥
 ७ 'वीर्यम्' (न) के बल, प्रभाव, तेज, शुक (पुरुषका धातु), ४ अर्थ हैं ॥
 ८ 'द्रव्यम्' (न) के भव्य (योग्य), गुणाश्रय (गन्ध आदि गुणका आश्रय-पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन, ये ९ द्रव्य), धन, विलेप, ओषधि, ५ अर्थ हैं ॥
 ९ 'धिषण्यम्' (न) के स्थान, गुड़, नक्षत्र, अग्नि, शक्ति, ५ अर्थ हैं ।
 (श्री० स्वा० के मतमें अग्नि अर्थ में 'धिषण्यः' (पु) है) ॥
 १० 'भाग्यम्' (न) के पूर्व जन्मका किया हुआ शुभ या अशुभ कर्म, ऐश्वर्य, २ अर्थ हैं ॥
 ११ 'गाङ्गेयम्' (न) के कशेरु, सुवर्ण, २ अर्थ और 'गाङ्गेयः' (पु) का भीष्म पित्तमक्ष, १ अर्थ है ॥
 १२ 'विशल्या' (स्त्री) के दन्तों (ओषधि-विशेष), आगकी छपट, गुडुच, त्रिपुटा ओषधि, ४ अर्थ हैं ॥

१. 'कशेरुद्देश्नोर्गाङ्गेयं' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तमत्रमट्टेन तर्कसङ्ग्रहे—'तत्र द्रव्याणि पृथिव्यक्षेत्रजोवाय्वाकाशकालदिगात्मम-
 नांसि नवैव' इति ॥

- १ वृषाकपायी श्रीगौर्यो २ रभिख्या नामशोभयोः ॥ १५६ ॥
- ३ आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ।
उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः ॥ १५७ ॥
- ४ छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ।
- ५ कक्ष्या प्रकाष्ठे हर्म्यादेः काञ्चर्या मध्येभवन्धने ॥ १५८ ॥
- ६ कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु मेघे धनादिभिः ।
- ७ जन्यं स्याज्जनवादेऽपि ८ 'जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ॥ १५९ ॥
- ९ 'गृह्याधीनौ च वक्तव्यौ १० कल्यौ सज्जनिरामयौ ।

१ 'वृषाकपायी' (स्त्री) के लक्ष्मीजी, पार्वतीजी, जीवन्ती नामका ओषधि-विशेष, शतावर, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'अभिख्या' (स्त्री) के नाम, शोभा, यश, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'क्रिया' (स्त्री) के कार्य, निष्कृति (प्रार्थाश्चर्य), शिक्षा, पूजा, विचार, साम आदि (दान, दण्ड, विभेद) चार उपाय, काम, चेष्टा, रोग आदि-की चिकित्सा, ९ अर्थ हैं ॥

४ 'छाया' (स्त्री) के सूर्यकी स्त्री, शोभा, प्रतिबिम्ब, छाँह, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'कक्ष्या' (स्त्री) के राजगृह आदिकी खोदी, करधनी (स्त्रियोंके कमरका भूषण), हाथियोंका हौदा, गद्दा आदि कसनेकी ढोरी, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'कृत्या' (स्त्री) के क्रिया, देवता-विशेष ('मारी' नामक), २ अर्थ और 'कृत्या' (त्रि) के धन स्त्री भूमि आदिसे शत्रुका भेद्य (फोड़ने योग्य) दुरुष आदि, कार्य, २ अर्थ हैं ॥

७ 'जन्यः' (पु । + न) के जनापवाद, उत्पात, युद्ध, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'जघन्यः' (त्रि) के अन्त (+ अन्त्य), नीच, निन्दित, शिश्न (लिङ्ग), ४ अर्थ हैं ॥

९ 'वक्तव्यः' (त्रि) के निन्दित, हीन (+ वश), कहने योग्य, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'कल्यः' (त्रि) के उपाय-युक्त (तयार, सजा हुआ), नीरोग, २ अर्थ हैं ॥

- १ 'आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थौ' २ पुण्यं तु चार्चयि ॥ १६० ॥
 ३ रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि ४ वदान्यो वल्गुवागपि ।
 ५ न्याय्येऽपि मध्यं ६ सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ॥ १६१ ॥
 ७ 'सर्वज्ञमिषजौ वैद्य ८ वात्मा कामश्च हृच्छयौ' (६७)
 ९ फलकल्याणयोर्भव्यं १० योग्यं सांप्रतिके त्रिषु (६८)
 ११ क्रियाचारातिक्रमेऽपि १२ जलाधारेऽपि चाशयः (६९)

१ 'अर्थयः' (त्रि) के बुद्धिमान् (+ धार्मिक), अर्थसे युक्त, न्यायसे युक्त, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'पुण्यम्' (त्रि) के मनोहर, पवित्र, २ अर्थ और 'पुण्यम्' (न) के सुकृत, धर्म, २ अर्थ हैं ॥

३ 'रूप्यम्' (त्रि) का सुन्दर रूपवाला, १ अर्थ और 'रूप्यम्' (न) के सोनेका सिक्का (अशर्फी, गिन्नो आदि), चांदीका सिक्का (रूपया, भट्ठी आदि), २ अर्थ हैं ॥

४ 'वदान्यः' (+ वदन्यः । त्रि) के मधुर बोलनेवाला, बहुत दान देनेवाला, २ अर्थ हैं ॥

५ 'मध्यम्' (त्रि) के न्याय्य (न्यायसे युक्त), कमर, बीच, अधम, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'सौम्यम्' (त्रि) के सुन्दर, उप्रताहीन, सोम देवतावाला हविष्य आदि, ३ अर्थ और 'सौम्यः' (पु) का बुब नामका ग्रह, १ अर्थ है ॥

['वैद्यः' (पु) के सर्वज्ञ (सब कुछ जाननेवाला अर्थात् पण्डित), मिषक (दवा करनेवाला वैद्य, डाक्टर, हकीम आदि), २ अर्थ हैं] ॥

८ ['हृच्छयः' (पु) के आरामा, कामदेव, २ अर्थ हैं] !

९ ['भव्यम्' (न) के फल, कल्याण, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['योग्यम्' (त्रि) के योगार्ह, उचित, निपुण, समर्थ, ४ अर्थ 'योग्यः' (पु) के पुष्प नक्षत्र, १ और 'योग्यम्' (न) का ऋद्धि औषध, १ अर्थ है ॥

११ 'क्रिया' (स्त्री) के आचारातिक्रम, आरम्भ, आदि (३ ३।१५९ में उक्त) १० अर्थ हैं] ॥

१२ ['आशयः' (पुं) के जलाधार, अभिप्राय, कटहल ३ अर्थ हैं] ॥

१. 'अत्रवाननपेतोऽर्थादर्थौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'सर्वज्ञमिषजौ' सरित्' इति श्लेषकांशः महेश्वरव्याख्यायां, दुर्गावचनत्वेन स्त्री० स्वा० व्याख्यायाञ्चोपलभ्यत इति प्रकृतोत्सोगितया श्लेषकत्वेन मूले निहितः ॥

- १ दैत्याचार्येऽपि धिष्ण्यो ना २ काषायः सुरभावपि (७०)
- ३ चन्द्रोदयो वितानेऽपि ४ स्यादाग्नायोऽन्वये श्रुतौ (७१)
- ५ शीताशिते शिते शैत्यं ६ जात्यं कुलजकान्तयोः (७२)
- ७ व्यवायो व्यवधौ च स्यात् ८ कुल्या कुलवधूः सरिद्' (७३)

इति यान्ताः शब्दाः ।



अथ रान्ताः शब्दाः ।

- ९ निवहावसरौ चारौ १० संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।
- ११ गुरु गोर्पतिपित्राद्यौ १२ द्वापरौ युगसंशयौ ॥ १६२ ॥

१ ['धिष्ण्यः' (पु) के शुक्र, अग्नि, २ अर्थ और 'धिष्ण्यम्' (न) के स्थान, नम्रत्र, घर, बल, ४ अर्थ हैं] ॥

२ ['काषायाः' (पु) के सुगन्धि, कसाव रस, २ अर्थ हैं] ॥

३ ['चन्द्रोदयः' (पु) के वितान (चँदोवा), चन्द्रमाका उदय, चन्द्रोदय रस (औषध-विशेष), ३ अर्थ हैं] ॥

४ ['आग्नायः' (पु) के (वंश, खान्दान), वेद, उपदेश, अर्थ हैं] ॥

५ ['शैत्यम्' (न) के ठंडक, दौर्बल्य, तीक्ष्णता, ३ अर्थ हैं] ॥

६ ['जात्यम्' (न) के कुलीन, सुन्दर, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['व्यवायः' (पु) के व्यवधान, मैथुन, २ अर्थ हैं] ॥

८ ['कुल्या' (स्त्री) के कुलवधू, छोटी नदी (नहर), २ अर्थ हैं] ॥

इति यान्ताः शब्दाः ।



अथ रान्ताः शब्दाः ।

९ 'चारः' (पु) के समूह, अवसर, सूर्य, चन्द्र, मङ्गल आदि सात दिन, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'संस्तरः' (पु) के शय्या या कुशादिकी चटाई आदि, यज्ञ २ अर्थ हैं ॥

११ 'गुरुः' (पु) बृहस्पति, पिता आदि (माता, बच्चा भाई आदि-बड़े लोग पढ़ाने वाला ३ अर्थ हैं] ॥

१२ 'द्वापरा' (पु) के द्वापर युग, संशय, १ अर्थ हैं ॥

- १ प्रकारौ भेदसादृश्ये २ आकारविकृतिताकृती ।
 ३ किंशारु 'सस्यशूकेषु' ४ मरु धन्वधराधरौ ॥ १६३ ॥
 ५ अद्रयो द्रुमशैलार्काः ६ स्त्रीस्तनान्दौ पयोधरौ ।
 ७ भ्रान्तारिदानवा वृत्रा ८ बलिहस्तांशवः कराः ॥ १६४ ॥
 ९ प्रदरा भङ्गनारीरुग्वाणा १० अस्त्राः कचा अपि ।
 ११ अजातशत्रुः गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना न तूबरौ ॥ १६५ ॥
 १२ स्वर्णेऽपि राः १३ परिकरः पर्यङ्कपरिवारयोः ।

- १ 'प्रकारः' (पु) के भेद (तरह), सादृश्य (बरावरी), २ अर्थ हैं ॥
 २ 'आकारः' (पु) के चेष्टा, आकृति (आकार, ढीलढौल), २ अर्थ हैं ॥
 ३ 'किंशारुः' (पु) के कान आदि (यव आदि) का दूँद, बाण २ अर्थ हैं ॥
 ४ 'मरु' (पु) के मरुस्थल (राजपुताने के निर्जल स्थान), पहाड़,
 २ अर्थ हैं ॥
 ५ 'अद्रिः' (पु) के पेड़, पहाड़, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥
 ६ 'पयोधरः' (पु) के स्त्रीका स्तन, मेघ, कोषकार, कशेरु, नारियल,
 ५ अर्थ हैं ।
 ७ 'वृत्राः' (पु) के अन्धकार, शत्रु, वृत्रासुर, पर्वत-भेद, ४ अर्थ हैं ॥
 ८ 'कराः' (पु) के कर (मालगुजारी, टैक्स, कौड़ी, आदि), हाथ, किरण,
 हाथी का सुँद, ४ अर्थ हैं ॥
 ९ 'प्रदराः' (पु) के भङ्ग, स्त्रीका-रोग-विशेष, बाण ३ अर्थ हैं ॥
 १० 'अस्त्राः' (पु) के केश, कोण, २ अर्थ और 'अस्त्रम्' (न) के आँसू,
 खून, २ अर्थ हैं ॥
 ११ 'तूबरः' (+ तूवरः । पु) के भूँद (समय आने पर भी सींग)
 जिसका नहीं जमा हो वह) गौ, समय (अवस्था) आनेपर भी दाढी-मूँछ
 जिसका नहीं जमा हो वह पुरुष, कसाव रस, ३ अर्थ हैं ॥
 १२ 'राः' (= रै पु) के स्वर्ण (सोना), धन, २ अर्थ हैं ॥
 १३ 'परिकरः' (पु) के पर्यङ्क, परिवार, मन्त्री आदि परिजन, समूह,
 विवेक, आरम्भ, यत्न, ७ अर्थ हैं ॥

- १ मुक्ताशुद्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ स तु त्रिषु ॥ १६६ ॥
कंबुरेऽथ प्रतिष्ठाऽऽजिसंविदापस्तु संगरः ।
- ४ वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो ५ मित्रो रवावपि ॥ १६७ ॥
- ३ मन्त्रेषुपक्षण्डेऽपि स्वरुऽर्गुहोऽप्यवस्करः ।
- ८ आडम्बरस्तूर्यरश्मे गजेन्द्राणां च गजिते ॥ १६८ ॥
- ६ 'अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये संतहनेऽपि च ।
- १० स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोऽपरिच्छदे ॥ १६९ ॥

१ 'तारः' (पु) के मुक्ताशुद्धि, निर्मल मोती, तैरना, वातर-भेद.
४ अर्थ; 'तारम्' (न स्त्री) के नक्षत्र, आँखकी पुतला, २ अर्थ; 'तारम्' (न)
का चौर्य, १ अर्थ; + 'तारा' (स्त्री) के बुद्धदेवी, बालि (सुग्रीवके भाई) का
स्त्री, बृहस्पतिकी स्त्री, ३ अर्थ और 'तारम्' (त्रि) का ऊँचा शब्द, १ अर्थ है ।

२ 'शारः' (पु) का वायु, १ अर्थ और 'शारः' (त्रि) का चित्कावर,
१ अर्थ है ॥

३ 'संगरः' (पु) के प्रण, युद्ध, क्रियाकार, आपत्ति, विष, ५ अर्थ और
'संगरम्' (न) का शमोफल, १ अर्थ है ।

४ 'मन्त्रः' (पु) के वेद-भेद (मन्त्र), सलाह, २ अर्थ हैं ॥

५ 'मित्रः' (पु) का सूर्य, १ अर्थ और 'मित्रम्' (न) का दोस्त, १ अर्थ है ॥

६ 'स्वरुः' (पु) के यज्ञ-स्तम्भको छीलते समय पहली बार गिरा हुआ
काष्ठ-खण्ड, इन्द्रका वज्र, २ अर्थ (स्त्री० स्वा० मतसे-यज्ञ, बाण, यज्ञ स्तम्भ,
खण्ड, वज्र, ५ अर्थ) हैं ॥

७ 'अवस्करः' (पु) के उपस्थ (भग, लिङ्ग), विष्टा, २ अर्थ हैं ।

८ 'आडम्बरः' (पु) के बाजाका शब्द, हाथियोंका गजना, समारम्भ
(आडम्बर), ३ अर्थ हैं ॥

९ 'अभिहारः' (पु) के अभियोग, चोरी, कवच आदिको धारण करना,
३ अर्थ हैं ।

१० 'परीवारः' (पु) के परिजन (कुटुम्ब, भृत्य आदि), तलवारकी
श्यान, उपकरण (सहायक सामग्री), ३ अर्थ हैं ॥

१. 'अभिहारो ... च' इत्यंशः स्त्री० स्वा० अव्याख्यातः, (२) शब्दकोष्ठान्तर्गतश्च मूलभाष्य-
मेवोपलभ्यते ।

- १ विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पीटाद्यमासनम् ।
 २ द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे ॥ १७० ॥
 ३ विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुर्ना पिङ्गले त्रिषु ।
 ४ सारो बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु ॥ १७१ ॥
 ५ दुरोदरो द्यूतकारे प्रणे द्यूते दुरोदरम् ।
 ६ महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुत्रपुंसकम् ॥ १७२ ॥
 ७ मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ।
 ८ देवाद्भूते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं मनादिप्रये ॥ १७३ ॥

१ 'विष्टरः' (पु) के पेड़, कुशाकी मुष्टी (जिसमें २५ कुशा हों^१), पीड़ा (पाटा) मृगचर्म आदि आसन, ३ अर्थ हैं ।

२ 'प्रतीहारः' (पु) के द्वार, द्वारपाल, २ अर्थ और 'प्रतीहारी' (स्त्री) का द्वारपालिका, १ अर्थ है ॥

३ 'बभ्रुः' (पु) के बड़ा, नेवला, विष्णु, मुनि, ३ अर्थ और 'बभ्रुः' (त्रि) के पिङ्गल वर्णवाला (भूधर), अग्नि, शूली, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'सारः' (पु) के बल, स्थिरांश, (सारिल लकड़ी आदि), २ अर्थ, 'सारम्' (न) का न्याययुक्त, १ अर्थ और 'सारः' (त्रि) का उत्तम, १ अर्थ है ॥

५ 'दुरोदरः' (+ दरोदरः । पु) के द्यूतकार (नालदार अर्थात् जुआ खेलानेवाला), दाव, २ अर्थ और 'दुरोदरम्' (न) का जुआ, १ अर्थ है ॥

६ 'कान्तारः' (पु न) के बड़ा जङ्गल, कठिन रास्ता, बिल, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'मत्सरः' (पु) का दूसरेकी उन्नति आदि शुभ कर्मोंसे द्वेष करना, १ अर्थ और 'मत्सरः' (त्रि) के दूसरेकी उन्नति आदि शुभ कर्मोंसे द्वेष करनेवाला, कृपण, २ अर्थ हैं ॥

८ 'वरः' (पु) के वरदान (देवता आदिसे प्राप्त अभीप्सित फल), दामाद, विट, ३ अर्थ; 'वरः' (त्रि) का श्रेष्ठ, १ अर्थ और 'वरम्' (न । + अव्य० ङो०) का थोड़ा प्रिय (जैसे—'वरं कृपशताद्वापी,'), १ अर्थ है ॥

१. 'विष्टरप्रमाणं यथा—'भवेत्पञ्चाशता ब्रह्मा तदर्थेन तु विष्टरः' । इति ।

- १ वंशाङ्कुरे करीरोऽस्त्री तन्मेदे घटे च ना ।
 २ ना चमूजघने हन्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् ॥ १७४ ॥
 ३ यवानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ।
 शुकाद्विकपिभेकेषु हारिर्ना कपिले त्रिषु ॥ १७५ ॥
 ४ शर्करा कर्परांशोऽपि ५ यात्रा स्याद्यापने गतो ।
 ६ इरा भूवाक्सुराण्युभयात् ७ तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १७६ ॥
 ८ धात्री स्यादुपमातापि क्षितिरप्यामलक्यपि ।
 ९ क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ॥ १७७ ॥

१ 'करीरः' (पु न) का बाँसका कोपड़ (अङ्कुर), १ अर्थ और 'करीरः' (पु) के करील पेड़ (इसमें पत्ते नहीं होते हैं), घड़ा, २ अर्थ हैं ॥

१ 'प्रतिसरः' (पु) के सेनाका पिछला हिस्सा, मन्त्र-भेद, माला, कङ्कण, ४ अर्थ; 'प्रतिसरः' (पु न) के मण्डल, विवाह-कालमें हाथमें बाँधा हुआ कङ्कण (माङ्गलिक सूत्र-विशेष) या राखी, २ अर्थ और 'प्रतिसरः' (त्रि) का नियोज्य (भृत्यादि), १ अर्थ हैं ॥

३ 'हरिः' (पु) क यमराज, वायु, इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता (सुग्गा) साँप, वानर, मण्डूक (मेढक), लोकान्तर (परलोक), १४ अर्थ और 'हरिः' (त्रि) के हरा रंग, कपिल रंग, २ अर्थ हैं ॥

४ 'शर्करा' (स्त्री) के छोटे २ कङ्कण या झिकटा, शक्कर, रोग-विशेष, टुकड़ा. ४ अर्थ हैं ॥

५ 'यात्रा' (स्त्री) के समय बिताना (+ भोजनादि विधान, जैसे—प्राणयात्रा,), चलना, देव-दर्शन आदि करना, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'इरा' (स्त्री) के पृथ्वी, बात (वचन), मदिरा, जल, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'तन्द्रा' (+ तन्द्रा । स्त्री) के नींद, श्रमादिसे इन्द्रियोंका अपने-अपने काममें शिथिल होना, २ अर्थ हैं ॥

८ 'धात्री' (स्त्री) के धाई, पृथ्वी, आँवला, माता ४ अर्थ हैं ॥

९ 'क्षुद्रा' (स्त्री) के किसी अङ्गसे हीन स्त्री, नटी, वेश्या, मधुमक्खी,

त्रिषु क्रूरेऽधमेऽल्पेऽपि क्षुद्रं १ मात्रा परिकृष्टे ।

अल्पे च परिमाणे सा मात्रा कार्स्म्येऽवधारणे ॥ १७८ ॥

२ आलेख्याक्षर्ययोश्चित्रं ३ कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।

४ योग्यभाजनयोः पात्रं ५ पत्रं वाहनपक्षयोः ॥ १७९ ॥

६ निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं ७ शस्त्रमायुधलोहयोः ।

८ स्याज्जटाशुकयोर्नेत्रं ९ क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ॥ १८० ॥

१० मुखाम्रे क्रोडहलयोः पोत्रं—

भट्टकटैया (रंगनी), ५ अर्थ और 'क्षुद्र' (त्रि) के क्रूर, गर्राब (मिधन), जोच, ३ अर्थ हैं ॥

१ 'मात्रा' (की) के परिच्छेद या सामग्री (जैसे—महामात्रः, ...), थोड़ा, परिमाण, अक्षरके अवयव (इकार, ईकार, उकार, ...), कालका भूषण-विशेष, ५ अर्थ और 'मात्रम्' (न) के साकल्य (जैसे—हस्तमात्रं वस्त्रम्, ...), अवधारण (केवल, जैसे—पयोमात्रमस्ति, ...), २ अर्थ हैं ॥

२ 'चित्रम्' (न) के फोटो (तस्वीर), आभरण, चितकाबर, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'कलत्रम्' (न) के कमर, की, २ अर्थ हैं ॥

४ 'पात्रम्' (न) के योग्य (जैसे—पात्रे दानं कर्तव्यम्, ...), वर्तन, दो तटों-का बीच, सुवा-चर आदि, राजमंत्री, पत्ता, नाटक करनेवाला (एक्टर), ७ अर्थ हैं ॥

५ 'पत्रम्' (न) के वाहन (घोड़ा, हाथी, ऊँट आदि सवारी), पक्ष, पत्ता, बाण, पक्षी, ५ अर्थ हैं ॥

६ 'शास्त्रम्' (न) के आदेश, व्याकरण आदि ६ शास्त्र, २ अर्थ हैं ॥

७ 'शस्त्रम्' (न) के हथियार, लोहा, २ अर्थ हैं ॥

८ 'नेत्रम्' (न) के पेक्की सोर (जड़), वस्त्र, मयनीकी रस्ती, अँख, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'क्षेत्रम्' (न) के की, शरीर, खेल, सिद्ध-मुनि आदिका स्थान ४ अर्थ हैं ॥

१० 'पोत्रम्' (न) के सूअरका मुख, हकका मुख (अगला भाग), वस्त्र, ३ अर्थ हैं ॥

१. तदुक्तं भगवता श्रीकृष्णोनाजुनं प्रति—

'इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमिरयमिषीयते' । गीता १३ १ ॥

—१ गोत्रं तु तन्नि च ।

२ सत्रमाच्छादने यज्ञे सशदाने वनेऽपि च ॥ १८१ ॥

३ अजिरं विषये कायेऽप्यम्भरं व्योम्नि वाससि ।

४ चक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षेत्रं मोक्षेऽपि क्षीरमाप्नु च ॥ १८२ ॥

८ स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ * द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ।

१० गुहादम्भौ गह्वरे द्वे ११ रक्षाऽन्तिकमुद्वहरे ॥ १८३ ॥

१ 'गोत्रम्' (न) के नाम, गोत्र (वंश, कुल), संभावनाके योग्य बोध, जङ्गल, क्षेत्र, रास्ता, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'सत्रम्' (न) के आच्छादन (ढँकना), यज्ञ, सर्वदा दान करना, जङ्गल, दम्भ, ५ अर्थ हैं ॥

३ 'अजिरम्' (न) के विषय (रूप, रस, गन्ध आदि), शरीर, आँगन (चौक), हवा, मेढक, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'अम्भरम्' (न) के आकाश, कपड़ा, २ अर्थ हैं ॥

'चक्रम्' (न) के राज्य, सेना, पहिया, आयुध-विशेष, समूह, कुम्भारका चाक, पानीकी भौरी, ७ अर्थ और 'चक्रः' (पु) का चकवा पत्नी, १ अर्थ है ॥

६ 'अक्षरम्' (न) के मोक्ष, परब्रह्म, वर्ण (क ख ग घ आदि वर्ण, किसी भी भाषाके अक्षर), आकाश, धर्म, तप, मूल कारण, चिचिदा (अपामार्ग), ८ अर्थ हैं ॥

७ 'क्षीरम्' (न) के पानी, दूध, २ अर्थ हैं ॥

८ 'भूरि' (न) का सोना १ अर्थ; 'भूरिः' (पु) के कृष्णजी, शिवजी, ब्रह्मा, ३ अर्थ और 'भूरि' (त्रि) का अधिक (काफी), १ अर्थ तथा 'चन्द्रः' (पु) के सोना, चन्द्रमा, सुन्दर, कधीला (औषध-विशेष), पानी, ५ अर्थ हैं ॥

९ 'गोपुरम्' (न) के द्वारमात्र, नगरका द्वार, मोथा, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'गह्वरम्' (न) के गुफा, दम्भ, निकुञ्ज, गहन, ४ अर्थ हैं ॥

११ 'उपद्वरम्' (न) के एकान्त, समीप, २ अर्थ हैं ॥

- १ पुरोऽधिकमुपर्यग्राण्य २ गःरे नगरे पुरम् ।
 मन्दिरं चात्रय राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ॥ १८४ ॥
 ४ दरोऽस्त्रियां भये श्वस्त्रे ५ वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ।
 ६ तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ॥ १८५ ॥
 ७ 'औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासनं ।
 ८ पुष्करं करिदस्ताग्रे बाधभाण्डमुखे जले ॥ १८६ ॥
 व्योम्नि खड्गफले पक्षे तीर्थौषधिविशेषयोः ।
 ९ अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तधिभेदतादर्थ्यं ॥ १८७ ॥

१ 'अग्रम्' (न) के अगे (सामने), एक पल (४ भरी) का प्रमाण-विशेष, ऊपर, आलम्बन, समूह, प्रान्त, ३ अर्थ और 'अग्रम्' (त्रि) के अधिक-प्रधान, पहला, ३ अर्थ हैं ।

२ 'पुरम्' (न) के घर, नगर (शहर, बड़ा ग्राम), २ अर्थ और 'पुरः' (पु) के गुगुल, १ अर्थ तथा 'मन्दिरम्' (न) के घर, नगर, २ अर्थ हैं ॥

३ 'राष्ट्रः' (पु न) के देश, उपद्रव, २ अर्थ हैं ॥

४ 'दरः' (पु न) के डर, गढा, २ अर्थ हैं ॥

५ 'वज्रः' (पु न) के हीरा, वज्र (इन्द्रका आयुध-विशेष), २ अर्थ हैं ॥

६ 'तन्त्रम्' (न) के प्रधान, सिद्धान्त, जुलाहा (कपड़ा बुननेवाली जाति-विशेष), सामग्री, चेदकी एक शाखा, कारण, उत्तम औषध, ७ अर्थ हैं ॥

७ 'औशीरः' (पु । + न० वी० स्वा०), का चैत्रका दण्ड, १ अर्थ; 'औशीरम्' (न) के शयन, आसन (+ शयन और आसन दोनोंका समुदाय वी० स्वा०), उशीर (खस) से उत्पन्न, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'पुष्करम्' (न) के हाथीकी सूँड़का आगेवाला हिस्सा, बाजाके भाण्डका मुख, पानी, आकाश, तलवारका फल, कसल, 'पुष्कर चैत्र' नामक तीर्थ विशेष, पुष्करमूल औषध, ८ अर्थ हैं ॥

९ 'अन्तरम्' (न) के अवकाश (खाली), अवधि, पहिरनेका कपड़ा आवि, अन्तर्धान (छिपना), भेद (फरक), तादर्थ्य (उसके लिये, जैसे—

१. 'औशीरं चामरे दण्डे' इति पाठान्तरम् ।

छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च ।

- १ सुस्तेऽपि पिठरं २ राजकशेरुण्यपि नागरम् ॥ १८८ ॥
- ३ शार्वरं त्वन्धतमसे 'घातुके मृत्तिलिकम् ।
- ४ गौरोऽरुणे सिते पीते ५ त्रणकार्येऽप्यरुकरः ॥ १८९ ॥
- ६ जठरः कठितेऽपि स्या ७ दधस्तादपि चाधरः ।
- ८ अनाकुलेऽपि चैकाग्रो ९ व्यग्रो व्यासक्त आकुले ॥ १९० ॥

ओदनान्तरस्तण्डुलः अर्थात् भाग्यं लिये चावल है,), छिद्र, आत्मीय (अपना), विना, बाहर, अवर, दीप्त, अन्तरात्मा, सादृश्य, अन्य, १५ अर्थ हैं ॥

१ 'पिठरम्' (न) के मोथा घाव, स्थाली (बटलोई), मथनी ३ अर्थ हैं ॥

२ 'नागरम्' (न) के सोंठ, नागरमोथा, २ अर्थ और 'नागरः' (त्रि) के नगरवासी या नगरमें होनेवाला, चतुर, २ अर्थ हैं ॥

३ 'शार्वरम्' (न) का घोर अन्धकार १ अर्थ; 'शार्वरम्' (त्रि) का घातुक, १ अर्थ और 'शार्वरः' (पु) का घातुक हाथी, १ अर्थ है ॥

४ 'गौरः' (त्रि) के अरुण, सफेद (गोर), पीला, विशुद्ध, ४ अर्थ; गौरः' (पु) के पीला सरसों, चन्द्रमा, २ अर्थ और 'गौरः' (पु न) का पद्मकेसर, १ अर्थ है ॥

५ 'अरुकरः' (पु) का 'भेलावा' नामकी ओषधि, १ अर्थ और 'अरुकरः' (त्रि) का घाव करनेवाला, १ अर्थ है ॥

६ 'जठरः' (त्रि) का कठोर, १ अर्थ; 'जठरः' (पु न) का पेट, १ अर्थ और 'जठरः' (पु) का बूढ़ा, १ अर्थ है ॥

७ 'अधरः' (त्रि) के नीचे, हीन, २ अर्थ और 'अधरः' (पु) का ओठ, १ अर्थ है ॥

८ 'एकाग्रः' (त्रि) के अनाकुल (स्वस्थ), एकान्त, २ अर्थ हैं ॥

९ 'व्यग्रः' (त्रि) के अनेक कार्योंमें फँसा हुआ (चञ्चल), व्याकुल, २ अर्थ हैं ॥

१. 'घातुकेमे मृत्तिलिकम्' इति पाठान्तरम् । २. 'त्रणकार्येऽप्यरुकरः' इति पाठान्तरम् ।

- १ उपर्युदीव्यश्रेष्ठेऽव्युत्तरः स्याद २ उत्तरः ।
 एषा विपर्यये श्रेष्ठे ३ दूरानात्तोत्तमाः पराः ॥ १२१ ॥
 ४ स्वादुप्रियौ तु मधुरौ ५ क्रूरौ कठिननिर्दयौ ।
 ६ उदारो दातृमहती ७ रितस्स्वन्दनीचयोः ॥ १२२ ॥
 ८ मन्दस्वच्छन्दयाः स्वैरः ९ शुभ्रमुद्गीप्तशुक्लयोः ।
 १० 'आसारो वेगवद्वर्षे सैन्यप्रसरणं तथा (७४)
 ११ धाराभ्रुपाते चोत्कर्षेऽस्त्रौ १२ कटाहे तु कर्परः (७५)

१ 'उत्तरः' (त्रि) के ऊपर, उत्तर दिशामें होनेवाला, श्रेष्ठ, ३ अर्थ;
 'उत्तरम्' (न) का जवाब, ४ अर्थ; 'उत्तरः' (पु) का विराट राजाका पुत्र,
 १ अर्थ और + 'उत्तरा' (स्त्री) के उत्तर दिशा, अभिमन्यु (अर्जुनके पुत्र)
 की स्त्री, २ अर्थ हैं ॥

२ 'अनुत्तरः' (त्रि) के नीचे, उत्तरके अतिरिक्त (भिन्न) दिशामें
 होनेवाला, नीच, श्रेष्ठ, ४ अर्थ और 'अनुत्तरम्' (न) का निरुत्तर, १ अर्थ है ॥

३ 'परः' (त्रि) के दूर, शत्रु, उत्तम, दूसरा (अपनेसे भिन्न), ४ अर्थ
 और 'परम्' (न) का केवल, १ अर्थ है ॥

४ 'मधुरः' (त्रि) के स्वादिष्ट, प्रिय, २ अर्थ; 'मधुरः' (पु) का मीठा,
 १ अर्थ और + 'मधुरा' (स्त्री) का सौँक, १ अर्थ है ॥

५ 'क्रूरः' (त्रि) के कठिन, निर्दय, घोर, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'उदारः' (त्रि) के दाता, बड़ा, चतुर, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'इतरः' (त्रि) के दूसरा, नीच, २ अर्थ हैं ॥

८ 'स्वैरः' (त्रि) के मन्द, स्वतन्त्र, २ अर्थ हैं ॥

९ 'शुभ्रम्' (त्रि) के उद्गीप्त (प्रकाशमान), श्वेत वर्णवाला, २ अर्थ और
 'शुभ्रम्' (न) का सफेद रंग, १ अर्थ है ॥

१० 'आसारः' (पु) के जोरसे वर्षा होना, सेनाका फैलना, २ अर्थ हैं ॥

११ 'धारा' (स्त्री) के धारसे पानी आदिका गिरना, तलवार आदि की
 धार, बोरेकी गति-विशेष, सेनाप्रभाग, ४ अर्थ हैं] ॥

१२ 'कर्परः' (पु) के कटाह (बड़ी कड़ाही), शस्त्र-विशेष, कपाल, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'अवक्षेपकाः स्त्री० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगिताऽत्र स्थापितः ।

१ बन्धुरं सुन्दरे नम्रे २ गिरिगेंदुकशैलयोः (७६)

३ चरुः स्थाल्यां हविःपक्ता ४ वधीरः कातरे चले' (७७)

इति रान्ताः शब्दाः ।



अथ छान्ताः शब्दाः ।

५ चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौल्यस्त्रयः ॥ १९३ ॥

६ द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ।

७ कृतान्तानेहसाः काल ८ क्षतुर्थेऽपि युगे कलिः ॥ १९४ ॥

९ स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः १० प्रावारेऽपि च कम्बलः ।

१ ['बन्धुरम्' (त्रि) के सुन्दर, नम्र, २ अर्थ हैं] ॥

२ ['गिरिः' (पु) के गेंदा, पहाड़, आँखका रोग-विशेष, ३ अर्थ और 'गिरिः' (त्रि) का पूज्य, १ अर्थ है] ॥

३ ['चरुः' (पु) के बटकोही, हविष्यका पाक, २ अर्थ हैं] ॥

४ ['वधीरः' (त्रि) के कातर, अधीर (चञ्चल अर्थात् घैर्यहीन २ अर्थ हैं] ॥

इति रान्ताः शब्दाः ।



अथ छान्ताः शब्दाः ।

५ 'मौलिः' (पु स्त्री) के चूडा, मुकुट, बँधा हुआ केश (बाल), ३ अर्थ हैं ॥

६ 'पीलुः' (पु) के अक्षरोटका पेड़, हाथी, बाण, ३ अर्थ और 'पीलु' (न) का अक्षरोटका फूल तथा फूल, २ अर्थ हैं ॥

७ 'कालः' (पु) के यमराज, समय, मृत्यु, काला, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'कलिः' (पु) के कलियुग, लड़ाई सगडा, २ अर्थ और 'कलिः' (स्त्री) का फूलकी कली (कोंड़ी), १ अर्थ है ॥

९ 'कमलः' (पु) का मृग-विशेष, १ अर्थ और 'कमलम्' (न) के कमलका फूल, पानी, ताँबा, आकाश, औषध, ५ अर्थ हैं ॥

१० 'कम्बलः' (पु) का दुपट्टा (चादर), हाथी, साज्जा (गाय या बैलके गलेमें लटकता हुआ चमड़ा, छोर), कीड़ा (कृमि), ४ अर्थ और 'कम्बलम्' (न) का पानी, कम्बल, २ अर्थ हैं ॥

- १ करोपहारयोः पुंसि 'बलिः' प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ॥ १९५ ॥
 २ स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः ।
 ३ वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ॥ १९६ ॥
 ४ भेद्यलिङ्गा शठे व्यालः पुंसि श्वापदमर्षयोः ।
 ५ मलोऽस्त्री पापविट्किट्टान्य ष स्त्री शूलं रुमाशुचम् ॥ १९७ ॥
 ७ शङ्कावपि द्वयोः कौलः ८ पालिः स्वयभ्यङ्कपङ्क्तिषु ।
 ९ कला शिल्पे कालभेदेऽपि—

१ 'बलिः' (+ वलिः । पु) के राजाका कर (कौषी, टैक्स, मालगुजारी), उपहार (भेंट, नजर), 'बलि'नामक दैत्य, चँवरका दण्ड, ४ अर्थ और 'बलिः' (स्त्री) के बुढ़ापेसे चमड़ेका सिकुड़ना, घरमें लगा हुआ काष्ठ-विशेष, पेटो (पेटके चमड़ेकी सिकुड़न), ३ अर्थ हैं ॥

२ 'बलम्' (न) के मोटाई, सामर्थ्य (ताकत), सेना, रूप, ४ अर्थ और 'बलः' (पु) के कौआ, बछराम (कृष्णजीके बड़े भाई), 'बल'नामका दैत्य (जिसे इन्द्रने मारा था), ३ अर्थ हैं ॥

३ 'वातूलः' (+ वातुलः । पु) का वायुसमूह (आँधी), १ अर्थ और 'वातूलः' (त्रि) का बातूनी (बहुत बात करनेवाला), १ अर्थ हैं ॥

४ 'व्यालः' (त्रि) का शठ, १ अर्थ और 'व्यालः' (पु) के हिंसक जन्तु, सौंप, बदमाश हाथी, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'मलः' (पु न) के पाप, मैला (विष्टा), मैल, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'शूलम्' (पु न) के शूल नामक रोग-विशेष, हथियार (त्रिशूल), २ अर्थ हैं ॥

७ 'कौलः' (पु स्त्री) के खुरा आदि, आगकी ज्वाला, शङ्कु, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'पालिः' (+ पाली । स्त्री) के कोना या घार, अङ्क (गोद) पङ्क्ति, रमश्रु (बाकी-मूँछ) से युक्त स्त्री, प्रान्त, पुल, कल्पित भोजन, बर्बाद, कर्णलता, प्रस्थ, १० अर्थ हैं ॥

९ 'कला' (स्त्री) के कारीगरी (यह ६४ प्रकारकी होती है । एतदर्थं परिशिष्ट देखिये), ३० काष्ठाका (८ सेकेण्ड ; पृ० ४४ में वक्त) समय-विशेष, मूल बनकी वृद्धि (सूद), सोलहवाँ हिलारा, चन्द्र-कला, ५ अर्थ हैं ॥

१. 'बलिः' इति पाठान्तरम् ।

—१ आत्मी सख्यावन्ती अपि ॥ १९८ ॥

- २ अव्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि ।
- ३ बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलोऽश्वौ शितौ त्रिषु ॥ १९९ ॥
- ४ लीला विलासक्रिययो ५ उपला शर्करापि च ।
- ६ शोणितेऽम्भसि कीलालं ७ मूलनाथे शिफोभयोः २०० ॥
- ८ जालं समूह आनायगवाक्षक्षारकेष्वपि ।
- ९ शीलं स्वभावे सद्वृत्ते १० सस्ये हेतुकृते फलम् २०१ ॥

१ 'आत्मी' (स्त्री) के सखी, पङ्क्ति, २ अर्थ हैं ॥

२ 'वेला' (स्त्री) के चन्द्रमाके उदय होनेपर समुद्रका बढ़ना, समय, मर्यादा, तट, बुझकी स्त्री, धनियोंका भोजन, विना दुःखका मरना, ७ अर्थ हैं ॥

३ 'बहुलाः' (स्त्री, ताराओंके बहुत होनेसे निश्चय बहुवचन है) के कृत्तिका नामका तीसरा नक्षत्र, गौ, २ अर्थ; 'बहुलः' (पु) के अग्नि, कृष्णपक्ष, २ अर्थ और 'बहुलः' (त्रि) के काला वर्ण, बहुत, २ अर्थ हैं ॥

४ 'लीला' (स्त्री) के विलास, केलि, शृङ्गारभावसे उत्पन्न क्रिया-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'उपला' (स्त्री) के शिकड़ी (पत्थरका छोटा २ कङ्कड़), खौड़ या चीनी, २ अर्थ और 'उपलः' (पु) के पत्थर, रत्न, २ अर्थ हैं ॥

६ 'कीलालम्' (न) खून, पानी, २ अर्थ हैं ॥

७ 'मूलम्' (न) के पइला, जब, मूल नामक उन्नीसवीं नक्षत्र, (+ मूल-धन), समीप (जैसे—वृषमूले तिष्ठति,), ४ अर्थ हैं ॥

८ 'जालम्' (न) के समूह, जाल (फन्दा), गवाच (खिचकी, जँगला), विना खिली हुई कछी, दम्भ, ५ अर्थ और 'जालः' (पु) का कदम्बका पेड़, १ अर्थ है ॥

९ 'शीलम्' (न) के स्वभाव, सदाचरण (अच्छी रहन), २ अर्थ हैं ॥

१० 'फलम्' (न) के धान्य वृक्ष आदिका फल, फल (लाभ; जैसे—वज्रका फल स्वर्ग,), बाणकी नाक, जातीफल, त्रिफला (आँवला, हरि, बहेदा), कंकोळ, सम्पत्ति, ७ अर्थ हैं ॥

- १ छदिनेत्ररुजोः क्लीवं समूहे पटलं न ना ।
 २ अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं ३ स्याच्चाभिषे पलम् ॥ २०२ ॥
 ४ और्वानलैऽपि पातालं ५ 'चैलं' वस्त्रेऽधमे त्रिषु ।
 ६ कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णं श्वभ्रे ना तु तुषानलैः ॥ २०३ ॥
 ७ निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः ।
 ८ पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षते त्रिषु ॥ २०४ ॥
 ९ प्रवालमङ्कुरेऽप्यस्त्री १० त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ।
 ११ करालो दन्तुरे तुङ्गे १२ चारौ दक्षे च पेशलः ॥ २०५ ॥

१ 'पटलम्' (न) क छप्पर, आँखका रोग-विशेष, २ अर्थ और 'पट-लम्' (न स्त्री) का समूह, १ अर्थ है ॥

२ 'तलम्' (पु न) के नीचे (जैसे—रसातलम्, पादतलम्,), स्वरूप, पृष्ठ भाग (जैसे—भूतलम्, करतलम्,), ३ अर्थ हैं ॥

३ 'पलम्' (न) के मांस, चार भरीका प्रमाण-विशेष, समय-विशेष (१ घटीका १० भाग), -३ अर्थ हैं ॥

४ 'पातालम्' (न) के वहवानल, नागलोक (पाताल), बिल, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'चैलम्' (+ चेलम् । न) का कपड़ा, १ अर्थ और 'चैलः' (त्रि) का नीच, १ अर्थ है ॥

६ 'कुकूलम्' (न) का कील आदिसे भरा गढ़ा, १ अर्थ और 'कुकूलः' (पु) का भूसेकी आग (भवर), १ अर्थ है ॥

७ 'केवलम्' (अव्यय) का सिर्फ, १ अर्थ और 'केवलम्' (त्रि) के एक (अकेला, जैसे—केवलोऽयं याति,), समूचा (जैसे—केवला भिक्षु-का;), २ अर्थ हैं ॥

८ 'कुशलम्' (न) के पर्याप्ति (सामर्थ्य), कल्याण, पुण्य, ३ अर्थ और 'कुशलम्' (त्रि) का शिचित (चतुर), १ अर्थ है ॥

९ 'प्रवालम्' (न पु) के नया पल्लव, मूँगा, वीणाका दण्ड, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'स्थूलम्' (त्रि) के मोटा, जड़ (मूल), २ अर्थ हैं ॥

११ 'करालः' (त्रि) के दाँतुल, ऊँचा, भयङ्कर, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'पेशलः' (त्रि) के सुन्दर, चतुर, २ अर्थ हैं ॥

१ 'चेलम्' इति पाठान्तरम् । २. 'अङ्कुरोऽत्र किसलयः' इति क्षी० स्वा० वक्तेः ।

- १ मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्या २ लोलचलसत्पण्याः ।
- ३ 'कुलं गृहेऽपि ४ तालाङ्गे कुबेरे चैककुण्डलः (७८)
- ५ स्त्रीभावावश्योर्हेला ६ हेलिः सूर्ये ७ रणे हिलिः (७९)
- ८ हालः स्यान्नृपतौ मये ९ शकलचलेद्योर्दलम् (८०)
- १० तूलिश्चित्रोपकरणशलाकालूलशययोः (८१)
- ११ तुमुलं व्याकुले शब्दे १२ शकुली कर्णपालयनि (८२)

इति वान्ताः शब्दाः ।

अथा वान्ताः शब्दाः ।

१३ दवदावौ वनारण्यवह्नी—

१ 'बालः' (+ बालः । त्रि) के मूर्ख बालक, कश, नेत्रवाला औषध, हाथी-घोड़ेकी पूँछके बालका गुच्छा, ५ अर्थ हैं ॥

२ 'लोलः' (त्रि) के चञ्चल, चाहनासे युक्त, २ अर्थ हैं ॥

३ ['कुलम्' (न) के घर, देह, देश, वंश, परिवार, ५ अर्थ हैं] ॥

४ ['एककुण्डलः' (पु) के बलभद्र, कुबेर, १ अर्थ हैं] ॥

५ ['हेला' (स्त्री) के स्त्रीका भाव-विशेष; अवज्ञा, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['हेलिः' (पु) के सूर्य, आलिङ्गन, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['हिलिः' (पु) के लड़ाई, भाव-सूचन, २ अर्थ हैं] ॥

८ ['हालः' (पु) के शालिवाहन (+ सातवाहन) राजा, १ अर्थ और + 'हाला' (स्त्री) का मदिरा, १ अर्थ है] ॥

९ ['दलम्' (न) के टुकड़ा, पत्ता, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['तूलिः' (स्त्री) के चित्र बनानेकी कूँची, तोसक, २ अर्थ हैं] ॥

११ ['तुमुलम्' (न) का रण आदिमें जन-समूहादि से ठसाठस भरा हुआ, १ अर्थ और 'तुमुलः' (पु) का बहेड़ेका पेड़, १ अर्थ है] ॥

१२ ['शकुली' (स्त्री) के कर्णपाली, (कानका पदी), पूँड़ी, २ अर्थ हैं] ॥

इति वान्ताः शब्दाः ।

अथ वान्ताः शब्दाः ।

१३ 'दवः, दावः' (२ पु) के वन, दावानल (लकड़ियोंकी रगड़से उत्पन्न हुई अङ्गलकी आग), २ अर्थ हैं ॥

—१ जन्महरौ भवौ ॥ २०६ ॥

- २ मन्त्री सहायः सचिवौ ३ पतिशास्त्रिनरा धवाः ।
 ४ अवयः शैलमेषार्का ५ आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ॥ २०७ ॥
 ६ भावः 'सत्तास्वभावामिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ।
 ७ स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ॥ २०८ ॥
 ८ अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृताऽपि निह्वः ।
 ९ उत्सेकामर्षयोर्विच्छिन्नप्रसरे मह उत्सवः ॥ २०९ ॥
 १० अनुभावः प्रभावे च सतां च प्रतिनिश्चये ।
 ११ स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्यापलब्धये ॥ २१० ॥

१ 'भवः' (पु) के जन्म लेना, शिवजी, प्राप्ति, सत्ता, संसार, कल्याण, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'सचिवः' (पु) के मन्त्री (बुद्धि-सचिव), सहायक (कर्म-सचिव), २ अर्थ हैं ॥

३ 'धवः' (पु) के पति, धनका पेड़, नर, धूर्त, ४ अर्थ हैं ॥

४ 'अविः' (पु) के पहाड़, भेंड़ा, सूर्य, नाथ (स्वामी), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'हवः' (पु) के आज्ञा, पुकारना, यज्ञ ३ अर्थ हैं ॥

६ 'भावः' (पु) के सत्ता, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा, जन्म, वस्तु, क्रिया, लीला, विभूति, पाण्डित्य, जन्तु, रतिवेग, १३ अर्थ हैं ॥

७ 'प्रसवः' (पु) के उत्पत्ति, फल, फूल, गर्भसे पैदा होना, सन्तान, ५ अर्थ हैं ॥

८ 'निह्वः' (पु) के अविश्वास, व्यर्थ बोलना (बकना), झठता, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'उत्सवः' (पु) के उत्सृति, क्रोध, हड़काका वेग, आनन्दका अवसर (विवाह आदि उत्सव), ४ अर्थ हैं ॥

१० 'अनुभावः' (पु) के प्रभाव, सज्जनोंके ज्ञानका निर्णय, भाव-सूचन, ३ अर्थ हैं ॥

११ 'प्रभवः' (पु) के जन्मकारण (जैसे—पुतादिका जन्म कारण माता-पिता,), प्रथम उपलब्धिका स्थान (जैसे—'गङ्गाप्रभवः हिमवान्' अर्थात् गङ्गाके प्रथमोपलब्धिका स्थान हिमालय है,), २ अर्थ हैं ॥

१. 'स्वस्वभावामिप्रायचेष्टात्मजन्मसु' इति पाठान्तरम् ।

- १ शूद्रायां विप्रतनये शब्दे पारशवो मतः ।
- २ ध्रुवा भभदे क्लीबं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ॥ २११ ॥
- ३ स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं विष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां घने ।
- ४ स्त्रीकटीवस्त्रवन्धेऽपि नीवी परिपणेऽपि च ॥ २१२ ॥
- ५ शिवा गौरीफेरवया ६ द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ।
- ७ द्रव्यासुख्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ॥ २१३ ॥

१ 'पारशवः' (+ पाराशवः । पु) के शूद्र जातिकी मातामें ब्राह्मण जातिके पितासे उत्पन्न भन्तान्, परशु (फरसा, कुल्हाड़ी) अच्छ, २ अर्थ हैं ॥

२ 'ध्रुवः' (पु) के ध्रुव तारा, बह, समु, योग भेद, शिवजी, शङ्ख, कील, ७ अर्थ; 'ध्रुवम्' (न) का निश्चित (जैसे—ध्रुवं मूर्खोऽयम्,), १ अर्थ और 'ध्रुवम्' (त्रि) के निरन्तर (जैसे—ज्ञातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च (गांता २ । २७),), तर्क, आकाश, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'स्वः' (पु) के ज्ञानी (जाति, जैसे—उत्सुकानीद भान्ति 'स्वाः,) आत्मा (जैसे—हृदि स्वमवलोकयन्,), २ अर्थ; 'स्वम्' (त्रि) का आत्मीय, १ अर्थ और 'स्वः' (पु न) का घन, १ अर्थ है । ('इस 'स्व' शब्दके जाति और घन अर्थमें 'राम' शब्दकी तरह और आत्मा और आत्मीय अर्थमें 'सर्व' शब्दकी तरह रूप होते हैं') ॥

४ 'नीवी' (+ नीविः । स्त्री) के फुफुनी (स्त्रियोंके नाभिके नीचेवाली वस्त्र-प्रणि) गजपुत्रादिके घनका अदल-बदल बनियोंका मूलघन, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'शिवा' (स्त्री) के पार्वतीजी, सियारिन, स्वार, शमी वृक्ष, आँवला, भूई आँवला ओषधि, ६ अर्थ हैं ॥

६ 'द्वन्द्वम्' (न । + पु) के लड़ाई, जाही (युग्म, युगल), रहस्य, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'सत्त्वम्' (न) के वस्तु, प्राण, अधिक पराक्रम होना, ३ अर्थ और 'सत्त्वम्' (न पु) का प्राणा १ अर्थ है ॥

१. 'पाराशवः पुमान्' इति पाठान्तरम् ।

२. 'नीविः' इति पाठान्तरम् ।

३. आत्मास्मीयार्थयोः स्वशब्दः 'स्वमस्मृतिधनाख्यायाम्' (पा० सू० १।१।३५) इति सर्व-नामसंज्ञकस्तेन 'सर्व'वद्रूपम् । जातिधनार्थयोस्तु सर्वनामसंज्ञाऽभावाद् रामशब्दवद्रूपमित्यवश्यम्

- १ 'कलीवं नपुंसकं षण्ठे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ।
२ 'अत्यध्वगातिप्रणतौ प्राध्वौ प्राध्वं तु बन्धने' (८३)

इति वान्ताः शब्दाः ।

अथ शान्ताः शब्दाः ।

- ३ द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ ४ द्वौ चराभिप्ररी स्पशौ ॥ २४ ॥
५ द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ ६ द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ।
७ रहःप्रकाशौ वीकाशौ—

१ 'कलीबम्' (न) का नपुंसक (हिजड़ा) १ अर्थ और 'कलीबम्' (त्रि) का सामर्थ्यहीन, १ अर्थ है ॥

२ ['प्राध्वः' (पु) के रास्ताको चलकर पूरा किया हुआ, अतिनम्र, २ अर्थ और 'प्राध्वम्' (न) का बन्धन, १ अर्थ है] ॥

इति वान्ताः शब्दाः ।

अथ शान्ताः शब्दाः ।

- ३ 'विट्' (= विश पु) के वैश्य, मनुष्य, प्रवेश ३ अर्थ हैं ॥
४ 'स्पशः' (पु) के दूत, युद्ध, २ अर्थ हैं ॥
५ 'राशिः' (पु) के ढेरी, मेष आदि (१।१।२७ में उक्त) वारह राशि, २ अर्थ हैं ॥
५ 'वंशः' (पु) के कुल (खानदान), बाँस, संघ, पीठकी रीढ़ ४ अर्थ हैं ॥
७ 'वीकाशः' (+ विकाशः । पु) के एकान्त, प्रकाश (स्पष्ट व्यक्त), २ अर्थ हैं ॥

१. अयं (झीवशब्दः) ओष्ठ्योऽत्र भ्रमात्पठितः इति मा० दी०, 'बवयोः सावण्यादित्यात्र पाठः' इति महे० वचनं च चिन्तयम् । 'रूपणक्षुद्रकङ्कोरक्षुद्रा.....' इति, झीवो वर्षवरः षण्ठः.....इति, झीवो विक्रमहीनेऽपि.....(अमि० रत्न० क्रमशः २।१९२, २।२७५, ५।३४) इति इलायुषात्, 'झीवोऽपौरुषषण्ठयोः' (अने० संग्र० २।५३२) इति वान्तप्रकरणहैमात् 'पापे झीवं नपुंसके षण्ठेऽन्यवदविक्रमे' इति मेदिन्याश्च वान्तस्यै (दन्त्यौष्ठ्यस्यै) य 'झीव' शब्दस्योपलब्ध्या सर्वेषां भ्रमकरपनानौचित्यात् ॥

२. 'अत्यध्वगा'.....'बन्धने' इत्ययं क्षेत्रकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामेवोपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितया मूळे क्षेत्रकत्वेन निहितः ॥

—१ निर्वेशो भृतिभोगयोः ॥ २१५ ॥

२ कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ।

३ पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्याद् दक्षिणमस्तु च ॥ २२६ ॥

५ दशावस्थानेकषिषाण्या दशा तृष्णापि चायता ।

७ वशा स्त्री करिणी च स्याद् दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ॥ २१७ ॥

९ स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामस्तृणावपि ।

१० प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि—

१ 'निर्वेशः' (पु) के वेतन, उपभोग, २ अर्थ हैं ॥

२ 'कीनाशः' (पु) के यमराज, वानर, २ अर्थ और 'कीनाशः' (त्रि) के क्षुद्र, कर्षक (किसान), २ अर्थ हैं ॥

३ 'अपदेशः' (पु) के व्याज (बहाना । + स्थान), लक्ष्य, निमित्त ३ अर्थ हैं ॥

४ 'कुशम्' (न) का पानी, १ अर्थ और 'कुशः' (पु) के रामचन्द्रजी-का पुत्र, कुशा, द्वीप, जोती (बैल आदि के गले में बांधने के लिये जुवाठकी रस्सी), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'दशा' (स्त्री) के अवस्था (दशा), अनेक तरह, दीपकी बत्ती, ३ अर्थ और 'दशाः' (स्त्री नि० ब० व०) का कपड़े की धारी (किनारी, दुस्ती), १ अर्थ है ॥

६ 'आशा' (स्त्री) के तृष्णा (चाह, आशारा, उमीद), पूर्व आदि दिशा, २ अर्थ हैं ॥

७ 'वशा' (स्त्री) के स्त्री, हथिनी, बाँस गौ, लक्ष्मी, वश में रहनेवाली, ५ अर्थ हैं ॥

८ 'दृक्' (= दृश् स्त्री) के ज्ञान, नेत्र, बुद्धि, ३ अर्थ और 'दृक्' (= दृश् त्रि) का ज्ञाता (जाननेवाला), १ अर्थ है ॥

९ 'कर्कशः' (त्रि) के साहसी, कठोर, रुखा, दृढ़, निर्दय, कृपाण, क्रूर, ७ अर्थ और 'कर्कशः' (पु) के तलवार, कबोला ओषधि, गन्ना, कासमई (गुलमभेद महे० । + वेसवारभेद स्त्री० स्वा० आ० दी०), ४ अर्थ हैं ॥.....

१० 'प्रकाशः' (पु) के बहुत प्रसिद्ध, प्राम, उज्ज्वल, हँसी, ४ अर्थ हैं ॥

—१ शिशावज्ञे च बालिशः ॥ २१८ ॥

२ 'कोशोऽस्त्री कुड्मले बद्धविधानेऽर्थोऽद्विष्ययोः' (८४)

३ 'नाशः अये तिरोधाने ४ जीवितेशः प्रिये यमे' (८५)

५ 'नृशंसस्त्रहौ निर्विशः ६ वंशुः सूर्योऽशवः कराः' (८६)

७ 'आश्वाख्ये शालिशीघ्रार्थेऽपाशो बन्धनशस्त्रयोः' (८७)

इति शान्ताः शब्दाः ।

~~अथ शान्ताः शब्दाः ।~~

अथ शान्ताः शब्दाः ।

२ कुरमत्स्यावनिमिषौ १० पुरुषावात्ममानवौ ।

१ 'बालिशः' (पु) के बालक, मूर्ख, २ अर्थ हैं ॥

२ ['कोशः' (पु न) के फूलकी कोंदी (कलिका), तलवार की श्यान, खजाना, दिव्य (शय्य-भेद), अर्थ हैं] ॥

३ ['नाशः' (पु) के क्षय, अन्तर्धान (क्षिपना), २ अर्थ हैं] ॥

४ ['जीवितेशः' (पु) के प्रिय (पति आदि), यमराज, २ अर्थ हैं] ॥

५ ['निर्विशः' (पु) के क्रूर, तलवार, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['वंशुः' (पु) के सूर्य, किरण, सूत आदिका पतला हिस्सा, ३ अर्थ हैं] ॥

७ ['आशु' (ल) के ब्रह्मि (धान्य-भेद), शीघ्र, २ अर्थ हैं] ॥

८ ['पाशः' (पु) के बन्धन, वरुणका हथियार या फाँस, २ अर्थ हैं] ॥

इति शान्ताः शब्दाः ।

~~अथ शान्ताः शब्दाः ।~~

अथ शान्ताः शब्दाः ।

९ 'अनिमिषः' (पु) के देवता, मछली, २ अर्थ हैं ॥

१० 'पुरुषः' (पु) के क्षेत्रज्ञ (ज्ञानी), मनुष्य (पुरुष), पुत्राग वृद्ध, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'कोशोः'.....'द्विष्ययोः' इत्ययमंशः मा० दी० क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नोपलभ्यते नापि ताभ्यां व्याख्यातः, क्षी० स्वा० व्याख्याने दुर्गवचनत्वेन समुपलभ्यते । महे० मू० व्याख्यायां च समुपलभ्यते ॥

२. 'नाशः'.....'बन्धयोः' इत्यंशः क्षी० स्वा० व्याख्याने दुर्गवचनत्वेनोपलभ्यमानः प्रकृतोपयोगितयाऽत्र क्षेत्रकत्वेन स्थापितः ॥

- १ काकमस्यात्स्रगौ ध्वाङ्गौ २ कक्षौ तु तृणवीरधौ ॥ २१९ ॥
- ३ अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ ४ प्रैषः प्रेषणमर्दने ।
- ५ पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः ॥ २२० ॥
- ७ शुक्ले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषमे वृषः ।
- ८ कोषोऽस्त्री कङ्गमले कङ्गपिधानेऽर्थोऽप्यदिष्ययोः ॥ २२१ ॥
- ९ द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽथाक्षमिन्द्रिये ।
ना द्यूनाङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ॥ २२२ ॥

१ 'ध्वाङ्गः' (पु) के कौआ, मछलीको खानेवाला पक्षी (बगुडा), भिड्डक, तल्लक सर्प, कपासके बीज निकालनेका यन्त्र-विशेष, १ अर्थ हैं ॥

२ 'कक्षः' (पु) के घास, लता, काँख जङ्गल, ४ अर्थ हैं ॥

३ 'अभीषुः' (+ अभीशुः । पु) के रस्सी (घोड़े आदिका बान्धोर), किरण, २ अर्थ हैं ॥

४ 'प्रैषः' (+ प्रेषः । पु) के भेजना, पीडा, २ अर्थ हैं ॥

५ 'पक्षः' (पु) के सहाय, पक्षवारा (आधा महीना अर्थात् कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष), पार्श्व, ग्रह, साध्य, अवरोध, कक्ष आदिसे परे (आगे) रहनेपर समूह (जैसे—केशपक्षः, काकपक्षः,), बल, मित्र, पंख, रुचि विक-
सिपत (जैसे—भवदीयः पक्षः, अस्मदीयः पक्षः,), १२ अर्थ हैं ॥

६ 'उष्णीषः' (पु । + न) के पगड़ी, किरीट (मुकुट) २ अर्थ हैं ॥

७ 'वृषः' (पु) के बहुत पराक्रमवाला (+ अण्डकोश), चूहा, श्रेष्ठ, धर्म, वृष नामका दूसरा राशि, बैल, ६ अर्थ हैं ॥

८ 'कोषः' (+ कोशः, पु न) के फूलकी विना खिली हुई कड़ी (कोंदो), तलवारकी म्यान, खजाना दिव्य (शपथ-मेद), ४ अर्थ हैं ॥

९ 'आकर्षः' (पु) के जुआ, जुआ खेलनेका पाशा, सतरंज आदि खेलने की बिसात, (कपड़ा या पटरी आदि), खींचना, इन्द्रिय, ५ अर्थ हैं ॥

१० 'अक्षम्' (न) के इन्द्रिय, तृतिया, मोचरखार, ३ अर्थ और 'अक्षः'

१, 'सहायेऽप्युष्णीष' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कोषो..... दिव्य योः' इत्येषोऽशो महे० पुस्तके नोपलभ्यते नापि तेन व्याख्यातः इ
श्री० स्वा० भा० दी० मूलेकभ्यते व्याख्यातश्च ताभ्याम् ॥

- १ कर्षूर्बोर्ता करीषाम्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनी ।
- २ पुंभावे तत्क्रियायां च पौरुषं ३ विषमस्तु च ॥ २२३ ॥
- ४ उपादानेऽप्यामिषं स्या ५ अपराधेऽपि 'किन्विषम्' ।
- ६ स्याद् वृष्टौ लौकघातवंशे वरसरे वर्षमस्त्रियाम् ॥ २२४ ॥
- ७ प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा ८ भिक्षा सेवाऽऽर्थना भृतिः ।
- ९ त्विट् शोभाऽपि १० त्रिषु परे ११ न्यक्षं कात्स्न्येनिकृष्टयोः ॥ २२५ ॥

(पु) के जुआ खेलनेका पाशा, कर्ष (सोलह मासा, प्रमाण-विशेष), पहिया, बहेड़ा, व्यवहार (आय व्ययका विचार अर्थात् लेन देन), ५ अर्थ हैं ॥

१ 'कर्षूः' (पु) का खेती (जीविका), उपला (गोहरा, गोहंटा) का अङ्गार, २ अर्थ और 'पर्षूः' (स्त्री) का नहर, १ अर्थ है ।

२ 'पौरुषम्' (न) के पुरुषका भाव, पुरुषका कर्म (पुरुषार्थ), तेज ३ अर्थ और 'पौरुषम्' (त्रि) का पोरसा (हाथ उठाये हुए मनुष्यके साढ़े चार हाथका प्रमाण विशेष) १ अर्थ है ॥

३ 'विषम्' (न) के जल, जहर, २ अर्थ हैं ॥

४ 'आमिषम्' (न पु) के उपादान (घूस, रिस्वत), भोग्य वस्तु, संभोग, मांस, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'किन्विषम्' (+ किन्मिषम् । न) के अपराध, पाप, रोग, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'चपम्' (पु न) के वर्षा, जम्बूद्वीपके खण्ड (१ । १ । ६ में उक्त भारत आदि नव वर्ष), वर्ष (साल), ३ अर्थ और 'वर्षा' (स्त्री नि० ब० व०) का वर्षा ऋतु, १ अर्थ है ॥

७ 'प्रेक्षा' (स्त्री) के नाच, देखना (+ नाच देखना), बुद्धि, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'भिक्षा' (स्त्री) के सेवा, याचना, वेतन, भिक्षा में मिला हुआ पदार्थ, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'त्विट्' (= त्विष स्त्री) के शोभा, वचन, तेज, ३ अर्थ हैं ॥

१० यहाँसे आगे सब प्रकारान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

११ 'न्यक्षम्' (त्रि) के साकत्य, नीच, २ अर्थ 'न्यक्षः' (पु) का परशुराम, १ अर्थ है ।

- १ प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो २ रुक्षस्त्वप्रेषणप्रविक्रमे ।
- ३ 'व्याजसंख्यामभ्येषु लक्षं ४ घोषो रववज्रो (८८)
- ५ कपिशोर्षं भित्तिशृङ्गेऽनुतर्षश्चाकः सुरा (८९)
- ७ दोषो वातादिके दोषा राशौ ८ दक्षोऽपि कुक्कुटे (९०)
- ९ गुण्डामभागे गण्डूषो द्वयोश्च मुखपूरणे (९१)

इति शान्ताः शब्दाः ।

अथ शान्ताः शब्दाः ।

१० रविश्वेतच्छदौ हंसौ—

- १ 'अध्यक्षः' (त्रि) के प्रत्यक्ष, अधिकारी (मालिक,) २ अर्थ हैं ॥
- २ 'रुक्षः' (त्रि) के प्रेसरहित, रुखा, २ अर्थ हैं ॥
- ३ ['लक्षम्' (न) के व्याज, लाख संख्या, निशाना, ३ अर्थ हैं] ॥
- ४ ['घोषः' (पु) के शब्द (हल्ला, आवाज), अक्षरोंके रहनेका स्थान, २ अर्थ हैं] ॥
- ५ ['कपिशोर्षम्' (न) के दिवालका ऊररी भाग, शृङ्ग, अर्थ हैं] ॥
- ६ ['अनुतर्षः' (पु) के मदिरा पीनेका प्याला, मदिरा, अभिलाषा, वृष्णा, ४ अर्थ हैं] ॥
- ७ ['दोषः' (पु) के वात आदि (पित्त, कफ) तीन दोष, दोष (अपराध), २ अर्थ और 'दोषा' (अव्य०) का रात, १ अर्थ है] ॥
- ८ ['दक्षः' (पु) का सुर्गा, १ अर्थ और 'दक्षः' (त्रि) का चतुर, १ अर्थ है ॥
- ९ ['गण्डूषः' (पु) के हाथीके सूँघका आगेवाला भाग, १ अर्थ और 'गण्डूषः' (पु स्त्री) का कुल्ला (मुखमें पानी भरना), १ अर्थ है] ॥

इति शान्ताः शब्दाः ।

अथ शान्ताः शब्दाः ।

१० 'हंसः' (पु) के सूर्य, हंस पत्नी, योगि-भेद, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'व्याज'....'मुखपूरणे' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यमानः प्रकृतो-
पयोगितया मूले क्षेपकत्वेन स्थापितः ॥

२. तदुक्तम्—'कुटीरको बहुदको हंसश्चैव तृतीयकः ।

चतुर्थो परमो हंसो योग्यः पश्चात्स उत्तमः' ॥ इति शारीरः ॥

—१ सूर्यवह्नी विभावसु ॥ २२६ ॥

- २ वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ ३ सारङ्गाश्च दिवौकसः ।
 ४ शृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ॥ २२७ ॥
 ५ पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ।
 ६ देवभेदेऽनले रश्मौ वसु रत्ने धने वसु ॥ २२८ ॥
 ७ विष्णौ च वेधाऽस्त्री त्वाशीर्हिंताशंसादिवंपृथोः ।
 ९ लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये १० हिंसा चौर्यादिकर्म च ॥ २२९ ॥

१ 'विभावसुः' (पु) के सूर्य, अग्नि, २ अर्थ हैं ॥

२ 'वत्सः' (पु) के गौका बछ्वा या पुत्र आदि (बच्चा), वर्ष, २ अर्थ और 'वत्सम्' (न) का छाती, १ अर्थ है ॥

३ 'दिवौकसः' (= दिवौकस् पु) के चातक पक्षी, देवता, २ अर्थ हैं ॥

४ 'रसः' (पु) के शृङ्गार आदि (१।७।१७ में उक्त) द्रव रस, विष, वीर्य, कसाव आदि (१।५।९ में उक्त) छ रस, राग (जैसे—रसिकस्त-
 रणः,), पिचटना, पारा, जल, स्वाद, ९ अर्थ हैं ॥

५ 'उत्तंसः, अवतंसः' (२ पु) के कानका भूषण, भूषणमात्र, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वसुः' (पु) के धर आदि आठ वसु (१ धर, २ ध्रुव, ३ सोम, ४ अहन् (दिन), ५ वायु, ६ अग्नि, ७ प्रयूष, ८ प्रभास; ये आठ वसु हैं), अग्नि, किरण, राजा, जोती (जुवाठमें बंधी हुई बैल के गले में बांधने की रस्सी), ५ अर्थ; 'वसु' (न) के रत्न, धन, वृद्धि औषध, स्वर्ण, ४ अर्थ और 'वसुः' (त्रि) का मधुर, १ अर्थ है ॥

७ 'वेधाः' (= वेधस् पु) के विष्णु, ब्रह्मा, पण्डित. ३ अर्थ हैं ॥

८ 'आशीः' (= आशिस् स्त्री) के आशीर्वाद, सर्पका दाँत, २ अर्थ हैं ॥

९ 'लालसा' (स्त्री) के प्रार्थना, उत्सुकता, अधिक चाह, याचना, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'हिंसा' (स्त्री) के चोरी आदि (बांधना, डराना) बुरा काम, मारना, २ अर्थ हैं ॥

१. उदुक्कम् — 'धरो ध्रुवश्च सोमश्च अदृश्येवानिकोऽनकः ।

प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टाविति स्मृताः' ॥ १ ॥

इति मा० भा० ६६०—' इति वाचस्पत्य० पु० ४८६३ ॥

- १ प्रसूरश्वापि २ भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते ।
- ३ ज्वालाभासौ न पुंस्यचिञ्ज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु ॥ २३० ॥
- ५ पापपराधयोरागः ६ खगबाल्यादिभोर्वयः ।
- ७ तेजः पुरीषयोर्वर्चो ८ महस्तूरसवतेजसोः ॥ २३१ ॥
- ९ रजो गुणे च स्त्रीपुष्पेऽपरादौ ध्वाते गुणे तमः ।
- ११ छन्दः पद्येऽभिलाषे च १२ तपः कृच्छ्रादिकर्म च ॥ २३२ ॥
- १३ सहो बलं सहा मार्गो—

- १ 'प्रसूः' (स्त्री) के घोड़ी, माता, केला, लता, ४ अर्थ हैं ॥
- २ 'रोदस्यौ' (= रोदसी स्त्री), 'रोदसी' (= रोदस् न । २ नि० द्विव) का, जमीन-आसमान, १ अर्थ है ॥
- ३ 'अचिः' (= अचिस् स्त्री न) के ज्वाला, किरण या कान्ति, २ अर्थ हैं ॥
- ४ 'ज्योतिः' (= ज्योतिस् न) के नक्षत्र, प्रकाश, दृष्टि, ज्योतिष शास्त्र, ४ अर्थ हैं ॥
- ५ 'आगः' (= आगस् न) के पाप, अपराध, २ अर्थ हैं ॥
- ६ 'वयः' (= वयस् न) के चिड़िया, अवस्था (बाण्य, यौवन, चार्द्धक्य आदि), २ अर्थ हैं ॥
- ७ 'वर्चः' (॥ वर्चस् न) के तेज, विट् (मैला, पालाना), रूप, ३ अर्थ हैं ॥
- ८ 'महः' (= महस् न । + महः = मह पु) के उत्सव, तेज, २ अर्थ हैं ॥
- ९ 'रजः' (= रजस् न । + रजः = रज पु) के रजोगुण, स्त्रीका मासिक आतंव, २ अर्थ हैं ॥
- १० 'तमाः' (= तमस् पु) का राहु ग्रह, १ अर्थ और 'तमाः' (तमस् न) के अन्धकार, तमोगुण, शोक (मोह, मूर्च्छा), ३ अर्थ हैं ॥
- ११ 'छन्दः' (= छन्दस् न), पद्य (श्लोक आदि), अभिलाषा, वेद, स्वच्छन्दता, ४ अर्थ हैं ॥
- १२ 'तपः' (= तपस् न) का तपस्या (कृच्छ्र, चान्द्रायण आदि कठिनव्रत), तपोलोक, धर्म, ३ अर्थ 'तपाः' (पु) के माघ महीना, क्षिशिर ऋतु, २ अर्थ हैं ॥
- १३ 'सहः' (= सहस् न) के बल, ज्योतिष्, २ अर्थ और 'सहाः' (= सहस् पु) के मार्ग (अगहन) महीना, हेमन्त ऋतु, २ अर्थ हैं ॥

—१ नभः खं श्रावणो नभाः ।

२ ओकः सन्नाश्रयश्चौकाः ३ पयः क्षीरं पयोऽम्बु च ॥ २३३ ॥

४ ओजो दीप्तौ बले ५ स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये ।

६ तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेऽप्यऽतस्त्रिषु ॥ २३४ ॥

८ विद्वान्विदंश्च बीभत्सो हिंस्रोऽप्यऽतिशये त्वमी ।

वृद्धप्रशस्ययोऽर्ज्यायान्—

१ 'नभः' (= नभस् न) का आकाश, १ अर्थ और 'नभाः' (= नभस् पु) के श्रावण महीना, मेघ (बादल), पिकदान (उगलदान), नाक, मृणालसूत्र, वर्षा ऋतु, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'ओकः' (= ओकस् न + ओकः = ओक पु) का मकान, १ अर्थ और 'ओकाः' (= ओकस् पु) का आश्रयमात्र, १ अर्थ है ॥

३ 'पयः' (= पयस् न) के दूध, पानी, २ अर्थ हैं ॥

४ 'ओजः' (= ओकस् न) के दीप्ति, बल, प्रकाश (उजाला), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'स्रोतः' (= स्रोतस् न) के इन्द्रिय, स्रोत (नदी आदिका बहाव), २ अर्थ हैं ॥

६ 'तेजः' (= तेजस् न) के प्रभाव, दीप्ति, बल, वीर्य (मनुष्यका शरीर-स्थ धातु), 'असहन, ५ अर्थ हैं ॥

७ यहाँसे आगे सब सकारान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

८ 'विद्वान्' (= विद्वस् त्रि) के पण्डित, आत्मज्ञानी, प्राज्ञ, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'बीभत्सः' (त्रि) के हिंसक या क्रूर, भयङ्कर (डरावना), २ अर्थ और 'बीभत्सः' (पु) के बीभत्स रस ('यह पृ० ७३ में उक्त शृङ्गार आदि मधुररसों के अन्तर्गत है'), १ अर्थ है ॥

१० 'उर्ज्यायान्' (= उर्जायस् त्रि) के अत्यन्त बूढ़ा, बहुत प्रशंसा करने योग्य, २ अर्थ हैं ॥

१. तदुक्तं साहित्यदर्पणे विश्वनाथेन—

'अधिकेपापमानादैः प्रयुक्तस्य परेण यत् ।

प्राणात्प्रेक्ष्यसद्वृत्तं तत्तेजः समुदाहृतम् ॥ १ ॥

इति सा० ६० ३ । ९७ ॥

—१ कनीयांस्तु युवाल्पयोः ॥ २३५ ॥

२ वरीयांस्तूरुवरयोः ३ साधीयान्साधुवाढयोः ।

इति सान्ताः शब्दाः ।

अथ हान्ताः शब्दाः ।

४ दलेऽपि बर्हं ५ निर्वन्धोपशयाकादयो ग्रहाः ॥ २३६ ॥

६ द्वार्यापीडे काथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके ।

७ तुगासूत्रेऽश्वादिरश्मौ ग्रहाहः ग्रग्रहोऽपि च ॥ २३७ ॥

८ पत्नीपरिजनादानमूक्तशापाः परिग्रहाः ।

९ दारेषु च गृहाः—

१ 'कनीयान्' (= कनीयस् त्रि) के बहुत युवा, बहुत छाटा, २ अर्थ हैं ॥

२ 'वरीयान्' (= वरीयस् त्रि) के बहुत बड़ा, बहुत श्रेष्ठ, १ अर्थ हैं ॥

३ 'साधीयान्' (= साधीयस् त्रि) के बहुत साधु (अच्छा), बहुत ज्यादा, २ अर्थ हैं ॥

इति सान्ताः शब्दाः ।

अथ हान्ताः शब्दाः ।

४ 'बर्हम्' (न पु) के पत्ता, मोरका पंख, १ अर्थ हैं ॥

५ 'ग्रहः' (पु) के ग्रहण करना, सूर्य-चन्द्र-ग्रहण, सूर्य आदि ग्रह (सूर्य-चन्द्र, मङ्गल, बुध, वृहस्पति, शुक, शनि, राहु, केतु ये नव 'ग्रह' हैं), ३ अर्थ हैं ॥

६ 'निर्व्यूहः' (पु) के द्वार, शिखा या चोटीमें बांधनेकी माला, काढ़ेका रस, खूंटी, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'प्रग्रहः, प्रमाहः' (२ पु) के तज़ी (तराजूके ढण्ढीकी रस्सी), चौड़े आदिका वागडोर या लगाम, २ अर्थ हैं ॥

८ 'परिग्रहः' (पु) के पत्नी (स्त्री), परिजन, लेना, वृत्तादिकी जड़, शाप या शपथ, राहुग्रस्त सूर्य, ६ अर्थ हैं ॥

९ 'गृहाः' (नि० पु० व० व०) का स्त्री, १ अर्थ और 'गृहम्' (न पु) का घर, १ अर्थ है ॥

१. तदुक्तम्—'सूर्यश्चन्द्रो मङ्गलश्च बुधश्चापि वृहस्पतिः ।

शुकः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति नव ग्रहाः ॥ १ ॥ इति वाचस्प० पृ० २७५५ ॥

—१ श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ॥ २३८ ॥

२ व्यूहो वृन्देऽप्यश्चिर्वृन्देऽप्यङ्गनीन्द्रकस्तिमोपहाः ।

५ परिच्छदे नृपाह्वेऽर्थे परिवर्हः—

इति हान्ताः शब्दाः ।

अथाव्ययाः शब्दाः ।

—६ अव्ययाः परे ॥ २३९ ॥

७ आङ्गोषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ।

८ आ प्रगृह्यः स्मृतौ दाक्येऽस्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ॥ २४० ॥

१ 'आरोहः' (पु) के आङ्गी कमर या चूतड़, पहाड़ आदिपर चढ़ना, पेड़ आदिकी ऊँचाई, २ अर्थ हैं ॥

२ 'व्यूहः' (पु) के समूह, सेनाकी स्थिति विशेष, तर्क, वनावट (रचना), ४ अर्थ हैं ॥

३ 'अहिः' (पु) के वृत्रासुर, साँप, १ अर्थ हैं ॥

४ 'तमोपहः' (पु) के अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, जिन, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'परिवर्हः' (पु) के सामग्री, राजाका छत्र-चामर आदि विल्ह, धन, ३ अर्थ हैं ॥
इति हान्ताः शब्दाः ।

अथाव्ययाः शब्दाः ।

६ यहाँसे आगे नानार्थवर्गके अन्ततक सब शब्द अव्यय हैं ॥

७ 'आङ्' के थोड़ा, अभिव्याप्ति (व्याप्ति), सीमा (हद), धातु-योगसे सम्पन्न अर्थ, ४ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदाहरण—। अपिज्ञकः, २ आस्व-गात्, ३ आसमुद्रं चित्तीशानाम् (रघु० १।५), ४ आक्रामति, ...') ॥

८ 'आ' (इसकी प्रगृह्यसंज्ञा होती है) के स्मरण, वाक्य, २ अर्थ हैं ।
('क्रमशः उदा०—१ आ एवं तु मन्यसे, २ आ एवं किल तत्, ...') ॥

९ 'आ' के कोप, पीडा, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदाहरण—१ आः पाप ! एषम् अधुनापि प्रजल्पसि, २ आः क्षीतम्, ...') ॥

१. 'निपात एकाजनाङ् (पा० सू० १।१।१४) इति सूत्रेणाङ्मित्रस्य आ' इत्यस्यैव प्रगृह्य संज्ञा विधीयते । सत्यां च तस्यां वक्ष्यमाणटीकोकोदाहरणद्वये 'वृद्धिरेचि' (पा० सू० ६।१।८८) इति सूत्रेण वृद्धिर्न भवति, किन्तु 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' (पा० सू० ६।१।१२५) इति वृद्धिर्मात्र एवेति प्रगृह्यसंज्ञाककमित्यवश्यम् ॥

- १ पापकुत्सेषदर्थं कु २ धिक् निर्भर्त्सननिन्दयोः ।
 ३ चान्वाचयसमाहारेतरतरसमुच्चये ॥ २४१ ॥
 ४ स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादौ ५ प्रकर्षं लङ्घनेऽप्यति ।
 ६ स्वित्प्रश्ने च वितर्कं च ७ तु स्याद्भेदेऽवधारणे ॥ २४२ ॥

१ 'कु' के पाप, कुत्सा (निन्दा), थोड़ा, ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—
 १ कुकृत्यम् , कुकर्म, २ कुभार्योऽयम् , ३ कोष्णम्') ॥

२ 'धिक्' के डराना निन्दा, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ धिक्
 स्वां शासनाहं विस्मृतार्थम् , धिक् तार्किकान् , २ धिग् वारवधूगामिनं
 स्वाम् ,') ॥

३ 'च' के अन्वाचय (जहां दो कामोंमें-से एक काम अप्रधान हो वह),
 समाहार (समूह) इतरेतरयोग (एकाधिकका आपसमें मिल जाना), समु-
 च्चय (परस्पर निरपेक्ष कलाओंका आपसमें अन्वय होना), विनियोग, तुल्य-
 योगिता, कारण, ७ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ भिचामत गाञ्जानय, २ पाणी
 च पादौ च पाणिपादम् , संज्ञा च परिभाषा च संज्ञापरिभाषम् , ३ धवश्च खदिश्च
 धवखदिशौ हरिश्च हरश्च हरिहरौ, ४ ईश्वरं च गुरुं च भजस्व, पठति पचति च
 मैत्रः, ५ अहं च त्वं च वृत्रहन्संयुज्याव सनिभ्य आ (निरु० १।४।११), ६
 ध्यातश्चोपस्थितश्च, ७ ग्रामश्च गन्तव्यः आतपश्च अर्थात् आतपात्कथं ग्रामो
 गम्यते,') ॥

४ 'स्वस्ति' के आशीर्वाद, कल्याण, पुण्य, मङ्गल, ४ अर्थ हैं । ('क्रमशः
 उदा०—१ स्वति भवद्भयः, २ स्वस्ति प्रजाभ्यः, स्वस्ति गच्छ, ३ स्वस्तिमान्
 स्वर्गमाप्नोति, स्वस्ति काममिदं तव, ४ स्वस्ति श्रीकुसुमपुरात्-(सुदा०), ...' ॥

५ 'अति' के प्रकर्ष (अतिशय), लङ्घन, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—
 १ अत्युत्तमं भोजनम् , २ मर्यादामतिक्रामति-बुष्टः,') ॥

६ 'स्वित्' के प्रश्न, वितर्क, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ किं
 स्वित्मङ्गलमस्ति तावकगृहे, २ अथः स्वित्दासीकुपरि स्वित्दासीत् ,') ॥

७ 'तु' के भेद (कमी-वैशी), निश्चय, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—
 १ क्षीरान्मांसं तु पुष्टिकृत् , २ भीमस्तु पाण्डवानां रौद्रः, भोजनं तु रुचिप्रियम्
') ॥

- १ सकृत् सहैकवारे चाप्यारारदूरसमीपयोः ।
 ३ प्रतीच्यां चरमे पश्चाद्दुताप्यर्थविकल्पयोः ॥ २४३ ॥
 ४ पुनः सहाय्ययोः शश्वत् ६ साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ।
 ७ खेदानुकम्पासतोषविस्मयामन्त्रणे 'वत' ॥ २४४ ॥

१ 'सकृत्' के साथ, एक बार सर्वदा, ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—
 १ 'सकृद्गच्छन्ति बालकाः' सह गच्छन्तीत्यर्थः, २ सकृदप्यथनाद्विस्मयते पाठः,
 ३ 'सकृद्युवानो गीर्वाणा' देवाः सदा युवानो भवन्तीत्यर्थः,) ॥

२ 'आरात्' के दूर, समीप, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ आराद्
 दुर्जनसंसर्गस्याज्यः श्रेयोऽभिलाषुकैः, २ 'सखायं स्थापयेदारात्' समीपे स्थाप-
 येदित्यर्थः,) ॥

३ 'पश्चात्' के पश्चिम दिशा, अन्तिम, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—
 १ पश्चादस्तमितो रविः, पश्चादस्तादिः' पश्चिम इत्यर्थः, पश्चाद्गच्छति) ॥

४ 'उत' के समुच्चय, प्रश्न, विकल्प, वितर्क, ४ अर्थ हैं । ('क्रमशः
 उदा०—१ उत भीम उतार्जुनः, २ उत दण्डः पतिष्यति, ३ उत पर्वतं भिन्नात्,
 उत त्रुटयेद्वज्रः, ४ स्थाणुरत पुरुषः,) ॥

५ 'शश्वत्' के वारम्बार, साथ, निरर्थ (सदा), ३ अर्थ हैं । (क्रमशः
 उदा०—१ 'शश्वद्गच्छति' अनेकवारं गच्छतीत्यर्थः, २ शश्वद्भुजते, ३ शश्वतं
 वैरम्,) ॥

६ 'साक्षात्' के प्रत्यक्ष (सामने), तुल्य, २ अर्थ हैं । (क्रमशः
 उदा०—१ साक्षात्परयति परमात्मानं योगीश्वरः, २ 'इयं साक्षात्त्वमोः' लक्ष्मीतु-
 ल्येत्यर्थः,) ॥

७ 'वत' (+ वत) के खेद, अनुकम्पा (दया), सन्तोष, विस्मय,
 आमन्त्रण, ५ अर्थ हैं । (क्रमशः उदा०—१ अहो वत महद्दुःखम्, २ वत
 निःस्वोऽसि त्वम्, ३ वत पतिराळिङ्गितः, वतं प्राप्ता सीता, अहो वतासि
 स्पृहणीयवीर्यः (कु० सं० ३।२०), अहो वतायं ध्रुव आप देवम्, वत वित-
 रत तोयं तोयवाहा नितान्तरम्, एहि वत सौम्य,) ॥

- १ हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः ।
- २ प्रति प्रतिनिधौ वीप्सा लक्षणादौ प्रयोगतः ॥ २४५ ॥
- ३ इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु ।
- ४ प्राच्यां पुरस्तात् प्रथमे पुरार्थेऽप्रत इत्यपि ॥ २४६ ॥
- ५ यावत्तावत् साकस्येऽवधौ मामेऽवधारणे ।

१ 'हन्त' के हर्ष, दया, वाक्यारम्भ, विषाद, ४ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ हन्त जीवामो वयम्, २ हन्त दीनो रक्षणीयः, ३ हन्त ते कथयिष्यामि (गीता १०।१२), ४ हन्त आत्मजातारेः प्रथमेन त्वयारिणा (शिशु० वध २।१०१),) ॥

२ 'प्रति' प्रतिनिधि, वीप्सा (व्याप्त करनेकी इच्छा), लक्षण, 'आदि' से—इत्थंभूताख्यान, भाग, प्रतिदान, ६ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अभिमन्युरर्जुनं प्रति, अभिमन्युं प्रति परीक्षित्, २ तीर्थं तीर्थं प्रति याति, वृत्तं वृत्तं प्रति विद्योतते विद्युत्, ३ वृत्तं प्रति विद्योतते विद्युत्, ४ साधु देवदत्तो मातरं प्रति, ५ यदत्र मां प्रति सोऽज्ञो दीयताम्, ६ माषानस्मै तिलेभ्यः प्रति प्रयच्छति,) ॥

३ 'इति' के हेतु, प्रकरण, प्रकाश (+ प्रकर्ष), 'आदि' से—इस तरह, समाप्ति, विवक्षा, नियम, स्वरूप, ७ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ हन्तीति पलायते, २ गौरश्चो हस्तीति जातिः, ३ 'इति पाणिनिः' पाणिनिर्लोकं प्रकाशत इत्यर्थः, ४ क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः (शिशु० वध १।३), ५ धर्ममाचरेदिति, अत्र इति (पा० सू० ८।३।६८), ६ नवस्यास्यस्मिन्निति मनुप् (पा० सू० ५।१।९४), ७ वृद्धिरित्येव वा सा वृद्धिः,) ॥

४ 'पुरस्तात्' के पूर्व विक्षा, पहले (प्रथम), बीता हुआ (भूतकाल), पहले (आगे), ४ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ पुरस्ताद् द्वारम् पूर्वस्यां दिशीत्यर्थः, २ पुरस्ताद्भुक्ते प्रथमं भुक्त् इत्यर्थः, ३ पुरस्ताद्गामोऽभूत्, ४ पित्रोः पुरस्तात् क्रीडति शिशुः,) ॥

५ 'यावत्, तावत्' के साकस्य (जितना, उतना), अवधि (हद), प्रमाण, अवधारण (निश्चय), ४ अर्थ हैं । ('दोनोंके क्रमशः उदा०—१ मम

१ मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येऽथो अथ ॥ २४७ ॥

२ वृथा निरर्थकाविध्योर्नानाऽनेकोभयार्थयोः ।

४ नु पृच्छायां विकल्पे च ५ पश्चात्सादृश्ययोरनु ॥ २४८ ॥

यावत्कार्यमस्ति तावत्कुरु, यावदध्यापितं तावदपठितम्, २ यावद्गन्ता तावत्तिष्ठ, ३ यावत्सुवर्णं तावद्वज्रतम्, यावदत्तं तावद्भुक्तम्, ४ यावदमन्त्रं ब्राह्मणानामामन्त्रयस्व,) ॥

१ 'अथो, अथ' के^१ मङ्गल, अनन्तर (बाद), आरम्भ, प्रश्न, कार्त्स्न्य, अधिकार, प्रतिज्ञा, अन्वादेश (एक बार कहे हुएको फिर कहना), समुच्चय, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अथ परस्मैपदानि, अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (ब्र० सू० १।१।१।१), २ स्नानं कृत्वाऽथ भुञ्जीत, ३ अथ शब्दानुशासनम् पात० भा० १।१ आहि० १ पस्प०), ४ अथ वक्तुं समर्थस्त्वम्, ५ अथ कतून् ब्रूमः, ६ अथ स्नानविधिः, ७ गौडो भवानथेति ब्रूमः, ८ अथो इमं वेदमध्यापय अथो एनं छन्दोऽपि, ९ अथो खस्वाहुः, भोमोऽथाहुर्नः,) ॥

२ 'वृथा' के द्वयर्थ (निष्फल), अविधि (विधिसे हीन), २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ वृथा दुग्धोऽनङ्वान्, २ प्रतिभाष्यं वृथा दानमाचिकं सौरिकं च यत् (मनुः ८।१।५९),) ॥

३ 'नाना' के अनेक (बहुत), उभय, विना, ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ नानाविधाः पुरुषाः, २ नानाविधं न सज्जेत, नानापञ्चावमर्शः संशयः, ३ 'नाना नारीनिष्फला लोकयात्रा' नारीर्विना लोकयात्रा निष्फला भवतीत्यर्थः,) ॥

४ 'नु' के प्रश्न, विकल्प, वितर्क, ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ को नु धावति, को नु भवान्, २ भीमो नु फण्णुनो नु योद्धा, देवदत्तो नु यज्ञदत्तो नु पण्डितः, ३ स्थाणुर्नु पुरुषो नु, अहिर्नु रज्जुर्नु,) ॥

५ 'अनु' के पश्चात् (बाद), सादृश्य (समानता), लक्षण, तत्त्वाख्यान, भाग, वीप्सा, लम्बाई, ७ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ राममनुगच्छति लक्ष्मणः, २ पितरमनुकरोति बालः, ३ वृद्धमनुधीतते, ४ साधु देवदत्तो मातरमनु, ५ यद्वन्न मामनुस्यात्तद्दीयताम्, ६ वृद्धं वृद्धमनुसिञ्चति, ७ अनुगङ्गं काशी,) ॥

१. 'ओङ्कारश्चाथश्चक्षुश्च द्रावेतौ ब्रह्मणः पुरा । कण्ठंमिरा विनिर्यतौ तस्यान्वाङ्गिकिवाबुभौ' ॥ ११ ॥ इत्यभिप्रेक्ष्योक्त्या 'अथ' शब्दस्य माङ्गलिकत्वम् ॥

- १ प्रश्नावधारणानुज्ञाऽनुनयामन्त्रणे ननु ।
- २ गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्वपि ॥ २४९ ॥
- ३ उपमायां विकल्पे वा ४ सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ।
- ५ अमा सह समीपे च ६ कं वारिणि च मूर्धनि ॥ २५० ॥

१ 'ननु' के प्रश्न, अवधारण, अनुज्ञा (आज्ञा), आमन्त्रण, वाक्यारम्भ, आज्ञेय प्रत्युक्ति (प्रत्युत्तर, जवाब), ७ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ ननु पठति छात्रः, २ नन्वद्य गच्छामो वयम्, ३ नन्वादिश, ४ ननु चण्डि प्रसीद मे, ५ नन्वपोहः प्रसूयते, ६ ननु किमर्थमागतस्त्वम्, अकार्षीः गृहकार्यं ? ननु करोमि भोः, पठसि पुस्तकम् ? ननु पठामि भोः,.....') ॥

२ 'अपि' के निन्दा, समूह (भी), प्रश्न, शङ्का, संभावना, हृष्टपरन, आज्ञेय, युक्त पदार्थ (वस्तु), ८ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अपि सिञ्चेत्पलाण्डुम्, २ स्त्रियं पालय पुत्रमपि, रामो वनं याति लक्ष्मणोऽपि, ३ अपि, गच्छसि गृहम्?, अपि जानामि किञ्चित्स्वम् ?, ४ अपि प्रसादेद्गुह्यो नृपतिः अपि चौरोऽयम् ५ पर्वतमपि शिरसा भिन्ध्यात्, ६ 'अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं जलान्याः हनानविधिचमणि ते । अपि स्वशक्या तपसे प्रवर्तसे—' (कु० सं० ५।३३), ७ अपि गृहं यां चेदम्, ८ सर्पिषोऽपि स्यात्,.....') ॥

३ 'वा' के उपमा, विकल्प, समूह, ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ भीमोऽन्तको वा समरे गदापागिरदृश्यत, सर्पो वा क्रुद्धः' सर्प इव क्रुद्धः' इत्यर्थः, २ यवैर्ब्रह्मिभिर्वा यजेत, ३ 'सा वा शम्भोस्तदाया वा मूर्तिर्जलमयो मम (कु० सं० २ । ६०) 'न तृतायामूर्तिरित्यर्थः, वायुर्वाद्य मेहराद्य दहनो वा,...') ॥

४ 'सामि' के आधा निन्दित, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ सामि संमीलिताक्षी, २ सामि कृतमकृतं स्यात्, सामिकृतमकराणकारि,.....') ॥

५ 'अमा' के साथ, पास, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ 'हृत्रेणाम् भुङ्क्ते' सहेत्यर्थः, २ अमा भावोऽमात्यः,.....') ॥

६ 'कम्' के पानी, शिर (मस्तक), मुख, ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ कलं कमलम्, २ कक्षाः केशाः, ३ कुंयुः,.....') ॥

- १ इवेत्थमर्थयोरेवं २ नूनं तर्कैऽर्थनिश्चये ।
 ३ तृष्णीमर्थे सुखे जोषं ५ किं पृच्छायां जुगुप्सने ॥ २५१ ॥
 ५ नाम प्राकाश-संभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।
 ६ अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवर्णनस्यकम् ॥ २५२ ॥

१ 'एवम्' के इवार्थे (सदृश), इत्यं तरह, उपदेशादे, निर्देश, निश्चय, स्वीकार, ६ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अक्षिरेवं द्विजोऽक्षिरिवेत्यर्थः, २ एवं चादिनि देवर्षौ (कु० सं० ६।८४), ३ एवमर्धाब्द, ४ एवं तावत्, ५ एवमेतत्, ६ एवं कुर्मः,') ॥

२ 'नूनम्' के तर्क, अर्थका निश्चय, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ नूनं शरत्फुल्लं हि काशाः, नूनमयतियषवनां प्रियः, २ जुष्टेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने, नूनं हन्तास्मि रावणम्,') ॥

३ 'जोषम्' के मौन (जुष रहना), सुख, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ 'जोषमास्व' मौनमास्वेत्यर्थः, २ जोषमास्ते जितेन्द्रियः, जोषमासीत वर्णसु'') ॥

४ 'किम्' के प्रश्न, निन्दा, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ किंकरोषि ?, किं गतोऽसौ ?, २ स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं, हिताच्च यः संश्रजुते स किंप्रभुः (किरा० १ । ५),') ॥

५ 'नाम' (= नामन्), के प्राकाश्य (प्रकट, नाम, संज्ञा), संभावनाके बोध्य, क्रोध, द्वेषपूर्वक स्वीकार करना, निन्दा, झूठा, विस्मय, ७ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ हिमालयो नाम नगाधिराजः (कु० सं० १ । १), २ कथं भविष्यति संगरो नाम, ३ ममापि नाम रावणस्य नरवानरैर्मृत्युः, ५ शत्रोः सकाशाद् गृह्णाति नाम, एवमस्तु नाम, ५ को नामायां प्रलपति मे विशतः सभा-याम्, को नामायां सवितुरुदयः, ६ दृष्टेऽधरे रोदिति नाम तन्वी, ७ अन्धो नाम गिरिमारोहति,') ॥

६ 'अलम्' के भूषण, पर्याप्त (काफी), शक्ति, वारण (मना करना), स्वार्थ, ५ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अलङ्कृतां कन्यां प्रयच्छेत्, २ 'अल-मस्यस्य चनं' बह्मित्यर्थः, ३ अलं हरिः' समर्थ इत्यर्थः, अलं मञ्जो मञ्जाय, ४ अलमतिप्रसङ्गेन, अलं महीपाक तव अमेज—(रघु० २।१४),') ॥

- १ हुं वितर्कं परिप्रश्ने २ समयाऽन्तिकमध्ययोः ।
- ३ पुनरप्रथमे भेदे ४ निर्निश्चयनिषेधयोः ॥ २५३ ॥
- ५ स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ।
- ६ ऊर्युरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ॥ २५४ ॥
- ७ स्वर्गे परे च लोके भवः—

१ 'हुम्' के वितर्क, प्रश्न, भय, भर्त्सन (डराना), अनिच्छा, ५ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ हुं पयो हुं मृगतृष्णा, चैत्रो हुं मैत्रो हुम् , २ हुं देवदत्तोऽयम् हुं तस्य त्वं सुहृत् , ३ हुं राक्षसोऽयम् , ४ हुं निर्लेजः , ५ हुं हुं सुखमाम् ,') ॥

२ 'समया' के समीप, बीच, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ रामं समयाऽस्ते लक्ष्मण, समया ग्रामं नदी, २ 'ग्रामं समयाऽस्ते' ग्राममध्य इत्यर्थः, 'समया शैलयोग्रामः' शैलयोर्मध्य इत्यर्थः,') ॥

३ 'पुनः' (= पुनर्) के फिर, भेद (विशेष), २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ पुनरागतः, २ किं पुनर्ब्राह्मणः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा (गीता १।३३),')

४ 'निः' (= निर्) के निश्चय, निषेध, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ निष्पन्नं कार्यम् , निरुक्तम् , २ निर्धनो वणिक, निर्मर्यादः,') ॥

५ 'पुरा' के प्रबन्ध, बहुत दिन पहले, आनेवाला (आगामी) निकट समय, ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ 'पुराधीयते' निरन्तरमपाठीदित्यर्थः, २ पुरापि न नव पुराणम् , पुरातनम् , ३ 'गच्छ पुरा देवो वर्षति' समनन्तरं वर्षिष्यतीत्यर्थः,') ॥

६ 'ऊररी, ऊरी उररी' ३ के विस्तार, स्वीकार, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ 'ऊररीकृत्य, ऊरीकृत्य, उररीकृत्य वा पठे' विस्तार्येत्यर्थः, २ 'ऊररी कृत्य ऊरीकृत्य उररीकृत्य वाऽङ्गां गच्छति' स्वीकृत्य गच्छीत्यर्थः,') ॥

७ 'स्वः' (= स्वर्) के स्वर्ग, परलोक, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—स्वर्लोकलोकेतरदुर्लभानि, स्वर्भोगमत्रापि सृजन्त्यमर्त्याः, स्वर्णदीस्वर्णपद्मिन्याः— (नैष० च० क्रमशः ३।१६, ३।२१, २०।३९), २ स्वर्गतस्य जनस्य पारलौकिकं कुर्यात् , स्वर्गतस्य क्रिया कार्या पुत्रैः परमभक्तितः,') ।

—१ वार्तासंभाव्ययोः किल ।

२ निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासाऽनुनये खलु ॥ २५५ ॥

३ समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः ।

४ नामप्राकाश्ययोः प्रादुर्मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ॥ २५६ ॥

१ 'किल' के वार्ता, सम्भावनाके योग्य, हेतु, झूठ (असत्य), अरुचि,
 २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ जवान कंसं किल वासुदेवः, २ अर्जुनः किल
 निजेष्यते कुरुन्, ३ स किल कथिरेवमुक्तवान्, ४ गोत्रस्त्रलितं किलाश्रुतं कृत्वा,
 ५ त्वं किल योत्स्यसे,') ॥

२ 'खलु' के निषेध, वाक्यालङ्कार, जिज्ञासा (जानने की इच्छा), अनुनय
 ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ खलु रुदित्वा, खलु कृत्वा, २ एतत्खल्वबाहुः,
 ३ सखल्वधीते शब्दशास्त्रम्, ४ न खलु न खलु मुग्धे साहसं कार्यमेतत् (नागा०
 ना० २१०),') ॥

३ 'अभितः' (= अभितस्) के समीप, दोनों तरफ, शीघ्र, साकल्य, सामने,
 ५ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ वाराणसामभितो गङ्गा, अभितो ग्रामं वसति'
 समीप इत्यर्थः, २ अभितः कुरु चामरौ, ३ अभितः पठ, अभितो गच्छ' शीघ्र-
 मित्यर्थः, ४ 'व्यामोत्यभितो रजः' सर्वत इत्यर्थः, ५ आपतन्तमभितोऽरिमपश्यत्, ...') ।

४ 'प्रादुः' (= प्रादुस्) के नाम, प्रकट, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—
 १ विष्णोर्दश प्रादुर्भावाः दश नामानीत्यर्थः, २ प्रादुरासीद् बुद्धिर्वादिनः, ...') ।

५ 'मिथः' (= मिथस्) के अन्योन्य (परस्पर, आपस), एकान्त,
 २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ मिथः प्रहारं कुर्वतः, वसिष्ठकौण्डिन्यमैत्रा-
 वरुणानां मिथो न विवाहः, २ मिथो मन्त्रयते, ...') ॥

१. पुराणसमुच्चये दशवतारा उक्ताः—

'मत्स्योभूदधुतमुग्दिने मधुसिन्तं कूर्मो विधौ माधवे
 वाराहो गिरिजासुते नभसि यद् भूते सिन्ते माधवे ।

सिंहो भाद्रपदे सिन्ते हरिनिधौ श्रान्दामनो माधवे
 रामो गौरितियावतः परमभूद्भामो नवन्यां मधोः ॥ १ ॥

कृष्णोऽष्टम्यां नभसि सिततरे चाश्विने यद्दशम्यां
 बुधः कल्की नभसि समभूच्छुक्लपट्यां क्रमेण ।

अहो नध्ये वामनो रामरामो मत्स्यः क्रीडश्चापराह्णे विभागे ।

कूर्मः सिंहो बौद्धकल्की च सायं कृष्णो रात्रौ कालसाम्ये च पूर्वे ॥ २ ॥

इति नि० सिन्धु० पृ० ६२ परि० २ ।

१ तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे २ हा विषादशुभतिष्ठु ।

३ अहहेत्यद्भुते खेदे ४ हि हेतावधारणे ॥ २५७ ॥

इत्यव्ययाः शब्दाः ।

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

१ 'तिरः' (= तिरस्) के अन्तर्धान (छिपना), तिर्झा, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ इति व्याहृत्य विबुधान्विश्वयोनिस्त्रयोदशे (कु० सं० १६२), २ तिरोवर्तते भास्करः,) ॥

२ 'हा' के विषाद, शोक, दुःख, ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ हा गतो रमणीयः कालः, २ हा वनं गतो रामचन्द्रः, ३ हा हतोऽस्मि मन्दभाग्यः,) ॥

३ 'अहह' (+ अहहा) के अद्भुत, खेद, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अहह बुद्धिप्रकर्षो नृपालस्य, २ अहह नीतो मया व्यसनेनामूल्यः, कालः, अहह हता विधवा बाला,) ॥

४ 'हि' के हेतु, अवधारण (निश्चय), २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अग्निरत्रास्ति धूमो हि दृश्यते, २ चन्द्रो हि शीतलः,) ॥

विशेषः—'नानार्थ अव्यय' शब्दों के अव्ययमात्र होनेसे अन्य प्रकरणोंके समान ('अव्य०') इस तरह प्रत्येक शब्दके बाद नहीं लिखा गया है, अतः ३।३।२४० से ३।३।२५७ तक के प्रत्येक शब्दोंको 'अव्यय' समझना चाहिए ॥

इस 'नानार्थवर्ग' में ग्रन्थकारके अतिरिक्त 'अनेकार्थसंग्रह, मेदिनीकोष, विश्वकोष, अभिधानलमाला,' कोषग्रन्थोंमें लिखित अतिप्रसिद्ध अर्थ तथा ग्रन्थकारके लिखित 'च, तु, अपि,' शब्दसे संगृहीत-टीकाकारोंके सममत ब्राह्मी अर्थ भी लिखे गये हैं । कहीं-कहीं आवश्यकस्थलोंमें उदाहरण आदि भी दिये गये हैं । टीका बढ़नेके भयसे उन्हें पृथक् लिखना या सर्वथा त्याग करना अनुचित-सा प्रतीत होनेसे एकत्र ही लिखा गया है । यद्यपि पूर्वोक्त अव्यय शब्द भी 'कान्त, खान्त, गान्त आदि क्रमसे ही कहे गये हैं तथापि इन नानार्थ अव्यय शब्दोंको 'कान्त अव्यय शब्द, खान्त अव्यय शब्द,' टीकावृद्धिके भयसे नहीं कहा गया है । पाठकगण स्वयं कान्त, खान्त, गान्त, अव्ययों को समझ लें ॥

इत्यव्ययाः शब्दाः ।

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥



४. अथान्ययवर्गः ।

- १ चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ।
 ५ मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्षणमसकृत्समाः ॥ १ ॥
 ३ स्नाग्मटित्यञ्जसाऽऽह्वाय द्राक् मङ्क्षु सपदि द्रुते ।
 ४ बलवत्सुष्टु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥ २ ॥
 ५ पृथग्विनान्तरेणते हिरुक् नाना च वर्जने ।
 ६ यत्तद्यतस्ततो हेताव ७ साकल्ये तु चिच्चन ॥ ३ ॥
 ८ कदाचिज्जातु ९ सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ।
 १० आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं ११ व्यर्थं तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥

४. अथान्ययवर्गः ।

१ चिराय, चिररात्राय, चिरस्य, (+ आद्य शब्दसे—चिरेण, चिरात्, चिरम्, चिरे) ३ का 'देर' अर्थ है ।

२ मुहुः (= मुहुस्) पुनः पुनः (= पुनः पुनर्) शश्वत्, अभीक्षणम्, असकृत्, ५ का 'बारबार' अर्थ है ॥

३ स्नाक्, स्नदिति, अञ्जसा, अह्वाय, द्राक्, मङ्क्षु, सपदि, ७ के 'झटपट' 'उसी समय' अर्थ है ॥

४ बलवत्, सुष्टु, किमुत, सु, अति, अतीव, ६ का 'अतिशय' अर्थ है ॥

५ पृथक्, विना, अन्तरेण, ऋते, हिरुक्, नाना, ६ का 'वर्जन' (विना) अर्थ है ॥

६ यत्, तत्, यतः (= यतस्) ततः (ततस् + येन, तेन), ४ का 'कारण' अर्थ है ॥

७ चित्, चन, २ का 'असाकल्य' (असम्पूर्णता) अर्थ है ॥

८ कदाचित्, जातु, २ का 'कभी' अर्थ है ॥

९ सार्धम्, साकम्, सत्रा, समम्, सह (+ सञ् = सञ्घृ), ५ का 'साथ' अर्थ है ॥

१० प्राध्वम्, १ का 'अनुकूलता' अर्थ है ॥

११ वृथा, मुधा, २ का 'व्यर्थ' अर्थ है ॥

- १ आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमुत च ।
 २ तु हि च स्म ह वै पादपूरणे ३ पूजने स्वति ॥ ५ ॥
 ४ दिवाऽह्नीत्यथ दोषा च नक्तं च रजनावपि ।
 ६ तिर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ सम्बोधनार्थकाः ॥ ६ ॥
 स्युःप्याट्प्याड्क्लृहे है भोः समया निकषा हिरुक् ।
 ९ अतर्किते तु सहसा स्यात् १० पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥
 ११ स्वाहा देवद्वित्रिभिर्नै श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा ।
 १२ किञ्चिदीषन्मनागल्पो १३ प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥
 १४ व वा यथा तदेवैवं साम्ये—

३ आहो (+ अहो), उताहो, किमुत, किम् , किमु, उत, ५ का 'वितर्क करना, विकल्प' अर्थ है ॥

२ तु, हि, च, स्म, ह, व, ६ श्लोक के चरण को पूरा करने में प्रयुक्त होते हैं ॥

३ सु, अति, २ का 'पूजा बढ़ाई' अर्थ है ॥

४ दिवा, १ का 'दिन में' अर्थ है ॥

५ दोषा, नक्तम् (+ उपा) २ का 'रात में' अर्थ है ॥

६ साचि, तिरः (= तिरस्) २ का 'तिर्छा' अर्थ है ॥

७ पाट्, प्याट्, अङ्ग, हे, है, भोः (= भोस्), ६ का 'सम्बोधन' (पुकारना, बुलाना) अर्थ है ॥

८ समया, निकषा, हिरुक्, ३ का 'समीप' अर्थ है ॥

९ सहसा, १ का 'एकाएक' अर्थात् अतर्कित (विना विचार किये) अर्थ है ॥

१० पुरः (पुरस्) पुरतः (= पुरतस्), अग्रतः (= अग्रतस्), ३ का 'आगे पहलें' अर्थ है ॥

११ स्वाहा, श्रौषट्, वौषट्, वषट्, स्वधा, ये ५ 'देवताओंको हविष्य देनेमें' प्रयुक्त होते हैं, (इनमें 'स्वधा' शब्द, 'पितरोंको कव्य देनेमें' प्रसिद्ध है) ॥

१२ किञ्चित्, ईषत्, मनाक्, ३ का 'थोड़ा' अर्थ है ॥

१३ प्रेत्य, अमुत्र, २ का 'परलोक' अर्थ है ॥

१४ व (+ वत्), वा, यथा, तथा, इव, एवम्, ६ का 'समानता' (बराबरी, उपमा, सादृश्य) अर्थ है ॥

—१ अहो ही च विस्मये ।

- २ मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां ३ सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥
 ४ दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्देऽऽथान्तरेऽन्तरा ।
 अन्तरेण च मध्ये स्युः ६ प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥
 ७ युक्ते द्वे सांप्रतं स्थानेऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ।
 ९ अभावे न्ह्य नो नापि १० मास्म माऽलं च वारणे ॥ ११ ॥
 ११ पक्षान्तरे चेद्यदि च१२तत्त्वे त्वद्धाऽअसा द्वयम् ।
 १३ प्राकाश्ये प्रादुराविः स्या१४दोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

- १ अहो, ही, २ का 'आश्चर्य' अर्थ है ॥
 २ तूष्णीम् , तूष्णीकाम् , २ का 'चुप, मौन' अर्थ है ॥
 ३ सद्यः (सद्यस्), सपदि, २ का 'इसी समय' (अभी) अर्थ है ॥
 ४ दिष्ट्या, समुपजोषम् (+ शम् , अपजोषम् , उपयोषम्), २ का 'आनन्द' अर्थ है ॥
 ५ अन्तरे, अन्तरा, अन्तरेण, ३ का 'मध्य, बीज' अर्थ हैं ॥
 ६ प्रसह्य, १ का 'हठ' (बलात्कारपूर्वक) अर्थ है ॥
 ७ सांप्रतम् , स्थाने, २ का 'युक्त, उचित' अर्थ है ॥
 ८ अभीक्ष्णम् , शश्वत् , २ का 'निरन्तर, लगातार' अर्थ है ॥
 ९ नहि, 'अ, नो, न, ४ का 'नहीं' अर्थ है ॥
 १० मास्म, मा, अलम् , ३ का 'वारण, मना करना' अर्थ है ॥
 ११ चेत् , यदि, २ का 'पक्षान्तर' (यह वा वह, अथवा) अर्थ है ॥
 १२ अद्धा, अअसा, २ का 'तत्त्व' (ठीक-ठीक विषय) अर्थ है ॥
 १३ प्रादुः (= प्रादुस्), आविः (= आविस्), २ का 'प्रकट' अर्थ है ॥
 १४ ओम् , एवम् , परमम् , ३ का 'स्वीकार, अनुमिति' अर्थ है ॥

१. 'नमोऽयमकारः' इति वदतो मानुजिदीक्षितस्योक्तिस्तु -- अशब्दः स्यादभावेऽपि स्वल्पार्थप्रतिषेधयोः । अनुकम्पायाञ्च यथा— (मेदि० पृष्ठ० १९१ श्लो० २) इति मेदिनी-वचनात् , 'अ स्यादभावे स्वल्पार्थे विष्णावेव त्वनव्ययम्' (अने० सं० परिशिष्टकाण्डे श्लो० १) इति हैमवचनात् , अ स्यादभावे स्वल्पार्थे— इति विश्वाच्च चिन्त्या । अत एव क्षी० स्वा० उक्तस्य 'विप्रवत्त द्रुमे' इति विवरणात्मकस्य 'अविप्र इव माषसे' इति समस्त-वाक्यस्य सगतिरित्यवधेयम् ॥

- १ समन्ततस्तु परितः सर्वतो विधगित्यपि ।
 २ 'अकामानुमतौ कामश्मसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥
 ४ ननु च स्याद्विरोधोक्तौ ५ कच्चित्कामप्रवेदने ।
 ६ निःषमं दुःषमं गह्यं ७ यथास्वं तु यथायथम् ॥ १४ ॥
 ८ मृषा मिथ्या च वितथे ९ यथार्थं तु यथातथम् ।
 १० स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥
 ११ प्रागतीतार्थकं १२ नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।
 १३ संवत्षे १४ ऽधरे त्वर्वा १५ गामेवं १६ स्वयमात्मना ॥ १६ ॥

१ समन्ततः (= समन्ततस्), परितः (= परितस्), सर्वतः (= सर्वतस्),
 विधक्, ४ का 'चारौ (सब) तरफ' अर्थ है ॥

२ कामम्, १ का 'विना इच्छासे स्वीकार (अनुमति)' अर्थ है ॥

३ अस्तु, १ का 'असूया-पूर्वक स्वीकार' अर्थ है ॥

४ ननु च (+ नाम), १ का 'विरोधोक्ति' अर्थ है ॥

५ कच्चित्, १ का 'इष्ट प्रश्न' अर्थ है ॥

६ निःषमम्, दुःषमम्, २ का 'निन्दनीय' अर्थ है ॥

७ यथास्वम्, यथायथम्, २ का 'यथायोग्य' अर्थ है ॥

८ मृषा, मिथ्या, २ का 'असत्य' अर्थ है ॥

९ यथार्थम्, यथातथम्, २ का 'सत्य' अर्थ है ॥

१० एवम्, तु, पुनः (= पुनर्), वै, वा, ५ का 'निश्चय' अर्थ है ॥

११ प्राक्, १ का 'बीता हुआ, पढले समयमें' अर्थ है ॥

१२ नूनम्, अवश्यम्, २ का 'निश्चय' (जरूर) अर्थ है ॥

१३ संवत्, १ का 'वर्ष, साल' अर्थ है ॥

१४ अर्वाक्, १ का 'पुराने समयके बाद' अर्थ है ॥

१५ आम्, एवम्, २ का 'हाँ' अर्थ है ॥

१६ स्वयम्, १ का 'आपसे आप' अर्थ है ॥

१. 'अकामानुमतौ' इति पाठान्तरम् ।

२. 'ननु च' निपातद्वयस्य समाहारद्वन्द्वः इति मा० दी० ।

- १ अल्पे नीचेऽर्महत्युच्चैः ३ प्रायो भूम्यधुते शनैः ।
 ५ सना नित्ये ६ बहिर्बाह्ये ७ स्मातीतेऽस्तमदर्शने ॥१७॥
 ९ अस्ति सत्त्वे १० 'रुपाक्तावु ११ ऊं प्रश्नेऽनुनये त्वयि ।
 १३ 'हुं तर्के १४ स्यादुषा रात्रेऽवसाने १५ नमो नतौ ॥१८॥
 १६ पुनरर्थेऽङ्ग १७ निन्दायां दुष्टु १८ सुष्ठु प्रशंसने ।
 १९ सायं साये २० प्रगे प्रातः प्रभाते २१ निकषाऽन्तिके ॥१९॥

- १ नीचैः (= नीचैस्), १ का 'छोटा, धीरे-धीरे, नीचे' अर्थ है ॥
 २ उच्चैः (= उच्चैस्), १ का 'ऊँचा, अधिक, जल्दी-जल्दी' अर्थ है ॥
 ३ प्रायः (= प्रायस्), १ का 'बाहुल्य, अधिकतर' अर्थ है ।
 ४ शनैः (= शनैस्), १ का 'धीरे-धीरे' अर्थ है ॥
 ५ सना (+ सनत्, सनात्), १ का 'नित्य' अर्थ है ॥
 ६ बहिः (= बहिस्), १ का 'बाह्य' अर्थ है ॥
 ७ स्म, १ का 'बीता हुआ' अर्थ है ॥
 ८ अस्तम्, १ का 'अस्त' (नहीं दिखाई देना) अर्थ है ॥
 ९ अस्ति, १ का 'है' अर्थ है ॥
 १० उ (= उम्), १ का 'क्रोधसे कहना' अर्थ है ॥
 ११ ऊं (= ऊञ्) १ का 'पूछना' (+ क्रोधसे पूछना स्त्री० स्वा०) अर्थ है ॥
 १२ अयि, १ का 'शान्त करना, रुठे हुएको मनाना' अर्थ है ॥
 १३ हुम् (+ स्यात् 'जैसे—स्याद्वादिनो जैनाः'), १ का 'तर्क' अर्थ है ॥
 १४ उषा, १ का 'रात्रिका अन्त, सबेरा' अर्थ है ॥
 १५ नमः (= नमस्), १ का 'प्रणाम' अर्थ है ॥
 १६ अङ्ग, १ का 'फिर' अर्थ है ॥
 १७ दुष्टु, १ का 'निन्दा' अर्थ है ॥
 १८ सुष्ठु, १ का 'बड़ाई, प्रशंसा' अर्थ है ॥
 १९ सायम्, १ का 'सायंकाल, साँझ' अर्थ है ॥
 २० प्रगे, प्रातः (= प्रातर), २ का 'प्रातःकाल, सुबह' अर्थ है ॥
 २१ निकषा, १ का 'समीप' अर्थ है ॥

- १ परुत्परायैषमोऽब्दे पूर्वं पूर्वतरे यति ।
 २ अद्यात्राह्वयश्च पूर्वोऽहोत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥
 तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ।
 ४ उभयद्युश्चोभयेद्युः ५ परे त्वह्नि परेद्यवि ॥ २१ ॥
 ३ ह्यो गतेऽऽनागतेऽह्नि श्वः ८परश्वस्तु परेऽहनि ।
 ९ तदा तदानीं १० युगपदेकदा ११ सर्वदा सदा ॥ २२ ॥
 १२ एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं १३ तथा ।

१ परुत्, परारि ऐषमः (= ऐषमस्), क्रमशः १ १ का 'परसाल, परियार साल, इस वर्ष' १-१ अर्थ हैं ॥

२ अद्य, १ का 'आज' अर्थ है ॥

३ पूर्वद्युः (= पूर्वद्युस्), उत्तरेद्युः (= उत्तरेद्युस्), अपरेद्युः (= अपरेद्युस्), अधरेद्युः (= अधरेद्युस्), अन्येद्युः (= अन्येद्युस्), अन्यतरेद्युः (= अन्यतरेद्युस्) इतरेद्युः (= इतरेद्युस्), क्रमशः १-१ का 'पूर्व' (पहले बीता हुआ) दिन, उत्तर (आगे आनेवाला) दिन, पर (आगामी) दिन, हीन (बीता हुआ) दिन, अन्य (दूसरे) किसी दिन, दो दिनोंमें-से किसी एक दिन, इतर (दूसरे) दिन' १-१ अर्थ है ।

४ उभयद्युः (= उभयद्युस्), उभयेद्युः (= उभयेद्युस्), २ का 'दो दिन' अर्थ है ॥

५ परेद्यवि, १ का 'आनेवाला दिन' अर्थ है ॥

६ ह्यः (= ह्यस्), १ का 'बीता हुआ कल' अर्थ है ॥

७ श्वः (= श्वस्), १ का 'आनेवाला कल' अर्थ है ॥

८ परश्वः (परश्वस्), १ का 'आनेवाला परसों' अर्थ है ॥

९ तदा, तदानीम्, २ का 'तब' अर्थ है ॥

१० युगपत् (= युगपद् । + युगपत्), एकदा, २ का 'एक समय' अर्थ है ॥

११ सर्वदा, सदा, २ का 'हमेशा, हर समय' अर्थ है ॥

१२ एतर्हि, संप्रति, इदानीम्, अधुना, सांप्रतम्, ५ का 'इस समय' अर्थ है ॥

१३ तथा, १ का 'समुच्चय (और) उस तरह' २ अर्थ हैं ॥

१ दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥



५. अथ लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ।

२ सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः ।

१ 'प्राक्' के 'पूर्व दिशामें १, पूर्व दिशासे २, पूर्व दिशा ३, पूर्व देशमें ४, पूर्व देशसे ५, पूर्व देश ६, पूर्वकालमें ७, पूर्व कालसे ८, पूर्व काल ९, ये ९ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ 'प्राग्वसति' पूर्वस्यां दिशि वसतीत्यर्थः । २ 'प्रागागतः' पूर्वस्या दिश आगत इत्यर्थः । ३ 'प्रागस्ति' पूर्वा दिगस्तीत्यर्थः । ४ 'प्राग्वसति' पूर्वस्मिन्देशे वसतीत्यर्थः । ५ 'प्रागागतः' पूर्वस्माद्देशादागत इत्यर्थः । ६ 'प्रागागतः' पूर्वस्मिन्काले गत इत्यर्थः । ७ 'प्रागासीत्' पूर्वस्मिन्काल आसीदित्यर्थः । ८ 'प्राक् प्रचलितेयं प्रथास्ति' पूर्वस्मात्कालादियं प्रथा प्रचलतीत्यर्थः । ९ 'प्राग्वर्तते' पूर्वकालो वर्तते इत्यर्थः' इसी तरह 'उदक्' के उत्तर दिशामें, ९ अर्थ, 'प्रत्यक्' के पश्चिम दिशामें ९ अर्थ, 'अवाक्' के दक्षिण दिशा में ९ अर्थ होते हैं । उनके उदाहरण भी उसी तरह समझ लेना चाहिये ॥) ।

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥



५. अथ लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ।

२ पाणिनि आदि ऋषियोंके निर्मित लिङ्ग-विधान करनेवाले शास्त्रों अर्थात् सूत्रों ('जैसे—स्त्रियां क्तिन् (पा० सू० ३।३।९४), 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' (पा० सू० ३।३।११८) 'नपुंसके भावे क्तः' (पा० सू० ३।३।११४), 'अदन्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः' (वार्त्ति०),) के सहित, सन् आदि (आदिसे—क्यच्, ...) कृत्, तद्धित और समाससे उत्पन्न प्रत्ययोंसे बननेवाले प्रायः पहले नहीं कहे हुए शब्दोंसे इस 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग' में संकीर्णवर्गके समान लिङ्गका तर्क करना चाहिये । ('क्रमशः उदा०—१ सन्' प्रत्यय से उत्पन्न शब्द जैसे—तितिष्ठा, जुगुप्सा, पिपासा....., २ 'आदि' शब्दसे संगृहीत 'क्यच्'

‘अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिदोन्नयेत् ॥ १ ॥

१ लिङ्गशेषविधिर्न्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

प्रत्ययसे उत्पन्न शब्द जैसे—पुत्रकाम्या, ... ३ ‘कृत्’ प्रत्ययसे उत्पन्न शब्द जैसे—श्वपाकः, कुम्भकारः, सरसिजम्, ... ४ ‘तद्धित’ प्रत्ययसे उत्पन्न शब्द जैसे—औपगवः, वैयाकरणः, नैयायिकः, गार्ग्यः, वात्स्यः, ... ५ ‘समास’ प्रत्यय (‘टच्, अच्, अ’) से उत्पन्न शब्द जैसे—वायुसखोऽनलः, धर्मराजः, ब्रह्मवर्चसम्, अर्धर्चः, ...) । ‘संकीर्णवर्ग’ के समान लिङ्ग समझना चाहिये अर्थात् ‘संकीर्णवर्ग’ में जिस तरह प्रकृति और प्रत्यय के अर्थ आदि (क्रियाविशेषण, ...) से लिङ्गका तर्क किया गया है उसी तरह यहाँ भी तर्क करना चाहिये । (उदा०—१ प्रकृतिके अर्थसे जैसे—‘अर्धर्चाः पुंसि च’ (पा० सू० २।३।३१) इस सूत्रसे ‘अर्धर्चः, अर्धर्चम्’ यहाँपर ‘अर्धर्च’ शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग, ... २ प्रत्ययके अर्थसे जैसे—‘स्त्रियां क्तिन्’ (पा० सू० ३।३।९४) इस सूत्रसे ‘कृतिः, संपत्तिः, विपत्तिः, भूतिः, ये शब्द स्त्रीलिङ्ग और ३ ‘आदि’ शब्दसे संगृहीत क्रिया-विशेषणसे जैसे—‘साधु भवति, शोभनं पचति, ...’ में साधु और शोभन शब्द नपुंसक हुए हैं, उसी तरह इस ‘लिङ्गादिसंग्रहवर्ग’ में भी समझना चाहिये ॥

१ यदि पहले और यहाँ कहे हुए वाक्योंसे बाध (निषेध) नहीं किया गया हो तो शेष लिङ्गका विधान अपने विषयमें व्यापक होता है अर्थात् अपवाद (बाधक) विषयको छोड़कर सर्वत्र सामान्यतः उक्त लिङ्ग होता है । (‘उदा०—‘स्वर्गयागादिमेवाब्धि—’ (३।५।११) इस वाक्यसे स्वर्ग-पर्याय शब्दको सामान्यतः पुंलिङ्ग कहा गया है तथापि ‘स्वरन्वयं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशलयाः । सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्’ (१।१।६) इस अपवाद वचनसे ‘स्वर्’ शब्दको अव्यय, ‘द्यो, दिव्’ शब्दको स्त्रीलिङ्ग, और ‘त्रिविष्टप’ शब्दको नपुंसक कहनेके कारण ये (स्वरं द्यो, दिव्, त्रिविष्टप) शब्द पुंलिङ्गमें प्रयुक्त नहीं होते, किन्तु उक्त विशेष वचन के अनुसार क्रमशः ‘अव्यय, स्त्रीलिङ्ग, और नपुंसकलिङ्ग’ में ही प्रयुक्त होते हैं, ग्रन्थ बढ़नेके

अथ स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

१ स्त्रियारमीदूद्विरामैकाचसयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

३ गाम' विद्युन्निशावल्लीवीणादिभून्दीहियाम् ।

अयसे उन स्वरादि शब्दों की भिन्न लिङ्गमें यहाँ पुनः नहीं कहा गया है ।
२ उदा०—पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः' (३।५।११) इस सामान्य वचनसे 'भेद, अनुचर, पर्याय' के सहित 'सुर और असुर' पुंलिङ्ग हैं' ऐसा कहा गया तथापि '.....दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्' (५।१।१५) इस अपवाद वचनसे 'दैवत' शब्दको पुंलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग और 'देवता' शब्दको स्त्रीलिङ्ग कहा गया है, अतः इन (दैवत्, देवता) शब्दोंको छोड़कर 'सुर, असुर' के पर्याय आदि शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । इस 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग' में विशेष वचन सामान्य वचनका बाधक होता है । ('जैसे—'अदन्तैद्विगुरेकार्थः' (३।५।३) इस सामान्य वचनसे अदन्त शब्दसे आगे रहनेपर एकार्थ द्विगुको स्त्रीलिङ्ग कह कर 'न स पात्रयुगादिभिः' (३।५।३) इस विशेष वचन से 'पात्र, युग, भुवन' आदि शब्दोंके आगे रहनेपर स्त्रीलिङ्गका निषेध किया गया है, अत एव 'अष्टाध्यायी, त्रिलोकी, दशमूली' आदि शब्दोंके समान 'पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्, त्रिभुवनम्,शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं होते हैं') ॥

अथ स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँ से आगे 'पुंस्त्वे.....' (३।५।११) तक 'स्त्रियाम्' का अधिकार होनेसे यहाँसे 'पुंस्त्वे.....' (३।५।११) के मध्यवर्ती (बीचवाले) सब शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥

२ एक अच् वाले ईकारान्त १, ऊकारान्त २; तथा योनि (भग) सहित प्राणियों के नाम ३ स्त्रीलिङ्ग होते हैं । (क्रमशः उदा०—१ धीः, श्रीः, हीः, । २—भू, स्नूः, दूः, जूः, भूः, । ३ माता (= मातृ), दुहिता (= दुहितृ), याता (= यातृ), प्रसूः, स्वसा (= स्वसृ), योषित्, करेणुः, सुरभिः,) ॥

३ विद्युत् (बिजली) १, निशा (राशि) २, वल्ली (लता) ३, वीणा

१. 'विद्युन्निशावल्लीवीणादिभून्दीहियाम्' इति पाठान्तरम् ।

१ अदन्तैद्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

२ तल्वुन्दे येनिकट्यवाः—

(+ वाणी) ४, दिक् (दिशा) ५, भू (जमीन) ६, मदी ७ ही (लाज + धी^२ अर्थात् बुद्धि), के नामवाले शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ विद्युत् , चपला, सौदामिनी, तडित् , । निशा, रात्रिः, यामिनी, । ३ वल्ली, व्रजती, लता, । ४ वीणा, वल्लकी, विपञ्ची, कच्छपी । + वाणी, भारती, ब्राह्मी, वाक् , । ५ दिक् , ककुप् , आशा, हरित् । ६ भूः, पृथ्वी, मही, इला, । ७ नदी, सरित् , आपगा, । ८ व्रीडा, लजा, त्रपा, । + धीः, बुद्धिः, मतिः, शेमुषी, चित् , संबित् ,) ॥

१ अदन्त (ह्रस्व अकारान्त) शब्द ('जैसे—मूल, लोक, अक्षर, अध्याय,) के उत्तर पदमें रहनेपर समाहार (समूह) अर्थमें द्विगु समास-संज्ञक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('जैसे—दशमूली, त्रिलोकी, पञ्चाक्षरी, अष्टाध्यायी,) । किन्तु पात्र, युग आदि (भुवन, पुर,) अदन्त शब्द उत्तर पदमें रहनेपर द्विगु समास-संज्ञक शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं होते हैं । ('जैसे—पञ्चपात्रम् , चतुर्युगम्^३, त्रिभुवनम् त्रिपुरम् ,) । 'अदन्त' ग्रहणसे 'पञ्चकुमारि, दशधेनु' में और 'एकार्थ' (समाहार) ग्रहण करनेसे पञ्च-कपालः, पञ्चकपालौ, पञ्चकपालाः, में स्त्रीलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ समूह में १ तल् प्रत्ययान्त, और य २, इनि ३, कट्य ४, त्र ५, प्रत्य-

१. 'इयवूळन्त' (२ । ५ । ५) इति वक्ष्यमाणवचनेनैव 'वीणा'पर्यायानां 'कच्छपी-विपञ्ची'त्यादीनां स्त्रीत्वसिद्धौ 'धीणा' ग्रहणस्याकिञ्चित्करत्वात् , तत्स्थाने 'वाणी' शब्द, पाठ एव समुचितस्तत्पर्यायाणां 'ब्राह्मी, गीर्भारती'त्यादिशब्दानां स्त्रीत्वनिर्देशावश्यकत्वादित्यवधेयम् ।

२. 'स्त्रियामीदूदिरामैकाच्' (१।५।२) इति वचनेनैव 'ही'पर्यायवतां 'लज्जादीनां' स्त्रीत्वसिद्धौ 'ही' शब्दस्यात्राकिञ्चित्करत्वात् तत्स्थाने 'धी'शब्दपाठ एव समुचितः, 'धी'पर्यायवतां 'चित्संविदा।' दीनां स्त्रीत्वबोधकवचनावश्यकत्वादित्यवधेयम् ।

३. 'अदन्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः' (वार्ति० १५५६) इति भाष्येष्टेः ।

४. 'पात्राद्यन्तस्य न' (वार्ति० १५५९) इति भाष्येष्टेः ।

५. 'समासान्ताः' (पा० सू० ५।४।६८) इति सूत्रभाष्ये तु 'त्रिपुरी'ति दृश्यते ।

—१ 'वैरमैथुनिकादिवुन् ।

२ 'स्त्रीभावादावनक्तिष्णवुल्णव्वुक्कयव्वुजिअङ्गिशाः ॥ ४ ॥

यान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ ग्रामता, जनता, बन्धुता, देवता,.....। २ पाश्या, वात्या,.....। ३ खलिनी, शाकिनी, डाकिनी, पशिनी,.....। ४ रथकव्या,.....। ५ गोत्रा,.....') । 'वृन्द्' ग्रहण करनेसे मुख्यः, दण्डी (= दण्डिन्)' यहाँ स्त्रीलिङ्ग नहीं हुआ है ।

१ वैर १, मैथुनिक २ आदि अर्थमें विहित वुन्' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । 'आदि' शब्दसे वीष्मामें विहित 'पादशतस्य—' (पा० सू० ५।४।१), दण्डव्ययसर्गयोश्च' (पा० सू० ५।४।२) से विहित 'वुन्' प्रत्ययान्त भी स्त्रीलिङ्ग होता है । ('क्रमशः उदा०—१ अश्वमहिषिका, काकोल्लिका,.....। २ अत्रिभरद्वाजिका. कुत्सकुशिका,.....। 'आदि'से 'संगृहीतके क्रमशः उदा०—१—२ द्विपदिकां, द्विशतिकाम् वा ददाति, दण्डितो वा,.....। 'वुन्' ग्रहण 'वुज्'का उपलक्षण है अतः 'काठिकया काशिका, गर्तिकया श्लाघते,..... यहाँ भी स्त्रीलिङ्ग होना है') ।

२ 'स्त्रियां क्तिन्' (पा० सू० ३।३।९४) के 'स्त्रियाम्' का अधिकार कर भाव आदि अर्थमें विहित 'अनि १, क्तिन् २, ण्वुल् ३, णच् ४, ण्वुच्, ५, क्यप् ६, युच् ७, इज् ८, अङ् ९, नि (+ अ) १०, श ११, प्रत्यय जिसके अन्तमें हों, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । 'क्रमशः उदा०—१ अकरणिः, अज्जननिः,....। २ कृतिः, भूतिः, चितिः,.....। ३ प्रच्छर्दिका, प्रवाहिका, आसिका,.....। ४ व्यावकोशी, व्यात्युक्षी, व्यावहासी,.....। ५ शाथिका, इक्षुभक्षिका.....। ६ ब्रज्या, इज्या, समज्या, निषद्या, ब्रह्महत्या,.....। ७ कारणा, हारणा, आसना', कामना,.....। ८ वापिः, वासिः, कारिः, गणिः,.....। ९ पचाभिदा, घटा, मृदा,.....। १० श्लानिः, श्लानि, अरणिः, धमनिः,.....। + चिकीर्षा, पुत्रकाम्या,.....। ११ क्रिया, इच्छा,.....') 'स्त्रीभावादौ' ग्रहण करनेसे, मृषोद्यम् यहाँपर स्त्रीलिङ्ग नहीं होता है ।

१. 'वैरमैथुनिकादिवुः' इति पाठान्तरम् ।

२.'क्यव्वुजिअङ्गिशाः' इति पाठान्तरम् ।

- १ उणादिषु निरुरीश्च उद्यावूढन्तं चलं स्थिरम् ।
- २ तत्कीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्लवाण दिक् ॥ ५ ॥
- ३ घञो अः सा क्रियाऽस्यां चेद्दण्डपाता हि फाल्गुनी ।
श्यैनपाता च मृगया तैलपाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥

१ उणादिमें विहित 'निर् १, ऊर् २, ई ३, प्रत्ययान्त शब्द तथा चल (जङ्गम) अथवा अचल (स्थावर) जो 'ङी (ङीष् वा ङीप्) ४ आप् (टाप्) ५, ऊङ् ६' प्रत्ययान्त शब्द वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ श्रेणिः, श्रेणिः, ज्यानिः, । २ कर्पूः, चमूः, अलावूः, जम्बूः, । ३ लघ्मीः, अवीः, तरीः, तन्त्रीः, । ४ चल (जङ्गम) जैसे—नारी, । अचल (स्थावर) जैसे—कदली, कन्दली, । ५ चल (जगङ्गम) जैसे—शिवा, रमा, गङ्गा, । अचल (स्थावर) जैसे—खट्वा, माला, । ६ चल (जङ्गम) जैसे—ब्रह्मबन्धूः, वामोरुः, करभोरु, । अचल (स्थावर) जैसे—कर्कन्धूः, अलावूः,) ॥

२ खेलमें 'मुष्टि पल्लव' आदि (मुसल, दण्ड,) का प्रहरण (प्रहार, मार) इसका है, इस अर्थमें 'ण' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—मौष्टया, पाल्लवा, मौसला, दण्डा,) ॥

३ दण्डपात इस फाल्गुनी तिथि में है १, श्येनपात (बाजुका गिरना) इस मृगया (शिकार) क्रिया में है २, तैलपात (तेलका गिरना) इस स्वधा (पिण्ड-दान) क्रिया में है ३, इस अर्थमें 'घञ्' प्रत्ययान्तसे विहित 'अ' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ दण्डपातोऽस्यां फाल्गुन्यां तिथौ विद्यते इति दण्डपाता फाल्गुनी तिथिः । २ श्येनपातोऽस्यां मृगयायाम्, इति श्येनपाता मृगया । ३ तैलपातोऽस्यां स्वधायाम् इति तैलपाता स्वधा') 'इति दिक्' कहने से मुसलपातोऽस्यामिति 'मौसलपाता' भूमिः आदि का संग्रहण है ॥

१. 'उणादिष्वनिरुरीश्च' इति पाठान्तरम् पतप्ताठे 'धरणिः, धमनिः, शरणिः' इत्या-
द्युदाहरणं ज्ञेयम् ॥

१ स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिविवक्षाऽपचये यदि ।

२ लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥

सिधका 'सारिका द्विका प्राचिकोल्का पिपीलिका ।

तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमाढयः ॥ ८ ॥

१ अपचय (न्यूनता, कमी) विवक्षित रहनेपर मृणाली आदि (कुम्भी प्रणाली,) शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('जैसे— अल्पं मृणालं (थोड़ा मृणाल (मृणाली, कुम्भी, प्रणाली, मुसली, छत्री, पटी, तटी, मठी, वंशी, गृह-काण्डी,) ('काचित्' ग्रहण करनेसे 'अल्पो वृत्तः' इति विग्रहे 'वृत्तकः' पुंलिङ्ग ही होता है स्त्रीलिङ्ग नहीं होता ॥

१ 'दथाबूढन्तम्' (३ । ५ । ५) इत्यादिसे उक्त लिङ्गवाले कुछ शब्दोंको भी सुखपूर्वक लिङ्ग-ज्ञानके लिये 'कान्त, खान्त,' के क्रमसे कहते हैं । 'लङ्का (रावणकी राजधानी), शेफालिका (निर्गुण्डी), टीका (ग्रन्थादिकी व्याख्या), धातकी (धव वृत्त-विशेष), पञ्जिका (सम्पूर्ण पदोंकी व्याख्या), आढकी (अरहर, जिसकी दाल होती है), सिधका ('सीध'नामका वृत्त-विशेष), सारिका (+ शारिका । मैना पक्षी), द्विका (हिचकी आना), प्राचिका (वनमक्खी । + पक्षि-विशेष स्त्री० स्वा०) उल्का (लुक्क) पिपीलिका (चींटी या दीमक । + जो अप्रसिद्ध है या पहले अनुक्त है वही यहाँपर तत्तन्नाम-निर्देश-पूर्वक कहा गया है अतः 'शनैर्याति पिपीलिकः' यहाँ पुंलिङ्गका निषेध नहीं हुआ, इसी तरह सर्वत्र समझना), तिन्दुकी (तेंदू वृत्त), कणिका (परमाणु, अतिसूक्ष्म या गोहूँ आदिका आटा, जयपर्ण वृत्त या अरणि वृत्त), भङ्गिः (रचना, कौटिल्य-भेद) सुरङ्गा (सुरङ्ग) सूचि (सूई) माढिः (दन्त्य या दैन्य-प्रकाशन, पत्रिशिरा अर्थात् पत्तेकी नस । + देशः कवच स्त्री०

१. 'शारिका' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'दथाबूढन्तम्' (३।५।५) इति सिद्धे नामानुशासनार्थो लङ्कादीनां पाठः । मङ्गलादीनामुपानुशासनार्थः । शेफालिकादीनां तु व्यर्थः स्वपर्यायपठित्वात् इति भा० दी० ।

पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्रूणिः शानी द्रुणी दस्त ।

सातिः कन्था तथाऽऽसन्दी नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥

झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिधमला ।

लाक्षा लिखा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥

इति खीलङ्गसंग्रहः ।

अथ पुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ पुंस्त्वे २ सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।

स्वा०), पिच्छा (मोचरस अर्थात् सेमर का गोंद । + भात आदिका मांड़), वितण्डा (बखेड़ा), काकिणी (+ काकिनी । चौथाई पैसा, टुकड़ा), श्रूणिः (अष्टाध्यायीका पातञ्जल भाष्य), शानी (सनका वस्त्र-विशेष महे०, कसीटी, सान अर्थात् शस्त्रको तेज करनेका यन्त्र-विशेष । + 'काणी' अर्थात् संकोच), द्रुणी (गोजर । + कच्छपी), दस्त (ग्लेच्छ जाति), सातिः (समाप्तिः), कन्था (चिथड़ा), आसन्दी (एक प्रकारका आसन, या बैठका आसन), नाभिः, (पेटकी ढोंडी), राजसभा (राजाकी सभा), झल्लरी (हल्लुक बाजा), चर्चरी (ताली या गान-विशेष), पारी (हाथीके पैर बाँधनेकी रस्सी, पान-भाण्ड घड़ा आदि), होरा (लग्न, लग्नार्द्ध, जातक), लट्वा (ग्रामका गौरैया पक्षी, करज फल, वाद्य-विशेष), सिधमला (सूखी मछली, गीली खुजली, मल । + सफेद कुष्ठ रोग क्षी० स्वा०), लाक्षा (लाह), लिखा (जुमाका अण्डा, लीख), गण्डूषा (+ गण्डूषः पु । पानीसे मुख भरना, कुस्मा), गृध्रसी (उरु-सन्धिमें होनेवाला वातरोग-विशेष), चमसी (उबड़ या मसूर आदिका बेसन, काष्ठका बना हुआ यज्ञपात्र-विशेष । + प्रणीतापात्र महे०), मसी (स्याही), ये ४२ शब्द खीलङ्ग होते हैं ॥

इति खीलङ्गसंग्रहः ।

अथ पुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आये 'द्विहीने.....' (१ । ५ । २२) के पूर्व 'पुंस्त्वे, इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) सब शब्द पुंलिङ्ग होते हैं ॥

२ भेद और अनुचरके सहित १ सुर (देवता) तथा २ असुर (दैत्य)

१ स्वर्गयागाद्रिमेधाब्धिद्रुक्कालासिशरारयः ॥ ११ ॥

के पर्यायोंके सहित सब शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । (क्रमशः उदा०—१सुरके पर्याय जैसे—अमरः, निर्जरः, देवः, त्रिदशः, बिबुधः, । भेद जैसे—तुषितः, साध्याः, आभास्वराः, इन्द्रः, शक्रः, विद्वौजाः, सूर्यः, आदित्यः, रविः, ब्रह्मा, स्वयम्भूः, विष्णुः, शौरिः, रुद्रः, शम्भुः, । अनुचर जैसे—हाहाः, हूहूः, तुषुतुः, मातलिः, जयः, विजयः, चण्डः, प्रचण्डः, विष्वक्सेनः, नन्दी (= नन्दिन्), महाकालः, भृङ्गी (= भृङ्गिन्), गणाः, प्रमथाः, । २ असुर (दैत्य) के पर्याय जैसे—दैत्याः, दैतेयाः, दानवाः, पूर्वदेवाः, । भेद जैसे—बलिः, नमुचिः, जम्भः, विरोचनः प्रह्लादः, । अनुचर जैसे—कूष्माण्डः, मुण्डः, कुम्भः,) ॥

१ स्वर्ग १, याग (यज्ञ) २, अद्रि (पहाड़) ३, मेघ (बादल) ४, अब्धि (समुद्र) ५, द्रु (पेड़) ६, काल (समय) ७, असि (तलवार) ८, शर (बाण) ९, और अरि (शत्रु) १०, इनके पर्याय और भेदवाचक शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । (क्रमशः उदा०—१ पर्याय जैसे—स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः, । २ पर्याय जैसे—यागः, ऋतुः, ससतन्तुः, । भेद जैसे—अग्निष्टोमः, अनिरात्रः, अश्वमेधाः, । ३ पर्याय जैसे—अद्रिः, गिरिः, पर्वतः, । भेद जैसे—सुमेरुः, मेरुः, हिमालयः, विन्ध्यः, सहायः, । ४ पर्याय जैसे—मेघः, अम्बुदः, घनः, वारिदः, । भेद जैसे—पुष्करावर्तकः, । ५ पर्याय जैसे—अब्धिः, समुद्रः, नदीनः, सागरः, अर्णवाः, । भेद जैसे—क्षारोदः, लवणोदः, दध्यूदः, । ६ पर्याय जैसे—द्रुः, नहः, वृचः, । भेद जैसे—वटः, आम्रः, शृङ्गः, रुद्रिः, पिप्पलः, । ७ पर्याय जैसे—कालः, समयः, दिष्टः, । भेद जैसे—मासः, ऋतुः, ऋतुः, । ८ पर्याय जैसे—असिः, खड्गः, करवालः, मण्डलाग्रः, । भेद जैसे—नन्दकः, चन्द्रहासः, । ९ पर्याय जैसे—शरः, बाणः, इषुः, विशिखः, । भेद जैसे—नाराचः, काण्डः, भवकः, । १० पर्याय जैसे—अरिः, रिपुः, शत्रुः, द्वेषणः, । भेद जैसे—आततायी (= आततायिन्),) ॥

- १ 'करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ।
- २ अह्नाहन्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ता प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥
- ३ श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ।

१ कर (कौड़ी या राजाका कर अर्थात् मालगुजारी, किरण,) १, गण्ड (गाल) २ ओष्ठ (ओठ) ३, दोः (= दोष् । हाथ) ४, दन्त (दाँत) ५, कण्ठ (गला) ६, केश (बाल) ७, नख (नाखून) ८, स्तन (थन) ९, इनके पर्याय और भेदके सहित शब्द पुष्टिलङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०— १ करः, राजभागः, रश्मिः, मयूखः, । २ गण्डः, कपोलः, कटः, । ३ ओष्ठः, रदनच्छदः, अधरः, । ४ दोः (= दोष्), प्रवेष्टः, बाहुः, भुजः, । ५ दन्तः, दशनः, रदः, रदनः, । ६ कण्ठः, गलः, । ७ केशः, वालः, चिकुरः, । ८ नखः, पुनर्भ्रंशः, करसहः, । ९ स्तनः, पयोधरः, कुचः,) ॥

२ 'अह् १, अहन् २' शब्द जिसके अन्तमें हों वे शब्द, विष-भेदके वाचक शब्द ३, 'रात्रि' शब्द हो अन्तमें जिनके ऐसे असंख्यापूर्वक (संख्या-वाचक शब्द पूर्व में न रहें ऐसे) शब्द ४, पुष्टिलङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०— १ पूर्वाह्णः, सायाह्णः, अपराह्णः, मध्याह्णः, । २ द्वयहः, त्रयहः, उत्तमाहः, परमाहः, । ३ वसनाभः, सौराष्ट्रिकः, ब्रह्मपुत्रः, शौक्लिकेयः, कालकूटः, हलाहलः, । ४ अहोरात्रः, सर्वरात्रः, दीर्घरात्रः, वर्षारात्रः,) । 'प्राग-संख्यकाः' (असंख्यापूर्वक) ग्रहण करने से 'पञ्चरात्रम् द्विरात्रम्, त्रिरात्रम् में संख्यावाचक शब्द पूर्वमें रहनेसे पुष्टिलङ्ग नहीं होता है') ॥

३ श्रीवेष्ट (+ श्रीपिष्ट) आदि गौद के वाचक शब्द १, अस् २, और अन् ३, हो अन्तमें जिनके ऐसे अबाधित (किसीसे बाध न हुआ हो) शब्द पुष्टिलङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०— १ श्रीविष्टः (+ श्रीपिष्टः) सरलः, द्रवः, । 'आद्य' शब्दसे 'श्रीवासः, वृकधूसः, का और 'ख' शब्दसे गुग्गुलुः, वृकधूसः, का संग्रह होने से ये शब्द भी पुष्टिलङ्ग होते हैं' । २ वेधाः (= वेधस्) पुरोधः (पुरोधस्) उशनाः (= उशनस्), अङ्गिराः

१ कशेरुजतुवस्तूनि द्वित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

२ कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी ३ अथ ।

पथनयसटोपान्ताः—

(= अङ्गिरस्), चन्द्रमाः (चन्द्रमस्), । १ कृष्णवर्मा (= कृष्णवर्मन्), प्रतिदिवा (= प्रतिदिवन्), मघवा (= मघवन्), प्लीहा (प्लीहन्),) । 'अबाधित' ग्रहण करनेसे 'अप्सरसः' (= अप्सरस्), जलौकसः (= जलौकस्), सुमनसः (= सुमनस्), ये असन्त शब्द, तथा 'लोम' (= लोमन्), साम (= सामन्), वर्म (= वर्मन्), ये नान्त शब्द पुल्लिङ्ग नहीं होते हैं ॥

१ 'कशेरु, जतु, वस्तु' शब्दको छोड़कर अन्य 'तु १, रु २' अन्तमें हों जिनके ऐसे शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ वास्तुः, मस्तुः, हेतुः, स्वस्तुः, धातुः, सेतुः, । २ कुरुः, वसुरुः, मरुः, ठरुः,') । 'कशेरुज-तुवस्तूनि द्वित्वा' इसके कहनेसे इदं 'कशेरु' जलज कन्द विशेष, 'जतु' लाक्षा, इदं 'वस्तु' यहाँपर 'कशेरु, जतु, वस्तु' शब्द पुल्लिङ्ग नहीं होते हैं ॥

२ 'क १, ष २, ण ३, म ४, म ५, र ६' ये ६ वर्ण जिस अदन्त शब्द के उपान्त (अन्तबाले वर्णके अव्यवहित पूर्व) में रहें वे शब्द विशेष, पुल्लिङ्ग होते हैं । (क्रमशः उदा०— १ अङ्कः, कलङ्कः, लोकः, स्फटिकः, शक्कः, वराटकः, । २ ओषः, प्लोषः, माषः, प्लुषः, निकषः, तुषः, रोषः, + + । ३ गणः, शणः, कणः, पाषाणः, गुणः, + + । ४ कुम्भः, कलभः, दर्भः, शलभः, + + । ५ आचामः, धूमः, होमः, ग्रामः, गुहमः, व्यामः, + + । ६ अङ्कुरः, दरः, शर्करः, + +) ॥

३ 'प १, थ २, न ३, य ४, स ५, ट ६' ये ६ वर्ण जिनके उपान्त (अन्त-के वर्णके अव्यवहित पूर्व) में रहें वे शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०— १ सूपः, वाप्पः, कलापाः, यूपः, कूपः, । २ रोमन्थः, शपथः, सार्थः,

१. 'कशेरुजतुवस्तूनि द्वित्वा' इति व्यर्थम् । 'अबाधिताः' इत्यस्यान्वयेनैव सामञ्ज-स्यात् । वस्तुतस्तु 'अबाधिताः' इत्यपि व्यर्थम् । 'विशेषैर्यद्यबाधितः' (३। ५। १) इत्य-नेनैव निर्वाहात् । अत एव दार्वादिषु निर्वाहः इति भा० दी० 'देशैर्वाष्पलक्षणं 'दारुमशु' प्रभृतीनाम् । कशेरु अस्थिविशेषरत्नविशेषो वा, जतु लाक्षा' इति महे० ॥

—१ गोत्राख्याश्चरणाद्व्याः ॥ १४ ॥

२ नाम्न्यकर्तरि भावे च घञत्वनङ्णघाथुचः ।

३ ल्युः कर्तरि मनिज्भावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः ॥ १५ ॥

नाथः, । ३ फेनः, हायनः, स्तनः, जनः, इनः, । ४ अपनयः, विनयः, प्रणयः, आयः, व्ययः, तन्तुवायः, । ५ रसः, हासः, क्रुसः, वस्सः, । ६ पटः, कटः, सरटः, । महे० सु० के मतसे 'अथ' शब्दको आदिमें रहने-से 'यद्यदन्ताः' इसका सम्बन्ध 'पथनयसटोपान्ताः' में नहीं होता, अतः 'पायुः, जायुः, गोमायुः,' अदन्तसे भिन्न शब्द भी पुंलिङ्ग होते हैं) ॥

१ गोत्राख्य (गोत्रके वाचक) शब्द स्त्री० स्वा० के मतसे अपत्य प्रत्ययान्त १, और चरण (वेद-शाखा) के वाचक शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ कारयपः वसिष्ठः, गौतमः, । स्त्री० स्वा० के मतसे + वासिष्ठः, गार्ग्यः, दाक्षिः, । २ कठः, बह्वृचः, छन्दोगः, कलापः,) ॥

२ नाम, कर्तृभिन्न कारक और भावमें विहित 'घञ् १, अच् २, अप् ३, नङ् ४, ण ५, घ ६, अथुच् ७, प्रत्यय जिनके अन्तमें हों वे शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ प्रास, वेदः, प्रासादः, प्रकार, साधः, भावः, पाकः, त्यागः, । २ जयः, चयः, नयः, । ३ पचः, करः, गरः, लवः, स्तवः, प्लवः, । ४ यज्ञः प्ररनः, यत्नः, ('नङ्' के टपलचण होनेसे 'नन्' प्रत्ययान्त भी पुंलिङ्ग होता है, जैसे—स्वप्नः,) । ५ न्यादः, । ६ प्रहरः, विवसः, गोचरः उररुद्धः, प्रच्छदः, । ७ वेपथुः, श्वयथुः, आनन्दथुः,) ॥

३ कर्तामें विहित 'ल्यु' प्रत्ययान्त १, भावमें विहित 'इमनिच्' २ और 'क' ३, प्रत्ययान्त तथा 'प्रादिसे ४, और अन्यसे ५, परे घुसंज्ञक धातुसे विहित 'कि' प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ नन्दनः, रमणा,

१. अत्र 'प्रादि' शब्देन द्वाविंशतिरुपसर्गा ग्राह्यास्ते यथा—'प्र १, परा २, अप ३, सम् ४, अनु ५, अव ६, निस् ७, निर् ८, दुस् ९, दुर् १०, वि ११, आक् १२, नि १३, अवि १४, अपि १५, अति १६, सु १७, उप् १८, अभि १९, प्रति २०, परि २१, उप २२' इत्येते 'उपसर्गाः क्रियायोगे' (पा० सू० १।४।५९) इत्यनेनोपसर्गसंज्ञका भवन्ति ।

- १ द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते ।
 २ कान्तःसूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥
 ३ वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च ^१कुडङ्गकः ।
 पुङ्खो^२न्यूङ्खः समुद्रश्च विटपट्टधटाः खटाः ॥ १७ ॥

मधुसूदनः, जनार्दनः, । २ प्रथिमा (= प्रथिमन्), लविमा (= लविमन्), गरिमा (= गरिमन्), महिमा (= महिमन्), । ३ प्रस्थः, आस्थूथः, ... । ४ (प्रादिसे परे घुसंज्ञक धातुसे विहित 'कि' प्रत्ययान्त 'जैसे—प्रधिः, निधिः, व्याधिः, आधिः, उपधिः, । ५ (अन्यसे परे घुसंज्ञक धातुसे विहित 'कि' प्रत्ययान्त, 'जैसे—जलविः, भलविः,) । 'घोः किः' इसीसे सर्वत्र पुंलिङ्ग हो जाता, अतः 'प्रादितोऽन्यतः' यह पद व्यर्थ ही है ॥

१ समाहार अर्थसे भिन्न द्वन्द्व समासमें 'अश्ववडव' शब्द पुंलिङ्ग होता है । ('जैसे—अश्वश्च वडवा च 'अश्ववडवौ') ॥

२ 'सूर्य १, चन्द्र २, के पर्याय, और 'अयस्' ३ शब्दसे परे (आगे) रहनेपर 'कान्त' शब्द पुंलिङ्ग होता है । ('क्रमशः उदा०—१ सूर्यकान्तः, अर्ककान्तः, भास्वरकान्तः, । २ चन्द्रकान्तः, शशिकान्तः, इन्दुकान्तः, ... । ३ अयस्कान्तः') ॥

३ अब 'कान्त, खान्त.....' के क्रमसे 'पुंलिङ्गसंग्रह' के अन्ततक पुंलिङ्ग शब्दोंको कहते हैं । वटकः (बारा), अनुवाकः (वेद-भेद, श्रद्धा और यज्ञ का समूह), रल्लकः (पथम-कम्बल, रौआदार कम्बल), कुडङ्गकः (+ कुटङ्गकः । वृक्ष-लतासे गहन स्थान), पुङ्खः (बाणके नीचेवाला भाग), न्यूङ्खः (+ न्युङ्खः । सामवेदके भा० दी० के मतसे ६ और ऋ० स्वा० के मतसे १६ ॐकार), समुद्रः (सगुप्त, डब्बा), विटः (कामी अनुचर, धूर्त), पट्टः (पीटा, काष्ठका आसन-विशेष । + पनड़ी आदि ऋ० स्वा०), धटः (काष्ठकी तराजू, परीक्षा करनेकी तराजू), खटः (अन्धा कूबां, तृण, प्रहार), कोट्टः (किला), अरघट्टः

कोट्टारघट्टहट्टाश्च' पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।

गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

इतिसीमन्तहरिता रोमन्थोद्रीथबुद्बुदाः ।

'कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपश्चुरकेदराः ।

'पूरश्चुरप्रचुकाश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

(बड़ा कुआँ । + कोट्टारः, घट्टः, अर्थ क्रमशः नगरका कूप, घाट, भा० दी०),
हट्टः (बाजार), पिण्डः (कवल या पिण्ड), गोण्डः (नाभि । + गौडः अर्थात्
गुड का बना पदार्थ या गौड देश), पिचण्डः (+ पिचिण्डः । पेट), गडुः
(गाल ची० स्वा०, गलगण्ड रोग महे०), करण्डः (समुद्र ची० स्वा०, बांसका
कोठिला आदि भाण्ड-विशेष भा० दी० महे०), लगुडः (लाठी), वरण्डः
(समूह, मुखरोग), किणः (चावका चिह्न, मांस-ग्रन्थि, घट्टा), घुणः (घुन),
इतिः (भायी), सीमन्तः (केश-वेश), हरित (हरा रंग), रोमन्थः (पगुरी),
उद्रीथः (साम-भेद), बुद्बुदः (बुबुला, पानीमें वर्षा आदि पड़ने या खौलनेपर
होनेवाला क्षणिक जल-विकार), कासमर्दः (गुल्म-भेद महे०, वेसवार अर्थात्
एक प्रकारका मसाला या छौंक), अर्बुदः (दश करोड़, आवू पहाड़, रोग-
विशेष । + अर्दनिः अर्थात् अग्नि), कुन्दः (कुन्द फूल या शिखर-भाण्ड), फेनः
(फेन, गाज), स्तूपः (माटी आदिका ढेर ची० स्वा०, + यज्ञमें वध्य पशु
बाँधनेका काष्ठ-विशेष), यूपः (यज्ञमें पशु बाँधनेका काष्ठ-विशेष । + पूषः
अर्थात् पूजा), आतपः (घाम), नाभिः (क्षत्रिय), कुणपः (मुर्दा-विशेष ।
+ कणपः, अर्थात् प्रास-विशेष), चुरः (छूरा), केदरः (एक प्रकारका व्याव-
हारिक पदार्थ), पूरः (पानीका प्रवाह), चुरप्रः (+ चुरप्रः । बाण-
भेद), चुक्रः (चुक्र, शाक-विशेष), गोलः (गोला, पिण्ड), हिङ्गुलः
(+ हिङ्गुलः । ईंगुर), पुद्गलः (आरमा, जैनसिद्धान्तसम्मत आकाशादि द्रव्य),

१. 'पिण्डगोण्डपिचण्डवत्' इति 'पिचिण्डवत्' इति च पाठान्तरे ।

२. 'कासमर्दोऽर्दनिः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ' इति पाठान्तरम् ।

३. 'पूरश्चुरप्रचुकाश्च' इति 'गोलहिङ्गुलपुद्गलाः' इति पाठान्तरम् ।

वेतालमल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि^१ पट्टिशः ।

कुत्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

इति पुंलिङ्गसंग्रहः ।

अथ नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ द्विहीनेऽन्यच्च २ खारण्यपर्णश्च भ्रमोदकम् ।

शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥

३ फलहेमशुल्बलोहसुखदुःखशुभाशुभम् ।

जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

वेतालः (प्रेत-विशेष), मल्लः (भाल्ल, बाण-विशेष, पटा), मल्लः (कुरती लङ्घनेमें चतुर), पुरोडाशः (यज्ञसम्बन्धी पूजा, हविष्य-विशेष), पट्टिशः (+ पट्टिशः । अस्त्र-विशेष), कुत्माषः (आधा गोला यव या उदक आदि), रभसः (हर्ष, वेग, पौर्वापर्यका विचार), कटाहः (कराह), पतद्ग्रहः (पीकदान). ये ५५ शब्द पुंलिङ्ग होते हैं ॥ इति पुंलिङ्गसंग्रहः ।

अथ नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे 'पुंनपुंसकयोः' (१।५।३२) के पहले तक 'द्विहीने' इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं । 'अन्यत्' ग्रहण करनेसे जो बाधित न हों वे ही शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं ॥

२ खम् (इन्द्रिय) १, खरण्यम् (वन) २, पर्णम् (पत्ता) ३, श्वन्नम् (पाताल, बिल) ४, हिमम् (बर्फ) ५, उदकम् (पानी) ६, शीतम् (ठण्डा) ७, उष्णम् (गर्म) ८, मांसम् (मांस) ९, रुधिरम् (खून) १०, सुखम् (सुँह) ११, अक्षि (आँख) १२, द्रविणम् (धन) १३, बलम् (सेना) १४, फलम् (आम आदिका फल । + इलम् अर्थात् जोतनेवाला हल) १५, हेम (= हेमन् । सुवर्ण) १६, शुल्बम् (तामा) १७, लोहम् (कोहा) १८, सुखम् (सुख) १९, दुःखम् (दुःख) २०, शुभम् (शुभ) २१, अशुभम् (अशुभ) २२, जलपुष्पम् (पानीमें होनेवाले फूल) २३, लवणम् (नमक) २४, व्यञ्जनम् (तरकारी आदि) २५, अनुलेपनम् (लेप-मेव) २६; ये २६ शब्द

१. 'पट्टिशः' इति मुकुटः इति महे० ।

२. 'इलम्' इति पाठान्तरम् ।

३. 'द्विहीनेऽन्यच्च' इति पाठान्तरम् ।

१ 'भयामृतशकृद्वक्त्रचापाभरणलाङ्गलम्' (९२)

और इनके पर्यायवाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग (भा० दी० ने इनके पर्यायवाचक शब्दोंको नपुंसक नहीं कहा है) होते हैं । 'क्रमशः उदा०—१ प्रथमार्थक (इन्द्रिय पर्याय) जैसे—१ खम्, इन्द्रियम्, करणम्, द्वेषिकम्, । १ द्वितीयार्थक (आकाश-पर्याय) जैसे—खम्, आकाशम्, गगनम्, अम्बरम्, । २ अरण्यम्, कान्तारम्, वनम्, विपिनम्, । ३ पर्णम्, दलम्, पत्रम्, । ४ श्वश्रुम्, विलम्, विवरम्, पातालम्, । ५ हिमम्, प्रालेयम्, तुहिनम्, । ६ उदकम्, जलम्, पानीयम्, तोयम्, ... । ७ शीतम्, शिशिरम्, । ८ उष्णम्, घर्मम्, । ९ मांसम्, पिशितम्, तरसम्, । १० रुधिरम्, रक्तम्, । ११ मुखम्, आननम्, लपनम्, आस्यम्, वक्त्रम्, । १२ अक्षि, नयनम्, नेत्रम्, । १३ द्रविणम्, धनम्, स्वापतेयम्, । १४ बलम्, सैन्यम्, अनीकम्, । १५ फलम्, आन्नम्, कपित्थम्, । १६ हेम (= हेमन्), सुवर्णम्, हाटकम्, स्वर्णम्, । १७ (लोह-भेद) जैसे—शुक्लम्, ताम्रम् औदुम्बरम्, । १८ लोहम्, कालायसम्, अरमसारम्, । १९ सुखम्, उपजोषन्, शान्तम्, शर्म (= शर्मन्) शातम्, । २० दुःखम्, कष्टम्, कृच्छ्रम्, आमीलम्, । २१ शुभम्, कल्याणम्, कुशलम्, पुण्यम्, सुकृतम्, । २२ अशुभम्, पापम्, दुःकृतम्, । २३ (जठपुष्प भेद) जैसे—कमलम्, कैवल्, कुमुदम्, कङ्कारम्, उत्पलम्, । २४ (लवण-भेद) जैसे—लवणम्, सैन्धवम्, विडम्, रुचकम्, । २५ व्यञ्जनम्, तेमनम्, निष्ठानम्, उपसेचनम्, मस्तु, । और २६ (अनुलेपन-भेद) जैसे—अनुलेपनम्, कुङ्कुमम्, अग्निशिखम्, काश्मीरम्, चन्दनम्,) ॥

१ [भयम् (डर), अनृतम् (झूठा । + 'अमृतम्' अर्थात् अमृत), शकृत् (मैला), वक्त्रम् (मुख । + 'वस्तु' अर्थात् चीज, पदार्थ), चापम् (धनुष्), आभरणम्

१. 'भया'...प्रयुज्यते' इत्ययं श्लेषकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलब्धमानः प्रकृतोपयुक्ततयाऽत्र मूले स्थापितः । तत्र—'भयामृतशकृदस्तु' इति पाठान्तरमप्यस्ति ।

२. तथा च मा० दी०—'दाभ्यां द्वीने कर्त्तव्ये' इत्याद्युक्त्वा 'तत्र कांश्चिदर्थवति चमिति—' इत्याह ।

दावौषधमृधापत्यहृदयोदरकाकुदम् (९३)

पत्तनाजिरशृङ्गान्नद्वारबर्होडुमानसम् (९४)

ध्वान्तं चाव्यक्तलिङ्गं च भाणतौ यत्प्रयुज्यते' (९५)

१ कोट्याः शतादिसङ्ख्याभ्यां वा लक्षा नियुतं च तत् ।

२ द्वयचकमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥

(भूषण), लाङ्गलम् (हल), दारु (लक्ष्मी), औषधम् (दवा), मृधम् (युद्ध), अपत्यम् (सन्तान), हृदयम् (हृदय), उदरम् (पेट), काकुदम् (तालु), पत्तनम् (नगर), अजिरम् (आँगन), शृङ्गम् (सींग या शिखर) अकम् (अनाज), द्वारम् (दरवाजा), बर्हम् (मोरका पङ्क), उडु (नक्षत्र), मानसम् (मनका भाव या कर्म वा मानसरोवर तालाब), ध्वान्तम् (अन्धकार) और अव्यक्त (अरफ़ुट) लिङ्गवाले जो शब्द कहनेमें प्रयुक्त होते हैं वे सब शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं] ॥

१ 'कोटि' शब्द को छोड़कर अन्य 'शत आदि संख्या-वाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं । जैसे—शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, अर्बुदम्, लक्षम्, ... और 'लक्षा' शब्द विकल्पसे नपुंसकलिङ्ग होता है पक्षमें स्त्रीलिङ्ग 'लक्षा' होता है । उसी (लक्षा) का पर्याय 'नियुतम्' भी नपुंसकलिङ्ग है । 'कोटि' शब्द स्त्रीलिङ्ग है । 'शतादि' ग्रहण करनेसे 'विंशतिः, नवतिः, सप्ततिः, ... नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

२ अस् १, इस् २, उस् ३, अन् ४, अन्त में हो जिनके ऐसे दो अच् (स्वर) वाले शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं । और 'अन' अन्तमें हो जिसके ऐसे 'कर्ता' से भिन्न शब्द ५, नपुंसकलिङ्ग होते हैं । (क्रमशः उदा०—१ यशः (= यशस्), पयः (= पयस्), मनः (= मनस्), तपः (= तपस्), ... १ सर्पिः (= सर्पिस्), उद्योतिः (= उद्योतिस्), = हविः (= हविष्), ... १ धनुः (= धनुस्), वपुः (= वपुस्), यजुः (= यजुस्), + + । ४ वर्म (= वर्मन्), चर्म (= चर्मन्), कर्म (= कर्मन्), साम (सामन्), ... ५ गमनम् ,

२. 'कोटि-लक्षा' शब्दयोस्त्रीलिङ्गत्वे उदाहरणम्—

'कियती पञ्चसहस्रा कियती लक्षाश्च कोटिरपि कियती ।

औदार्योन्नतमनसां रत्नमती वसुमती कियती' ॥ २ ॥ इति ।

१ त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्सङ्ख्ययान्वितम् ।

२ पात्राद्यदन्तरेकार्थो द्विगुलक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥

३ द्वन्द्वैकत्वान्वयीभावौ—

रमणम्, साधनम्, पचनम्,') । 'कर्तृभिन्न' ग्रहण करनेसे 'रमणः, मधुसूदनः, मदनः,' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

१ शेष (पूर्वोक्तसे बचा हुआ अर्थात् अवधातित) त्रान्त ('त्र' अन्तमें हो जिनके वे) १, स २, ल (+ न) ३, उपधा' (अन्त के पूर्व) में हो जिनके वे शब्द, संख्यावाचक शब्द पूर्वमें जिनके हों ऐसे 'रात्र' शब्द अर्थात् संख्यापूर्वक 'रात्र' शब्दान्त शब्द ४, नपुंसकलिङ्ग होते हैं । (क्रमशः उदा०—१ (त्रान्त) जैसे—वहित्रम्, वखम्, पात्रम्, अमत्रम्, ...' । २ (लोपध) जैसे—त्रपुसम्, बिसम्, अन्धतमसम्, कुसम्, । ३ (लोपध) जैसे—कुलम्, मूलम्, तूलम्, शूलम्, । + ३ (नोपध) जैसे—भुवनम्, वनम्,) । ४ (संख्या-पूर्वक रात्र-शब्दान्त) जैसे—पञ्चरात्रम्, त्रिरात्रम्, षड्रात्रम्,) १ 'शिष्ट' ग्रहण करनेसे 'पुत्रः, वृत्रः, हंसः, कंसः, पनसः, कालः, गलः (+ जनः, रयेवः, स्वपनः),' और 'संख्या' ग्रहण करनेसे 'अर्धरात्रः, मध्यरात्रः, पूर्वरात्रः,' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

२ 'पात्र' आदि अदन्त शब्दोंके साथ एकार्थ (समाहार अर्थवाले) द्विगु शब्द लघयके अनुसार नपुंसकलिङ्ग होते हैं । (जैसे—पञ्चपात्रम्, चतुर्गुणम्, त्रिभुवनम्,) । 'पात्रादि' ग्रहण करनेसे 'त्रिलोकी, त्रिवेदी,' 'एकार्थ' ग्रहण करनेसे 'पञ्चकपालः (पाँच कपालमें पकाया हुआ) पुरो-डाशः,' और 'लक्ष्यानुसारतः' ग्रहण करनेसे 'त्रिपुरी, पञ्चमूली,' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

३ द्वन्द्व समासमें एकत्व (एकार्थक अर्थात् समाहार) १, और अव्ययी-भाव समासवाले शब्द २, नपुंसकलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—पाणिपा-दम्, शिरोग्रीवम्, मार्दङ्गिकपाणविकम्, । २ अविच्छि, अधिगोपम्, द्विमुनि, त्रिमुनि, तिष्ठद्गु,') ॥

१. 'अलोऽन्यात्पूर्व उपधा' (पा० सू० १।१।३५) इत्यनेनान्यात्पूर्वो वर्ण 'उपधा' संज्ञको भवति ।

—१ पथः सङ्ख्याव्ययात्परः ।

२ षष्ठ्याश्रयाया बहूनां चेद्विच्छाद्यं ३ संहतौ सभा ॥ २६ ॥

शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थाद्वराजकात् ।

१ 'संख्या १, अव्यय २, से परे कृतसमासान्त' (समासान्त 'अच्' प्रत्य-
यान्त) 'पथिन्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है । (क्रमशः उदा०—१ द्विगमम् ,
त्रिपथम् , । २ विपथम् , कापथम् ,) । 'संख्याव्यय' ग्रहण
करनेसे 'धर्मपथः, में 'पथः' (कृतसमासान्त) ग्रहण करनेसे 'अतिपन्थाः,
सुपन्थाः, में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ षष्ठ्यन्त (षष्ठो विभक्ति जिसके अन्तमें रहे उस) से परे कृतसमासान्त
'छाया' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है, यदि वह छाया बहुतोंकी रहे तब ।
(जैसे—इच्छायायम्, वीनां पथिनां छाया विच्छायायम्, वृद्धानां छाया वृद्ध-
च्छायायम्,) । 'बहूनां चेत्' (बहुतोंकी छाया रहे तब) ग्रहण करनेसे
'वृक्षस्य च्छाया वृक्षच्छाया, में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ षष्ठ्यन्तसे परे (आगे) रहनेपर समूहार्थक (समूह अर्थवाला) 'सभा'
शब्द १, षष्ठ्यन्तसे परे रहनेपर गृहार्थक (गृह अर्थवाला) और 'अपि'
शब्दसे समूहार्थक 'सभा' शब्द अराजक ('राजन्' शब्दसे भिन्न) राजा-
र्थक (राज-पर्यायवाले) २, अमनुष्यार्थक (मनुष्य अर्थसे भिन्न) ३, नपुंसक-
लिङ्ग होता है । (क्रमशः उदा०—१ दासीसभम् , ब्राह्मणसभम् , । २
नृपसभम् , इनसभम् , प्रभुसभम् , । ३ रक्षसभम् , पिशाचसभम् ,
.....) । 'संहतौ' (समूहार्थक) ग्रहण करनेसे 'दासीनां सभा गृहम्' इस
विग्रहमें 'दासीसभा' यहांपर, 'षष्ठ्याः' (षष्ठ्यन्तसे परे रहनेपर) ग्रहण करने-
से 'नृपतिविषये सभा 'नृपतिसभा' यहाँपर, नृणां पतिर्यस्यां सा नृपतिः
सा चासौ सभा च' यह विग्रहकर कर्मधारय समास करनेसे 'नृपतिसभा'
यहाँपर, 'अराजक' ('राजन्' शब्दसे भिन्न) ग्रहण करनेसे चन्द्रगुप्तके राज-

१. मूले 'पथ' शब्दोपादानं कृतसमासान्तस्यैव पथिन्' इत्यस्य आहकशक्तिपरम् ।

२. अत एव 'इच्छायापनिषादिभ्यः.....' (रुद्र० ४ । २०) इत्येव समीचीनः पाठः ।

दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशाः ॥ २७ ॥

१ उपज्ञोपक्रमान्तञ्च तदादित्वप्रकाशने ।

कोपञ्चकोपक्रमादि २ कन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥

३ भावेनणकचिद्ग्रन्थोऽन्ये समूहे भावकर्मणोः ।

विशेष होनेके कारण 'चन्द्रगुप्तस्य सभा' इस षष्ठीतत्पुरुषमें भी 'चन्द्रगुप्तसभा' यहाँपर, नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

१ 'उपज्ञा और उपक्रम' का प्राथम्य प्रकाशन करना हो तो षष्ठ्यन्तसे परे उपज्ञान्त (जिसके अन्तमें 'उपज्ञा' शब्द हो वह) शब्द १, 'उपक्रमान्त' (जिसके अन्तमें 'उपक्रम' शब्द हो वह) शब्द २, नपुंसकलिङ्ग होता है । ('क्रमशः उदा०—१ कस्योपज्ञा कोपज्ञं सर्गः, चन्द्रोपज्ञमसंज्ञकं व्याकरणम्, पाणिन्युपज्ञमकार्यकं व्याकरणम्, २ कस्योपक्रमः कोपक्रमः सृष्टिः, नन्दोपक्रमानि मानानि,) । 'तदादित्वप्रकाशने' ग्रहण करनेसे 'देवदत्तोपज्ञा मृन्मयः प्रकारः, देवदत्तोपक्रमो रथः,' में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ 'उशीनर देशकी जो कन्था' इस अर्थमें संज्ञा (नाम) गभ्यमान रहे तब षष्ठ्यन्तसे परे 'कन्था' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है । ('जैसे—सौशमिकन्थम्, बल्लिकन्थम्,') । 'उशीनर' ग्रहण करनेसे 'दाक्षिकन्था' (यह नाम बाह्यिक देशमें प्रसिद्ध है) यहाँपर, और 'नाम' ग्रहण करनेसे 'चैत्रकन्था' (यह संज्ञा नहीं है) यहाँपर नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ न, ण, क, चित् ('च' की जिसमें^१ इससंज्ञा हुई हो) प्रत्ययसे भिन्न जो भावमें विहित^२ कृतसंज्ञक अदन्त प्रत्यय १, और समूह अर्थमें भाव-कर्ममें विहित जो अकारान्त तद्धित प्रत्यय २, तदन्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ भूतम्, भवनीयम्, भवितव्यम्, भव्यम्, ब्रह्मभूयम्, साराविणं वर्तते, सांकुटिनं वर्तते,' । २ (समूहमें तद्धित) जैसे—भैरवम्, औपगवकम्, कैदार्यम्, कैदारकम्, राजकम्, यौवतम्, औचकम्, भावमें—

१. प्रत्ययादौ वर्तमानस्य चत्स्व 'चुट्' (पा० सू० १ । ३ । ७) इत्यनेन प्रत्ययादेरन्ते वर्तमानस्य च 'इलन्त्यम्' (पा० सू० १ । ३ । ३) इत्यनेनेरसंज्ञा विधीयते ।

२. 'कृदतिङ्' (पा० सू० १ । १ । १३) इत्यनेन कृतसंज्ञा विधीयते ।

- अदन्तप्रत्ययाः १ पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥
 २ क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्थतोदके ।
 'चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्म याजनम् ॥ ३० ॥
 राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः ।

गोखम्, शौचम्, कर्ममें—शौक्यम्, राख्यम्, चौखम्,) ।
 'नणकचिद्भयोऽन्ये' ग्रहण करनेसे 'प्रश्नः, यत्नः, स्वप्नः, न्यादः, आखूथः, विघ्नः, चयः, जयः, कारणा, हारणा, ' में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

१ पुण्य १, सुदिन २, शब्दसे परे 'कृतसमासान्त 'अहन्' शब्द नपुंसक-
 लिङ्ग होता है । ('क्रमशः उदा०—१ पुण्याहम्, २ सुदिनाहम्') । 'अहः'
 ग्रहण करनेसे पुण्यानि अहानि यस्मिन्मासि स 'पुण्याहा' (= पुण्याहन्)
 यहाँपर नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ क्रिया १ और अव्यय २ के विशेषण नपुंसकलिङ्ग और एकवचन होते
 हैं । ('क्रमशः उदा०—१ मृदु पचति, मन्दं करोति, सुखं तिष्ठन्ति योगिनः,
 । २ रम्यं श्वः, सुखदं प्रातः,') ॥

३ अब नपुंसकलिङ्गवाले कुछ शब्दोंको कण्ठरजसे स्वयं कह रहे हैं । 'उक्थम्'
 (सामभेद), ताटकम् (१० अक्षरवाले 'पङ्क्ति' जातीय वृत्तका छन्दो-विशेष),
 चोचम् (जूठा छोड़ा हुआ, तालफळ, कदली-फळ), पिच्छम् (मोरका पंख । +
 'उक्थम्' अर्थात् एक अक्षरवाला 'उक्ता' जातीय 'ओ' आदि छन्दो-विशेष स्त्री०
 स्वा० । + 'मुक्तम्' अर्थात् छूटा हुआ भा० दा०), गृहस्थूणम् (घरमें लगा हुआ
 खम्भा), तिरीटम् (शिरका बैठन, साफा, पगड़ी आदि, शिरका भूषण), मर्म (=
 मर्मन्, सन्निधस्थान, हृदय आदि मर्म स्थल), योजनम् (चार कोसका लम्बे रास्ते
 आदिका प्रमाण-विशेष), राजसूयम् (राजसूय नामका यज्ञ-विशेष), वाजपेयम्
 (वाजपेय नामका यज्ञ-विशेष), गद्यम् (कवि रचिता बिना छन्दकी शब्द-योजना,
 जैसे-दशकुमार, काश्चरी आदि ग्रन्थों में है), पद्यम् (कवि-रचित छन्दसे युक्त

१. 'चोचमुक्तम्' इति स्त्री० स्वा० पाठान्तरम् । भा० दी० तु 'मुक्तम्' इति पाठे 'मुच्छ
 ओचने' इत्यस्मात् 'क्त' प्रत्ययेन साधितवान् ।

२. 'चित्त-धयनं श्वयथुः' इति स्त्री० स्वा० वशाद्वरणं चिन्त्यम् । तस्यादन्तस्याभावात् ।

३. मूले 'अहः' इति कृतसमासान्तस्याहच्छब्दस्यानुकरणम् ।

‘माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं^१ विशलस्थालवाहिकम् ।

इति नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ पुन्नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ पुन्नपुंसकयोः शेषोऽध्वचपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

श्लोक आदि, जैसे—रघुवंश, कुमारसंभव, नैषधचरित, आदि काव्यादि ग्रन्थोंमें है), माणिक्यम् (रत्न, जवाहिर), भाष्यम् (जिसमें सूत्रके अनुसार पदोंकी व्याख्या हो और अपने पदकी भी विवेचना की गई हो ऐसा ग्रंथ-विशेष^२, जैसे—पा० सू० पर पातञ्जलभाष्य, वेदान्तसूत्रपर शाङ्करभाष्य,), सिन्दूरम् (सिन्दूर), चीरम् (कपड़ा), चीवरम् (मुनियोंका वस्त्र), पिञ्जरम् (+ पञ्जरम् । चिड़िया आदि पालनेका पिंजड़ा), लोकायतम् (तर्क), हरितालम् (हरताल नामका औषध विशेष), विदलम् (बौंसका घर्तन-विशेष), स्थालम् (भोजनपात्र विशेष), बाहिकम् (बह्म देशमें होनेवाला, कुङ्कुम । + ‘बाहुवम्’ अर्थात् बह्म देशसे होनेवाला), ये ३१ शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं ॥

इति नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ पुन्नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे ‘स्त्रीपुंसयोः.....’ (३।५३७) के पहले ‘पुन्नपुंसकयोः’ इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) शेष (पूर्वोक्तसे भिन्न) शब्द ‘पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग’ होते हैं ॥

२ अर्धर्चः अर्धर्चम् (ऋचाका आधा), पिण्याकः पिण्याकम् (तिलकी खली), कण्टकः कण्टकम् (काँटा), मोदकः मोदकम् (मिठाई, लड्डू...), तण्डकः

१. ‘.....पञ्जरम्’ इति पाठान्तरम् । २. ‘विदल स्थालवाहिकम्’ इति पाठान्तरम् ।

३. ‘भाष्य’लक्षणं पराशरपुराण उक्तं तद्यथा—

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः ।

स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः ॥ १ ॥ इति ।

मोदकस्तण्डकटङ्कः शाटकः 'कर्पटोऽर्बुदः ।

'पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

कुष्ठं मुण्डं शीघ्रं 'बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेम कुट्टिमम् ।

तण्डकम् (परिष्कार क्षी० स्वा०, उपताप-विशेष महे० । + 'दण्डकः दण्डकम्' अर्थात् दण्ड या कपडा बुनने का काष्ठ-विशेष), टङ्कः टङ्कम् (पत्थर चीरनेकी टौकी), शाटकः शाटकम् (साड़ी), कर्पटः कर्पटम् (स्थान-भेद या वस्त्र भेद । + 'खर्वटः खर्वटम्' अर्थात् नदी और पहाड़से मिश्रित स्थान 'महे० भा० नी०, ४०० ग्रामोंका संग्रहस्थान क्षी० स्वा०), अर्बुदः अर्बुदम् (आँखका रोग-विशेष, दस करोड़की संख्या), पातकः पातकम् (ब्रह्महत्या आदि पाप), उद्योगः उद्योगम् (उद्योग), चरक चरकम् (चरक नामका वैद्यक ग्रन्थ । + 'वरकः वरकम्' अर्थात् बुना हुआ कपडा), तमालः तमालम् (तम्बाकू, सुती), आमलकः आमलकम् (आँवलेका फल), नडः नडम् (भीतरी बिल, नरसल नामका तृण-विशेष), कुष्ठम् कुष्ठः (कोढ़ रोग), मुण्डम् मुण्डः (शिर), शीघ्रं शीघ्रः (मदिरा), बुस्तम् बुस्तः (+ बुस्तम् बुस्तः, पुस्तम् पुस्तः, श्वस्तम् श्वस्तः, लुस्तम् लुस्तः । मांसकी पुई क्षी० स्वा०, भूना हुआ मांस, कटहल आदिका सारभाग), क्ष्वेडितम् क्ष्वेडितः ('वीरोंका सिंहके समान गर्जना,) क्षेम क्षेमा (= क्षेमम् । कुशल), कुट्टिमम् कुट्टिमः (मणि-पत्थर आदि जडा हुआ फर्श), संगमम् संगमः (दो नदी आदिका मिलाना), शतमानम् शतमानः ('चार रूपयाभरका प्रमाण-विशेष), अर्मम् अर्मः (आँखका रोग-विशेष), शम्बलम् शम्बलः (+ सम्बलम् सम्बलः । रास्ते का कलेवा), अव्ययम् अव्ययः (व्ययका न होना,

१. 'खर्वटोऽर्बुदः' इति पाठान्तरम् ।

२. 'पातकोद्योगचरकतमालामलका' इति पाठान्तरम् ।

३. 'बुस्तम्, लुस्तम्, पुस्तम्, श्वस्तम्' इति पाठान्तराणि ।

४. 'खर्वट'लक्षणं यथा—

'यत्रैकतो भवेद्ग्रामो नगरं चैकतः स्मृतम् ।

मिश्रं तु खर्वटं नाम नदीगिरिसमाश्रयम्' ॥ १ ॥ इति ।

५. 'शतमान'लक्षणं स्मृतवुक्तं तद्यथा—

'द्वे कुण्डले रूप्यमाषो धरणं षोडशैव ते ।

शतमानं तु दशमिर्धरणैः पलमेव च' ॥ १ ॥ इति ।

संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥

कवियं 'कन्दकर्पासं' पारावारं युगन्धरम् ।

'यूपं' प्रग्रीवपात्रीवे यूपं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥

१ अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं दैविकं भुवम् ।

तन्नोक्तलिङ्ग लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषम् ॥ ३६ ॥

इति पुंनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

लिङ्ग और संख्यासे रहित सब लिङ्गों और वचनोंमें तुल्यरूपवाला ('अव्यय' 'संज्ञक शब्द-भेद'), ताण्डवम् ताण्डवः (नाचना), कवियम् कवियः (लगाम), कन्दम् कन्दः (+ कर्म । सूरन कन्दा बण्डा आदि कन्द), कर्पासम् कर्पासः (कपास, रुई), पारम् पारः (नदी आदिका पार अर्थात् दूसरा किनारा), अवारम् अवारः (नदी आदिके इधरका किनारा), युगन्धरम् युगन्धरः (जिसमें घोड़े बैल आदि जोते जाते हैं वह रथका लग्गा काष्ठ-विशेष), यूपम् यूपः (यज्ञमें पशु बाँधनेका खम्भा । + 'पूयम् पूयः' अर्थात् पीव), प्रग्रीवम् प्रग्रीवः (खिड़की), पात्रीवम् पात्रीवः (यज्ञ-पात्र-विशेष), यूपम् यूपः (माँस), चमसः चमसम् (यज्ञ-पात्र-विशेष), चिक्कसः चिक्कसम् (यज्ञ-पात्र-विशेष महे०, यवका भःटा छी० स्वा०), ये ४० शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होते हैं ॥

१ अर्धर्चादिगण में 'घृत' आदि शब्दके जो पुंलिङ्ग आदि (नपुंसकलिङ्ग) कहे गये हैं, वे निश्चय वैदिक हैं अर्थात् उनका वेदमें ही प्रयोग होता है । अतएव यहाँ लोकमें वे नहीं कहे गये हैं । यदि प्रमाद आदिसे लोकमें भी दोनों लिङ्ग के प्रयोग मिल जायँ तो शेष (अवशिष्ट) शब्दोंके समान उनका भी पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गमें प्रयोग होता है ॥

इति पुंनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१. 'कर्मकर्पासम्' इति पाठान्तरम् ।

२. 'पूयम्' इति पाठान्तरम् ।

३. 'अव्यय' लक्षणं 'तद्धितश्चास'०' (पा० सू० १ । १ । ३७) इति सूत्रीयपातजकभाष्य उक्तं तद्यथा—

'सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वांसु च विभक्तिषु ।

वचनेषु च सर्वेषु यज्ञ म्येति तदव्ययम्' ॥ १ ॥ इति ॥

अथ स्त्रीपुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ स्त्रीपुंसयो २ रपत्यान्ता ३ द्वित्रितुःषट्पदोरगाः ।

जातिभेदाः ४ पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सङ्घ ५ मल्लकः ॥ ३७ ॥

‘ऊर्मिर्वराटकः’ स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः ।

अथ स्त्रीपुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे ‘स्त्रीपुंसकयोः.....’ (३।५।३९) के पहले तक ‘स्त्री-पुंसयोः’ का अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) शब्द ‘स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग’ होते हैं ॥

२ ‘अपत्य’ अर्थमें विहित प्रत्यय जिनके अन्तमें हों वे शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं । (‘जैसे—‘उपगोरपत्यम् औपगवः औपगवी; इसी तरह गारयः गार्गी, वेदेहः वेदेही, वासिष्ठः वासिष्ठी,....’) । इनमें पहला ‘औपगव’ शब्द पुंलिङ्ग और दूसरा ‘औपगवी’ शब्द स्त्रीलिङ्ग है, इसी तरह अन्यत्र भी सम्झना चाहिये ॥

३ जाति-भेद द्विरद (दो पैरवाले) १, चतुष्पद (चार पैरवाले) २, षट्पद (छः पैरवाले) ३, और उरग (सर्प) शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं । (‘क्रमशः उदा०—१ मानुषः मानुषी, ब्राह्मणः ब्राह्मणी, शूद्रः शूद्रा, पुरुषः पुरुषी,.....’ । २ सिंहः सिंही, अजः अजा, मृगः मृगा, व्याघ्रः व्याघ्री, मार्जारः मार्जारी,.....’ । ३ अमरः अमरी, भृङ्गः भृङ्गी, षट्पदः षट्पदी,.....’ । ४ उरगः उरगी, नागः नागी, सर्पः सर्पिणी,.....’) ॥

४ स्त्री-योग के साथ पुंस (पुरुष) वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं । (‘जैसे—मातुलः मातुलानी-मातुली, इन्द्रः इन्द्राणी,.....’) । (कोई १ व्याख्याकार ‘पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः’ इसका सम्बन्ध पूर्वके ही साथ करते हैं) ॥

५ अब कुछ स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग शब्दोंको स्वयं कहते हैं—‘मल्लकः, मल्लिका (पुष्प-उता-विशेष, बेलका फूल), ऊर्मिः (पानीका तरङ्ग । + मुनिः अर्थात् ऋषि तपस्विनी), वराटकः वराटिका (कौड़ी), स्वातिः (+ स्वाती । स्वाती नामका पन्द्रहवाँ नक्षत्र), वर्णकः वर्गिका (चन्दक), झाटलिः (पलाश वृक्षके तुल्य वृक्ष-विशेष), मनुः मनायी-मनावी-मनुः (मनुस्मृतिके निर्माता

१. ‘मुनिर्वराटकः’ इति पाठान्तरम् ।

मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंलिङ्गसंग्रहः ।

अथ स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ स्त्रीनपुंसकयो २ भाविक्रिययोः व्यञ्जकसिञ्च वुञ् ।

औचित्यमौचित्यी मैत्री मैत्र्यं वुष्प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥

३ षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछायाशालासुरानिशाः ।

अनु या मनुष्य, मानुषी, मूषः मूषा (सोना-चाँदी आदि धातु गलाने की धरिया), सृपाटः सृपाटी (परिमाण-सेढ़), कर्कन्धूः (बैर-), यष्टिः (छड़ी, लाठी), शाटः शाटी (साड़ी), कटः कटी (कमर), कुटः कुटी (कुटिया), ये शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं । (इनमें एक रूपवाले शब्द दोनों लिङ्गमें तुल्यरूप होते हैं) ॥

इति स्त्रीपुंलिङ्गसंग्रहः ।

अथ स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे 'त्रिपु' (३।५।४१) के पहले 'स्त्रीनपुंसकयोः' इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) शब्द 'स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग' होते हैं ॥

२ भाव और कर्ममें विहित व्यञ् ३ और वुञ् २ प्रत्ययान्त शब्द कहीं-कहीं (सर्वत्र नहीं किन्तु लक्षणानुसार) स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ (व्यञ् प्रत्ययान्त) जैसे—औचित्यम् औचित्यी, मैत्र्यम् मैत्री, सामग्रयम् सामग्री, आर्हन्त्यम् आर्हन्ती, । १ (वुञ् प्रत्ययान्त) का 'वैरमैथुनकादिवुञ्' (३।५।४) में उदाहरण दिया गया है') । 'कचित्' (कहीं २ सर्वत्र नहीं) ग्रहण करनेसे 'शौक्यम्, ब्रह्मण्यम्, रामणीयकम्, साहाय्यकम्, शौष्योपाध्यायिका, गार्गिका, काठिका.....' यहाँपर दोनों लिङ्ग (स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) नहीं होते हैं ॥

३ षष्ठ्यन्त पूर्वपदमें रहनेपर सेना १, छाया २, शाला ३, सुरा ४, निशा ५, विकरसे स्त्रीलिङ्ग (स्त्रीलिङ्ग और पक्षमें नपुंसकलिङ्ग) होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ नृसेनम् नृसेना, राजसेनम् राजसेना, । २ वृक्षच्छायम् वृक्षच्छाया, कुड्यच्छायम् कुड्यच्छाया, । ३ गोशालम् गोशाला, पाठ-

स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥

१ आबन्तन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् ।

त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

२ त्रिषु ३ पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ ।

इति त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

४ परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥

शालम् पाठशाला, पाकशालम् पाकशाला, । ४ यवसुरम् यवसुरा, ।

५ श्वनिशम् श्वनिशा,) ॥

१ 'आप् १, अन् २, प्रत्ययान्त शब्द उत्तरपदमें (आगे) रहें तो द्विगु समासमें वे शब्द 'नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग' होते हैं तथा 'अन्' प्रत्ययके 'न्' का लोप होता है । ('क्रमशः उदा०—१ त्रिखट्वम् त्रिखट्वी, । २ त्रितक्षम्, त्रितक्षी,') ॥

इति स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

२ यहाँसे आगे 'परवलिङ्ग.....' (३।५।४२) के पहले 'त्रिषु' का अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) सब शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं ॥

३ यहाँ स्वयं कुछ त्रिलिङ्ग शब्दोंको कहते हैं—पात्री पात्रम् पात्रः (बर्तन), पुटी पुटम् पुटः (ढक्कन), वाटी वाटम् वाटः (आच्छादन, घेरा), पेटी पेटम् पेटः (बेंत आदिका बक्स), कुवलः कुवली कुवलम् (दैरका फल), दाडिमः दाडिमी दाडिमम् (अनार), ये १ शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं ॥

इति त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

४ स्वप्रधान (उभयपदप्रधान) इतरेतर द्वन्द्व समासमें १, और तत्पुरुष समासमें २, पर (आगे) वाले शब्दके समान लिङ्ग होता है । जैसे—इमे कुक्कुटमयूरयोः, इमौ मयूरीकुक्कुटौ; । २ अयं कुलब्राह्मणः, इदं ब्राह्मणकुलम्; इयमर्धपिप्पली, अयं चन्द्रार्धः; इयं सर्पमीतिः, इदं सर्पभक्षम्;) ॥

- १ अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः ।
तद्धितार्थो द्विगुः सङ्ख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥
२ बहुव्रीहिदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहरणम् ।
२ 'गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ॥ ४४ ॥

१ अर्थान्त ('अर्थ' शब्द जिसके अन्तमें हो वह) १, प्र २, आदि (अति ३, सु ४,), अलम् ५, प्राप्त ६, आपन्न ७, पूर्वमें जिनके रहें वे शब्द, तद्धितार्थ द्विगु ८, संख्यावाचक ९, सर्वनाम १०, संख्यानन्त (संख्या-वाचक शब्द जिनके अन्तमें रहें वे) ११, सर्वनामान्त (सर्वनाम जिनके अन्तमें रहे वे) १२, शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ द्विजार्था माला, द्विजार्थः सूर्यः, द्विजार्थ पयः, । २ प्रगत आचार्यः प्राचार्यः, । ('आदि' से संगृहीत । ३ अतिक्रान्तः मालामतिमालः, अतिखट्वः, ४ सूपूज्यः, सुकुलम्, सुनगरी,) । ५ अलङ्कारविकायं अलङ्गीविकः, । ६ प्राप्तजीविको भृत्यः, प्राप्तग्रामं कुलम्, । ७ आपन्नजीविको मनुष्यः, आपन्नजीविका दासी, । ८ पञ्चकपालः, पुरोडाशः, पञ्चकपालं पयः, । ९ एको विप्रः, एका वधूः, एकं वस्त्रम्, द्वौ बालकौ, द्वे बालिके, द्वे वाससी, बहवो विप्राः, बह्वयः विप्रपरान्यः, बहूनि वस्त्राणिः । १० सर्वः, सर्वा, सर्वम्; पूर्वः, पुरुषः, पूर्वा दिक्, पूर्व नगरम्; । ११ ऊनप्रयो ब्राह्मणः, ऊनतिस्रो वध्वः, ऊनत्रीणि वस्त्राणि; । १२ परमसर्वः, परमसर्वा, परमसर्वम्;) ॥

२ 'दिङ्नाम' से भिन्न बहुव्रीहि त्रिलिङ्ग होता है । ('जैसे—बहुधनः, बहुधना, बहुधनम्;') । 'आदिङ्नाम्नाम्' के ग्रहण करनेसे 'उत्तरस्यां पूर्वस्यां च मध्ये या दिक् सा 'उत्तरपूर्वा' दिक्, में त्रिलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ गुण १, द्रव्य २, क्रिया ३, का योगनिमित्त है जिनका वे शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ शुकः पटः, शुकः शाटी, शुकं वस्त्रम् । कृष्णो देहः, कृष्णा तनुः, कृष्णं शरीरम्; । २ दण्डी पुरुषः, दण्डिनी स्त्री, दण्ड कुलम्; । ३ पाचको विप्रः, पाचिका ब्राह्मणी, पाचकं विप्रकुलम्;') ॥

१ कृतः कर्तर्यसंज्ञायां २ कृत्याः कर्तरि कर्मणि ।

३ अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४१ ॥

४ षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मद्स्मृतिङव्ययम् ।

१ कर्ता अर्थमें विहित संज्ञाभिन्न (नामको छोड़कर) 'कृत्' प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । (जैसे—कर्ता पुरुषः, कर्त्री स्त्री, कर्तृ कलत्रम् ; कुम्भ-कारः पुरुषः, कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कलत्रम् ;) । 'असंज्ञायाम्' ग्रहण करनेसे 'ग्रहः, व्याघ्रः, धनञ्जयः, हरिः, प्रजा,' में और 'कर्तरि' ग्रहण करनेसे 'कृतिः,' में त्रिलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ कर्ता १ और कर्म ३ अर्थमें विहित संज्ञाभिन्न 'कृत्य' प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ वास्तव्यः, वास्तव्या, वास्तव्यम् ; ...' । २ कर्तव्यो धर्मः, कर्तव्या गुरुजनसेवा, कर्तव्यं सन्ध्योपासनम् ;) । 'कर्तृकर्मणोः' के ग्रहण करनेसे स्थातव्यं त्वया, ब्रह्मभूयम्, पृथितव्यं त्वया... में त्रिलिङ्ग नहीं होता है ॥

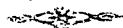
३ 'ढससे रंगा गया है' आदि ('आदि' से 'आगत १, युक्त २, देवता ३, दृष्ट ४,') अर्थमें विहित 'अण्' १, आदि प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं । (जैसे—हारिद्रः पटः, हारिद्री शाटी, हारिद्रं वस्त्रम् ; कौसुम्भम्, कौसुग्मी, कौसुम्भः, लाङ्गिकः, लाङ्गिकी, लाङ्गिकम् ; । ('आदि' से संगृहीत १ 'आगत' अर्थमें जैसे—माथुरो विप्रः, माथुरी महिषी, माथुरं वस्त्रम् ; । २ कार्तिकी पौर्णमासी, कार्तिको मासः, कार्तिकं दिनम् ; ... । ३ ऐन्द्रो मन्त्रः, ऐन्द्री ऋक्, ऐन्द्रं हविः ... । ४ वासिष्ठो मन्त्रः, वासिष्ठो ऋक्, वासिष्ठं सामः ; ...) । इसी तरह अन्यान्य अर्थ और उदाहरणोंका तर्क स्वयं कर लेना चाहिये) ॥

४ 'षट्संज्ञक १, युष्मद् २, अस्मद् ३, अव्यय ४, और तिङन्त ५, शब्द तीनों लिङ्गोंमें समान रूपवाले होते हैं । (क्रमशः उदा०—१ कति पुरुषाः, कति स्त्रियाः, कति वस्त्राणि; पञ्च षट् सप्त अष्टौ वा ब्राह्मणाः, पञ्च षट् सप्त अष्टौ वा ब्राह्मण्यः, पञ्च षट् सप्त अष्टौ वा वस्त्राणि ; । २-३ त्वम् अहं वा पुरुषः, त्वम् अहं वा स्त्री, त्वम् अहं वा कुलम् ; । ४ उरुचैः

१. 'कति च' (पा० सू० १।१।२५) इत्यनेन 'कति' शब्दस्य, णान्ताः षट् (पा० सू० १।१।२४) इत्यनेन च 'पञ्चन्, षट्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्' आदि नान्तशब्दानां 'षट्' संज्ञा विधीयते ।

१ परं विरोधे २ शेषं तु द्वेयं शिष्टप्रयोगतः । ४६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥



नीचैः पुरस्तात् पश्चाद् वा प्रासादः, उच्चैः नीचैः पुरस्तात् पश्चाद्वा पाठशाला, उच्चैः नीचैः पुरस्तात् पश्चात् वा गृहम्, । ५ पुरुषः पचति, स्त्री पचति, कुलं पचति:.....') ॥

१ लिङ्ग-विधायक वचनोंको यदि आपसमें विरोध (दो या अधिक वचनों से दो या अधिक लिङ्ग प्राप्त) हों तो पर (अन्त) वाला लिङ्ग होता है । ('जैसे—'धीः, भूः,.....' में 'स्त्रियामीदूद्विरामैकाच्' (३।५।२) चरितार्थ है और 'कर्ता, पाचकः,.....' में 'कृतः कर्तर्यसंज्ञायाम्' (३।५।४५) चरितार्थ है, फिर 'नीः, लृः' यहाँ दोनोंकी (१ ले वचनसे स्त्रीलिङ्ग और २ रे वचनसे त्रिलिङ्गकी) प्राप्ति है तब पर (आगेवाले) वचनसे उक्त लिङ्ग (त्रिलिङ्ग) ही होगा । इसी तरह अन्यान्य उदाहरणोंका तर्क कर लेना चाहिये') ॥

२ शेष (बाकी) लिङ्ग शिष्टोंके प्रयोगके अनुसार जानना चाहिये । ('जैसे—१ 'चाळनी तितउः पुमान्' (१।९।१६) इस वचनसे 'तितउ' शब्दको पुंलिङ्ग कहा गया, किन्तु 'तितउ परिवपनं भवति' (पा० भा० पृ० ४२) इस भाष्यके प्रयोगसे 'तितउ' शब्द नपुंसकलिङ्ग भी होता है । २ 'कलिका कोरकः पुमान्' (१।४।१६) इस वचनसे 'कोरक' शब्दको पुंलिङ्ग कहा गया है तो भी 'कोरकाणि' इस माघ कविके प्रयोगसे वह 'कोरक' शब्द नपुंसकलिङ्ग भी होता है') । यहाँ जो नहीं कहा गया है उसे लक्ष्यसे समझना चाहिये । ('उद्०-१ अव्यक्त गुण-लिङ्गमें नपुंसकलिङ्ग होता है, जैसे—किं तस्या 'जातं' पुमान् स्त्री वा'.... । २ 'तयप्' प्रत्ययान्त धर्मवृत्ति शब्द स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक-लिङ्ग होते हैं, जैसे—वर्णानां चतुष्टयी, वर्णानां चतुष्टयम्, वेदानां त्रयी, वेदानां त्रयम्, । छन्द (वेद) में स्वार्थविहित 'अण्' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं, जैसे—गायत्री एव गायत्रम्, अनुष्टुबेवानुष्टुभम्, । ४ 'स्तिप्' अन्तमें हो जिसके ऐसा इक् (इ, उ, ऋ, लृ) अन्तवाला शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है, जैसे—इयं वृद्धिः, इयं पचतिः, । ५ 'प्रमाण' आदि शब्द निश्चय नपुंसक-लिङ्ग होते हैं, जैसे—वेदाः प्रमाणम्, स्मृतयः प्रमाणम्,') ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥



काण्डसमाप्तिः—

१ 'इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना' परपर्यायके
'अमरकोषे' तृतीयः 'सामान्यकाण्डः' समाप्तः ।

काण्डसमाप्तिः—

१ श्री 'अमरसिंह' के बनाये हुए 'नामलिङ्गानुशासन' (अमरकोष) नामके ग्रन्थमें 'सामान्यकाण्ड' नामका तीसरा प्रकरण अङ्गसहित समर्थित होकर पूर्ण हुआ ॥

बुधस्य सन्देहहरो बुधाग्रयः शास्त्राधिनाथो बुध 'लोकनाथः' ।

शास्त्रार्थकान्तारहरिप्रवीरो विपक्षपक्षस्य हि 'पूर्णचन्द्रः' ॥ १ ॥

वेदाङ्गषट्शास्त्रसमुद्रपारङ्गतैर्बुधैश्चापि प्रभातवन्द्यः ।

स्वान्तेवसत्पूरितभू 'स्त्रिवेदी श्रीदेवनारायण' नामधेयः ॥ २ ॥

शिरसैतद्गुरुष्वेष्टपादाब्जद्वन्द्वरेणुभिः।धृताभिर्लब्धसज्जानादिस्थितमनस्तमाः॥३॥

'विहार' प्राप्त 'आरा' ह्ये सण्डले पावने शुभे ।

'केसठ' ग्रामवास्तव्य 'रामस्वार्थ' सुधीसुतः ॥ ४ ॥

'हरगोविन्दमिश्र'क्यो 'नामलिङ्गानुशासनीम्' ।

व्याख्या 'मणिप्रभा'नारनी व्यधाद्वाक्त्रोपयोगिनीम् ॥ ५ ॥

गुरुप्रसादसंख्यवज्ज्ञानेन निर्मिता शुभा । पूज्यश्रीगुरुपादाब्जेष्वेव भूयःसमर्पिता ॥ ६ ॥

नेत्राङ्गाङ्गशशाङ्कसंमिततमे श्रीवैक्रमे वरसरे

भाद्रे मास्यसिते दले वसुतिथौ सौम्ये निशीथक्षणे ।

कोपस्या'मरसिंह'पण्डितकृतेव्याख्या सुपूर्णा शुभा

भूयाच्छात्रगणस्य 'वोपकृतये लोकस्य विष्णोर्जनिः ॥ ७ ॥

इति पण्डितप्रवरश्री'रामस्वार्थमिश्र'तनूज-श्री 'हरगोविन्दमिश्र'विरचितायां

'मणिप्रभा'ख्या'अमरकोष' व्याख्यायां तृतीयः 'सामान्यकाण्डः' समाप्तः ।

१. 'इत्यमर.....समर्थितः' इत्ययं श्लोकः केवलं महेश्वरैव व्याख्यातः । भा० दी० मूले, क्षी० स्वा० व्याख्यायां च [] ईदृकीष्टे मूलमात्रमुपलभ्यत इत्यवधेयम् ।

२. 'व वा यथा तथैवैवम्' (१।४।९) इति ग्रंथकारोक्तेरत्र 'वा' शब्द इवार्थक इत्यवधेयम् ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

परिशिष्टम्

आदित्याः (१।१।१०) — हरिवंशोक्ता द्वादशादित्यकथाऽत्रोच्यते, तथा हि—
 ‘मरीचात्कश्यपाज्जातास्तेऽदित्या दक्षकन्यया । तत्र शक्रश्च विष्णुश्च जज्ञाते पुनरेव ह ॥
 अर्यमा चैव धाता च त्वष्टा पूषा च भारत । विवस्वान् सविता चैव मित्रो वरुण एव च ॥
 अंशो भगश्चातितेजा आदित्या द्वादश स्मृताः’ । इति शब्दकल्पद्रुमकोशः ॥

काश्यान्त्वन्य एव द्वादशादित्याः विद्यन्ते इत्युक्तं काशीखण्डे । तथा हि—
 इति काशीप्रभावज्ञो जगज्जुस्तमोनुदः । कृत्वा द्वादशधाऽऽत्मानं काशीपुर्यां व्यवस्थितः ॥
 लोकार्क उत्तरार्कश्च शम्बादित्यस्तथैव च । चतुर्यो ह्युपदादित्यो बृहत्केशवसङ्गौ ॥
 दशमो विमलादित्यो गङ्गादित्यस्तथैव च । द्वादशश्च रमादित्यः काशीपुर्यां षटोद्भवः ॥
 तमोऽधिकेभ्यो दुष्टेभ्यः क्षेत्रं रक्षन्त्यमी सदा’ ।

इति काशीखण्डे अ० ४६; वाचस्पत्याभिधानस्य ३८०६ तमे पृष्ठे ॥

यथा वा—विष्णुधर्मोत्तरे भारते चोक्ता द्वादशादित्याः—

‘धाता मित्रोऽर्यमा रुद्रो वरुणः सूर्य एव च । भगो विवस्वान् पूषा च सविता दशमस्तथा ॥
 एकादशस्तथा त्वष्टा विष्णुर्द्वादश उच्यते’ । इति ॥

द्वादशमासभेदेनान्य एव द्वादशादित्या आदित्यहृदये उक्तास्तेऽत्र निर्दिश्यन्ते ।

तथा हि—

‘अश्विणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा । चैत्रे मासि च वेदज्ञो वैशाखे तपनः स्मृतः ॥
 ज्येष्ठे मासि तपेदिन्द्र आषाढे तपते रविः । गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥
 श्वे हिरण्यरेताश्च कार्तिके च दिवाकरः । मार्गशीर्षे तपेच्चैत्रः पौषे विष्णुः सनातनः ॥

इत्येते द्वादशादित्याः काश्यपेयाः प्रकीर्तिताः’ ।

इति वाचस्पत्याभिधानस्य ६९६ तमे पृष्ठे ॥

विश्वेदेवाः (१।१।१०)—विश्वेदेवा दश प्रोक्तास्तेषां नामान्युल्लिख्यन्ते ।

तथा हि—

‘ऋतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामः काकस्तथा धुरिः । रोचनोमाद्रबाध्वैव तथा चान्यः पुरुरवाः ॥
 विश्वेवा भवन्त्येते दश भ्रातृषु पूजिताः’ । इति वाचस्पत्याभिधाने ४९२६ तमे पृष्ठे ॥

अन्यच्च बह्विपुराणे—

‘ऋतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामः काकस्तथा धनिः । रोचकश्चाद्रबाध्वैव तथा चान्यः पुरुरवाः ॥

विश्वेदेवा भवन्त्येते दश सर्वत्र पूजिताः ॥ इति वह्निपुराणे गणनामाध्यायः ॥

इति शब्दकल्पद्रुमकोशस्य ४४० पृष्ठे ।

वसवः (१।१।१०)—वसवोऽष्टौ । ते यथा—

‘धरो ध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवानिलोऽनलः । प्रत्यूषश्च प्रभासश्च **वसवोऽष्टौ** विति स्मृताः ॥

इति ‘भा० आ० ६६ अ०’ इति वावस्पत्याभिधानस्य ४८६३ तमे पृष्ठे ।

धरो ध्रुवश्च सोमश्च विष्णुश्चैवानिलोऽनलः । प्रत्यूषश्च प्रभासश्च **वसवोऽष्टौ** क्रमात्स्मृताः ॥

इति भरतः । दक्षो द्वितीयजन्मनि षष्ठमन्वन्तरे असिक्कन्यां पत्न्यां षष्टिः कन्या जनयामास । ताः प्रजापतिभ्यो दत्तवान् । धर्माय दश, तासां नामानि—‘मानुर्लम्बा ककुयामिर्विष्वा साध्या मरुत्वती । वसुमुहूर्ता सङ्कल्पा । आसां मध्ये वसोरष्टौ वसवः पुत्रा जाताः । ते यथा—१ द्रोणः, २ प्राणः, ३ ध्रुवः, ४ अर्कः, ५ अग्निः ६ दोषः, ७ वास्तुः ८ विभावसुश्चेति’ ॥

मतान्तरोक्ता अष्टौ वसवो यथा—

‘१ धरः, २ ध्रुवः, ३ सोमः, ४ सावित्रः, ५ अनिलः, ६ अनलः, ७ प्रत्यूषः, ८ प्रभासश्चेति’ महाभारते दानधर्मः । अचि च—

‘आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोऽनलः । प्रत्यूषश्च प्रभासश्च **वसवोऽष्टौ** प्रकीर्तिताः ॥

इति वह्निपुराणे काश्यपीयप्रजासर्गनामाध्यायः । कूर्मपुराणे १४ तमाध्यायश्चेति ॥

तुषिताः (१।१।१०) गणदेवताभेदे १२ मन्वन्तरभेदे भिन्ननामानो यथा—

‘पूर्वमन्वन्तरे श्रेष्ठा द्वादशासन् सुरोत्तमाः । तुषिता नाम तेऽन्योन्यमूर्तुर्वैवस्वतोऽन्तरे ॥

उपस्थितेऽतियशसश्चाक्षुषस्यान्तरे मनोः । समवायीकृताः सर्वे समागम्य परस्परम् ॥

आगच्छत हुतं देवा अदिति संप्रविश्य वै । मन्वन्तरे प्रसूयामस्तत्र श्रेयो भविष्यति ॥

एवमुक्त्वा तु ते सर्वे चाक्षुषस्यान्तरे मनोः । मारीचात्करयपाजातास्तेऽदित्यादक्षकन्यया ॥

तत्र विष्णुश्च शक्रश्च जज्ञाते पुनरेव च । अर्यमा चैव धाता च त्वष्टा पूषा तथैव च ॥

विवस्वान् सविता चैव मित्रो वरुण एव । अंशो भगश्चादितिजा आदित्या द्वादश स्मृताः ॥

चाक्षुषस्यान्तरे पूर्वमासन् ये तुषिताः सुराः ।

वैवस्वतोऽन्तरे ते वै आदित्या द्वादश स्मृताः ॥’

इति हरिवंशे त्रयाध्यायः ॥ तथा चादित्यरूपा द्वादश—

‘प्राणापानाबुदानश्च समानो व्यान एव च । चक्षुः श्रोत्रं रसो घ्राणस्पर्शौ बुद्धिर्मनस्तथा ॥

१. अत्रैवाग्रे प्रत्येकस्य सन्ततिवर्णनं नाम चाग्रे विस्तरेण वर्णितम् ।

द्वादशैते तु तुषिता देवाः स्वारीचिषोऽन्तरे' । इति सारसुन्दरीवचनाद् द्वादश ।

तोषः प्रतोषः सन्तोषो भद्रशान्तिरिद्धस्पतिः । इध्मः कविर्विभुः स्वाहासुदेवो रोचनो द्विषट् ॥

तुषिता नाम ते देवा आसन् स्वायम्भुवोऽन्तरे' ॥

इति शब्दार्थचिन्तामणिधृतवाक्योक्त्या षट्त्रिंशत् ॥

इति वाचस्पत्याभिवानस्य ३३३७ तमे पृष्ठे, शब्दकल्पद्रुमस्य ६४० पृष्ठे च ॥

ये च द्वादश इति मन्यन्ते, त एकैकमन्वन्तरापेक्षया द्वादशेति वर्णयन्ति समष्टयभिप्रायेण षट्त्रिंशदिति विवेकः । तदभिप्रायेणैव 'षट्त्रिंशत्तुषिता मताः' इत्युक्तं टिप्पणे इत्यवधेयम् ॥

आभास्वराः (१।१।१०)—आभास्वराः' द्वादश । तथाहि—

'आत्मा ज्ञाता दमो दान्तः शान्तिर्ज्ञानं शमस्तपः ।

कामः क्रोधो मदो मोहो द्वादशाभास्वरा इमे' ॥

इति वाचस्पत्याभिधाने ७५४ तमे पृष्ठे, शब्दकल्पद्रुमस्य १७९ तमे पृष्ठे च ॥

अनिलः (१।१।१०)—अग्निपुराणे वायोरुपपञ्चाशन्नामान्युक्तानि, तानीह प्रोच्यन्ते । तथा हि—

'एकज्योतिश्च द्विज्योतिस्त्रिज्योतिर्ज्योतिरेव च । एकशक्नो द्विशकश्च त्रिशकश्च महाबलः ॥
इन्द्रश्च गत्यदृश्यश्च ततः पतिसकृत्परः । मितश्च संमितश्चैव सुमतिश्च महाबलः ॥
ऋतजित्सत्यजिच्चैव सुषेणः सेनजित् । अग्निमित्रोऽनमित्रश्च पुरुमित्रोऽपराजितः ॥
ऋतश्च ऋतवाद्दक्षश्च धर्ता च धरणो ध्रुवः । विधारणो नाम तथा देवदेवो महाबलः ॥
इन्द्रश्चाप्यदृक्षश्च एते दश मितशिनः । व्रतिनः प्रसदृक्षश्च सभरश्च महायशः ॥
घाता दुर्गो धृतिर्भीमस्त्वभियुक्स्त्वपात्सहः । द्युतिर्यपुरनाय्योऽयं वासः कामो जयो विराट् ॥
इत्येकोनाश्च पञ्चाशन्मरुतः पूर्वसम्भवाः' ॥ इति बह्विपुराणे गणनामाध्यायः ॥

हेमाद्रौ दानखण्डे वायुपुराणोक्तान्येकोनपञ्चाशन्मरुन्नामानि, तेषां सप्त गणाश्चो-
क्तास्तेऽत्र निर्दिश्यन्ते । तथा हि—मरुन्नामानि तु वायुपुराणे—
'ततस्तेषां तु नामानि मातापित्रोः ? प्रचक्रतुः । तद्विधैः कर्मभिश्चैव मरुतान्तो पृथक् पृथक् ॥

शुक्रज्योतिस्तथाऽऽदित्यश्चित्रज्योतिस्तथाऽपरः ।

सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मान् सत्यहा ऋतपास्तथा ॥

१. इदं 'आभास्वराश्चतुःषष्टिः' इति टिप्पणीवचनविरुद्धमपि ६४ भेदानां काव्यनुप-
लब्धेर्द्वादशैवात्र निर्दिष्टाः । ६४ भेदान् सूचयतो विदुषः परं कृतञ्चो भवेयम् ।

प्रथमोऽयं गणः प्रोक्तो द्वितीयं तु निबोधत । ऋतजित्सत्यजिच्चैव सुषैषः सेनजित्पथा ॥
 अन्तिमित्रो ह्यमित्रश्च दूरेमित्रस्तथा परः । गण एष द्वितीयस्तु तृतीयोऽयं निबोधत ॥
 ऋतः सत्यो ध्रुवो धर्ता विधर्ताऽप्यविधारयः । धरुणश्च तृतीये तु चतुर्थं मे निबोधत ॥
 ध्वान्तश्च धुनितश्चैव सभरश्च तथा गणः । ईदृक्षासः पुरुषश्चैव ! अन्यादृक्षास एव नः ॥
 संमिताः समदृक्षासः प्रतिदृक्षास वै गणः । मरुतेन्द्रः सरभसस्तथा देवविशोऽपरः ॥
 यज्ञश्चैवानुषर्त्मानस्तथाऽन्यो मानुषोविशः । दैत्यदेवाः समाख्याताः सप्तैते सप्तका गणाः ॥
 एते ह्येकोनपञ्चाशन्मरुतो नामतः स्मृताः ॥ इति हेमाद्रौ दानखण्डे ७७६ तमे पृष्ठे ॥

वायवः पञ्चैवेति केचिदाहुस्तेऽत्र लिखन्ते । तथा हि—‘वायुश्च पञ्चभूतान्त-
 र्गतभूतविशेषः । तद्विशेषविवरणं यथा—वायवः प्राणापानसमानव्यानोदानाः । तत्र
 १ प्राणो नाम प्राग्गमनवाजासाम्रवर्ती, २ अपानो नाम अवाग्गमनवान् पाय्वादिस्था-
 नवर्ती, ३ व्यानो नाम विध्वगमनवान् अखिलशरीरवर्ती, ४ उदानो नाम कण्ठस्था-
 नीय ऊर्ध्वगमनवानुत्क्रमणवायुः, ५ समानो नाम शरीरमध्यगताशितपीताजादिसमी-
 करणकरः (समीकरणन्तु परिपाककरणं रसरुधिरशुक्लपुरीषादिकरणम्) इति ।

अन्ये तु ‘१ नाग २ कूर्म ३ कृकर ४ देवदत्त ५ धनञ्जय’ख्याः पञ्चान्ये वाय-
 वः सन्तीत्याहुः । तत्र १ नाग उद्गिरणकरः, २ कूर्मो निमोलनादिकरः, ३ कृकरः
 क्षुधाकरः, ४ देवदत्तो जृम्भणकरः, ५ धनञ्जयः पोषणकरः । एतेषां प्राणादिष्वन्त-
 र्भावात्पञ्चैवेति केचित् । इति शब्दकल्पद्रुमकोषः ३४१ पृष्ठे । वाचस्पत्युक्तान्येको-
 नपञ्चाशद्वायुनामानि तत्रैव शब्दकल्पद्रुमकोषे १६४-१६८ तमे पृष्ठे ‘अनिल’ शब्द-
 विवरणे सविस्तरं द्रष्टव्यानि ॥

महाराजिकाः (११११०)—एषां विंशत्यधिकशतद्वयं भेदाः सन्ति ॥

साध्याः (११११०)—साध्या द्वादशविधास्तेषां नामानि यथा—

‘मनो मन्ता तथा प्राणो भरोऽपानश्च वीर्यवान् । निर्भक्षो नरवश्चैव दंशो नारायणो वृषः ॥

प्रभुश्चेति समाख्याताः साध्या द्वादश देवताः ।

इति वाचस्पत्याभिधानस्य ५२७९ तमे पृष्ठे ॥

रुद्रः (११११०)—रुद्रा एकादश सन्ति । ते यथा—१ अजः, २ एक-
 पाद्, ३ अहिष्मन्, ४ पिनाकी, ५ अपराजितः, ६ त्र्यम्बकः, ७ महेश्वरः,

८ वृषाकपिः, ९ शम्भुः, १० हरणः, ११ ईश्वरश्चेति, इति महाभारते दानधर्मः ॥
अपि च—

‘अजैकपादहिमघ्नो विरूपाक्षः सुरेश्वरः । जयन्तो बहुरूपश्च त्र्यम्बकोऽप्यपराजितः ॥
वैवस्वतश्च सावित्रो हरो रुद्रा इमे स्मृताः’ । इति जटाधरः ॥ अन्यच्च—

अजैकपादहिमघ्नस्तद्वद्वरुदश्च वीर्यवान् । त्वष्टृश्चैवात्मजः पुत्रो विश्वरूपो महातपाः ॥
हरश्च बहुरूपश्च त्र्यम्बकश्चापराजितः । वृषाकपिश्च शम्भुश्च कपर्दी रैवतस्तथा ॥
एकादशैते कथिता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः’ । इति गारुडे ६ तमेऽध्याये ॥

अग्निपुराणे ‘त्वष्टृस्थाने ‘कृत्तिवासाः’ इत्युक्तम् ॥ अन्यच्च—

‘अजैकपादहिमघ्नो विरूपाक्षोऽय रैवतः । हरश्च बहुरूपश्च त्र्यम्बकश्च सुरेश्वरः ॥
सावित्रश्च जयन्तश्च पिनाको चापराजितः । एते रुद्राः समाख्याता एकादश गणेश्वराः
इति मातस्ये ५ मेऽध्याये’ इति शब्दकल्पद्रुमकोषस्य १६७ तमे पृष्ठे ॥

हेमाद्रौ ब्रह्माण्डपुराणे अष्टैव रुद्राः समाख्याताऽस्तेऽत्र यथाक्रमं स्त्रीपुत्रनाम-
सहिता निर्दिश्यन्ते । तथा हि—

रुद्रो भवश्च शर्वश्च ईशः पशुपतिस्तथा । भीम उग्रो महादेव एते रुद्राः प्रकीर्तिताः ॥
जटिलाश्चर्मवधनाः सर्वे खट्वाङ्गशूलिनः । तेषां भार्याश्च पुत्राश्च नामतः कथयामि ते ॥
सौवर्चलाऽङ्गवादा च विकेशी च शिवा तथा ।

स्वाहा दिशा च दीक्षा च रोहिणी च तथा कमात् ॥

ताश्च स्त्रीवेषधारिण्यः सर्वाभरणभूषिताः । रुद्रपत्न्य इमाश्चाष्टौ पुत्राश्च शृणु नारद ॥
शनैश्वरश्च शुक्रश्च लोहिताङ्गो मनोजवः । वसन्तः स्वर्गः सन्तानो बुधश्चैव यथाक्रमम्’ ॥
इति हेमाद्रेर्दानखण्डे ७४५ तमे पृष्ठे ॥

षडभिज्ञः (१।१।१४)—अभिधर्मकोषोक्ताः षडभिज्ञा यथा—

१ अद्वि-श्रोत्र-मनः-पूर्वनिवास-च्युत्युपपत्तयेत् ज्ञानसाक्षा क्रियाभिज्ञा षड्-
विधाः । २ दिव्यश्रोत्रज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा । ३ चेतःपर्यायज्ञानसाक्षात्क्रिया-
भिज्ञा । ४ पूर्वनिवासानुस्मृतिज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा । ५ च्युत्युपपादनज्ञानसाक्षात्क्रि-
याभिज्ञा । ६ आश्रवक्ष्यज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा’ इति अभिधर्मकोषः ७।४१ ॥

दशबलः (१।१।१४)—अभिधर्मकोषे दशबलानि बुद्धस्यान्यान्येवोक्तानि ।
तानि यथा—

‘ध्यानाध्यक्षाविमोक्षेषु भ्रान्तौ च प्रतिपत्सु वा । दश द्वे संवृतिज्ञाने षड्वा दश वा क्षये ॥

१ स्थानासहज्ञानबलम् । २ कर्मविपाकज्ञानबलम् । ३—३ ध्यान-विमोक्ष-

समाधि-समापत्तिज्ञानबलानि । ७ सर्वत्रगामिनीप्रतिपञ्ज्ञानबलम् । ८—९ पूर्व-
निवासबलम् , च्युत्युत्पादनबलञ्च । १० अश्रवक्ष्यज्ञानबलम्' । इति अभिष-
र्गकोषः ७।२९ ॥

अष्टमूर्तिः (ज्ञे० १४—१।१।३४)—अथाष्टमूर्तैः प्रत्येकमूर्तिनामान्युच्यन्ते ।
तथा हि—१ 'क्षितिमूर्तिः शर्वः, २ जलमूर्तिर्भवः, ३ अग्निमूर्तिर्ऋदः, ४ वायुमूर्ति-
रुद्रः, ५ आकाशमूर्तिर्भीमः, ६ यजमानमूर्तिः पशुपतिः, ७ चन्द्रमूर्तिर्महादेवः,
८ सूर्यमूर्तिरीशानश्चेति तन्त्रशास्त्रम् । एताः शरभरूपिशिवस्याष्टपादा इति कालि-
कापुराणम् ॥ अन्यच्च—

'अथाग्नी रविरिन्दुश्च भूमिरापः प्रभञ्जनः । यजमानः खमधौ च महादेवस्य मूर्तयः' ॥
इति 'शब्दमाला' इति शब्दकल्पद्रुमस्य १४९ तमे पृष्ठे ॥

सप्तमातरः (ज्ञे० १६—१।१।३५)—भरतेन सप्त मातर उक्तास्तथा हि—
'ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री रौद्री वाराहिकी तथा ।
कौबेरी चैव कौमारी मातरः सप्त कीर्तिताः' ॥ इति ।

अन्यथाश्च सप्तमातरो यथा—

'आदौ माता गुरोः पत्नी ब्राह्मणी राजपत्निका ।

गावी धात्री तथा पृथ्वी सप्तैता मातरः स्मृताः' ॥ इति ॥

अन्यत्राष्टमातरोऽप्युक्तास्तथा हि—

'ब्राह्मी माहेश्वरी चैव वाराही वैष्णवी तथा ।

कौमारी चैव चामुण्डा चचिकेत्यष्ट मातरः' ॥ इति ॥

आदृतत्वे बह्वृचपरिशिष्टे गौर्यादिषोडशमातरोऽप्युक्तास्तथा यथा—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥

शान्तिः पुष्टिर्धृतिस्तुष्टिरात्मदेवतया सह ।

आदौ विनायकः पूज्यः अन्ते च कुलदेवताः ॥ इति ॥

वैष्णवपूज्यास्त्वन्या एव षोडश मातरः उक्तास्तथा हि—

'यत्र मातृगणाः पूज्यास्तत्र ह्येताः प्रपूजयेत् । सदा भगवती पौर्णमासी पञ्चान्तरङ्गिका ॥

गङ्गा कलिन्दतनया गोपी वृन्दावती तथा । गायत्री तुलसी वाणी पृथिवी गौश्व वैष्णवी ॥

श्रीयशोदा देवहूतिदेवकीरोहिणीमुखाः । श्रीसीता द्रौपदी कुन्ती ह्यपरया महर्षयः ॥

रुक्मिण्यायास्तथा चाष्टमहिषी याश्च ता अपि' ।

इति पाद्मे उत्तरखण्डे ७८ तमेऽध्याये' इति शब्दकल्पद्रुमस्य ६९० तमे पृष्ठे ॥

दुर्गाः (१।१।३७)—दुर्गासप्तशत्यां नव दुर्गा उक्ताः । तथा हि—
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी । तृतीयं चन्द्रवर्ण्येति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीतथा । सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥
नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः । इति दुर्गासप्तशतीकवचम् ३—५ ॥

निधिः (क्षे० ३०—१।१।७१) मूले नवनिधय उक्ताः । किन्तु हारावल्यां
'खर्वश्च निधयो नव' इत्यस्य स्थाने 'वर्चोऽपि निधयो नव' इति पाठ उपलभ्यते ।
मार्कण्डेयपुराणे तु 'वर्च' इति हित्वाऽष्टावेवोक्ता' इति भरतः । तल्लक्षणं फलञ्च
मार्कण्डेयपुराणस्य ६८ तमेऽध्याये द्रष्टव्यम् ॥

सन्ध्या (१।४।३)—मुहूर्तचिन्तामणौ, तद्व्याख्यायां पीयूषधारायां चोक्तं
सन्ध्यालक्षणं निदिश्यते । तथा हि—

‘सन्ध्या त्रिनाडीप्रमितार्कबिम्बादर्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र ।

चेद्याम्यसौम्ये अयने क्रमात्स्तः पुण्यौ तदानीं परपूर्वधसौ’ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणिः ३।७॥ अत्र पीयूषधाराख्यटीकाकारः । ‘तदाह वराहः—

अर्धास्तमितानुदितात्सूर्यादस्पष्टभं नभो यावत् ।

तावत्सन्ध्याकालश्चिह्नैरेतैः फलं ब्रूयात्’ ॥ इति ॥

सन्धयोर्लक्षणान्तरे । तत्प्रमाणमाह नारदः—

‘अर्धास्तमनसन्ध्या हि घटिकात्रयसंमिता । तत्रैवाद्धोदयात्प्रातर्घटिकात्रयसंमिता’ ॥ इति ॥

स्कन्दपुराणेऽपि—

‘उदयात्प्राक्तनी सन्ध्या घटिकात्रयमुच्यते ।

सोऽयं सन्ध्या त्रिघटिका ह्यस्तादुपरि भास्वतः’ ॥ इति ॥

अत्र सन्ध्यालक्षणोऽर्धास्तमितानुदितवाक्यस्य स्कन्दपुराणीयवाक्यस्य च यव-
ब्रीहिवद्विकल्पः’ इति ॥

कल्पः (१।४।२१)—त्रिंशत्कल्पस्य ब्रह्मणो मासो जायते । तेषाञ्च त्रिंश-
त्कल्पानां नामान्यत्र निदिश्यन्ते । तथा हि—‘अथ कल्पदानं मत्स्यपुराणे—

‘कल्पानुकीर्तनं वच्ये [सर्वपापप्रणाशनम् । यस्यानुकीर्तनादेव वेदपुण्येन युज्यते ॥

प्रथमः श्वतकल्पस्तु द्वितीयो नीललोहितः । वामदेवस्तृतीयस्तु ततो रथन्तरोऽपरः ॥

रौरवः पञ्चमः प्रोक्तः षष्ठः प्राण इति स्मृतः । सप्तमोऽथ वृहत्कल्पः कन्दर्पोऽष्टम उच्यते ॥

सथोऽथ नवमः प्रोक्त ईशानो दशमः स्मृतः । व्यान एकादशः प्रोक्तस्तथा सारस्वतोऽपरः ॥

त्रयोदश उदानस्तु गारुडोऽथ चतुर्दशः । कूर्मः पञ्चदशो ज्ञेयः पौर्णमासी प्रजायते ॥

षोडशो नारसिंहस्तु समानस्तु ततः परः । आग्नेयोऽष्टादशः प्रोक्तः सोमकल्पस्तथा परः ॥
मानवो विंशतिः प्रोक्तस्तत्पुमानिति चापरः । वैकुण्ठश्चापरस्तद्वल्लक्ष्मीकल्पस्तथा परः ॥
चतुर्विंशस्तथा प्रोक्तः सावित्रीकल्पसंज्ञकः । पञ्चविंशतिमो घोरो वाराहस्तु ततोऽपरः ॥
सप्तविंशोऽथ वैराजो गौरीकल्पस्तथाऽपरः । माहेश्वरस्तथा प्रोक्तस्त्रि रो यत्र घातितः ॥
पितृकल्पस्तथा ते तु या कुट्टूर्ब्रह्मणः स्मृता । इत्ययं ब्रह्मणो मासः सर्वपापप्रणाशनः ॥

इति हेमाद्रौ दानखण्डे ७८३ तमे पृष्ठे ॥

भैरवम् (१।७।१९)—अयं भैरवशब्दः पुंलिङ्गत्वे देवविशेषस्य वाचकः ।
तस्य चाष्टौ भेदाः सन्ति । ते यथा— १ अभिताङ्गः, २ रुद्रः, ३ चण्डः, ४ क्रोधः,
५ उन्मत्तः, ६ कुपितः, ७ भीषणः, ८ संहारश्चेति ॥

द्वीपः (१।१०।८—अग्निपुराणे सप्त द्वीपा उक्ताः । ते च लवणादिभिः
सप्तसमुद्रैरावृता इत्युक्तम् । तथा हि—

‘जम्बूद्वीपश्चाह्वयौ द्वीपौ शाल्मलिश्चापरो महान् ।

कुशः क्रौञ्चस्तथा शाकः पुष्करश्चेति सप्तमः ॥

एते द्वीपाः समुद्रैस्तु सप्त सप्तभिरावृताः । लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिदुग्धजलैः समम् ॥

इत्यग्निपुराणम् अध्यायः १०८ श्लो० १—२ ॥

नल्वः—गव्यूतिः (२।१।१८)—हेमाद्रौ दानखण्डे ‘नल्व-गव्यूति’ लक्षण-
न्युक्तानि । तथा हि—

‘जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः । प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते ॥
त्रसरेणुस्तु विज्ञेयो ह्यष्टौ ये परमाणवः । त्रसरेणवस्तु ते ह्यष्टौ रथरेणुस्तु स स्मृतः ॥
रथरेणवस्तु ते ह्यष्टौ बालाग्रं तत्स्मृतं बुधैः । बालाग्राण्यष्ट लिखा तु यूका लिक्षाष्टकं बुधैः ॥
अष्टौ यूका यवं प्राहुरङ्गुलं तु यथाष्टकम् । द्वादशाङ्गुलमात्रा वै वितस्तिस्तु प्रकीर्तिता ॥
अङ्गुष्ठस्य प्रदेशिन्या न्यासः प्रादेश उच्यते । तालः स्मृतो मध्यमया गोकर्णस्थाप्यनामया ॥
कनिष्ठया वितस्तिस्तु द्वादशाङ्गुलिका स्मृता । रत्निस्त्वङ्गुलपर्वणि विज्ञेयस्त्वेकविंशतिः ॥
चत्वारि विंशतिश्चैव हस्तः स्यादङ्गुलानि तु ।

किष्कुः स्मृतो द्विरत्निस्तु द्विचत्वारिंशदङ्गुलः ॥

षण्णवत्यङ्गुलैश्चैव धनुर्दण्डः प्रकीर्तितः । धनुर्दण्डयुगं नालिङ्ग्यो ह्येते यथाङ्गुलेः ॥
धनुषा त्रिंशता नल्वमाहुः संख्याविदो जनाः । धनुःसहस्रे द्वे चापि गव्यूतिरुपदिश्यते ॥
अष्टौ धनुःसहस्राणि योजनं तु प्रकीर्तितम् ॥

मार्कण्डेयपुराणे—

‘परमाणुः परं सूक्ष्मं त्रसरेणुर्महीरजः । बालाग्रं चैव लिखा च यूका चाथ यवोऽङ्गुलम् ॥

कमादष्टगुणान्याहुर्ववा अष्टौ ततोऽङ्गुलम् ।
षडङ्गुलं पदं प्राहुर्वितस्त्रिद्विगुणं स्मृतम् ॥
द्वे वितस्त्रौ ततो हस्त्रौ ब्रह्मतीर्थं द्विचेष्टनैः ।
चतुर्हस्तौ धनुर्दण्डो नालिका तशुगेन तु ॥
कोशो धनुस्सहस्रे द्वे गन्धुतिश्च चतुर्गुणा ।
द्विगुणं योजनं तस्मात्प्रोक्तं संख्यानकोविदैः ॥

इति हेमाद्रौ दानखण्डे १३१-१३२ तमे पृष्ठे ॥

पर्वतः (२।३।१)—अथ प्रसङ्गाद्गुरुपुराणोक्तसप्तकुलपर्वतानां नामान्गुक्ति-
रुयन्ते । तथा हि—

त्रिकोणे संस्थितो मेरुरधः कोणे च मन्दरः ।
दक्षकोणे च कैलासो वामकोणे हिमाचलः ॥
निषधश्चोर्ध्वरेखायां दक्षायां गन्धमादनः ।
रमणो वामरेखायां सप्तैते कुलपर्वताः ॥

इति गुरुपुराणे १५ अ० ६०-६१ श्लो० ॥

यमः (२।७।४८)—अत्रिस्मृतौ तु यमा दश उक्ताः । तथा हि—

‘भानृशंस्यं क्षमा सत्यमहिंसादानमार्जवम् ।

प्रीतिः प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश’ ॥ इति अत्रिस्मृतिः १।४८ ॥

नियमाः (२।७।४९) अत्रिस्मृतौ नियमा दशसंख्यका उक्ताः । तथा हि—

‘शौचमिज्या तपो दानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रहौ ।

व्रतमौनोपवासं च स्नानं च नियमा दश’ ॥ इति अत्रिस्मृतिः १।४९ ॥

दुर्गः (२।८।१७)—दुर्गस्य नवधात्वं शुक्नीतावुक्तमत्र प्रोच्यते, तथा हि—

‘षष्ठं दुर्गप्रकरणं प्रवक्ष्यामि समासतः ।

खातकण्टकपाषाणैर्दुष्पथं दुर्गमैरिणम् ॥

परितस्तु महाखातं पारिखं दुर्गमेव तत् ।

इष्टकोपलमृत्तित्तिप्राकारं पारिधिं स्मृतम् ॥

महाकण्टकवृक्षौघैर्ग्यातं तद्वनदुर्गमम् ।

जलमावस्तु परितो बन्धदुर्गं प्रकीर्तितम् ॥

जलदुर्गं स्मृतं तज्ज्ञैरासमन्तान्महाजलम् ।

सुवारिपृष्ठोच्चधरं विविकते गिरिदुर्गमम् ॥

अभेयं व्यूहविद्वीरव्याप्तं तत्सैन्यदुर्गमम् ।

सहायदुर्गं तज्ज्ञेयं शूरातुकूलबान्धवम् ॥

एतेषु किमपेक्षया कस्य श्रेष्ठत्वमित्यपि तत्रैव—

‘पारिखादैरिणं श्रेष्ठं पारिघं तु ततो वनम् ।

ततो धन्वं जलं तस्माद्गिरिदुर्गं ततः स्मृतम् ॥

सहायसैन्यदुर्गे तु सर्वदुर्गप्रसाधके ।

ताभ्यां विनाऽन्यदुर्गाणि निष्फलानि महीभुजाम् ॥

श्रेष्ठं तु सर्वदुर्गेभ्यः सेनादुर्गं स्मृतं बुधैः’ ॥ इति शुक्रनीतिः ४।६।१-८ ॥

राज्याङ्गानि (२।८।१८)—शुक्रनीत्यां सप्त राज्याङ्गान्युक्तानि । तथा हि—

‘स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।

सप्ताङ्गमुच्यते राज्यं तत्र मूर्धा नृपः स्मृतः ॥

दृगमात्यः सुहृच्छ्रेत्रं मुखं कोशो बलं मनः ।

हस्तौ पादौ दुर्गराष्ट्रौ राज्याङ्गानि स्मृतानि हि’ ॥

इति शुक्रनीतिः १।६।१-६२ ॥

गतयोऽमूः पञ्च (२।८।४९)—शुक्रनीत्यामश्वस्यैकादश गतय उक्ता-
स्तथा हि—

‘चक्रितं रेचितं बलितकं घोरितमात्सुतम् ।

तुरं मन्दं च कुटिलं सर्पणं परिवर्तनम् ॥

एकेदशास्कन्दितम्’ । इति शुक्रनीतिः २।१३४-१३५ ॥

लोकः (३।३।२)—‘भुवनार्थकं लोक’ शब्दस्य गरुडपुराणे सप्त भेदा
उक्तास्तथा हि—

‘.....सप्त लोकाः प्रकीर्तिताः ॥

भूर्लोकं नाभिमध्ये तु भुवर्लोकं तदूर्ध्वके । स्वर्लोकं हृदये विशात्कण्ठदेशे महस्तथा ॥

जनलोकं वक्त्रदेशे तपोलोकं ललाटके । सत्यलोकं ब्रह्मरन्ध्रे—’

इति गरुडपुराणे १।१५ । ५७—५९ ॥

‘भुर्भुवः स्वर्भेदेन त्रय एव लोका’ इत्यपि परे ।

प्रमाणम् (३।३।५४)—मतभेदेन 'प्रमाण'स्य संख्यात्वेऽनेकमतम् ।
तथा हि—

‘प्रत्यक्षमेके चार्वाकाः, ^१कणाद^२सुगतौ पुनः ।
प्रत्यक्षमनुमानश्च, साङ्ख्यः शब्दं च ^३ते अपि ॥
^४न्यायैकदेशिनोऽप्येवमुपमानं च ^५केचन ।
अर्थापत्त्या सदैतानि चत्वार्याह प्रभाकरः ॥
अभावषष्ठान्येतानि ^६भाट्टा वेदान्तिनस्तथा ।
सम्भवेतिह्ययुक्तानि तानि पौराणिका जगुः ॥ इति ॥

तलम् (३।३।२०२)—अधोऽर्थक 'तल' शब्दस्य गरुडपुराणे सप्त भेदा
उक्तास्ते यथा—

‘पादाधस्तात्तलं ज्ञेयं पादोर्ध्वं वितलं तथा ।
जानुनोः सुतलं विद्धि सक्थिदेशे महातलम् ॥
तलातलं सक्थिमूले गुह्यदेशे रसातलम् ।
पातालं कटिसंस्थं च—’ इति गरुडपुराणे १५।५६—५७ ॥

अग्निपुराणे सप्त तलान्युक्तानि । तथा हि—

अतलं वितलं चैव नितलं च गभस्तिमतम् । महाप्रं सुतलं चैव पातालं चापि सप्तमम् ॥
प्रवृज्जतस्तत्रत्यभूमिवर्णान्यप्युच्यन्ते—
कृष्णपीतारुणाः शुक्लशर्कराः शैलकाश्वनाः । भूमयस्तेषु रम्येषु—
इति अग्निपुराणम् १२०।१२—३ ॥

कला (३।३।१९८)—चतुष्षष्टिः कलाः शैवतन्त्रोक्ता यथा—‘गीतम् १,
वाद्यम् २, नृत्यम् ३, नाट्यम् ४, आलेख्यम् ५, विशेषकच्छेद्यम् ६, तण्डुलकुसुम-
बलिप्रकाराः ७, पुष्पास्तरणम् ८, दशनवसनाङ्गरागाः ९, मणिभूमिकार्कम् १०, शय-
नरचनम् ११, उदकवाद्यमुदकघातः १२, चित्रयोगाः १३, माल्यप्रन्यविकल्पाः १४,
शेखरापीडयोजनम् १५, नेपथ्ययोगाः १६, कर्णपत्रमङ्गाः १७, सुगन्धिपुक्तिः १८,

१. वैशेषिकः । २. बुद्धः । ३. प्रत्यक्षानुमाने ।

४. न्यायसारस्य भूषणख्यटीकाकारः । ५. अन्ये नैयायिकाः ।

६. कुमारिलभट्टानुयायिनः ।

भूषणयोजनम् १९, ऐन्द्रजालम् २०, कौचुमारयोगाः २१, हस्तलाघवम् २२, चित्र-
शाकापूपभक्ष्यविकारक्रियाः २३, पानकरसरागासनयोजनम् २४, सूचीवायकर्म २५,
सूत्रक्रीडा २६, वीणाढमरुकवाद्यानि २७, प्रहेलिका २८, प्रतिमाला २९, दुर्वचक-
योगाः ३०, पुस्तकवाचनम् ३१, नाटकाख्यायिकादर्शनम् ३२, काव्यसमस्यापूरणम्
३३, पत्रिकावेत्रबाणविकल्पाः ३४, तर्ककर्मणि ३५, तक्षणम् ३६, वास्तुविद्या ३७,
रूप्यरत्नपरीक्षा ३८, धातुबादः ३९, मणिरागज्ञानम् ४०, आकरज्ञानम् ४१, वृक्षा-
युर्वेदयोगाः ४२, मेघकुक्कुटलावकयोगविधिः ४३, शुक्रशारिकाप्रकापनम् ४४, उत्सा-
दनम् ४५, केशमार्जनकौशलम् ४६, अक्षरमुष्टिकाकथनम् ४७, म्लेच्छितकविकल्पाः
४८, देशभाषाज्ञानम् ४९, पुष्पशकटिकानिमित्तिज्ञानम् ५०, यन्त्रमातृकाधारणमातृका
५१, संवाच्यम् ५२, मानसकाव्यक्रिया ५३, अभिधानकोशः ५४, छन्दोज्ञानम् ५५,
क्रियाविकल्पाः ५६, छलितकयोगाः ५७, वस्त्रगोपनानि ५८, द्यूतविशेषः ५९, आक-
र्षक्रीडा ६०, बालक्रीडनकानि ६१, वैतायिकीनाम् ६२, वैजयिकीनाम् ६३, वैतालिक-
कानाश्च विद्यानां ज्ञानम् ६४, इति (श्रीमद्भागवते दशमस्कन्धे पूर्वाद्धे अध्यायः ४५
श्लो० ३६ तमस्य 'श्रीधरी' व्याख्या ॥

**शुक्रनीतौ तु एतद्विद्या एव कला उक्ताः । तथाहि—शुक्रनीत्युक्ताश्चतु-
ष्टयिः कला यथा—**

कलानां तु पृथङ्नाम लक्ष्म चास्तीह केवलम् ।
पृथक् पृथक् क्रियाभिर्हि कलः भेदस्तु जायते ।
यां यां कलां समाश्रित्य तन्नाम्ना जातिवच्यते ॥
हावभावादिसंयुक्तं नर्तनं तु कला स्मृता ।
अनेकवाद्यकरणे ज्ञानं तद्वादनं कला ॥
वस्त्रालङ्कारसन्धानं स्त्रीपुंसोश्च कला स्मृता ।
अनेकरूपाविर्भावकृतिज्ञानं कला स्मृता ॥
शय्यास्तरणसंयोगपुष्पादिग्रन्थनं कला ।
द्यूताद्यनेकक्रीडाभी रञ्जनन्तु कला स्मृता ॥
अनेकासनसन्धानै रतेज्ज्ञानं कला स्मृता ।
कलावतकमेतद्धि गान्धर्वे समुदाहृतम् ॥
मकरन्दासवादीनां मद्यादीनां कृतिः कला ।

शल्यगूढाहतौ ज्ञानं शिरात्रगव्यधे कला ॥
 हिङ्गवादिरससंयोगादङ्गादिपचनं कला ।
 वृक्षादिप्रसवारोपपालनादिकृतिः कला ॥
 पाषाणधात्वादितितस्तद्गुस्मीकरणं कला ।
 यावदिक्षुविकाराणां कृतिज्ञानं कला स्मृता ॥
 धात्वोषधीनां संयोगक्रियाज्ञानं कला स्मृता ।
 धातुसाङ्कर्यपार्थक्यकरणन्तु कला स्मृता ॥
 संयोगपूर्वविज्ञानं धात्वादीनां कला स्मृता ।
 क्षारनिष्कासनज्ञानं कलासंज्ञं तु तत्स्मृतम् ॥
 कलादशकमेतद्धि ह्यायुर्वेदागमेषु च ।
 शस्त्रसन्धानविज्ञेयः पादादिन्यासतः कला ॥
 सन्ध्याधाताकृष्टिभेदैर्मल्लयुद्धं कला स्मृता ।
 बाहुयुद्धं तु मल्लानामशस्त्रं मुष्टिभिः स्मृतम् ॥
 मृतस्य तस्य न स्वर्गो यशो नेहापि विद्यते ।
 बलदर्पं विना शान्तं नियुद्धं यशसे रिपोः ॥
 न कस्यासिद्धिं कुर्याद्वै प्राणान्तं बाहुयुद्धकम् ।
 कृतप्रकृतकैश्चित्रैर्बाहुभिश्च सुषुङ्कटैः ॥
 सन्निपातावपातैश्च प्रमादोन्मथनैस्तथा ।
 कृतं निपीडनं ज्ञेयं तन्मुक्तिरु प्रतिक्रिया ॥
 कलाभिलक्षिते देशे यन्प्रायस्त्रनिपातनम् ।
 वाद्यसंकेततो व्यूहरचनादि कला स्मृता ॥
 गजान्धरथगत्या तु युद्धसंयोजनं कला ।
 कलापञ्चकमेतद्धि धनुर्वेदागमे स्थितम् ॥
 विविधासनमुद्राभिर्देवतातोषणं कला ।
 सारथ्यं च गजान्धादेर्गतिशिक्षा कला स्मृता ॥
 मृत्तिकाकाष्ठपाषाणधातुभाण्डादिप्रतिक्रिया ।
 पुथक्कलाचतुष्कं तु चित्राद्यालेखनं कला ॥
 तडागवापीप्रासादप्रमभूमिक्रिया कला ।

धव्याद्यनेकयन्त्राणां वाद्यानां तु कृतिः कला ॥
 होनमभ्यादिसंयोगवर्णाद्यै रञ्जनं कला ।
 जलवाय्वग्निसंयोगनिरोधैश्च क्रिया कला ॥
 नौकारथादियानानां कृतिज्ञानं कला स्मृता ।
 सूत्रादिरज्जुकरणविज्ञानन्तु कला स्मृता ॥
 अनेकतन्तुसंयोगैः पटबन्धः कला स्मृता ।
 वेधादिसदसज्ज्ञानं रत्नानां च कला स्मृता ॥
 स्वर्णादीनां तु याथास्म्यविज्ञानञ्च कला स्मृता ।
 कृत्रिमस्वर्णरत्नादिक्रियाज्ञानं कला स्मृता ॥
 स्वर्णाद्यलङ्कारकृतिः कला लेपादिसत्कृतिः ।
 मार्दवादिक्रियाज्ञानं चर्मणां तु कला स्मृता ॥
 पशुचर्मजनिर्हारक्रियाज्ञानं कला स्मृता ।
 दुग्धदोहादिविज्ञानं घृतान्तं तु कला स्मृता ॥
 सीवने कञ्जुकादीनां विज्ञानन्तु कलात्मकम् ।
 बाह्यादिभिश्च तरणं कलासंज्ञं जले स्मृतम् ॥
 मार्जने गृहभाण्डादेर्विज्ञानं तु कला स्मृता ।
 वस्त्रसंमाज्जनं चैव क्षुरकर्मकले ह्युभे ॥
 तिलमांसादिस्नेहानां कला निष्कासने कृतिः ।
 सीराद्याकर्षणे ज्ञानं वृक्षाद्यारोहणे कला ॥
 मनोनुकूलसेवायाः कृतिज्ञानं कला स्मृता ।
 वेणुनृणादिपात्राणां कृतिज्ञानं कला स्मृता ॥
 काचपात्रादिकरणविज्ञानं तु कला स्मृता ।
 संसेचनं संहरणं जलानां तु कला स्मृता ॥
 लोहामिसारशस्त्रास्त्रकृतिज्ञानं कला स्मृता ।
 गजाश्ववृषभोद्ग्राणां पल्याणादिक्रिया कला ॥
 शिशोः संरक्षणे ज्ञानं धारणे क्रीडने कला ।
 सुयुक्ताडनज्ञानमपराधिजने कला ॥
 नानादेशीयवर्णानां सुसम्यग्लेखने कला ॥

ताम्बूलरक्षादिकृतिर्विज्ञानं तु कला स्मृता ॥

आदानमाशुकारित्वं प्रतिदानं चिरक्रिया ।

कलासु द्वौ गुणौ ज्ञेयौ द्वे कले परिकीर्तिते ॥

चतुष्पष्टिः कला ह्येताः संचेपेण निदर्शिताः ।

इति शुक्नीतिः अध्यायः ४ प्रकरणम् ३ श्लोकाः ॥ ६५-९९ ॥

आचार्यास्तु कन्यकानां—(कामसूत्र १।१।१५) इति कामसूत्रीय 'जयम-
ङ्गला' व्याख्योक्ताश्चतुष्पष्टिः कलास्तु भिन्ना एव । तत्रैवं जयमङ्गला—'शास्त्रान्तरे
चतुष्पष्टिर्मूलकला उक्ताः, तत्र कर्माश्रयाश्चतुर्विंशतिः । तद्यथा—गीतम् १,
नृत्यम् २, वाद्यम् ३, कौशललिपिज्ञानम् ४, वचनं चोदाहरणम् ५, चित्रविधिः ६,
पुस्तकम् ७, पत्रच्छेदम् ८, मालाविधिः ९, गन्धयुक्त्यास्वाद्यविधानम् १०, रत्नप-
रीक्षा ११, सीवनम् १२, रत्नपरिज्ञानम् १३, उपकरणक्रिया १४, मानविधिः १५,
आजोवज्ञानम् १६, तिर्यग्योनिचिकित्सितम् १७, मायाकृतपाषण्डसमयज्ञानम् १८,
क्रीडाकौशलम् १९, लोकज्ञानम् २०, वैचक्षण्यम् २१, संचाहनम् २२, शरीर-
संस्कारः २३, विशेषकौशलम् २४, चेति । द्यूताश्रया विंशतिः—तत्र निर्जीवाः
पञ्चदश, तद्यथा—आयुःप्राप्तिः २५, अक्षविधानम् २६, रूपसंख्या २७,
क्रियामार्गणम् २८, बीजप्रहणम् २९, नयज्ञानम् ३०, करणज्ञानम् ३१, चित्राचित्र-
विधिः ३२, गूढराशिः ३३, तुल्याभिहारः ३४, क्षिप्रप्रहणम् ३५, अनुप्राप्तिलेख-
स्मृतिः ३६, अग्निक्लमः ३७, छलव्यामोहनम् ३८, प्रहादानम् ३९, चेति ।
सजीवाः पञ्च, तद्यथा—उत्स्थानविधिः ४०, युद्धम् ४१, कृतम् ४२, गतम् ४३,
नृत्यम् ४४ चेति । शयनोपचारिकाः षोडश, तद्यथा—पुरुषस्थभावप्रहणम् ४५,
स्वरागप्रकाशनम् ४६, प्रत्यङ्गदानम् ४७, नखदन्तयोर्विचारौ ४८, नीवीस्त्रंघनम् ४९,
गुणस्य संस्पर्शानुलोम्यम् ५०, परमार्थकौशलम् ५१, हर्षणम् ५२, समानार्थता-
कृतार्थता ५३, अनुप्रेतसाहनम् ५४, सृढकोषप्रवर्तनम् ५५, सम्यक्कोषनिवर्त-
नम् ५६, क्रुद्धप्रसादनम् ५७, सुप्तपरित्यागः ५८, चरमस्वापविधिः ५९, गुण-
गूढनम् ६०, इति । चतस्र उत्तरकलाः, तद्यथा—ज्ञाश्रुपातं रमणाय शाप-
दानम् ६१, शपथक्रिया ६२, प्रस्थितानुगमनम् ६३, पुनःपुनर्निरीक्षणम् ६४, चेति
चतुष्पष्टिर्मूलकलाः । आस्वेव निविद्यानामवान्तरकलानामष्टादशाधिकानि
पञ्चशताभ्युक्तानि । तत्र धर्मद्यूताश्रयाः प्रायश आबालं गच्छन्ति, ता एवान्यथा

विभज्य चतुष्टिरत्रोक्ताः, यास्तु शयनोपचारिका उत्तरकलाश्च, ताः प्रायशस्तन्त्र-
स्याङ्गतां प्रतिपद्यन्त इति पञ्चालिक्यामेव चतुःषष्ट्यामवान्तरकला वेदितव्याः,
ताश्च यथाप्रस्तावं वक्ष्यन्ते' इति ॥

तन्त्रावापौपयिकीं चतुष्षष्टिमाह—'गीतम् १, वाद्यम् २, नृत्यम् ३, आले-
ख्यम् ४, विशेषकच्छेद्यम् ५, तण्डुलकुसुमश्लिविकाराः ६, पुष्पास्तरणम् ७ दशन-
बंसनाङ्गरागः ८, मणिभूमिकाकर्म, ९, शयनरचनम् १०, उदकवाद्यम् ११, उदका-
घातः १२, चित्राश्च योगाः १३, माह्यप्रन्थनविकल्पाः १४, शेखरकापीडयोजनम्
१५, नेपथ्यप्रयोगाः १६, कर्णपत्रभङ्गाः १७, गन्धनयुक्तिः १८, भूषणयोजनम् १९,
ऐन्द्रजालाः २०, कौबुमाराश्च योगाः २१, हस्तलाघवम् २२, विचित्रशाकपूपभक्ष्य-
विकारक्रिया २३, पानकरसरागासवयोजनम् २४, सूचीवायकर्मणि २५, सूत्रक्रीडा
२६, बीणाढमरुकवाद्यानि २७, प्रहेलिका २८, प्रतिमाळा २९, दुर्वाचकयोगाः ३०,
पुस्तकवाचनम् ३१, नाटकाख्यायिकादर्शनम् ३२, काव्यसमस्यापूरणम् ३३, पट्टिका-
वेत्रवानविकल्पाः ३४, तक्षकर्मणि ३५, तक्षणम् ३६, वास्तुविद्या ३७, रूप्यरत्न-
रीक्षा ३८, धातुवादः ३९, मणिरागाकरज्ञानम् ४०, वृक्षायुर्वेदयोगाः ४१, मेघकु-
क्कुटलावकयुद्धविधिः ४२, शुक्रधारिकाप्रकापनम् ४३, उत्पादने संवाहने केशमर्दने
च कौशलम् ४४, अक्षरमुष्टिकाकथनम् ४५, म्लेच्छितविकल्पाः ४६, देशभाषाज्ञानम्
४७, पुष्पशकटिका ४८, निमित्तज्ञानम् ४९, यन्त्रमातृका ५०, धारणमातृका ५१,
संपाठ्यम्, ५२, मानसी काव्यक्रिया, ५३, अभिधानकोषः ५४, छन्दोज्ञानम् ५५,
क्रियाकल्पः ५६, छलितकयोगाः ५७, वस्त्रगोपनानि ५८, द्यूतविशेषः ५९,
आकर्षक्रीडा ६०, बालक्रीडनकानि ६१, चैनाधिकीनां ६२, वैजयिकीनां ६३,
व्यायामिकीनां च विद्यानां ज्ञानम् ६४, इति चतुःषष्टिरङ्गविधाः काममूत्रावस्थायिनः
इति कामसूत्रम् १।३।१६) ॥

इति परिशिष्टम् ।



मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका



अ]

[अग्रज

शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः	शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः	शब्दाः	काण्डाङ्काः	वर्गाङ्काः	श्लोकाङ्काः
अ				अक्षदेविन्	२	१०	४३	अगम	२	४	५
अ	३	४	११	अक्षधूर्त	२	१०	४३	अगस्त्य	१	३	२०
अंश	२	९	८९	अक्षर	३	३	१८२	अगाध	१	१०	१५
अंशु	१	३	३३	अक्षरचुञ्चु	२	८	१५	अगार	२	२	५
अंशुक	२	६	११५	अक्षरचण	२	८	१५	अगुरु	२	६	१२६
अंशुमती	२	४	११५	अक्षवती	२	१०	४४	"	२	६	१२७
अंशुमत्फला	२	४	११३	अक्षान्ति	१	७	२४	अग्रायी	२	७	२१
अंस	२	६	७८	अक्षि	२	६	९३	अग्नि	१	१	५३
अंसल	२	६	४४	"	३	५	२२	अग्निकण	१	१	५७
अंइति	२	७	३०	अक्षिकूटक	२	८	३८	अग्निचित्	२	७	१२
अंइस्	२	४	२३	अक्षिगत	३	१	४५	अग्निज्वाला	२	४	१२४
अकरणि	३	२	३९	अक्षीव	२	४	३१	अग्निभू	१	१	३९
अकूपार	१	१०	१	"	२	९	४१	अग्निमन्य	२	४	६६
अकृष्णकर्मम्	३	१	४६	अक्षोट	२	४	२९	अग्निमुखी	२	४	४२
अक्ष	२	४	५८	अक्षौहिणी	२	८	८१	अग्निशिखा	२	४	११८
"	२	९	४३	अखण्ड	३	१	६५	"	२	४	१३६
"	२	९	८६	अखात	१	१०	२७	"	२	६	१२४
"	२	१०	४५	अखिल	३	१	६५	अग्न्युत्पात	१	४	१०
"	३	३	२२२	अग	३	३	१९	अग्र	३	१	५८
अक्षत	२	९	४७	अगद	२	६	५०	"	३	३	१८४
अक्षदर्शक	२	८	५	अगदङ्कार	२	६	५७	अग्रज	२	६	४३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अग्रजन्मन्	२	७	४	अङ्गार	२	९	३०	अजहा	२	४	६
अग्रजःसर	२	८	७२	अङ्गारक	१	३	२५	अजा	२	९	७६
अग्रजस्	३	३	२४६	अङ्गारधानिका	२	९	२९	अजाजी	२	९	३६
"	३	४	७	अङ्गारबङ्करी	२	४	४८	अजाजीव	२	१०	११
अग्रमांस	२	६	६४	अङ्गारवल्ली	२	४	९०	अजित	३	३	६२
अग्रिय	२	६	४३	अङ्गारशकटी	२	९	२०	अजिन	२	७	४६
"	३	१	५८	अङ्गीकार	१	५	५	अजिनपत्रा	२	५	२६
अग्रीय	३	१	५८	अङ्गीकृत	३	१	१०८	अजिनयोनि	२	५	८
अग्नेदिधिषू	२	६	२३	अङ्गुलिमुद्रा	२	६	१०८	"	२	५	९
अग्नेसर	२	८	७२	अङ्गुली	२	६	८२	अजिर	२	३	१३
अग्रथ	३	१	५८	अङ्गुलीयक	२	६	१०७	"	३	३	१८२
अघ	१	४	२३	अङ्गुष्ठ	२	६	८२	अजिह्वा	३	१	७२
"	३	३	२७	अङ्गुष्ठि	२	६	७१	अजिह्वाग	२	८	८६
अवमर्षण	२	७	४७	अङ्गुष्ठिनामक	२	४	१२	अज्जुका	१	७	११
अग्रथा	२	९	६७	अङ्गुष्ठिवल्लिका	२	४	९२	अज्झटा	२	४	१२७
अङ्ग	१	३	१७	अचण्डी	२	९	७०	अश	३	१	३८
"	३	३	४	अचल	२	३	१	"	३	१	४८
अङ्गुर	२	४	४	अचला	२	१	२	अशान	१	५	७
अङ्गुष्ठ	२	८	४१	अच्युत	१	१	१९	अश्रित	३	१	९८
अङ्गोट	२	४	२९	अच्युताग्रज	१	१	२३	अञ्जन	१	३	३
अङ्गुथ	१	७	५	अच्छ	१	१०	१४	अञ्जनकेशी	२	४	१३०
अङ्ग	२	६	७०	अच्छमल्ल	२	५	४	अञ्जनावती	१	३	५
"	३	४	७	अज	२	९	७६	अञ्जलि	२	६	८५
"	३	४	१९	"	३	३	३०	अञ्जसा	३	४	२
अङ्गद	२	६	१०७	अजगन्धिका	२	४	१३९	"	३	४	१२
अङ्गण	२	२	१३	अजगर	१	८	५	अटनी	२	८	८४
अङ्गना	१	३	५	अजगव	१	१	३५	अटरूष	२	४	१०३
"	२	६	३	अजन्य	२	८	१०९	अटवी	२	४	१
अङ्गविक्षेप	१	७	१६	अजमोदा	२	४	१४५	अटाख्या	२	७	३५
अङ्गसंस्कार	२	६	१२१	अजशृङ्गी	२	४	११९	अट्ट	२	२	१२
अङ्गहार	१	७	१६	अजस्त	१	१	६६	अणक	३	१	५४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अणि	२	८	५७	अतिविषा	२	४	९९	अद्रि	२	३	१
अणिमन्	१	१	३६	अतिवेल	१	१	६६	"	३	३	१६४
अणीयस्	३	१	६२	अतिशक्तिता	२-	८	१०२	"	३	५	११
अणु	२	९	२०	अतिशय	१	१	६६	अद्वयवादिन्	१	१	१४
"	३	१	६२	"	३	२	११	अधम	३	१	५४
अण्ड	२	५	३७	अतिशोभन	३	१	५८	"	३	३	१४५
अण्डकोश	२	६	७६	अतिसर्जन	३	२	२८	अधमर्ण	२	९	५
अण्डज	१	१०	१७	अतिसारकिन्	२	६	५९	अधर	२	६	९०
"	२	५	३३	अतोन्द्रिय	३	१	७९	"	३	३	१९०
"	३	१	५१	अतीव	३	४	२	अधिकर्षि	३	१	११
अतट	२	३	४	अत्तिका	१	७	१५	अधिकाङ्ग	२	८	६३
अतलस्पर्श	२	१०	१५	अत्यन्तकोपन	३	१	३२	अधिकार	२	८	३१
अतसी	२	९	२०	अत्यन्तीन	२	८	७७	अधिकृत	२	८	६
अति	३	३	२४२	अस्यय	२	८	११६	अधिक्षिप्त	३	१	४२
"	३	४	२	"	३	३	१५०	अधित्यका	२	३	७
अतिक्रम	३	२	३३	अत्यर्थ	१	१	६६	अधिप	३	१	११
अतिचरा	२	४	१४६	अत्याहित	३	३	७७	अधिभू	३	१	११
अतिच्छत्र	२	४	१६७	अन्नि	१	३	२७	अधिरोहिणी	२	२	१८
अतिच्छत्रा	२	४	१५२	अथ	३	३	२४७	अधिवासन	२	६	१३४
अतिजव	२	८	७३	अथो	३	३	२४७	अधिविज्ञा	२	६	७
अतिथि	२	७	३४	अदभ्र	३	१	६३	अधिभ्रयणी	२	९	२९
अतिनु	१	१०	१४	अदर्शन	३	२	२२	अधिष्ठान	३	३	१२६
अतिपथिन्	२	१	१६	अदितिनन्दन	१	१	८	अधीन	३	१	१६
अतिपात	२	७	३७	अदृश्	२	६	६१	अधीर	३	१	२६
"	३	२	३३	अदृष्ट	२	८	३०	अधीश्वर	२	८	२
अतिमात्र	१	१	६६	अदृष्टि	१	७	३७	अधुना	३	४	२२
अतिमुक्त	२	४	७२	अद्धा	३	४	१२	अधृष्ट	३	१	२६
अतिमुक्तक	२	४	२६	अद्भुत	१	७	१७	अधोशुक	२	६	११७
अतिरिक्त	३	१	७५	"	१	७	१९	अधोक्षज	१	१	२१
अतिवक्त्र	३	१	३५	अद्यमर	३	१	२०	अधोमुख	१	८	१
अतिवौद	१	६	१४	अद्य	३	४	२०				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अध्यक्ष	२	८	६	अनवस्कर	३	१	५६	अनुचर	२	८	७१
"	३	३	२२६	अनवराध्य	३	१	५७	अनुज	२	६	४३
अध्यवसाय	१	७	२१	अनस्	२	८	५२	अनुजीविन्	२	८	९
अध्यापक	२	७	७	अनागतार्तवा	२	६	८	अनुतर्पण	२	१०	४३
अध्याहार	१	५	३	अनादर	१	७	२२	अनुताप	१	७	२५
अध्यूढा	२	६	७	अनामय	२	६	५०	अनुत्तम	३	१	५७
अध्येषणा	२	७	३२	अनामिका	२	६	८२	अनुत्तर	३	३	१९१
अध्वग	२	८	१७	अनारत	१	१	६५	अनुपद	३	१	७८
अध्वनीन	२	८	१७	अनार्यतिक्त	२	४	१४३	अनुपदोना	२	१०	३०
अध्वन्	२	१	१५	अनाइत	२	६	११२	अनुपमा	१	३	४
अध्वन्य	२	८	१७	अनिमिष	३	३	२१९	अनुप्लव	२	८	७१
अध्वर	२	७	१३	अनिरुद्ध	१	१	२७	अनुबन्ध	३	३	९८
अध्वर्यु	२	७	१७	अनिल	१	१	१०	अनुबोध	२	६	१२२
अनक्षर	१	६	२१	"	१	१	६२	अनुभव	३	२	२७
अनङ्ग	१	१	२५	अनिश	१	१	६५	अनुभाव	१	७	२१
अनच्छ	१	१०	१४	अनीक	२	८	७८	"	३	३	२१०
अनहुइ	२	९	६०	"	२	८	१०४	अनुमति	१	४	८
अनन्त	१	२	१	अनीकस्थ	२	८	६	अनुयोग	१	६	१०
"	१	८	४	अनीकिनी	२	८	७८	अनुरोध	२	८	१२
"	३	३	८१	"	२	८	८१	अनुलाप	१	६	१६
अनन्ता	२	१	२	अनु	३	३	२४८	अनुलेपन	३	५	२३
"	२	४	९२	अनुक	३	१	२३	अनुवर्तन	२	८	१२
"	२	४	११२	अनुकम्पा	१	७	१८	अनुवाक	३	५	१७
"	२	४	१३६	अनुकर्ष	२	८	५७	अनुशय	३	३	१४८
"	२	४	१५८	अनुकल्प	२	७	४०	अनुष्ण	२	१०	१८
अनन्यज	१	१	२६	अनुकामीन	२	८	७६	अनुहार	३	२	१७
अनन्यवृत्ति	३	१	७९	अनुकार	३	२	१७	अनूक	३	३	१३
अनय	३	३	५०	अनुक्रम	२	७	३६	अनूचान	२	७	१०
अनल	१	१	५४	अनुक्रोश	१	७	१८	अनूनक	३	१	६५
अनवधानता	१	७	३०	अनुग	३	१	७८	अनूप	२	१	१०
अनवरत	१	१	६६	अनुग्रह	३	२	१३	अनूर	१	३	३२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अनृजु	३	१	४६	अन्तेवासिन्	२	७	११	अपचिति	२	७	३४
अनृत	२	९	२	"	२	१०	२०	"	३	३	६७
अनेकप	२	८	३४	अन्त्य	३	१	८१	अपट्ट	२	६	५८
अनेहस्	१	४	१	अन्त्र	२	६	६६	अपत्य	२	६	२८
अनोकइ	२	४	५	अन्दुक	२	८	४१	अपत्रपा	१	७	२३
अन्त	२	८	११६	अन्ध	२	६	६१	अपत्रपिण्डु	३	१	२८
"	३	१	८१	"	३	३	१०३	अपथ	२	१	१७
अन्तःपुर	२	२	११	अन्धकरिपु	१	१	३४	अपथिन्	२	१	१७
अन्तक	१	१	५९	अन्धकार	१	८	३	अपदान्तर	३	१	६८
अन्तर	३	३	१८७	अन्धतमस्	१	८	३	अपदिश	१	३	५
अन्तरा	३	४	१०	अन्धस्	२	९	४८	अपदेश	१	७	३३
अन्तराय	३	२	१९	अन्धु	१	१०	२६	"	३	३	२१६
अन्तराल	१	३	६	अत्र	२	९	४८	अपध्वस्त	३	१	३९
अन्तरीक्ष	१	२	१	"	३	१	१११	अपभ्रंश	१	६	२
अन्तरीप	१	१०	८	अन्य	३	१	८२	अपयान	२	८	१११
अन्तरीय	२	६	११७	अन्यतर	३	१	८२	अपरस्पर	३	२	१
अन्तरे	३	४	१०	अन्वक्ष	३	१	७८	अपरमजिता	२	४	१०४
अन्तरेण	३	४	३	अन्वक्	३	१	७८	"	२	४	१४९
"	३	४	१०	अन्वय	२	७	१	अपराद्धपृष्ठक	२	८	६८
अन्तर्गत	३	१	८६	अन्ववाय	२	७	२	अपराध	२	८	२६
अन्तर्द्वार	२	२	१४	अन्वाहार्य	२	७	३१	अपराह	१	४	३
अन्तर्धा	१	३	१२	अन्विष्ट	३	१	१०५	अपर्णा	१	१	३७
अन्तर्धि	१	३	१२	अन्वेषणा	२	७	३२	अपलाप	१	६	१७
अन्तर्मनस्	३	१	८	अन्वेषित	३	१	१०५	अपवर्ग	१	५	७
अन्तर्वली	२	६	२२	अप् (आप्)	१	१०	३	अपवर्जन	२	७	३०
अन्तर्वाणि	३	१	६	अपकारगिर्	१	६	४४	अपवाद	१	६	१३
अन्तर्वेशिक	२	८	८	अपक्रम	२	८	१११	"	३	३	८९
अन्तावसायिन्	२	१०	१०	अपघन	२	६	७०	अपवारण	१	३	१२
अन्तिक	३	१	६७	अपचय	३	२	१६	अपण्डु	३	१	८४
अन्तिकतम	३	१	६८	अपचायित	३	१	१०१	अपशब्द	१	६	२
अन्तिका	२	९	२९	अपचित	३	१	१०१	अपसद	२	१०	१६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अपसर्प	२	८	१३	अवदमुख	३	१	३६	अभिनय	१	७	१६
अपसव्य	३	१	८४	अवन्ध	२	४	६	अभिनव	३	१	७७
"	३	१	८४	अवला	२	३	२	अभिनिसुक्त	२	७	५५
अपस्कर	२	८	५६	अदाव	३	१	८३	अभिनिर्याण	२	८	९५
अपस्नात	३	१	९१	अवज	१	३	१४	अभिर्नात	२	८	२४
अपहार	३	२	१६	"	३	३	३२	"	३	३	८१
अपांपति	१	१०	२	अवजयोनि	१	१	१७	अभिपन्न	३	३	१२८
अपाङ्ग	२	६	९४	अव्द	१	४	२०	अभिप्राय	३	२	२०
"	३	३	२१	"	३	३	८८	अभिभूत	३	१	४०
अपाङ्गदर्शन	२	६	९४	अब्धि	१	१०	१	अभिभर	२	७	६३
अपान	१	१	६३	"	३	५	११	अभिमान	१	७	२२
"	२	६	७३	अब्धिकफ	२	९	१०५	"	३	३	११०
अपामार्ग	२	४	८८	अब्रह्मण्य	१	७	१४	अभियोग	३	२	१३
अपावृत	३	१	१५	अभय	२	४	१६४	अभिरूप	३	३	१३१
अपासन	२	८	११३	अभया	२	४	५९	अभिलाव	३	२	२४
अपि	३	३	२४९	अभाषण	२	७	३६	अभिलाष	१	७	२८
अपिधान	१	३	१३	अभिक	३	१	२४	अभिलाषुक	३	१	२२
अपिनद्ध	२	८	६५	अभिक्रम	२	८	९६	अभिवादक	३	१	२८
अपूप	२	९	४८	अभिरुया	३	३	१५६	अभिवादन	२	७	४१
अपोगण्ड	२	६	४६	अभिग्रह	३	२	१३	अभिव्याप्ति	३	२	६
अप्पति	१	१	६१	अभिग्रहण	३	२	१७	अभिशास्त	३	१	४३
अप्पिष्ठ	१	१	५६	अभिधातिन्	२	८	११	अभिशास्ति	२	७	३२
अप्रगुण	३	१	७२	अभिचार	३	२	१९	अभिशाप	१	६	११
अप्रत्यक्ष	३	१	७९	अभिजन	२	७	१	अभिषङ्ग	३	३	२४
अप्रधान	३	१	६०	"	३	३	१०८	अभिषव	२	७	४७
अप्रहत	२	१	५	अभिजात	३	३	८२	"	२	१०	४२
अप्राग्रथ	३	१	६०	अभिज्ञ	३	१	४	अभिषुत	२	९	३९
अप्सरस्	१	१	११	अमितस्	३	१	६७	अभिषेणन	२	८	९५
"	१	१	५२	"	३	३	२५६	अभिषुद्धत	३	१	११०
अफल	२	४	६	अभिधान	१	६	८	अभिसंपात	२	८	१०५
अबद्ध	१	६	२०	अभिध्या	१	७	२४	अभिसर	२	८	७१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अभिसारिका	२	६	१०	अभ्यासादन	२	८	११०	अमृत	१	५	६
अभिहार	३	२	१७	अभ्युदित	२	७	५५	"	१	६	२२
"	३	३	१६९	अभ्युपगम	१	५	५	"	१	१०	३
अभिहित	३	१	१०७	अभ्युपपत्ति	३	२	१३	"	२	७	२८
अभीक्ष्ण	३	१	२४	अभ्युष	२	१	४७	"	२	९	३
अभीक्षणम्	३	४	१	अभ्र	२	२	१	"	३	३	७६
"	३	४	११	"	१	६	६	अमृता	२	४	५८
अभीप्सित	३	१	५३	अभ्रक	२	९	१००	"	२	४	५९
"	३	१	११२	अभ्रपुष्प	२	४	३०	"	२	४	८२
अभीरु	२	४	१००	अभ्रमातङ्ग	१	१	४६	अमृतान्वस्	१	१	८
अभीरुपत्त्री	२	४	१०१	अभ्रसु	१	३	४	अमोघा	२	४	१०६
अभीषङ्ग	३	२	६	अभ्रसुवल्लभ	१	१	४६	अम्बर	१	२	१
अभीषु	३	३	२२०	अभि	१	१०	१३	"	३	३	१८२
अभीष्ट	३	१	५३	अभ्रिय	१	३	८	अम्बल	२	९	३०
अभ्यग्र	३	१	६७	अभ्रेष	२	८	२४	अम्बल	२	१०	२
अभ्यन्तर	१	३	६	अमत्र	२	९	३३	अम्बला	२	४	७१
अभ्यमित	२	६	५८	अमर	१	१	७	"	२	४	८४
अभ्यमित्रोण	२	८	७५	अमरावती	१	१	४५	"	२	४	१४०
अभ्यमित्रोय	२	८	७५	अमर्त्य	१	१	८	अम्बा	१	७	१४
अभ्यमित्र्य	२	८	७५	अमर्ष	१	७	२६	अम्बिका	१	१	३७
अभ्यर्ण	३	१	६७	अमर्षण	३	१	३२	अम्बु	१	१०	४
अभ्यवकर्षण	३	२	१७	अमा	३	३	२५०	अम्बुज	२	४	६१
अभ्यवस्कन्दन	२	८	११०	अमांस	२	६	४४	अम्बुभृत्	१	३	७
अभ्यवहृत	३	१	१११	अमात्य	२	८	४	अम्बुवेतस	२	४	३०
अभ्याख्यान	१	६	१०	"	२	८	१७	अम्बुकृत	१	६	२०
अभ्यागम	२	८	१०५	अमावस्या	१	४	८	अम्मस्	१	१०	४
अभ्यागारिक	३	१	१२	अमावास्या	१	४	८	अम्भोरुह	१	१०	४१
अभ्यादान	३	२	२६	अमित्र	२	८	११	अम्मय	१	१०	५
अभ्यान्त	२	६	५८	अमुत्र	३	४	८	अम्बल	१	५	९
अभ्यामर्द	२	८	१०५	अमृणाल	२	४	१६४	अम्बलवेतस	२	४	१४०
अभ्याश	३	१	६७	अमृत	१	१	४८	अम्बललोणिका	२	४	१४०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अम्लान	२	४	७३	अरिष्ट	३	३	३६	अर्णव	१	१०	१
अम्लिका	२	४	४३	अरिष्टदुष्टधी	३	१	४४	अर्णस्	१	१०	४
अय	१	४	२७	अरुण	१	३	२९	अर्नन	३	२	३२
अयन	१	४	१३	"	१	३	३२	अर्ति	३	३	६८
"	२	१	१५	"	१	५	१५	अर्थ	२	९	९०
अयस्	२	९	९८	"	३	३	४८	"	३	३	८६
अयःप्रतिमा	२	१०	३५	अरुणा	२	४	९९	"	३	३	८६
अयि	३	४	१८	अरुन्तुद	३	१	८३	अर्थना	२	७	३३
अयोध	२	९	२५	अरुक्कर	२	४	४२	"	३	२	६
अर	१	१	६४	"	३	३	१८९	अर्थप्रयोग	२	९	४
अरघट्ट	३	५	१८	अरुम्	२	६	५४	अर्थिन्	२	८	९
अरणि	२	७	१९	अरोक	३	१	१००	"	३	१	४९
अरण्य	२	४	१	अकौ	१	३	२९	अर्थ्य	२	९	१०४
"	३	५	२२	"	३	३	४	"	३	३	१६०
अरण्यानी	२	४	१	अकपणं	२	४	८१	अर्दना	३	२	६
अरलि	२	६	८६	अकवन्धु	१	१	५५	अर्दित	३	१	९७
अरर	२	२	१७	अकाह	२	४	८०	अर्ष	१	३	१६
अरलु	२	४	५७	अर्गल	२	२	१७	"	१	३	१६
अरविन्द	१	१०	३९	अर्घ	३	३	२७	अर्थचन्द्रा	२	४	१०९
अराति	२	८	११	अर्घ्य	२	७	३३	अर्थनाव	१	१०	१४
अराल	३	१	७१	अर्चा	२	७	३४	अर्घरात्र	१	४	६
अरि	२	८	१०	"	२	१०	३६	अर्धर्च	३	५	३२
"	३	५	११	अर्चित	३	१	१०१	अर्धहार	२	६	१०६
अरित्र	१	१०	१३	अर्चिस्	१	१	५७	अर्बुद	३	५	१९
अरिमेद	२	४	५०	"	३	३	२३०	"	३	५	३३
अरिष्ट	२	२	८	अर्चिष्	१	१	५७	अर्भक	२	५	३८
"	२	४	३१	अर्जक	२	४	८०	अर्म	३	५	३४
"	२	४	६२	अर्जुन	१	५	१३	अर्य	२	९	१
"	२	४	१४८	"	२	४	४५	"	३	३	१४७
"	२	५	२०	"	२	४	१६७	अर्यमन्	१	३	२८
"	२	९	५३	अर्जुनी	२	९	६७	अर्या	२	६	१४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अर्याणी	२	६	१४	अलि	२	५	२९	अवतमस	१	८	३
अर्या	२	६	१५	अलिक	२	६	९२	अवतोका	२	९	६९
अर्वन्	२	१	५४	अलिन्	२	५	२९	अवदंश	२	१०	४०
"	२	८	४४	अलिञ्जर	२	९	३१	अवदात	१	५	१३
"	३	१	५४	अलिन्द	२	२	१२	"	३	३	८०
अर्वाक्	३	४	१६	अलोक	३	३	१२	अवदान	३	२	३
अर्शस	२	६	५९	अल्प	३	१	६१	अवदाह	२	४	१६५
अर्शस्	२	६	५४	अल्पतनु	२	६	४८	अवदारण	२	९	१२
अर्शोन्न	२	४	१५७	अल्पमारिष	२	४	१३६	अवदीर्ण	३	१	८९
अर्शोरोगयुत	२	६	५९	अल्पसरस्	१	१०	२८	अवद्य	३	१	५४
अर्हणा	२	७	३४	अल्पिष्ठ	३	१	६२	अवधि	३	३	९९
अर्हित	३	१	१०१	अल्पीयस्	३	१	६२	अवध्वस्त	३	१	९४
अलम्	३	३	२५२	अवकर	२	२	१८	अवन	३	२	४
"	३	४	११	अवकीर्णिन्	२	७	५४	अवनत	३	१	७०
अलक	२	६	९६	अवकुष्ठ	३	१	३९	अवनाद	२	६	४५
अलका	१	१	७०	अवकेशिन्	२	४	७	अवनाय	३	७	२७
अलक्त	२	६	१२५	अवक्रय	२	९	७९	अवनि	२	१	३
अलगदं	१	८	५	अवगणित	३	१	१०६	अवन्तिसोम	२	९	३९
अलङ्कारिष्णु	२	६	१००	अवगत	३	१	१०८	अवसृय	२	७	२७
"	३	१	२९	अवगीत	३	१	९३	अवभ्रट	२	६	४५
अलङ्कर्तृ	२	६	१००	"	३	३	७९	अवम	३	१	५४
अलङ्कर्मोण	३	१	१८	अवग्रह	१	३	११	अवमत	३	१	१०६
अलङ्कार	२	६	१०१	"	२	८	३८	अवमर्द	२	८	१०९
अलङ्कृत	२	६	१००	अवग्राह	१	३	११	अवमानना	१	७	२३
अलङ्क्रिया	२	६	१०१	अवचूर्णित	३	१	९३	अवमानित	३	१	१०६
अलकं	२	४	८१	अवज्ञा	१	७	२३	अवयव	२	६	७०
"	२	१०	२२	अवज्ञात	३	१	१०६	अवर	२	८	४०
अलस	२	१०	१८	अवट	१	८	२	अवरज	२	६	४३
अलात	२	९	३०	अवटीट	२	६	४५	अवरति	३	२	३७
अलावू	२	४	१५६	अवट्ट	२	६	८८	अवरवर्ण	२	१०	१
अलि	२	५	१४	अवतंस	३	३	२२८	अवरीण	३	१	९४

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
अवरोध	२	२	१२	अवित	३	१	१०६	अश्मरी	२	६	५६
अवरोधन	२	२	११	अविद्या	१	५	७	अश्मसार	२	९	९८
अवरोह	२	४	१२	अविनीत	३	१	२३	अश्रान्त	१	१	६५
अवर्ण	१	६	१३	अविरत	१	१	६५	अश्रि	२	८	९३
अवलग्न	०	६	७९	अविलम्बित	१	१	६५	अश्रु	२	६	९३
अवलमुज	२	४	९५	"	३	१	८३	अश्लील	१	६	१९
अवसाद	२	८	२५	अविस्पष्ट	१	६	२१	अश्व	२	८	४३
अवश्यम्	३	४	१६	अवीची	१	९	१	अश्वकर्णक	२	४	४३
अवश्याय	१	३	१८	अबीरा	२	६	११	अश्वत्थ	२	४	२१
अवष्टब्ध	३	३	१०४	अवेक्षा	३	२	२८	अश्वयुज्	१	३	२१
अवनर	३	२	२४	अव्यक्त	३	३	६२	अश्ववडव	३	५	१६
अवसान	३	२	३८	अव्यक्तराग	१	५	१५	अश्वा	२	८	४६
अवसित	२	२	४	अव्यण्डा	२	४	८६	अश्वारोह	२	८	६०
"	३	१	९८	अव्यथा	२	४	५९	अधिन्	१	१	५१
अवस्कर	२	६	६७	"	२	४	१४६	अधिनी	१	३	२१
"	३	३	१६८	अव्यय	३	५	३४	अधिनीसुत	१	१	५१
अवन्था	१	४	२९	अव्यबहित	३	१	६८	अधीय	२	८	४८
अवहार	१	१०	२१	अशनाया	२	९	५४	अषडक्षीण	२	८	२२
अवहित्था	१	७	३४	अशनायित	३	१	२०	अष्टापद	२	९	९५
अवहेलन	१	७	२३	अशनि	१	१	४७	"	२	१०	४६
अवाकपुष्पी	२	४	१५२	अशित	३	१	१११	अष्टीवत	२	६	७२
अवाग्र	३	१	७०	अशिथी	२	६	११	असकृत	३	४	१
अवाच्	३	१	१३	अशुभ	३	५	२३	असती	२	६	१०
"	३	१	३३	अशेष	३	१	६५	असतीसुत	२	६	२६
अवाची	१	३	१	अशोक	२	४	६४	असन	२	४	४४
अवाच्य	१	६	२१	अशोकरोहिणी	२	४	८५	असमोक्ष्यकारिन्	१	१७	
अवार	१	१०	७	अश्मगर्भ	२	९	९२	असार	३	१	५६
अवःसम्	३	१	३९	अश्मज	२	९	१०४	असि	२	८	८९
अवि	२	६	२०	अश्मन्	२	३	४	"	३	५	११
"	३	३	२०७	अश्मन्त	२	९	२९	असिक्नी	२	६	१८
अविद्य	२	४	६८	अश्मपुष्प	२	४	१२२	असित	१	५	१४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
असिधावक	२	१०	७	अहन्	१	३	२	आकाश	१	२	२
असिधेतुका	२	८	९२	अहमहमिका	२	१	१०१	आकीर्ण	३	१	८५
असिधेतुका	२	८	९२	अहंयुक्तिका	२	८	१०२	आकुल	३	१	७५
असु	२	८	११९	अहंमति	१	५	७	आक्रन्द	३	३	९०
अनुधारण	२	८	११९	अहंमति	१	३	३०	आक्रोड	२	४	३
अनु	१	१	१२	अहंमुद्य	१	४	२	आक्रोशन	३	२	६
"	३	५	१३	अहंस्कर	१	३	२८	आक्षारणा	१	६	१५
अमूर्क्षण	१	७	२३	अहह	३	३	२५७	आक्षारित	३	१	४३
अमूया	१	७	२४	अहार्य	२	३	१	आक्षेप	१	६	१३
अमूरधरा	२	६	६२	अहि	१	८	६	आखण्डल	१	१	४४
अमृन्	२	६	६४	"	३	३	२३९	आखु	२	५	१२
अमौम्यस्वर	३	१	३७	अहित	२	८	११	आखुमुज्	२	५	६
अस्त	२	३	२	अहितुण्डिक	१	८	११	आखेट	२	१०	२३
"	३	१	८७	अहिमय	२	८	३०	आख्या	१	६	८
अन्नम्	३	४	१७	अहिमुज्	३	३	३०	आख्यात	३	१	१०७
अग्नि	३	४	१८	अहेर	०	४	१०१	आख्यायिका	१	६	५
अस्तु	३	४	१३	अहो	३	४	९	आगन्तु	२	७	३४
अन्न	२	८	८२	अहोरात्र	१	४	१२	आगत	२	८	२६
अखिन्	२	८	६९	अहाय	३	४	२	"	३	३	२३१
अन्धि	२	६	६८					आगू	१	५	५
अस्थिर	३	१	४३					आशीघ्र	२	७	१७
अन्फुटवाच्	३	१	३७					आग्रहायणिक	१	४	१४
अन्न	२	६	६४					आग्रहायणी	१	३	२३
अन्न	२	६	९३					आह्	३	३	२४०
"	३	३	१६५					आक्षिक	१	७	१६
अन्नप	१	१	५९					आक्षिरस	१	३	२४
अन्तु	२	६	९३					आचमन	२	७	३६
अन्त्रच्छन्द	३	१	१६					आचाम	२	९	४९
अन्त्रम्	१	१	८					आचार्य	२	७	७
अस्वर	३	१	३७					आचार्या	२	६	१४
अहंयु	३	१	५०					आचार्यानी	२	६	१५
अहङ्कार	१	७	२२								
अहङ्कारवत्	३	१	५०								

आ

आः ३ ३ २४०

आं ३ ३ २४०

आम् ३ ४ १६

आकम्पित ३ १ ८७

आकर २ ३ ७

आकर्ष ३ ३ २२२

आकल्प २ ६ ९९

आकार ३ २ १५

" ३ ३ १६३

आकारमुक्ति १ ७ ३४

आकारणा १ ६ ८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
आचित	२	९	८७	आतिथेय	२	७	३३	आधोरण	२	८	५९
आच्छादन	१	३	१३	आतिथ्य	२	७	३३	आध्यान	१	७	२९
"	२	६	११५	आतुर	२	६	५८	आनक	१	७	६
"	३	३	१२५	आतोद्य	१	७	५	"	३	३	३
आच्छुरितक	१	७	३४	आत्तगर्व	३	१	४०	आनकदुन्दुभि	१	१	२२
आच्छोदन	२	१०	२३	आरमगुप्ता	२	४	८६	आनत	३	१	७०
आजक	२	९	७७	आत्मघोष	२	५	२०	आनद्ध	१	७	३
आजानेय	२	८	४४	आत्मज	२	६	२७	आनन	२	६	८९
आजि	२	८	१०६	आत्मन्	१	४	२९	आनन्द	१	४	२५
"	३	३	३२	"	३	३	१०९	आनन्दथु	१	४	२५
आजीव	२	९	१	आत्मभू	१	१	१६	आनन्दन	३	२	७
आजू	१	९	३	"	१	१	२६	आनर्त	३	३	६४
आज्ञा	२	८	२६	आत्मम्भरि	३	१	२१	आनाय	१	१०	१६
आज्य	२	९	२२	आत्रेयी	२	६	२०	आनाय्य	२	७	२१
आटि	२	५	२५	आथर्वण	३	२	४३	आनाह	२	६	५५
आडम्बर	२	८	१०८	आदर्श	२	६	१४०	आनुपूर्वी	२	७	३६
"	३	३	१६८	आदि	३	१	८०	आन्ध्रसिक	२	९	२८
आडो	२	५	२५	आदिकारण	१	४	२८	आन्वीक्षिकी	१	६	५
आढक	२	९	८८	आदितेय	१	१	८	आपक्व	२	९	४७
आढकिक	२	९	१०	आदित्य	१	१	८	आपगा	१	१०	३०
आढकी	२	४	१३०	"	१	१	१०	आपण	२	२	२
"	३	५	७	"	१	३	२८	आपणिक	२	९	७८
आढ्य	३	१	१०	आदीनव	३	२	२९	आपत्	२	८	८२
आतङ्क	३	३	१०	आट्टत	३	३	८१	आपत्प्राप्त	३	१	४२
आतञ्चन	३	३	११५	आद्य	३	१	८०	आपन्न	३	१	४२
आततायिन्	३	१	४४	आद्यमाषक	२	९	८५	आपन्नसत्त्वा	२	६	२२
आतप	१	३	३४	आद्यून	३	१	२१	आपमित्यक	२	९	४
"	३	५	२०	आहार	१	१०	२९	आपान	२	१०	४२
आतपत्र	२	८	३२	आधि	१	७	२८	आपीड	२	६	१३६
आतर	१	१०	१२	"	३	३	९७	आपीन	२	९	७३
आतायिन्	२	५	२१	आधूत	३	१	८७	आपूपिक	२	९	२८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
आपूषिक	३	२	३९	आमोद	३	३	९१	आरेवत	२	४	२४
आप्त	२	८	१३	आमोदिन्	१	५	११	आरोग्य	२	६	५०
आप्य	१	१०	५	आम्नाय	१	६	३	आरोह	२	६	११४
आप्रच्छन्न	३	२	७	"	३	२	७	"	३	३	२३८
आप्रपद	२	६	११९	आम्न	२	४	३३	आरोहण	२	२	१८
आप्रपदीन	२	६	११९	आम्नातक	२	४	२७	आर्तगल	२	४	७४
आप्लव	२	६	१२१	आम्नेडित	१	६	१२	आर्तव	२	६	२१
आप्लाव	२	६	१२१	आयत	३	१	६९	आर्द्र	३	१	१०५
आबन्ध	२	९	१३	आयतन	२	२	७	आर्द्रक	२	९	३७
आभरण	२	६	१०१	आयति	२	८	२९	आर्य	१	७	१४
आभाषण	१	६	१५	"	३	३	७२	"	२	७	३
आभास्वर	१	१	१०	आयत्त	३	१	१६	आर्यावर्त	२	१	८
आभीर	२	९	५७	आयाम	२	६	११४	आर्धभ्य	२	९	६२
आभीरपल्ली	२	२	२०	आयुष	२	८	८२	आल	२	९	१०३
आभीरो	२	६	१३	आयुषिक	२	८	६७	आलम्भ	२	८	११५
आभील	१	९	४	आयुधीय	२	८	६७	आलय	२	२	५
आभोग	२	६	१३७	आयुष्मत्	३	१	७	आलवाल	१	१०	२९
आमगन्धिन्	१	५	१२	आयुस्	२	८	१२०	आलस्य	२	१०	१८
आमनस्य	१	९	३	आयोधन	२	८	१०३	आलान	२	८	४१
आमय	२	६	५१	आरकूट	२	९	९७	आलाप	१	६	१५
आमयाविन्	२	६	५८	आरग्वध	२	४	२३	आलि	२	१	१४
आमलक	३	५	३३	आरनालक	२	९	३९	"	२	४	४
आमलको	२	४	५७	आरति	३	२	३७	"	२	६	१२
आमिक्षा	२	७	२३	आरम्भ	३	२	२६	"	३	३	१९८
आमिष	२	६	६३	आरव	१	६	२३	आलिङ्ग्य	१	७	५
"	३	३	२२४	आरा	२	१०	३४	आलीढ	२	८	८५
आमिषाशिन्	३	१	१९	आरात्	३	३	२४३	आलु	२	९	३१
आम्	३	४	१६	आराधन	३	३	१२५	आलोक	३	३	३
आमुक्त	२	८	६५	आराम	२	४	२	आलोकन	३	२	३१
आमोद	१	४	२४	आरालिक	२	९	२८	आवपन	२	९	३३
"	१	५	१०	आराव	१	६	२३	आवर्त	१	१०	६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
आवलि	२	४	४	आशुशुक्षणि	१	१	५५	आस्कन्दन	२	८	१०४
आवसित	२	९	२३	आश्चर्य	१	७	१९	आस्कन्दित	२	८	४८
आवाप	१	१०	२९	आभ्रम	२	७	४	आस्तरण	२	८	४२
आनापक	२	६	१०७	आश्रय	२	८	१८	आस्था	३	३	८८
आषाल	१	१०	२९	"	३	१	११	आस्थान	२	७	१५
आविद्ध	३	१	७१	आश्रयाश	१	१	५४	आस्थानी			"
"	३	१	८७	आश्रव	१	५	५	आस्पद	३	३	९४
आविष	३	२	३६	"	३	१	२४	आस्फोट	२	४	८०
आविल	१	१०	१४	आश्रुत	३	१	१०८	आस्फोटनी	२	१०	३३
आविस्	३	४	१२	आश्व	२	८	४८	आस्फोट्य	२	४	७०
आवुक	१	७	१२	आश्वस्थ	२	४	१८	"	२	४	१०४
आवुत्त	१	७	१२	आश्वयुज	१	४	१७	आस्य	२	६	८९
आवृत्	२	७	३६	आश्विन			"	आस्या	३	२	२१
आवृत	३	१	९०	आश्विनेय	१	१	५१	आस्रव	३	२	२९
आवेगी	२	४	१३७	आश्वीन	२	८	४७	आहत	१	६	२१
आवेशन	२	२	७	आषाढ	१	४	१६	"	३	१	८८
आवेशिक	२	७	३४	"	२	७	४५	आहतलक्षण	३	१	१०
आशंसितृ	३	१	२७	आसक्त	३	१	९	आहव	२	८	१०५
आशंसु	३	१	२७	आसन	२	६	१३८	आहवनीय	२	७	१९
आशय	३	२	२०	"	२	८	१८	आहार	२	९	५६
आशर	१	१	५९	"	२	८	३९	आहाव	१	१०	२६
आशा	१	३	१	आसना	३	२	२१	आह्वय	१	८	९
"	३	३	२१७	आसन्दी	३	५	९	आहो	३	४	५
अशितङ्गवीन	२	९	५९	आसन्न	३	१	६६	आहोपुरुषिका	२	८	१०१
आशीविष	१	८	७	आसव	२	१०	४१	आह्वय	१	६	७
आशिस्	३	३	२२९	आसादित	३	१	१०४	आह्वान	१	६	७
आशु	१	१	६५	आसार	१	३	११				
"	२	९	१५	"	२	८	९६	इ			
आशुग	१	१	६२	आसुरी	२	९	१९	इक्षु	२	४	१६३
"	२	८	८६	आसेचनक	३	१	५३	इक्षुगन्वा	२	४	९८
"	३	३	१९					"	२	४	१०४
								"	२	४	११०

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
इक्षुगन्वा	२	४	१६३	इन्द्राणिका	२	४	६८	ईक्षणिका	२	६	२०
इक्षुर	२	४	१०४	इन्द्राणी	१	१	४५	ईक्षित	३	१	११०
इक्षुवाकु	२	४	१५६	इन्द्राबुध	१	३	१०	ईक्षि	३	३	६८
इक्ष	३	१	७४	इन्द्रारि	१	१	१२	ईक्षित	३	१	८७
"	३	२	१५	इन्द्रावरज	१	१	२०	ईक्ष	२	६	५४
इक्षित	३	९	१५	इन्द्रिय	१	५	८	ईक्ष्या	१	७	२४
इक्षुदी	२	४	४६	"	२	६	६२	ईक्षित	३	१	१०९
इच्छा	१	७	२७	इन्द्रियार्थ	१	५	८	ईक्षी	२	८	९१
इच्छावती	२	६	९	इन्वन	२	४	१३	ईक्ष	१	१	३०
इज्याशील	२	७	८	इम	२	८	३४	ईक्षान	१	१	३०
इटचर	२	९	६२	इभ्य	३	१	१०	ईक्षित	३	१	१०
इडा	३	३	४२	इरमद	१	३	१०	ईक्षर	१	१	३०
इतर	२	१०	१६	इरा	२	१०	३९	"	३	१	१०
"	३	१	८२	"	३	३	१७६	ईक्षरी	१	१	३६
"	३	३	१९२	इरिणम्	३	३	५७	ईक्षत	३	४	८
इति	३	३	२४६	इला	३	३	४२	ईक्षपाण्डु	१	५	१३
इतिह	२	७	१२	इल्लला	१	३	२३	ईषा	२	९	१४
इतिहास	१	६	४	इव	३	४	९	ईषिका	२	८	४०
इत्तरी	२	६	१०	इष	१	४	१७	"	२	१०	३२
इदानीम्	३	४	२३	इषु	२	८	८६	ईहा	१	७	२७
इध्म	२	४	१३	इषुधि	२	८	८८	ईहामृग	२	५	७
इन	३	३	१११	इष्ट	२	७	२८				
इन्दीवर	१	१०	३७	"	२	९	५७				
इन्दु	१	३	१३	इष्टकापथ	२	४	१६५	उ	३	४	१८
इन्दीवरी	२	४	१००	इष्टगन्ध	१	५	११	उक्त	३	१	१०७
इन्द्र	१	१	४१	इष्टार्थोक्त	३	१	९	उक्ति	१	६	१
"	१	३	२	इष्टि	३	३	३९	उक्थ	३	५	३०
इन्द्रदु	२	४	४५	इष्वास	२	८	८३	उक्षन्	२	९	५९
इन्द्रयव	२	४	६७					उखा	२	९	३१
इन्द्रवारुणी	२	४	१५६	ईक्षण	२	६	९३	"	२	९	३१
इन्द्रसुरस	२	४	६८	"	३	२	३१	उख्य	२	०	४५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
उग्र	१	१	३२	उत्कण्ठा	१	७	२९	उत्सर्जन	१	७	२९
"	१	७	२०	उत्कर	२	५	४२	उत्सव	१	७	३८
"	२	१०	२	उत्कर्ष	३	२	११	"	३	३	२०९
उग्रगन्वा	२	४	१०२	उत्कलिका	१	७	२९	उत्सादन	२	६	१२१
"	२	४	१४५	उत्कार	३	२	३६	उत्साह	१	७	२९
उच्च	३	१	७०	उत्क्रोश	२	५	२३	उत्साहवर्धन	१	७	१८
उच्छटा	२	४	१६०	उत्तंस	३	३	२२८	उत्सुक	३	१	८
उच्छण्ड	३	१	८३	उत्त	३	१	१०५	उत्सृष्ट	३	१	१०७
उच्चार	२	६	६७	उत्तप्त	२	६	६३	उत्सेध	२	४	१०
उच्चावच	३	१	८३	उत्तम	३	१	५७	"	३	३	९६
उच्चैःश्रवस्	१	१	४५	उत्तमर्ण	२	९	५	उदक्	३	४	२३
उच्चैर्बुध्	१	६	१२	उत्तमा	२	६	४	उदक	१	१०	४
उच्चैस्	३	४	१७	उत्तमाङ्ग	२	६	९५	"	३	५	२२
उच्छ्रय	२	४	१०	उत्तर	१	६	१०	उदक्या	२	६	२०
उच्छ्राय	२	४	१०	"	३	३	१९१	उदग्र	३	१	७०
उच्छ्रित	३	१	७०	उत्तरासङ्ग	२	६	११७	उदज	३	२	३९
"	३	३	८५	उत्तरीय	२	६	११८	उदधि	१	१०	१
उज्जासन	१	८	११५	उत्तान	१	१०	१५	उदन्त	१	६	७
उज्ज्वल	१	७	१७	उत्तानशया	२	६	४१	उदन्या	२	९	५५
उञ्छशिल	२	९	२	उत्थान	३	३	११८	उदन्वत्	१	१०	१
उटज	२	२	६	उत्थित	३	३	८५	उदपान	१	१०	२६
उड्ड	१	३	२१	उत्पतितु	३	१	२९	उदय	२	३	२
उड्डप	१	१०	११	उत्पत्ति	१	४	३०	उदर	२	६	७७
उड्डीन	२	५	३७	उत्पत्तिष्णु	३	१	२९	उदर्क	२	८	२९
उत	३	१	१०१	उत्पल	१	१०	३७	उदवसित	२	२	५
"	३	३	२४३	"	२	४	१२६	उदधित	२	९	५३
"	३	४	५	उत्पलशारिका	२	४	११२	उदात्त	१	६	४
उताहो	३	४	४५	उत्पात	२	८	१०९	उदान	१	१	६३
उत्क	३	१	८	उत्फुल्ल	२	४	७	उदार	३	१	८
उत्कट	३	४	३४	उत्स	२	३	५	"	३	३	१९२
"	३	१	२३					बदासीन	२	८	१०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
उदाहार	१	६	९	उद्भिज्ज	३	१	५१	उपकण्ठ	३	१	६७
उदित	३	१	१०७	उद्भिद्	३	१	५१	उपकारिका	२	२	१०
उदीची	१	३	२	उद्भिद	३	१	५१	उपकार्या	२	२	१०
उदीच्य	२	१	७	उद्भ्रम	३	२	१२	उपकुञ्चिका	२	४	१२५
"	२	४	१२२	उद्यन	३	१	८९	"	२	९	३७
उदुम्बर	२	४	२२	उद्यम	३	२	११	उपकुल्या	२	४	९६
"	२	९	९७	उद्यान	२	४	३	उपक्रम	२	७	१३
उदुम्बरपर्णी	२	४	१४४	उद्यान	३	३	११७	"	३	२	२६
उदूखल	२	९	२५	उद्योग	३	५	३३	"	३	३	१३९
उद्गत	३	१	९७	उद्ग	१	१०	२०	उपक्रोश	१	६	१३
उद्गमनोय	२	६	११२	उद्गतैन	२	६	१२१	उपगत	३	१	१०९
उद्गाढ	१	१	६६	उद्गान्त	२	८	३६	उपगूहन	३	२	३०
उद्गातृ	२	७	१७	"	३	१	९७	उपग्रह	२	८	११९
उद्गार	३	२	३७	उद्गासन	१	८	११५	उपग्राह्य	२	८	२८
उद्गोथ	३	५	१९	उद्गाह	२	७	५६	उपघ्न	३	२	१९
उद्गूणं	३	१	८९	उद्गो	२	४	१६९	उपचरित	३	१	१०२
उद्ग्राह	३	२	३७	"	३	२	१२	उपचाय्य	२	७	२०
उद्ग	१	४	२७	उन्दुर	२	५	१२	उपचित	३	१	८९
उद्गन	३	२	३५	उन्नत	३	१	७०	उपचित्रा	२	४	८७
उद्गाटन	२	१०	२७	उन्नतानत	३	१	६९	उपजाप	२	८	२१
उद्गात	३	२	२६	उन्नय	३	२	१२	उपज्ञा	२	७	१३
उद्गान	२	८	२६	उन्नाय	३	२	१२	उपतप्तृ	२	२	१४
उद्गाल	२	४	३४	उन्मत्त	२	४	७७	उपताप	१	२	५१
उद्गित	३	१	९५	"	२	६	६०	उपत्यका	२	३	७
उद्ग्राव	२	८	१११	उन्मदिष्णु	३	१	१२३	उपदा	२	८	२८
उद्गर्ष	१	७	३८	उन्मनस्	३	१	८	उपधा	२	८	२१
उद्गव	१	७	३८	उन्माथ	२	८	११५	उपधान	२	६	१३७
उद्गान	२	९	२९	"	२	१०	२६	उपधि	१	७	३०
उद्गार	२	९	४	उन्माद	१	७	२६	उरनाह	१	७	७
उद्गृत	३	१	९०	उन्मादवत्	२	६	६०	उपनिधि	२	९	८१
उद्गव	१	४	३०					उपनिषद्	३	३	९३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
उपनिष्कार	२	१	१८	उपसंपन्न	२	७	२६	उपासना	२	७	३५
उपन्यास	१	६	९	"	७	९	४५	उपासित	३	१	१०२
उपपत्ति	२	६	३५	उपसर	३	७	२५	उपाहित	१	४	१०
उपबर्ह	२	६	१३७	उपसर्ग	२	८	१०२	"	३	१	९२
उपभृत्	२	७	२५	उपसर्जन	३	१	६०	उपेन्द्र	१	१	२०
उपभोग	३	२	२०	उपसर्ग्या	७	९	७०	उपोदिका	२	४	१५७
उपमा	२	१०	३६	उपसूर्यक	१	३	३२	उपोद्वात	१	६	९
"	२	१०	३७	उपस्कार	२	९	३५	उभययुस्	३	४	२१
उपमान	१	१०	३६	उपस्थ	७	६	७५	उभयेयुस्	३	४	२१
उपयम	२	७	५६	उपस्पर्श	२	७	३६	उमा	१	१	३६
उपयाम	२	७	५६	उपहार	७	८	२८	"	२	९	२०
उपरक्त	१	४	१०	उपहर	३	३	१८३	उमापति	१	१	३४
"	३	१	४३	उपांशु	२	८	७३	उरःसूत्रिका	२	६	१०४
उपरक्षण	२	८	३३	उपाकरण	७	७	४०	उरग	१	८	८
उपराग	१	४	९	उपाकृत	७	७	२५	उरण	२	९	७६
उपराम	३	२	३७	उपात्यय	२	७	३७	उरणाख्य	२	४	१४७
उपल	२	३	४	"	३	२	३३	उरभ्र	२	९	७६
उपलब्धार्था	१	६	५	उपादान	३	१	१६	उररी	३	३	२५५
उपलब्धि	१	५	१	उपाधि	१	७	२८	उररीकृत	३	१	१०८
उपलम्भ	३	२	२७	"	३	१	१२	उरश्छद	२	८	६४
उपला	३	३	२००	उपाध्याय	७	७	७	उरस्	२	६	७८
उपवन	२	४	२	उपाध्याया	३	६	१४	उरसिल	२	८	७६
उपवर्तन	२	१	८	उपाध्यायानी	२	६	१५	उरस्य	२	६	२८
उपवास	२	७	३८	उपाध्यायी	२	६	१४	उरस्वत्	२	८	७६
उपविषा	२	४	९९	"	२	६	१५	उरु	३	१	५१
उपवीत	२	७	४९	उपानह	२	१०	३०	उरुवृक	२	४	५१
उपशल्य	२	२	२०	उपायचतुष्टय	२	८	२०	उर्वरा	२	१	४
उपशाय	३	२	३२	उपायन	२	८	२८	उर्वशी	१	१	५१
उपश्रुत	३	१	१०९	उपावृत्त	२	८	५०	उर्वार	२	४	१५५
उपसंख्यान	२	६	११७	उपासक	२	८	८८	उर्वी	२	१	३
				उपासन	२	८	८६	उरुप	२	४	९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
उलूक	२	५	१५	ऊ				ऊष्मागम	१	४	१९
उलूखल	२	९	२५	ऊत	३	१	१०१	ऊह	१	५	३
उलूखलक	२	४	३६	ऊधस्	२	९	७३	ऋ			
उलूपिन्	१	१०	१८	ऊम्	३	४	१८	ऋक्थ	२	९	९०
उल्का	३	५	८	ऊररी	३	३	२५४	ऋक्ष	१	३	२१
उल्ब	२	६	३८	ऊरव्य	२	९	१	"	२	४	५७
उल्बण	३	१	८१	ऊरी	३	३	२५४	"	२	५	४
उल्मुक	२	९	३०	ऊरोकृत	३	१	१०८	ऋक्षगन्धा	२	४	१३७
उल्लाघ	२	६	५७	"	३	१	१०८	ऋक्षगन्धिका	२	४	११०
उल्लोच	२	६	१२०	ऊर	२	३	७३	ऋन्	१	६	३
उल्लोल	१	१०	५	ऊरुज	२	९	१	ऋजीष	२	९	३२
उशनस्	१	३	२५	ऊरुपर्जन	२	६	७२	ऋजु	३	१	७२
उशीर	२	४	१३४	ऊर्ज	१	४	१८	ऋजुरोहित	१	३	१०
उषा	२	४	१७	ऊर्जस्त्वल	२	८	७६	ऋग	२	९	३
उषर्बुध	१	१	५४	ऊर्जस्विन्	२	८	७६	ऋतीया	३	२	३२
उषस्	१	४	२	ऊर्जनाम	२	५	१३	ऋत	१	६	२२
उषा	३	४	१८	ऊर्गा	३	३	५०	"	२	९	२
उषापति	१	१	२७	ऊर्गायु	२	९	७६	ऋतु	१	४	१३
उषित	३	१	९९	"	२	९	१०७	"	१	४	१९
उष्ट्र	२	९	७५	ऊर्ध्वक	१	७	५	"	३	३	६१
उष्ण	२	४	१९	ऊर्ध्वजानु	२	६	४७	ऋतुनती	२	६	०१
"	२	१०	१९	ऊर्ध्वहु	२	६	४७	ऋते	३	४	२
"	३	५	२२	ऊर्मि	१	१०	५	ऋत्विज्	२	७	१७
उष्णरश्मि	१	३	२१	"	३	५	३८	ऋद्ध	२	९	२३
उष्णिका	२	९	५०	ऊर्मिका	२	६	१०७	ऋद्धि	२	४	११२
उष्णीष	३	३	२२०	ऊर्मिमत्	३	१	७१	ऋमु	१	१	८
उष्णोपगम	२	४	१९	ऊष	२	१	४	ऋमुक्षिन्	१	१	४४
उस्र	१	३	३३	ऊषण	२	९	३६	ऋश्य	२	५	१०
उस्त्रा	२	९	६६	ऊषर	२	१	५	ऋषभ	१	७	१
				ऊषवत्	२	१	५	"	२	४	११६
				ऊष्मक	२	४	१८				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
ऋषभ	२	९	५९	एकाशीला	२	४	८५	ऐरावण	१	१	४६
"	३	१	५९	एड	२	६	४८	ऐरावत	१	१	४६
ऋषि	२	७	४०	एडक	२	९	७६	"	१	३	३
ऋष्यप्रोक्ता	२	४	८७	एडगज	२	४	१४७	"	२	४	३८
"	२	४	१०१	एडमूक	३	१	३८	ऐरावती	१	३	९
ए				एडूक	२	२	४	ऐलविल	१	१	६९
एक	३	९	८२	एण	२	५	१०	ऐलेय	२	४	१२१
"	३	१	८२	एन	१	५	१७	ऐश्वर्य	१	१	३६
"	३	३	१६	एनहिं	३	४	२३	ऐषमस्	३	४	२०
एकक	३	१	८२	एष	२	४	१३	ओ			
एकतान	३	१	७१	एषा	३	२	१०	ओकस्	३	३	२३३
एकताल	१	७	३	एषस्	२	४	१३	ओघ	१	७	९
एकदन्त	१	१	३८	एषित	३	१	७६	"	२	५	३९
एकदा	३	४	२२	एनस्	१	४	२३	"	३	३	२७
एकधुर	२	९	६५	एरण्ड	२	४	५१	ओंकार	१	६	४
एकधुरावह	२	९	६५	एला	२	४	१२५	ओजस्	३	३	२३४
एकधुरीण	२	९	६५	एलापर्णी	२	४	१४०	ओण्डपुष्प	२	४	७५
एकपदी	२	१	१५	एलावालुक	२	४	१२१	ओतु	२	५	५
एकपिङ्ग	१	१	६९	एवम्	३	३	२५१	ओदन	२	९	४८
एकपट्टिका	२	६	१०६	"	३	४	९	ओम्	३	४	१२
एकसर्ग	३	१	८०	"	३	४	१२	ओष	३	२	९
एकहायनी	२	९	६८	"	३	४	१५	ओषधी	२	४	६
एकाकिन्	३	१	८२	"	३	४	१६	"	२	४	१३५
एकाग्र	३	१	७९	एषणिका	२	१०	३२	ओषधीश	१	३	१४
"	३	३	१९०	ऐ				ओष्ठ	२	६	९०
एकान्य	३	१	८०	ऐकागारिक	२	१०	२४	"	३	५	१२
एकान्त	१	१	६७	ऐकुद	२	४	१८	औ			
एकायन	३	१	७९	ऐण	२	५	८	औक्षक	२	९	६०
एकायनगत	३	१	८०	ऐणय	३	५	८	औचित्ती	३	५	३९
एकावली	२	६	१०६	ऐतिष्ठा	२	७	१२	औचित्य	३	५	३९
एकाशील	२	४	८१	ऐन्द्रियक	३	१	७९	औत्तानपादि	१	३	२०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
औदनिक	२	१	२८	कङ्काल	२	६	६२	कडु	३	३	३५
औदरिक	३	१	२१	कङ्कु	२	९	२०	कडुतुम्बो	२	४	१५६
औपगवका	३	२	३२	कङ्क	२	६	९५	कडुरोहिणी	२	४	८५
औपधिक	२	८	२४	कङ्कर	३	१	५५	कट्वल	२	४	४०
औपवस्त	२	७	३८	कङ्कित	३	४	१४	कट्वङ्ग	२	४	५६
औरभ्रक	२	९	७०	कङ्कछ	२	१	१०	कटिञ्जर	२	४	७९
औरस	२	६	८८	"	२	४	१२८	कठिन	३	१	७३
और्ध्वदेहिक	२	७	३०	कङ्कछप	१	१०	२१	कठिलक	२	४	१५४
और्व	१	१	५६	कङ्कछपी	३	३	१३२	कठोर	३	१	७३
औक्षीर	३	३	१८६	कङ्कछुर	२	६	५८	कडङ्कर	२	९	२२
औषध	२	४	१३५	कङ्कछुरा	२	४	९२	कडम्ब	२	९	३५
"	२	६	५०	कङ्कछू	२	६	५३	कडार	१	५	१६
औष्ट्रक	२	९	७७	कङ्कुक	१	८	९	कण	३	१	६२
क				"	२	८	६३	"	३	३	४६
कंस	२	९	३२	कङ्कुकिन्	२	८	८	कणा	२	४	९६
कंसाराति	१	१	२१	कट	२	६	७४	"	२	९	३६
ककुद	३	३	९२	"	२	८	३७	कणिका	२	४	६६
ककुबती	२	६	७४	"	२	९	२६	"	३	५	८
ककुम्	१	३	१	"	३	३	३४	कणिश	२	९	२१
ककुम्भ	१	७	७	कटक	२	३	५	कण्टक	३	५	३२
"	२	४	४५	"	२	६	१०७	कण्टकारिका	२	४	९३
ककूलक	२	६	१३०	कटम्भरा	२	४	८५	कण्टकिफल	२	४	६१
कक्ष	२	६	७९	"	२	४	१५३	कण्ठ	२	६	८८
"	३	३	२१९	कटमी	२	४	१५०	"	३	५	१२
कक्ष्या	२	८	४२	कटाक्ष	२	६	९४	कण्ठभूषा	२	६	१०४
"	३	३	१५८	कटाह	३	५	२१	कण्डुरा	१	४	८६
कङ्क	२	५	१६	कटि	२	६	७४	कण्डू	२	६	५३
कङ्कटक	२	८	६४	कटी	३	५	३८	कण्डूया	२	६	५३
कङ्कण	२	६	१०८	कटोप्रोथ	२	६	७५	कण्डोल	२	९	२६
कङ्कृतिका	२	६	१३९	कडु	१	५	९	कण्डोलवीणा	२	१०	३१
				"	२	४	८५	कृत्तृण	२	४	१६६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कथा	१	६	६	कन्दली	२	५	०	कवन्ध	३	८	११८
कदध्वन्	२	१	१६	कन्दु	२	०	३०	कवरी	२	६	०७
कदम्ब	२	४	४२	कन्दुक	२	६	१३८	"	२	९	४०
कदम्बक	२	५	४०	कन्धरा	२	६	८८	कम्	३	३	२५०
"	२	९	१७	कन्या	२	६	८	कमठ	१	१०	२१
कदर	२	४	५०	कपट	१	७	०	कमठी	१	१०	२४
कदर्थ	३	१	४८	कपर्द	१	१	३५	कमण्डलु	०	७	४३
कदली	२	४	११३	कपर्दिन्	१	१	३२	कमन	३	१	२४
"	४	५	९	कपाट	२	२	१७	कमल	१	१०	३
कदाचित्	३	४	४	कपाल	०	६	६८	"	१	१०	४०
कदुष्ण	१	३	३५	कपालभृत्	१	१	३२	"	३	३	१९५
कदु	१	५	१६	कपि	२	५	३	कमला	१	१	२७
कद्वद	३	१	३७	कपिकच्छु	०	४	८७	कमलासन	१	१	१७
कनक	२	९	९४	कपिस्थ	२	४	२१	कमलोत्तर	२	९	१०६
कनकाध्यक्ष	२	८	७	कपिल	१	५	५६	कमितृ	३	१	२३
कनजालुका	२	८	६२	कपिला	१	३	४	कम्प	१	७	३८
कनकाह्वय	२	४	७७	"	२	४	१२०	कम्पन	३	१	७४
कनिष्ठ	२	६	४३	कपिवल्ली	२	४	९७	कम्पित	३	१	८७
"	३	३	४१	कपिश	१	५	१६	कम्प	३	१	७४
कनिष्ठा	२	६	८२	कपीवन	२	४	२७	कम्बल	२	६	११६
कनीनिका	३	६	९२	"	३	४	४३	"	२	८	८७
कनीयस्	३	१	६२	"	०	४	६३	"	३	३	१९५
"	३	३	२३५	कपोत	३	५	१४	कम्बि	२	९	६४
कन्या	३	५	९	कपोतपालिका	०	०	१८	कम्बु	१	१०	२३
"	३	५	०	कपोतलिङ्ग	२	४	१०१	"	३	३	१३३
कन्द	२	४	१५७	कपोल	२	६	९०	कम्बुग्रीवा	२	६	८८
"	३	५	३५	कफ	२	६	६२	कम्ब	३	१	२४
कन्दर	२	३	६	कफिन्	२	६	६०	कर	१	३	३३
कन्दराल	२	४	२९	कफोणि	२	६	८०	"	२	८	२७
"	२	४	४३	कवन्ध	१	१०	४				
कन्दर्प	१	१	२५								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कर	३	३	१६४	करिपिप्पली	२	४	९७	कर्णेजप	३	१	४७
"	३	५	१२	करिशवक	२	८	३५	कर्तरी	२	१०	३३
करक	१	३	१२	करीर	२	४	७७	कर्दम	१	१०	९
"	२	४	६४	"	३	३	१७४	कर्पट	२	६	११५
"	३	३	६	करीष	२	९	५१	कर्पर	२	६	६८
करज	२	४	४७	करुण	१	७	१७	"	३	३	१९२
"	२	४	१२९	करुणा	१	७	१८	कर्परी	२	९	१०१
करज्जक	२	४	४७	करेडु	२	५	१९	कर्पास	३	५	३५
करट	२	५	२०	करेणु	३	३	५२	कर्पूर	२	६	१३०
"	३	३	३४	करोटि	२	६	६९	कबुर	१	१	६०
करण	२	१०	२	कर्क	२	८	४६	"	१	५	१७
"	३	३	५४	कर्कटक	१	१०	२१	"	२	९	९४
करण्ड	३	५	१८	कर्कटी	२	४	१५५	कर्मकार	२	१०	१५
करतोया	१	१०	३३	कर्कन्धू	२	४	३६	"	३	१	१९
करपत्र	२	१०	३४	"	३	५	३८	कर्मकार	३	१	१९
करभ	२	६	८१	कर्करी	२	९	३१	कर्मक्षम	३	१	१८
"	२	९	७५	कर्करेडु	२	५	१९	कर्मठ	३	१	१८
करभूषण	२	६	१०८	कर्कश	२	४	४६	कर्मण्या	२	१०	३८
करमर्दक	२	४	६८	"	३	१	७६	कर्मन्	३	२	१
करम्भ	२	९	४८	"	३	३	२१८	कर्मन्दिन्	२	७	४१
कररुह	२	६	८३	कर्कार	२	४	१५५	कर्मशोल	३	१	१८
करवाल	२	८	८९	कर्चूर	२	४	१५४	कर्मशूर	३	१	१८
करवालिका	२	८	९१	कर्चूरक	२	४	१३४	कर्मसचिव	२	८	४
करवीर	२	४	७७	कर्ण	२	६	९३	कर्मार	२	४	१६०
करशाखा	२	६	८२	कर्णजलौकस्	२	५	१३	कर्मेन्द्रिय	१	५	८
करशांकर	२	८	१३७	कर्णधार	१	१०	१२	कर्ष	२	९	८६
करहाट	१	१०	४३	कर्णवेष्टन	२	६	१०३	कर्षक	२	९	५
करहाटक	२	४	५२	कर्णिका	२	६	१०३	कर्षफल	२	४	५८
कराल	३	३	२०५	"	३	३	१५	कर्षू	३	३	२२३
करिणी	२	८	३६	कर्णिकार	२	४	६०	कल	१	७	२
करिन्	२	८	३४	कर्णोरथ	२	८	५१				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कलकल	१	६	२५	कलिल	३	१	८५	कशिपु	३	३	१३०
कलङ्क	१	३	१७	कलुष	१	४	२३	कशेरु	३	५	१३
"	३	३	४	"	१	१०	१४	कशेरुका	२	६	६९
कलत्र	३	३	१७	कलेवर	२	६	७०	कश्मल	२	८	१०९
कलधौत	३	३	७६	कल्क	३	३	१४	कश्य	२	८	४७
कलभ	२	८	३५	कल्प	१	४	२१	"	२	१०	४०
कलम	२	९	२४	"	१	४	२२	"	३	१	४४
"	२	९	३५	"	२	७	३९	कष	२	१०	३२
कलम्ब	२	८	८७	"	२	८	२४	कषाय	१	५	९
कलम्बी	२	४	१५७	कल्पना	२	८	४२	"	३	३	१५३
कलरव	२	५	१४	कल्पवृक्ष	१	१	५०	कष्ट	१	९	४
कलल	२	६	३८	कल्पान्त	१	४	२२	"	३	३	३९
कलविङ्क	२	५	१८	कल्मष	१	४	२३	कस्तूरी	२	६	१२९
कलश	२	९	३१	कल्माष	१	५	१७	कह्लार	१	१०	३६
कलशि	२	४	९३	कल्य	१	४	२	कह	२	५	२२
कलईस	२	५	२३	"	२	६	५७	काक	२	५	२०
कलह	२	८	१०४	"	३	६	१६०	काकचिख्री	२	४	९८
कला	१	३	१५	कल्या	१	६	१८	काकतिन्दुक	२	४	३९
"	१	४	११	कल्याण	१	४	२५	काकनासिका	२	४	११८
"	३	३	१९८	कल्लोल	१	१०	६	काकपक्ष	२	६	९६
कलाद	२	१०	८	कवच	२	८	६४	काकपीलुक	२	४	३९
कलानिधि	१	३	१४	कवल	२	९	५४	काकमाची	२	४	१५१
कलाप	३	३	१२९	कवरी	२	४	१३९	काकमुद्रा	२	४	११३
कलाय	२	९	१६	कवि	१	३	२५	काकली	१	७	२
कलि	२	८	१०५	"	२	७	५	काकाङ्गी	२	४	११८
"	३	३	१९४	कविका	२	८	४९	काकिणी	३	५	९
कलिका	२	४	१६	कविय	३	५	३५	काकु	१	६	१२
कलिङ्ग	२	४	६७	कवीष्ण	१	३	३५	काकुद	२	६	९१
"	२	५	१६	कव्य	२	७	२४	काकेन्दु	२	४	३९
कलिद्रुम	२	४	५८	कशा	२	१०	३१	काकोदुम्बरिका	२	४	६१
कलिमारक	२	४	४८	कशाई	३	१	४४	काकोदर	१	८	७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
काकोल	१	८	१०	कान्ता	२	६	३	काय (तीर्थ)	२	७	५०
"	२	५	२१	कान्तार	२	९	१७	कायस्था	२	४	५९
काक्षी	२	४	१३१	"	३	३	१७२	कारण	१	४	२१
काङ्क्षा	२	७	२७	कान्तारक	२	४	१६३	कारणा	१	९	३
काच	२	९	९९	कान्ति	१	३	१७	कारणिक	३	१	७
"	२	१०	३०	"	३	२	८	कारण्डव	२	५	३४
"	३	३	२८	कान्दविक	२	९	२८	कारम्भा	२	४	५६
काचस्थाली	२	४	५४	कान्दिशीक	३	१	४२	कारवी	२	४	२११
काचित	३	१	८९	कापथ	२	१	१६	"	२	४	१५२
काञ्चन	२	९	९५	कापोत	२	५	४३	"	२	९	३७
काञ्चनाहय	२	४	६५	"	२	९	१०९	"	२	९	४०
काञ्चनी	२	९	४१	कापोताजन	२	९	१००	कारवेळ	२	४	१५४
काञ्ची	२	६	१०८	काम	१	१	२५	कारा	२	८	११९
काञ्जिक	२	९	३९	"	१	७	२८	कारिका	३	३	१५
काण्ड	३	३	४३	"	२	९	५७	कारोष	३	२	४३
काण्डपृष्ठ	२	८	६६	"	३	३	१३८	कारु	२	१०	५
काण्डवत्	२	८	६९	कामन	३	१	२४	कारुणिक	३	१	१५
काण्डीर	२	८	६९	कामपाल	१	१	२३	कारुण्य	१	७	१८
काण्डेक्षु	२	४	१०४	कामम्	३	४	१३	कारोत्तर	२	१०	४२
कातर	२	१	२६	कामयितु	३	१	२४	कार्तस्वर	२	९	९५
कात्यायनी	१	१	३६	कामिनी	२	६	३	कार्तान्तिक	२	८	१४
"	२	६	१७	"	३	३	११२	कार्तिक	१	४	१७
कादम्ब	२	५	२३	कामुक	३	१	२३	कार्तिक्रिक	१	४	१८
कादम्बरी	२	१०	३९	कामुका	२	६	९	कार्तिकेय	१	१	३९
कादम्बिनी	१	३	८	कामुकी	२	६	९	कर्पास	२	६	१११
काद्रवेय	१	८	४	काम्पिल्य	२	४	१४६	"	३	५	३५
कानन	२	४	१	काम्बल	२	८	५४	कार्पासी	२	४	११६
कानीन	२	६	२४	काम्बविक	२	१०	८	कार्म	३	१	१८
कान्त	३	१	५२	काम्बोज	२	८	४५	कार्मण	३	२	४
कान्तलक	२	४	१२८	काम्बोजी	२	४	१३८	कार्मुक	२	८	८३
				काम्यदान	३	२	३	कार्य	२	४	४४
				काय	२	६	७१				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कार्वाण	२	९	८८	कालीयक	२	४	१०१	किङ्किणी	१	६	११०
काषिक	२	९	८८	"	२	६	१२६	किञ्चित्	३.	४	८
काल	१	१	५९	कालपक	२	४	१३५	किञ्चलक	१	१०	२२
"	१	४	१	कालया	२	९	७०	किञ्चलक	१	१०	४३
"	१	५	१४	कावचिक	२	८	६६	किटि	२	५	२
"	३	३	१९४	कावेरी	१	१०	३५	किट्ट	२	६	६५
"	३	५	११	काव्य	१	३	२४	किण	३	५	१८
कालक	२	६	४९	काश	३	४	१६२	किणिही	२	४	८९
कालकण्ठक	२	५	२१	काश्मरी	२	४	३५	किण्व	२	१०	४२
कालकूट	१	८	१०	काश्मर्य	२	४	३६	कितव	२	४	७७
कालखण्ड	२	६	६६	काश्मीर	२	४	४५	"	२	१०	४३
कालधर्म	२	८	११६	काश्मीरजन्मन्	२	६	१२४	किन्नर	१	१	११
कालपृष्ठ	२	८	८३	काश्यपि	१	३	३२	"	१	१	७१
कालमेषिका	२	४	९०	काश्यपी	२	१	२	किन्नरेश	१	१	६९
"	२	४	१०९	काष्ठ	२	४	१३	किम्	३	३	२५१
कालमेषी	२	४	९६	काष्ठकुहाल	१	१०	१३	"	३	४	५
कालशेय	२	९	५३	काष्ठतक्ष्	२	१०	९	किमु	३	४	५
कालसूत्र	१	९	२	काष्ठा	१	३	१	किमुत	३	४	२
कालस्कन्द	२	४	३८	"	१	४	११	"	३	४	५
"	२	४	६८	"	३	३	४१	किम्पचान	३	१	४८
काला	२	४	९४	काष्ठीला	२	४	११३	किम्पुरुष	१	१	७१
"	२	४	१०९	कास	२	६	५२	किरण	१	३	३३
"	२	९	३७	कासमर्द	३	५	१९	किरात	२	१०	२०
कालाशुर	२	६	१२७	कासर	२	५	४	किराततित्त	२	४	१४३
कालानुसार्य	२	४	१२२	कासार	१	१०	२८	किरि	२	५	२
"	२	६	१२६	किंवदन्ती	१	६	७	किरीट	२	६	१०२
कालायस	२	९	९८	किंशारु	२	९	२१	किमीर	१	५	१७
कालिका	३	३	१५	"	३	३	१६३	किल	३	३	२५५
कालिन्दी	१	१०	३२	किंशुक	२	४	२९	किलास	२	६	५३
कालिन्दीभेदन	१	१	२४	किंशुकि	२	५	१६	किलासिन्	२	६	६१
काली	१	१	३६	किङ्कर	२	१०	१७				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
किलिजक	२	९	२६	कुचन्द्रन	२	६	१३२	कुड्य	२	२	४
किलिप	१	४	२३	कुचर	३	१	३७	कुणप	२	८	११८
"	३	३	२२४	कुचाग्र	२	६	७७	"	३	५	२०
किशोर	२	८	४६	कुज	१	३	२५	कुणि	२	४	१२८
किष्कु	३	३	७	कुञ्जित	३	१	७१	"	२	६	४८
किसलय	२	४	१४	कुञ्ज	२	३	८	कुण्ठ	३	१	१७
कोकस	२	६	६८	कुञ्ज	३	३	३१	कुण्ड	२	६	३६
कोचक	२	४	१६१	कुञ्जर	२	८	३४	"	२	९	३१
कोनाश	३	३	२१६	"	३	१	५९	कुण्डल	२	६	१०३
कोर	२	५	२१	कुञ्जराशन	२	४	२०	कुण्डलिन्	१	८	७
कीर्ति	१	६	११	कुञ्जल	२	९	३९	कुण्डी	२	७	४६
कील	१	१	५७	कुट	२	४	५	कुतप	२	९	३३
"	३	३	१९८	"	२	९	३२	कुतुक	१	७	३१
कीलक	२	९	७३	कुटक	२	९	१३	कुतुप	२	७	३१
कीलाल	१	१०	३	कुटज	२	४	६६	कुतू	२	९	३३
"	३	३	२००	कुटजट	२	४	५७	कुतूहल	१	७	३१
कीलिन	३	१	४२	"	२	४	१३१	कुरसा	१	६	१३
कीश	२	५	३	कुटिल	३	१	७१	कुत्सित	३	१	५४
कु	२	१	३	कुटी	२	२	४	कुथ	२	४	१६६
"	३	३	२४१	"	३	५	३८	"	२	८	४२
कुकर	२	६	४८	"	३	५	३८	कुदाल	२	४	२२
कुचन्द्र	२	६	७५	कुटुम्बन्याप्त	३	१	११	कुनटी	२	९	१०८
कुकुल	३	३	२०३	कुटुम्बिनी	२	६	६	कुनाशक	२	४	९१
कुक्कुट	२	५	१७	कुट्टनी	२	६	१९	कुन्त	२	८	९३
कुक्कुभ	२	५	३५	कुट्टिम	३	५	३४	कुन्तल	२	६	९५
कुक्कुर	२	४	१३२	कुठर	२	९	७४	कुन्द	२	४	७३
"	२	१०	२१	कुठार	२	८	९२	"	२	४	१२१
कुक्षि	२	६	७७	कुठेरक	२	४	७९	"	३	५	१९
कुक्षिम्भरि	३	१	२१	कुडव	२	९	८९	कुन्दुर	२	४	१२१
कुङ्कुम	२	६	१२३	कुङ्कक	३	५	१७	कुन्दुरकी	२	४	१२४
कुच	२	६	७७	कुङ्मल	२	४	१६	कुपूय	३	१	५४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कुप्य	२	९	९१	कुरबक	२	४	७५	कुवाद	३	१	३७
कुबेर	१	१	६८	कुरर	२	५	२३	कुविन्द	२	१०	६
"	१	३	३	कुरण्टक	२	४	७५	कुवेणी	१	१०	१६
कुबेरक	२	४	१२७	कुरविन्द	२	४	१५९	कुश	२	४	१६६
कुवेराक्षी	२	४	५५	कुरविस्त	२	९	८६	"	३	३	२१६
कुब्ज	२	६	४८	कुल	२	५	४१	कुशल	१	४	२६
कुमार	१	१	४०	"	२	७	१	"	३	१	४
"	१	७	१२	कुलक	२	४	३९	"	३	३	२०४
कुमारक	२	४	२४	"	२	४	१५५	कुशी	२	९	९९
कुमारी	२	४	७३	"	१	१०	५	कुशीलव	२	१०	१२
"	२	६	८	कुलटा	२	६	१०	कुशेशय	१	१०	४०
कुमुद	१	३	३	कुलत्थिका	२	९	१०२	कुष्ट	२	४	१२६
"	१	१०	३७	कुलपालिका	२	६	७	कुष्ठ	२	६	५४
कुमुदबान्धव	१	३	१३	कुलश्रेष्ठिन्	२	१०	५	"	३	५	३४
कुमुदिका	२	४	४०	कुलसम्भव	२	७	२	कुसीद	२	९	४
कुमुदिनी	१	१०	३९	कुलस्त्री	२	६	७	कुसीदिक	२	९	५
कुमुद्व	२	१	९	कुलाय	२	५	३७	कुसुम	२	४	१७
कुमुदती	१	१०	३८	कुलाल	२	१०	६	कुसुमाञ्जन	२	९	१०३
कुम्बा	२	७	१८	कुलाली	२	९	१०२	कुसुमेषु	१	१	२६
कुम्भ	२	४	३४	कुलिश	१	१	४७	कुसुम्भ	२	९	१०६
"	२	८	२७	कुली	२	४	९४	"	३	३	१३३
"	३	३	१३४	कुलीन	२	७	३	कुसुति	१	७	३०
कुम्भकार	२	१०	६	कुलीर	१	१०	२१	कुस्तुम्बुर	२	९	३८
कुम्भसम्भव	१	३	२०	कुलमाष	२	९	३९	कुहना	२	७	५३
कुम्भिका	१	१०	३८	"	३	५	२१	कुहर	१	८	१
कुम्भी	२	४	४०	कुलमाषामिषुत	२	९	३९	कुह	१	४	५
कुम्भीर	१	१०	२१	कुल्य	२	६	६८	कुकुद	३	१	१४
कुरक्	२	५	८	कुल्या	१	१०	३४	कूट	२	३	४
कुरण्टक	२	४	७४	कुवल	२	४	३६	"	२	५	४२
"	२	४	७५	"	३	५	४२	"	३	३	३७
कुरबक	२	४	७४	कुबलय	१	१०	३७	कूटयन्त्र	२	१०	२६

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कूटशास्त्रमलि	२	४	४७	कृतिन्	२	७	६	कृष्णफला	२	४	९६
कूटस्थ	३	१	७३	"	३	१	४	कृष्णमेदा	२	४	८६
कृप	१	१०	२६	कृत्त	३	१	१०३	कृष्णला	२	४	९८
कृपक	१	१०	१०	कृत्ति	२	७	४६	कृष्णलोहित	१	५	१६
"	१	१०	१२	कृत्तिवासस्	१	१	३१	कृष्णवर्त्मन्	१	१	५४
"	२	६	७५	कृत्या	३	३	१५९	कृष्णवृन्ता	२	४	५५
कृवर	२	८	५७	कृत्रिमधूपक	२	६	१२८	कृष्णसार	२	५	१०
कूर्च	२	६	९२	कृत्स्न	३	१	६५	कृष्णा	२	४	९६
कूर्चशार्ध	२	४	१४२	कृपण	३	१	४८	कृष्णिका	२	९	१९
कृचिका	२	९	४४	कृपा	१	७	१८	केकर	२	६	४९
कूर्वन	१	७	३३	कृपाण	२	८	८९	केका	२	५	३१
कृपर	२	६	८०	कृपाणी	२	१०	३३	केकिन्	२	५	३०
कृपांसक	२	६	११८	कृपालु	३	१	१५	केतकी	२	४	१७०
कूर्म	१	१०	२१	कृपीटयोनि	१	१	५३	केतन	२	८	९९
कूल	१	१०	७	कृमि	२	५	१३	"	३	३	११४
कूमाण्डक	२	४	१०५	कृमिन्न	२	४	१०६	केतु	३	३	६०
कृकण	२	५	१९	कृमिज	२	६	१२६	केदर	३	५	२०
कृकलास	२	५	१२	कृश	३	१	६१	केदार	२	९	११
कृकशकु	२	५	१७	कृशानु	१	१	५४	केनिपातक	१	१०	१३
कृकाटिका	२	६	८८	कृशानुरेतस्	१	१	३३	केयूर	२	६	१०७
कृच्छ्र	१	९	४	कृशाधिन्	२	१०	१२	केलि	१	७	३२
"	२	७	५२	कृषक	२	९	१३	केवल	३	३	२०४
कृत	३	३	७७	कृषि	२	९	२	केश	२	६	९५
कृतपुङ्ख	२	८	६८	कृषिक	२	९	५	"	३	५	१२
कृतमाल	२	४	२४	कृषीवल	२	९	५	केशपर्णी	२	४	८९
कृतमुख	३	१	४	कृष्टि	२	७	६	केशपाशी	२	६	९७
कृतलक्षण	३	१	१०	कृष्ण	१	१	१८	केशव	१	१	१८
कृतसापलिका	२	६	७	"	१	४	१२	"	२	६	४५
कृतहस्त	२	८	६८	"	१	५	१४	केशवेश	२	६	९६
कृतान्त	१	१	५८	"	२	९	३६	केशाम्बुनामन्	२	४	१२२
"	३	३	६४	कृष्णपाकफल	२	४	६७	केशिक	२	६	४५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
केशिन्	२	६	४५	कोटि	३	३	३८	कोश	२	९	९१
केशिनी	२	४	१२६	कोटिवर्षा	२	४	१३३	,,	३	६	२२१
केसर	१	१०	४३	कोटिश	२	९	१२	कोशफल	२	६	१३०
,,	२	४	२५	कोट्ट	३	५	१८	कोशातकी	३	३	८
,,	२	४	६४	कोठ	२	६	५४	कोष	३	३	२२१
,,	२	४	६५	कोण	१	७	६	कोष्ठ	३	३	४०
केसरिन्	२	५	१	,,	२	८	९३	कोष्ण	१	३	३५
कैटभजित्	१	१	२२	कोदण्ड	२	८	८३	कौकुटिक	३	३	१७
कैडर्य	२	४	४०	कोद्रव	२	९	१६	कौक्षेयक	२	८	८९
कैनव	१	७	३०	कोप	१	७	२६	कौटक्ष	२	१०	१
,,	२	१०	४४	कोपना	२	६	४	कौटिक	२	१०	१४
कैदारक	२	९	११	कोपिन्	३	१	३२	कौणप	१	१	५९
कैदारिक	२	९	११	कोमल	३	१	७८	कौतुक	१	७	३१
कैदार्य	२	९	११	कोयष्टिक	२	५	३५	कौतूहल	१	७	३१
कैरव	१	१०	३७	कोरक	१	४	१६	कौद्रवीण	२	९	८
कैलास	१	१	७०	कोरङ्गी	२	४	१२५	कौन्तिक	२	८	७०
कैवर्त	१	१०	१५	कोरदूष	२	९	१६	कौन्ती	२	४	१२०
कैवर्तीमुस्तक	२	४	१३२	कोल	१	१०	११	कौपीन	३	३	१२३
कैवल्य	१	५	६	,,	२	४	३६	कौमुदी	१	३	१६
कैशिक	२	६	९६	,,	२	५	२	कौमोदकी	१	१	२८
कैश्य	२	६	९६	कोलक	२	६	१०९	कौलटिनेय	२	६	२७
कोक	२	५	७	,,	२	९	३६	कौलटेय	२	६	२६
,,	१	५	२२	कोलदल	२	४	१३०	,,	२	६	२७
कोकनद	१	१०	४२	कोलम्बक	१	७	७	कौलटेर	२	६	२६
कोकनदच्छवि	१	५	१५	कोलवल्ली	२	४	९७	कौलीन	३	३	११६
कोकिल	२	५	१९	कोला	२	४	९७	कौलेयक	२	१०	२१
कोकिलाक्ष	२	४	१०४	कोलाहल	१	६	२५	कौशिक	२	४	३४
कोटर	२	४	१३	कोलि	२	४	३६	,,	३	३	१०
कोटवी	२	६	१७	कोविद	२	७	५	कौशेय	२	६	१११
कोटि	२	८	८४	कोविदार	२	४	२२	कौस्तुभ	१	१	२८
,,	२	८	९३	कोश	२	५	३७	ककच	२	१०	३४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
ककर	२	४	७७	कूर	३	१	७६	क्षण	१	७	३८
"	२	५	१९	"	३	३	१९२	"	३	३	४७
कतु	२	७	१३	क्रय	२	९	८१	क्षणदा	१	४	४
कतुध्वंसिन्	१	१	३४	क्रोड	२	५	२	क्षणन	२	८	११४
कतुभुज्	१	१	९	"	२	६	७७	क्षणप्रभा	१	३	९
कथन	२	८	११५	क्रोध	१	७	२६	क्षतज	२	६	६४
कन्दन	२	८	१०७	क्रोधन	३	१	३२	क्षतव्रत	२	७	५४
"	३	३	१२३	क्रोष्टु	२	५	५	क्षत्	२	८	५९
कन्दित	१	७	३५	क्रोष्टुवित्रा	२	४	९३	"	२	१०	३
कम	२	७	३९	क्रोष्ट्री	२	४	११०	"	३	३	६३
कमुक	२	४	४१	क्रौञ्च	२	५	२२	क्षत्रिय	२	८	१
"	२	४	४१	क्रौञ्चदारण	१	१	४०	क्षत्रिया	२	६	१४
"	२	४	१६९	कुम	३	२	१०	क्षत्रिया	२	६	१५
क्रमेलक	२	९	७५	कुमथ	३	२	१०	क्षत्रियाणी	२	६	१४
क्रयविक्रयिक	२	९	७८	कुञ्ज	३	१	१०५	क्षन्तु	३	१	३१
क्रयिक	२	९	७९	कुञ्जित	३	१	९८	क्षपा	१	४	४
क्रय्य	२	९	८१	कुष्ट	१	६	१९	क्षपाकर	१	३	१५
क्रय्य	२	६	६३	"	३	१	९८	क्षम	३	३	१४३
क्रयाद्	१	१	५९	क्रीतक	२	४	१०९	क्षमा	३	३	१४३
क्रयाद्	१	१	५९	क्रीतकिका	२	४	९४	क्षमितु	३	१	३१
क्रायक	२	९	७९	क्री	२	६	३९	क्षमिन्	३	१	३१
क्रिया	१	६	२	"	३	३	२१४	क्षन्तु	३	१	३१
"	३	२	१	केश	३	२	२९	क्षय	१	४	२२
"	३	३	१५७	क्षोम	२	६	६५	"	२	६	५१
क्रियावत्	३	१	१८	कण	१	६	२४	"	२	८	१९
क्रोडा	१	७	३२	कणन	१	६	२४	"	३	२	७
"	१	७	३३	कथित	३	१	९५	"	३	३	१४६
कुब्ध	२	५	२२	काण	१	६	२४	क्षव	२	६	५२
कुब्ध	१	७	२६	"	३	२	८	"	२	९	१९
कुष्ट	१	७	३५	क्षण	१	४	११	क्षवथु	२	६	५२
कर	३	१	४७					क्षान्त	३	१	९७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
क्षान्ति	१	७	२४	क्षुब्ध	२	९	५४	क्षौम	२	६	११३
क्षार	२	९	९९	क्षुधित	३	१	२०	क्षुण्ण	३	१	९१
क्षारक	२	४	१६	क्षुप	२	४	८	क्ष्मा	२	१	३
क्षारवृत्तिका	२	१	४	क्षुमा	२	९	२०	क्ष्माभृत	२	३	१
क्षारित	३	१	४३	क्षुर	२	४	१०४	"	२	८	१
क्षिति	२	१	२	"	३	५	२०	क्ष्वेढ	१	८	९
"	३	३	७०	क्षुरक	२	४	४०	क्ष्वेढा	२	८	१०७
क्षिपा	३	२	११	क्षुरप्र	३	२	२०	"	३	३	४३
क्षिप्त	३	१	८७	क्षुरिन्	२	१०	१०	क्ष्वेडित	३	५	३४
क्षिप्नु	३	१	३०	क्षुल्लक	२	१०	१६				
क्षिप्र	१	१	६४	"	३	१	६१	ख	१	२	१
क्षिया	३	२	७	"	३	२	१०	"	३	३	१८
क्षीब	३	१	२३	क्षेत्र	२	९	११	"	३	५	२२
क्षीर	१	१०	४	"	२	९	११	खग	२	५	३२
"	२	१	५१	"	३	३	१८०	"	२	८	८६
"	३	३	१८३	क्षेत्रज्ञ	१	४	२९	"	३	३	१९
क्षीरविदारी	२	४	११०	"	३	३	३३	खगेश्वर	१	१	२९
क्षीरशुद्धी	२	४	११०	क्षेत्राजीव	२	९	६	खजाका	२	९	३४
क्षीरावी	२	४	१००	क्षेपण	३	२	११	खज	२	६	४९
क्षोरिका	२	४	४५	क्षेपणी	१	१०	१३	खजन	२	५	१५
क्षोरोद	१	१०	२	क्षेपिष्ठ	३	१	१११	खजरीट	२	५	१५
क्षुब्ध	२	६	५२	क्षेम	१	४	२६	खट	३	५	१७
क्षुत्त	२	६	५२	"	२	४	१२८	खट्वा	२	६	१३८
क्षुताभिजनन	२	९	१९	क्षेमन्	३	५	३४	खन्न	२	५	४
क्षुद्र	३	१	४८	क्षोणि	२	१	२	"	२	८	८९
"	३	३	१७८	क्षोद	२	८	९९	खड्गिन्	२	५	४
क्षुद्रषण्टिका	२	६	११०	क्षोदिष्ठ	३	१	१११	खण्ड	१	३	१६
क्षुद्रशङ्ख	१	१०	२३	क्षोम	२	२	१२	खण्डपरशु	१	१	३१
क्षुद्रा	२	४	९४	क्षौद्र	२	९	१०७	खण्डविकार	२	९	४३
"	३	३	१७७	क्षौम	२	६	१११	खण्डिक	२	९	१६
								खदिर	२	४	४९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
खदिरा	२	४	१४१	खुर	२	४	१३०	गणहासक	२	४	१२८
खद्योत	२	५	२८	"	२	८	४९	गणाधिप	१	१	३८
खनि	२	३	७	खुरणस्	२	६	४७	गणिका	२	४	७१
खनित्र	२	९	१२	खुरणस	२	६	४७	"	२	६	१९
खपुर	२	४	१६९	खेट	३	१	५४	गणिकारिका	२	४	६६
खर	१	३	३५	खेय	१	१०	२९	गणित	३	१	६४
"	२	९	७७	खेला	१	७	३३	गणेय	३	१	६४
खरणस्	२	६	४६	खोड	२	६	४९	गण्ड	२	६	९०
खरणस	२	६	४६	ख्यात	३	१	९	"	२	८	३७
खरपुष्पा	२	४	१३९	ख्यातगर्हण	३	१	९३	"	३	५	१२
खरमञ्जरी	२	४	८९	ख्याति	३	२	९	गण्डक	२	५	४
खरा	२	४	६९	ग				गण्डकारी	२	४	१४१
खराश्वा	२	४	१११	गगन	१	२	१	गण्डैल	२	३	६
खजू	२	६	५३	गङ्गा	१	१०	३१	गण्डाली	२	४	१५९
खजूर	२	४	१७०	गङ्गाधर	१	१	३४	गण्डीर	२	४	१५७
"	२	९	९६	गज	२	८	३४	गण्डूपद	१	१०	२२
खजूंगी	२	४	१७०	गजता	२	८	३६	गण्डूपदी	१	१०	२४
खर्व	२	६	४६	गजबन्धनी	२	८	४३	गण्डूषा	३	५	१०
"	३	१	७०	गजभक्ष्या	२	४	१०३	गतनासिक	२	६	४६
खल	३	१	४७	गजानन	१	१	३८	गद	२	६	५१
खलपू	३	१	१७	गङ्गा	२	२	८	गद्य	३	५	३१
खलिनी	३	२	४२	गडक	१	१०	१७	गन्त्री	२	८	५२
खलीन	२	८	४९	गडु	३	५	१८	गन्ध	१	५	७
खलु	३	३	२५५	गडुल	२	६	४८	गन्धकुटी	२	४	१२३
खल्या	३	२	४२	गण	२	५	४०	गन्धन	३	३	११५
खात	१	१०	२७	"	२	८	८१	गन्धनाकुली	२	४	११४
खादित	३	१	११०	"	३	३	४६	गन्धफली	२	४	५६
खारी	२	९	८८	गणक	२	८	१४	"	२	४	६४
खारीक	२	९	१०	गणनीय	३	१	६४	गन्धमादन	२	३	३
खिल	२	१	५	गणरात्र	१	४	६	गन्धमूली	२	४	१५४
				गणरूप	२	४	८०	गन्धरस	२	५	१०४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
गन्धर्व	१	१	११	गर्गरी	२	९	७४	गवेषणा	२	७	३२
"	२	५	११	गर्जित	१	३	८	गवेषित	३	१	१०५
"	२	८	४४	"	२	८	३६	गव्य	२	९	५०
"	३	३	१३३	गर्त	१	८	२	गव्या	२	९	६०
गन्धर्वहस्तक	२	४	५०	गर्दभ	२	९	७७	गव्यूति	२	१	१८
गन्धवह	१	१	६२	गर्दभाण्ड	२	४	४३	गहन	२	४	१
गन्धवहा	२	६	८९	गर्धन	३	१	२२	"	३	१	८५
गन्धवाह	१	१	६२	गर्भ	२	६	३९	गह्वर	२	३	६
गन्धसार	२	६	१३१	"	३	३	१३५	"	३	३	१८३
गन्धाश्मन्	२	९	१०२	गर्भक	२	६	१३५	गाङ्गेय	२	९	९४
गन्धिक	२	९	१०२	गर्भगार	२	२	८	"	३	३	१५६
गन्धिनी	२	४	१२३	गर्भाशय	२	६	२८	गाङ्गेरुकी	२	४	११७
गन्धोत्तमा	२	१०	३९	गर्भिणी	२	६	२२	गाढ	१	१	६७
गन्धोली	२	५	२७	गर्भोपवातिन	२	९	६९	गाणिक्य	२	६	२२
गभस्ति	१	३	३३	गर्भुव	२	४	१६५	गाण्डिव	२	८	८४
गभीर	१	१०	१५	गर्व	१	७	२२	गाण्डीव	२	८	८४
गम	२	८	९५	गर्हण	१	६	१३	गात्र	२	६	७०
गमन	२	८	९५	गर्ह्य	३	१	५४	"	२	८	४०
गम्भीरी	२	४	३५	गर्ह्यवादिन्	३	१	३७	गात्रानुलेपनी	२	७	१३३
गम्भीर	१	१०	१५	गल	२	६	८८	गान	१	६	२६
गम्य	३	१	९२	गलकम्बल	२	९	६३	गान्धार	१	७	१
गरल	१	८	९	गलन्तिका	२	९	३१	गायत्री	२	४	४९
गरिष्ठ	३	१	११२	गलित	३	१	१०४	गारुत्मत	२	९	९२
गरी	२	४	६९	गल्या	३	२	४२	गार्मिण	२	६	२२
गरुड	१	१	२९	गवय	२	५	११	गार्हपत्य	२	७	१९
गरुडध्वज	१	१	१९	गवल	२	९	१००	गालव	२	४	३३
गरुडाग्रज	१	३	३२	गवाक्ष	२	२	९	गिर	१	६	१
गरुप	२	५	३६	गवाक्षी	२	४	१५६	गिरि	२	३	१
गरुत्मत	१	१	२९	गवीश्वर	२	९	५८	"	३	२	११
"	२	५	३४	गवेधु	२	९	२५	गिरिकर्णी	२	४	१०४
"	३	३	५८	गवेधुका	२	९	२५	गिरिका	२	५	१२
								गिरिज	२	९	१०५

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
गिरिजामल	२	९	१००	गुन्द्रा	२	४	५५	गृध्रसी	३	५	१०
गिरिमल्लिका	२	४	६६	"	२	४	१६०	गृष्टि	२	४	१५१
गिरिश	१	१	३१	गुप्त	३	१	८९	गृह	२	२	४
गिरीश	१	१	३१	"	३	१	१०६	"	२	२	५
गिलित	३	१	११०	गुप्ति	३	३	७४	"	३	३	२३८
गीत	१	६	२६	गुरण	३	२	११	गृहगोधिका	२	५	१२
गीर्ण	३	१	११०	गुरु	१	३	२४	गृहपति	२	८	१५
गीर्णि	३	२	११	"	२	७	७	गृहयात्र	३	१	२७
गीष्पति	१	३	२४	"	३	३	१६२	गृहस्थूण	३	५	३०
गीर्वाण	१	१	९	गुर्विणी	२	६	२२	गृहाराम	२	४	१
गुग्गुलु	२	४	३४	गुल्फ	२	६	७२	गृहावग्रहणी	२	२	१३
गुच्छ	२	६	१०५	गुल्म	२	४	९	गृहिन्	२	७	३
गुच्छक	२	४	१६	"	२	६	६६	गृह्यक	२	५	४३
गुच्छार्ध	२	६	१०५	"	३	३	१४२	"	३	१	१६
गुञ्जा	२	४	९८	"	२	४	९	गेन्दुक	२	६	१३८
गुड	३	३	४२	गुस्मिनी	२	४	९	गेड	२	२	४
गुडपुष्प	२	४	२७	गुवाक	२	४	१६९	गैरिक	२	३	८
गुडफल	२	४	२८	गुह	१	१	३९	"	३	३	१२
गुडा	२	४	१०५	गुहा	२	३	६	गैरेय	२	९	१०४
गुडूची	२	४	८२	"	२	४	९३	गो	२	९	९
गुग	२	८	८५	गुह्य	३	३	१५४	"	२	९	६६
"	२	९	२८	गुह्यक	१	१	१११	"	३	३	२५
"	२	१०	२७	गुह्यकेश्वर	१	१	६८	गोकण्टक	२	४	९९
"	३	३	४७	गूढ	३	१	८९	गोकर्ण	२	५	१०
गुणवृक्षक	१	१०	१२	गूढपाद्	१	८	७	"	२	६	८३
गुणित	३	१	८८	गूढपुरुष	२	२	१३	गोकर्णी	२	४	८४
गुण्ठित	३	१	८९	गूथ	२	६	६८	गोकुल	२	९	५८
गुद	२	६	७३	गून	३	१	९६	गोक्षुरक	२	४	९९
गुन्द्र	२	४	१६२	गृजन	२	४	१४८	गोचर	१	५	८
				गृधु	३	१	२२	गोजिह्वा	२	४	११९
				गृध्र	२	५	२१				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
गोडुम्बा	२	४	१५६	गोमत्	२	९	५८	गौर	१	५	१३
गोण्ड	३	५	१८	गोमय	२	९	५०	"	१	५	१४
गोत्र	२	३	१	गोमायु	२	५	५	"	३	३	१८९
"	२	७	१	गोमिन्	२	९	५८	गौरी	१	१	३६
"	३	३	१८१	गोरम	२	९	५३	"	२	६	८
गोत्रभिद्	१	१	४२	गोद	२	६	६५	गौष्ठान	२	१	१३
गोत्रा	२	१	३	गोल	३	५	२०	ग्रन्थि	२	४	१६२
"	२	९	६०	गोलक	२	६	३६	ग्रन्थिक	२	९	११०
गोदारण	२	९	१४	गोला	२	९	१०८	ग्रन्थित	३	१	८६
गोदुह्	२	९	५७	गोलाह	२	४	३९	ग्रन्थिपर्ण	२	४	१३२
गोधन	२	९	५८	गोलांमा	२	४	१०२	ग्रन्थिल	२	४	३७
गोथा	२	८	६४	"	२	४	१५९	"	२	४	७७
गोधापदी	२	४	११९	"	२	९	१११	ग्रस्त	१	६	२०
गोधि	२	६	९२	गोवन्दनी	२	४	५५	"	३	१	१११
गोधिका	१	१०	२२	गोविन्द	१	१	१९	ग्रह	१	४	९
गोधूम	२	९	१८	"	३	३	९१	"	३	२	८
गोनर्ह	२	४	१३२	गोविष्	२	९	५०	"	३	३	२३६
गोनस	१	८	४	गोशाल	३	५	४०	ग्रहणोरुज्	२	६	५५
गोप	२	८	७	गोशार्ध	२	६	१३१	ग्रहपति	१	३	३०
"	२	९	५७	गोष्ठ	२	१	१३	ग्रहीतृ	३	१	२७
"	३	३	१३०	गोष्ठी	२	७	१५	ग्राम	२	२	१९
गोपति	२	९	६२	गोष्पद	३	३	९४	"	३	३	१४१
गोपरस	२	९	१०४	गोसंख्य	२	९	५७	ग्रामर्णा	३	३	४९
गोपानसी	२	२	१५	गोस्तन	२	६	१०५	ग्रामतक्ष	२	१०	९
गोपायित	३	१	१०६	गोस्तनी	२	४	१०७	ग्रामता	३	२	४२
गोपाल	२	९	५७	गोस्थानक	२	४	१३	ग्रामान्त	२	२	२०
गोपी	२	४	११२	गौतम	१	१	१५	ग्रामीणा	२	४	९४
गोपुर	२	२	१६	गौधार	२	५	६	ग्राम्य	१	६	१९
"	२	४	१३२	गौधेय	२	५	६	ग्राम्यधर्म	२	७	५७
"	३	३	१८३	गौधेर	२	५	६	आबन्	२	३	१
गोप्यक	२	१०	१७								

शब्दाः	का.	व.	इलो.
ग्रावन्	२	३	४
"	३	३	१०६
ग्रास	२	९	५४
ग्राह	१	१०	२१
"	३	२	८
ग्राहिन्	२	४	२१
ग्रावा	२	६	८८
ग्रीष्म	१	४	१८
ग्रीवेयक	२	६	१०४
ग्लस्त	३	१	१११
ग्लह	२	१०	४५
ग्लान	२	६	५८
ग्लास्तु	२	६	५८
ग्लौ	१	३	१४

घ

घट	२	९	३२
घटा	२	८	१०७
घटीयन्त्र	२	१०	२७
घण्टापथ	२	१	१८
घण्टापाटलि	२	४	३९
घण्टारवा	२	४	१०७
घन	१	३	७
"	१	७	३
"	१	७	९
"	२	८	९१
"	३	१	६६
"	३	३	१११
घनरस	१	१०	५
घनसार	२	६	१३०
घनाघन	३	३	११०
घर्म	१	७	३३

शब्दाः	का.	व.	इलो.
घर्म	३	३	१४२
घस्मर	३	१	२०
घस्र	१	४	२
घाटा	२	६	८८
घाण्टिक	२	८	९६
घात	२	८	११५
घातुक	३	१	२८
"	३	१	४७
घास	२	४	१६७
घुटिका	२	६	७२
घुण	३	५	१८
घूर्णित	३	१	३२
घृणा	१	७	१८
"	३	२	३२
"	३	३	५१
घृणि	१	३	३३
घृत	२	९	५२
"	३	३	७६
घृष्टि	२	५	२
घोटक	२	८	४४
घोणा	२	६	८९
घोणिन्	२	५	२
घोण्टा	२	४	३७
घोर	१	७	२०
घोष	२	२	२०
घोषक	२	४	११७
घोषणा	१	६	१२
घ्राण	१	६	८९
"	३	१	९०

शब्दाः	का.	व.	इलो.
घ्राणतर्पण	१	५	११
घ्रात	३	१	९०
च			
च	३	३	२४१
"	३	४	५
चकौरक	२	५	३५
चक	१	१०	७
"	२	५	२२
"	२	८	५६
"	२	८	७८
"	३	३	१८२
चक्रकारक	२	४	१२९
चक्रपाणि	१	१	२०
चक्रमर्दक	२	४	१४७
चक्रला	२	४	१६०
चक्रवर्तिन्	२	८	२
चक्रवर्तिनी	२	४	१५३
चक्रवाक	२	५	२२
चक्रवाल	१	३	६
"	२	३	२
चक्राङ्ग	२	५	२३
चक्राङ्गी	२	४	८६
चक्रिन्	१	८	७
चक्रोवत्	२	९	७७
चक्षुःश्रवस्	१	८	७
चक्षुष्	२	६	९३
चक्षुष्या	२	९	१०२
चञ्चल	३	१	७५
चञ्चला	१	३	९
चञ्चु	२	४	५१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
चबु	२	५	३६	चन्द्रमागा	१	१०	२४	चााचर	३	१	७४
चटक	२	५	१७	चन्द्रमस्	१	३	१३	चरिष्णु	३	१	७४
चटका	२	५	१८	चन्द्रवाला	२	४	१२५	चरु	२	७	२२
"	२	५	१८	चन्द्रशेखर	१	१	३०	चर्चरी	३	५	१०
चटकाशिरस्	२	९	११०	चन्द्रसंज्ञ	२	६	१३०	चर्चा	१	५	२
चणक	२	९	१८	चन्द्रहास	२	८	८९	"	२	६	१२२
चण्ड	३	१	३२	चन्द्रिका	१	३	१६	चर्मकष	२	४	१४३
चण्डा	२	४	१०८	चपल	१	१	६५	चर्मकार	२	१०	७
चण्डात	२	४	७६	"	२	९	९९	चर्मन्	२	७	४६
चण्डातक	२	६	११९	"	३	१	४६	"	२	८	९०
चण्डाल	२	१०	४	चपला	१	३	९	चर्मप्रभेदिका	२	१०	३४
"	२	१०	१०	"	२	४	९६	चर्मप्रसेविका	२	१०	३३
चण्डालवल्लकी	२	१०	३१	चपेट	२	६	८४	चर्मिन्	२	४	४६
चण्डिका	१	१	३७	चमर	२	५	१०	"	२	८	७१
चतुःशाल	२	२	६	चमरिक	२	४	२२	चर्षा	२	७	३५
चतुर	२	१०	१९	चमम	३	५	३५	चर्वित	३	१	१११
चतुरङ्गुल	२	४	२३	चमसी	३	५	१०	चल	३	१	७४
चतुरानन	१	१	१६	चमू	२	८	७८	चलदल	२	४	२०
चतुर्भद्र	२	७	५८	"	२	८	८१	चलन	३	१	७४
चतुर्भुज	१	१	२०	चमूरु	२	५	९	चलाचल	३	१	७४
चतुर्वर्ग	२	७	५७	चम्पक	२	४	६३	चलित	२	८	९६
चतुर्हायणी	२	९	६८	चय	२	२	३	"	३	१	८७
चतुष्पथ	२	१	१७	"	२	५	४०	चविका	२	४	९८
चत्वर	२	२	१३	चर	२	८	१३	चव्य	२	४	९८
"	२	७	१८	"	३	१	७४	चषक	२	१०	४३
चन	३	४	३	चरक	३	५	३३	चषाल	२	७	१८
चन्दन	२	६	१३१	चरण	२	६	७१	चाक्रिक	२	८	९६
चन्द्र	१	३	१३	चरणायुध	२	५	१७	चाङ्गेरी	२	४	१४०
"	२	४	१४६	चरम	३	१	८१	चाटकैर	२	५	१८
"	३	३	१८३	चरमश्माशृत	२	३	२	चाण्डाल	२	१०	२०
चन्द्रक	२	५	३१					चाण्डालिका	२	१०	३१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
चातक	२	५	१७	चित्र	१	७	१९	चिह्न	२	६	६०
चानुवर्ण्य	२	७	२	"	३	३	१७९	चिह्न	१	३	१७
चाप	२	८	८३	चित्रक	२	४	५१	चीन	२	५	९
चामर	२	८	३२	"	२	४	८०	चोर	३	५	३१
चामीकर	२	९	९५	"	२	६	१२३	चीरी	२	५	२८
चाम्पेय	२	४	६३	चित्रकर	२	१०	७	चोवर	३	५	३१
"	२	४	६५	चित्रकृत	२	४	२७	चुक	२	४	१४१
चार	२	८	१३	चित्रकृत	२	४	२७	"	२	९	३५
"	३	२	१४	चित्रतण्डुला	२	४	१०६	"	३	५	२०
चारटी	२	४	१४६	चित्रपर्णी	२	४	९२	चुक्रिका	२	४	१४०
चारण	२	१०	१२	चित्रमानु	१	१	५६	चुल	२	६	६०
चारु	३	१	५२	"	१	३	३०	चुलि	२	९	३९
चार्विक्य	२	६	१२२	"	३	३	१०५	चुचुक	२	६	७७
चालनी	२	९	२६	चित्रशिखण्डिज	१	३	२४	चूडा	२	५	३१
चाष	२	५	१६	चित्रशिखण्डिन्	१	३	२७	"	२	६	९७
चिकित्सक	२	६	५७	चित्रा	२	४	८७	चूडामणि	२	६	१०२
चिकित्सा	२	६	५०	"	२	४	१५६	चूडाला	२	४	१६०
चिकुर	२	६	९५	चिन्ता	१	७	२९	चूत	२	४	३३
"	३	१	४६	चिपिटक	२	९	४७	चूर्ण	२	६	१३४
चिकृण	२	९	४६	चिबुक	२	६	९०	"	२	८	९९
चिक्रस	३	५	३५	चिरक्रिय	३	१	१७	चूर्णकुन्तल	२	६	९६
चिञ्चा	२	४	४३	चिरण्टी	२	६	९	चूर्णि	३	५	९
चित्	१	५	१	चिरन्तन	३	१	७७	चूलिका	२	८	३८
"	३	४	३	चिरप्रसूता	२	९	७१	चेटक	२	१०	१७
चिता	२	८	११७	चिरबिल्व	२	४	४७	चेत	३	४	१२
चिति	२	८	११७	चिररात्राय	३	४	१	चेतकी	२	४	५९
चित्त	१	४	३१	चिरस्य	३	४	१	चेतन	१	४	३०
चित्तविभ्रम	१	७	२६	चिराय	३	४	१	चेतना	१	५	१
चित्ताभोग	१	५	२	चिरण्टी	२	६	९	चेतस्	१	४	३१
चित्या	२	८	११७	चिलिचिम	१	१०	१८	चैत्य	२	२	७
चित्र	१	५	१७	चिह्न	२	५	२१				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
चैत्र	१	४	१५	छन्न	२	८	२२	जग्धि	२	९	५५
चत्ररथ	१	१	७०	"	३	१	९८	जघन	२	६	७४
चैत्रिक	१	४	१५	छल	२	८	१०८	जघनेफला	२	४	६१
चैल	२	६	११५	छवि	१	३	१७	जघन्य	३	१	८१
"	३	३	२०३	"	१	३	३४	"	३	३	१५९
चोच	२	४	१३४	छाग	२	९	७६	जघन्यज	२	६	४३
"	३	५	३०	छागी	२	९	७६	"	२	१०	१
चोरपुष्पो	२	४	१२६	छात	२	६	४४	जङ्गम	३	१	७४
चोल	२	६	११८	"	३	१	१०३	जङ्गमेतर	३	१	७३
चौर	२	१०	२४	छात्र	२	७	११	जङ्घा	२	६	७२
चौरिका	२	१०	२५	छादित	३	१	९८	जङ्घाकारिक	२	८	७३
चौर्य	२	१०	२५	छान्दस	२	७	६	जङ्घाल	२	८	७३
च्युत	३	१	१०४	छाया	३	३	१५८	जटा	२	४	११
छ				छित	३	१	१०३	"	२	६	९७
				छिद्र	१	८	२	"	३	३	३८
				छिद्रित	३	१	९९	जटामांसी	२	४	१३४
				छिन्न	३	१	१०३	जटिन्	२	४	३२
				छिन्नरुहा	२	४	८२	जटिला	२	४	१३४
				छुरिका	२	८	९२	जठर	२	६	७७
				छेक	२	५	४३	"	३	३	१९०
				छेदन	३	२	७	जड	१	३	१९
				ज				"	३	१	३८
								जडुल	२	६	४९
								जतु	२	६	१२५
								"	३	५	१३
								जतुक	२	९	४०
								जतुकृत	२	४	१५३
								जतुका	२	५	२६
								जतूका	२	४	१५३
								जघ्र	२	६	७८
छगलक	२	९	७६	जगत्	२	१	६				
छालान्त्री	२	४	१३७	"	३	३	८०				
छन्न	२	८	३२	जगती	२	१	६				
छन्ना	२	४	१०५	"	३	३	७१				
"	२	४	१६७	जगत्प्राण	१	१	६२				
"	२	९	३७	जगर	२	८	६४				
छन्नाकी	२	४	११५	जगल	२	१०	४१				
छद	२	४	१४	जग्ध	३	१	१११				
"	२	५	३६								
छदन	२	४	१४								
छदिस्	२	२	१४								
छघन्	१	७	३०								
छन्द	३	२	२०								
"	३	३	८८								
छन्दस्	२	७	२२								
छन्दस्	३	३	२३२								

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
जनक	२	६	२८	जम्बुक	३	३	३	जलाधार	१	१०	२५
जनङ्गम	२	१०	१९	जम्बू	२	४	१९	जलाशय	१	१०	२५
जनता	३	२	४२	जम्भ	२	४	२४	"	२	४	१६४
जनन	१	४	३०	जम्भभेदिन्	१	१	४३	जलोच्छ्वास	१	१०	१०
"	२	७	१	जम्भल	२	४	२४	जलौकस्	१	१०	२२
जननी	२	६	२९	जम्मीर	२	४	२४	जलौका	१	१०	२२
जनपद	२	१	८	जय	२	४	६६	जलपाक	३	१	३६
जनयित्री	२	६	२९	"	२	८	११०	जल्पित	३	१	१०७
जनश्रुति	१	६	७	"	३	२	१२	जव	१	१	६४
जनादेन	१	१	१९	जयन	३	२	१२	"	२	८	७३
जनाश्रय	२	२	९	जयन्त	१	१	४६	जवन	२	८	४५
जनि	१	४	३०	जयन्ती	२	४	६५	"	२	८	७३
जनी	२	४	५३	जया	२	४	६५	"	३	२	३८
"	२	६	९	जय्य	२	८	७४	जवबिका	२	६	१२०
जनुस्	१	४	३०	जरठ	३	१	७६	जङ्घुतनवा	१	१०	३१
जन्तु	१	४	३०	जरण	२	९	३६	जागरा	३	२	१९
जन्तुफल	२	४	२२	जरत	२	६	४२	जागरितु	३	१	३२
जन्मन्	१	४	३०	जरद्वव	२	९	६१	जागरूक	३	१	३२
जन्मिन्	१	४	३०	जरा	२	६	४१	जागर्वा	३	२	१९
जन्य	२	७	५८	जरायु	२	६	३८	जाङ्गलिक	१	८	११
"	२	८	१०३	जरायुज	३	१	५०	जाङ्गिक	२	८	७३
"	३	३	१५९	जल	१	१०	३	जात	१	४	३१
जन्यु	१	४	३०	जलजन्तु	१	१०	२०	जातरूप	२	९	९५
जप	२	७	४७	जलधर	१	३	७	जातवेदस्	१	१	५३
जपापुष्प	२	४	७६	जलनिधि	१	१०	२	जातापस्या	२	६	१६
जम्पती	२	६	३८	जलनिर्गम	१	१०	६	जाति	१	४	३१
जम्बाल	१	१०	९	जलनीली	१	१०	३८	"	२	४	७२
जम्बीर	२	४	२४	जलपुष्प	३	५	२३	"	३	३	६८
"	२	४	७९	जलप्राय	२	१	१०	जातीकोश	२	६	११२
जम्बु	२	४	१९	जलमुच	१	३	७	जातीफल	२	६	१३२
जम्बुक	२	५	५	जलव्याल	१	८	५	जातु	३	४	४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
जातोक्ष	२	९	६०	जीमृत	१	३	७	जम्भण	१	७	३५
जानु	२	६	७२	"	२	४	६९	जेतु	२	८	७४
जाबाल	२	१०	११	"	३	३	५८	"	२	८	७७
जामातु	२	६	३२	जीरक	२	९	३६	जेमन	२	९	५६
जामि	३	३	१४२	जीर्ण	२	६	४२	जेय	२	८	७४
जाम्बव	२	४	१९	जीर्णि	३	२	९	जैत्र	२	८	७४
जाम्बूनद	२	९	९५	जीर्णदक्ष	२	६	११४	जैवातुक	१	३	१४
जायक	२	६	१२५	जीव	१	३	२४	"	३	१	६
जाया	२	६	६	"	२	८	११९	"	३	३	११
जायाजीव	२	१०	६२	जीवक	२	४	४४	जोङ्क	२	६	१२६
जायापति	२	६	३८	"	२	४	१४२	जोषम्	३	३	२५१
जायु	२	६	५०	जीवजीव	२	५	३५	श	२	७	५
जार	२	६	३५	जीवन	१	१०	३	शपित	३	१	९८
जाल	१	१०	१६	"	२	९	१	शम	३	१	९८
"	३	३	२०१	जीवनी	२	४	१४२	शप्ति	१	५	१
जालक	२	४	१६	जीवनीया	२	४	१४२	शातसिद्धान्त	२	८	१५
जालिक	२	१०	१४	जीवन्तिका	२	४	८२	शाति	२	६	३४
जाली	२	४	११८	"	२	४	८३	शातु	३	१	३०
जारम	२	१०	१६	जीवन्ती	२	४	१४२	शातेय	२	६	३५
"	३	१	१७	जीवा	२	४	१४२	शान	१	५	६
जिघत्सु	३	१	२०	जीवातु	२	८	१२०	शानिन्	२	८	१४
जिङ्गी	२	४	९०	जीवान्तक	२	१०	१४	ज्या	२	१	२
जित्वर	२	८	७७	जीविका	२	९	१	"	२	८	८५
जिन	१	११	१३	जुगुप्सा	१	६	१३	ज्यानि	३	२	९
जिष्णु	१	१	४२	जुङ्ग	२	४	१३७	ज्यायस्	२	६	४३
"	२	८	७७	जुहू	२	७	२५	"	३	३	२३५
जिह्वा	३	१	७१	जूति	३	२	३८	ज्येष्ठ	१	४	१६
"	३	३	१४१	जूति	३	२	३८	"	३	३	४१
जिह्वाग	१	८	८	जूति	३	२	३८	ज्योतिरिङ्गण	२	५	२८
जिह्वा	२	६	९१	जूति	३	२	३८	ज्योतिष्मती	२	४	१५०
जीन	२	६	४२	जूति	१	७	३५				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
ज्योतिस्	३	३	२३०	ड				तत्काल	२	८	२९
ज्योत्स्ना	१	३	१६	डमर	३	२	१४	तत्त्व	१	७	९
ज्योत्स्नी	२	४	११८	डमरु	१	७	८	तत्पर	३	१	९
ज्यौतिषिक	२	८	१४	डयन	२	८	५२	तथा	३	४	९
ज्यौत्स्ना	१	४	५	डहु	२	४	६०	"	३	४	२३
ज्वर	२	६	५६	डिण्डिम	१	७	८	तथागत	१	१	१३
"	३	२	३८	डिण्डीर	२	९	१०५	तथ्य	१	६	२२
ज्वलन	१	१	५३	डिम्ब	३	२	१४	तद्	३	४	३
ज्वाल	१	१	५७	डिम्भ	२	५	३८	तदा	३	४	२२
झ				"	३	३	१३४	तदात्व	२	८	२९
झटामला	२	४	१२७	डिम्भा	२	६	४१	तदानीम्	३	४	२२
झटिति	३	४	२	डण्डुभ	१	८	५	तनय	२	६	२७
झर	२	३	५	डुलि	१	१०	२४	तनु	२	६	७१
झझर	१	७	८	ढ				"	३	१	६१
झलरी	३	५	१०	ढका	१	७	६	"	३	१	६६
झष	१	१०	१७	त				"	३	३	११३
झषा	२	४	११७	तक्र	२	९	५३	तनुत्र	२	८	६४
झाटल	२	४	३९	तक्षक	३	३	४	तनू	२	६	७१
झाटलि	२	५	३८	तक्षन्	२	१०	९	तनूकृत	३	१	९९
झावुक	२	४	४०	तट	१	१०	७	तनूनपाट	१	१	५३
झिण्टा	२	४	७५	तटिनी	१	१०	३०	तनूरुह	२	५	३६
झिण्टी	२	४	७४	तडाग	१	१०	३८	"	२	६	९९
झिहिका	२	५	२८	तडित्	१	३	९	तन्तु	२	१०	२८
झीरुका	२	५	२८	तडित्व	१	३	७	तन्तुभ	२	९	१७
ट				तण्डक	३	५	३३	तन्तुवाय	२	५	१३
टक्क	२	१०	३४	तण्डुल	२	४	१०६	"	२	१०	६
"	३	५	३३	तण्डुलीय	२	४	१३६	तन्त्र	३	३	१८५
टिट्टिभक	२	५	३५	तत	१	७	३	तन्त्रक	२	६	११२
टीका	३	५	७	"	३	१	८६	तन्त्रिका	२	४	८२
टण्डुक	२	४	५६	"	३	४	३	तन्द्रा	३	३	१७६
				ततस्	३	४	३	तन्द्री	१	७	३७
								तप	१	४	१९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
तपन	१	३	३१	तरस्	१	१	६४	तापस	२	७	४२
"	१	९	१	"	१	८	१०२	तापसतरु	२	४	४६
तपनीय	२	९	९४	तरस	२	६	६३	तापिच्छ	२	४	६८
तपस्	१	४	१५	तरस्विन्	२	८	७३	तामरस	१	१०	४०
"	३	३	२३२	"	३	२	१२८	तामलकी	२	४	१२७
तपस्य	१	४	१५	तरि	१	१०	१०	ताम्बूलवल्ली	२	४	१२०
तपस्विन्	२	७	४२	तरु	२	४	५	ताम्बूली	२	४	१२०
तपस्विनी	२	४	१३४	तरुण	२	६	४२	ताम्रक	२	९	९७
तम	१	३	२६	तरुणी	२	६	८	ताम्रकर्णी	१	३	५
तमस्	१	४	२९	तर्क	१	५	३	ताम्रकुट्टक	२	१०	८
"	१	८	३	तर्कारी	२	४	६५	ताम्रचूड	२	५	१७
"	३	३	२३२	तर्जनी	२	६	८१	तार	१	७	२
तमस्विनी	१	४	४	तर्णक	२	९	६०	"	३	३	१६६
तमाल	२	४	६८	तर्दू	२	९	३४	तारकजित	१	१	४०
"	३	५	३३	तर्पण	२	७	१४	तारका	१	३	२१
तमालपत्र	२	६	१२३	"	२	९	५६	"	२	६	९२
तमिन्न	१	८	३	"	३	२	४	तारा	१	३	२१
तमिन्ना	१	४	५	तर्मन्	२	७	१९	तारुण्य	२	६	४०
तमो	१	४	४	तर्प	१	७	२८	तार्क्ष्य	१	१	२९
तमोनुद	३	३	८९	"	२	९	५५	"	३	३	१४६
तमोपह	३	३	२३९	तल	२	८	८४	तार्क्ष्यशैल	२	९	१०२
तरक्षु	२	५	१	"	३	३	२०२	ताल	१	७	९
तरङ्ग	१	१०	५	तलिन्	३	३	१२७	"	२	४	१६८
तरङ्गिणी	१	१०	३०	तल्प	३	३	१३१	"	२	६	८३
तरणि	१	३	३०	तल्लज	१	४	२७	"	२	९	१०३
"	१	१०	१०	तष्ट	३	१	९९	तालपत्र	२	६	१०३
"	२	४	७३	तस्कर	२	१०	२४	तालपर्णी	२	४	१२३
तरपण्य	१	१०	११	ताण्डव	१	७	१०	तालमूलिका	२	४	११९
तरल	२	६	१०२	"	३	५	३४	तालवृन्तक	२	६	१४०
"	३	१	७५	तात	२	६	२८	तालाङ्क	१	१	२४
तरला	२	९	५०	ताम्रिक	२	८	१५	ताली	२	४	१२७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
ताली	२	४	१७०	तिलक	२	६	४९	तुण्डिकेरी	२	४	१३९
तालु	२	६	९१	"	२	६	६५	तुण्डिम	२	६	६१
तावत्	३	३	२४७	"	२	६	१२३	तुण्डिल	२	६	६१
तिक्त	१	५	९	"	२	९	४३	तुथ	२	९	१०१
तिक्तक	२	४	१५५	तिलकालक	२	६	४९	तुथा	२	४	९५
तिक्तशाक	२	४	२५	तिलपर्णी	२	६	१३२	"	२	४	१२५
तिग्म	१	३	३५	तिलपिञ्ज	२	९	१९	तुथाजन	२	९	१०१
नितउ	२	९	२६	तिलपेज	२	९	१९	तुन्द	२	६	७७
निनिक्षा	१	७	२४	निलित्स	१	८	५	तुन्दपरिमृज	२	१०	१८
निनिधु	३	१	३१	निल्य	०	९	७	तुन्दिभ	२	६	४४
तित्तिरि	२	५	३५	तिल्व	०	३	३३	तुन्दिल	२	६	४४
तिथि	१	४	१	तिष्य	१	३	२२	तुन्दिन्	२	६	४४
तिनिश	२	४	२६	"	३	३	१४७	तुन्न	२	४	१२७
तिन्निडी	२	४	४३	तिष्यफला	२	४	५७	तुन्नदाय	२	१०	६
तिन्निडीक	२	९	३५	तीक्ष्ण	१	३	३५	तुमुल	२	८	१०६
तिन्दुक	२	४	३८	"	२	९	९८	तुम्बी	२	४	१५६
तिन्दुकी	३	५	८	"	३	३	५३	तुरग	२	८	४३
तिमि	१	१०	१९	तीक्ष्णगन्धक	०	४	३१	तुरङ्ग	२	८	४३
तिमिङ्गिल	१	१०	२०	तीग	१	१०	७	तुरङ्गम	२	८	४३
तिमित	३	१	१०५	तीर्थ	३	३	८६	तुरङ्गवदन	३	१	७१
तिमिर	१	८	३	तीत्र	१	१	६७	तुरायण	३	२	२
तिरस्	३	३	२५७	तीत्रवेदना	१	९	३	तुरासाह	१	१	४४
"	३	४	६	तु	३	३	२४२	तुरुष्क	२	६	१२८
तिरस्करिणी	२	६	१२०	"	३	४	५	तुला	२	९	८७
तिरस्क्रिया	१	७	२२	"	३	४	१५	तुलाकोटि	२	६	१०९
तिरीट	२	४	३३	तुङ्ग	२	४	२५	तुल्य	२	१०	३६
"	३	५	३०	"	३	१	७०	तुल्यपान	२	९	५५
तिरोधान	१	३	१३	तुङ्गी	२	४	१३९	तुवर	१	५	९
तिरोहित	२	८	११२	तुच्छ	३	१	५६	तुवरिका	२	४	१३१
तिथ्यंच्	३	१	३४	तुण्ड	२	६	८९				
तिलक	२	४	४०	तुण्डिकेरी	२	४	११६				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
तुष	२	४	५८	तृप्ति	२	९	५६	त्यक्त	३	१	१०७
"	२	९	२२	तृष्	१	७	२७	त्याग	२	७	२९
तुषार	१	३	१८	"	२	९	५५	त्रपा	१	७	२३
"	१	३	१९	तृष्णक्	३	१	२२	त्रपु	२	९	१०५
तुषित	१	१	१०	तृष्णा	३	१	५१	त्रयो	१	६	३
तुहिन	१	३	१८	तेजन	२	४	१६१	"	१	६	३
तूण	२	८	८८	तेजनक	२	४	१६२	त्रस	३	१	७४
तूणी	२	८	८९	तेजनी	२	४	८३	त्रसर	३	२	२४
तूणीर	२	८	८८	तेजस्	२	६	६२	त्रस्त	३	१	२६
तूद	२	४	४१	"	३	३	२३४	त्राण	३	१	१०६
तूवर	३	३	१६५	तेजित	३	१	९१	"	३	२	८
तूर्ण	१	१	६५	तेम	३	२	२९	त्रात	३	१	१०६
तूल	२	४	४२	तेमन	२	९	४४	त्रायन्ती	२	४	१५०
"	२	९	१०६	तैत्तिर	२	५	४३	त्रायमाणा	२	४	१५०
तूलिका	२	१०	३२	तैलपर्णीक	२	६	१३१	त्रास	१	७	२१
तूष्णीशील	३	१	३९	तैलंषाता	३	५	६	त्रिक	२	६	७६
तूष्णीक	३	१	३९	तैलपायिका	२	५	२६	त्रिककुद्	२	३	२
तूष्णोकाम्	३	४	९	तैलीन	२	९	७	त्रिकड	२	९	१११
तूष्णीम्	३	४	९	तैष	१	४	१५	त्रिका	१	१०	२७
तृण	१	४	१६७	तोक	२	६	२८	त्रिकूट	२	३	२
तृणद्रुम	२	४	१७०	तोकक	२	५	१७	त्रिखट्व	३	५	४१
तृणधान्य	२	९	२५	तोकम	२	९	१६	त्रिखट्वी	३	५	४१
तृणध्वज	२	४	१६०	तोटक	३	५	३०	त्रिगुणाकृत	२	९	९
तृणराज	२	४	१६८	तोत्र	२	८	४१	त्रितक्ष	१	५	४१
तृणशून्य	२	४	६९	"	२	९	१२	त्रिनक्षी	३	५	४१
तृण्या	२	४	१६८	तोदन	२	९	१२	त्रिदश	१	१	७
तृतीयाकृत	२	९	९	तोमर	२	८	९३	त्रिदशालय	१	१	६
तृतीया प्रकृति	२	६	३९	तोय	१	१०	४	त्रिदिव	१	१	६
तृप्त	३	१	१०३	तोयपिप्पली	२	४	१११	त्रिदिवेश	१	१	७
				तोरण	२	२	१६	त्रिपथगा	१	१०	३१
				तौर्यत्रिक	१	७	१०	त्रिपुटा	२	४	१०८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
त्रिपुटा	२	४	१२५	त्वच्	२	४	१२	दण्ड	२	८	२०
त्रिपुरान्तक	१	१	३३	"	२	६	६२	"	२	८	७१
त्रिफला	२	९	१११	त्वच	२	४	१३४	"	३	३	४२
त्रिमण्डी	२	४	१०८	त्वचिसार	२	४	१६०	दण्डधर	१	१	५१
त्रियामा	१	४	४	त्वरा	३	२	२६	दण्डनोति	१	६	५
त्रिलोचन	१	१	३२	स्वरित	१	१	६४	दण्डविष्कम्भ	२	९	७४
त्रिवर्ग	२	७	५७	"	२	८	७३	दण्डाहत	२	९	५३
"	२	८	१९	त्वष्टृ	२	१	९९	दद्रुघ्न	२	४	१४७
त्रिविक्रम	१	१	२०	त्वष्टृ	२	१०	९	दद्रुण	२	६	५३
त्रिविष्टप	१	१	६	"	३	३	३५	दद्रुरोगिन्	२	६	५२
त्रिवृत्	२	४	१०८	त्विष्	१	३	३४	दधित्य	२	४	२१
त्रिभुता	२	४	१०८	"	३	३	२२५	दधिफल	२	४	२१
त्रिसन्ध्य	१	४	३	त्रिषाम्पति	१	३	३०	दनुज	१	१	१२
त्रिलोचन	२	९	९	त्सरु	२	८	९०	दन्त	२	६	९१
त्रिलोतस्	१	१०	३१	द				"	३	५	१२
त्रिहृत्	२	९	९	दंश	२	५	२७	दन्तधावन	२	४	४१
त्रिहायणी	२	९	६८	दंशन	२	८	६४	दन्तभाग	२	८	४०
त्रुटि	२	४	१२५	दंशित	२	८	६५	दन्तशठ	२	४	२१
"	३	१	६२	दंशी	२	५	२७	"	२	४	२४
"	३	३	३७	दंष्ट्रिन्	२	५	२	दन्तशठा	२	४	१४०
त्रेता	२	७	२०	दक्ष	२	१०	१९	दन्तावल	२	८	३४
"	३	३	६९	दक्षिण	३	१	८	दन्तिका	२	४	१४४
त्रोटि	२	५	३६	दक्षिणस्थ	२	८	६०	दन्तिन्	२	८	३४
त्र्यम्बक	१	१	३३	दक्षिणाग्नि	२	७	१९	दन्दशूक	१	८	८
त्र्यम्बकसख	१	१	६८	दक्षिणार्ह	३	१	५	दध्र	३	१	६१
त्र्युषण	२	९	१११	दक्षिणीय	३	१	५	दम	२	८	२१
त्वक्क्षोरी	२	९	१०९	दक्षिणैर्मन्	२	१०	२४	"	३	२	३
त्वक्पत्र	२	४	१३४	दक्षिण्य	३	१	५	दमथ	३	२	३
त्वक्सार	२	४	१६०	दग्ध	३	१	९९	दमित	३	१	९७
त्व	३	१	८२	दधिकका	२	९	४९	दमूनस्	१	१	५६
				दण्ड	१	३	३१	दम्पती	२	६	३८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
दम्भ	१	७	३०	दशा	३	३	२१७	दारु	२	४	१३
दम्भोलि	१	१	४७	दस्यु	१	८	१०	"	२	४	५३
दम्य	२	९	६२	"	२	१०	२४	दारुण	१	७	२०
दया	१	७	१८	दस्त्र	१	१	५१	दारुहरिद्रा	२	४	१०२
दयालु	३	१	१५	दहन	१	१	५५	दारुहस्तक	२	९	३४
दयित	३	१	५३	दाक्षायणी	१	३	२१	दावावाट	२	५	१३
दर	१	७	२१	दाक्षाय्य	२	५	२१	दाविका	२	४	११९
"	३	३	१८५	दाडिम	२	४	६४	"	२	९	१०१
दरत	३	५	९	"	३	५	४२	दावी	२	४	१०२
दरिद्र	३	१	४९	दाडिमपुष्पक	२	४	४९	दाव	३	३	२०६
दरी	२	३	६	दाण्डपाता	३	५	६	दाविक	१	१०	३६
दहुर	१	१०	२४	दात	३	१	१०३	दाश	१	१०	१५
दर्पक	१	१	२५	दास्युह	२	५	२१	दाशपुर	२	४	१३१
दर्पण	२	६	१४०	दात्र	२	९	१३	दास	२	१०	१७
दर्भ	२	४	१६६	दान	२	७	२९	दासी	२	४	७४
दर्वि	२	९	३४	"	२	८	२०	दासीसभ	३	५	२७
दर्वीकर	१	८	८	"	२	८	३७	दासेय	२	१०	१७
दर्श	१	४	८	दानव	१	१	१२	दासेर	२	१०	१७
"	२	७	४८	दानवारि	१	१	९	दिगम्बर	३	१	३९
दर्शक	२	८	६	दानशौण्ड	३	१	७	दिग्ध	२	८	८८
दर्शन	३	१	३१	दानै	२	७	४२	"	३	१	९१
दल	२	४	१४	"	३	१	९७	दित	३	१	१०३
दव	३	३	२०६	दानि	३	२	३	दितिसुत	१	१	१२
दविष्ठ	३	१	६९	दापित	३	१	४०	दिधिपु	२	६	२३
दवायस्	३	१	६९	दामन्	२	९	७३	दिधिषू	२	६	२३
दशन	२	६	९१	दामनी	२	९	७३	दिन	१	४	२
दशनवासस्	२	६	९०	दामोदर	१	१	१८	दिनान्त	१	४	३
दशबल	१	१	१४	दाप्पाद	३	३	८९	दिव्	१	१	६
दशमिन्	२	६	४३	दारा	२	३	६	"	१	२	१
दशमीस्थ	३	३	८७	दारद	१	८	११	दिवस	१	४	२
दशा	२	६	११४	दारित	३	१	१००	दिवस्पति	१	१	४२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
दिवा	३	४	६	दुःपमम्	३	४	१३	दुःपधर्षिणी	२	४	११४
दिवाकर	१	३	२८	दुःस्पश	२	४	९१	दुहितृ	२	६	२८
दिवाकीर्ति	२	१०	१८	दुःस्पशा	२	४	९४	दून	२	८	१६
"	२	१०	१९	दुकूल	२	६	११३	दून	२	६	१७
दिविषद्	१	१	८	दुग्ध	२	९	५१	दूय	२	८	१६
दिवौकस	१	१	७	दुग्धिका	२	४	१००	दून	३	१	१०२
"	३	३	२२७	दुन्नुमि	१	७	६	दूर	३	१	६८
दिव्योपपादुक	३	१	५०	"	३	३	१३६	दूरदशिन्	२	७	६
दिश्	१	३	१	दुरध्व	२	१	१६	दूर्वा	२	४	१५८
"	३	५	३	दुरालभा	२	४	५०	दूषिका	२	६	६७
दिश्य	१	३	१	दुरित	१	४	२३	दूष्य	२	६	१२०
दिष्ट	१	४	१	दुगोदर	३	३	१७२	दूष्या	२	८	४२
"	१	४	२८	दुर्ग	२	८	१७	दृ	१	१	६७
"	३	३	३५	दुर्गत	३	१	४९	"	३	१	७६
दिष्टान्त	२	८	११६	दुर्गति	१	९	१	"	३	३	४५
दिष्टया	३	४	१०	दुर्गन्ध	१	५	१२	दृढमन्त्रि	३	१	७५
दीक्षित	२	७	८	दुर्गसञ्चर	३	२	२५	दृति	३	५	१९
दीदिवि	२	९	४८	दुर्गा	१	१	३७	दृज्ज	३	१	८३
दीधिति	१	३	३३	दुर्जन	३	१	४७	दृश्	२	६	९३
दीन	३	१	४९	दुर्दिन	१	३	१३	"	३	३	२१७
दीप	२	६	१३८	दुर्दुम	२	४	१४८	दृषद्	२	३	४
दीपक	३	३	११	दुर्नामक	२	६	५४	दृष्ट	२	८	३०
दीप्ति	१	३	३४	दुर्नामन्	१	१०	२५	दृष्टरजम्	२	६	८
दीप्य	२	४	१११	दुर्बल	२	६	४३	दृष्टान्त	३	३	६२
दीर्घ	३	१	६९	दुर्बन्ध	३	१	८	दृष्टि	२	६	९३
दीर्घकोशिका	१	१०	२५	दुर्भनम्	३	१	३६	"	३	३	३८
दीर्घदशिन्	२	७	६	दुर्मुख	३	१	३६	देव	१	१	७
दीर्घपृष्ठ	१	८	८	दुर्बर्ण	२	९	९६	"	१	७	१३
दीर्घवृन्त	२	४	५७	दुर्विध	३	१	४९	देवकीनन्दन	१	१	२१
दीर्घसूत्र	३	१	१७	दुहृद्	२	८	१०	देवकुसुम	२	६	१२५
दीर्घिका	१	१०	२८	दुश्चयवन	१	१	४४	देवखातक	१	१०	२७
दुःख	१	९	३	दुष्कृत	१	४	२३	देवच्छन्द	२	६	१०५
"	३	५	२३	दुष्ट	३	४	१९	देवजयधक	२	४	१६६
				दुष्पत्र	२	४	१२८	देवता	१	१	९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
देवताड	२	४	६९	दोषज्ञ	२	७	५	दुषण	२	८	९१
देवदारु	२	४	५४	दोषा	३	४	६	दुण	२	५	१४
देवद्यच्	३	१	३४	दोषैकदृश	३	१	४६	दुणी	३	५	९
देवन	२	१०	४५	दोस्	२	६	८०	दुत	१	१	६८
"	३	३	११७	"	३	५	१२	"	३	१	८९
देववल्लभ	२	४	२५	दोहद	१	७	२७	"	३	१	१००
देवभूय	२	७	५२	दोहदवनो	२	६	२१	दुम	२	४	५
देवमातृक	२	१	१२	द्युति	१	३	१७	दुमामय	२	६	१२५
देवर	२	६	३२	"	१	३	३४	दुमोत्पल	२	४	६०
देवल	२	१०	११	द्युमणि	१	३	३०	दुवय	२	९	८५
देवसभा	१	१	४८	द्युन्न	२	९	९०	द्रुहिण	१	१	१७
देवाजीव	२	१०	११	द्युत	२	१०	४४	द्रोण	२	९	८८
देवी	१	७	१३	द्युतकारक	२	१०	४४	"	३	३	४९
"	२	४	८३	द्युतकृत	२	१०	४३	द्रोणकाक	२	५	२१
"	२	४	१३३	द्यो	१	१	६	द्रोणक्षीरा	२	९	७२
देष्ट	२	६	३२	"	१	२	१	द्रोणदुग्धा	२	९	७२
देश	२	१	८	द्योत	१	३	३४	द्रोणी	१	१०	११
देशरूप	२	८	२४	द्रप्स	२	९	५१	"	२	४	९५
देह	२	६	७१	द्रव	१	७	३२	द्रोहचिन्तन	१	५	४
देहली	२	२	१३	"	२	८	१११	द्रौणिक	२	९	१७
दैतेय	१	१	१२	द्रवन्ती	२	४	८७	द्वन्द्व	२	५	३६
दैत्य	१	१	१२	द्रविण	२	८	१०२	"	३	३	२१३
दैत्यगुरु	१	३	२५	"	२	९	९०	द्वयातिग	२	७	४४
दैत्या	२	४	१२३	द्रविण	३	२	२२	द्रादशात्मन्	१	३	२८
दैत्यारि	१	५	१९	"	३	३	५२	द्रापर	१	५	३
दैर्घ्य	२	६	११४	द्रव्य	२	९	९०	"	३	३	१६२
द्रैव	१	४	२८	"	३	३	१५५	द्वार्	२	२	६
द्रैव (तीर्थ)	२	७	५०	द्राक्	३	४	२	द्वार	२	२	६
द्रैवज्ञ	२	८	१४	द्राक्षी	२	४	१०७	द्वारपाल	२	८	६
द्रैवज्ञा	२	६	२०	द्राधिष्ठ	३	१	११२	द्राःस्थ	२	८	६
द्रैवत	१	१	९	द्राविडक	२	४	१३५	द्रास्थित	२	८	६
द्रैवत(अहोरात्र)	१	४	२१	द्रु	२	४	५	द्रिगुणाकृत	२	९	९
द्रोणा	२	४	९५	"	३	५	११	द्विज	२	५	३२
"	२	८	५३	द्रुक्लिम	२	४	५३	"	३	३	३०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
दिजराज	१	३	१५	धनुष्मत्	२	८	६९	धातु	३	३	६५
दिजा	२	४	१२०	धनुस्	२	८	८३	धातु	१	१	१७
दिजाति	२	७	४	धन्य	३	१	३	धातुपुष्पिका	२	४	१२४
दिजिह्व	३	३	१३३	धन्वन्	२	१	५	धात्री	३	३	१७७
द्वितीया	२	६	५	"	२	८	८३	धाना	२	९	४७
दिप	२	८	३४	धन्वयात्	२	४	९१	धानुष्क	२	८	६९
दिपाद्य	२	८	२७	धन्विन्	२	८	६९	धान्य	२	९	२१
द्विरद	२	८	३४	धमन	२	४	१६२	धान्याक	२	९	३८
द्विरेफ	२	५	२९	धमनि	२	६	६५	धान्याम्ल	२	९	३९
दिष्	२	८	११	धमनी	२	४	१३०	धामन्	३	३	१२४
दिषत्	२	८	१०	"	२	६	६५	धामार्गव	२	४	८८
दिहायनी	२	९	६८	धम्मिळ	२	६	९७	"	२	४	१७७
द्वीप	१	१०	८	धर	२	३	१	धाव्या	२	७	२२
द्वीपवती	१	१०	३०	धरणि	२	१	२	धारणा	२	८	२६
द्वीपिन्	२	५	१	धरा	२	१	२	धारा	२	८	४९
द्वेषण	२	८	१०	धरित्री	२	१	२	धारावर	१	३	७
द्वेष्य	३	१	४५	धर्म	१	४	२४	धारासम्पात	१	३	११
द्वैष	२	८	१८	"	१	६	३	धार्तराष्ट्र	२	५	२४
द्वैप	२	८	५३	"	३	३	१३९	धावनी	२	४	९३
द्वैमातुर	१	१	३८	धर्मचिन्ता	१	७	२८	धिक्	३	३	२४१
द्वयष्ट	२	९	९७	धर्मध्वजिन्	२	७	५४	विकृत	३	१	३९
ध				धर्मपत्तन	२	९	३६	"	३	१	९३
धट	३	५	१७	धर्मराज	१	१	१३	धिषण	१	३	२४
धत्तर्	२	४	७७	"	१	१	५८	धिषणा	१	५	१
धन	२	९	९०	"	३	३	३१	धिष्य	३	३	१५५
धनञ्जय	१	१	५३	धक्षिणी	२	६	१०	धी	१	५	१
धनद	१	१	६८	धव	२	६	३५	धीन्द्रिय	१	५	८
धनद्वरी	२	४	१२८	"	३	३	२०७	धीमत्	२	७	६
धनाधिप	१	१	६८	धवल	१	५	१३	धीमती	२	६	१२
धनिन्	३	१	१०	धवला	२	९	६७	धीर	२	६	१२४
धनिष्ठा	१	३	२२	धातकी	२	४	१२४	"	२	७	५
धनुर्धर	२	८	६९	"	३	५	७	धीवर	१	१०	१५
धनुःपट	२	४	३८	धातु	२	३	८	वीशक्ति	३	२	२५

का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
२	८	४	धोरण	२	८	५८	नग	३	३	१९
३	१	८७	धौरिनक	२	८	४८	नगरी	२	२	१
१	१०	३०	धौरेय	२	९	६५	नगौकस्	२	३	३३
२	९	६५	ध्याम	२	४	१६६	नग्न	३	१	३९
२	९	६५	ध्रुव	१	३	२०	नग्नह	२	१०	४२
२	९	६५	"	२	४	८	नक्षिका	२	६	८
२	७	२३	"	३	१	७२	"	२	६	१७
२	८	५५	"	३	३	२११	नट	२	४	५६
३	१	१०७	धृशिण	१	३	३३	"	२	१०	१२
३	१	१०२	ध्रुवा	२	४	११५	नटन	१	७	१०
"	"	"	"	२	७	२५	नटी	२	४	१२९
३	३	५८	ध्वज	२	८	९९	नड	२	४	१६२
१	३	७	ध्वजिनी	२	८	७८	"	३	५	३३
१	५	१६	ध्वनि	१	६	२२	नड्या	२	४	१६८
३	२	४२	ध्वनित	३	१	९४	नड्वत्	२	१	९
२	५	१६	ध्वस्त	३	१	१०४	नडवल	२	१	९
१	५	१६	ध्वाङ्	२	५	२०	नन	३	१	७१
१	१	३३	"	३	३	२१९	नदी	१	१०	२९
२	४	७७	ध्वान	१	६	२२	"	३	५	३
२	१०	४३	ध्वान्त	१	८	३	नदीमातृक	२	१	१२
३	१	४७	न	३	४	११	नदीसर्ज	२	४	४५
२	९	६५	नकुलेश	२	४	११५	नधी	२	१०	३१
२	८	९८	नक्तक	२	६	११५	ननान्द	२	६	२९
१	५	१३	नक्तम्	३	४	६	ननु	३	३	२४९
३	३	७६	नक्तमाल	२	४	४०	ननु च	३	४	१४
३	१	२५	नक्र	१	१०	२१	नन्दक	१	१	२८
"	"	"	नक्षत्र	१	३	२१	नन्दन	१	१	४५
८	९	७१	नक्षत्रमाला	२	६	१०६	नन्दिबृक्ष	२	४	१२८
२	८	३६	नक्षत्रेश	१	३	१५	नन्धावर्त	२	२	१०
३	३	१५	नख	२	४	१३०	नपुंसक	२	६	३९
२	९	७२	"	२	६	८३	नपत्री	२	६	२९
२	९	६०	"	३	५	१२	नभस्	१	२	१
१	३	१	नखर	३	५	१२	"	१	४	१६
							"	३	३	२३३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.
नभसङ्गम	२	५	३४	नव्य	३	१	७७	नाद	१	६
नभस्य	१	४	१७	नष्ट	२	८	११२	नादेयी	२	४
नभस्वत्	१	१	६३	नष्टचेष्टता	१	७	३३	"	२	४
नमस्	३	४	१८	नष्टाग्नि	२	७	५३	"	२	४
नमसित	३	१	१०१	नस्तित	२	९	६३	"	२	४
नमस्कारी	२	४	१४१	नस्योत	२	९	६३	नाना	३	३
नमस्या	२	७	३४	नहि	३	४	११	"	३	४
नमस्यित	३	१	१०१	नाक	१	१	६	नानारूप	३	१
नमुचिसूदन	१	१	४३	"	३	३	२	नान्दीकर	३	१
नय	३	२	९	नाकु	२	१	१४	नान्दीवादिन्	३	१
नयन	२	६	९३	नाकुली	२	४	११४	नापित	२	१०
नर	२	६	१	नाग	१	८	४	नाभि	२	८
नरक	१	९	१	"	२	८	३४	"	३	३
नरवाहन	१	१	६९	"	२	९	१०५	"	३	५
नर्तकी	१	७	८	"	३	१	५९	नाभी	३	५
नर्तन	१	७	१०	"	३	३	१९	नाम	३	३
नर्मदा	१	१०	३२	नागकेसर	२	४	६५	नामधेय	१	६
नर्मन्	१	७	३२	नागजिहिका	२	९	१०८	नामन्	१	६
नलकूबर	१	१	७०	नागबला	२	४	११७	नाय	३	२
नलद	२	४	१६४	नागर	२	९	३८	नायक	३	६
नलमीन	१	१०	१८	"	२	३	१८८	नारक	१	८
नलिन	१	१०	३९	नागरङ्ग	२	४	३८	नाराच	२	८
नलिनी	१	१०	३९	नागलोक	१	८	१	नाराची	२	१०
नली	२	४	१२९	नागवल्ली	२	४	१२०	नारायण	१	१
नल्व	२	१	१८	नागसम्भव	२	९	१०५	नारायणी	२	१
नव	३	१	७७	नागान्तक	१	१	९	नारी	२	६
नवदल	१	१०	४३	नाट्य	१	७	१०	नाल	१	१०
नवनीत	२	९	५२	नाडिन्धम	२	१०	८	"	२	१
नवमालिका	२	४	७२	नाडी	२	६	६५	नालिका	२	१
नवसूतिका	२	९	७१	"	२	९	२२	नालिकेर	२	१
नवाम्बर	२	६	११२	"	३	३	४२	नाविक	१	१
नवीन	३	१	७७	नाडीव्रण	२	६	५४	नाव्य	१	१
नवोद्धृत	२	९	५२	नाथवत्	३	१	१६	नाश	२	१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
नासत्य	१	१	५१	निकृष्ट	३	१	५४	निद्रालु	३	१	३३
नासा	२	२	१३	निकेतन	२	२	४	निधन	२	८	११६
"	२	६	८९	निकोचक	२	४	२९	"	३	३	१२३
नासिका	२	६	८९	निकृण	१	६	२४	निधि	१	१	७१
नास्तिकता	१	५	४	निकाण	१	६	२४	निधुवन	२	७	५७
निःशलाक	२	८	२२	निखिल	३	१	६५	निध्यान	३	१	३१
निःशेष	३	१	६५	निगड	२	८	४१	मिनद	१	६	२२
निःशोध्य	३	१	५६	निगद	३	२	१२	मिनाद	१	६	२२
निःश्रेणि	२	२	१८	निगम	२	२	१	मिन्दा	१	३	१३
निःश्रेयस	१	५	६	"	३	३	१४०	निप	२	९	३२
निःषमम्	३	४	१३	निगाद	३	१	१२	निपठ	३	२	२९
निःसरण	२	२	१९	निगार	३	२	३७	निपाठ	३	२	२९
निःस्व	३	१	४९	निगाल	२	८	४८	निपातन	३	२	२७
निकट	३	१	६६	निग्रह	३	२	१३	निपान	१	१०	२६
निकर	२	५	३९	निध	३	२	३६	निपुण	३	१	४
निकर्षण	२	२	१९	निषास	२	९	५६	निबन्ध	२	६	५५
निकष	२	१०	३२	निघ्न	३	१	१६	निबर्हण	२	८	११३
निकषा	३	४	७	निचुल	२	४	६१	निभ	२	१०	३७
"	३	४	१९	निचोल	२	६	११६	निभृत	३	१	२५
निकषारमज	१	१	६०	निज	३	३	३२	निमय	२	९	८०
निकाम	२	९	५७	नितम्ब	२	६	७४	निमित्त	३	३	७६
निकाय	२	५	४२	नितम्बिनी	२	६	९	निमेष	१	४	११
निकाय्य	२	२	५	नितान्त	१	१	६७	निम्न	१	१०	१५
निकार	३	२	१५	नित्य	१	१	६६	निम्नगा	१	१०	३०
"	३	३	३६	"	३	२	७२	निम्ब	२	४	६२
निकारण	२	८	११२	निदाघ	१	४	१९	निम्बतरु	२	४	२६
निकुञ्चक	२	९	८८	"	१	७	३३	नियति	१	४	२८
निकुञ्ज	२	३	८	निदान	१	४	२८	नियन्तु	२	८	५९
निकुम्भ	२	४	१४४	निदिग्ध	३	१	८९	नियम	१	५	५
निकुरम्ब	२	५	४०	निदिग्धिका	२	४	९३	"	२	७	३७
निकृत	३	१	४१	निदेश	२	८	२५	"	२	७	४९
"	३	१	४६	निद्रा	१	७	३६	नियामक	१	१०	१२
निकृति	१	७	३०	निद्राण	३	१	३३	नियुत	३	५	२४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
नियुद्ध	२	८	१०६	नियार्ण	२	८	३८	निशान्त	२	२	५
नियोज्य	२	१०	१७	नियार्तन	३	३	१२०	निशापति	१	३	१४
निर्	३	३	२५३	निर्वपण	२	७	३०	निशित	३	१	९१
निरन्तर	३	१	६६	निर्वर्णन	३	२	३१	निशीथ	१	४	६
निरय	१	९	१	निर्वहण	१	७	१५	निशीथनी	१	४	४
निरगल	३	१	८३	निर्वाण	१	५	६	निश्चय	१	५	३
निरर्थक	३	१	८१	"	३	१	९६	निश्चर्णा	२	२	१८
निरवग्रह	३	१	१५	निर्वात	३	१	९६	निषङ्ग	२	८	८८
निरसन	३	१	३१	निर्वाद	१	६	१३	निषङ्गिन्	२	८	६९
निरस्त	१	६	२०	"	३	३	९०	निषद्या	२	२	२
"	२	८	८८	निर्वापण	२	८	११४	निषद्वर	१	१०	९
"	३	१	४०	निर्वाय	३	१	१३	निषध	२	३	३
नि राकरिष्णु	३	१	३०	निर्वासन	२	८	११३	निषाद	१	७	१
निराकृत	३	१	४१	निर्वृत्त	३	१	१००	"	२	१०	२०
निराकृति	२	७	५३	निर्वेश	२	१०	३८	निषादिन्	२	८	५९
"	३	२	३१	"	३	२	२०	निषूदन	१	८	११३
निरामय	२	६	५७	"	३	३	२१५	निष्क	३	३	१४
निरीश	२	९	१३	निर्व्यथन	१	८	२	निष्कला	२	६	२१
निर्ऋति	१	९	२	निर्व्यह	३	३	२३७	निष्कासित	३	१	३९
निर्गुण्डी	२	४	६८	निर्हार	३	२	१७	निष्कुट	२	४	१
"	२	४	७०	निर्हारिन्	१	५	११	निष्कुटि	२	४	१२५
निर्ग्रन्थन	२	८	११३	निर्हाद	१	६	२३	निष्कुह	२	४	१३
निर्घोष	१	६	२३	निलय	०	२	५	निष्क्रम	३	२	२५
निर्जर	१	१	७	निवह	२	५	३९	निष्ठा	५	७	१५
निर्झर	२	३	५	निवात	३	३	८४	"	३	३	४१
निर्णय	१	५	३	निवाप	२	७	३१	निष्ठान	२	९	४४
निर्णित	३	१	५६	निवीत	२	६	११३	निष्ठीवन	३	२	३८
निर्णोजक	२	१०	१०	"	२	७	५०	निष्ठुर	१	६	१९
निर्देश	२	८	२५	निवृत्त	३	१	८८	"	३	१	७६
निर्भर	१	१	६६	निवेश	२	८	३३	निष्ठेव	३	२	३७
निर्मद	२	८	३६	निशा	१	४	४	निष्ठेवन	३	२	३८
निर्मुक्त	१	८	६	"	३	५	३	निष्ठयत्	३	१	८७
निर्माक	१	८	९	निशाख्या	२	९	४१	निष्ठयूति	३	२	३८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
निष्ठात	३	१	४	नीललोहित	१	१	३३	नेत्र	२	६	९३
निष्पन्न	३	१	१५	नीला	२	५	२६	"	३	३	१८०
निष्पन्न	३	१	१००	नीलाम्बर	१	१	२४	नेत्राम्बु	२	६	९३
निष्पाव	३	२	२४	नीलाम्बुजम्भन्	१	१०	३७	नेदिष्ठ	३	१	६८
निष्प्रभ	३	१	१००	नीलिका	२	४	७०	नेपथ्य	२	६	९१
निष्प्रवाणि	२	६	११२	नीलिनी	२	४	९५	नेमि	२	८	५६
निसर्ग	१	७	३८	नीची	२	४	७४	नेमी	२	४	२६
निसृष्ट	३	१	८८	"	२	४	९४	नैकभेद	३	१	८१
निस्तल	३	१	६९	नीवाक	३	२	२३	नैगम	२	९	७८
निस्तर्हण	२	८	११४	नीवार	२	९	२५	"	३	३	१४०
निर्लिश	२	८	८९	नीवी	२	९	८०	नैचिकी	२	९	६७
निस्त्राव	२	१	४९	"	३	३	२१२	नैपाली	२	९	१०८
निस्वन	१	६	२३	नीवृत	२	१	८	नैमेय	२	९	८०
निस्वान	१	६	२३	नीशार	२	६	११८	नैयग्रोध	२	४	१८
निहनन	२	८	११४	नीहार	१	३	१८	नैर्ऋत	१	१	६०
निहाका	१	१०	२२	नु	३	३	२४८	"	१	३	२
निर्हिसन	२	८	११३	नुति	१	६	११	नैष्किक	२	८	७
निहीन	२	१०	१६	नुत्त	३	१	८७	नैर्लिशिक	२	८	७०
निह्व	१	६	१७	नुन्न	३	१	८७	नो	३	४	११
"	३	३	२०९	नूतन	३	१	७७	नौ	१	१०	१०
नीकाश	२	१०	३७	नूल	३	१	७८	नौकादण्ड	१	१०	१३
नीच	२	१०	१६	नूनम्	३	३	२५१	न्यक्ष	३	३	२२५
"	३	१	७०	"	३	४	१६	न्यग्रोध	२	४	३२
नीचैस्	३	४	१७	नूपुर	३	६	१९	"	३	३	९६
नीड	२	५	३७	नृ	२	६	१	न्यग्रोधी	२	४	८७
नीडोद्भव	२	५	३४	नृत्य	१	७	१०	न्यच्	३	१	७०
नीध	२	२	१४	नृप	२	८	१	न्यङ्कु	२	५	१०
नीप	२	४	४२	नृपलक्ष्मन्	२	८	३२	न्यस्त	३	१	८८
नीर	१	१०	४	नृपसभ	३	५	२७	न्याद	२	९	५६
नील	१	५	१४	नृपासन	२	८	३१	न्याय	२	८	२४
नीलकण्ठ	२	५	३०	नृशंस	३	१	४७	न्याय्य	२	८	२५
"	३	३	४०	नृसेन	३	५	४०	न्यास	२	९	८१
नीलङ्गु	२	५	१३	नेतृ	३	१	११	न्युञ्ज	२	६	६१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
न्यूड	३	५	१७	पञ्चता	२	८	११६	पणित	३	१	१०९
न्यून	३	३	१२८	पञ्चदशी	१	४	७	पणितव्य	२	९	८२
प				पञ्चम	१	७	१	पण्ड	२	६	३९
पक्षग	२	२	२०	पञ्चशर	१	१	२५	पण्डित	२	७	५
पक्ष	३	१	९१	पञ्चशाख	२	६	८१	पण्य	२	९	८२
"	३	१	९६	पञ्चाङ्गुल	२	४	५१	पण्यबोधिका	२	२	२
पक्ष	१	४	१२	पञ्चास्य	२	५	१	पण्या	२	४	१५०
"	२	५	३६	पञ्जिका	३	५	७	पण्याजीव	२	९	७८
"	१	६	९८	पट	२	६	११६	पतग	२	५	३३
"	२	८	८७	पटच्चर	२	६	११५	पतङ्ग	२	५	२८
"	३	३	२२०	पटल	२	२	१४	"	३	३	१९
पक्षक	२	२	१४	"	३	३	२०२	पतङ्गिका	२	५	२७
पक्षति	१	४	१	पटलप्रान्त	२	२	१४	पतव	२	५	३३
"	२	५	३६	पटवासक	२	६	१३९	पतत्र	२	५	३६
"	३	३	७२	पटह	१	७	६	पतत्रि	२	५	३३
पक्षद्वार	२	२	१४	"	२	८	१०८	पतत्रिन्	२	५	३३
पक्षमाग	२	८	४०	पटु	२	४	१५५	पतद्रुह	२	६	१३९
पक्षमूल	२	५	३६	"	२	१०	१९	"	३	५	२१
पक्षान्त	१	४	७	"	३	३	४०	पतयालु	३	१	२७
पक्षिन्	२	५	३२	पटुपर्णी	२	४	१३८	पताका	२	८	९९
पक्षिणी	१	४	५	पटोल	२	४	१५५	पताकिन्	२	८	७१
पक्षमन्	३	३	१२१	पटोलिका	२	४	११८	पति	२	६	३५
पङ्क	१	४	२३	पट्ट	३	५	१७	"	३	१	१०
"	१	१०	९	पट्टिकाख्य	२	४	४१	पतिवरा	२	६	७
पङ्किल	२	१	१०	पट्टिन्	२	१	४१	पतिवली	२	६	१२
पङ्कुरुह	१	१०	४०	पट्टिश	३	५	२०	पतिव्रता	२	६	६
पङ्क्ति	२	४	४	पण	२	९	८८	पत्तन	२	२	१
"	२	९	८४	"	२	१०	३८	पत्ति	२	८	६६
"	३	३	७२	"	२	१०	४४	"	२	८	८०
पङ्कु	२	६	४८	"	२	१०	४५	"	३	३	७२
पचम्पचा	२	४	१०२	"	३	३	४६	पल्ली	२	६	५
पचा	३	२	८	पणव	१	७	८	पत्र	२	४	१४
पञ्चजन	२	६	१	पणायित	३	१	१०९	"	२	५	३६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पत्र	२	८	५८	पद्मराग	२	९	९२	परम्पराक	२	७	२६
"	३	३	१७९	पद्मा	१	१	२७	परवत्	३	१	१६
पत्रपरशु	२	१०	३२	"	२	४	८९	परशु	२	८	९२
पत्रपाश्या	२	६	१०३	"	२	४	१४६	परश्वध	२	८	९२
पत्ररथ	२	५	३३	पद्माकर	१	१०	२८	परश्वस्	३	४	२२
पत्रलेखा	२	६	१२२	पद्माट	२	४	१४७	पराक्रम	२	८	१०२
पत्राङ्ग	२	६	१३२	पद्मालया	१	१	२७	"	३	३	१३८
"	२	९	१११	पद्मिन्	२	८	३५	पराग	२	४	१७
पत्राङ्गुलि	२	६	१२२	पद्मिनी	१	१०	३९	"	३	३	२१
पत्रिन्	२	५	१५	पद्य	३	५	३०	पराङ्मुख	३	१	३३
"	२	५	३३	पद्या	२	१	१५	पराचित	२	१०	१८
"	२	८	८७	पनस	२	४	६१	पराचीन	३	१	३३
"	३	३	१०६	पनायित	३	१	१०९	पराजय	२	८	१११
पत्रोर्ण	२	४	५६	पनित	३	१	१०९	पराजित	२	८	११२
"	२	६	११३	पन्न	३	१	१०४	पराधीन	३	१	१६
पथिक	२	८	१७	पन्नग	१	८	८	पराश्र	३	१	२०
पथिन्	२	१	१५	पन्नगाशन	१	१	२९	पराभूत	२	८	११२
पथ्या	२	४	५९	पयस्	१	१०	३	परारि	३	४	२०
पद्	२	६	७१	"	२	९	५१	पराध्यै	३	१	५८
पद्	३	३	९३	"	३	३	२३३	परासन	२	८	११३
पद्ग	२	८	६६	पयस्य	२	९	५१	परासु	२	८	१०७
पद्बी	२	१	१५	पयोधर	३	३	१६४	परास्कन्दिन्	२	१०	२४
पदाजि	२	८	६६	पर	२	८	११	परिकर	३	३	१६६
पदाति	२	८	६६	"	३	३	१९१	परिकर्मन्	२	६	१२१
पद्विक	२	८	६७	परःशत	३	१	६४	परिक्रम	३	२	१६
पद्ग	२	८	६७	परजात	२	१०	१८	परिक्रिया	३	२	२०
पद्धति	२	१	१५	परतन्त्र	३	१	१६	परिक्षिप्त	३	१	८८
पद्म	१	१	७१	परपिण्डाद्	३	१	२०	परिखा	१	१०	२३
"	१	१०	३९	परभृत्	२	५	२०	परिग्रह	३	३	२३८
पद्मक	२	८	३९	परभृत्	२	५	१९	परिव	२	८	९१
पद्मचारिणी	२	४	१४६	परमम्	३	४	१२	"	३	३	२७
पद्मनाभ	१	१	२०	परमाश्र	२	७	२४	परिधासन	२	८	९१
पद्मपत्र	२	४	१४५	परमेष्ठिन्	१	१	१६	परिचय	३	२	२३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
परिचर	२	८	६२	परिवित्ति	२	७	५६	परेतराज्	१	१	५८
परिचर्या	२	७	३५	परिवृद्ध	३	१	११	परेद्यवि	३	४	२१
परिचाध्य	२	७	२०	परिवेत्तु	२	७	५५	परेष्टुका	२	९	७०
परिचारक	२	१०	१७	परिवेष	१	३	३२	परेधित	२	१०	१८
परिणत	३	१	९६	परिव्याध	२	४	३०	परोक्षणी	२	५	२६
परिणय	२	७	५६	"	२	४	६०	पर्कटी	२	४	३२
परिणाम	३	२	१५	परिव्राज्	२	७	४१	पर्जनी	२	४	१०२
परिणाय	२	१०	४५	परिषद्	२	७	१५	पर्जन्य	३	३	१४७
परिणाह	२	६	११४	परिष्कार	२	६	१०१	पर्ण	२	४	१४
परितस्	३	४	१३	परिष्कृत	२	६	१००	"	२	४	२९
परित्राण	३	२	५	परिष्वङ्ग	३	२	३०	"	३	५	२२
परिदान	२	९	८०	परिसर	२	१	१४	पर्णशाला	२	२	६
परिदेवन	१	६	१६	परिसर्प	३	२	२०	पर्णास	२	४	७९
परिधान	२	६	११७	परिसर्या	३	२	२१	पर्यङ्क	२	६	१३८
परिधि	१	३	३२	परिस्कन्द	२	१०	१८	पर्यटन	२	७	३५
"	३	३	९७	परिस्तोम	२	८	४२	पर्यन्तभू	२	१	१४
परिधिस्थ	२	८	६२	परिस्यन्द	२	६	१३७	पर्यय	२	७	३७
परिपण	२	९	८०	परिस्तुत्	२	१०	३९	"	३	२	३३
परिपन्थिन्	२	८	११	परिस्तुता	२	१०	३९	पर्यवस्था	३	२	२१
परिपाटी	२	७	३६	परीक्षक	३	१	७	पर्याप्त	२	९	५७
परिपूर्णता	२	६	१३७	परीभाव	१	७	२२	पर्याप्ति	३	२	५
परिपेलव	२	४	१३१	परीवर्त	२	९	८०	पर्याय	२	७	३७
परिप्लव	३	१	७५	परीवाद	१	६	१३	"	३	३	१४७
परिबर्ह	३	३	२३९	परीवाप	३	३	१२९	पर्युदञ्चन	२	९	३
परिभव	१	७	२२	परीवार	३	३	१६९	पर्येषणा	२	७	३२
परिभाषण	१	६	१४	परीवाह	१	१०	१०	पर्वत	२	३	१
परिभूत	३	१	१०६	परीष्टि	२	७	३२	पर्वन्	१	४	७
परिमल	१	५	९	परीसार	३	२	२१	"	२	४	१६२
"	३	२	१३	परीहास	१	७	३२	"	३	३	१२१
परिरम्भ	३	२	३०	परुत्	३	४	२०	पर्शुका	२	६	६९
परिवर्जन	२	८	११४	परुष	१	६	१९	पल	२	९	८६
परिवादिनी	१	७	३	परुस्	२	४	१६२	"	३	३	२०२
परिवापित	३	१	८५	परेत	२	८	११७	पलगण्ड	२	१०	६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पलङ्कषा	२	४	९८	"	३	२	८	पातुक	३	१	२७
पलल	२	६	६३	पाकल	२	४	१२६	पात्र	१	१०	७
पलाण्डु	२	४	१४७	पाकशासन	१	१	४१	"	२	७	२४
पलाल	२	९	२२	पाकशासनि	१	१	४६	"	२	९	३३
पलाश	२	४	१४	पाकस्थान	२	९	२७	"	३	३	१७९
"	२	४	२९	पावय	२	९	४२	पात्री	३	५	४२
"	२	४	१५४	"	२	९	१०९	पात्रीव	३	५	३५
पलाशिन्	२	४	५	पाखण्ड	२	७	४५	पाथस्	१	१०	४
पलिकनी	२	६	१२	पाञ्चजन्य	१	१	२८	पाद्	२	३	७
पलित	२	६	४१	पाञ्चालिका	२	१०	२९	"	२	६	७१
पल्यङ्क	२	६	१३८	पाट्	३	४	७	"	२	९	८९
पल्लव	२	४	१४	पाटच्चर	२	१०	२५	"	३	३	८९
पल्वल	१	१०	२८	पाटल	१	५	१५	पादकटक	२	६	११०
पव	३	२	२४	"	२	९	१५	पादग्रहण	२	७	४०
पवन	१	१	६३	पाटला	२	४	५४	पादप	२	४	५
"	३	२	२४	पाटलि	२	४	५४	पादबन्धन	२	९	५८
पवनाशन	१	८	८	पाठ	२	७	१४	पादस्फोट	२	६	५२
पवमान	१	१	६३	"	३	२	२९	पादाग्र	२	६	७१
पवि	१	१	४७	पाठा	२	४	८४	पादाङ्गद	२	६	१०९
पवित्र	२	४	१६६	पाठिन्	२	४	८०	पादात	२	८	६७
"	२	७	४५	पाठीन	१	१०	१८	पादातिक	२	८	६६
"	३	१	५५	पाणि	२	६	८१	पादुका	२	१०	३०
पवित्रक	१	१०	१६	पाणिगृहीती	२	६	५	पाद्	२	१०	३०
पशुजाति	२	५	११	पाणिष	२	१०	१३	पाद्कृत	३	१०	७
पशुपति	१	१	३०	पाणिपीडन	२	७	५६	पाघ	२	७	३३
पञ्चजु	२	९	७३	पाणिवाद	२	१०	१३	पान	२	१०	४०
पश्चात्	३	३	२४३	पाण्डर	१	५	१२	पानगोष्ठिका	२	१०	४२
पश्चात्ताप	१	७	२५	पाण्डु	१	५	१३	पानपात्र	२	१०	४३
पश्चिम	३	१	८१	पाण्डुकम्बलिन्	२	८	५४	पानभाजन	२	९	३२
पष्टोद्दी	२	९	७०	पाण्डुर	१	५	१३	पानीय	१	१०	४
पांशु	२	८	९८	पातक	३	५	३३	पानीयशालिका	२	२	७
पांशुला	२	६	११	पाताल	१	८	१	पान्थ	२	८	१७
पाक	२	५	३८	"	३	३	२०३	पाप	१	४	२३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पाप	३	१	४७	पारिहार्य	२	६	१०७	पिचण्ड	३	५	१८
पापवेली	२	४	८५	पारो	३	५	१०	पिचण्डिल	२	६	४४
पाप्मन्	१	४	२३	पारुष्य	१	६	१४	पिचु	२	९	१०६
पाप्मन्	२	६	५३	पार्थिव	२	८	१	पिचुमन्द	२	५	६२
पाप्मन	२	६	५८	पार्वती	१	१	३७	पिचुल	२	४	४०
पाप्मर	२	१०	१५	पार्वतीनन्दन	१	१	३४	पिचुट	२	९	१०५
पाप्मा	२	६	५३	पार्श्व	२	६	७९	पिच्छ	२	५	३१
पायस	२	६	१२८	"	३	२	४१	"	३	५	३०
"	२	७	२४	पार्श्वि	२	६	७२	पिच्छा	२	४	४७
पायु	२	६	७३	पार्श्विग्राह	२	८	१०	"	३	५	९
पाय्य	२	९	८५	पालघ्न	२	४	१६७	पिच्छिल	२	९	४३
पाय	१	१०	७	पालङ्का	२	४	१२१	पिच्छिला	२	४	४६
पारद	२	९	९९	पालाश	१	५	१४	"	२	४	६२
पारशव	३	३	२११	पालि	२	८	९३	पिञ्ज	२	८	११५
पारश्वधिक	२	८	७०	"	३	३	११८	पिञ्जर	२	९	१०३
पारसीक	२	८	४५	पालिन्दी	२	४	१०८	"	३	५	३१
पारल्लेण्य	२	६	२४	पालवा	३	५	५	पिञ्जल	२	८	९९
पारायण	३	२	२	पावक	१	१	५४	पिट	२	९	२६
पारावत	२	५	१४	पाश	२	६	९८	पिटक	२	६	५३
पारावताङ्घ्रि	२	४	१५०	पाशक	२	१०	४५	"	२	१०	२९
पारावार	१	१०	१	पाशिन्	१	१	६१	पिठर	२	९	३०
"	३	५	३५	पाशुपत	२	४	८१	"	३	३	१८८
पाराशरिन्	२	७	४१	पाशुपात्य	२	९	२	पिण्ड	२	९	९८
पारिकाङ्क्षिन्	२	७	४२	पाश्या	३	२	४२	"	२	९	१०४
पारिजातक	१	१	५०	पाश्चात्य	३	१	८१	"	३	५	१८
"	२	४	२६	पाषाण	२	२	४	पिण्डक	२	६	१२८
पारितथ्या	२	६	१०३	पाषाणदारण	२	१०	३४	पिण्डिका	२	८	५६
पारिप्लव	३	१	७५	पिक	२	५	१९	पिण्डीतक	२	४	५३
पारिभद्र	२	४	२६	पिङ्ग	१	५	१६	पिण्याक	३	३	९
पारिभद्रक	२	४	५३	पिङ्गल	१	३	३१	"	३	५	३२
पारिभाष्य	२	४	१२६	"	१	५	१६	पितामह	१	१	१६
पारियात्रक	२	३	३	पिङ्गला	१	३	४	"	२	६	३३
पारिषद	१	१	३५	पिचण्ड	२	६	७७	पितृ	२	६	२८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पितृ	२	६	३७	पिष्टात	२	६	१३९	पुटभेद	१	१०	७
पितृदान	२	७	३१	पीठ	२	६	१३८	पुटभेदन	२	१	१९
पितृपति	१	१	५८	पीडन	२	८	१०९	पुटी	३	५	४२
"	१	३	२	पीडा	१	९	३	पुण्डरीक	१	३	३
पितृपितृ	२	६	३३	पीत	१	५	१४	"	१	१०	४१
पितृप्रसू	१	४	३	पीतदारु	२	४	५३	"	३	३	११
पितृवन	२	८	११८	पीतद्रु	२	४	६०	पुण्डरीकाक्ष	१	१	१९
पितृव्य	२	६	३१	"	२	४	१०१	पुण्ड्र	२	४	१६३
पितृसंनिभ	३	१	१३	पीतन	२	४	२७	पुण्ड्रक	२	४	७२
पित्त	२	६	६२	"	२	६	१२४	पुण्य	१	४	२४
पित्र्य (तीर्थ)	२	७	५१	"	२	९	१०३	"	३	३	१६०
पित्सव	२	५	३४	पीतसारक	२	४	४३	पुण्यक	२	७	३७
पिधान	१	३	१३	पीता	२	९	४१	पुण्यजन	१	१	६०
पिनद्ध	२	८	६५	पीताम्बर	१	१	१९	पुण्यजनेश्वर	१	१	६९
पिनाक	१	१	३५	पीन	३	१	६१	पुण्यभूमि	२	१	८
"	३	३	१४	पीनस	२	६	५१	पुण्यवत्	३	१	३
पिनाकिन्	१	१	३१	पीनोष्णी	२	९	७१	पुत्तिका	२	५	२७
पिपासा	२	९	५५	पीयूष	१	१	४८	पुत्र	२	६	२७
पिपीलिका	३	५	८	"	२	९	५४	"	२	६	३७
पिप्पल	२	४	२०	पीलु	२	४	२८	पुत्रिका	२	१०	२९
पिप्पली	२	४	९७	"	३	३	१९४	पुत्रौ	२	६	३७
पिप्पलीमूल	२	९	११०	पीलुपर्णी	२	४	८४	पुद्गल	३	५	२०
पिप्लु	२	६	४९	"	२	४	१३९	पुनःपुनर्	३	४	१
पिष्ठ	२	६	६०	पावन्	३	१	६१	पुनर्	३	३	२५३
पिशङ्ग	१	५	१६	पीवर	३	१	६१	"	३	४	१५
पिशच	१	१	११	पीवरस्तनी	२	९	७१	"	३	४	१९
पिशित	२	६	६३	पुंश्रुली	२	६	१०	पुननंवा	२	४	१४९
पिशुन	२	६	१२४	पुंस्	२	६	१	पुनर्भव	२	६	८३
"	३	१	४७	पुक्कस	२	१०	२०	पुनर्भू	२	६	२३
"	३	३	१२७	पुक्क	३	५	१७	पुन्नाग	२	४	२५
पिशुना	२	४	१३३	पुक्कव	३	१	५९	पुर	२	२	१
पिष्टक	२	९	४८	पुच्छ	२	८	५०	पुर	२	४	३४
पिष्टपचन	२	९	३२	पुज	२	५	४२	"	३	३	१८४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पुरःसर	२	८	७२	पुलिन्द	२	१०	२०	पूज्य	३	१	५
पुरतस्	३	४	७	पुलोमजा	१	१	४५	"	३	३	१५१
पुरद्वार	२	३	१६	पुषित	३	१	९७	पूत	२	७	४५
पुरन्दर	१	१	४१	पुष्कर	१	२	१	"	२	९	२३
पुरन्ध्री	२	६	६	"	१	१०	४	"	३	१	५५
पुरस्	३	४	७	"	१	१०	४१	पूतना	२	४	५९
पुरस्कृत	३	३	८४	"	२	४	१४५	पूतिक	२	४	४८
पुरस्तात	३	३	२४६	"	३	३	१८६	पूतिकरज	२	४	४८
पुरा	३	३	२५४	पुष्कराह	२	५	२२	पूतिकाष्ठ	२	४	५४
पुराण	१	६	५	पुष्करिणी	१	१०	२७	"	२	४	६०
"	३	१	७७	पुष्कल	३	१	५८	पूतिगन्धि	१	५	१२
पुरातन	३	१	७७	पुष्ट	३	१	९७	पूतिफली	२	४	९६
पुराष्ट	१	६	४	पुष्प	२	४	१७	पूप	२	९	४८
पुरी	२	२	१	"	२	४	१३२	पूर	३	५	२०
पुरीतल	२	६	६६	"	२	६	२१	पूरणी	२	४	४६
पुरीष	२	६	६८	पुष्पक	१	१	७०	पूरित	३	१	९८
पुरु	३	१	६३	"	२	९	१०३	पूरुष	२	६	१
पुरुष	१	४	२९	पुष्पकेतु	२	९	१०३	पूरी	३	२	६५
"	२	४	२५	पुष्पदन्त	१	३	४	"	३	१	९८
"	२	६	१	पुष्पधन्वन्	१	१	२६	पूर्णकुम्भ	२	८	३२
"	३	३	२१९	पुष्पफल	२	४	२१	पूर्णमा	१	४	७
पुरुषोत्तम	१	१	२१	पुष्परस	२	४	१७	पूत	२	७	२८
पुरुहू	३	१	६२	पुष्पलिहू	२	५	२९	पूर्व	३	१	८०
पुरुहूत	१	१	४१	पुष्पवती	२	६	२०	"	३	३	१३४
पुरोग	२	८	७२	पुष्पवत्	१	४	१०	पूर्वज	२	६	४३
पुरोगम	२	८	७२	पुष्पसमय	१	४	१८	पूर्वदेव	१	१	१२
पुरोगामिन्	२	८	७२	पुष्य	१	३	२२	पूर्वपर्वत	२	३	२
पुरोडाश	३	५	२१	पुष्यरथ	२	८	५१	पूर्वधुस्	३	४	२१
पुरोधस्	२	८	५	पुस्त	२	१०	२८	पूषन्	१	३	२९
पुरोभागिन्	३	१	४६	पूग	२	४	१६९	पृक्ति	३	२	९
पुरोहित	२	८	५	"	३	३	२०	पृच्छा	१	६	१०
पुलाक	३	३	५	पूजा	२	७	३४	पृथना	२	८	७८
पुलिन	१	१०	९	पूजित	३	१	९८	"	२	८	८१

शब्दः	का.	व.	श्लो.	शब्दः	का.	व.	श्लो.	शब्दः	का.	व.	श्लो.
पृथक्	३	४	३	पेठक	२	१०	२९	प्याट्	३	४	७
पृथक्पर्णी	२	४	९२	पेठा	२	१०	२९	प्रकाण्ड	१	४	२७
पृथगात्मता	१	४	३१	पेठी	३	५	४२	"	२	४	१०
पृथग्जन	२	१०	१६	पेलव	३	१	६६	प्रकाम	२	९	५७
"	३	३	१०५	पेशल	२	१०	१९	प्रकार	३	३	१६३
पृथग्विबध	३	१	९३	"	३	३	२०५	प्रकाश	१	३	३४
पृथिवी	२	१	३	पेशिन्	२	५	३७	"	३	३	२१८
पृथु	२	९	३७	पैठर	२	९	४५	प्रकीर्णक	२	८	३१
"	२	९	४०	पैतृष्वसेय	२	६	२५	प्रकीर्य	२	४	४८
"	३	१	६०	पैतृष्वस्वीय	२	६	२५	प्रकृति	१	४	२९
पृथुक	२	५	३८	पैत्र (अहोरात्र)	१	४	२१	"	१	७	३७
"	२	९	४७	पोटगल	२	४	१६२	"	२	८	१८
"	३	३	३	"	२	४	१६३	"	३	३	७३
पृथुरोमन्	१	१०	१७	पोटा	२	६	१५	प्रकोष्ठ	२	६	८०
पृथुल	३	१	६०	पोत	२	५	३८	प्रक्रम	३	२	२६
पृथ्वी	२	१	३	"	३	३	६०	प्रक्रिया	२	८	३१
"	२	९	३७	पोतवणिज्	१	१०	१२	प्रक्षण	१	६	२५
"	२	२	४०	पोतवाह	१	१०	१२	प्रक्षाण	१	६	२५
पृथ्वीका	२	४	१२५	पोताधान	१	१०	१९	प्रक्ष्वेडन	२	८	८७
पृदाकु	१	८	६	पोत्र	३	३	१८१	प्रगण्ड	२	६	८०
पृदिन	२	६	४८	पोत्रिन्	२	५	२	प्रगतजानुक	२	६	४७
पृदिनपर्णी	२	४	९२	पौण्डर्य	२	४	१२७	प्रगल्भ	३	१	२५
पृषत्	१	१०	६	पौत्री	२	६	२९	प्रगाढ	३	३	२४४
पृषत	१	१०	६	पौर	२	४	१६६	प्रगुण	३	१	७२
"	२	५	१०	पौरस्त्य	३	१	८०	प्रगे	३	४	१९
पृषत्क	२	८	८६	पौरुष	२	६	८७	प्रग्रह	२	८	११९
पृषदश्च	१	१	६२	"	३	३	२२३	"	३	३	२३७
पृषदाज्य	२	७	२४	पौरोगव	२	९	२७	प्रग्राह	३	३	२३७
पृष्ठ	२	६	७८	पौर्णमास	२	७	४८	प्रग्रीव	३	५	३५
पृष्ठय	२	८	४६	पौर्णमासी	१	४	७	प्रघण	२	२	१२
"	३	२	४१	पौलस्त्य	१	१	६९	प्रघाण	२	२	१२
पेचक	२	५	१५	पौलि	२	९	४७	प्रचक्र	२	८	९६
"	३	३	६	पौष	१	४	१५	प्रचलायित	३	१	३२

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
प्रचुर	३	१	६३	प्रतापस	२	४	८१	प्रतियत्न	३	३	१०७
प्रचेनस्	१	१	६१	प्रति	३	३	२४५	प्रतियातना	२	१०	३५
प्रचोदनी	२	४	९४	प्रतिकर्म	२	६	९९	प्रतिरोधिन्	२	१०	२५
प्रच्छदपट	२	६	११६	प्रतिकूल	३	१	८४	प्रतिवाक्य	१	६	१०
प्रच्छन्न	२	२	१४	प्रतिकुनि	२	१०	३६	प्रतिविषा	२	४	९९
प्रच्छदिका	२	६	५५	प्रतिकृष्ट	३	१	५४	प्रतिशासन	३	२	३४
प्रजन	३	२	२४	प्रतिक्षिप्त	३	१	४२	प्रतिश्याय	२	६	५१
प्रजविन्	२	८	५३	प्रतिस्वयाति	३	२	२८	प्रतिश्रय	३	३	१५३
प्रजा	३	३	३२	प्रतिग्रह	२	८	७९	प्रतिश्रव	१	५	५
प्रजाता	२	६	१६	प्रतिग्राह	२	६	१३९	प्रतिश्रुत्	१	६	२६
प्रजापति	१	१	१७	प्रतिषा	१	७	२६	प्रतिष्टम्भ	३	२	२७
प्रजावनी	२	६	३०	प्रतिबानन	२	८	११४	प्रतिसर	३	३	१७४
प्रज्ञा	१	५	१	प्रतिच्छाया	२	१०	३५	प्रतिसीरा	२	६	१२०
"	२	६	१२	प्रतिभागर	३	२	२८	प्रतिहत	३	१	४१
प्रज्ञान	३	३	१२२	प्रतिष्ठात	३	१	१०८	प्रतिहारक	२	१०	११
प्रक्षु	२	६	४७	प्रतिष्ठान	१	५	५	प्रतिहास	२	४	७६
प्रक्षान	२	५	३७	प्रतिदान	२	९	८१	प्रतीक	२	६	७०
प्रणय	३	२	२५	प्रतिध्वान	१	६	२६	"	३	३	७
"	३	३	१५२	प्रतिनिधि	२	१०	३६	प्रतीकार	२	८	११०
प्रणव	१	६	४	प्रतिपत्	१	४	१	प्रतीकाश	२	१०	३७
प्रणाद	१	६	११	"	१	५	१	प्रतीक्ष्य	३	१	५
प्रणाली	१	१०	३५	प्रतिपन्न	३	१	१०८	प्रतीचो	१	३	१
प्रणिधि	२	८	१३	प्रतिपादन	२	७	२९	प्रतीत	३	१	९
"	३	३	१००	प्रतिबद्ध	३	१	४१	"	३	३	८२
प्रणिहित	३	१	८६	प्रतिबन्ध	३	२	२७	प्रतीपदर्शिनी	२	६	२
प्रणीत	२	७	८	प्रतिबिम्ब	२	१०	३५	प्रतीर	१	१०	७
"	२	९	४५	प्रतिभय	१	७	२०	प्रतीहार	२	२	१६
प्रणुत	३	१	१०९	प्रतिमान्वित	३	१	२५	"	२	८	६
प्रणय	३	१	२५	प्रतिभू	२	१०	४४	"	३	३	१७०
प्रतन	३	१	७७	प्रतिमा	२	१०	३५	प्रतीहारी	३	३	१७०
प्रतल	२	६	८४	प्रतिमान	२	८	३९	प्रतली	२	२	३
"	२	६	८५	"	२	१०	३५	प्रत्य	३	१	७७
प्रताप	२	८	२०	प्रतिमुक्त	२	८	३५	प्रत्यक्	३	४	२३
								प्रत्यक्षपणी	२	४	८९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
प्रत्यक्षेत्रणी	२	४	८८	प्रद्राव	२	८	१११	प्रमा	३	२	१०
"	२	४	११४	प्रधन	२	८	१०३	प्रमाण	३	३	५४
प्रत्यक्ष	३	१	७९	प्रधान	१	४	२९	प्रमाद	१	७	३०
प्रत्यग्र	३	१	७७	"	२	८	५	प्रमापण	२	८	११२
प्रत्यन्त	२	१	७	"	३	१	५७	प्रमिति	३	२	१०
प्रत्यन्तपर्वत	२	३	७	"	३	३	१२२	प्रमीत	२	७	२६
प्रत्यय	३	३	१४८	प्रधि	२	८	५६	"	२	८	११७
प्रत्ययित	२	८	१३	प्रपञ्च	३	३	२८	प्रमीला	१	७	३७
प्रत्ययिन्	२	८	११	प्रपद	२	६	७१	प्रमुख	३	१	५७
प्रत्यवसित	३	१	११०	प्रपा	२	२	७	प्रसुदित	३	१	१०३
प्रत्याख्यात	३	१	४०	प्रपात	२	३	४	प्रमोद	१	४	२४
प्रत्याख्यान	३	२	३१	प्रपितामह	२	६	३३	प्रयत	२	७	४५
प्रत्यादिष्ट	३	१	४०	प्रपुत्राढ	२	४	१४७	प्रयस्त	२	९	४५
प्रत्यादेश	३	२	३१	प्रपौण्डरीक	२	४	१२७	प्रयाम	३	२	२३
प्रत्यालीढ	२	८	८५	प्रफुल्ल	२	४	७	प्रयोगार्थ	३	२	२६
प्रत्यासार	२	८	७९	प्रबोधन	२	६	१२२	प्रलम्बन	१	१	२३
प्रत्याहार	३	२	१६	प्रमञ्जन	१	१	६३	प्रलय	१	४	२२
प्रत्युत्क्रम	३	२	२६	प्रभव	३	३	२१०	"	१	७	३३
प्रत्युवस्	१	४	२	प्रभा	१	३	३४	"	२	८	११६
प्रत्युव	१	४	२	प्रभाकर	१	३	२८	प्रलाप	१	६	१५
प्रत्युह	३	२	१९	प्रभात	१	४	३	प्रवण	३	३	५६
प्रथम	३	१	८०	प्रभाव	२	८	२०	प्रवयस्	२	६	४२
"	३	३	१४४	प्रभिज्ञ	२	८	३६	प्रवई	३	१	५७
प्रथा	३	२	९	प्रभु	३	१	११	प्रवह	३	२	१८
प्रथित	३	१	९	प्रभूत	३	१	६२	प्रवहण	२	८	५२
प्रदर	३	३	१६५	प्रभ्रष्टक	२	६	१३५	प्रवहिका	१	६	६
प्रदीप	२	६	१३८	प्रमथ	१	१	३५	प्रवारण	३	२	३
प्रदीपन	१	८	१०	प्रमथन	२	८	११५	प्रवाल	१	७	७
प्रदेशन	२	८	२७	प्रमथाधिप	१	१	३१	"	२	९	९३
प्रदेशिनी	२	६	८१	प्रमद	१	४	२४	"	३	३	२०५
"	२	६	८२	प्रमदवन	२	४	३	प्रवासन	३	२	१८
प्रदीप	१	४	६	प्रमदा	२	६	३	प्रवाह	२	८	११३
प्रद्युम्न	१	१	२५	प्रमनस्	३	१	७	प्रवाहिका	२	६	५५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
प्रविदारण	२	८	१०३	प्रसारिन्	३	१	३१	प्रहेलिका	१	६	६
प्रविश्लेष	३	२	२०	प्रसारिणी	२	४	१५३	प्रहृष्ट	३	१	१०३
प्रवीण	३	१	४	प्रसित	३	१	९	प्रांशु	३	१	७०
प्रवृत्ति	१	६	७	प्रसिति	३	२	१४	प्राकार	२	२	३
”	३	२	१८	प्रसिद्ध	३	३	१०४	प्राकृत	२	१०	१६
प्रवृद्ध	३	१	७६	प्रसू	२	६	२९	प्राग्वंश	२	७	१६
”	३	१	८८	”	३	३	२३०	प्राग्रहर	३	१	५८
प्रवेक	३	१	५७	प्रसूता	२	६	१६	प्राग्र्य	३	१	५८
प्रवेणी	२	६	९८	प्रसूति	३	२	१०	प्राधार	३	२	१०
”	२	८	४२	प्रसूतिका	२	६	१६	प्राच्	३	४	१६
प्रवेष्ट	२	६	८०	प्रसूतिज	१	९	३	”	३	४	२३
प्रवृत्त	३	१	८१	प्रसून	२	४	१७	प्राचिका	३	५	८
प्रश्न	१	६	१०	”	३	३	१२३	प्राची	१	३	१
प्रश्रय	३	२	२५	प्रसूजनयितु	२	६	३७	प्राचीन	२	२	३
प्रश्रित	३	१	२५	प्रसृत	३	१	८८	प्राचीना	२	४	८५
प्रष्ट	२	८	७२	प्रसृता	२	६	७२	प्राचीनावीत	२	७	५०
प्रष्टवाह	२	९	६३	प्रसृति	२	६	८५	प्राच्य	२	१	७
प्रष्टौही	२	९	७०	प्रसेव	२	९	२६	प्राजन	२	९	१२
प्रसन्न	१	१०	१४	प्रसेवक	१	७	७	प्राजितु	२	८	५९
प्रसन्नता	१	३	१६	प्रस्तर	२	३	४	प्राश्च	२	७	५
प्रसन्ना	२	१०	३९	प्रस्ताव	३	२	२४	प्राश्चा	२	६	१२
प्रसभ	२	८	१०८	प्रस्थ	२	३	५	प्राश्ची	२	६	१२
प्रसर	३	२	२३	”	२	९	८९	प्राज्य	३	१	६३
प्रसरण	२	८	९६	”	३	३	८८	प्राड्विवाक	२	८	५
प्रसव	३	२	१०	प्रस्थपुष्प	२	४	७९	प्राण	१	१	६३
”	३	३	२०८	प्रस्थान	२	८	९५	”	२	८	१०२
प्रसव्य	३	१	८४	प्रस्फोटन	२	९	२६	”	२	८	११९
प्रसव्य	३	४	१०	प्रस्रवण	२	३	५	प्राण	२	९	१०४
प्रसाद	१	३	१६	प्रस्ताव	२	६	६७	प्राणिन्	१	४	३०
”	३	३	९१	प्रहर	१	४	६	प्रातर्	३	४	१९
प्रसाधन	२	६	९९	प्रहरण	२	८	८२	प्राथमकश्चिक्	२	७	११
प्रसाधनी	२	६	१३९	प्रहस्त	२	६	८४	प्रादुस्	३	३	२५६
प्रसाधित	२	६	१००	प्रहि	१	१०	२६	”	३	४	१२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
प्रादेश	१	३	८३	प्रियक	२	५	९	प्लव	१	१०	२४
प्रादेशन	२	७	३०	प्रियकु	२	४	५५	"	२	४	१३२
प्राध्वम्	३	४	४	"	२	९	२०	"	२	५	३४
प्रान्तर	१	१	१७	प्रियता	१	७	२७	"	२	१०	१९
प्राप्त	३	१	८६	प्रियवद	३	१	३५	प्लवगा	२	५	३
"	३	१	२०४	प्रियाल	२	४	३८	"	३	३	२४
प्राप्तपञ्चत्व	२	८	११७	प्रीणन	३	२	४	प्लवङ्ग	२	५	३
प्राप्तरूप	३	३	१३१	प्रीत	३	१	१०३	प्लवङ्गम	३	३	१३८
प्राप्ति	३	३	६९	प्रीति	१	४	२३	प्लाक्ष	२	४	१८
प्राप्य	३	१	९२	प्रष्ट	३	१	९९	प्लीहन्	२	६	६६
प्राभूत	२	८	२७	प्रेक्षा	१	५	१	प्लीहशत्रु	२	४	४९
प्राब	२	७	५२	"	३	३	२२५	प्लुत	२	८	४८
"	३	३	१५४	प्रेक्षा	२	८	५३	प्लुष्ट	३	१	९९
प्रायस्	३	४	१७	प्रेक्षित	३	१	८७	प्लाष	३	२	९
प्रायित	३	१	९७	प्रेत	१	९	२	प्लात	३	१	११०
प्रालम्ब	२	३	१३६	"	२	८	११७	फ			
प्रालम्बिका	२	३	१०४	"	३	३	६०	फणा	१	८	९
प्रालेय	१	३	१८	प्रेत्य	३	४	८	फणिज्ज	२	४	७९
प्रानार	२	३	११७	प्रेमन्	१	७	२७	फणिन्	१	८	७
प्राभूत	२	३	११३	"	१	७	२७	फळ	२	८	९०
प्राभूष्	१	४	१९	प्रेष्ठ	३	१	१११	"	२	९	१३
प्राभूषायमी	२	४	८६	प्रेष	३	३	२२०	फळ	३	३	२०१
प्राप्त	२	८	९३	प्रेष्य	२	१०	१७	"	३	५	२३
प्राप्तज्ञ	२	८	५७	प्रोक्षण	२	७	२६	फळका	२	८	९०
प्राप्तज्ञव	२	९	६४	प्रोक्षित	२	७	२६	फळकपाणि	२	८	७१
प्रासाद	२	२	९	प्रोथ	२	८	४९	फळत्रिक	२	९	१११
प्राप्तिक	२	८	७०	प्रोष्ठपदा	१	३	२२	फळपूर	२	४	७८
प्राह	१	४	३	प्रोष्ठी	१	१०	१८	फळवत्	२	४	७
प्रिय-	२	६	३५	प्रौढ	३	१	७६	फळाव्यक्ष	२	४	४५
"	३	१	५३	प्रौष्ठपद	१	४	१७	फळिन्	२	४	७
प्रिवक	२	४	४२	पुक्ष	२	४	३२	फळिन	२	४	७
"	२	४	४४	"	२	४	४३	फळिनी	२	४	५५
"	२	४	५६	प्लव	१	१०	११	"	२	४	१३६
								फली	२	४	५५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
फलेग्रहि	२	४	६	बन्दी	२	८	११९	बला	२	४	१०७
फलेग्रहा	२	४	५४	बन्वकी	२	६	१०	बलाका	२	५	२५
फल्गु	२	४	६१	बन्वन	२	८	२६	बलास्कार	२	८	१०८
"	३	१	५६	"	३	२	१४	बलाराति	१	१	४३
फाणित	२	९	४३	बन्धु	२	६	३४	बलाहक	१	३	६
फाण्ट	३	१	९४	बन्धुजीवक	२	४	७३	बलि	२	७	१४
फाल	२	६	११९	बन्धुता	२	६	३५	"	२	८	२७
"	२	९	१३	बन्धुर	३	१	७०	"	३	३	१९५
फाल्गुन	१	४	१५	बन्धुल	२	६	२६	बलिभंसिन्	१	१	२१
फाल्गुनिक	१	४	१५	बन्धूक	२	४	७३	बलिन	२	३	४५
फुल्ल	२	४	८	बन्धूकपुष्प	२	४	४४	बलिपुष्ट	२	५	२०
फेन	२	९	१०५	बन्धु	२	४	७	बलिन	२	३	४५
"	३	५	१९	बन्ध्या	२	९	६९	बलिमुञ्च	२	५	२०
फेनिल	२	४	३१	बन्धु	३	३	१७१	बलिसधन्	१	८	१
"	२	४	३६	बर्ह	२	४	१३२	बलीवर्ह	२	९	५९
फेरब	२	५	५	"	२	५	३१	बलव	२	९	२७
फेर	२	५	५	"	३	३	२३६	"	२	९	५७
फेला	२	९	५६	बहिण	२	५	३०	बलनन	२	४	१६३
ब				बहिन्	२	५	३०	बल्ल	२	९	७६
बहिष्ठ	३	१	१११	बहिर्मुख	१	१	९	बहिर्दार	२	२	१६
बक	२	५	२२	बहिस्	१	१	५४	बहिस्	३	४	१७
बकुल	२	४	६४	बहिष्ठ	२	८	१२२	बहु	३	१	६३
बडवानल	१	१	५६	बल	१	१	२४	बहुकर	१	१	१७
बडिश	१	१०	१६	"	२	८	१७	बहुगर्वाच्	३	१	३६
बत	३	३	२४४	"	२	८	७८	बहुपाद	२	४	३२
बदर	२	४	३७	"	२	८	१०२	बहुप्रद	३	१	७
बदरा	२	४	११६	"	३	२	२२	बहुमुख	२	६	११३
"	२	४	१५१	"	३	३	१९६	बहुरूप	२	६	१२८
बदरी	२	४	३६	बलदेव	१	१	२३	बहुक	३	३	१९९
बन्दिन्	२	८	९७	बलमद्र	१	१	२३	"	३	१	३३
बद्ध	३	१	४२	बलमद्रिका	२	४	१५०	बहुका	२	४	१२५
"	३	१	९५	बलवत्	२	६	४४	"	३	३	१९९
बबिर	२	६	४८	"	३	४	२	बहुवारक	३	४	३४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वदुविष	३	१	९३	बाहुल	१	४	१८	बुद्धि	१	५	१
वदुसुता	२	४	१०१	बाहुलेय	१	१	४०	बुदुबुद	३	५	१९
वदुसुति	२	९	७०	बाह्लिक	२	८	४५	बुध	१	३	२६
वाकूची	२	४	९५	"	३	३	९	"	२	७	५
वाक्व	१	१	५३	"	३	५	३२	"	३	३	१००
वाढ	१	१	६७	बाह्लीक	२	६	१२४	बुधित	३	१	१०८
"	३	३	४४	"	२	९	४०	बुध्न	२	४	१२
बाण	२	८	८६	"	३	३	९	बुधुक्षा	२	९	५४
"	३	३	४५	विड	२	९	४२	बुधुक्षित	३	१	२०
बाणा	२	४	७४	विन्दु	१	१०	६	बुस	२	९	२२
बाधा	१	९	३	बिभीतक	२	४	५८	बुस्त	३	५	३४
बान्धकिनेय	२	३	२६	बिम्ब	१	३	१५	बुहित	२	८	१०७
बान्धव	२	६	३४	बिम्बिका	२	४	१३९	बुहती	२	४	९३
बाहृत	२	४	१९	बिल	१	८	१	"	३	३	७५
बाल	२	४	१२२	विलेशय	१	८	८	बुहत	३	१	६०
"	२	६	४२	बिल्व	२	४	३२	बुहतिका	२	६	११७
"	३	३	२०६	बिसप्रसून	१	०	४१	बुहत्कुक्षि	२	६	४४
बालतनय	२	४	४९	बिसिनी	१	१०	३९	बुहद्भानु	१	१	५४
बालसुण	२	४	१६७	बिस	१	१०	४२	बुहस्पति	१	३	२४
बालमूषिका	२	५	१२	बिसकण्ठिका	२	५	२५	बोधकर	२	८	९६
बाला	१	७	१४	विस्त	२	९	८६	बोधिद्रुम	२	४	२०
बालिश	३	१	४८	बीज	१	४	२८	बोल	२	९	१०४
"	३	३	२१८	"	२	६	६२	ब्रक्ष	१	३	२८
बालेय	२	९	७७	बीजकोश	१	१०	४३	ब्रह्मचारिन्	२	७	३
बालेयशाक	२	४	९०	बीजपूर	२	४	७८	"	२	७	४२
बास्थ	२	६	४०	बीजाकृत	२	९	८	ब्रह्मण्य	२	४	४१
बाष्प	३	३	१३०	बीज्य	२	७	२	ब्रह्मरव	२	७	५१
बाष्पिका	२	९	४०	बीमरस	१	७	१७	ब्रह्मदर्मा	२	४	१४५
बाहु	२	३	८०	"	१	७	१९	ब्रह्मदारु	२	४	४१
बाहुज	२	८	१	"	३	३	२३५	ब्रह्मान्	१	१	१६
बाहुदा	१	१०	३३	बुका	२	६	६४	"	३	३	११४
बाहुमूल	२	६	७९	बुद	१	१	१३	ब्रह्मपुत्र	१	८	१०
बाहुयुद	२	८	१०६	"	३	१	१०८	ब्रह्मवन्द	३	३	१०४

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
ब्रह्मविन्दु	२	७	३९	भटित्र	२	९	४५	मर्त्सन	१	६	१४
ब्रह्मभूय	२	७	५१	भट्टारक	१	७	१३	मर्मन्	२	९	९४
ब्रह्मवर्चस	२	७	३८	भट्टिनी	१	७	१३	"	२	१०	३८
ब्रह्मसायुज्य	२	७	५१	भण्टाकी	२	४	११४	भल्ल	३	५	२१
ब्रह्मसू	१	१	२७	भण्डिल	२	४	६३	भल्लातकी	२	४	४२
ब्रह्मसूत्र	२	७	४९	भण्डी	२	४	९१	भल्लुक	२	५	३
ब्रह्माञ्जलि	२	७	३८	भण्डीरी	२	४	९१	भल्लुक	२	५	४
ब्रह्मासन	२	७	३९	भद्र	१	४	२५	भव	१	१	३४
ब्राह्म (तीर्थ)	२	७	५१	"	२	९	५९	"	३	३	२०६
ब्राह्म(अहोरात्र)	२	४	२१	भद्रकुम्भ	२	८	३२	भवन	२	२	५
ब्राह्मण	२	७	४	भद्राक्षर	२	४	५३	भवानी	१	१	३७
ब्राह्मणयष्टिका	२	४	८९	भद्रपर्णी	२	४	३६	भविक	१	४	२६
ब्राह्मणी	२	४	८९	भद्रबला	२	४	१५३	भवितृ	३	१	२९
ब्राह्मण्य	३	२	४१	भद्रमुस्तक	२	४	१६०	भविष्णु	३	१	२९
ब्राह्मी	१	१	३५	भद्रयव	२	४	६७	भव्य	१	४	२६
"	१	६	१	भद्रश्री	२	६	१३०	भषक	२	१०	२२
"	२	३	१३७	भद्रासन	२	८	३१	भस्त्रा	२	१०	३४
भ	१	३	२१	भय	१	७	२१	भस्मगन्धिनी	२	४	१२०
भक्त	२	९	४८	भयङ्कर	१	७	२०	भस्मगर्भा	२	४	६३
भक्षक	३	१	२०	भयद्रुत	३	१	४२	भा	१	३	३४
भक्षित	३	१	११०	भयानक	१	७	१७	भाग	२	९	८९
भक्ष्यकार	२	९	९८	"	१	७	२०	भागधेय	१	४	२८
भग	२	६	७६	भर	१	१	६६	"	२	८	२७
"	३	३	२६	भरण	२	१०	३८	भागितेय	२	६	३३
भगन्दर	२	६	५६	भरण्य	२	१०	३८	भागीरथी	१	१०	३१
भगवत्	१	१	१३	भरण्यभुज्	३	१	१९	भाग्य	१	४	२८
भगिनी	२	६	२९	भरत	२	१०	१२	"	३	३	१५५
भङ्ग	१	१०	५	भरद्वाज	२	५	१५	भाजन	२	९	३३
भङ्गा	२	९	२०	भर्ग	१	१	३३	भाण्ड	२	९	३६
भङ्गि	३	५	८	भर्तृ	२	६	३५	"	३	३	४१
भजमान	२	८	२४	"	३	३	५९	भाद्र	१	४	१५
भट	२	८	६१	भर्तृदारक	१	७	१२	भाद्रपद	१	४	१५
				भर्तृदारिका	१	७	१३५	भाद्रपदा	१	३	३१

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
मानु	१	३	३१	मिधु	२	७	४१	भुमान्तर	२	६	७७
"	१	३	३३	मिस्त	१	३	१६	भुजिष्य	२	१०	१७
"	३	३	१०५	मिस्ति	२	२	४	भुवन	१	१०	३
मामिनी	२	६	४	मिदा	३	२	५	"	२	१	६
मार	२	९	८७	मिदुर	१	१	४७	भू	२	१	२
भारत	२	१	६	मिन्निपाल	२	८	९१	भूत	१	१	११
भारती	१	६	१	मिन्न	३	१	८०	"	३	१	१०४
भारद्वाजी	२	४	११६	"	३	१	१००	"	३	३	७८
भारवष्टि	२	१०	३०	मिषज्	२	६	५७	भूगकेश	२	९	१११
भारबाह्	२	१०	१५	मिस्मटा	२	९	४८	भूतवेशी	२	४	७१
भारिक	२	१०	१५	मिस्ता	२	९	४९	भूमात्मन्	३	३	१०५
भार्गव	१	३	२५	मी	१	७	२१	भूतावास	२	४	५८
भार्गवी	२	४	१५८	मीति	१	७	२१	भूति	१	१	३६
भार्गी	२	४	८९	मीम	१	१	३४	"	३	३	६९
भार्धा	२	६	६	"	१	७	२०	भूतिक	३	३	८
भार्वापती	२	६	३८	मीरु	२	६	३	भूतेश	१	१	३१
भाव	१	७	१२	"	३	१	२६	भूवार	२	५	२
"	१	७	२१	मीरुक	३	१	२६	भूदेव	२	७	४
"	३	३	२०८	मीलुक	३	१	२६	भूनिम्ब	२	४	१४३
भावित	२	६	१३४	मीषण	१	७	२०	भूप	२	८	१
"	२	९	४६	मीष्म	१	७	२०	भूपबी	२	४	७०
"	३	१	१०४	मीष्मसू	१	१०	३१	भूसूत	३	३	६१
भाडुक	१	४	२६	मुक्त	३	१	१११	भूमि	२	१	२
भाषा	१	६	१	मुक्तसमुज्जित	१	९	५६	भूमिजम्बुका	२	४	३७
भाषित	१	६	१	मुद्र	३	१	७१	"	२	४	११८
"	३	१	१०७	"	३	१	९१	भूमिस्पृश	२	९	१
भाष्य	३	५	३१	भुज	२	६	८०	भूयस्	३	१	६३
भास्	१	३	३४	भुजग	१	८	६	भूयिष्ठ	३	१	६३
भास्कर	१	३	२८	भुजक	१	८	६	भूरि	३	१	६३
भास्वद	१	३	२९	भुजङ्गमुज्	२	५	३०	"	३	३	१८३
भिक्षा	३	२	६	भुजङ्गम	१	८	६	भूरिफेना	२	४	१४३
"	३	३	२२५	भुजङ्गाक्षी	२	४	११५	भूरिभावा	२	५	५
भिधु	२	७	३	भुजङ्गिरस्	२	६	७८	भूदण्डी	२	४	६९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मूर्ज	२	४	४६	मौम	१	३	२५	मकुटक	२	९	१७
भूषण	२	६	१०१	मौरिक	२	८	७	मकुडक	२	४	१४४
भूषित	२	६	१००	भकुंस	१	७	११	मक्षिका	२	५	२६
भूष्णु	३	१	२९	भकुटि	१	७	३७	मख	२	७	१३
भूस्तुण	२	४	१६७	भ्रम	१	५	४	मगव	२	८	९७
भृगु	२	३	४	"	१	१०	७	मघव	१	१	४१
भृङ्ग	२	४	१३४	"	३	२	९	मङ्क्षु	३	४	२
"	२	५	१६	भ्रमर	२	५	२९	मङ्गल	१	४	२५
"	२	५	२९	भ्रमरक	२	६	९६	मङ्गल्यक	२	९	१७
भृङ्गराज	२	४	१५१	भ्रमि	३	२	९	मङ्गल्या	२	६	१२७
भृङ्गार	२	८	३२	भ्रष्ट	३	१	१०४	मन्त्रिका	१	४	२७
भृङ्गारी	२	५	२८	भ्रागिष्णु	२	६	१०१	मन्त्र	२	६	१३८
भृतक	२	१०	१५	भ्रातर	२	६	३६	मज्जा	२	४	१२
भृति	२	१०	३८	भ्रातृ	२	६	३६	मज्जरि	२	४	१३
भृतिसुब्	२	१०	१५	भ्रातृज	२	६	३६	मभिष्टा	२	४	९०
भृत्य	२	१०	१७	भ्रातृजाया	२	६	३०	मक्षीर	२	६	१०९
भृत्या	२	१०	३८	भ्रातृमगिनी	२	६	३६	मक्षु	३	१	५२
भृश	१	१	६६	भ्रातृम्य	३	३	१४	मक्षुल	३	१	५२
भेक	१	१०	२४	भ्रात्रीव	२	६	३६	मक्षुषा	२	१०	२९
भेकी	१	१०	२४	भ्रान्ति	१	५	४	मठ	२	२	८
भेद	२	८	२१	भ्राट्	२	९	३०	मड्ड	१	७	८
भेदित	३	१	१००	भकुंस	१	७	११	मणि	२	९	९३
भेरी	१	७	६	भुकुटि	१	७	३७	मणिक	३	९	३१
भेषज	२	६	५०	भू	२	६	९२	मण्ड	२	४	५१
भैक्ष	२	७	४६	भूकुंस	१	७	११	"	२	९	४९
भैरव	१	७	१९	भुकुटि	१	७	३७	मण्डन	२	६	१०२
भैषज्य	२	६	५०	भूण	२	६	३९	"	३	१	२९
भोग	३	३	२३	"	३	३	४५	मण्डप	२	२	९
भोगवती	३	३	७०	भेष	२	८	३३	मण्डल	१	३	६
भोगिन्	१	८	८	म				"	१	३	१५
भोगिनी	२	१	५	मकर	१	१०	२०	"	१	३	३१
भोजन	२	९	५५	मकरभय	१	१	२६	मण्डलक	२	६	५४
भोस्	३	४	७	मकरन्द	२	४	१७	मण्डलाग्र	२	८	८९

शब्दाः	का.	व.	इलो.
मण्डलेश्वर	२	८	२
मण्डहारक	२	१०	१०
मण्डित	१	६	१००
मण्डुक	१	१०	२४
मण्डुकपर्ण	२	४	५६
मण्डुकपर्णी	२	४	९१
मण्डूर	२	९	९८
मतङ्गज	२	८	३४
मन्त्रिलिका	१	४	२७
मति	१	५	१
मत्त	२	८	३६
"	३	१	२३
"	३	१	१०३
मत्तकाशिनी	२	६	४
मत्सर	३	३	१७३
मत्स्य	१	१०	१७
मत्स्यण्डी	२	९	४३
मत्स्यपित्ता	२	४	८६
मत्स्यवेधन	१	१०	१६
मत्स्याक्षी	२	४	१३७
मत्स्याधानी	१	१०	१६
मथित	२	९	५३
मथिन्	२	९	७४
मद	२	८	३७
"	३	२	१२
मदकल	२	८	३५
मदन	१	१	२५
"	२	४	५३
"	२	४	७८
मदस्थान	२	१०	४०
मदिरा	२	१०	४०
मदिरागृह	२	२	८
मदोक्त	२	८	३५

शब्दाः	का.	व.	इलो.
मदगु	२	५	३४
मदगुर	१	१०	१९
मद्य	२	१०	४०
मधु	१	४	१५
"	२	९	१०७
"	२	१०	४०
"	३	३	१०३
मधुक	२	४	१०९
मधुकर	२	५	२९
मधुकम	२	१०	४०
मधुदुम	२	४	२७
मधुप	२	५	२९
मधुपर्णिका	२	४	३५
"	२	४	९४
मधुपर्णी	२	४	८३
मधुमक्षिका	२	५	२६
मधुयष्टिका	२	४	१०९
मधुर	१	५	९
"	३	३	१९२
मधुरक	२	४	१४२
मधुरसा	२	४	८३
"	२	४	१०७
मधुरा	२	४	१५२
"	३	३	१९२
मधुरिका	२	४	१०५
मधुरिपु	१	१	२०
मधुलिङ्	२	५	२९
मधुवार	२	१०	४०
मधुव्रत	२	५	२९
मधुशिमु	२	४	३१
मधुश्रेणी	२	४	८४
मधुघोल	२	४	२८
मधुस्रवा	२	४	१४२

शब्दा	का.	व.	इलो
मधूक	२	४	२७
मधूच्छिष्ट	२	९	१०७
मधूलक	२	४	२८
मधूलिका	२	४	८४
मध्य	२	६	७९
"	३	४	१६१
मध्यदेश	२	१	७
मध्यम	१	७	१
"	२	१	७
"	२	६	७९
मध्यमा	२	६	८
"	२	६	८२
मध्याह्न	१	४	३
मध्यासव	२	१०	४१
मनःशिला	२	९	१८
मनस्	१	४	३१
मनसिख	१	१	२६
मनस्कार	१	५	२
मनाक्	३	४	८
मनित	३	१	१०८
मनीषा	१	५	१
मनीषिन्	२	७	५
मनु	३	५	३८
मनुज	२	६	१
मनुष्य	२	६	१
मनुष्यधर्मन्	१	१	६८
मनोगुप्ता	२	९	१०८
मनोजवस्	३	१	१३
मनोह	३	१	५२
मनोरथ	१	७	२७
मनोरम	३	१	५२
मनोहत	३	१	४१
मनोहा	२	९	१०८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मन्तु	२	८	२६	मयूख	३	३	१८	मल	३	३	१९७
मन्त्र	३	३	१६७	मयूर	२	४	१११	मलदूषित	३	१	५५
मन्त्रिन्	२	८	४	"	२	५	३०	मलयू	२	४	६१
मन्थ	२	९	७४	मयूरक	२	४	११	मलयज	२	६	१३०
मन्थदण्डक	२	९	७४	"	०	९	१०१	मलिन	३	१	५५
मन्थनी	२	९	७४	मगकत	२	९	९२	मलिनी	२	६	२०
मन्थर	२	८	७२	मगण	२	८	११६	मलिम्बुच	२	१०	२५
मन्थान	२	९	७४	मरीच	२	९	३६	मलीमल	३	१	५५
मन्द	२	१०	१८	मरीचि	१	३	२७	मल्ल	३	५	२१
"	३	३	९५	"	१	३	३३	मल्लक	३	५	३७
मन्दगामिन्	२	८	७२	मरीचिका	१	३	३५	मल्लिका	२	४	६९
मन्दाकिनी	१	१	४९	मरु	२	१	५	मल्लिकाक्ष	२	५	२४
मन्दाक्ष	१	७	२३	"	३	३	१६३	मसी	३	५	१०
मन्दार	१	१	५०	मरुत	१	१	६२	मसूर	२	९	१७
"	२	४	२६	"	१	३	०	मसूरविदला	२	४	१०९
"	२	४	८१	"	३	३	६९	मसृण	२	९	४६
मन्दिर	२	२	५	मरुत्वत्	१	१	४१	मस्कर	२	४	१६१
"	३	३	१८४	मरुन्माला	२	४	१३३	मस्करिन्	२	७	४१
मन्दुरा	२	२	७	मरुवक	२	४	५२	मस्तक	२	६	९५
मन्दोष्ण	१	३	३५	"	२	४	७९	मस्तिष्क	२	६	६५
मन्द्र	१	७	२	मर्कट	२	५	३	मस्तु	२	९	५४
मन्मथ	१	१	२५	मर्कटक	२	५	१३	मह	१	७	३८
"	२	४	२१	मर्कटी	२	४	४८	महत	३	१	६०
मन्या	२	६	६५	"	२	४	८७	"	३	३	७९
मन्यु	१	७	२५	मर्त्य	२	६	१	महती	३	३	६९
"	३	३	१५४	मर्दन	३	२	२२	महत्	३	३	२३१
मन्वन्तर	१	४	२२	मर्दल	१	७	८	महाकन्द	२	४	१४८
मय	२	९	७५	मर्मन्	३	५	३०	महाकुल	२	७	३
मयु	१	१	७१	मर्मर	१	६	२३	महाक्ष	२	९	७५
मयुष्टक	२	९	१७	मर्मस्पृश	३	१	८३	महाजाली	२	४	११७
मयख	१	३	३३	मर्यादा	२	८	२६	महादेव	१	१	३२
				मल	२	६	६५				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
महाभन	२	६	११३	महौषध	२	४	१००	मातुलपुत्रक	२	४	७८
महानस	२	९	२७	"	२	४	१४८	मातुलानी	२	६	३०
महामात्र	२	८	५	"	२	९	३८	"	२	९	२०
महारजत	२	९	९५	मा	३	४	११	मातुलाहि	१	८	६
महारजन	२	९	१०६	मांस	२	६	६३	मातुली	२	६	३०
महारण्य	२	४	१	"	३	२	२२	मातुलुङ्गक	२	४	७८
महाराजिक	१	१	१०	मामल	२	६	४४	मातु	१	१	३५
महारौरव	१	९	१	मामिक	२	१०	१४	"	१	७	१४
महाशय	३	१	३	माक्षिक	२	९	१०७	"	२	६	२९
महाशूद्री	२	६	१३	मागध	२	८	९६	"	२	९	६६
महायेता	२	४	११०	मागध	२	१०	२	मात्र	३	३	१७८
महासहा	२	४	७३	मागधी	२	४	७१	मात्रा	३	१	६२
"	२	४	१३८	"	२	४	९६	"	३	३	१७८
महासेन	१	१	३९	माघ	१	४	१५	माद	३	२	१२
महिला	२	६	२	माघ्य	२	४	७३	माधव	१	१	१८
महिलाह्वया	२	४	५५	माठर	१	३	३१	"	१	४	१६
महिष	२	५	४	माढि	३	५	८	माधवक	२	१०	४१
महिषी	२	६	५	माणवक	२	६	४२	माधवी	२	४	७२
मही	२	१	३	"	२	६	१०६	माध्वीक	२	१०	४१
महीक्षित्	२	८	१	माणव्य	३	२	४०	मान	१	७	२२
महीभ्र	२	३	१	माणिक्य	३	५	३१	"	२	९	८५
महीरुह	२	४	५	माणिमन्य	२	९	४२	मानव	२	६	१
महीलता	१	१०	२१	मातङ्ग	२	१०	१९	मानस	१	४	३१
महीसुत	१	३	२५	"	३	३	२१	मानसौकस्	२	५	२३
महेच्छ	३	१	३	मातरपितृ	२	६	३७	मानिनी	२	६	३
महेरणा	२	४	१२४	मातरिश्वन्	१	१	६१	मानुष	२	६	१
महेश्वर	१	१	३०	मातलि	१	१	४५	मानुष्यक	३	२	४२
महोक्ष	२	९	६१	मातापितृ	२	६	३७	माया	२	१०	११
महोत्पल	१	१०	३९	मातामह	२	६	३३	मायाकार	२	१०	११
महोस्ताह	३	१	३	मातुल	२	४	७८	मायादेवीसुत	१	१	१५
महोद्यम	३	१	३	"	२	६	३१	मायु	२	६	६२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
माथूर	२	५	४३	माषपर्णी	२	४	१३८	मुक्तकञ्जुक	१	८	६
मार	१	१	२५	मास	१	४	१२	मुक्ता	२	९	९३
मारजित	१	१	१३	मासर	२	९	४९	मुक्ताबली	२	६	१०५
मारण	२	८	११४	मास्म	३	४	११	मुक्तास्फोट	१	१०	२३
मारिष	१	७	१४	माहिष्य	२	१०	३	मुक्ति	१	५	६
मारुत	१	१	६२	माहेयो	२	९	६६	मुख	२	२	१९
मार्कव	२	४	१५१	मितम्पत्र	३	१	४८	"	२	६	२९
मार्ग	१	४	१४	मित्र	१	३	३०	"	३	२	२२
"	२	१	१५	"	२	८	९	मुखर	३	१	३६
मार्गण	२	८	८७	"	२	८	१२	मुखवासन	१	५	११
मार्गण	३	१	४९	"	३	३	१६७	मुख्य	२	७	४०
"	३	२	३०	मिथस्	३	३	२५६	"	३	१	५७
मार्गशीर्ष	१	४	१४	मिथुन	३	५	३८	मुण्ड	३	६	४८
मार्गित	३	१	१०५	मिथ्या	३	४	१५	"	३	५	३४
मार्जन	२	४	३३	मिथ्याइष्टि	१	५	४	मुण्डित	२	६	४८
मार्जना	२	६	१२१	मिथ्यामियोग	१	६	१०	"	३	१	८५
मार्जार	२	५	६	मिथ्यामिशंसन	१	६	१०	मुण्डिन्	२	१०	१०
मार्जिता	२	९	४४	मिथ्यामति	१	५	४	मुद्	१	४	२४
मार्तण्ड	१	३	२९	मिश्रेया	२	४	१०५	मुदिर	१	३	७
मार्दङ्गिक	२	१०	१३	मिसि	२	४	१०५	मुद्रपर्णी	२	४	११३
मार्ष्टि	२	६	१२१	"	२	४	१५२	मुद्रर	२	८	९१
मालक	२	४	६२	मिसी	२	४	१३४	मुधा	३	४	४
मालती	२	४	७२	मिदिका	१	३	१८	मुनि	१	१	१४
मादा	२	६	१३५	मिहिर	१	३	२९	"	२	७	४२
मालाकार	२	१०	५	मीढ	३	१	९६	मुनीन्द्र	१	१	१४
मालातृणक	२	४	१६७	मीन	१	१०	१७	मुरज	१	७	५
मालिक	२	१०	५	मीनकेतन	१	१	२५	मुरा	२	४	१२३
मालुधान	१	८	६	मुकुट	२	६	१०२	मुषित	३	१	८८
मालुर	२	४	३२	मुकुन्द	२	४	१२१	मुष्क	२	६	७६
मादय	२	६	१३४	मुकुर	२	६	१४०	मुष्कक	२	४	३९
मास्यवत्	२	३	३	मुकुल	२	४	१६	मुष्टिवन्ध	३	२	१४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मुसल	२	९	२५	मूल	३	३	२००	मृड	१	१	३१
मुसलिन्	१	१	२४	मूलक	२	४	१५७	मृडानी	१	१	३७
मुसलो	२	४	११९	मूलधन	२	९	८०	मृणाल	१	१०	४२
"	२	५	१२	मूल्य	२	९	८०	मृणाली	३	५	७
मुसल्य	३	१	४५	"	२	१०	३८	मृत्	२	१	४
मुस्तक	२	४	१५९	मूषक	२	५	१२	मृत्त	२	८	११७
मुस्ता	२	४	१५९	मूषा	२	१०	३३	मृत्त	२	९	३
मुडस्	३	४	१	"	३	५	३८	मृत्तस्नात	३	१	१९
मुडर्भाषा	१	६	१६	मूषिकपर्णी	२	४	८८	मृत्तालक	२	४	१३१
मुहूर्त	१	४	११	मूषित	३	१	८८	मृत्तिका	२	१	४
मूक	३	१	१३	मृग	२	५	७	मृत्त्यु	२	८	११६
मूढ	३	१	४८	"	३	२	३०	मृत्त्युजय	१	१	३१
मूत	३	१	९५	"	३	३	२०	मृत्सा	२	१	४
मूत्र	२	६	६७	मृगणा	३	२	३०	मृत्सना	२	१	४
मूत्रकुच्छू	२	६	५६	मृगतृष्णा	१	३	३५	"	२	४	१३१
मूषित	३	१	९६	मृगदंशक	२	१०	२१	मृदङ्ग	१	७	५
मूर्ख	३	१	४८	मृगधूर्तक	२	५	५	मृदु	३	१	७८
मूर्च्छा	२	८	१०९	मृगनाभि	२	६	१२९	"	३	३	९४
मूर्च्छाल	२	६	६१	मृगवधाजीव	२	१०	२१	मृदुत्वच्	२	४	४६
मूर्च्छित	२	६	६१	मृगबन्धनी	२	१०	२६	मृदुल	३	१	७८
"	३	३	८२	मृगमद	२	६	१२८	मृद्रीका	३	४	१०७
मूत	२	६	६१	मृगया	२	१०	२३	मृध	२	८	१०४
"	३	१	७६	मृगयु	२	१०	२१	मृषा	३	४	१५
मूति	२	६	७१	मृगव्य	२	१०	२३	मृष्ट	३	१	५६
"	३	३	६६	मृगशिरस्	१	३	२३	मेकलकन्यका	१	१०	३२
मूतिमत	३	१	७६	मृगशीर्ष	१	३	२३	मेखला	२	६	१०८
मूर्धन्	२	६	९५	मृगाङ्ग	१	३	१४	"	२	८	९०
मूर्धामिषिक्त	२	८	१	मृगादन	२	५	१	मेघ	१	३	६
"	३	३	६१	मृगित	३	१	१०५	"	३	५	११
मूर्वा	२	४	८३	मृगेन्द्र	२	५	१	मेघज्योतिस्	१	३	१०
मूल	२	४	१२	मृजा	२	६	१२१	मेघनादानुला-			
								तिन्	२	५	३०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मेघनामन्	२	४	१५९	मोचक	२	४	३१	यक्षिय	२	७	२७
मेघनिर्घोष	१	३	८	मोचा	२	४	४६	यज्वन्	२	७	८
मेघपुष्प	१	१०	५	"	२	४	११३	यत्	३	४	३
मेघमाला	१	३	८	मोदक	३	५	३३	यनः	३	४	३
मेघवाहन	१	१	४४	मोरट	२	९	११०	यति	२	७	४३
मेन्द्र	१	५	१४	मारटा	२	४	८३	यतिन्	२	७	४३
"	२	५	३१	मोषक	२	१०	२४	यथा	३	४	९
मेढ	२	६	७६	मोह	२	८	१०९	यथाजात	३	१	४८
मेढ्	२	९	७६	मोक्तिक	२	९	९२	यथातथम्	३	४	१५
मेदक	२	१०	४१	मोक्षोन	२	९	८	यथायथम्	३	४	१४
मेदस्	२	६	६४	मौन	२	७	३६	यथार्थम्	३	४	१४
मेदिनी	२	१	३	मौरजिक	२	१०	१३	यथाह्वर्ण	२	८	१३
मेदुर	३	१	३०	मौर्वी	२	८	८५	यथास्वम्	३	४	१४
मेघा	१	५	२	मौलि	३	३	१९३	यथेप्सित	२	९	५७
मेधि	३	९	१५	मौष्टा	३	५	५	यदि	३	४	१२
मेध्य	३	१	५५	मौक्षूर्त	२	८	१४	यदृच्छा	३	२	२
मेरु	१	१	४९	मौक्षूर्तिक	२	८	१४	यन्तु	२	८	५८
मेलक	३	२	२९	म्लिष्ट	१	६	२१	"	३	३	५९
मेघ	२	९	७६	म्लेच्छदेश	२	१	७	यम	१	१	५८
मेघकम्बल	२	९	१०७	म्लेच्छमुख	२	९	८७	"	२	७	४८
मेह	२	६	५६	य				"	३	२	१८
मेहन	२	६	७६	यकृत	२	६	६६	यमराज्	१	१	५८
मेघावरुणि	१	३	२०	यक्ष	१	१	११	यमुना	१	१०	३२
मेघ्री	३	५	३९	"	१	१	६९	यमुनाभ्रातृ	१	१	५८
मेघ्य	३	५	३९	यक्षकदम्ब	२	६	१३३	ययु	२	८	४५
मेथुन	२	७	५७	यक्षधूप	२	६	१२७	यव	२	९	१५
"	३	३	१२२	यक्षराज	१	१	६८	यवक्य	२	९	७
मेरेय	२	१०	४१	यक्षमन्	२	६	५१	यवक्षार	२	९	१०८
मोक्ष	१	५	७	यजमान	२	७	८	यवफल	२	४	१६१
"	२	४	३९	यजुस्	१	६	३	यवस	२	४	१६७
मोघ	३	१	८१	यज्ञ	२	७	१३	यवागू	२	९	५०
मोघा	२	४	५४	यज्ञाङ्ग	२	४	२२	यवाग्रज	२	९	१०८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वचानिका	२	४	१४५	याम	१	४	६	यूथनाथ	२	८	३५
वदास	२	४	९१	"	३	२	१८	यूथप	२	८	३५
वदीथस्	२	६	४३	यामिनी	१	४	४	यूथिका	२	४	७१
वव्य	२	९	७४	यामुन	२	९	१००	यूप	२	४	४१
वशःपटह	१	७	६	यायजूक	२	७	८	"	३	५	१९
वशस्	१	६	११	याव	२	६	१२५	"	३	५	३५
वष्टि	३	५	३८	यावक	२	९	१८	यूपात्र	२	७	१९
वष्टामधुक	२	४	१०९	यावत्	३	३	२४७	यूष	३	५	३५
वष्टु	२	७	८	यावन	२	६	१२८	योक्त्र	२	९	१३
वाग	२	७	१३	याष्टीक	२	८	७०	योग	३	३	२२
"	३	५	११	यास्त	२	४	९१	योगेष्ट	२	९	१०५
वाचक	३	१	४९	युक्त	२	८	२४	योग्य	२	४	११२
वाचनक	३	१	४९	युक्तरसा	२	४	१४०	योजन	३	५	३०
वाचना	२	७	३२	युग	२	५	३८	योजनबल्ली	२	४	९१
वाचितक	२	९	४	"	३	३	२४	योत्र	२	९	१३
वाच्या	२	७	३२	युगकीलक	२	९	१४	योद्ध	३	८	६१
"	३	२	६	युगन्वर	२	८	५७	योष	२	८	६१
वाजक	२	७	१७	"	३	५	३५	योनि	२	६	७६
वातना	१	९	३	युगपद्	३	४	२२	योषा	२	६	२
वातबाम	३	३	१४५	युगपत्रक	२	४	१२	योषित	२	६	२
यातु	१	१	६०	युगपार्थग	२	९	३३	यौतक	२	८	२८
यातुवान	१	१	६०	युगल	२	५	३८	यौतव	२	९	८५
यातु	२	६	३०	युग्म	२	५	३८	योवत	२	६	२२
यात्रा	२	८	९५	युग्य	२	८	५८	योवन	२	६	४०
"	३	३	१७६	"	२	९	६४	र			
यादःपति	१	१०	२	युद्ध	२	८	१०३	रहस्	१	१	६४
वादस्	१	१०	२०	युष्	२	८	१०६	रक्त	१	५	१४
वादसापति	१	१	६१	युवति	२	६	६	"	२	६	६४
वान	२	८	१८	युवन्	२	६	४२	"	२	६	१२४
"	२	८	५८	युवराज	१	७	१२	"	३	३	८०
वानमुक्ष	२	८	५५	युव	२	५	४१	रक्तक	२	४	७३
वाप्य	३	१	५४								
वाप्यवान	२	८	५३								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
रक्तचन्दन	२	६	१३२	रञ्जनी	२	४	९५	रन्ध्र	१	८	२
"	२	९	१११	रण	२	८	१०४	रमस	३	५	२१
रक्तपा	१	१०	२२	"	३	२	८	रमणी	२	६	४
रक्तफला	२	४	१३९	"	३	३	४९	रम्भा	२	४	११३
रक्तसन्ध्यक	१	१०	३६	रण्डा	२	४	८८	रय	१	१	६४
रक्तसरोरुह	१	१०	४१	रत	२	७	५७	रत्नक	२	६	११६
रक्ताङ्ग	२	४	१४६	रतिपति	१	१	२६	"	३	५	१७
रक्तीरपल	१	१०	४२	रत्न	२	९	९३	रव	१	६	२२
रक्षःसम	४	५	२७	"	३	३	१२६	रवण	३	१	३८
रक्षस्	१	१	११	रत्नसानु	१	१	४९	रवि	१	३	३१
"	१	१	६०	रत्नाकर	१	१०	२	रशना	२	६	१०८
रक्षित	३	१	१०६	रत्नि	२	६	८६	रश्मि	३	३	१३८
रक्षिवर्ग	२	८	६	रथ	२	४	३०	रस	१	५	७
रक्ष्ण	३	२	८	"	२	८	५१	"	१	५	९
रङ्ग	२	५	१०	रथकट्या	२	८	५५	"	१	७	१७
रङ्ग	२	९	१०६	रथकार	२	१०	४	"	२	९	९९
रङ्गाजीव	२	१०	७	"	२	१०	९	"	३	३	२२७
रचना	२	६	१३७	रथगुप्ति	२	८	५७	रसगर्भ	२	९	१०२
रजक	२	१०	१०	रथद्रु	२	४	२६	रसज्ञा	२	६	९१
रजत	२	९	९६	रथाङ्ग	२	५	२२	रसना	२	६	९१
"	३	३	७९	"	२	८	५५	रसवती	२	६	२७
रजनी	१	४	४	रथिक	२	८	७६	रसा	२	१	२
"	२	४	१५३	रथिन्	२	८	६०	"	२	४	८४
रजनीमुख	१	४	६	"	२	८	७६	"	२	४	१२३
रजस्	१	४	२९	रथिर	२	८	७६	रसाञ्जन	२	९	१०१
"	२	६	२१	रथ्य	२	८	४६	रसातल	१	८	१
"	२	८	९८	रथ्या	२	२	३	रसाल	२	४	३३
"	३	३	२३२	"	२	८	५५	"	२	४	१६३
रजस्वला	२	६	२०	रद	२	६	९१	रसाला	२	९	४४
रज्जु	२	१०	२७	रदन	२	६	९१	रसित	१	३	८
रजन	२	६	१३२	रदनच्छद	२	६	९०	रसोनक	२	४	१४८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
रहस	२	८	२२	राजीव	१	१०	१९	रीष्टि	२	८	८९
"	२	८	२३	"	१	१०	४१	रीढा	१	७	२३
रहस्य	२	८	२३	राज्याङ्ग	२	८	१८	रीण	३	१	९२
राका	१	४	८	रात्रि	१	४	४	रीति	२	९	९७
राक्षस	२	१	५९	रात्रिचर	१	१	६०	"	३	३	६८
राक्षसी	२	४	१२८	रात्रिञ्चर	१	१	६०	रीतिपुष्प	२	९	१०३
राक्षा	२	६	१२५	रादान्त	१	५	४	रुक्प्रतिक्रिया	२	६	५०
राङ्गव	२	६	१११	राध	१	४	१५	रुक्म	२	९	९५
राज्	२	८	१	राधा	१	३	२२	रुक्मकारक	२	१०	८
राजक	२	८	३	राम	१	१	२३	रुग्ण	३	१	९१
राजन्	२	८	२	"	२	५	११	रुच्	१	३	३४
"	३	३	१११	"	३	३	१४०	रुचक	२	४	५१
राजन्य	२	८	१	रामठ	२	९	४०	"	२	४	७८
राजन्यक	२	८	४	रामा	२	६	४	"	२	९	४३
राजन्वद्य	२	१	१३	राम्भ	२	७	४५	"	२	९	१०९
राजवला	२	४	१५३	राल	२	६	१२७	रुचि	१	३	३४
राजबीजिन्	२	७	२	राशि	२	५	४२	"	३	३	२९
राजराज	१	१	६८	"	३	३	२१५	रुचिर	३	१	५२
राजवंश	२	७	२	राष्ट्र	२	८	१७	रुच्य	३	१	५२
राजवद्य	२	१	१३	"	३	३	१८४	रुज्	२	६	५१
राजवृक्ष	२	४	२३	राष्ट्रिका	२	४	९४	रुजा	२	६	५१
राजसदन	२	२	१०	राष्ट्रिय	१	७	१४	रुदित	१	७	३५
राजसभा	३	५	९	रासभ	२	९	७७	रुद्ध	३	१	९०
राजसूय	३	५	३१	राखा	२	४	११४	रुद्र	१	१	१०
राजईस	२	५	२४	"	२	४	१४०	"	१	१	३४
राजादन	२	४	३५	राहु	१	३	२६	रुद्राणी	१	१	३७
"	२	४	४५	रिक्तक	३	१	५६	रुधिर	२	६	६४
राजाई	२	६	१२६	रिक्थ	२	९	९०	"	३	५	२२
राजि	२	४	४	रिङ्ग	१	७	३६	रुह	२	५	१०
राजिका	२	९	१९	रिपु	२	८	१०	रुषती	१	६	१८
राजिक	१	८	५	रिष्ट	३	३	३६	रुष्	१	७	२६

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
रुहा	२	४	१५८	रोधस्	१	१०	७	रुक्ष्मी	२	४	११२
रुक्ष	३	३	२२६	रोप	२	८	८७	"	२	८	८२
रूप	१	५	७	रोमन्	२	६	९९	रुक्ष्मीवत्	३	१	१४
रूपाजीवा	२	६	१९	रोमन्य	३	५	१९	रुक्ष्म	१	७	३३
रूप्य	२	९	९१	रोमहर्षण	१	७	३५	"	२	८	८६
"	२	९	९६	रोमाश्च	१	७	३५	लसुट	३	५	१८
"	३	३	१६१	रोष	१	७	२६	लस	१	३	२७
रूप्याध्यक्ष	२	८	७	रोहिणी	२	९	६७	लसक	२	१०	४४
रुषित	३	१	८९	रोहित	१	५	१५	लघु	१	१	६४
रेचित	२	८	४८	"	१	१०	१९	"	२	४	१३३
रेणु	२	८	९८	"	२	५	१०	"	३	३	२८
रेणुका	२	४	१२०	रोहितक	२	४	४९	लघुल्य	२	४	१६५
रेतस्	२	६	६२	रोहिताश्व	१	१	५५	लङ्का	३	५	७
रेफ	३	१	५४	रोहिन्	२	४	४९	लङ्गोपिका	२	४	१३३
"	३	३	१३२	रौद्र	१	७	१७	लज्जा	१	७	२३
रेवतीरमण	१	१	२३	"	१	७	२०	लज्जाशील	३	१	२८
रेवा	१	१०	३२	रौमक	२	९	४२	लज्जित	३	१	९१
रै	२	९	९०	रौरव	१	९	१	लट्वा	३	५	१०
"	३	३	१६६	रौहिण्य	१	१	२४	लता	२	४	९
रोक	१	८	२	"	१	३	२६	"	२	४	१०
रोग	२	६	५१	रौहिष	२	४	१६६	"	२	४	५५
रोगहारिन्	२	६	५७	"	२	५	१०	"	२	४	७२
रोचन	२	४	४७	ल				"	२	४	१३३
रोचनी	२	४	१०८	लकुच	२	४	६०	"	२	४	१५०
"	२	४	१४६	रुक्ष	२	८	८६	लताकै	२	४	१४८
रोचिष्णु	२	६	१०१	लक्षण	१	३	१७	लपन	२	६	८९
रोचिस्	१	३	३४	लक्ष्मण	३	१	१४	लपित	१	६	१
रोदन	२	६	९३	लक्ष्मणा	२	५	२५	"	३	१	१०७
रोदनी	२	४	९२	लक्ष्मन्	१	३	१७	लभ्य	३	१	१०४
रोदस्	३	३	२३०	"	३	३	१२४	लभ्यवर्ण	२	७	६
रोदसी	३	३	२३०	रुक्ष्मी	१	१	२७	लभ्य	२	८	२४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
लम्बन	२	६	१०४	लाम्बजक	२	४	१६५	लेखार्थ	१	१	४२
लम्बोदर	१	१	३८	लालसा	१	७	२८	लेखा	२	४	४
लय	१	७	९	"	३	३	२२९	लेपक	२	१०	६
ललना	२	६	३	लाला	२	६	६७	लेश	३	१	६२
ललन्तिका	२	६	१०४	लालाटिक	३	३	१७	लेण्डु	२	९	१२
ललाट	२	६	९२	लाव	२	५	३५	लेह	२	९	५६
ललाटिका	२	६	१०३	लासिका	१	७	८	लोक	२	१	६
ललाम	३	३	१४४	लास्य	१	७	१०	"	३	३	२
ललामक	२	६	१३५	लिङ्गच	२	४	६०	लोकजित	१	१	१३
ललित	१	७	३१	लिक्षा	३	५	१०	लोकायत	३	५	३२
लव	३	१	६२	लिङ्ग	३	३	२५	लोकालोक	२	३	२
"	३	२	२४	लिङ्गवृत्ति	२	७	५४	लोकेश	१	१	१६
लवङ्ग	२	६	१२५	लिपिकार	२	८	१५	लोचन	२	६	९३
लवण	१	५	९	लिपि	२	८	१६	लोचमस्तक	२	४	१११
"	३	५	२३	लिप्त	३	१	९०	लोघ्न	२	१०	२५
लवणोद	१	१०	२	लिप्तक	२	८	८८	लोघ्न	२	४	३३
लवन	३	२	२४	लिप्ता	१	७	२७	लोपामुद्रा	१	३	२०
लवित्र	२	९	१३	लिबि	२	८	१६	लोमन्	२	६	९९
लशुन	२	४	१४८	लीढ	३	१	११०	लोमशा	२	४	१३४
लस्तक	२	८	८५	लीला	१	७	३२	लोल	३	१	७४
लाक्षा	२	६	१२५	"	१	७	३२	"	३	३	२०६
"	३	५	१०	"	३	३	२००	लोलुप	३	१	२२
लाक्षाप्रसादन	२	४	४१	लुठित	२	८	५०	लोलुभ	३	१	२२
लाङ्गल	२	९	१३	लुब्ध	३	१	२२	लोष्ट	२	९	१२
लाङ्गलिकी	२	४	११८	लुब्धक	२	१०	२१	लोष्टभेदन	२	९	१२
लाङ्गली	२	४	१११	लुलाय	२	५	४	लोह	२	६	१२६
"	२	४	१६८	लुता	२	५	१३	"	२	९	९८
लाङ्गल	२	८	५०	लुन	३	१	१०३	"	२	९	९९
लाव	२	९	४७	लुम	२	८	५०	"	३	५	२३
लाम्बन	१	३	१७	लेख	१	१	८	लोहकारक	२	१०	७
लाम	२	९	८०	लेखक	२	८	१५	लोहपृष्ठ	२	५	१६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
लोहल	३	१	३७	वक्रक	२	५	५	वधू	२	४	१३३
लोहाभिसार	२	८	९४	"	३	१	४७	"	२	६	२
लोहित	१	५	१५	वक्षित	३	१	४१	"	२	६	८
"	२	६	६४	वक्षुल	२	४	२७	"	३	३	१०२
लोहितक	२	९	९२	"	२	४	३०	वध्य	३	१	४५
लोहितचन्दन	२	६	१२४	"	२	४	६४	वध्री	२	१०	३१
लोहिताङ्ग	१	३	२५	वट	२	४	३२	वन	१	१०	३
व				वटक	३	५	१७	"	२	४	१
व	३	४	९	वटी	२	१०	२७	"	३	३	१२६
वंश	२	४	१६०	वडवा	२	८	४६	वनतिक्तिका	३	४	८५
"	२	७	१	वडू	३	१	६१	वनप्रिय	२	५	१९
"	३	३	२१५	वणिज्	२	९	७८	वनमक्षिका	२	५	२७
वंशिक	२	३	१२६	वणिज्या	२	९	७९	वनमालिन्	१	१	२१
वंशरोचना	२	९	१०९	वण्टक	२	९	८९	वनसुद्र	२	९	१७
वक्तव्य	३	३	१६०	वस्	२	६	७८	वनशृङ्गाट	२	४	९९
वक्र	४	१	७१	"	२	९	६२	वनस्पति	२	४	६
वक्तु	३	१	३५	"	३	३	२२७	वनायुज	२	८	४५
वक्र	२	६	२९	वत्सक	२	४	६६	वनिता	२	६	२
वक्षस्	२	६	७८	वत्सतर	२	९	६२	"	३	३	७४
वक्ष्ण	२	६	७३	वत्सनाभ	१	८	११	वनीयक	३	१	४९
वक्ष्	२	९	१०६	वत्सर	१	४	१३	वनीकस्	२	५	३
वनन	१	६	१	"	१	४	२०	वन्दा	२	४	८२
वचनेस्थित	३	१	२४	वत्सल	३	१	१४	वन्दारु	३	१	२८
वचस्	१	६	१	वत्सावनी	२	४	८२	वन्या	२	४	४
वचा	२	४	१०२	वद	३	१	३५	वपा	१	८	२
वज्र	१	१	४७	वदन	२	६	८९	"	२	६	६४
"	२	४	१०५	वदान्य	३	१	७	वपुस्	२	६	७०
"	३	३	१८५	वदावद	३	१	३५	वप्र	२	३	३
वज्रनिर्घोष	१	३	१०	वध	२	८	११५	"	२	९	११
वज्रपुष्प	२	४	७६					"	२	९	१०५
वज्रिन्	१	१	४२					वमथु	२	६	५५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वमथु	२	८	३७	वरिवस्या	२	७	३५	वर्तिक	२	५	३५
वमि	२	६	५५	वरिवस्मियत	३	१	१०२	वर्तिष्णु	३	१	२९
वयस्	३	३	२३१	वरिष्ठ	२	९	९७	वर्तुल	३	१	६९
वयस्थ	२	६	४२	वरिष्ठ	३	१	१११	वर्त्मन्	२	१	१५
वयस्था	२	४	५८	वरी	२	४	१००	"	३	३	१२१
"	२	४	१३७	वरीयस्	३	३	२३६	वर्धक	२	४	९०
"	२	४	१४४	वरुण	१	१	६१	वर्धकि	२	१०	९
वयस्य	२	८	१२	"	१	३	२	वर्धन	३	१	२८
वयस्या	२	६	१२	"	२	४	२५	"	३	२	७
वर	२	६	१२४	वरुणात्मजा	२	१०	३९	वर्धमान	२	४	५१
"	३	२	८	वरुय	२	८	५७	वर्धमानक	२	९	३२
"	३	३	१७३	वरुथिनी	२	८	७८	वर्धिष्णु	३	१	२८
वरटा	२	५	२५	वरेण्य	३	१	५७	वर्वरा	२	४	१३९
"	२	५	२७	वर्कर	२	१०	२३	वर्मन्	२	८	६४
वरण	२	२	३	वर्ग	२	५	४१	वर्मित	२	८	६५
"	२	४	२५	वर्चस्	३	३	२३१	वय	३	१	५७
वरण्ड	३	५	१८	वर्चस्क	२	६	६८	वया	२	६	७
वरत्रा	२	८	४२	वर्ण	२	७	१	ववणा	२	५	२६
"	२	१०	३१	"	२	८	४२	वर्वर	२	४	९०
वरद	३	१	७	"	३	३	४८	वर्ष	१	३	११
वरवर्णिनी	२	६	४	वर्णक	२	६	१३३	"	३	३	२२४
"	२	९	४१	"	३	५	३८	वर्षवर	२	८	९
वराक्ष	३	३	२६	वर्णित	३	१	११०	वर्षा	१	४	१९
वराक्षक	२	४	१३४	वर्णिन्	२	७	४२	वर्षाभू	१	१०	२४
वराटक	१	१०	४३	वर्तक	२	५	३५	वर्षाभ्वी	१	१०	२४
"	२	१०	२७	"	३	३	११	वर्षीयस्	२	६	४३
"	३	५	३८	वर्तन	२	९	१	वर्षोपल	१	३	१२
वरारोहा	२	६	४	"	३	१	२९	वर्ष्मन्	२	६	७०
वराशि	२	६	११६	वर्तनी	२	१	१५	"	३	३	१२३
वराह	२	५	२	वर्ति	२	६	१३३	बलक्ष	१	५	१३
वरिवसित	३	१	१०२								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वलज	३	३	३१	वक्थयिणि	२	९	७१	वाक्य	१	६	२
वलभी	२	२	१५	वसति	३	३	६७	वागीश	३	१	३४
वलय	२	६	१०७	वसन	२	६	११५	वागुरा	२	१०	२६
वलयित	३	१	९०	वसन्त	१	४	१८	वागुरिक	२	१०	१४
वलिन	२	६	४५	वसा	२	६	६४	वाग्मिन्	३	१	३५
वलिभ	२	६	४५	वसु	१	१	१०	वाङ्मुख	१	६	९
वलिर	२	६	४९	"	२	४	८१	वाच्	१	६	१
वलीक	२	२	१४	"	२	९	९०	वाचंयम	२	५	४२
वलीमुख	२	५	३	"	३	३	२२८	वाचस्पति	१	३	२४
वल्क	२	४	१२	वसुक	२	४	८०	वाचाट	३	१	३६
वल्कल	२	४	१२	"	२	९	४२	वात्राल	३	१	३६
वल्गित	२	८	४८	"	२	९	४२	वाचिक	१	६	१७
वल्मीक	२	१	१४	वसुदेव	१	१	२२	वाचोयुक्तिपट्ट	३	१	३५
वल्मी	१	७	३	वसुधा	२	१	३	वाज	२	८	८७
वल्मभ	३	१	५३	वसुन्धरा	२	१	३	वाजपेय	३	५	३०
"	३	३	१३७	वसुमती	२	१	३	वाजिदन्तक	२	४	१०३
वल्लरी	२	४	१३	वस्ति	२	६	७३	वाजिन्	२	५	३३
वल्लो	२	४	९	वस्तु	३	५	१२	"	२	८	४४
"	३	५	३	वस्त्य	२	२	५	"	३	३	१०७
वल्लूर	२	६	६३	वस्त्र	२	६	११५	वाजिशाला	२	२	७
वश	३	२	८	वस्त्रयोनि	२	६	११०	वाञ्छा	१	७	१७
वशक्रिया	३	२	४	वस्त्र	२	९	७९	वाटी	३	५	४२
वशा	२	८	३६	वस्त्रसा	२	६	६६	वाट्यालका	२	४	१०७
"	२	९	६९	वह	२	९	६३	वाढव	२	७	४
"	३	३	२१७	वह्नि	१	१	५३	"	२	८	४६
वशिक	३	१	५६	"	१	३	२	वाढव्य	३	२	४१
वशिर	२	४	९७	वह्निशिख	२	९	१०६	वाणि	२	१०	२८
"	२	९	४१	वह्निसंशक	२	४	८०	वाणिज	२	९	७८
वश्य	३	१	२५	वा	३	३	२५०	वाणिज्य	२	९	२
वषट्	३	४	८	"	३	४	९	"	२	९	७९
वषट्कृत	२	७	२७	"	३	४	१५	वाणिनी	३	३	११२
				वाक्पति	१	१	३५				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वाणी	१	६	१	वामा	२	६	२	वार्तावह	२	१०	१५
वात	१	१	६३	वामी	२	८	४६	वार्धक	२	६	४०
वातक	२	४	१४९	वायदण्ड	२	१०	२८	वार्धुपि	२	९	५
वातकिन्	२	६	५९	वायस	२	५	२०	वार्धुपिक	२	९	५
वातपोथ	२	४	२९	वायसाराति	२	५	१५	वार्मण	३	२	४३
वातप्रमी	२	५	७	वायसी	२	४	१५१	वार्षिक	२	४	१५०
वातमृग	२	५	७	वायसोली	२	४	१४४	वाल	२	६	९५
वातरोगिन्	२	६	५९	वायु	१	१	६१	वालधि	२	८	५०
वातायन	२	२	९	वायुसख	१	१	५५	वालपाश्या	२	६	१०३
वातायु	२	५	८	वार	१	१०	३	वालहस्त	२	८	५०
वातूल	३	३	१९६	वार	२	५	३९	वालुक	२	४	१२१
वात्सक	२	९	६०	"	३	३	१६२	वालक	२	६	१११
वादर	२	६	१११	वारण	२	८	३४	वावदूक	३	१	३५
वादित्र	१	७	५	वारणकुसा	२	४	११३	वावृत्त	३	१	९२
वाध	१	७	४	वारमुख्या	२	६	१९	वाशिका	२	४	१०३
वान	२	४	१५	वारबाण	२	८	६३	वाशित	१	६	२५
वानप्रस्थ	२	४	२८	वारस्त्री	२	६	१९	वास	२	२	६
"	२	७	३	वाराही	२	२	१५१	वास्तक	२	४	१०३
वानर	२	५	३	वारि	१	१०	३	वासगृह	२	२	८
वानस्पत्य	२	४	६	वारिद	१	३	७	वासन्ती	२	४	७२
वानीर	२	४	३०	वारिपणी	१	१०	३८	वासयोग	२	६	१३४
वानेय	२	४	१३१	वारिप्रवाह	२	३	५	वासर	१	४	२
वापी	१	१०	२८	वारिवाह	१	३	६	वासव	१	१	४२
वाप्य	२	४	१२६	वारी	२	८	४३	वासस्	२	६	११५
वाम	३	३	१४५	वारुणो	३	३	५२	वासित	२	६	१३४
वामदेव	१	१	३२	वार्त	२	६	५७	"	२	९	४६
वामन	१	३	३	"	३	३	७५	वासिता	३	३	७५
"	२	६	४६	वार्ता	१	६	७	वासुकि	१	८	४
"	३	१	७०	"	२	९	१	वासुदेव	१	१	२०
वामलूर	२	१	१४	"	३	३	७५	वासू	१	७	११
वामलोचना	२	६	३	वार्ताकी	२	४	११४	वास्तु	२	२	५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वास्तुक	२	४	१५८	विक्रयिक	२	९	७९	विट	३	५	१७
वास्तोष्पति	१	१	४३	विक्रान्त	२	८	७७	विटक्कु	२	२	१५
वाक्	२	८	५४	विक्रिया	३	२	१५	विटप	२	४	१४
वाह	२	८	४४	विक्रेतृ	२	९	७९	"	३	३	१३१
"	२	९	८८	विक्रेय	२	९	८२	विटपिन्	२	४	५
वाहद्विषत्	२	५	४	विक्कुव	३	१	४४	विट्खदिर	२	४	५०
वाहस	१	८	५	विक्षाव	३	२	३७	विट्चर	२	१०	१३
वाहित्थ	२	८	३९	विगत	३	१	१००	विडक्	२	४	१०६
वाहिनी	२	८	७८	विगतातंवा	२	६	२१	विडाल	२	५	६
"	२	८	८१	विग्र	२	६	४६	विडौजस्	१	१	४१
"	३	३	११२	विग्रह	२	६	७०	वितण्डा	३	५	९
वाहिनीपति	२	८	६२	"	२	८	१८	वितथ	१	६	२१
वि	२	५	३३	"	२	८	१०४	वितरण	२	७	२९
विककृत	२	४	३७	"	३	२	२२	वितदि	२	२	१६
विकच	२	४	७	दिवस	२	७	३८	वितस्ति	२	६	८४
विकर्तन	१	३	२९	विघ्न	३	२	१९	वितान	२	६	१०१
विकलाङ्ग	२	६	४६	विघ्नराज	१	१	३८	"	३	३	११३
विकास	२	४	९०	विचक्षण	२	७	६	वितुन्न	२	४	११९
विकासित	२	४	८	विचयन	३	२	३०	वितुन्नक	२	४	१२६
विकस्वर	३	१	३०	विचचिका	२	६	५३	"	२	९	३७
विकार	३	२	१५	विचारणा	१	५	२	"	२	९	१०१
विकासिन्	३	१	३०	विचारित	३	१	९९	वित	२	९	९०
विकिर	२	५	३३	विचिकित्सा	१	५	३	"	३	१	९
विकिरण	२	४	८०	विच्छन्दक	२	२	११	"	३	१	९९
विकुर्वाण	३	१	७	विच्छाय	३	५	२६	विदर	३	२	५
विकृत	१	७	१९	विजन	२	८	२२	विदल	३	५	३०
"	२	६	५८	विजय	२	८	११०	विदारक	१	१०	१०
विकृति	३	२	१५	विजिल	२	९	४६	विदारी	२	४	११०
विक्रम	२	८	१०२	विज्ञ	३	१	४	विदारिगन्था	२	४	११५
"	३	३	१४१	विज्ञात	३	१	९	विदित	३	१	१०८
विक्रय	२	९	८३	विज्ञान	१	५	६	"	३	१	१०९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
विदिश	१	३	५	विधुर	३	२	२०	विपुल	३	१	६१
विदु	२	८	१७	विधुवन	३	२	४	विप्र	२	७	४
विदुर	२	४	१०	विधूनन	३	२	४	विप्रकार	३	२	१५
"	३	१	३०	विधेय	३	१	२४	विप्रकृत	३	१	४१
विदुल	२	४	३०	विनयमादिन्	३	१	२४	विप्रकृष्टक	३	१	६८
विदु	३	१	९९	विना	३	४	३	विप्रतीसार	१	७	२५
विद्वकर्णी	२	४	८४	विनायक	१	१	१४	विप्रयोग	३	२	२८
विद्याधर	१	१	११	"	१	१	३८	विप्रलम्भ	३	१	४१
विद्युत्	१	३	९	"	३	३	६	विप्रलम्भ	१	७	३६
"	३	५	३	विनाश	३	२	२२	"	३	२	२८
विद्विधि	२	६	५६	विनीत	२	८	४४	विप्रलाप	१	६	१६
विद्व	२	८	१११	"	३	१	२५	विप्रशिक्षा	२	६	१९
विद्वत्	३	१	१००	विन्दु	३	१	३०	विप्रुष्	१	१०	६
विद्रुम	२	९	९३	विन्ध्य	२	३	३	विप्लव	३	२	१४
विद्रुमलता	२	४	१२९	विन्न	३	१	९९	विपुष	१	१	७
विद्रुस्	२	७	५	"	३	१	१०४	विभव	२	९	९०
"	३	३	२३५	विपक्ष	२	८	११	विभाकर	१	३	२८
विद्वेष	१	७	२५	विपञ्ची	१	७	३	विभावरी	१	४	४
विषवा	२	६	११	विपण	२	९	८२	विभावसु	१	१	५६
विषा	२	१०	३८	विपणि	२	२	२	"	१	३	३०
"	३	३	१०१	"	३	३	५२	"	३	३	२२६
विषातु	१	१	१७	विपत्ति	२	८	८२	विभूति	१	१	३६
विषि	१	१	१७	विपथ	२	१	१६	विभूषण	२	६	१०१
"	१	४	२८	विपद्	२	८	८२	विभ्रम	१	७	३१
"	२	७	३९	विपर्यय	३	२	३३	"	३	३	१४२
"	३	३	१००	विपर्यास	३	२	३३	विभ्राज्	२	६	१०१
विधु	१	१	२२	विपश्चित्	२	७	५	विमनस्	३	१	८
"	१	३	१४	विपादिका	२	६	५२	विमर्दन	३	२	१३
"	३	३	९९	विपाश्	१	१०	३३	विमला	२	४	१४३
विधुत	३	१	१०७	विपाशा	१	१०	३३	विमारुज	२	६	२५
विधुन्तुद	१	३	२६	विपिन	२	४	१	विमान	१	१	४८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वियत्	१	२	२	विवस्वत्	३	३	५७	विश्राव	३	२	२८
वियद्वक्त्रा	१	१	४९	विवाध	१	६	९	विश्रुत	३	१	९
वियम	३	२	१८	विवाह	२	७	५६	विश्व	१	१	१०
वियात	३	१	२५	विविक्त	२	८	२२	"	२	९	३८
वियाम	३	२	१८	"	३	३	८२	"	३	१	६५
विरजस्तमस्	२	७	४४	विविध	३	१	९३	विश्वकटु	२	१०	२२
विरति	३	२	३७	विवेक	२	७	२८	विश्वकेतु	१	१	२७
विरल	३	१	६६	विबोधा	१	७	३१	विश्वकर्मन्	३	३	१०९
विराज्	२	८	१	विश्व	२	६	६८	विश्वभेषज	२	९	३८
विराव	१	६	२३	"	२	९	१	विश्वम्भर	१	१	२२
विरिञ्च	१	१	१७	"	३	३	२१४	विश्वम्भरा	२	१	२
विरूपाक्ष	१	१	३२	विशङ्क	३	१	६०	विश्वसृज्	१	१	१७
विरोचन	१	३	३०	विशद	१	५	१२	विश्वस्ता	२	६	११
"	३	३	१०८	विशर	२	८	११५	विश्वा	२	४	९९
विरोध	१	७	२५	विशस्या	२	४	८३	विश्वास	२	८	२३
विरोधन	३	२	२१	"	२	४	१३६	विष	१	८	९
विरोधोक्ति	१	६	१६	"	३	३	१५६	"	३	३	२२३
विलक्ष	३	१	२६	विशमन	२	८	११४	विषधर	१	८	७
विलक्षण	३	२	२	विशाख	१	१	४०	विषमच्छद	२	४	२३
विलम्ब	३	२	२८	विशाखा	१	३	२२	विषय	१	५	७
विलाप	१	६	१६	विशाप	३	२	३२	"	२	२	८
विलास	१	७	३१	विशारण	२	८	११२	"	३	२	११
विलीन	३	१	१००	विशारद	३	३	९५	"	३	३	१५३
विलेपन	२	६	१३३	विशाल	३	१	६०	विषयिन्	१	५	८
"	३	२	२७	विशालता	२	६	११४	विषवैद्य	१	८	११
विलेपी	२	९	५०	विशालत्वच्	२	४	२३	विषा	२	४	९९
विवध	३	३	९६	विशाला	२	४	१५६	विषाक्त	२	८	८८
विवर	१	८	१	विशिख	२	८	८६	विषाण	३	३	५६
विवर्ण	२	१०	१५	विशिखा	२	२	३	विषाणी	२	४	११९
विवश	३	१	४४	विशेषक	२	६	१२३	विषुव	१	४	१४
विवस्वत्	१	३	२९	विश्राणन	२	७	२९	विषुवत्	१	४	१४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
विष्कार	२	५	३३	विस्मय	१	७	१९	वीर	१	७	१७
विष्टप	३	१	६	विस्मयान्वित	३	१	२६	"	१	७	१८
विष्टर	३	३	१७०	विस्मृत	३	१	८६	"	२	८	७७
विष्टरश्रवस्	१	१	१७	विस्त्र	१	५	१२	वीरण	२	४	१२४
विष्टि	१	९	३	विस्त्रम्भ	२	८	२३	वीरतर	२	४	१३४
विष्टा	२	६	६८	"	३	३	१३५	वीरतरु	२	४	४५
विष्णु	१	१	१८	विस्त्रसा	२	६	४१	वीरपत्नी	२	६	१३
विष्णुकान्ता	२	४	१०४	विह्वग	२	५	३२	वीरपान	२	८	१०३
विष्णुपद	१	२	२	विह्वङ्ग	२	५	३२	वीरभार्या	२	६	१६
विष्णुपदी	१	१०	३१	विह्वङ्गम	२	५	३२	वीरमातु	२	६	१६
विष्णुरथ	१	१	२९	विह्वङ्गिका	२	१०	२९	वीरवृक्ष	२	४	४२
विष्य	३	१	४५	विह्वसित	१	७	३५	वीरार्शंसन	२	८	१००
विष्वच्	३	४	१३	विह्वस्त	३	१	४३	वीरसू	२	६	१६
विष्वक्सेन	१	१	१९	विह्वापित	२	७	२९	वीरहन्	२	७	५२
विष्वक्सेनप्रिया	४	१५	१	विह्वायस्	१	३	२	वीरधु	२	४	९
विष्वक्सेना	२	४	५६	"	२	५	३२	वीर्य	१	७	२९
विष्वद्रथच्	३	१	३४	विह्वार	३	२	१६	"	२	६	६२
विंसर	२	५	३९	विह्वल	३	१	४४	"	३	३	१५५
विसर्जन	२	७	२९	वीकाश	३	३	२१५	वीवध	३	३	२६
विसर्पण	३	२	२३	वीचि	१	१०	५	वृक	२	४	८१
विसंवाद	१	७	३६	वीणा	१	७	३	वृक	२	५	७
विसार	१	१०	१७	"	३	५	३	वृकधूप	२	६	१२८
विसारिन्	३	१	३१	वीणावाद	२	१०	१३	"	२	६	१२९
विसृत	३	१	८६	वीन	२	८	४३	वृक्कण	३	१	१०३
विसृत्वर	३	१	३१	वृत्तंस	२	१०	२६	वृक्ष	२	४	५
विसृमर	३	१	३१	वीति	२	८	४३	वृक्षभेदिन्	२	१०	३४
विस्तर	३	२	२२	वीतिहोत्र	१	१	५३	वृक्षरुहा	२	४	८२
विस्तार	३	२	२२	वीथी	२	४	४	वृक्षवाटिका	२	४	२
विस्तृत	३	१	८६	"	३	३	८७	वृक्षादनी	२	४	८२
विस्फार	२	८	१०८	वीध	३	१	५५	"	२	१०	३४
विस्फोट	२	६	५३	वीनाह	१	१०	२७	वृक्षाम्ल	२	९	३५
								वृजिन	१	४	२३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शब्दाः				वृन्द	२	५	४०	वैगुधम	२	१०	१३
वृजिन	३	१	७१	वृन्दारक	१	१	९	वैतन	२	१०	३८
"	३	३	१०९	"	३	३	१६	वैतस	२	४	२९
वृत्	३	१	९२	वृन्दिष्ठ	३	१	११२	वैतस्वव	२	७	९
वृत्ति	३	२	८	वृन्धिक	२	५	१४	वैताल	३	५	२१
वृत्त	३	१	६९	"	२	५	१४	वैश्वती	१	१०	३४
"	३	१	९२	"	३	३	७	वैद	१	६	३
"	३	३	७८	"	३	३	७	वैदना	३	२	६
वृत्तान्त	१	६	७	वृष	१	४	२४	वैदि	२	७	१८
"	३	३	६३	"	२	४	१०३	वैदिका	२	२	१६
वृत्ति	२	९	१	"	२	४	११६	वैध	३	२	८
"	३	३	७३	"	२	९	५९	वैधनिका	२	१०	३३
वृत्र	३	३	१६४	"	३	३	२२१	वैधमुखक	२	४	१३५
वृत्रहन्	१	१	४२	वृषण	२	६	७६	वैधस्	१	१	१७
वृथा	३	३	२४८	वृषदंशक	२	५	६	"	३	३	२२९
"	३	४	४	वृषध्वज	१	३	३४	वैधित	३	१	९९
वृद्ध	२	४	१२२	वृषन्	१	१	४२	वैपथु	१	७	३८
"	२	६	४२	वृषभ	२	९	५९	वैमन्	२	१०	२८
"	३	३	१००	वृषल	२	१०	१	वैला	३	३	१९९
वृद्धरव	२	६	४०	वृषस्यन्ती	२	६	९	वैल्ल	२	४	१०६
वृद्धदारक	२	४	१३७	वृषा	२	४	८७	वैल्लज	२	९	३५
वृद्धनाभि	२	६	६१	वृषाकपायी	३	३	१५६	वैल्लित	३	१	७१
वृद्धश्वस्	१	१	४१	वृषाकपि	३	३	१३०	"	३	१	८७
वृद्धसङ्ग	२	६	४०	वृषी	२	७	४६	वैश	२	२	२
वृद्धा	२	६	१२	वृष्टि	१	३	११	वैशन्त	१	१०	२८
वृद्धि	२	४	११२	वृष्टिण	२	९	७६	वैशमन्	२	२	४
"	२	८	१९	वैग	३	३	२०	वैशमभू	२	२	१९
"	३	२	९	वैगिन्	२	८	७३	वैश्या	२	६	१९
वृद्धिजीविका	२	९	४	वैणि	२	६	९८	वैष	२	६	९९
वृद्धोक्ष	२	९	६०	वैणी	२	४	६९	वैष्टित	३	१	९०
वृद्धयाजीव	२	९	५	वैणु	२	४	१६१	वैसवार	२	९	३५
वृन्त	२	४	१५	वैणुक	२	८	४१				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शपथ	१	६	९	शम्बूक	१	१०	२३	शर्करा	२	१	११
शपन	१	६	९	शम्भली	२	६	१९	"	२	९	४३
शफ	२	८	४२	शम्भु	१	१	३०	"	३	३	१७६
शफरी	१	१०	१८	"	३	३	१३५	शर्करावत्	२	१	११
शवर	२	१०	२०	शम्वा	२	९	१४	शर्करिल	२	१	११
शवरालय	२	२	२०	शय	२	६	८१	शर्मन्	१	४	२४
शवल	१	५	१७	शयन	१	७	३६	शर्व	१	१	३०
शवली	२	९	६७	"	२	६	१३७	शर्वरी	१	४	३
शब्द	१	५	७	शयनीय	२	६	१३७	शर्वाणी	१	१	३७
"	१	६	२	शयालु	३	१	३३	शल	२	५	७
"	१	६	२२	शयित	३	१	३३	शलभ	२	५	२८
शब्दग्रह	२	६	९४	शयु	१	८	५	शलल	२	५	७
शब्दन	३	१	३८	शय्या	२	६	१३७	शलली	२	५	७
शम	३	२	३	शर	२	४	१६२	शलाह	२	४	२५
शमथ	३	२	३	"	२	८	८७	शस्क	३	३	१३
शमन	१	१	५८	"	३	५	११	शस्य	२	४	५३
"	२	७	२६	शरजन्मन्	१	१	३९	"	२	५	७
शमनस्वस्	१	१०	३२	शरण	३	३	५३	"	२	८	९३
शमल	२	६	६७	शरद्	१	४	१९	शव	२	८	११८
शमित	३	१	९७	"	१	४	२०	शश	२	५	११
शमी	२	४	५२	"	३	३	९३	शशधर	१	३	१५
"	२	९	२३	शरभ	२	५	११	शशलोमन्	२	९	१०७
शमीर	२	४	५२	शरभ्य	२	८	८६	शशादन	२	५	१४
शम्पा	१	३	९	शराभ्यास	२	८	८६	शशोर्ण	२	९	१०७
शम्पाक	२	४	२३	शरारि	२	५	२५	शश्वत्	३	३	२४४
शम्ब	१	१	४७	शराह	३	१	२८	"	३	४	१
शम्बर	१	१०	४	शराव	२	९	३२	"	३	४	११
"	२	५	१०	शरावती	१	१०	३४	शष्प	२	४	१६७
शम्बरारि	१	१	२६	शरासन	२	८	८३	शस्त	१	४	२६
शम्बल	३	५	३४	शरीर	२	६	७०	"	३	१	१०९
शम्भाकृत	२	९	९	शरीरिन्	१	४	३०	शस्त्र	२	८	८२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वेदत्	२	९	६९	वैरशुद्धि	२	८	११०	व्यस्त	३	१	७२
वै	३	४	५	वैरिन्	२	८	१०	व्याकुल	३	१	४३
"	३	४	१५	वैवधिक	२	१०	१५	व्याकोश	२	४	७
वैकक्षिक	२	६	१३६	वैवस्वत	१	१	५९	व्याघ्र	२	५	१
वैकुण्ठ	१	१	१७	वैशाख	१	४	१६	"	३	१	५९
वैजनन	२	६	३९	"	२	९	७४	व्याघ्रनख	२	४	१२९
वैजयन्त	१	१	४६	वैश्य	२	९	१	व्याघ्रपाद्	२	४	३७
वैजयन्तिक	२	८	७१	वैश्रवण	१	१	६९	व्याघ्रपुच्छ	२	४	५०
वैजयन्तिका	२	४	६५	वैश्वानर	१	१	५३	व्याघ्राट	२	५	१५
वैजयन्ती	२	८	९९	वैसारिण	१	१०	१७	व्याघ्रो	२	४	९३
वैशानिक	३	१	४	वौषट्	३	४	८	व्याज	१	७	३०
वैणव	२	४	१८	व्यक्त	३	३	६२	"	१	७	३३
वैणविक	२	१०	१३	व्यक्ति	१	४	३१	व्याड	३	३	४२
वैणिक	२	१०	१३	व्यग्र	३	३	१९०	व्याडायुध	२	४	१२९
वैतंसिक	२	१०	१४	व्यजन	२	६	१४०	व्याध	२	१०	२१
वैतनिक	२	१०	१५	व्यञ्जक	१	७	१६	व्याधि	२	४	१२६
वैतरणी	१	९	२	व्यञ्जन	३	३	११६	"	२	६	५१
वैतालिक	२	८	९७	"	३	५	२३	व्याधिघात	२	४	२४
वैदेहक	२	९	७८	व्यदम्बक	३	४	५१	व्याधित	२	६	५८
"	२	१०	३	व्यत्यय	३	२	२३	व्यान	१	१	६३
वैदेही	२	४	९६	व्यत्यास	३	२	२३	व्यापाद	१	५	४
वैद्य	२	६	५७	व्यथा	१	९	३	व्याम	२	६	८७
वैद्यमातृ	२	४	१०३	व्यध	३	२	८	व्याल	१	८	७
वैधात्र	१	१	५१	व्यध्व	२	१	१६	"	३	३	१९७
वैधेय	३	१	४८	व्यय	३	२	१७	व्यालम्राहिन्	१	८	११
वैनतेय	१	१	२९	व्यलोक	३	३	१२	व्यास	३	२	२२
वैनीतक	२	८	५८	व्यवधा	१	३	११	व्याहार	१	६	९
वैमात्रेय	२	६	२५	व्यवहार	१	६	८	व्युत्थान	३	३	११८
वैयाघ्र	२	८	५३	व्यवाय	२	७	५७	व्युष्टि	३	३	३८
वैर	१	७	२५	व्यसन	३	३	१२०	व्यूढ	३	३	४५
वैरनिर्यातन	१	८	११०	व्यसनार्त	३	१	४३	व्यूढकङ्कट	२	८	६५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
व्युत्ति	२	१०	२८	शकुनि	२	५	३२	शङ्खिनी	२	४	१२६
व्यूह	२	५	३९	शकुन्त	२	५	३२	शची	१	१	४५
"	२	८	७९	"	३	३	५८	शचीपती	१	१	४३
"	३	२	२३९	शकुन्ति	२	५	३२	शटी	२	४	१५४
व्यूहपार्ष्णि	२	८	७९	शकुल	१	१०	१९	शठ	३	१	४६
व्याकार	२	१०	७	शकुलाक्षक	२	४	१५९	शणपर्णी	२	४	१४९
व्योमकेश	१	१	३४	शकुलादनी	२	४	८६	शणपुष्पिका	२	४	१०७
व्योमन्	१	२	१	"	२	४	१११	शण्ड	२	६	३८
व्योमयान	१	१	४८	शकुलार्भक	१	१०	१७	"	२	८	९
व्योष	२	९	१११	शकुल	२	६	६७	शन	२	९	८४
व्रज	२	५	३९	शकुत्करि	२	९	६२	शतकोटि	१	१	४७
"	३	३	३०	शक्ति	०	८	१९	शतपत्र	१	१०	४०
व्रज्या	२	७	३५	"	२	८	१०२	शतपत्रक	२	५	१६
"	२	८	९५	"	३	३	६६	शतपदी	२	५	१३
व्रण	२	६	५४	शक्तिधर	१	१	४०	शतपर्वन्	२	४	१६१
व्रत	२	७	३७	शक्तिद्वैतिक	२	८	६९	शतपर्चिका	२	४	१०२
व्रतति	२	४	९	शक	१	१	४२	"	२	४	१५८
"	३	३	६७	"	२	४	६६	शतपुष्पा	२	४	१५२
व्रतिन्	२	७	७	शकभनुस्	१	३	१०	शतप्रास	२	४	७६
व्रश्चन	२	१०	३२	शकपादप	२	४	५३	शतमन्यु	१	१	४२
व्रात	२	५	३९	शकपुष्पिका	२	४	१३६	शतमान	३	५	३४
व्रात्य	२	७	५३	शकु	३	१	३५	शतमूली	२	४	१००
व्रोढा	१	७	२३	शङ्कर	१	१	३०	शतवीर्या	२	४	१५९
व्रीहि	२	९	१५	शङ्कु	१	१०	२०	शतवेचिन्	२	४	१४१
"	"	"	२१	"	२	४	८	शतवृद्धा	१	३	९
व्रीह्य	२	९	६	"	२	८	९३	शताङ्ग	२	८	५१
श	१	१०	४	शङ्ख	१	१	७१	शतावरी	२	४	१०१
शंवर	२	४	८७	"	१	१०	२३	शत्रु	२	८	९
शंवरी	२	८	५२	"	२	४	१३०	"	८	२	११
शकट	१	३	१६	"	३	३	१८	शनैश्चर	१	३	२६
शकल	१	१०	१७	शङ्खनख	१	१०	२३	शनैस्	३	४	१७
शकलिन	२	५	३२								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शपथ	१	६	९	शम्बूक	१	१०	२३	शर्करा	२	१	११
शपन	१	६	९	शम्भली	२	६	१९	"	२	९	४३
शफ	२	८	४९	शम्भु	१	१	३०	"	३	३	१७६
शफरी	१	१०	१८	"	३	३	१३५	शर्करावत्	२	१	११
शवर	२	१०	२०	शम्भा	२	९	१४	शर्करिल	२	१	११
शवरालय	२	२	२०	शय	२	६	८१	शर्मन्	१	४	२४
शबल	१	५	१७	शयन	१	७	३६	शर्व	१	१	३०
शबली	२	९	६७	"	२	६	१३७	शर्वरी	१	४	३
शब्द	१	५	७	शयनीय	२	६	१३७	शर्वाणी	१	१	३७
"	१	६	२	शयालु	३	१	३३	शल	२	५	७
"	१	६	२२	शयित	३	१	३३	शलम	२	५	२८
शब्दग्रह	२	६	९४	शयु	१	८	५	शलल	२	५	७
शब्दन	३	१	३८	शय्या	२	६	१३७	शलली	२	५	७
शम	३	२	३	शर	२	४	१६२	शलाट्ट	२	४	२५
शमथ	३	२	३	"	२	८	८७	शल्क	३	३	१३
शमन	१	१	५८	"	३	५	११	शल्य	२	४	५३
"	२	७	२६	शरजन्मन्	१	१	३९	"	२	५	७
शमनस्वस्	१	१०	३२	शरण	३	३	५३	"	२	८	९३
शमल	२	६	६७	शरव्	१	४	१९	शव	२	८	११८
शमित	३	१	९७	"	१	४	२०	शश	२	५	११
शमी	२	४	५२	"	३	३	९३	शशधर	१	३	१५
"	२	९	२३	शरभ	२	५	११	शशलोमन्	२	९	१०७
शमीर	२	४	५२	शरब्ध	२	८	८६	शशादन	२	५	१४
शम्पा	१	३	९	शराभ्यास	२	८	८६	शशोर्ण	२	९	१०७
शम्पाक	२	४	२३	शरारि	२	५	२५	शश्वत्	३	३	२४४
शम्भ	१	१	४७	शराह	३	१	२८	"	३	४	१
शम्बर	१	१०	४	शराव	२	९	३२	"	३	४	११
"	२	५	१०	शरावती	१	१०	३४	शष्प	२	४	१६७
शम्बरारि	१	१	२६	शरासन	२	८	८३	शस्त	१	४	२६
शम्बल	३	५	३४	शरीर	२	६	७०	"	३	१	१०९
शम्भाकृत	२	९	९	शरीरिन्	१	४	३०	शस्त्र	२	८	८२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शस्त्र	३	३	१८०	शावर	२	४	३३	शिक्ष्य	२	१०	३०
शस्त्रक	२	९	९८	शाम्बरी	२	१०	११	शिक्ष्यत	३	१	८९
शस्त्रमार्ज	२	१०	७	शार	३	३	१६६	शिक्षा	१	६	४
शस्त्राजीव	२	८	६७	शारद	२	४	२३	शिक्षित	३	१	४
शस्त्री	२	८	९२	"	३	३	९५	शिक्षण्ड	२	५	३१
शाक	२	४	१३६	शारदी	१	४	१११	शिक्षण्डक	२	६	९६
"	२	९	३४	शारिफल	२	१०	४६	शिखर	२	३	४
शाकट	२	९	६४	शारिवा	२	४	११२	"	२	४	१२
शाकुनिक	२	१०	१४	शार्कर	२	१	११	शिखरिन्	२	३	१
शाक्तीक	२	८	६९	शार्किन्	१	१	१९	"	३	३	१०६
शाक्यमुनि	१	१	१४	शार्दूल	२	५	१	शिखा	१	१	५७
शाक्यसिंह	१	१	१५	"	३	१	५९	"	२	५	३१
शाखा	२	४	११	शार्वर	३	३	१८९	"	२	६	९७
शाखानगर	२	२	२	शाल	१	१०	१९	"	३	३	१९
शाखामृग	२	५	३	शाला	२	२	६	शिखावत्	१	१	५५
शाखिन्	२	४	५	"	०	४	११	शिखावल	२	५	३०
शाक्षिक	२	१०	८	शालावृक	३	३	१२	शिखिमीव	२	९	१०१
शाटक	३	५	३३	शालि	२	९	२४	शिखिन्	२	५	३०
शाटी	३	५	३८	शालीन	३	१	२६	"	३	३	१०६
शाठ्य	१	७	३०	शालूक	१	१०	३८	शिखिवाहन	१	१	४०
शाण	२	१०	३२	शालूर	१	१०	२४	शिमु	२	४	३१
शाणी	३	५	९	शालेय	२	४	१०५	"	२	९	३४
शाण्डिल्य	२	४	३२	"	२	९	६	शिमुज	२	९	११०
शात	३	१	९१	शास्मलि	२	४	४६	शिक्षित	१	६	२४
शातकुम्भ	२	९	९४	शावक	२	५	३८	शिजिनी	३	८	८५
शात्रव	२	८	११	शावत	३	१	७२	शितशूक	२	९	१५
शाद	१	१०	९	शाष्कुलिक	३	२	४०	शिति	३	३	८३
"	३	३	९०	शासन	२	८	२५	शितिकण्ठ	१	१	३२
शादूल	२	१	१०	शास्तृ	१	१	१४	शितिसारक	२	४	३८
शान्त	३	१	९७	शास्त्र	३	३	१८	शिपिविष्ट	३	३	३४
शान्ति	३	२	३	शास्त्रविद्	३	१	७	शिफा	३	३	१३२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शिफा	२	४	११	शिवा	२	५	५	शील	१	७	२६
शिफाकन्द	१	१०	४३	"	३	३	२१३	"	३	३	२०१
शिविका	२	८	५३	शिशिर	१	३	१९	शुक	२	४	१३२
शिविर	२	८	३३	"	१	४	१८	"	२	५	२१
शिव्या	२	९	२३	शिशु	२	५	३८	शुकनास	२	४	५७
शिरस्	२	६	९५	शिशुक	१	१०	१८	शुक्त	३	३	८३
शिरस्त्र	२	८	६४	शिशुत्व	२	६	४०	शुक्ति	१	१०	२३
शिरस्य	२	६	९८	शिशुमार	१	१०	१०	"	२	४	१३०
शिरा	२	६	६५	शिश्र	२	६	७६	शुक	१	१	५६
शिरोष	२	४	६३	शिश्विदान	३	९	४६	"	१	३	२५
शिरोषि	२	६	८८	शिष्टि	२	८	२६	"	१	४	१६
शिरोरज	२	६	१०२	शिष्य	२	७	११	"	२	६	६२
शिरोरुह	२	६	९४	शीघ्र	१	१	६४	शुकशिष्य	१	१	१२
शिला	२	२	१३	शीत	१	३	१९	शुक्र	१	४	१२
"	२	३	४	"	१	३	१९	"	१	५	१२
शिलाजतु	२	९	१०४	"	२	४	३०	शुच्	१	७	२५
शिली	१	१०	२४	"	२	४	३४	शुचि	१	१	५६
शिलीमुख	३	३	१८	"	३	५	१२२	"	१	४	१६
शिलोच्चय	२	३	१	शीतक	२	१०	१८	"	१	५	१२
शिल्प	२	१०	३५	शीतभीरु	२	४	७०	"	१	७	१७
शिल्पिन्	२	१०	५	शीतल	१	३	१९	"	३	३	२८
शिल्पिशाला	२	२	७	"	२	४	१४९	शुण्ठी	२	९	३८
शिव	१	१	३०	शीतशिव	२	४	१०५	शुण्डा	२	१०	४०
"	१	४	२५	"	२	४	१२२	शुतुद्रि	१	१०	३६
शिवक	२	९	७३	"	२	९	४२	शुतुद्रु	१	१०	३६
शिवमल्लो	२	४	८१	शीघ्र	३	५	३४	शुद्धान्त	२	२	१२
शिवा	१	१	३७	शीर्ष	२	६	९५	"	३	३	६६
"	२	४	५२	शीर्षक	२	८	६३	शुनक	२	१०	२२
"	२	४	५९	शीर्षच्छेष	३	१	४५	शुनी	२	१०	२२
"	२	४	१२७	शीर्षण्य	२	६	९८	शुभ	१	४	२५
				"	२	८	६४	"	२	९	७६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शुभ	३	५	२३	शूल्य	२	९	४५	शैलालिन्	२	१०	१२
शुभंयु	३	१	५०	शुगाल	२	५	५	शैलप	२	४	३२
शुभान्वित	३	१	५०	शुक्ल	२	६	१०	"	२	१०	१२
शुभ	१	५	१२	"	२	८	४१	शैलेय	२	४	१२३
"	३	३	१९३	शुक्लक	२	९	७५	शैवलिनो	१	१०	३०
शुभ्रदन्ती	१	३	५	शुक्लला	२	८	४१	शैवाल	१	१०	३८
शुभांशु	१	३	१४	शुक्ल	२	३	४	शैशव	२	६	४०
शुल्क	२	८	७७	"	२	४	१४२	शोक	१	७	२५
शुल्ब	२	९	९७	"	३	३	२६	शोचिष्कोश	१	१	५४
"	२	१०	२७	शुक्लवेर	२	९	३७	शोचिस्	१	३	३४
"	३	५	२३	शुक्लाटक	२	१	१७	शोण	१	५	१५
शुश्रूषा	२	७	३५	शुक्लार	१	७	१७	"	१	१०	३४
शुषि	१	८	२	शुक्लार	१	७	१७	शोणक	२	४	५७
शुषिर	१	८	१	"	१	७	१७	शोणरत्न	२	९	९२
"	१	८	२	शुक्लिणी	२	९	६६	शोणित	२	६	६४
शुष्कमांस	२	६	६३	शुक्ली	१	१०	२५	शोध	२	६	५२
शुष्म	२	८	१०२	"	२	४	१००	शोधघ्नो	२	२	१४९
शुष्मन्	१	१	५४	"	२	४	११६	शोधनी	२	२	१८
शुक्	२	९	२३	शुक्लीकनक	२	९	९६	शोधित	२	९	४६
शुक्कोट	१	५	१४	शृत	३	१	९५	"	३	१	५६
शुक्धान्य	२	८	२४	शेखर	२	६	१३६	शोक	२	६	५२
शुक्कशिम्बि	२	४	८७	शेकस्	२	६	७६	शोभन	३	१	५२
शुद्ध	२	१०	१	शेकालिका	२	४	७०	शोभा	१	३	१७
शुद्धा	२	६	१३	"	३	५	७	शोभाजन	२	४	३१
शुद्धो	२	६	१३	शेमुषी	१	५	१	शोष	२	६	५१
शून्य	३	१	५६	शैलु	२	४	३४	शौक	२	५	४३
शूर	२	८	७७	शेवधि	१	१	७२	शौकिकेय	१	८	१०
शूर्प	२	९	२६	शेवाल	१	१०	३८	शौण्ड	३	१	२३
शूल	३	३	१९७	शेष	१	८	४	शौण्डिक	२	१०	१०
शूलाकृत	२	९	४५	शैक	२	७	११	शौण्डो	२	४	९७
शूलिम्	१	१	३०	शैखरिक	३	४	८८	शौद्धोदनि	१	१	१५
				शैल	२	३	१				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शौरि	१	१	२१	श्रावण	१	४	१६	श्रेयस्	३	१	५८
शौर्यं	२	८	१०२	श्रावणिक	१	४	१६	श्रेयसी	२	४	५९
शौल्विक	२	१०	८	श्री	१	१	२७	"	२	४	८४
शौष्कल	३	१	१९	"	२	८	८२	"	२	४	९७
श्च्योत	३	२	१०	श्रीकण्ठ	१	१	३२	श्रेष्ठ	३	१	५८
श्मशान	२	८	११८	श्रीधन	१	१	१४	श्रोण	२	६	४८
श्मश्रु	२	६	९९	श्रीद	१	१	६९	श्रोणि	२	६	७४
श्याम	१	५	१४	श्रीपति	१	१	२१	श्रोत्र	२	६	९४
"	३	३	१४३	श्रीपर्ण	२	४	६६	श्रोत्रिय	२	७	६
श्यामल	१	५	१४	"	३	३	५३	श्रोषट्	३	४	८
श्यामा	२	४	५५	श्रीपर्णिका	२	४	४०	श्लक्ष्ण	३	१	६६
"	२	४	१०८	श्रीपर्णी	२	४	३६	श्लेष	३	२	११
"	२	४	११२	श्रीफल	२	४	३२	श्लेष्मण	२	६	६०
"	३	३	१४३	श्रीफली	२	४	९५	श्लेष्मन्	२	६	६२
श्यामाक	२	४	१६५	श्रीमत्	२	४	४०	श्लेष्मल	२	६	६०
श्याल	२	६	३२	"	३	१	१४	श्लेष्मातक	२	४	३४
श्याव	१	५	१६	श्रील	३	१	१४	श्लोक	३	३	२
श्येत	१	५	१२	श्रीवत्सलाच्छन	१	१	२२	श्वःश्रेयस	१	४	२५
श्येन	२	५	१५	श्रीवास	२	६	१२८	श्वर्द्धा	२	४	९८
श्येनम्याता	३	५	६	श्रीवेष्ट	२	६	१२८	श्वन्	२	१०	२२
श्रद्धा	३	३	१०२	"	३	५	१३	श्वनिश	३	५	४०
श्रद्धालु	२	६	२१	श्रीसंज्ञ	२	६	१२५	श्वपच	२	१०	२०
"	३	१	२७	श्रीहस्तिनी	२	४	६९	श्वभ्र	१	८	२
श्रयण	३	२	१२	श्रुन	३	३	७७	"	३	५	२२
श्रवण	२	६	९४	श्रुति	१	६	३	श्वयशु	१	६	५२
श्रवस्	२	६	९४	"	२	६	९४	श्ववृत्ति	२	९	२
श्रविष्ठा	१	३	२२	"	३	३	७३	श्वशुर	२	६	३१
श्राणा	२	९	५०	श्रेणि	२	१०	५	"	२	६	३७
श्राद	२	७	३१	श्रेणी	२	४	४	श्वशुर्य	२	३	१४६
श्राद्धदेव	१	१	५९	श्रेयस्	१	४	२४	श्वश्रु	२	६	३१
श्राय	३	२	१२	"	१	५	६	श्वश्रुश्वशुर	२	६	३७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
श्वस्	३	४	२२	संयुग	२	८	१०५	संस्कृत	३	३	८१
श्वसन	१	१	६१	संयोजित	३	१	९२	संस्तर	३	३	१६२
"	२	४	५२	संराव	१	६	२३	संस्तव	२	२	२३
श्वविध्	२	५	७	संलाप	१	६	१६	संस्ताव	३	२	३४
श्वित्र	२	६	५४	संवत्सर	१	४	२०	संस्तयाय	३	३	१५२
श्वेत	१	५	१२	संवत्	३	४	१६	संस्था	२	८	२६
"	२	९	९६	संवन्नन	३	२	४	संस्थान	३	३	१२४
"	३	३	७९	संवर्त	१	४	२२	संस्थित	२	८	११७
श्वेतगरुड	२	५	२३	संवर्तिका	१	१०	४३	संस्पर्शा	२	४	१५४
श्वेतमरिच	२	९	११०	संवसथ	२	२	१९	संस्फोट	२	८	१०५
श्वेतरक्त	१	५	१५	संवाहन	३	२	२२	संघत	३	१	१५
श्वेतसुरसा	२	४	७१	संविद्	१	५	१	संघतजानुक	२	६	४७
ष				"	१	५	५	संघति	२	५	४०
षट्कर्षन्	२	७	४	"	३	३	९२	संघनन	२	६	७०
षट्पद	२	५	२९	संवीक्षण	२	२	३०	संघृति	१	६	८
षट्मिश्र	१	१	१४	संवीत	३	१	९०	सकल	३	१	६५
षट्मानन	१	१	३९	संवेग	१	७	३४	सकृत्	३	३	२४३
षट्ग्रन्थ	२	४	४८	संवेद	३	२	६	सकृत्प्रज	२	५	२०
षट्ग्रन्था	२	४	१०२	संवेश	१	७	३६	सकृत्फला	२	४	५२
षट्ग्रन्थिका	२	४	१५४	संभ्यान	२	६	११८	सक्थि	२	६	७३
षड्ज	१	७	१	संशप्तक	२	८	९८	सखि	२	८	१२
षण्ड	१	१०	४२	संशय	१	५	३	सखी	२	६	१२
"	२	८	३३	संशयापन्नमानसश्च	१	५		सख्य	२	८	१२
"	२	९	६२	संश्रव	१	५	५	सगर्भ्य	२	६	३४
षष्टिक्य	२	९	७	संश्रुत	३	१	१०९	सगोत्र	२	६	३४
षाण्मातुर	१	१	४०	संश्लेष	३	२	३०	सग्धि	२	९	५५
स				संसक्त	३	१	६८	सङ्कट	३	१	८५
संयत्	२	८	१०६	संसद्	२	७	१५	सङ्कर	२	२	१८
संयत	३	१	४२	संसरण	२	१	१८	सङ्कर्षण	१	१	२४
संयम	३	२	१८	"	३	३	५५	सङ्कलित	३	१	९३
संयाम	३	३	१८	संसिद्धि	१	७	३७	सङ्कल्प	१	५	२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सङ्क्षेपक	३	१	४३	सञ्जन	२	७	३	सत्वर	१	१	६५
सङ्कास	२	१०	३७	"	२	८	३३	सदन	२	२	५
सङ्कीर्ण	२	१०	१	सञ्जना	२	८	४२	सदस्	२	७	१५
"	३	१	८५	सञ्जय	२	५	३९	सदस्य	२	७	१६
"	३	३	५७	सञ्चारिक	२	६	१७	सदा	२	४	२२
सङ्कुल	१	६	१९	सञ्जवन	२	२	६	सदागति	१	१	१६१
"	३	१	८५	सञ्ज्वर	१	१	५७	सदातन	३	१	७२
सङ्कोच	२	६	१२४	सञ्ज्ञपन	२	८	११३	सदानीरा	१	१०	३३
सङ्कन्दन	१	१	४४	सञ्ज्ञा	३	३	३३	सदृश	२	१०	३६
सङ्क्रम	३	२	२५	सञ्ज्ञु	२	६	४७	सदृश्	२	१०	३६
सङ्क्षेपण	३	२	२१	सटा	२	६	९७	सदृश	२	१०	३६
सङ्क्षय	२	८	१०४	संडीन	२	५	३७	सदेश	३	१	६७
सङ्क्षया	१	५	२	सट्	२	७	५	सद्यन्	२	२	४
सङ्क्षयात	३	१	६४	"	३	३	८३	सद्यस्	३	४	९
सङ्क्षयावत्	२	७	५	सतत	१	१	६५	सध्यन्	३	१	३४
सङ्ग	३	२	२९	सती	२	६	६	सनरकुमार	१	१	५१
सङ्गत	१	६	१८	सतीनक	२	९	१६	सना	३	४	१७
सङ्गम	३	२	२९	सतीर्थ्य	२	७	११	सनातन	३	१	७२
"	३	५	३४	सत्तम	३	१	५८	सनाभि	२	६	३३
सङ्गर	३	३	१६७	सत्त्व	१	४	२९	सनि	२	७	३२
सङ्गीर्ण	३	१	१०९	"	३	३	२१३	सनीड	३	१	६६
सङ्गूढ	३	१	९३	सत्पथ	२	१	१६	सन्तत	१	१	६५
सङ्ग्रह	१	६	६	सत्य	१	६	२२	सन्तानि	२	७	१
सङ्ग्राम	२	८	१०५	"	३	३	१५४	सन्तप्त	३	१	१०२
सङ्ग्राह	२	८	९०	सत्यङ्कार	२	९	८३	सन्तमस	१	८	४
"	३	२	१४	सत्यवचस्	२	७	४३	सन्तान	१	१	५०
सङ्ग	२	५	४१	सत्याकृति	२	९	८२	"	२	७	१
सङ्गात	१	९	२	सत्यापन	२	९	८२	सन्ताप	१	१	५७
"	२	५	३९	सत्र	३	३	१८१	सन्तापित	३	१	१०२
सचिव	३	३	२०७	सत्रा	३	४	४	सन्दान	२	९	७३
सञ्ज	२	८	६५	सत्रिन्	२	८	१५	सन्दानित	३	१	९५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सन्दाव	२	८	१११	सप्तम्या	२	४	७२	"	३	३	१४९
सन्दिता	३	१	८६	"	२	४	१४३	समया	३	३	२५३
"	३	१	९५	सप्तार्चिस्	१	५	५६	"	३	४	७
सन्देशवाच्	१	६	१७	सप्ताश्व	१	३	२९	समर	२	८	१०४
सन्देशहर	२	८	१६	सप्ति	२	८	४४	समर्थ	३	३	८७
सन्देह	१	५	३	सप्तद्वारिन्	२	७	११	समर्थन	२	८	२५
सन्दोह	२	५	३९	सप्तर्षका	२	६	११२	समर्थक	३	१	७
सन्दाव	२	८	१११	सप्ता	२	२	६	समर्थार्थ	३	१	६७
सन्धा	३	३	१०२	"	२	७	१५	समर्थार्थिन्	१	१	५८
सन्धान-	२	१०	४२	"	३	३	१३७	समवाय	२	५	४०
सन्धि	२	८	१८	समाजन	३	२	७	समश्लिष्टा	२	४	१५७
"	३	२	११	समासद्	२	७	१६	समसन	३	२	२१
सन्धिनी	२	९	६९	समास्तार	२	७	१६	समस्त	३	१	६५
सन्ध्या	१	४	३	सम्भिक	२	१०	४४	समस्या	१	६	७
सन्नकटु	२	४	३५	सम्य	२	७	३	समा	१	४	२०
सन्नद्ध	२	८	६५	"	२	७	१६	समासमीना	२	९	७२
सन्नय	३	३	१५१	सम	२	१०	३६	समाकर्षिन्	१	५	११
सन्निकर्षण	३	२	२३	"	३	१	६४	समाघात	२	८	१०५
सन्निकृष्ट	३	१	९६	समग्र	३	१	६५	समाज	२	५	४२
सन्निधि	३	२	२३	समज्ञा	२	४	९०	समाधि	१	५	५
सन्निवेश	२	२	१९	"	२	४	१४१	"	३	३	९८
सपल	२	८	१०	समज	२	५	४२	समान	१	१	६३
सपदि	३	४	२	समज्ञा	१	६	११	"	२	१०	३७
"	३	४	९	समज्या	२	७	१५	"	३	३	१२७
सपर्या	२	७	१४	समजस	२	८	२४	समानोदय	२	६	३४
"	२	७	३४	समधिक	३	१	७५	समालम्भ	३	२	२७
सपिण्ड	२	६	३३	समन्ततस्	३	४	१३	समावृत	२	७	१०
सपीति	२	९	३५	समन्तदुग्धा	२	४	१०६	समासाथ	३	१	९२
सप्तकी	२	६	१०९	समन्तभद्र	१	१	१३	समासार्था	१	६	७
सप्ततन्तु	२	७	१३	समम्	३	४	४	समाहार	३	२	१६
सप्तपर्ण	२	४	३३	समय	१	४	१	समाहित	३	१	१०९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
समाहृति	१	६	६	समुपजोषम्	३	४	१०	सरल	२	४	५९
समाह्वय	२	१०	४६	समूह	२	५	९	"	३	१	८
समित	२	८	१०६	समूह	२	५	३९	सरलद्रव	२	६	१२८
समिति	२	७	१५	समूह्य	२	७	२०	सरला	२	४	१०८
"	२	८	१०६	समृद्ध	३	१	११	सरम्	१	१०	२८
"	३	३	७०	समृद्धि	३	२	१०	सरसी	१	१०	२८
समिध्	२	४	१३	सम्पत्ति	२	८	८२	सरसीरुह	१	१०	४०
समीक	२	८	१०४	सम्पद्	२	८	८१	सरस्वत	१	१०	१
समीप	३	१	६६	सम्पराय	३	३	१५१	"	३	३	५९
समीर	१	१	६२	सम्पुटक	२	६	१३९	सरस्वतो	१	६	१
समीरण	१	१	६२	सम्प्रति	३	४	२३	"	१	१०	३४
"	२	४	७९	सम्प्रदाय	३	२	७	सरित्	१	१०	२९
समुच्चय	३	२	१६	सम्प्रधारणा	२	८	२५	सरित्पति	१	१०	१
समुच्छ्रय	३	३	१५२	सम्प्रहार	२	८	१०५	सरीसृप	१	८	७
समुज्झित	३	१	१०७	सम्कुल	२	४	७	सर्ग	३	२	२१
समुत्पिञ्ज	२	८	९९	सम्माध	३	१	८५	सर्ज	२	४	४४
समुदक्त	३	१	९०	सम्भेद	१	१०	३५	सर्जक	२	४	४४
समुदय	२	५	४०	सम्भ्रम	१	७	३४	सर्जरस	२	७	१२७
समुदाय	२	५	४०	"	३	२	२६	सर्जिकाक्षार	२	९	१०९
"	२	८	१०६	सम्भ्रम	१	४	२४	सर्प	१	८	६
समुद्र	३	५	१७	सम्भ्रार्जनी	२	२	१८	सर्पराज	१	८	४
समुद्रक	२	६	१३९	सम्भूर्च्छन	३	२	६	सर्पिस्	२	८	५२
समुद्रिरण	३	३	५५	समृष्ट	२	९	४६	सर्व	३	१	६४
समुद्रत	३	१	२३	सम्यक्	१	६	२२	सर्वसहा	२	१	३
समुद्र	१	१०	१	सम्राज्	२	८	३	सर्वश	१	१	१३
समुद्रान्ता	२	४	९२	सरक	२	१०	४३	"	१	१	३३
"	२	४	११६	सरधा	२	५	२६	सर्वतस्	३	४	१३
"	२	४	१३३	सरट	२	५	१२	सर्वतोभद्र	२	२	१०
समुन्दन	३	२	२९	सरणा	२	४	१५२	"	२	४	६२
समुन्न	३	१	१०५	सरणि	२	१	१५	सर्वतोभद्रा	३	४	३५
समुन्नद	३	३	१०३	सरमा	२	१०	२२	सर्वतोमुख	१	१०	४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सर्वदा	३	४	२२	सहधर्मिणी	२	६	५	सातला	२	४	१४३
सर्वधुरीण	२	९	६६	सहजन	३	१	३१	साति	३	२	३८
सर्वमङ्गला	१	१	३७	सहभोजन	२	९	५५	"	३	३	६७
सर्वरस	२	६	१२७	सहसु	१	४	१४	"	३	५	९
सर्वला	२	८	९३	"	२	८	१०२	सातिसार	२	६	५९
सर्वलिङ्गिन्	२	७	४५	"	३	३	२३३	सात्त्विक	१	७	१६
सर्ववेदस्	२	७	९	सहसा	३	४	७	सादिन्	२	८	६०
सर्वसन्नहन	२	८	९४	सहस्य	१	४	१५	"	३	३	१०७
सर्वानुभूति	२	४	१०८	सहस्र	२	९	८४	साधन	३	३	११९
सर्वान्नभोजिन्	३	१	२२	सहस्रदंष्ट्र	१	१०	१८	साधारण	२	१०	३७
सर्वान्नीन	३	१	२२	सहस्रपत्र	१	१०	४०	"	३	१	८२
सर्वाभिसार	२	८	९४	सहस्रवीर्या	२	४	१५८	साधित	३	१	४०
सर्वार्थसिद्ध	१	१	१५	सहस्रवेधिन्	२	४	१४१	साधिष्ट	३	१	११२
सर्वौष	२	८	९४	"	२	९	४०	साधायस्	३	३	२३६
सर्वप	२	९	१७	सहस्रांशु	१	३	३१	साधु	२	७	३
सलिल	१	१०	३	सहस्राक्ष	१	१	४४	"	३	३	१०१
सल्लकी	२	४	१२४	सहस्रिन्	२	८	६२	साध्य	१	१	१०
सव	२	७	१३	सहा	२	४	७३	साधवस	१	७	२१
सवन	२	७	४५	"	२	४	११३	साध्वी	२	६	६
सवयस्	२	८	१२	सहाय	२	८	७१	सानु	२	३	५
सवितृ	१	३	३१	सहायता	३	२	४०	सान्त्व	१	६	१८
सविध	३	१	६७	सहिष्णु	३	१	३१	"	२	८	२१
सवेश	३	१	६७	सांयाजिक	१	१०	१३	सान्द्रष्टिक	२	८	२९
सव्य	३	१	८४	सांयुगीन	२	८	७७	सान्द्र	३	१	६६
सव्येष्ट	२	८	६०	सांस्तर	२	८	१४	सान्द्राव्य	२	७	२७
सस्य	२	४	१५	सांशयिक	३	१	५	सासपदीन	२	८	१२
सस्यसम्बर	२	४	४४	साकम्	३	४	४	सामन	१	६	३
सह	३	४	४	साक्षात्	३	३	२४४	"	२	८	२१
सहकार	२	४	३३	सागर	१	१०	१	सामाजिक	२	७	१६
सहचरी	२	४	७५	सावि	३	४	६	सामान्य	१	४	३१
सहज	२	६	६४	सात	१	४	२५	"	३	१	८२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सामि	३	३	२५०	सिंह	२	५	१	सिनीवाली	१	४	९
सामिधेनि	२	७	२२	"	३	१	५९	सिन्दुक	२	४	६८
साम्परायिक	२	८	१०४	सिंहतल	२	६	८५	सिन्दुवार	२	४	६८
साम्प्रतम्	३	४	११	सिंहपुच्छी	२	४	९३	सिन्दूर	२	९	१०५
"	३	४	२३	सिंहसंहनन	३	१	१२	"	३	५	३१
सायक	३	३	२	सिंहाण	२	९	९८	सिन्धु	१	१०	१
सायम्	१	४	३	सिंहासन	२	८	३१	"	३	३	१०१
"	३	४	१९	सिंहास्य	२	४	१०३	सिन्धुज	२	९	४२
सार	३	३	१७१	सिंही	२	४	१०३	सिन्धुसङ्गम	१	१०	३५
सारङ्ग	२	५	१७	"	२	४	११४	सिंह	२	६	१२८
"	३	३	२३	सिकता	३	३	७३	सीकर	१	३	११
सारथि	२	८	५९	सिकतामय	१	१०	९	सीता	२	९	१४
सारमेय	२	१०	२१	सिकतावत	२	१	११	सीत्य	२	९	८
सारव	१	१०	३६	सिक्थक	२	९	१०७	सीधु	२	१०	४१
सारस	१	१०	४०	सित	१	५	१३	सीमन्	२	२	२०
"	२	५	२२	"	३	१	९५	सीमन्त	३	५	१९
सारसन	२	६	१०९	"	३	१	९८	सीमन्तिनी	२	६	२
"	२	८	६३	"	३	३	८०	सीमा	२	२	२०
सारिका	३	५	८	सितच्छत्रा	२	४	१५२	सीर	२	९	१४
सार्थ	२	५	४१	सिता	२	९	४३	सीरपाणि	१	१	२४
सार्थवाह	२	९	७८	सिताभ्र	२	६	१३०	सीवन	३	२	५
सार्द्र	३	१	१०५	सिताम्भोज	१	१०	४१	सीसक	२	९	१०५
सार्धम्	३	४	४	सिद्ध	१	१	११	सीडुण्ड	२	४	१०५
सार्वभौम	२	८	२	"	३	१	१००	सु	३	४	२
"	१	३	४	सिद्धान्त	१	५	४	"	३	४	५
साल	२	२	३	सिद्धार्थ	२	९	१८	सुकन्दक	२	४	१४७
"	२	४	५	सिद्धि	२	४	११२	सुकरा	२	९	७०
"	२	४	४४	सिध्म	२	६	५२	सुकल	३	१	८
सालपर्णी	२	४	११५	सिध्मल	२	६	६१	सुकुमार	३	१	७८
साला	२	९	६३	सिध्मला	३	५	१०	सुकृत	१	४	२४
साइस	२	८	२१	सिध्य	१	३	२२	सुकृतिन्	३	१	३
साइस	२	८	६२	सिध्मका	३	५	८	सुख	१	४	२५
"	३	२	४३								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सुख	३	५	२३	सुप्रयोगविशिष्ट	८	६८		सुवर्णक	२	४	२४
सुखवर्चक	२	९	१०९	सुप्रत्याप	१	६	१७	सुवर्णिक	२	४	९५
सुखसन्दोहा	२	९	७१	सुभगासुत	२	६	२४	सुवर्णा	२	४	७०
सुगत	१	१	१३	सुभिक्षा	०	४	१२४	"	२	४	११५
सुगन्धा	२	४	११४	सुम	२	४	१७	"	२	४	११९
सुगन्धि	१	५	११	सुमनस्	१	१	७	"	२	४	१२३
"	२	४	१२१	"	२	४	१७	"	२	४	१४०
सुचरित्रा	२	६	६	"	२	४	७२	सुवर्ता	२	९	७१
सुचेष्टक	२	६	११६	सुमनोरत्नम्	२	४	१७	सुपम	३	१	५२
सुत	२	६	२७	सुमोम	१	१	४९	सुपमा	१	३	१७
"	३	३	६०	सुर	१	१	७	सुपर्वा	२	४	१५५
सुतश्रेणी	२	४	८८	"	३	५	११	"	२	९	३७
सुत्रामन्	१	१	४२	सुरक्षा	३	५	८	सुपिर	१	७	४
सुत्या	२	७	४७	सुरज्येष्ठ	१	१	१६	सुषिरा	२	४	१२९
सुखन्	२	७	१०	सुरद्रोषिका	१	१	४९	सुषोम	१	३	१९
सुदर्शन	१	१	२८	सुरद्रिष्	१	१	१२	सुपेण	२	४	६८
सुदाय	२	८	२८	सुरनिधगा	१	१०	३१	सुपेणिका	२	४	१०८
सुदूर	३	१	६९	सुरपति	१	१	४३	सुष्टु	३	४	२
सुधर्मन्	१	१	४८	सुरभि	१	४	१८	"	३	४	१९
सुधा	१	१	४८	"	१	५	११	सुसंस्कृत	२	९	४५
"	३	३	१०२	"	३	३	१३७	सुसहृद्	२	८	१२
सुधांशु	१	३	१४	सुरभी	२	४	१२३	"	२	८	१७
सुधी	२	७	५	सुरपि	१	१	४८	सुहृदय	३	१	३
सुनासीर	१	१	४१	सुरलोक	१	१	६	सूकर	२	५	२
सुनिषण्णक	२	४	१४९	सुरवर्त्मन्	१	२	१	सूक्ष्म	३	१	६१
सुन्दर	३	१	५२	सुरसा	२	४	११४	"	३	३	१४४
सुन्दरी	२	६	४	सुरा	२	१०	३९	सूचक	३	१	४७
सुपथिन्	२	१	१६	सुराचार्य	१	३	२४	सूचि	३	५	८
सुपर्ण	१	१	२९	सुरालय	१	१	४९	सूत	२	८	५८
सुपर्वन्	१	१	७	सुराष्ट्रज	२	४	१३१	"	२	९	९९
सुपार्थक	२	४	४३	सुवचन	१	६	१७	"	३	१०	३
सुप्रतीक	१	३	४	सुवर्ण	२	९	८६	"	३	३	६२
				"	२	९	९४	"			

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सूतिकागृह	२	२	८	सेनाङ्ग	२	८	३३	सोमवह्निका	२	४	९५
सूतिमास	२	६	३९	सेनानी	१	१	३९	सोमवह्नी	२	४	८३
सूत्थान	२	१०	१९	"	२	८	६२	सोमोद्भवा	१	१०	३२
सूत्र	२	१०	२८	सेनामुख	२	८	८१	सौगन्धिक	१	१०	३६
सूत्रवेष्टन	३	२	२४	सेनारक्ष	२	८	६१	"	२	४	१६६
सूद	२	९	२८	सेवक	२	८	९	"	२	९	१०२
"	३	३	९१	सेवन	३	२	५	सौचिक	२	१०	६
सूना	३	३	११३	सेव्य	२	४	१६४	सौदामनी	१	३	९
सूनु	२	६	२७	सैहिकेय	१	३	२६	सौध	२	२	१०
सूनुत	१	६	१९	सैकत	१	१०	९	सौभागिनेय	२	६	२४
सूपकार	२	९	२७	सैतवाहिनी	१	१०	३३	सौम्य	१	३	२६
सूर	१	३	२८	सैनिक	२	८	६१	"	३	३	१६१
सूरण	२	४	१५७	"	२	८	६१	सौरभेय	२	९	६०
सूरत	३	१	१५	सैन्धव	२	८	४४	सौरभेयी	३	९	६६
सूरसूत	१	३	३२	"	२	९	४२	सौराष्ट्रिक	१	८	१०
सूरि	२	७	६	सैन्य	२	८	६१	सौरि	१	३	२६
सूमी	२	१०	३५	"	२	८	७८	सौवर्चल	२	९	४३
सूर्य	१	३	२८	सैरन्धी	२	६	१८	"	२	९	१०९
सूर्यतनया	१	१०	३२	सैरिक	२	९	६४	सौविद	२	८	८
सूर्येन्दुसङ्गम	१	४	८	सैरिम	२	५	४	सौविदहल	२	८	८
सुकिणी	२	६	९१	सैरेयक	२	४	७५	सौवीर	२	४	३७
सुग	२	८	९१	सोढ	३	१	९७	"	२	९	३९
सुणि	२	८	४१	सोदयं	२	६	३३	"	२	९	१००
सुणिका	२	६	६६	सोन्माद	३	१	२३	सौहित्य	२	९	५६
सुति	२	१	१५	सोपप्लव	१	४	१०	स्कन्द	१	१	३९
सुपाटी	३	५	३८	सोपान	२	२	१८	स्कन्ध	२	४	१०
सुमर	२	५	११	सोम	१	३	१४	"	२	६	७८
सुष्ट	३	३	३९	सोमपा	२	७	९	"	३	३	१००
सेकपात्र	१	१०	१३	सोमपीथिन्	२	७	९	स्कन्धशाखा	२	४	११
सेचन	१	१०	२३	सोमराजी	२	४	९५	स्कन्न	३	१	१०४
सेतु	२	१	१४	सोमवहक	२	४	५०	स्खलन	१	७	३६
सेतु	२	४	२५	"	३	३	९	स्खलित	२	८	१०८
सेना	२	८	७८	सोमवहलरी	२	४	१३७	स्तन	२	६	७७
								"	३	५	१२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
स्तनन्धयी	२	६	४१	स्थल	२	१	५	स्थूलशब्दक	२	६	११६
स्तनपा	२	६	४१	स्थली	२	१	५	स्थूलोचय	३	३	१४९
स्तनयित्तु	१	३	६	स्थविर	२	६	४२	स्थगम्	३	१	७३
स्तनित	१	३	८	स्थविष्ठ	३	६	१११	स्थीणय	२	४	११२
स्तनक	२	४	१६	स्थाणु	१	१	३४	स्थौरिन्	२	८	४६
स्तब्धरोमन्	२	५	२	"	२	४	८	स्तनव	३	२	९
स्तम्ब	२	४	९	"	३	३	४९	स्तनितक	२	१७	४३
"	२	९	२१	स्थाण्डिक	२	७	४४	स्तनान	२	६	१२२
स्तम्बधन	३	२	३५	स्थान	२	८	१९	स्तनयु	२	६	६६
स्तम्बध	३	३	३५	"	३	३	११७	स्तिग्ध	२	८	१२
स्तम्बेरम	२	८	३५	स्थानीय	२	२	१	"	२	९	४६
स्तम्भ	३	३	१३५	स्थाने	३	४	११	"	३	१	१४
स्तव	१	६	११	स्थापत्य	२	८	८	स्तु	२	३	५
स्तिमित	३	१	१०५	स्थापनी	२	४	८४	स्तुत	३	१	९२
स्तुत	३	१	११०	स्थामन्	२	८	१०२	स्तुषा	२	६	९
स्तुति	१	६	११	स्थायुक	२	८	७	स्तुह	२	४	१०५
स्तुतिपाठक	२	८	९६	स्थाल	३	५	३२	स्तुही	२	४	१०५
स्तूप	३	५	१९	स्थाला	२	९	३१	स्नेह	१	७	२७
स्तेन	२	१०	२५	स्थावर	३	१	७३	स्पर्श	१	५	७
स्तेम	३	२	२९	स्थाविर	२	६	४०	"	३	२	१४
स्तेय	२	१०	२५	स्थासक	२	६	१२२	स्पर्शन	१	१	६१
स्तैन्य	२	१०	२५	स्थास्तु	३	१	७३	"	२	७	२९
स्तोक	३	१	६१	स्थिति	२	८	२६	स्पश	२	८	१३
स्तोकक	२	५	१७	"	३	२	२१	"	३	३	२१५
स्तोत्र	१	६	११	स्थिरतर	३	१	७३	स्पष्ट	३	१	८१
स्तोम	२	५	३९	स्थिरा	२	१	२	स्पृक्का	२	४	१३३
स्तोम	३	३	१४१	"	२	४	११५	स्पृशी	२	४	९३
स्त्री	२	६	२	स्थिरायुष	२	४	४६	स्पृष्टि	३	२	९
स्त्रीधर्मिणी	२	६	२०	स्थूणा	२	१०	३५	स्पृष्टा	१	७	२७
स्थण्डिल	२	७	१८	"	३	३	५१	स्पृष्टु	३	२	१४
"	२	७	४४	स्थूल	३	१	६१	स्फटा	१	८	९
स्थण्डिलशायिन्	२	७	४४	"	३	३	२०५	स्फाति	३	२	९
स्थपति	२	७	९	"	३	१	६	स्फार	३	१	६३
"	३	३	६१	स्थूललक्ष्य	३	१	६				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
रिफाच्	२	६	७५	स्रस्त	३	१	१०४	स्वर्ग	१	१	६
स्फुट	२	४	७	स्राक्	३	४	२	"	३	५	११
"	३	१	८१	स्रुच्	२	७	२५	स्वर्ण	२	९	९४
स्फुटन	३	२	५	स्रुत	३	१	९२	स्वर्णकार	२	१०	८
स्फुरण	३	२	१०	स्रुव	२	७	२५	स्वर्णक्षीरी	२	४	१३८
स्फुरणा	३	२	१०	स्रुवा	२	४	८३	स्वर्णदो	१	१	४९
स्फुलिङ्ग	१	१	५७	स्रुवावृक्ष	२	४	३७	स्वर्मानु	१	३	२६
स्फूर्जक	२	४	३७	स्रोतस्	१	१०	११	स्वर्वेश्या	१	१	५२
स्फूर्जधु	१	३	१०	"	३	३	२३४	स्वर्वैद्य	१	१	५१
स्फेष्ठ	३	१	११२	स्रोतस्वती	१	१०	३०	स्ववासिनी	२	६	९
स्म	३	४	५	स्रोतोञ्जन	२	९	१००	स्वसृ	२	६	२९
"	३	४	१७	स्व	२	६	३४	स्वस्ति	३	३	२४२
स्मर	१	१	२५	"	३	३	२१२	स्वस्तिक	२	२	१०
स्मरहर	१	१	३३	स्वच्छन्द	३	१	१५	स्वस्तीय	२	६	३२
स्मित	१	७	३४	स्वजन	२	६	३४	स्वाति	३	५	३८
स्मृति	१	६	६	स्वलन्त्र	३	१	१५	स्वादु	३	३	९४
"	१	७	२९	स्वधा	३	४	८	स्वादुकण्टक	२	४	३७
स्यद	१	१	६४	स्वधिति	२	८	९२	"	२	४	९८
स्यन्दन	२	४	२६	स्वन	१	६	२१	स्वादुरसा	२	४	१४४
"	२	८	५१	स्वनित	३	१	९४	स्वादी	२	४	१०७
स्यन्दनारोह	२	८	६०	स्वप्न	१	७	३६	स्वाध्याय	२	७	४६
स्यन्दिनी	२	६	६६	स्वप्नज्	३	१	३३	स्वान	१	६	२३
स्यञ्ज	३	१	९२	स्वभाव	१	७	३८	स्वान्त	१	४	३१
स्यूत	२	९	२६	स्वभू	१	१	१८	स्वाप	१	७	३६
"	३	१	१०१	स्वयंवरा	२	६	७	स्वापतेय	२	९	९०
स्यूति	३	२	५	स्वयम्	३	४	१६	स्वामिन्	२	८	१७
स्योनाक	२	४	५७	स्वयम्भू	१	१	१६	"	३	१	१०
स्रंसिन्	२	४	२८	स्वर्	३	३	२५५	स्वाराज्	१	१	४३
स्रज्	२	६	१३५	स्वर	१	६	४	स्वाहा	२	७	२१
स्रव	३	२	९	स्वरु	१	१	४७	"	३	४	८
स्रवद्गर्भा	२	९	६८	"	३	३	१६८	स्वित	३	३	२४२
स्रवन्ती	१	१०	३०	स्वरूप	१	७	३८	स्वेद	१	७	३३
स्रष्टृ	१	१	१७	"	३	३	१३१	स्वेदज	३	१	५१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
स्वेदनी	२	९	३०	हरित	१	३	१	हल्लक	१	१०	३६
स्वेर	३	३	१९३	"	१	५	१४	हव	३	२	८
स्वेरिणी	२	६	११	"	३	५	१९	"	३	३	२०७
स्वेरिता	३	२	२	हरित	१	५	१४	हविस्	२	९	५२
स्वेरिन्	३	१	१५	हरितक	२	९	३४	हन्य	२	७	२४
ह	३	४	५	हरिताल	३	५	३१	हव्यवाहन	१	१	५५
हंस	१	३	३१	हरितालक	२	९	१०३	हस	१	७	१८
"	२	५	२३	हरिदध	१	३	२९	हसनी	२	९	३०
"	३	३	२२६	हरिद्रा	२	९	४१	हसन्ता	२	९	२९
हंसक	२	६	११०	हरिद्राभ	१	५	४१	हस्त	२	६	८६
हजिका	२	४	८९	हरिद्रु	२	४	१०१	"	२	६	९८
हजे	१	७	१५	हरिन्मणि	२	९	९२	"	३	३	५९
हट्ट	३	५	१८	हरिप्रिया	१	१	२७	हस्नवारण	३	२	५
हट्टविलासिनी	२	४	१३	हरिमन्थक	२	९	१८	हस्तिन्	२	८	३४
हठ	२	८	१०८	हरिवालुक	२	४	१२१	हस्तिनख	२	२	१७
हण्डे	१	७	१५	हरिहय	१	१	४३	हस्तिपक	२	८	५९
हत	३	१	४१	हरीतकी	२	४	१८	हस्त्यारोह	२	८	५९
हनु	२	४	१३०	"	२	४	५३	हा	३	३	२५७
"	२	६	९०	हरेणु	२	४	१२०	हाटक	२	९	९४
हन्त	३	३	२४५	"	२	७	१६	हायन	१	४	२०
हन्न	३	१	९६	हर्म्य	२	२	९	"	३	३	१०८
हय	२	८	४४	हयंक्ष	२	५	१	हार	२	६	१०५
हयपुच्छी	३	४	१३८	हर्ष	१	४	२४	हारीत	२	५	३५
हयमारक	२	४	७६	हर्षमाण	३	१	७	हार्द	१	७	२७
हर	१	१	३३	हल	२	९	१३	हाला	२	१०	३९
हरण	२	८	२८	हला	१	७	१५	हालिक	२	९	६४
हरि	२	५	१	हलायुध	१	१	२३	हाव	१	७	३२
हरिचन्दन	१	१	५०	हलाहल	१	८	१०	हास	१	७	१९
"	२	६	१३१	हलिन्	१	१	२४	हास्तिक	२	८	३६
हरिण	१	५	१३	हलिप्रिय	२	४	४२	हास्य	१	७	१७
"	२	५	८	हलिप्रिया	२	१०	३९	"	१	१	५२
हरिणी	३	३	५०	हल्य	२	९	८	हाहा	३	३	२५७
				हल्या	३	२	४१	हि	३	४	५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
हिंसा	३	३	२२९	कुतभुज्	१	१	५५	हेरम्ब	१	१	३८
हिंस्र	३	१	२८	हुम्	३	३	२५३	हेला	१	७	३२
हिका	३	५	८	"	३	४	१८	हेषा	२	८	४७
हिङ्गु	२	९	४०	हृति	१	६	८	हे	३	४	७
हिङ्गुनिर्यास	२	४	६२	"	३	२	८	हैमवती	१	१	३६
हिङ्गुल	३	५	२०	हृह	१	१	५१	"	२	४	५९
हिङ्गुली	२	४	११४	हणीया	३	२	३२	हैमवती	२	४	१०३
हिज्जल	२	४	६१	हृद	१	४	३१	"	२	४	१३८
हिन्ताल	२	४	१६९	"	२	६	६४	हैयङ्गवीन	२	९	५२
हिम	१	३	१८	हृदय	१	४	३१	होतु	२	७	१७
"	१	३	१९	"	२	६	६४	होम	२	७	१४
"	३	५	२२	हृदयङ्गम	१	६	१८	होरा	३	५	१०
हिमवत्	२	३	३	हृदयालु	३	१	३	कस्	३	४	२२
हिमवालुका	२	६	१३०	हृष	३	१	५३	कद	१	१०	२५
हिमसंहति	१	३	१८	हृषीक	१	५	८	कसिष्ठ	३	१	११२
हिमांशु	१	३	१३	हृषीकेश	१	१	१८	कस्व	२	६	४६
हिमानी	१	३	१८	हृष्ट	३	१	१०३	"	३	१	७०
हिमावती	२	४	१३८	हृष्टमानस	३	१	७	कस्वगवेषुका	२	४	११७
हिरण्य	२	१	९०	हे	३	४	७	कस्वाङ्ग	२	४	१४२
"	२	९	९१	हेति	१	१	५७	हादिनी	१	१	४७
"	२	९	९४	"	३	३	७१	"	१	३	९
हिरण्यगर्भ	१	१	१६	हेतु	१	४	३८	"	१	१०	३०
हिरण्यरेतस्	१	१	५५	हेमकूट	२	३	३	हादिनी	३	३	११२
हिरण्यवाह	१	१०	३४	हेमदुग्धक	२	४	२२	ही	१	७	२३
हिरुक्	३	४	३	हेमन्	२	९	९४	"	३	५	३
"	३	४	७	"	३	५	२३	हीण	३	१	९१
हिलमोचिका	२	४	१५७	हेमन्त	१	४	१८	हीत	३	१	९१
ही	३	४	९	हेमपुष्पक	२	४	६३	हीवेर	२	४	१२२
हीन	३	१	१०७	हेमपुष्पिका	२	४	७१	हेषा	२	८	४७
"	३	३	१२९	हेमाद्रि	१	१	४९	हादिनी	२	४	१२४
कुतभूक्षिया	२	७	२१								

इत्यमरकोषमूलस्थशब्दानामकारादिशब्दानुक्रमणिका समाप्ता ॥

अमरकोष-क्षेपकटीकास्थ-शब्दानामकारादिक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका

अंवल]

[अन मि तम्पच

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अ				अग्रेदिधिपु	२	६	२३	अटा	२	७	३५
अंवल	१	५	९	अग्न्य	२	६	२३	अट्टालिक	२	२	९
अंशु	१	३	३३	अङ्क	२	६	७७	अट्या	२	७	३५
४१ अंशुनालित्	१	३	३०	अङ्कूर	२	४	४	अणवीन	२	९	७
३ अकलमष	३	१	११०	अङ्गाट	२	४	२९	अणव्य	२	९	७
अकिञ्चन	३	१	४९	अङ्गन	२	२	१३	१७ अणिमा	१	१	३५
अक्षपटलिक	२	८	५	अङ्गारधानी	२	९	२९	अण्डकोष	२	६	७६
१८ अक्षपाद	२	७	६	अङ्गारपात्रो	२	९	२९	१ अण्डज	१	१	१७
अक्षरविन्यास	२	८	१६	अङ्गुरि	२	६	८२	अतिक्रम	२	८	९६
अक्षरसंस्थान	२	८	१६	अङ्गुरीयक	२	६	१०७	अतिथी	२	७	३४
अक्षिगत	३	१	११२	अङ्गुल	२	६	८२	अतिवल	२	८	७२
अक्षिव	२	९	४१	अङ्गुलि	२	६	८२	अतिसौरम	१	४	३३
अगच्छ	२	४	५	अङ्गुलि	२	६	८२	अतीसारकिन्	२	६	५९
अगरी	२	४	६९	अङ्गुलि	१	४	२३	अत्यन्तकोपन	३	१	३२
अगरु	२	६	१२६	अङ्गुलि	२	४	५	अत्यल्प	३	१	६२
॥	२	६	१२७	अङ्गुलिपि	२	४	९२	अधः	३	८	१
अगस्ति	१	३	२०	अङ्गुलिपि	२	४	९२	अधःक्षिप्त	३	१	११२
अगुरुवासन	१	५	११	अङ्गुलि	३	३	२९	अधामार्गव	२	४	८८
अगुरुशिंशपा	२	४	६२	अङ्गुलि	२	८	१२	अधिक	२	९	८०
अग्निज्वाला	२	४	११८	अङ्गुलि	३	५	२३	अधिप	२	८	१
अग्निमुखा	२	४	११८	अङ्गुलि	१	३	५	अधिपाङ्ग	२	८	६३
अग्रसर	२	८	७२	अङ्गुलि	३	३	२९	अधीर	३	३	१९
अग्रिम	२	६	४३	अङ्गुलि	२	१०	२८	अधोमुख	३	१	१०
अग्रोम	२	६	४३	अङ्गुलि	२	८	८४	अधरेष्टुस्	३	४	२१
अग्रीय	२	६	४३	अङ्गुलि	२	४	१०३	अनधीनक	२	१०	९
॥	३	१	५८	अङ्गुलि	२	४	१	अनमितम्पच	३	१	४८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अनर्थक	१	६	२०	अपरत्य	३	५	२३	अमण्ड	२	४	५१
अनायासकृत	३	१	९४	अपदान	३	२	३	अमल	२	९	१००
अनाह	२	६	११४	अपध्वस्त	३	१	९४	अमला	२	४	१२७
४६ अनीकस्थ	३	३	८५	अपर	२	८	४०	अमलाञ्जटा	२	४	१२७
अनुकर्षन्	२	८	५७	अपरेद्युस्	३	४	२१	अमा	१	४	८
अनुचर	२	८	९	अपशद	२	१०	१६	अमानस्य	१	५	३
अनून	३	१	६५	अपष्टुर	३	१	८४	अमामासी	१	४	८
अनृत	१	६	२१	अपाची	१	३	१	अमावासी	१	४	८
अनेहमूक	३	१	३८	अपोदका	२	४	१५७	अमावसी	१	४	८
३२ "	३	३	१७	अबर	२	८	४०	९२ अमृत	३	३	२३
३२ अन्तरिक्ष	१	२	१	अब्ज	२	९	८४	२१ अमृत्य	३	३	११२
अन्तर्गडु	३	१	११२	४१ अम्बिजनीपति	१	३	३०	अमेधस्	३	१	४८
अन्तर्गल	२	४	७४	अमिख्या	१	३	१७	अमोधा	२	४	५४
अन्तर्वैशिक	२	८	८	अमिनवोद्भिज्	२	४	४	अम्बरमणि	१	३	३०
अन्तिका	१	७	१५	अभिभूत	२	८	११२	अम्रातक	२	४	२७
अन्तिकाश्रय	३	२	१९	अभिमर्द	२	८	१०५	अम्ल	१	५	९
अन्तिम	३	१	८१	अभियाति	२	८	११	अम्ललोलिका	२	४	१४०
अन्ती	२	९	२९	४६ अभियोग	१	६	१६	अम्ललोलिका	२	४	१४०
अन्वी	२	४	१३७	अभिषङ्ग	३	२	६	अम्लवेतस	२	४	१४१
अन्दिता	२	९	९	अभिषस्ति	२	७	३२	अम्लीका	२	४	४२
अन्दू	२	८	४१	अभिसर	२	८	७२	अयस्कर	२	१०	७
अन्ध	१	१०	४	अमीर	२	९	५७	अर्पस्कार	२	१०	७
अन्धतामिश्र	१	९	२	अमोशु	३	३	२२०	अयुत	२	९	८४
२२ अन्वित	३	१	११२	अभ्यजन	२	९	४९	अयोनि	२	९	२५
अन्वीक्षण	३	२	३०	अभ्यवहार	२	९	५६	अरद्ध	२	४	५७
२२ अन्वीत	३	१	११२	अभ्यास	३	१	६७	अररि	२	२	१७
अन्वेषण	३	२	३०	अभ्याहार	३	२	१७	अररी	२	२	१७
९ अन्वेष्टृ	३	१	११०	२० अभ्युत्थान	२	७	३१	१५ अरविन्द	१	१	२६
अपकुष्ठ	३	१	५४	अभ्युत्स	२	९	४७	अराल	२	६	१२७
अपगा	२	१०	३०	अभ्योष	२	९	४७	अर्चि	१	१	५७
अपटान्तर	३	१	६८	अभ्री	१	१०	१३	अर्चित	३	१	९८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
अर्जुन	२	९	९५	अवाचान	३	१	३३	आ			
अबुद	२	९	८४	अविद्धकर्णौ	२	४	८४	४६ आक्रोश	१	६	१६
अशै	२	६	५४	अविलम्बन	३	१	८३	आक्षदशंक	२	८	५
अशौरोगयुत	२	६	५९	अवी	२	६	२०	आक्षपटलिक	३	१	७
अल	२	९	१०३	अशन	२	९	५६	आक्षीर	२	४	३१
अलक्ष्मी	१	९	२	५ अशोक	१	१	२६	आक्षीव	२	४	३१
अलगद्द	१	८	५	"	२	४	८५	४६ आक्षेप	१	६	१६
अलवाल	१	१०	२९	अश्रप	१	१	५९	आगुर्	१	५	५
अलि	२	४	४	अश्रो	२	८	९३	आगू	१	५	५
अलिक	२	६	९२	अश्वमेधीय	२	८	४५	आग्रहायण	१	४	१४
अवग्राह	२	८	३८	१४ अष्टमूर्ति	१	१	३४	आजायाणी	२	६	१५
"	३	२	३९	असनपर्णी	१	४	१४९	आचित	३	१	१२
अवच्छुरित	१	७	३४	असमासार्था	१	६	७	आटी	२	५	२५
अवटि	१	८	२	असम्मत	३	१	११०	आढो	२	५	२५
अवदाहेष्ट	२	४	१६५	असिद्धेति	२	८	७०	आणक	३	१	५४
४४ अवधान	१	५	१	असुक्षण	१	७	२३	आतपिन्	२	४	२१
अवध्य	१	६	२०	असुरो	२	९	१९	आति	२	५	२५
अवनद्ध	१	७	४	असूक्षण	१	७	२३	आतिथि	२	७	३४
अवन्ध्य	२	४	६	असूक्ष्मसंज्ञ	२	६	१२४	आतगन्ध	३	१	४०
अवपात	३	३	८५	अशृगधारा	२	६	६२	आत्मजा	२	६	२८
अवराह	१	१०	२१	असेचनक	३	१	५३	आत्मदर्श	२	६	४०
अवलक्ष	१	५	१३	अस्वन्त	२	९	२९	आदण्ड	२	४	५१
५० अवला	२	६	२	अस्वाध्याय	२	७	५३	२१ आदिकवि	२	७	३५
५२ अवलेप	१	७	२१	अहःपति	१	३	३०	आदिम	३	१	८०
अववाद	१	६	१३	अहःपति	१	१	३०	आनक	१	७	६
५२ अवष्टम्भ	१	७	२१	अहत	२	६	११२	आनुपूर्व्यं	२	७	३६
अवसर्प	२	८	१३	अहिजित	३	३	८५	आन्त्र	२	६	६६
अवसित	२	९	२३	अहिमार	३	४	५०	आपति	२	८	८२
अबस्कन्दन	२	८	११०	अहिमेद	२	४	५०	आपदा	२	८	८२
अवहेला	१	७	२३	४ अहिर्बुध्न्य	१	१	३४	आपस्	१	१०	३
अवाचीन	१	३	१	अहो	३	४	५	आपीनस्	२	६	५१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
आस	३	३	८५	आवर्तना	२	१०	३३	इ			
आप्य	२	४	१२६	आवली	२	४	४	इक्षुद	१	१०	२
आवाधा	१	९	३	आवाप	१	१०	११	इज्जल	२	४	६१
९२ आमरण	३	५	२३	आविश	२	४	६७	इज्या	२	१	२
आभीरपल्ली	२	२	२०	आवृत्त	१	७	१२	इतरेशुम्	३	४	२१
आम	२	६	५१	२० + आवेशिक	७	३३		इतर	२	९	६२
आमण्ड	२	४	५१	आशय	३	२	११	४१ इन	१	३	३०
आमन्त्रण	३	२	७	आशयश	१	१	५४	९ इन्दिरा	१	१	२७
आमिषी	२	४	१३४	६९ "	३	३	१३१	इन्दीवार	१	१०	३७
आमिक्षा	२	७	२३	आशिर	१	१	५९	१४ इन्द्रलुप्तक	२	६	५५
७१ आम्नाय	३	३	१६१	५५ आशिस्	१	८	८	इन्द्रसुरित	२	४	६८
आम्लिका	२	४	४३	आशीर्विष	१	८	७	१६ इन्द्राणी	१	१	३५
आम्लीका	२	४	४३	८७ आशु	३	३	२१८	इवोर	२	४	१५५
७ आयःशु-				आशुव्रीहि	२	९	१५	१ इला	२	१	३
लिक	३	१	११०	आश्रव	३	२	२९	इलि	२	८	९१
आरग्वध	२	४	२३	४३ + आश्विन	१	४	१३	इली	२	८	९१
आरनाल	२	९	४०	४३ + आश्विनी	१	४	१३	इषिका	२	८	३८
आरग्वध	२	४	२३	आधीय	२	८	४८	"	२	१०	३२
आर्ति	३	३	६८	४० + आषाढ	१	४	१३	इषीका	२	८	३८
१९ आर्या	१	१	३७	४० + आषाढक	१	४	१३	"	२	१०	३२
१८ आर्हक	२	७	६	४० + आषाढी	१	४	१३				
आलाडु	२	४	१५६	आस	२	८	८३	ईरिण	३	३	५७
आलाबू	२	४	१५६	आसन	२	४	४४	ईर्या	२	७	३५
आलाम्बु	२	४	१५६	आसनपर्णी	२	४	१४९	ईर्वोर	२	४	१५५
आलि	२	५	१४	आसुर	१	१	१२	ईर्वालु	२	४	१५५
आलिन्द	२	२	१२	आस्फोट	२	४	८०	६ ईर्ष्यालु	३	१	११०
आली	२	१	१४	आस्फोता	२	४	७०	ईलि	२	८	९१
"	२	५	१४	"	२	२	१०४	ईशा	२	९	१४
आलोकनक्षम	३	२	३१	आहितलक्षण	३	१	१०	१८ ईशिरव	१	१	३५
आलोचित	३	१	९९	आहितुण्डिक	१	८	११	ईश्वरा	१	१	३६
								ईषिका	२	८	३८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
उ				१३ उद्धव	१	१	२८	उपोषण	२	७	३८
उच्छादन	२	६	१२१	उद्भान	३	१	९७	उपोषित	२	७	३८
उच्छृङ्खल	३	१	८३	उद्धार	२	९	१२	उत्प्लुष्ट	२	९	८
उच्छ्र	२	९	२	उद्दुर	३	१	७०	उभू	३	४	१८
९४ उद्धु	३	५	२३	१५ उद्धृत	३	१	११२	उभ्य	२	९	७
उद्धुम्बर	२	४	२२	उभयगत	३	१	३	उरणाक्ष	२	४	१४७
उद्धुम्बरपर्णी	२	४	१४४	उद्भिक्त	३	१	२२	उरीकृत	३	१	१०८
उत्कण्ठित	३	१	८	उद्भान	२	९	२	उरुवृक्ष	२	४	५१
३० उत्कलिका	३	३	१७	"	३	१	११२	उरुवृक्ष	२	४	५१
उत्तरा	३	३	१९०	उधस्य	२	९	५१	२२ उर्वशी	१	१	५१
उत्तरेद्युस्	३	४	२१	उधमान	२	९	२	१९ उरुका	१	१	२४
उत्तुङ्ग	३	१	७०	उन्दुर	२	५	११	उत्कासनक	१	७	३५
उत्तोरित	२	८	४८	उन्मथ	२	८	११५	उलव	२	६	३८
उत्पलिनी	१	१०	३९	उन्मद	३	१	२३	उषण	२	९	३६
१२ उत्पश्य	३	१	११०	उन्मादिन्	२	६	६०	उषती	१	६	१८
१५ उत्पादित	३	१	११२	उन्मान	२	९	८५	उषा	१	४	२
उत्सर्ग	२	७	२९	उन्मुख	३	१	११०	"	२	९	३
उत्सुक	३	१	१८	उन्मूलित	३	१	११२	"	३	४	६
१८ उदञ्चित	३	१	११२	उपकण्ठ	२	८	४८	३३ उष्टिका	३	३	१७
९३ उदर	३	५	२३	उपकालिका	२	९	३७	उष्णक	१	४	१८
उदरम्भरि	३	१	२१	उपनय्या	२	७	३४	उष्मक	१	४	१८
उदरिल	२	६	४४	उपजोषम्	३	४	१०	उष्मागम	१	४	१९
३० उदलावणिकर	९	४४		उपदंश	२	१०	४०	ऊ			
उदञ्चित	२	९	५३	१ उपप्लुत	३	१	२३	ऊर्जस्	२	८	१०२
४५ उदास्थित	३	३	८५	उपयोषम्	३	४	१०	ऊर्ध्वक्ष	२	६	४७
उदित	३	१	९५	उपल	३	३	२००	ऊर्ध्वन्दम	३	१	११०
३४ उदीचीन	१	३	१	उपवस्त	२	७	३८	ऊर्ध्वस्थ	३	१	११०
उदूखलक	२	४	३४	२५ + उपवाह्य	२	८	३६	ऊर्वः	१	१	५६
उद्धर्षण	१	७	३५	११ उपविष्ट	३	१	११०	ऊर्वरा	२	१	४
उद्धासन	२	१०	२७	उपाग्र	३	१	५९	ऊषणा	२	४	९७
उद्दाम	३	१	८३	उपोदका	२	४	१५७	ऊष्ण	१	४	१८

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कृष्णक	१	४	१८	ओ				र३ कण्टक	३	३	१७
कृष्णोपगम	१	४	१९	ओक	३	३	२३३	कटंवर	२	४	८५
कृष्मण	१	४	१८	ओक्कार	१	६	४	कटम्बरा	२	४	८५
ऋ				ओजस्	२	८	१०२	"	२	४	१५३
ऋचीष	२	९	३२	औ				कटि	२	६	७५
४४ ऋत	३	३	८५	औदुम्बर	२	९	९७	कटिप्राथ	२	६	७५
ऋतुराज	१	४	१८	औपवत्स	२	७	३५	कटिल्लक	२	४	१५४
ऋश्यकेतु	१	१	२७	२५ औपवाह्य	२	८	३५	कटी	२	६	७४
ऋष्टि	२	८	८९	औमीन	२	९	७	काडकूर	२	९	२२
ऋष्य	२	५	१०	औरस्य	२	६	२८	कणिष	२	९	२१
ऋष्यकेतु	१	१	२७	और्ध्वदेहिक	२	७	३०	कण्टकारी	२	४	९३
ऋष्यगन्वा	२	४	११०	औलूक्य	२	७	६	कण्टकाशन	२	९	७५
"	२	४	१३७	क				कण्टफलक	२	४	६१
ऋष्यगन्विका	२	४	११०	क	१	१०	४	८ कण्ठीरव	२	५	१
ए				ककुभत	२	९	६०	कण्डु	२	६	५३
७८ एककुण्डल	३	२०५		ककुन्दर	२	६	७५	कण्डूरा	२	४	८६
एकगुरु	२	७	१०	कक्खट	३	१	७६	कण्डोलवीणा	२	१०	३१
एकतर	३	१	८२	कक्ष्य	२	६	७९	कण्डोली	२	१०	३१
१३ एक इष्टि	२	५	२०	कङ्क	२	५	२२	२६ कदन	२	८	११५
एकपाद्	२	१	१५	कङ्किणी	२	६	११०	कदल	२	४	१२३
एकल	३	१	८२	कङ्गू	२	९	२०	कदला	२	४	११३
एडुक	२	२	४	कचपक्ष	२	६	९८	कदलिन्	२	५	९
एडोक	२	२	४	कचपाश	२	६	९८	कट्टु	२	४	३५
एवर्ष	२	४	११५	कचहस्त	२	६	९८	कनक	२	९	९६
एलगज	२	४	१४७	कच्छ	३	३	२९	कनीनिका	२	६	९२
एलवालुक	२	४	१२१	कच्छप	१	१०	२०	कनीयस्	२	६	४३
एपिका	२	१०	३२	२९ "	१	१	७१	कन्द	१	१०	४३
ऐ				कञ्जलध्वज	२	६	१३८	कन्दलिन्	२	५	९
ऐकान्य	३	१	८०	५३ कञ्चुकिन्	२	८	८	कन्दू	२	९	३०
ऐडविड	१	१	६९	कट	२	६	९०	कपिकञ्चू	२	४	८७
ऐडविड	१	१	६९	२३ कटक	३	३	१७	कपिजल	२	५	३५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कपित्थ	२	४	२१	कर्कटकं	२	४	१६३	कवाट	२	२	१७
कपिल	२	१०	२२	कर्कटि	२	४	१५५	कविरथ	२	४	२१
कपिला	२	४	६३	कर्कशु	२	४	३६	काथिय	२	८	४८
"	२	९	३७	कर्कराडु	२	५	१९	कवी	२	८	४८
कपिशायन	२	१०	४०	कर्णजलोका	२	५	१३	कशारुका	२	६	६९
कपिशोर्ष	३	३	२२५	कर्पर	२	६	८०	कश्मल	३	१	५५
कपूय	३	१	५४	उप "	३	३	१९२	काक	२	५	४३
कपोनि	२	६	८०	कर्पराल	२	४	२९	काकचिञ्चला	२	४	९८
कफणि	२	६	८०	कर्पासी	२	४	११६	काकचिञ्चि	२	४	९८
कवरी	२	४	१३९	कनैर	१	१	६०	काकजङ्घा	२	४	११८
कमन्ध	१	१०	४	कनूर	२	४	१५४	काकलि	१	७	२
१ कमलोद्भव	१	१	१७	कनूर	२	४	१५४	काकस्थाली	२	४	५४
कमलिनी	१	१०	३९	कनूरक	२	१	१३५	९३ काकुद	३	५	२३
कम्बलिवाद्यक	२	८	५२	कर्मण्यभुज	३	१	१९	काचमाचो	२	४	१५१
कम्बो	२	९	३४	२० कर्ममोटी	१	१	३७	काचर	२	६	४९
कम्भारी	२	४	३५	कर्मवृत्त	३	२	३	काञ्चिक	२	९	३९
करङ्क	२	६	६९	३९ कर्मसाक्षिन्	१	३	३०	काण्डस्पृष्ट	२	८	६७
करटक	१	१०	२०	कर्मीर	१	५	१७	कादम्ब	३	३	१३३
करडु	२	५	१९	कर्बरी	२	९	४०	काद्रव	२	९	१६
करडक	१	१०	२०	कसुर	२	९	९४	कापथ	२	४	१६५
करपाल	२	८	९१	कलधौत	२	९	९५	१९ कापिल	२	७	६
करपालिका	२	८	९१	"	२	९	९६	कापोत	२	९	१००
करपीडन	२	७	५६	कलशी	२	४	९३	कामक्रामिन्	२	८	७६
करभ	२	८	३५	"	२	९	७४	कामदान	३	२	३
करहाट	२	४	५२	कलस	२	९	३१	७ कामाङ्ग	२	४	३३
करिगर्जित	२	८	१०७	कलिकारक	२	४	४८	काम्पिश्य	२	४	१४६
करिपिप्पली	२	४	९७	कल्प	२	१०	३७	कायस्था	२	४	५८
करोटी	२	६	६९	कल्य	२	१०	४०	कारित	३	१	८९
कर्क	१	१०	२०	कल्यपाल	२	१०	१०	कारोत्तम	२	१०	४२
"	१	१०	२१	कल्याण	२	९	९५	४३ + कार्तिक	१	४	१३
कर्कट	१	१०	२१	कवरी	२	६	९७	४३ + कार्तिकी	१	४	१३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
काश्मीरी	२	४	३६	किञ्जल्क	३	३	१७	५४ कुम्भीनस	१	८	८
कार्षक	२	९	६	किम्पच	३	१	४८	कुम्भीलखलक	२	४	३४
काल	२	८	११६	किर	२	५	२	कुरवक	२	४	७४
कालखञ्ज	२	६	६६	किरात	२	४	१४३	"	२	४	७५
३७ कालञ्ज	२	३	३३	किलाटी	२	९	४४	कुरण्डक	२	४	७४
कालमेशिका	२	४	९०	किलिमष	३	३	२२४	कुरण्डक	२	४	७४
कालमेशी	२	४	९६	कीकट	३	१	४९	"	२	४	७५
काला	१	४	३६	कीनाश	३	१	४८	कुरवक	२	४	७४
"	२	४	५४	कीर्ण	३	१	८५	कुरवका	२	४	७४
कालायोन	२	९	८	कीशपर्णी	२	४	८९	७८ कुल	३	३	२०५
कालिका	२	९	३७	कुक	२	५	५२	कुलिक	२	१०	५
कालेयक	२	४	१०१	कुकुद	३	१	१४	कुलिर	१	१०	२०
"	२	६	१२६	कुञ्चिका	२	०	३७	कुलमाषाभिषुत	२	९	३९
काल्य	१	४	२	कञ्ची	२	९	३७	कुलमास	२	९	१८
काल्यक	२	४	१३५	कुटप	०	९	८९	कुल्य	२	७	३
काल्या	१	६	१८	कुटर	२	९	७४	कुल्या	२	६	८९
काबर	२	६	४९	कटि	२	२	६	७३ "	३	३	१६१
काश	२	६	५२	कट्टिम	२	०	८	कुव	१	१०	३७
७० काषाय	३	३	१६१	कुटमल	२	४	६	कुवर	१	५	९
काष्ठकुहाल	१	१	१३	कुडप	२	९	८९	कुवल	१	४	२६
काष्ठाभुवाहिनी	१	१०	११	कुतप	२	७	३१	"	१	१०	३७
कास	२	४	१६२	५९ "	३	३	१३१	कुशास्मलि	२	४	४७
किकि	२	५	१६	२३ कुन्द	१	१	३०	कुशीद	२	९	४
किकिदिव	२	५	१६	कुन्दु	२	४	२१	कुशीदक	२	९	५
किकिदिवि	२	५	१६	कुन्दुर	२	४	२१	कुशीद	२	९	४
किकीदिव	२	५	१६	कुपथ	२	१	१६	कुशीदक	२	९	५
किकीदिवी	२	५	१६	कुपिन्द	२	१०	६	कुष्माण्डक	२	४	१५५
किकीदीवि	२	५	१६	कुम्भज	१	३	२०	कुसीद	२	९	२
किक्किणी	२	६	११०	कुम्भक	१	१०	३८	कुस्तुम्बुरी	२	९	३७
किञ्जलिक	१	१०	२२	कुम्भिन्	२	८	३४	६ कुबन	३	१	११०
किञ्जुलुक	१	१०	२२	१ कुम्भिनी	२	१	३	कुड	१	४	९

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
कूटक	२	९	१३	केशर	२	४	२५	कौश्वदारण	१	१	४०
कृषी	२	६	४८	"	२	४	६४	कौटवी	२	६	१७
कूपक	२	६	७५	केशरिन्	२	५	१	१५ कौमारी	१	१	३५
कूलङ्कषा	१	१०	३०	केशवत्	२	६	४५	कौलस्थान	२	९	८
कृकलाश	२	५	१२	केशवेष	२	६	५७	कौलेयक	२	७	३
कुकुलास	२	५	१२	केशहस्त	२	६	९८	१२ कौशिक	२	५	१४
कृतकर्मन्	३	१	४	कैटयं	२	४	४०	२२ "	२	७	३५
कृतकृत्य	३	१	४	कैटयं	२	४	४०	२२ कौषिक	२	७	३५
कृतज्ञ	२	१०	२२	कैदार	२	९	११	क्रकर	२	५	३५
कृतसापलका	२	६	७	कैरात	२	४	१४३	क्रुडु	२	९	२०
कृतहस्त	३	१	४	कैवर्तमुस्तक	२	४	१३२	क्रिमि	२	५	१३
कृतार्थ	३	१	४	कैवर्तमुस्तक	२	४	१३२	६९ क्रिया	३	३	१६१
३९ कृपीट	३	३	३९	कोक	२	५	३५	क्रुञ्च	२	५	२२
क्रमिकोशोत्थ	२	६	१११	कोटि	२	८	८४	क्रुषा	१	७	२६
क्रमिकोषोत्थ	२	६	१११	"	२	९	८४	क्रूर	२	९	७७
क्रमिघ्नो	२	४	१०६	कोटी	२	८	९३	क्रेट	२	९	७८
कृशर	२	९	४९	कोटीश	२	९	१२	कोधिन्	३	१	३२
कृषिक	२	९	१३	कोटवी	२	६	१७	क्रिन्नाक्ष	२	६	६०
कृषिका	२	९	१३	कोपन	३	१	३२	क्रोमन्	२	६	६५
कृष्णकर्मन्	३	१	४६	कोयष्टि	२	५	३५	क्रुडु	२	९	२०
कृष्णका	२	९	१९	कोरक	२	६	१२९	क्षतव्रत	२	७	५४
कृष्णभेदा	२	४	८६	कोला	२	४	३६	२० क्षार	१	१	५७
कृष्णसार	२	५	१०	कोली	२	४	३६	क्षिपणि	१	१०	१३
कृष्णा	२	९	६७	८४ कोश	३	३	२१८	क्षिपा	१	१०	१३
कृष्णामिष	२	९	९८	कोशिका	२	९	३२	क्षिणु	३	१	३०
कृष्णायस	२	९	९८	कोष	२	५	३७	१० क्षीरसागर-			
कृसर	२	९	४९	"	२	६	१३२	कन्यका	१	१	२७
केली	१	७	३२	"	२	८	१७	९ + क्षीराब्धि-			
१४ केशघ्न	२	६	५५	"	२	९	९१	तनया	१	१	२७
केशपक्ष	२	६	९८	कोषफल	२	६	१३०	९ क्षीरोदततया	१	१	२७
केशपाश	२	६	९८	कौक्कुट	२	५	४३	क्षीरविकृति	२	९	४४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.
९ क्षुण्ण	३	१	११०
क्षुधा	२	९	५४
क्षुधाभिजनन	२	९	२०
क्षुब्ध	२	९	७४
क्षुर	२	८	४८
क्षुरमर्दिन्	२	१०	१०
क्षुरिका	२	८	९२
२० क्षुरित	३	१	११२
क्षेत्र	२	९	११
क्षेपणि	१	१०	१३
क्षेत्र	२	९	११
क्षोणी	२	१	१२
क्षौणी	२	१	१२
"	२	१	१२
क्षौम	२	१	१२
क्षमाभुज्	२	८	१

ख

खक्खट	३	१	७६
२० खचित	३	१	११२
खजक	२	९	७४
३३ "	३	३	१७
खदिर	२	४	४१
४० खद्योत	१	३	३०
१० खनक	२	५	११
खरागरी	२	४	६९
खजुर	२	९	९६
खर्ब	२	६	४६
२३ खर्व	१	१	३०
"	२	९	९४
खलेदार	२	९	१५
खादन	२	४	५६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.
खानि	२	३	७
खानी	२	३	७
खार	२	९	८८
खुल्लक	१	१०	१६
२८ खेटक	३	३	१७
खेला	१	७	३२
खोर	२	६	४९
खोल	२	६	४९

ग

गगनमणि	१	१	३०
गजबन्धनी	२	८	४३
गजमक्षा	२	४	१२३
१४ गजारि	१	१	३४
गजाशन	२	४	२०
गज्जा	३	३	७
११२ "	२	४	१८
गड्ड	२	६	४८
गण	२	४	१२८
३१ गणिका	३	३	१७
गणिकापति	३	३	२३
४१ गण्ड	३	३	४३
गण्डकाली	२	४	१४१
गण्डूक	२	६	१३८
९१ गण्डूष	३	३	२२५
४३ गति	३	३	८५
१३ गद	१	१	२८
गन्त्रीक	२	८	५२
५३ गन्ध	३	३	१०४
गन्धक	२	९	१०२
११ गन्धमुषी	२	५	११
गन्धमूला	२	४	१५४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.
गन्धर्व	२	५	११
गरा	२	४	६९
गरागरी	२	४	६९
१७ गरिमा	१	१	३७
गर्भवती	२	६	२२
गर्भोपघातिनी	२	९	६९
४३ गर्भुव	३	३	८५
गलन्ती	२	९	३१
गलोद्देश	२	८	४८
गवेडु	२	९	२५
गवेषणा	३	२	३०
१ गह्वरी	२	१	३
२२ गाधेय	२	७	३५
गायत्रिन्	२	४	४९
गार्गक	३	२	३९
गिन्दुक	२	६	१३८
गिरा	१	६	१
७६ गिरि	३	३	१९२
गिरिज	२	९	१००
१९ गिरिजा	१	१	३७
गिरिसार	२	९	९८
गीर्वाण	१	१	९
गीष्पति	१	३	२४
गुच्छ	२	४	१६
"	२	९	२१
३४ "	३	३	२९
गुडुची	२	४	८२
गुण्डित	३	१	८९
गुत्स	२	६	१०५
"	२	९	२१
गुत्सक	२	४	१६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
गुत्सार्द्ध	२	६	१०५	गोरुत	२	१	१८	घोट	२	८	४३
गुत्स्य	२	६	१०५	गोलिह	२	४	३९	घोणा	२	८	४९
गुत्स्यार्ध	२	६	१०५	गोष्ठथ	३	१	११०	८८ घोष	३	३	२२५
गुथित	३	१	८६	गोस	२	९	५१	च			
६१ गुम्फ	३	३	१३२	गोस्नना	२	४	१०७	चक्रवाद्य	२	३	२
गुम्फित	३	१	८६	गौधुमीन	२	९	८	चक्रिक	२	८	९७
गुरण	३	२	११	गौर	२	९	१०३	चक्षुण	२	१०	४०
गुबी	२	६	२२	२० गौरव	२	७	३३	४ चक्षुष्य	३	१	११०
गूवाक	२	१	१६९	ग्रथित	३	१	८६	चटका	२	९	११०
गृद्ध	२	५	२१	ग्रन्थ	३	३	८७	४७ चट्ट	१	६	१६
गृन्	३	१	२२	ग्रस्त	१	६	२०	चण्डांशु	१	३	३१
गृष्टि	२	५	२	ग्रहणी	२	६	५५	चण्डा	२	४	८८
गृह्योलिका	२	५	१२	ग्रहणीरुज्	२	६	५५	चण्डालिका	३	१०	३१
गृह्मणि	२	६	१३८	ग्रामीधीन	२	१०	९	२० चण्डिल	२	१०	१०
८ गृहेनदिन्	३	१	११०	ग्रामीण	३	१	११२	चतुःशाला	२	२	६
१२ गृह्य	३	१	११०	१३ ग्रामेयक	३	१	११२	चतुरब्दा	२	९	६८
गेण्डक	२	६	१३८	ग्राम्य	३	१	११२	१९ चतुर्थ	३	१	११२
८ गेहेश्वर	३	१	११०	ग्रैव	२	६	१०४	चन्दना	२	४	११२
गो	१	६	१	ग्रैवेयक	२	६	१०४	चन्द्रभागी	१	१०	३४
"	२	४	५५	घ				चन्द्रवाला	२	४	१२५
३ गोकर्ण	१	८	८	घटना	२	८	१०७	५ चन्द्रशाला	२	२	८
गोद	२	६	६५	३९ घटा	३	३	३९	चन्द्रिका	१	१०	३४
गोदुह	२	९	५७	घटिक	२	८	९७	चपेट	२	६	८४
गोनास	१	८	४	घण्टा	२	४	३९	चपेटिका	२	६	८४
गोप	२	९	१०४	घुण्टा	२	४	३७	चमर	२	८	३१
गोपकण्ठ	२	४	३७	१२ घुक	२	४	१५	चरणप	२	४	५
गोपा	२	४	११३	२२ घृताची	१	१	५१	चरण्टी	२	६	९
गोमत	२	१	१८	घृतोद	१	१०	२	चरिण्टी	२	६	९
गोमुख	१	७	८	घृष्टि	२	४	१५१	७७ चरु	३	३	१९२
गोरण	३	२	११	३८ "	३	३	३९	२० चर्चिका	१	१	३७
गोरस	२	९	५१	घृष्णि	१	३	३३	चर्पट	२	६	८४

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
चर्मप्रसेवक	२	१०	३३	चिराव	३	४	१	छगलाङ्गी	२	४	१३७
२० चर्ममुण्डा	१	१	३७	चिरबिल्व	२	४	४७	छगलाङ्घ्री	२	४	१३७
चर्वण	२	१०	४०	चिरुका	२	५	२८	छगलाण्डी	२	४	१३७
चर्वणी	२	६	१०	चिरे	३	४	१	३२ छायानाथ	१	३	३८
चषक	२	९	३२	चिरेण	३	४	१	११ छुछुन्दरी	२	५	११
४७ चाट्ट	१	६	१६	चिलचिमि	१	१०	१८	ज			
चाणक	३	२	४०	चिलिका	२	५	२८	१९ जगद्धुस्	१	३	३०
चाणकीन	२	९	८	चिल्लका	२	५	२८	जगत्	१	१	६२
चाण्डाल	२	१०	४	चीर	२	६	११५	२ जगती	२	१	३
चान्द्रभागा	१	१०	३४	चुचुक	२	६	७७	जङ्गिल	२	८	७३
चान्द्रभागी	१	१०	३४	चुछी	२	९	२९	जटि	२	४	३२
९२ चाप	३	५	२३	६ चूत	१	१	२६	जटी	२	४	३२
चामरा	२	८	३१	चूषा	२	८	४२	जटुल	२	६	४९
१६ चामुण्डा	१	१	३५	चूष्या	२	८	४२	जडा	२	४	८६
२० "	१	१	३७	चेडक	२	१०	१७	जतिल	२	९	१९
चार्वाण	३	२	४२	चेल	२	६	११५	जतुका	२	४	१५३
१९ चार्वाक	२	७	६	"	३	३	२०३	जतुका	२	५	२६
चालन	२	९	२६	४३+चैत्र	१	४	१३	५८ जन	३	३	१२८
चास	२	५	१६	४३+चैत्री	१	४	१३	जननि	२	६	२९
चित्तसमुन्नति	१	७	२२	चोदनो	२	४	९२	जननी	२	४	१५३
७५ चित्तोद्रेक	१	५	५२	४६ चोद्य	१	६	१६	जनि	२	४	१५३
८ चित्रकाय	२	५	१	चोर	२	१०	२४	"	२	६	९
चित्रकूट	२	३	३	चोरड	२	१०	२४	जनित्री	२	६	२९
चिनपिष्ट	२	९	१०५	चोरका	२	१०	२५	जन्म	१	४	३०
चिपिट	२	९	४७	चोरित	२	१०	२५	जपन	३	२	१२
१३चिरञ्जीविन्	२	५	२०	१४ "	३	१	११२	जमन	२	९	५६
चिरण्टी	२	६	९	चोली	२	६	११८	जम्बुक	२	५	५
चिरतित्त	२	४	१४३	छ				जम्भर	२	४	२४
चिरम्	३	४	१	छग	२	९	७६	जम्भीर	२	४	७९
चिरातित्त	२	४	१४३	छगल	२	९	७६	जलकुक्कुट	१	१०	२०
चिरासित्त	२	४	१४३	छगला	२	४	१३७	जलजन्तुका	१	१०	२२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
जलङ्गम	२	१०	१९	जोषितकाल	२	८	१२०	टिडिमक	२	५	३५
जलधि	२	९	८४	८५ जोषितेश	३	३	२१८	टिडिभ	२	५	३५
जलवेतस्	२	४	३०	१६ जैमनीय	२	७	६	उ			
११ जलशायिन्	१	१	२१	जोत्तो	२	४	११८	जालिम	२	४	६१
जलशुक्ति	१	१०	२३	जोषा	२	६	२	जङ्ग	२	९	७६
जलहस्तिन्	१	१०	२०	जोषिमा	२	६	२	त			
जलका	१	१०	२२	जोषित	२	६	२	तङ्क	२	१०	३४
जलोका	१	१०	२२	३६ श	३	३	३३	तद	२	३	४
जलोरोरी	१	१०	२२	शानेन्द्रिय	१	५	८	तटाक	१	१०	२८
जवन	२	९	५६	४३ + ज्यैष्ठ	१	४	१३	तटाग	१	१०	२८
जवाधिक	२	८	४५	"	१	४	१६	तडाक	१	१०	२८
जवापुष्प	२	४	७६	४३ + ज्यैष्ठी	१	४	१३	तनया	२	६	२८
जागर	२	८	६४	ज्योतिषिका	२	८	१४	तनुम्	२	६	७१
जागर्ति	३	२	१९	ज्योतिष्का	२	४	१५०	तनुस्तत	३	१	१०१
जाग्रिया	३	२	१९	ज्योत्स्ना	१	४	५	तन्त्रवाप	२	१०	६
४९ जान	३	३	८५	ज्योत्स्नावृक्ष	२	६	१३८	तन्त्रवाय	२	५	१३
जाति	२	६	१३२	ज्योत्स्नी	१	४	५	"	२	१०	६
जातिकोश	२	६	१३२	ज्योत्स्नी	१	४	५	तन्दू	२	९	३४
जातीकोष	२	६	१३२	भ				तन्द्रा	१	७	३७
जातुधान	१	१	६०	२६ शब्दावात	१	१	६२	तन्दि	१	७	३७
३३ जातुष	२	१०	२८	शटा	२	४	१२७	तन्द्री	३	३	१७६
७२ जास्थ	३	३	१६१	शपकेतु	१	१	२७	तपःछिशसह	२	७	४२
जानपद	२	१	८	शिरिका	२	५	२८	तम	१	४	२९
२८ जालिक	३	३	१७	शिरिका	२	५	२८	तमस	२	८	३
जाह्वी	१	१०	३१	शिरुका	२	५	२८	तमा	१	४	४
जित	२	८	११२	शिरुका	२	५	२८	तमि	१	४	४
जोवजोव	२	५	३५	शिरुलीका	२	५	२८	३८ तमिन्नहन्	१	३	३०
जोयनौषध	२	८	१२०	शोरिका	२	५	२८	तर	२	४	३२
जोवन्ता	२	४	८२	ट				तरक्ष	२	५	१
"	२	४	८३	३२ टङ्क	३	३	१७	तरणी	१	१०	१०
जीवाजीव	२	५	३५	टिडिम	२	५	३५	तरी	१	१०	१०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
तकुक	३	१	४९	तुण्डिकेशी	२	४	१३९	तृतीयप्रकृति	२	६	३९
तल	२	४	१६८	तुण्डित	३	६	४४	तृफला	२	९	१११
"	२	६	८४	२१ तुण्डिन्	१	१	४०	तृषा	२	९	५५
तलमीन	१	१०	१८	"	२	६	४४	तृष्णक	३	१	२२
तलुनी	२	६	८	तुण्डिभ	२	६	४४	तृष्णा	१	९	९५
तसर	३	२	२४	तुण्डिल	२	६	४५	३८ तेजसांराशि	१	३	३०
ताडपत्र	२	६	१०३	तुत्थरसाञ्जन	२	९	१०१	तेन	३	३	४३
तापन	१	३	३१	तुत्तुभ	२	९	१७	३१ तैल	२	९	४९
तापिच्छ	२	४	६८	तुन्दपरिमार्ज	२	१०	१८	तोकक	२	५	१७
तापिज	२	४	६८	तुन्दिक	२	६	४४	त्रप्स	२	९	५१
तामिन्न	१	९	२	तुन्दित	२	६	४४	३९ त्रयीतनु	१	१	३०
ताम्र	२	९	९७	तुन्दिभ	२	६	६१	त्रयोधर्म	१	६	३
५१ तार	१	७	२	तुन्दिल	२	६	६१	त्रस्तु	३	१	२६
"	२	९	९६	तुन्न	२	९	१०१	त्रस्ता	२	४	१०८
तारा	२	६	८४	तुम	२	९	७६	३३ त्रायुष	२	३	३८
३२ तारापथ	१	२	१	८२ तुमुल	३	३	२०५	त्रिपिष्टप	१	१	६
ताल	२	६	८४	तुम्ब	२	४	१५६	त्रिपुटी	२	४	१०८
तालवृन्त	२	६	१४०	तुम्बा	२	४	१५६	त्रिशोत्य	२	९	९
तित्तिर	२	५	३५	तुम्बि	२	४	१५६	३१ तिसर	२	९	४९
तिन्तिली	२	४	४३	१९ तुरीय	३	१	११२	३१ तिसरा	२	९	४९
तिन्दुको	२	४	३८	१९ तुर्य	३	१	११२	त्रुटी	२	४	१२५
तिमिङ्गिलगिल	१	१०	२०	तुलाकोटी	२	६	१०९	"	३	१	६२
तिरस्करिणी	२	६	१२०	तुलि	२	१०	३२	त्र्यम्बदा	२	९	६८
तिरस्कारिणी	२	६	१२०	तुली	२	४	४२	त्र्युषण	२	९	१११
२२ तिलोत्तमा	१	१	५१	तूणी	२	४	९५	त्वक्पत्री	२	९	४०
३१ तिलौदन	२	९	४९	८१ तूलि	३	३	२०५	त्वच्	२	४	१३४
तुकाक्षीरी	२	९	१०९	तूली	२	४	४२	त्वच	२	६	६२
तुकाशुभा	२	९	१०९	तूवर	१	५	९	त्वचा	२	६	६२
तुणि	२	४	१२८	"	३	३	१६५	त्वरि	२	२	२६
तुण्ड	२	५	३६	तुवरिका	२	४	१३१	त्वरितोदित	१	६	२०
तुण्डकैरी	२	४	१३७	तृणशूल्य	२	४	६९				

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
द				दाडिम्ब	२	४	६४	४६ दुरेषणा	१	६	१६
दंष्ट्रा	२	६	९०	दाढ्यौष्ट	२	५	२१	दुर्गसंश्वर	३	२	२५
दक	१	१०	४	२९ दाधिक	२	९	४४	दुर्गोष्ठी	१	१०	२५
९० दक्ष	३	३	२२५	दायित	३	१	४०	दुर्वाग्	३	१	३७
दक्षिण्य	३	१	५	३१ दारक	३	३	१७	दुलि	१	१०	२४
दग्धकाक	२	७	२१	दारा	२	६	६	दुष्प्रभषिणी	२	४	११४
दण्डुम	१	८	५	दारु	२	४	१३	दुष्पुत्र	२	४	१२८
दद्रुहर	२	४	१४७	९३ ,,	३	५	२३	दूरवृक्ष	२	७	६
दद्रुप्त	२	४	१४७	१३ दारुक	१	१	२८	दूष्य	२	६	१२०
दद्रूण	२	६	५९	दार्निकाकाथोद्भव	९	१०१		दूषाका	२	६	६७
दध्यूद	१	१०	२	दालिम	२	४	६४	द्वमुष्टि	३	१	४८
६ दन्तक	१	३	६	दिभिपु	२	६	२३	देवस्तात	२	३	६
दन्तिजा	२	४	१४४	दिभिषू	२	६	२३	देवस्तातविल	२	३	६
दभूनस्	१	१	५६	दिधीषू	२	६	२३	देवताल	२	४	६९
दरित	३	१	२६	४० दिनमणि	१	१	३०	देवाजीविन्	२	१०	११
दरोदर	३	३	१७२	४ दिवस्पृथिवी	२	१	१८	देश	२	१०	३७
दद्रुण	२	६	५९	१२ दिवान्ध	२	५	१४	२७ देशिक	३	३	१७
ददुंरोगिन्	२	९	५९	११ दिवान्धिका	२	५	११	देशीय	२	१०	३७
दद्रूण	२	९	५९	१२ दिवाभीत	२	५	१४	दोली	२	८	५३
५२ दर्प	१	७	२१	दिवोकस्	१	१	७	९० दोष	३	३	२२५
दर्विका	२	४	११९	दीपवृक्ष	२	६	१३८	३६ दोषण	३	३	३३
दवी	२	९	३४	दीप्यक	३	३	११	दोषा	२	६	८०
६४ ,,	३	३	१३३	दीर्घकोषिका	१	१०	२५	९० ,,	३	३	२२५
८० दल	३	३	२०५	दीर्घग्रीव	२	९	७५	दोषातिलक	२	६	१३८
२५ दव	१	१	५७	दीर्घजङ्घ	२	९	७५	दौत्य	२	८	१६
दशपुर	२	४	१३१	११ दीर्घतुण्डी	२	५	११	दौवारिक	२	८	६
दशपूर	२	४	१३१	२७ दीर्घनिद्रा	२	८	११६	३ थावापृथिवी	२	१	१८
दशेन्धन	२	६	१३८	दीर्घसूत्रिन्	३	१	१७	३ थावाभूमी	२	१	१८
दाक्षक	३	२	३९	दुन्दुक	२	४	५६	३१ बु	१	३	१
१९ दाक्षायगी	१	१	३७	दुन्दुभि	१	७	६	५८ बुघ्न	३	३	१२८
दाक्षिण्य	३	१	५	दुरालम्भा	२	४	९२	द्रप्पस्य	२	९	५१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
द्रुघन	२	८	९१	धनू	२	८	८३	धुस्तूर	२	४	७७
द्रुणि	१	१०	११	धन्य	२	९	३८	धृष्णु	३	१	१२५
द्रोण	२	५	१४	धन्या	२	९	३८	धेनुक	३	३	१५
द्रोणि	१	१०	११	धन्याक	२	९	३८	धोरित	२	८	४८
द्वाःस्थ	२	८	६	धन्व	२	८	८३	धोरितक	२	८	४८
द्वाःस्थित	२	८	६	धमनी	२	६	६५	धौतकौशेय	२	६	११२
द्वादशाङ्गुल	२	६	८४	धरणी	२	१	२	धौर्थ	२	८	४८
९४ द्वार	३	५	२३	धरणीसुत	१	३	२५	६६ ध्याम	३	३	१४५
द्वास्थितदर्शक	२	८	६	धर्मन्	१	४	२४	ध्वज	२	१०	१०
द्वास्थोपस्थित-				धर्षणी	२	६	१०	ध्वनित	१	३	८
दर्शक	२	८	६	धाटि	२	८	११०	९५ ध्वान्त	३	५	२३
द्विगुणाकृत	२	९	९	धाटी	२	८	११०				
द्विज	२	७	४	धातकी	२	४	१२४	न			
५३ + द्विजिह्व	१	८	८	धातुपुष्पिका	२	४	१२४	नखो	२	४	१३०
द्वितीयाकृत	२	९	९	धातुपुष्पी	२	४	१२४	नम्रहू	२	१०	४२
५३ द्विरसन	१	८	८	धान्यक	२	९	३८	नडमीन	१	१०	१८
द्विवर्षा	२	९	६८	धान्यत्वच्	२	९	२२	नडिनो	१	१०	३९
द्विशीत्य	२	९	९	धान्याम्बल	२	९	३८	नतनासिक	२	६	४५
द्विसीत्य	२	९	९	४१ धामनिधि	१	३	३०	१४ नतोन्नत	३	१	११२
द्विहृत्य	२	९	९	धारण	२	८	४८	ननन्ध	२	६	२९
२१ द्वेष्य	३	१	११२	७५ धारा	३	३	१९२	२१ नन्दिक	१	१	४०
२३ द्वैपायन	२	७	३५	धार्त	२	१०	४३	२१ नन्दिकेश्वर	१	१	४०
ध				धार्मपत्तन	२	९	३६	नन्दिनी	२	६	२९
५६ धनिन्	३	३	१२८	धावनी	२	४	९३	नन्दीवर्त	१	१०	२०
धनीयक	२	९	३८	धिपाङ्ग	२	८	६३	४८ नप्तृ	३	३	८५
धनेयक	२	९	३८	७० धिष्य	३	३	१६१	३ नरकान्तक	१	१	२१
धनु	२	८	८३	धुतूर	२	४	७७	नराधिप	२	८	१
धनुर्मध्य	२	८	८५	धुस्तूर	२	४	७७	नारायण	१	१	१८
धनुर्यास	२	४	९१	धुस्तूर	२	४	७७	नरेश	२	८	१
धनुस्	२	४	३५	धूप	२	६	१२७	नर्तक	१	७	८
धनुष्पट	२	४	३५	धूम्रक	२	९	७५	५ नवमहिका	१	१	२६
				धूली	२	८	९८	"	२	४	७२

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
नवसूति	२	९	७१	"	२	९	८४	२६ निशुम्भन	२	८	११५
नसा	२	६	८९	निग्राह	३	२	३९	निश्रेणी	२	२	१८
नस्तोत	२	९	६३	निषस	२	९	५६	निष्कली	२	६	२३
नस्या	२	९	८९	१६ निमित्त	३	१	११२	निष्काशित	३	१	३९
नागज	२	९	१०५	निचुल	२	६	११६	निष्कट	२	४	१३
नागजिह्वा	२	९	१०८	निनोल	२	४	६१	निष्कटो	२	४	१२५
नागसुगन्धा	२	४	११४	६३ नितम्ब	३	३	१३३	निष्कृत	३	१	८७
नाडिका	२	९	३४	५६ निदान	३	३	१२८	निशदन	२	८	११३
नाडिकेर	२	४	१६८	निद्रित	३	१	३३	८६ निक्षिप्त	३	३	२१८
ननाविध	३	१	९३	१ निधन	१	१	१३	निचिकी	२	९	६७
नान्दीवृक्ष	२	४	१२८	निबन्धन	१	७	७	नीरोग	२	६	५७
नाभि	२	६	१२९	१६ निभृत	३	१	११२	निरोध	३	२	१३
१ नाभिजन्मन्	१	१	१७	नियमित	३	१	९५	१० नील	१	१	७१
नाभी	२	८	१५६	नियातन	३	२	२७	नीलसार	२	४	३८
नाम	३	४	१४	निरङ्कुश	३	१	१५	नीलकु	२	५	१३
नायक	२	६	१०२	"	३	१	८३	नीलाम्बुज	१	१०	३७
२५ "	३	३	१७	१७ निरयंक	३	१	११२	१० नीलीराग	३	१	११०
नार	१	१०	४	निरालस	२	१०	१९	६ नीलोत्पल	२	१	३६
नारक	१	९	२	निरीष	२	९	१३	नूद	२	४	७९
नारिकेर	२	४	१६८	निर्गन्धन	२	८	११३	नृत्त	१	७	१०
नारिकेल	२	४	१६८	निगुण्ठी	२	४	६८	नेदीयस्	३	१	३८
नारिकेलि	२	४	१६८	५८ निर्झरिणी	१	१०	३०	नेमि	१	१०	२७
नारीकेली	२	४	१६८	निर्धाय	३	१	१३	नेमिन्	२	४	२६
नाला	२	१०	४२	निर्बहण	२	८	११२	नेमी	२	८	५६
नाली	२	९	३४	निर्मर्याद	३	१	२३	१८ नैयायिक	२	७	६
"	२	१०	४२	निर्यन्त्रण	३	१	१५	१८ न्यञ्जित	३	१	११२
८६ नाश	३	३	२१८	निवन्ध	२	६	५५	न्युञ्ज	२	६	४८
नासामल	२	६	६६	निवृत	२	६	११३	१२ "	३	१	११०
निःकृत	३	१	४१	निश्	१	४	४	पक्षि	३	२	८
निकाय	२	२	५	निशाकर	१	३	१५	१२ पक्ष	३	१	११०
निकोटक	२	४	२९	१२ निशादन	२	५	१४	पक्षती	१	४	१
निक्षेप	२	९	८१	निशात	३	१	९१	"	२	५	३६
निखर्व	२	६	४६	निशारण	२	८	११२	पक्ष्य	३	१	११०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पङ्की	२	४	४	पयोधर	१	३	७	परेत	१	९	२
पङ्कु	१	३	२	”	२	६	२७	परेष्टि	२	७	३५
पञ्चम्पचा	२	४	१०१	पयोमुच्	१	३	७	परोयुत	३	१	६४
पञ्ज	२	१०	१	परःसहस्र	३	१	६४	परोलक्ष	३	१	६४
पञ्चरव	२	८	११६	परस्परपराहत	१	६	१९	परोष्ठी	२	५	२६
८ पञ्चनख	२	५	१	परस्वध	२	८	९२	पर्णशाल	२	२	६
पञ्चमद्र	३	१	२३	पराजित	२	१०	१८	२६ पर्यङ्क	३	३	१७
पञ्चालिका	२	१०	१९	परायण	३	२	२	पर्व	१	४	७
पट	२	४	२५	पराई	२	९	८४	पर्वसन्धि	१	४	७
पटकुटी	२	६	१२०	परिग्रह	२	८	७९	पशु	२	६	६९
पटकुठ्य	२	६	१२०	परिपाटी	२	७	३६	पश्वध	२	८	९२
पटगृह	२	६	१२०	परिभूत	२	८	११२	पश्वद	२	७	१५
पटवासस्	२	६	१२०	परिमाण	२	९	८५	पलाश	१	५	१४
पड्ड	३	१	३५	परिमेद	२	४	५०	पलिष	३	३	२७
पट्टन	२	२	१	परिवत्सर	१	४	२०	२ पल्लवक	३	१	२३
पट्टी	२	४	४१	परिवर्त	२	९	८०	२ पल्लविक	३	१	६
पणस	२	४	६	परिवाद	१	६	१३	पशुप्रेरण	३	२	३९
पण्नी	२	६	१९	परिवाह	१	१०	१०	पञ्चवाह	२	९	६३
पण्यवीथी	२	२	२	परिवेश	१	३	३२	पस्थ	२	२	५
पण्यस्त्री	२	६	१९	परिवेष्टित	३	१	८८	पांशु	२	८	९८
पतदगृह	२	८	७९	परिव्राजक	२	७	४१	२५ पाक	३	३	१७
पत्रल	२	९	५१	परिष्कन्द	२	१०	१८	पाटला	२	९	६७
पत्र	२	४	१३४	परिष्कन्न	२	१०	१८	पाटलि	२	४	३९
पथ	२	१	१५	परिष्कृत	२	६	१००	”	२	९	१५
पद	२	६	७१	परिसार	३	२	२१	पाटली	२	४	५४
पदवि	२	१	१५	परिसुता	२	१०	३९	पाणिग्रहण	२	७	५६
पदात	२	८	६६	परिस्कन्न	२	१०	१८	पाथःपति	१	१०	१
पदती	२	१	५	परिस्कार	२	६	१०१	पादकृत	२	१०	७
२९ पञ्च	१	१	७१	परिस्पन्द	२	६	१३७	पादत्राण	२	१०	३०
पञ्चवर्ण	२	४	१४५	परिहास	१	७	३२	१४ पादवस्त्रीकर	६	५५	
३८ पञ्चाक्ष	१	३	३०	परीत	३	१	८८	पादात	२	८	६६
४१+पञ्चिनीपति	१	३	३०	परीरम्भ	३	२	३०	पादाति	२	८	६६
पथ	२	१०	१	पह	२	४	१६२	पादातिग	२	८	६६

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पादाविक	२	८	६६	१५ पिङ्गुष	२	६	६६	१६ पूर्ण	३	१	११२
पादुकाकृत	२	१०	७	पिटक	२	९	२६	१ पूर्वे	१	१	१७
पानगोष्ठी	२	१०	४२	पिटिका	२	६	५३	"	३	१	६४
पानवणिज	२	१०	१०	पिण्ड	२	९	२६	पूर्वा	३	१	१३४
पापद्धि	२	१०	२३	४० पिण्डी	३	३	४३	पृक्का	२	४	१३३
पामर	२	६	५८	८ पिण्डीशूर	३	१	११०	पृथगात्मता	२	७	३८
पारत	२	९	९९	पिण्डोल	२	९	५६	पृथग्रप	३	१	९६
पारापत	२	४	१४	पिप्पलि	२	४	९७	पृथवी	२	१	३
पारावताङ्ग्री	२	४	१५०	पियाल	२	४	३५	पृश्नि	१	३	३३
२३ पाराशर्य	२	७	३५	पिष्ट	२	९	१०४	पृषन्ति	१	१०	६
पाराशव	३	३	२११	पिष्टप	२	१	६	पृषातक	२	७	२४
पारिपन्थिक	२	१०	२५	पीतक	२	९	१०३	पृष्ठास्थि	२	६	६९
पारिभद्र	२	४	५३	पीतदुग्धा	२	९	७२	पृष्णि	२	६	४८
पारिभाव्य	२	४	१२६	पीतशालक	२	४	४३	२७ पेटक	३	३	१७
पारियात्रिक	२	३	३	पीति	२	८	४३	पेडा	२	१०	२९
पारी	२	९	३२	पुक्त	२	१०	२०	पेयूष	१	१	४८
पार्श्वभाग	२	४	४०	पुण्ड	२	४	१२७	"	२	९	५४
पार्थास्थि	२	६	६९	पुण्डरीक	२	५	१	पेशी	२	५	३७
पालिन्धी	२	४	१०८	पुत्री	२	६	८	पेशीकोश	२	५	३७
पाली	२	८	९३	पुनर्नव	२	६	८३	पेशीकोष	२	५	३७
"	३	३	१९८	१० पुण्डवज	२	५	११	पैत्र (तीर्थ)	२	७	५१
पाशक	२	१०	४५	पुरन्धि	२	६	६	पैत्र्य (तीर्थ)	२	७	५१
पाशयन्त्र	२	१०	२६	पुरह	३	२	६३	पोगण्ड	२	६	४६
पाषण्ड	२	७	४५	३ पुराणपुरुष	१	१	२१	३८ पोटा	३	३	३९
७ पिकवल्लभ	२	४	३३	पुरुह	३	१	६३	५६ पोत	१	१०	१३
पिचिण्डिल	२	६	४४	पुष्पदन्त	१	४	१०	पौण्ड्र	२	४	१६३
पिचिण्ड	२	६	७७	पुष्परथ	२	८	५१	पौतव	२	९	८५
पिचिण्डिल	२	६	४४	पुष्पवन्त	१	४	१०	पौत्तिक	२	९	१०७
पिचुतुल	२	९	१०६	पुष्पाञ्जन	२	९	१०३	४३ पौष	१	४	१३
पिचुमर्द	२	४	६२	पुष्पिता	२	६	२०	४२ पौषी	१	४	४३
पिचुल	२	९	१०६	पूतीकरज	२	४	४८	पौष्पक	२	९	१०३
पिच्छिला	२	४	६२	पूतीकरज	२	४	४८	२२ प्रकट	३	२	११२
पिञ्ज	२	५	४२	१६ पूरित	३	१	११२	४९ प्रकटोदित	१	६	२०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
२६ प्रकम्पन	१	१	६२	प्रपुनाल	२	४	१४७	३५ प्राचीन	१	३	१
२२ प्रकाश	३	१	११२	प्रपुन्नड	२	४	१४७	प्राचीर	२	२	३
प्रदोदन	२	८	८७	प्रपुत्राल	२	४	१४७	२१ प्राचेतस	२	७	३५
९ प्रग्रह	२	८	८७	प्रफुल्ल	२	४	७	प्राण	१	१	६२
प्रचर्चित	३	१	११२	२७ प्रमय	२	८	११६	प्रातिहारक	२	१०	११
प्रजविन्	२	८	४५	प्रमाण	२	९	८५	प्रातिहारिक	२	१०	११
प्रज्ञ	२	६	४७	प्रमातामह	२	६	३३	८३ प्राध्व	३	३	२१३
"	२	७	५	प्रमौलन	२	८	११६	८ प्राप्ति	१	१	३५१
४ प्रणाव्य	३	१	११०	प्रभुत	२	९	२	प्राबन्धिक	२	८	५८
४४ प्रणिधान	१	५	१	प्रभैल	२	६	५६	प्रावर	६	१२	१७
प्रतति	२	४	९	प्रभुत	२	९	८४	प्राश	२	८	९३
प्रतिकर्मन्	२	६	१२१	प्रयुद्धार्थ	३	२	२६	प्राशक	२	१०	४५
प्रतिग्रह	२	६	१३९	प्ररोह	२	४	४	४ प्रियदर्शन	३	१	११०
प्रतिदान	२	९	८०	प्रवयण	२	९	१२	प्रेष	३	३	२२०
प्रतिध्वनि	१	६	२६	प्रवल्हिका	१	६	६	प्रेष्य	२	१०	१७
प्रतिरोधक	२	१०	२५	प्रवल्ही	१	६	६	प्रेष्यशील	२	९	८
प्रतिश्या	२	६	५१	२७ प्रविष्ट	३	१	११२	प्रोत	१	६	११५
१७ प्रतिश्रित	३	१	११२	प्रविख्याति	३	२	२८	प्रोध	२	६	७५
प्रतिश्रुत	३	१	१०८	प्रविघात	२	८	११४	प्रोध	३	२	९
प्रतिहार	२	२	१६	प्रवेणि	२	६	९८	प्रोद्	२	६	७५
"	२	८	६	"	२	८	४२	प्रौष्ठपदा	१	३	२२
३५ प्रतीचीन	१	३	१	प्रश्नदूती	१	६	६	प्लवङ्गम	२	५	३
प्रतीप	३	१	८४	प्रसर	३	२	२५	प्लीहा	२	६	६६
२१ प्रतीष्ट	३	१	११२	प्रसरणि	२	८	९६	प्ला	२	९	५४
प्रतीहास	२	४	७६	प्रसरणी	२	८	९६	फ			
प्रत्यङ्गुष्पी	२	४	८९	प्रसवबन्धन	२	४	१५	फटा	१	८	९
प्रत्यवसान	२	९	५६	प्रसृत	२	६	८५	५४ फणधर	१	८	८
प्रत्युत्क्रान्ति	३	२	२६	प्रस्फुट	३	१	८१	फल	२	४	१५
प्रदिश	१	३	५	१८ प्राकाम्य	१	१	३५	"	२	६	१३२
प्रदेशनी	२	६	८१	२० प्राधुणक	२	७	३३	"	२	९	८०
४० प्रद्योतन	१	३	३०	२० प्राधूर्णक	२	७	३३	फलस	२	४	६१
५० प्रपात	३	३	८५	प्राङ्गण	२	२	१३	फञ्जिका	२	४	८९
प्रपुनाड	२	४	१४७	प्राङ्गन	२	२	१३	४६ फाल्गुन	१	४	१३
								४६ फाल्गुनी	१	४	१३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
फेरण्ड	२	५	५	५४ बाधा	३	३	१०४	भ			
फेरी	२	९	५६	बाल	२	६	९६	४७ भक्ति	३	३	८५
ब				बालगर्मिणी	२	९	७०	भक्षण	२	९	५६
बधू	२	४	१३३	बालपत्र	२	४	४९	भक्षुकार	२	९	२८
बन्धनालय	२	८	११९	बालपाश्या	२	६	१०३	भक्ष्यकार	२	९	२८
बन्धदी	२	९	७३	बालमीक	२	१	१४	४१ भग	१	३	३०
बन्धुक	२	४	७३	बाल्लिक	२	६	१२४	भङ्ग	२	८	१११
बन्धुर	३	१	६९	बाल्लिकं	२	८	४५	भङ्गीन	२	९	७
७६ "	३	३	१९२	"	३	३	९	भङ्गुर	३	१	७१
बरांवद	२	९	५५	बिडाल	२	५	६	भङ्गय	२	९	७
बर्वाणा	२	५	२६	बिन्दुजालक	२	८	३९	भण्डिन्	२	४	६३
बर्वरा	२	४	१३९	विभीतकाक्ष	२	४	५८	भण्डिर	२	४	६३
९४ बह	३	५	२३	६४ विम्ब	३	३	१३३	भण्डोल	२	४	६३
बहि	१	१	५४	बिल	२	३	६	भद्र	२	४	१५९
"	२	४	१३२	विश	१	१०	४२	भद्रा	२	४	११६
बहिंशुष्मन्	१	१	५४	बिसकण्टिका	२	५	२५	भन्द	१	४	२५
१३ बलादधृत	३	१	११२	बीजकोष	१	१०	४३	भन्मा	१	७	६
१२ बलादक	१	१	२८	बुक	२	४	८१	भर्ग्य	१	१	३३
बलिमुख	२	५	३	बुकन्	२	६	६४	२४ भसित	१	१	५७
बलिर	२	६	४९	बुकस	२	१०	२०	२४ भस्मन्	१	१	५७
बलिवाद्यक	२	८	५२	बुकाग्रमांस	२	६	६४	भस्मगन्धा	२	४	१२०
बलिश	१	१०	१६	बुद्धिमती	२	६	१२	भस्मगर्भा	२	४	१२०
बलोमुख	२	५	३	३७ बुध	१	३	२	४३ + भाद्रपद	१	४	१३
बन्धयणी	२	९	७१	२५ "	३	३	१०४	४३ + भाद्रपदी	१	४	१३
बसिर	२	४	९७	बुध	२	९	२२	३६ भानुज	१	३	२
बस्त्य	२	२	५	बृहताम्पति	१	३	२४	भानुफला	२	४	११३
बहलिक	२	९	४०	३७ बृहस्पति	१	३	२	भारत	२	१०	१२
बहुपाद्	२	४	३२	बोधि	२	४	२०	भारतवर्ष	२	१	६
बहु रूप	३	१	५३	ब्रह्मकाष्ठ	२	४	४१	भारिन्	२	१०	१५
बहुलीकृत	२	९	२३	१५ + ब्रह्माणी	१	१	३५	१० भार्गवी	१	१	२७
बह्लिक	२	६	१२४	३ ब्रह्मण्य	३	१	११०	भाव	२	६	९२
बह्लोक	२	६	१२४	१६ ब्रह्मवादिन्	२	७	६	४५ भाबना	१	५	२
बायुची	२	४	९६	३ ब्रह्मणहित	३	१	११०	मिण्डिपाल	२	८	९१
बादर	२	६	१११	१५ ब्राह्मी	१	१	३५	मिदिर	१	१	४७
५७ बाधना	३	३	१२८								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
भिया	१	७	२१	भ्रातृव्य	२	६	३६	मधुल	२	४	२७
६६ भीम	३	३	१४५	भ्रामर	२	९	१०७	मधूल	२	४	२७
भील	२	६	३	म				"	२	४	२८
भीलु	२	६	३	२९ मकर	१	१	७१	मध्वशील	२	४	२८
भीलू	२	६	३	मकुट	२	६	१०२	मनोजव	३	१	१३
२ भुजङ्ग	१	१	२३	मकुर	२	६	१४०	मनोजवस्	३	१	१३
भूत	२	१०	३७	मकुष्ठक	२	९	१६	मनोहर	३	१	५२
२ भूतधात्री	०	१	३	मकुष्ठ	२	९	१६	४९ मनोहारिन्	१	६	२०
भूतनाशन	२	९	१८	मकुष्ठक	०	९	१६	"	३	१	५२
भूतवास	२	४	५८	मकुष्ठक	२	९	१६	मन्द	१	१	२६
२४ भूति	१	१	५७	मक्षीका	२	५	२६	मन्दर	२	३	३
भूतम	२	९	९५	मङ्कुर	२	६	१४०	५१ मन्द्र	१	७	२
भूपति	२	८	१	मञ्जा	२	४	१२	मपष्ठ	२	९	१७
भूपाल	२	८	१	मञ्जरी	२	४	१३	मपष्ठक	२	९	१७
भृश्व	२	३	१	मञ्जील	२	६	१०९	मपुष्ठ	२	९	१७
भूमिजम्बू	२	४	३८	२३ मञ्जुषोषा	१	१	५१	मपुष्ठक	२	९	१७
भूमिस्त	१	३	२५	४८ + मणित	१	६	२०	मयष्ठक	२	९	१७
भूमी	२	१	२	मणी	२	९	९३	मथुर	२	५	३०
भूर्	२	१	२	मण्डक	२	४	७२	मथुष्ठक	२	९	१७
भूषण	२	६	१०१	मण्डन	२	६	१००	मरिच	२	९	३६
भूषा	२	६	१०१	मण्डल	२	८	८५	मरुवक	२	४	५२
२० भूषित	३	१	११२	"	२	१०	२२	"	२	४	७९
भृश्वर	२	७	४	मत्तकासिनी	२	६	४	मलपू	२	४	६१
भृकुंश	१	७	११	मद	२	६	१२९	मलय	२	३	३
भृकुटि	१	७	३७	५२ "	२	७	२१	मलापू	२	४	६१
भृगुजा	२	४	८९	मदिष्टा	२	१०	४०	मल्लिका	२	९	३२
भृङ्गरज	२	४	१५१	मद्गुरी	१	१०	२५	मल्लिकारुय	२	५	२४
भृङ्गरजस्	२	४	१५१	मद्र	१	७	२	मषि	२	४	१३४
२१ भृङ्गिन्	१	१	४०	मधु	२	४	१४२	मषी	२	४	१३४
१६ भृत	३	१	११२	मधुक	२	४	२७	मसि	२	४	१३४
भेदि	१	७	६	"	२	८	९३	मसी	१	४	१३४
५४ भोगधर	१	८	८	९ मधुदूत	२	४	३३	मसुर	२	९	१७
६५ भ्रम	३	३	१४५	मधुपणी	२	४	९४	मसुरा	२	९	१७
भ्रातृभगिनी	२	६	३६	मधुरिका	२	४	१०५	मसूरा	२	९	१७
								मस्तिक	२	६	६५

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
मह	३	३	२३१	१४ मानस	३	५	२३	सुषी	२	१०	३३
महला	२	६	२	४३ + मार्ग	१	४	१३	१४ सुष्ट	३	१	११२
महाधन	२	६	११३	४३ + मार्गी	१	४	१३	सुष्टिक	२	१०	८
१४ महानट	१	१	३४	मार्ताण्ड	१	३	२९	सुस्तक	२	४	१५९
२९ महापञ्च	१	१	७९	मार्षक	१	७	१४	मूर्च्छा	१	७	३३
"	२	९	८४	माष्य	२	९	७	मूर्ण	३	१	९५
३२ महाविल	१	२	१	मासिक	२	७	३१	मूर्द्धावसिक्त	२	८	१
महाम्बुज	२	९	८४	माहा	२	९	६६	मूर्धज	२	६	९६
महायश	२	७	२४	माहाकुल	२	७	३	मूर्वी	२	४	८३
महिका	१	३	१८	माहिष	२	१०	३	मूषक	२	४	३९
१७ महिमा	१	१	३५	१५ माहेश्वरी	१	१	३५	मूषिकाह्वया	२	४	८८
महिर	१	३	२९	मिशि	२	४	१०५	मूषी	२	१०	३३
मही	२	१	३	मिशी	२	४	१०५	मृग	२	६	१२९
महीप	२	८	१	मिश्रेय	२	४	१०५	मृगदंश	२	१०	२१
महीपति	२	८	१	मिषि	२	४	१३४	८ मृगदृष्टि	२	५	१
महीपाल	२	८	१	मिषी	२	४	१३४	८ मृगद्विष	२	५	१
महीभुज्	२	८	१	मिसि	२	४	१३४	८ मृगरिपु	२	५	१
महीसुर	२	७	४	मिसी	२	४	१०५	मृगया	३	२	३०
३६ महीसूनु	१	३	२	"	२	४	१५२	मृगन्या	२	१०	२३
महेरणा	२	४	१२४	मिहर	१	३	२९	८ मृगाशन	२	५	१
महेला	२	६	२	१६ मीमांसक	२	७	६	मृणाल	२	४	१६४
९ मा	१	१	२७	४ मुकुन्द	१	१	२१	मृत्तालक	२	४	१३१
७ माकन्द	२	४	३३	३० "	१	१	७१	मृत्सा	२	४	१३१
४३ माष	१	४	१३	मुकुष्ठ	२	१	१७	मृदङ्ग	२	९	१०६
४३ + मावी	१	४	१३	मुकूलक	२	४	१४४	मृदुच्छद	२	४	४६
माणव	२	६	४२	मुख	३	१	५९	९३ मृधा	३	५	२३
माणिवन्ध	२	९	४२	४१ + मुण्ड	३	३	४३	मृधार्थक	१	६	२१
मातुला	२	६	३०	४१ मुण्डक	३	३	४३	मेघज्योतिस्	१	३	१०
मातृमुख	३	१	४८	४ मुरमर्दन	१	१	२१	१२ मेघपुष्प	१	१	२८
मातृष्वसेय	२	६	२५	मूलकर्मन्	३	२	४	३२ मेघाध्वन्	१	२	१
मातृष्वस्त्रीय	२	६	२५	मुषक	२	५	१२	मेण्डक	२	९	७६
मातृशासित	३	१	४८	मुषा	२	१०	३३	मेथि	२	९	१५
माधवीलता	२	४	७२	मुषलिन्	१	१	२४	मेद	२	६	६४
मान	२	९	८५	१४ मुषित	३	१	११२	२२ मेनका	१	१	५१

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
१९मेनकारमजा	१	१	३७	र				राला	२	६	१२७
मेल	३	२	२९	रक्त	२	९	९७	रिक्त	३	१	५६
मैला	२	४	९५	रक्तपुष्पक	२	४	४९	रिक्कण	१	७	३६
मैत्रावरुण	१	३	२०	रक्तमाल	२	४	४७	२१ रिटि	१	१	४०
२१ + „	२	७	३५	रक्ता	२	६	१२५	रिद्ध	२	९	२३
२१मैत्रावरुणि	२	७	३५	२५ रक्षा	१	१	५७	रिरि	२	९	९७
मैनाक	२	३	३	„	३	२	८	रिष्ट	२	४	३१
मोषा	२	४	१०६	रक्षोघ्न	२	९	१८	रोति	२	९	९७
मोच	२	४	३१	रज	१	४	२९	रोरी	२	९	९७
मोचनी	२	४	४६	„	३	३	२३२	रुक्मकार	२	१०	८
१३ मौकुलि	२	५	२०	रजनि	१	४	४	रुण्ड	२	८	११७
३१ म्रक्षण	२	९	४९	रजनी	२	४	९५	रुबु	२	४	५१
म्लान	३	१	५५	२ रजोमूर्ति	१	१	१७	४ रुमा	२	१	१८
म्लेच्छजाति	२	१०	२०	रक्तिका	२	४	९८	रुशती	१	६	१७
य				२ रत्नगर्भा	२	१	३	रुबु	२	४	५१
३ यक्षपुरुष	१	१	२१	२ रत्नवती	२	१	३	रुषा	१	७	२६
यक्षसूत	२	७	४९	रथत्रज	२	८	५५	रूप	२	१०	३७
यथाकामिन्	३	१	१५	रथाभ्रपुष्प	२	४	३०	रूपक	२	२	१०
यन्त्रित	३	१	९५	रथिन्	२	८	७६	रुबुक	२	४	५१
यमनिका	२	६	१२०	रमणा	२	६	४	रुबुक	२	४	५१
यमानिका	२	४	१४५	९ रमा	१	१	२७	रेखा	२	४	४
यविष्ठ	२	६	४३	२२ रम्भा	१	१	५१	रेचनी	२	४	१०८
यष्टीमधुक	२	४	१०९	रवण	२	९	७५	„	२	४	१४६
याव्य	३	१	५४	३६ रवि	१	३	२	रेप	३	१	५४
युवक	२	६	४२	रशना	२	६	९१	रोगिन्	२	६	५८
युवती	२	६	८	रश्मि	१	१	३३	३ रोदस्	२	१	१८
यूपकटक	२	७	१८	रस	२	९	१०४	३ रोदसी	२	१	१८
यूष	२	४	४१	रसगन्ध	२	९	१०४	रोध	१	१०	७
येन	३	४	३	रसना	२	६	१०४	५८ रोधोवक्त्रा	१	१०	३०
६८ योग्य	३	३	१६१	रसाल	२	४	१६३	रोध्र	२	४	३२
योजनपर्णी	२	४	९१	राजयक्ष्मन्	२	६	५१	रोमहर्षण	१	७	३५
योधसंराव	२	८	१०७	२५ राजवाह्य	२	८	३५	रोमोद्गम	१	७	३५
योषिता	२	६	२	राजील	१	८	५	रोषण	३	१	३२
				रात्रिचर	२	१०	२५	रोहित	२	४	४९
				रात्री	१	४	४				

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
रोहिणी	२	४	८५	लुप्तवर्णपद	१	६	२०	वक्त	३	४	९
रोहिष	२	५	१०	२६ लुब्धक	३	३	१७	वत्	३	४	९
	ल			लुलाय	२	५	४	वत्	३	३	२४४
लक्तक	२	६	११५	लेप	२	५	५६	वतीका	२	९	६९
लक्ष	१	७	३३	८३ लेलिहान	१	८	८	वदन्य	३	१	६
"	२	९	८४	१० लोकजननी	१	१	२७	वदरा	२	४	११६
८८,,	३	३	२२५	३९ लोकबन्धु	१	३	३०	२५ वनहुताशन	१	१.	५७
लक्षणा	२	५	२५	४० लोकबान्धव	१	३	३०	वनायु	२	५	८
लक्ष्मण	१	३	१७	९ लोकमातृ	१	१	२७	वनी	२	४	१
लम्बिका	२	६	८	१९ लोकायतिक	२	७	६	नीपक	३	१	४९
१७ लघिमा	१	१	३५	लोचमर्कट	२	४	१११	वन्दनी	२	४	५५
लघु	२	४	१६५	लोन	२	१०	२५	वन्दी	२	८	११९
लता	२	४	११	लोत्र	२	१०	२५	वन्ध्य	२	४	७
लय	२	४	१६५	लोहमर्षण	१	७	३५	वन्ध्या	२	२	६९
ललामन्	३	३	१४४	लोहकार	२	१०	७	वन्य	२	४	१३१
लशून	२	४	१४८	लोहामिहार	२	८	९४	वम	२	६	५५
९२ लाङ्गल	३	५	२३	लोहित	२	५	१०	वमी	२	६	५५
लाङ्गलदण्ड	२	९	१४	लोहिताश्व	१	१	५५	वयस्था	२	४	५९
लाङ्गलपद्धति	२	९	१४	लौह	२	९	९८	वरटी	२	५	२७
लाङ्गली	२	४	१६८	"	२	९	९९	वरण	१	१	६१
लाङ्गुल	२	८	४९	व				४२,,	३	३	५६
५८ लाञ्छन	३	३	१२८	वंशक	२	६	१२६	वरला	२	५	२५
लाडु	२	४	१५६	वंशजा	२	९	१०९	वरा	२	४	१००
लाडुका	२	४	१५६	वंशलोचना	२	९	१०९	"	२	९	१११
लाडू	२	४	१५६	वकुल	२	४	६४	वराङ्ग	२	६	९५
लासक	१	७	८	वक्र	१	१०	७	वर्तक	२	५	३५
लास्फोटनी	२	१०	३३	९२ वक्र	३	५	२३	वर्तनि	२	१	१५
लिखित	२	८	१६	वक्षोज	२	६	७७	वर्ति	२	६	११४
लिखिताक्षर-				वज्रदु	२	४	१०५	वर्तमनि	२	१	१५
संस्थान	२	८	१६	वज्रनिष्पेष	१	३	१०	वर्दमान	२	२	१०
लिपिकार	२	८	१५	वज्रुक	२	५	५	वर्ध	२	९	१०५
लिपिकार	२	८	१५	वटाकर	२	१०	२७	वर्वरा	२	४	१३९
लिपी	२	८	१६	वटीगुण	२	१०	२७	वर्षा	३	३	२२४
लिप्त	३	१	११०	वडभी	२	२	१५	१५ वर्षित	३	१	११२
लिपिकार	२	८	१५	वणिग्भाव	२	९	३	वर्षाभि	२	२	१५
लिपिकार	२	८	१५								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
वलयित	३	१	८८	वारिपूर्ण	१	१०	३८	विख	२	६	४६
वलि	३	३	१९५	वारिवास	२	१०	१०	विखु	२	६	४६
वलीवर्द	२	९	५९	वारुणी	२	१०	३९	विख्य	२	६	४६
२० + वस्मिक	२	७	३५	वार्ता	२	४	११४	विख्यात	३	१	९
२० + वस्मीक	२	७	३५	वार्ताक	२	४	११४	विख	२	६	४६
वहरी	२	४	१३	वार्ताक	२	४	११४	विखु	२	६	४६
वह्नि	२	४	९	वार्दक	२	६	४०	विग्रह	३	२	१३
वह्लुर	२	६	६३	वार्दक्य	२	६	४०	विच्छेदक	२	२	११
वशिर	२	९	४०	"	२	६	४०	विजिपिल	२	९	४६
वष्क्यणी	२	९	७१	वाद्रि	२	९	८४	विजिविल	२	९	४६
वसिर	२	४	९७	वार्धधिन्	२	९	५	विज्जन	२	९	४६
वसूक	२	४	८०	वाल	३	३	२०६	विज्जल	२	९	४६
वस्त	२	९	७६	वालपक्ष	२	६	९८	विज्जिल	२	९	४६
वस्तक	२	९	४२	वालपाञ्च	२	६	९८	३७ विश	३	३	३३
वस्ति	२	६	११४	वालहस्त	२	६	९८	विज्ञानिक	३	१	४
वांशी	२	९	१०९	वालेय	२	९	७७	२ विट	३	१	२३
वाक्पति	१	३	२४	२२ वाल्मील	२	७	३५	विटप	२	४	१४
वाचास्पति	१	३	२४	२२ + वाल्मीकिर	७	३५		विटिका	२	६	५३
वाचोयुक्ति	३	१	३५	वाशिता	३	३	७५	विड	२	९	४२
वाटक	२	९	१०७	वाष्प	२	६	९३	वितंस	२	१०	२६
वाट्यालक	२	४	१०७	वाष्प	३	३	१३०	वितर्दी	२	२	१६
वाण	२	४	७४	वाष्पीका	२	९	४०	१ विदन्ध	३	१	२३
वाणि	१	६	१	वासगृह	२	२	९	विदारीगन्धा	२	४	११५
वाणिज्य	२	९	३	४५ वासना	१	५	२	विदेह	२	१०	३
वाति	१	१	६३	वासिका	२	४	१०३	विधा	३	२	१०
वातुल	३	३	१९६	वासित	१	६	२५	३६ विधु	१	३	२
वानानु	२	५	८	वास्तूक	२	४	१५८	विधुनन	३	२	४
वानाशुज	२	८	४५	वाहद्रिष्	२	५	४	विनाशोन्मुख	३	१	९१
वान्त	२	६	५७	वाह्लिक	२	८	४५	विनासिक	२	६	४६
वापद्गण्ड	२	१०	२८	वाह्लीक	२	८	४५	विनाह	१	१०	२७
वापि	१	१०	२८	विकश्वर	३	१	३०	विन्दुजालक	२	८	३९
वार	१	४	२	विकषा	२	४	९०	विपणी	२	२	२
"	१	१०	३	विकाश	३	३	२१५	विपदा	२	८	८२
वारणबुसा	२	४	११३	विकाशिन्	३	१	३०	विपर्याय	३	२	३३
१६ वाराही	१	१	३५	विकिरण	२	४	८०	विपादिका	१	६	६
वारिधि	२	९	८४								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
१ वपुला	२	१	३	विस्त्राव	२	९	४९	वैणुक	२	८	४१
विप्रकृष्ट	३	१	६८	३३ विहायस्	१	२	१	वैदेह	२	१०	३
विप्रतिसार	१	७	२५	वीज	२	६	६२	६७ वैद्य	३	३	१६१
१ + विप्लुत	३	१	२३	बीजकोश	१	१०	४३	वैमात्र	२	६	२५
विप्लुष्	१	१०	६	बीजकोष	१	१०	४३	वैमेय	२	९	८०
विमु	३	१	११	बीणादण्ड	१	७	७	५ वैरागिक	३	१	११०
विमय	२	९	८०	बीतदम्भ	३	१	११०	१७ वैशेषिक	२	७	६
४५ विमर्श	१	५	२	बीथि	२	४	४	१५ वैष्णवी	१	१	३५
विमलात्मक	३	१	५५	बीर	२	६	१२४	व्यक्ता	३	१	८१
विमलार्थक	३	१	५५	बीरपाण	२	८	१०३	व्यङ्ग्य	२	४	५१
विरहन्	२	७	५२	वृक	२	५	११	व्यङ्ग्य	२	४	५१
५ विरगाहि	३	३	११०	"	२	६	१२८	व्यभिचारिणी	२	६	१२
विरिञ्चि	१	१	१७	वृक्षा	२	६	६४	७३ व्याय	३	३	१६१
विरोध	३	२	१३	वृक्षारोहा	२	४	८२	१ व्यसनिन्	३	१	२३
विल	१	८	१	वृक्षाम्ल	२	९	३५	व्याकोष	२	४	७
विलपन	१	६	१६	१५ वृद्ध	३	१	११०	व्याघ्रदल	२	४	५०
विलाल	२	५	६	वृत्ताध्ययनदि	२	७	३८	व्याघ्रपाद	२	४	३७
विलेश्य	१	८	८	वृद्धकाक	२	५	२१	व्याघ्रपादप	२	४	३७
विलोचन	२	६	९३	वृद्धसङ्घ	२	६	४०	व्याड	१	८	७
विलोम	३	१	८४	वृक्षन	२	१०	३२	२६ व्यापादन	२	८	११५
विवधिक	२	९	१५	वृषभ	२	४	११६	व्याप्य	२	४	१२६
विविक्तस्	३	१	३९	वृषोपगा	२	९	६९	व्यालगाह	१	८	११
विशरण	२	८	११	वृष्णि	१	३	३३	व्यावृत्त	३	१	९२
२६ विशमन	२	८	११५	वेणी	२	६	९८	२३ व्यास	२	७	३५
विशाख	२	८	८५	४२ "	३	३	५६	व्युत्ति	२	१०	२८
विश्रम्भ	२	८	२३	वेतन	२	९	१	१ व्युरपन्न	३	१	११०
"	३	३	१३५	१६ वेदान्तिन्	२	७	६	व्रतती	२	४	९
विश्वक्सेन	१	१	१९	वेधनी	२	१०	३३	व्रघ्न	२	४	१२
विश्वरूप	३	१	३४	वेल्लि	२	४	९	व्रीड	१	७	२३
४ विश्वरूप	१	१	२१	वेश	२	६	९९	व्रीहि	२	९	२१
२२ विश्वामित्र	२	७	३५	वेश्यापति	३	१	२३	श			
विषुण	१	४	१४	वेश्याजनसमाश्रय	२	२	२	शंव	१	१	४७
विष	२	६	६८	वेषवार	२	९	३५	शंवर	२	५	१०
विस	१	१०	४२	वेष्या	२	६	१९	शकलिन्	१	१०	१७
विस्तार	२	४	१४	वैकृत	२	४	३७				
४९ विस्पष्ट	१	६	२०	वैकृत	१	७	१९				
"	३	१	८१								

शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.	शब्दाः	का.	व.	इलो.
शकुलिन्	१	१०	१७	शरीरास्थि	२	६	६९	शार्वरी	१	४	३
१२ शकुल	३	५	२३	शर्वला	२	८	९३	शाल	२	२	३
शक्त	३	१	३५	शल्लकी	२	४	१२४	"	२	४	५
शक्तुफली	२	४	५२	शव	२	६	८१	"	२	४	४४
शक	३	१	३५	शवर	२	१०	२०	शालपर्णी	२	४	११५
शकर	२	९	६०	शश	२	९	१०४	शाल्मल	२	४	४६
शङ्कु	२	९	८४	शशाङ्क	१	३	१४	शाल्मली	२	४	४६
शङ्कुकर्ण	२	९	७७	८२ शङ्कुली	३	३	२०५	शाल्मलीवेष्ट	२	४	४७
२९ शङ्कु	१	१	७१	शसन	२	७	२६	शाश्वतिक	३	१	७२
शङ्कनक	१	१०	२३	शस्त्र	२	९	९८	शाष्कल	३	१	१९
शठन	१	७	३०	शस्त्रिन्	२	८	६९	५५ शासन	३	३	१२८
शणसूत्र	१	१०	१६	शस्य	२	४	१५	शिशपा	२	४	६२
शण्ड	२	९	६२	"	२	४	१६७	शिक्षित	३	१	८९
शण्ड	२	६	३९	शस्यमञ्जरी	२	९	२१	शिखरिणी	२	९	४४
शतमीर	२	४	७०	शस्यशूक	२	९	२१	शिखरी	२	४	८८
शतयष्टिका	२	६	१०५	शस्यसम्बर	२	४	४४	शिखा	२	४	११
शनि	१	३	२६	२८शाकशाकट	२	९	७	शिखाण्डक	२	६	९६
६१ शफ	३	३	१३२	२८शाकशाकिन	२	९	७	शिखातरु	२	६	१३८
शम	३	४	१०	शाकर	२	९	६०	शिङ्गाण	२	९	९८
शम	२	६	८१	शाङ्कर	२	९	६०	शिङ्गा	१	६	२४
शमि	२	९	२३	शाङ्ग्वल	२	१	१०	शित	३	१	९१
शमीधान्य	२	९	४	शात	२	६	४४	शितद्रु	१	१०	३३
शम्पाक	२	४	२३	शातकौम्म	२	९	९४	शितशूक	२	९	१५
शम्बरी	२	४	८७	शातला	२	४	१४३	शिपविष्ट	३	३	३४
शम्बा	१	३	९	शान्त	१	७	१७	शिका	१	१०	४३
शम्बुक	१	१०	२३	शाप	१	६	११	६० "	३	३	१३२
शम्याक	२	४	२३	शाम्बुक	१	१०	२३	शिम्वि	२	९	२३
शयनखट्वा	२	८	५४	शारङ्ग	२	५	१७	शिम्वी	२	९	२३
शरणि	२	१	१५	शारदी	२	४	२३	शिर	२	६	९५
शराटि	२	५	२५	शारिका	२	५	३५	"	२	१	११०
शराडि	२	५	२५	११ शाङ्ग	१	१	२८	शिरसिज	२	६	९५
शराति	२	५	२५					५ शिरोगृह	२	२	८
शराकि	२	५	२५								
शराणी	२	५	२५								

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
शिरोमणि	२	६	१०२	शुभ्य	२	१०	२७	श्रीपणी	२	४	४०
शिरोऽस्थि	२	६	६९	२९ शुल्क	३	३	१७	श्रीपिष्ट	१	६	१२९
शिवशिष्ट	३	३	३४	शुल्का	२	१०	२७	११ श्रीवत्स	१	१	२८
शिवारि	२	१०	२२	शुभिर	१	७	४	श्रेणी	२	४	४
शिविका	२	८	५३	शुभिरा	२	४	१२९	श्रीणी	२	६	७४
शिविर	२	८	३३	शुकर	२	५	२	श्रोतस्	२	१०	११
शिवी	१	१	३७	१७ शुन्यवादिन्	७	६		४७ श्रवा	१	६	१६
शिल	२	९	२	शूरण	२	४	१५७	२० श्रितसम्भूत	३	१	११२
शिला	२	९	१०८	शूलव	२	९	९७	१४ श्रौपद	२	६	५५
शिलो	२	२	१३	९४ शृङ्ग	३	५	२३	श्राल	३	१	१४
शिलासार	२	९	९८	शृङ्गारभूषण	२	९	१०५	श्राक	२	१०	२०
शिलोन्ध	२	९	२	शृङ्गि	२	९	९६	श्रान	२	१०	२२
शिल्पशाला	२	२	७	२१ शृङ्गिन्	१	१	४०				
शीकर	१	३	११	शृङ्गी	२	९	९६	ष			
शीतलवातक	२	४	१४९	शृणि	२	८	४१	षण्ड	२	६	३९
शीत्य	२	९	८	शेष	२	६	७६	षण्ड	२	६	३९
शीधु	२	१०	४१	शेषस्	२	३	७६	॥	२	८	९
२२ शीन	३	१	११२	शेफ	२	६	७६	२ शिङ्ग	३	१	२३
शिफालिका	२	४	७०	११ शैव्य	१	१	२८				
शीर	२	९	१४	७२ शैत्य	३	३	१६१	स			
शीङ्गण्ड	२	४	१०५	शोणभद्र	१	१०	३४	संयोगित	३	१	९२
शुकवर्ह	२	४	१३२	शोनक	२	४	५७	संवदन	३	२	४
३६ शुक्र	१	३	२	शोभाजन	२	४	३१	संवपन	३	२	४
शुण्ठी	२	९	३८	शौरि	१	३	२६	संवर	१	१०	४
शुण्डापान	२	१०	४०	२२ श्यान	३	१	११२	॥	२	५	१०
शुन	२	१०	५२	श्यामक	२	४	१६५	संवहन	३	२	२२
शुनाशीर	१	१	४१	श्याल	२	४	४४	संविहित	३	१	१०९
शुनासीर	१	१	४१	श्यानाक	२	४	५७	५ संशित	३	१	११०
शुनी	२	१०	२२	४४ + श्रावण	१	४	१३	संसूक्षण	१	७	२३
शुन्य	३	१	५६	६३ + श्रावणी	१	४	१३	संसूक्षण	१	७	२३
शुभदन्ती	१	३	५	४९ श्राव्य	१	६	५९	संस्कारहीन	२	७	५३
शुम्भ	२	१०	२७	श्री	२	६	१६५	८ संसृत	३	१	११०
								१० संस्था	२	८	११६
								५२	३	३	८७

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
संस्फोट	२	८	१०५	४५ समाहित	३	३	८५	सहोदर	२	६	३४
संहतल	२	६	८५	५१ समित्	३	३	८५	सह्य	२	३	३
संहार	१	९	२	समुद्धरण	३	३	५५	साक्तुक	३	२	४०
सकलिन	१	१०	१७	५७+ समुद्रिका	१	१०	१३	२ सागराम्बरा	२	१	३
सङ्कार	२	२	१८	५६ समुद्रिय	१	१०	१३	सात	१	४	२५
सची	१	१	४५	सम्परायक	२	८	१०४	सातानीक	२	९	१५
सजुष	३	४	४	सम्प्रतापन	१	९	२	सादन	२	२	५
सजीवन	१	९	२	संस्फोट	२	८	१०५	साधुवाहिन्	२	८	४४
संश	२	६	७४	सम्ब	१	१	४७	साप्तदीन	२	८	१२
संशा	१	६	८	सम्बरारि	१	१	२६	साबर	२	४	३२
२ सत्यक	१	१	१७	५१ सम्बाध	३	३	१०४	सामज	२	८	३४
२३ सत्यवतीसुत	२	७	३५	सम्भलो	२	६	१९	सामवायिक	२	८	४
सत्यापना	२	९	८२	सर	१	८	८७	५७ सामुद्रिका	१	१०	१३
२ सदानन्द	१	१	१७	"	२	४	१६२	सायः	१	४	३
सधर्मिणी	२	६	५	सरडा	२	४	१०८	सारव	२	९	१११
सनत्	३	४	१७	सरणा	२	४	१०८	सारिवा	२	४	११२
सनपणी	२	४	१४९	सरणी	२	४	१५२	सारोष्ट्रिक	१	८	१०
सनात	३	४	१७	सरलि	२	६	८६	२९ सारिष्क	२	९	४४
सनात्कुमार	१	१	५१	५८ सरस्वती	१	१०	३०	३१ सालभञ्जिका	२	१०	२८
सनिष्ठीव	१	६	२०	सराव	२	९	३२	३१ सालभञ्जी	२	१०	२८
सन्धा	१	३	३	सरिल	१	१०	३	सालावृक	३	३	१२
सन्धि	१	४	७	सरिषप	२	९	१७	सालूर	१	१०	२४
सञ्ज	२	४	३	सरोजिनी	१	१०	३९	सिंहताल	२	६	८५
२५ सञ्जाय्य	२	८	३५	सर्व	१	१	३०	सिंहपुच्छक	२	४	९३
सप्ताचि	१	१	५६	सर्वरसाग्र	१	९	४९	१५ सिङ्घान	२	६	६६
समक्ष	३	१	७९	सलिर	१	१०	३	सिङ्घाणी	२	६	९८
समज्या	१	६	११	सव्येष्ट	२	८	६०	सिङ्घान	२	९	८९
समपाद	२	८	८५	ससन	२	७	२६	सिङ्गिनी	२	६	१०८
२५ समरोचित	२	८	३५	सद्	२	८	१०२	सितशिव	२	९	४२
समर्थुक	३	१	७	सद्चरी	२	६	५	सितशक्	२	९	१५
समाद्या	१	६	११	सहा	२	८	१०२	सिताम	२	६	१३०
४४ समाधान	१	५	१	सहदय	१	१	३	सिध्मली	२	६	५३

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
सिन्धुक	२	४	६८	सुवासिनी	२	६	९	सेव	३	२	५
सिन्धुर	२	८	३४	सुशवी	२	४	१५५	सैरिन्ध्री	२	६	१८
सिम्बा	२	९	२३	सुशीम	१	३	१९	सैरीयक	२	४	७५
सिम्बि	२	९	२३	सुषि	१	८	२	सोत्कण्ठ	२	१	८
सिम्बी	२	९	२३	सुषिम	१	३	११	४८ सोत्प्राप्त	१	६	२०
सिरा	२	६	६५	सुषिर	१	८	१	सोदर	२	६	३४
सिद्धकी	२	४	१२४	"	१	८	२	सोभाजन	२	४	३१
सिद्ध	२	६	१२८	सुसवी	२	४	१५५	सामन्	१	३	१४
सिद्धण्ड	२	४	१०५	सुसवा	२	४	१२३	सोमप	२	७	९
सोस	१	९	१०५	सुतकागृह	२	२	८	सोमपोतिन्	२	७	९
सोसपत्र	२	९	१०५	सूततन्तु	२	१०	२८	सोमवल्ली	२	४	१३१
२३ सुकेशी	१	१	५१	सूत्रामन्	१	१	४१	सोमवल्ली	२	४	९५
सुखसन्दुषा	१	९	७१	सूनु	२	६	२८	४८ सोल्लुण्ठन	१	६	२०
१२ सुग्रीव	१	१	२८	सून्मद	३	१	२३	१७ सौगत	२	७	१६
सुता	२	६	२८	सूर	-१	३	२६	सौदामिनी	१	३	९
सुतात्मजा	२	६	२९	सूरिन्	२	७	६	सौसिक	२	८	११०
५ सुनिश्चित	३	१	११०	सूर्प	२	९	२६	सौभाजन	२	४	३१
सुन्दरा	२	६	४	सूर्मि	२	१०	३५	सौरि	१	१	२१
सुपर्ण	२	४	२४	सृक्	२	६	९१	सौवस्तिक	२	८	५
सुपर्णक	२	४	२४	सृक्कन्	२	६	९१	सौवीर्य	२	४	३७
सुप्त	३	१	३३	सृक्कि	२	६	९१	सौहार्द	२	८	१२
सुमना	२	४	७२	सृक्किणी	२	६	९१	सौहृद	२	८	१२
सुम्भ	२	१०	२७	सृक्किन्	२	६	९१	सौहृदोय	२	८	१२
सुम्य	२	१०	२७	सृक्क	२	६	९१	स्तम	२	९	७६
सुरत	३	१	१५	सृक्कन्	२	६	९१	स्त्रीपुंस	२	५	३८
सुरभि	२	४	१२३	सृक्कि	२	६	९१	स्थपति	२	१०	९-
"	२	९	६६	सृक्किणी	२	६	९१	१४ स्थपुट	३	१	११२
सुरभीरसा	२	४	१२३	सृक्किन्	२	६	९१	स्थला	२	१	५
सुरामाण्ड	२	१०	४२	सृक्क	२	६	९१	स्थाली	२	४	५४
सुरि	१	९	१९	सृग्गल	२	५	५	११ स्थित	३	१	११०
सुरोद्	१	१०	२	सृणीका	२	६	६७	५१ स्थिति	३	३	८५
सुवर्ण	२	४	२४	सृष्टि	३	३	३९	१० स्थिरस्नेह	३	३	११०

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
स्थूललक्ष	३	१	६	स्वभ्र	१	८	२	हारहर	२	१०	४०
भन्ता	२	४	१०५	स्वरुम्	१	४	४७	८० हाल	३	३	२०५
भिक्षा	२	९	३३	स्वर्णवती	२	४	१३८	हालहल	१	८	१०
भिक्षा	२	६	१३८	३६ स्वर्मानु	१	३	२	८० + हाल	३	३	२०५
भव	३	२	१४	स्वस्तिक	२	२	९	हाकाहल	१	८	१०
भाम	३	२	१४	स्वस्त्रिय	२	६	३२	हासिका	१	७	१९
स्वभरण	३	२	१०	स्वस्त्रेय	२	६	३२	१७ हिंसा	२	८	११६
स्वभरण	३	२	१०	स्वादुरसा	२	१०	४०	हिण्डर	२	९	१०५
स्फिर	३	१	६४	स्वादूद	१	१०	२	हिण्डीर	२	९	१०५
२२ स्फुट	३	१	११२	स्वाधीन	३	१	१५	हिरण्यबाहु	१	१०	३४
स्फुलन	३	२	१०	स्वार	३	२	१४	७९ हिलि	३	३	२०५
स्फोटन	३	२	५	स्वीकार	१	५	५	हीर	१	१	३३
स्फोरण	३	२	१०	ह				हुड	२	९	७६
५२ समय	१	७	२१	हंसपदी	२	४	११९	हुडुक	१	७	८
भन्तु	२	६	९९	२ हंसवाहन	१	१	१७	हुत	२	७	२८
स्वाभ	३	४	१८	५४ हरि	१	८	८	६७ हृच्छय	३	३	१६१
१८ स्वादादिक	२	७	६	हरित	२	५	३४	९३ हृदय	३	५	२३
स्याल	२	६	३२	हरिताल	२	९	१०३	हृदयिक	३	१	३
स्योन	२	९	२६	१० हरिद्रागक	३	१	११०	४९ हृद्य	१	६	२०
स्रवा	२	४	८३	हरिप्रिय	२	४	४२	हेमन्	१	४	१८
"	२	४	१४२	हरिमन्य	२	९	१८	७९ हेल	३	३	२०५
सु	२	७	२५	हरिमन्यज	२	९	१८	७९ हेलि	३	३	२०५
स्रोत	१	१०	११	हविष्	२	७	२७	हैरिक	२	८	७
स्रोतस्विनी	१	१०	३०	हविष्य	२	९	५२	हादिनी	१	१०	३०
स्वःश्रेयस	१	४	२५	हसन्तिका	२	९	२९	हीवेर	२	४	१२२
स्वच्छ	१	१०	१४	हस्तधारण	३	२	५	हादा	२	४	१२४

हृत्थमरकोषशेषक-मूलस्थशब्दानामकाराद्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

